ॐ

श्रीअभय जैन ग्रन्थमाला पुष्प ८ वां

ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह

सम्पादक—

अगरचन्द्र नाहटा

भँवरलाल नाहटा

प्रकाशक—

शङ्करदान शुभैराज नाहटा

नं० ५-६ आरमेनियन स्ट्रीट,

कलकत्ता।

प्रथमावृत्ति १०००] वि० सं० १९९४ [मूल्य ३)

शंकरदानजी नाहटा

(ग्रन्थ प्रकाशक)

परम सहृदय, उदार एवं धर्मनिष्ठ
पूज्य ज्येष्ठ भ्राताजी

श्रीमान् दानमलजी नाहटा

की

स्वर्गस्थ आत्माको

सादर समर्पित ।

—शङ्करदान नाहटा
(ग्रन्थ प्रकाशक)

प्राक्कथन

जैनोंका प्राचीन इतिहास अस्तव्यस्त बिखरा हुआ है। ताम्र-पत्र और शिलालेखोंके अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत और लोकभाषाके काव्योंमें भी प्रचुर इतिहाससामग्री उपलब्ध होती है, उन सबको संग्रहकर प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक है। आर्य्यसंस्कृतिमें गुरुका पद बहुत ऊंचा माना गया है उनकी भक्तिका महात्म्य अति विशाल है। धर्माचार्य्योंका इतिवृत्ति या जीवनचरित्र उनके भक्त शिष्यगुणानुवादरूप काव्योंमें लिखा करते हैं, ऐसे काव्य जैन-साहित्यमें हजारोंकी संख्यामें हैं परन्तु खेद है कि शोधके अभावसे अधिकांश (अमुद्रित काव्य) प्राचीन ज्ञानभण्डारोंमें पड़े-पड़े नष्ट हो रहे हैं और अद्यावधि जैसा चाहिए वैसा इस दिशामें प्रयत्न हुआ ज्ञात नहीं होता।

अद्यावधि प्रकाशित ऐ० काव्यसंग्रह

ऐतिहासिक भाषा काव्योंके संग्रहरूपसे अद्यावधि प्रकाशित ग्रन्थ हमारे समक्ष केवल ७ ही हैं। जिनमें "ऐतिहासिक राससंग्रह" नामक ४ भाग और "ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १" श्रीविजय-धर्मसूरिजी और उनके शिष्य श्री विद्याविजयजी सम्पादित एवं श्री जिनविजयजी सम्पादित "जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संचय" और मोहनलाल दलीचंद देसाई B. A. L. L. B. संशोधित "जैन ऐतिहासिक रासमाला" नामसे प्रकाशित हुए हैं।

इनके अतिरिक्त कई ऐतिहासिक काव्य स्वतन्त्र-ग्रन्थ १ रूपमें २ मासिकपत्रोंमें और कतिपय ३रास-संग्रहोंमें भी प्रकाशित हुए हैं।

ऐसे रास अभी तक बहुत अधिक प्रमाणमें अप्रकाशित हैं उन्हें शीघ्र प्रकाशित करना आवश्यक है जिससे ऐतिहासिक क्षेत्रमें नया प्रकाश पड़े। आचार्यों एवं विद्वानोंके अतिरिक्त कतिपय सुश्रावकोंके ऐ० काव्य भी उपरोक्त संग्रहोंमें प्रकाशित हुए हैं। तीर्थोंके सम्बन्धमें भी ऐसे अनेकों काव्य उपलब्ध हैं जिनका संग्रह भी मुनिराज श्रीविद्याविजयजी सम्पादित "प्राचीन तीर्थमाला" और "पाटणचैत्य परिपाटी" आदि पुस्तकोंमें छपा है एवं "जैनयुग" के अंकोंमें भी कई स्थानोंको चैत्यपरिपाटियाँ और तीर्थमालाएं प्रकाशित हुई हैं। हमारे संग्रहमें भी ऐसे अप्रकाशित अनेकों ऐतिहासिक काव्य हैं जिन्हें यथावकाश प्रकाशित किया जायगा।

आवश्यकीय स्पष्टीकरण

प्रस्तुत सग्रहमें अधिकांश काव्य खरतरगच्छीय ही हैं, इससे कोई यह समझनेकी भूल न कर बैठे कि सम्पादकोंको अन्यगच्छीय काव्य प्रकाशित करना इष्ट नहीं था। हमने तपागच्छीय खोज-शोधप्रेमी विद्वान् मुनिवर्योंको तपागच्छीय अप्रकाशित काव्य भेजनेको विज्ञप्ति भी की थी, पर खेद है कि किसीकी ओरसे कोई सामग्री नहीं मिली। तब यथोपलब्ध सामग्रीको ही प्रकाशित करना पड़ा।

---

१ यशोविजयरास, कल्याणसागरसूरिरास, देवविलास। २ जैनयुगके अङ्कोंमें। ३ प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्रहमें, रास संग्रहमें।

राजपूताना प्रान्त बीकानेरमें विशेषकर खरतरगच्छका ही प्रचार और प्रभाव रहा है। अतएव हमें अधिकांश काव्य इसी गच्छके प्राप्त हुए हैं। तपागच्छीय काव्य एकमात्र "श्रीविजय सिंह सूरि विजयप्रकाश रास" उपलब्ध हुआ था वह और तत्पश्चात् उपाध्यायजी श्रीसुखसागरजी महाराजने पालीतानेसे "शिवचूला गणिनी विज्ञप्तिगीत" भेजा था उन दोनोंको भी प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित कर दिया है। हमारे संग्रहमें कतिपय पार्श्वचंदगच्छीय ऐ० काव्य हैं, जिन्हें प्रकाशनार्थ मुनिवर्य्य जगत्‌चंद्रजी कनकचंद्रजीने नकल करली है अतः हमने इस संग्रहमें देना अनावश्यक समझा।

प्रस्तुत ग्रन्थमें अधिकांश खरतरगच्छीय भिन्न-भिन्न शाखाओंके काव्योंका संग्रह है, एकही ग्रन्थमें एक विषयकी प्रचुर सामग्री मिलनेसे इतिहास लेखकको सामग्री जुटानेमें समय और परिश्रमकी बड़ी भारी बचत होती है। इस विशेषताकी ओर लक्ष्य देकर हमने अद्यावधि उपलब्ध सारे खरतरगच्छीय ऐ० काव्य प्रस्तुत संग्रहमें प्रकाशित कर दिये हैं, जिससे प्रस्तुत विषयमें यह ग्रन्थ पूर्ण सहायक हो गया है। मूल पुस्तक छप जानेके पश्चात् श्रीजिनकुशलसूरि कृत श्रीजिनचन्द्रसूरि चतुःसप्ततिका और श्रीसूरचन्द्रगणि कृत श्रीजिन-सिंहसूरिरास उपलब्ध हुए हैं, ग्रन्थके बड़े हो जानेके कारण उनको मूल प्रकाशित न करके ऐतिहासिकसार यथास्थान दे दिया है। संग्रहकी दृष्टिसे और शुद्ध प्रतियें मिल जानेसे पाठान्तर भेद सहित कतिपय अन्यत्र प्रकाशित काव्य भी इस ग्रन्थमें प्रकाशित किये हैं।*

---

* देखें प्रति-परिचय।

कई महत्वपूर्ण त्रुटक और अपूर्ण कृतिएं १ भी जो हमें उपलब्ध हुईं प्रकाशित कर दी गई हैं, यदि किसी सज्जनको उनकी पूर्ण प्रतियां मिलें तो हमें अवश्य सूचित करें।

ऐ० काव्योंकी प्रचुरता

जैसलमेर भण्डारकी सूची २ से ज्ञात होता है कि वहां भी एक त्रु० प्रति ३ में श्रीजिनपतिसूरि, जिनवल्लभसूरिके अपभ्रंश गाहामें वर्णन, जिनप्रबोध मुनिवर्णन, जिनकुशलसूरि वर्णन (प्रति नं० ५२२ में) शेष श्रीजिनपतिसूरि स्तूपकलश (नं० ३५८ के अन्तमें) और श्रीजिनलब्धिसूरि गुरुगीत (पत्र २ नं० १५८६ में) विद्यमान हैं, परन्तु अद्यावधि हमें ये उपलब्ध नहीं हुए, सम्भव है कि कुछ कृतिएं वेही हों जो इस ग्रन्थमें प्रकाशित हैं*।

खरतरगच्छका काव्य—साहित्य बहुत विशाल है। अपनी-अपनी शाखाका साहित्य उनके श्रीपूज्योंके पास है आद्यपक्षीय

---

१ श्रीजिनराजसूरिरास आदिकी गा० ९ (पृ० १५०), श्रीजिनदत्तसूरि छप्पय आदि अन्त विहीन (पृ० ३७३), श्रीकीर्तिरत्नसूरिफाग आदिकी गा० २७ (पृ० ४०१), श्रीजिनचन्द्रसूरिगीत अपूर्ण (पृ० १०१), विद्यासिद्धिगीत आदि त्रुटक (पृ० २१४)।

२ जेसलमेरके यतिवर्य लक्ष्मीचंदजो प्रेषित।

३ खरतरगच्छके आचार्योंके ऐतिहासिक—गुण वर्णनात्मक काव्योंकी अन्य एक महत्वपूर्ण प्रति अजीमगंजके भंडारमें थी, पर खेद है कि बहुत खोजनेपर भी वह उपलब्ध नहीं हुई।

* देखें—"जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास" पृ० ९३७ से ९४६।

(पाली), लघु आचार्य, भावहर्षी और लखनऊ वालोंके पास खर-तरगच्छका बहुतसा ऐतिहासिक साहित्य प्राप्त होनेकी सम्भावना है।

हमारे संग्रहमें इधरमें और भी कई ऐतिहासिक काव्य उपलब्ध हुए हैं जो यथावकाश प्रकट किये जायँगे।

प्रस्तुत ग्रन्थकी उपयोगिता

यह ग्रन्थ दृष्टिकोणद्वयसे विशेष उपयोगी है। एक तो ऐतिहासिक और दूसरा भाषासाहित्य। कतिपय साधारण काव्योंके अतिरिक्त प्रायः सभी काव्य ऐतिहासिक दृष्टिसे संग्रह किये हैं, गुण वर्ण-नात्मक अनेक गीत, गहूंलियें, अष्टक प्रभृति हमारे संग्रहमें है, परन्तु उनमेंसे ऐतिहासिक काव्योंको ही चुन चुनकर प्रस्तुत संग्रहमें स्थान दिया गया है। अद्यावधि प्रकाशित संग्रहोंसे भाषा साहित्य-की दृष्टिसे यह संग्रह सर्वाधिक उपयोगी है; क्योंकि इसमें बारहवीं शताब्दीसे लेकर बीसवीं शताब्दी तक लगभग ८०० वर्षोंके, प्रत्येक शताब्दीके थोड़े बहुत काव्य अवश्य संग्रहीत हैं।* जिनसे भाषा-विज्ञानके अभ्यासियोंको शताब्दीवार भाषाओंके अतिरिक्त कई प्रान्तीय भाषाओंका भी अच्छा ज्ञान हो सकता है। कतिपय काव्य हिन्दी, कई राजस्थानी और कुछ गुजराती प्रभृति हैं। अपभ्रंश भाषाके लिये तो यह संग्रह विशेष महत्वका ही है, किन्तु नमूनेके तौरपर कुछ संस्कृत और प्राकृतके काव्य भी दे दिये गये हैं।

काव्यकी दृष्टिसे जिनेश्वरसूरि, जिनोदयसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनपतिसूरि, जिनराजसूरि, विजयसिंहसूरि आदिके रास, विवाहला

---

* शताब्दीवार काव्योंका संक्षिप्त वर्गीकरण अन्य स्थानमें मुद्रित है।

बड़े सुन्दर और अलङ्कारिक भाषामें है। जिनको पढ़नेसे प्राचीन काव्योंके स्रजन, सौष्ठव, सुन्दर शब्द-विन्यास और फबती हुई उपमाओंके साथ साथ अनेक शब्दोंका अनुभव होता है।

इस संग्रहमें प्रकाशित प्रायः सभी काव्य समसामयिक लिपिबद्ध प्रतियोंसे ही सम्पादित किये गये हैं। इसका विशेष स्पष्टीकरण प्रति-परिचयमें कर दिया गया है।

शृङ्खलामें अव्यवस्थाका कारण

लगभग २॥ वर्ष पूर्व जब इस ग्रन्थको छपाना प्रारम्भ किया था तब जितने काव्य हमारे पास थे, सबको रचनाकालकी शृङ्खलानुसार ही प्रकाशित करना प्रारम्भ किया था, परन्तु उसके पश्चात् ज्यों-ज्यों नवीन सामग्री मिलती गई त्यों-त्यों इसमें शामिल करते गये। अतः जैसा चाहिये काव्योंका अनुक्रम ठीक न रह सका। फिर भी हमने पीछेसे ग्रन्थको चार विभागोंमें विभक्त कर चतुर्थ विभाग-में अवशेष प्राचीन काव्योंको दे दिया है। रचना समयकी अपेक्षासे काव्य जिस शृङ्खलासे सम्पादन होने चाहिये उनकी स्वतन्त्र तालिका दे दी है, ताकि पाठकोंको शताब्दीवार भाषाओंका अभ्यास करनेमें सुगमता और अनुकूलता मिले। ऐतिहासिक सार-लेखन (शाखा वार) क्रमिक पद्धतिसे ही हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थको सर्वाङ्ग सुन्दर और विशेष उपयोगी बनानेका भरसक प्रयत्न किया गया है। जो लोग प्राचीन राजस्थानी और अपभ्रंश भाषासे अनभिज्ञ हों उनके लिये "कठिन शब्दकोश" और शृङ्खलाबद्ध ऐतिहासिकसार दे दिया है। इसके अतिरिक्त स्थान-

स्थानपर प्राचीन सुन्दर चित्र, विशेष नाम सूची, अनेक आवश्यक बातोंका स्पष्टीकरण (प्रति परिचय, कवि परिचय, चित्र परिचय आदि) कर दिया गया है।

अशुद्धियोंका आधिक्य

काव्योंको यथाशक्ति संशोधन पूर्वक प्रकाशित करनेपर भी इस ग्रन्थमें अशुद्धियोंका आधिक्य है। इसका प्रधान कारण अधिकांश काव्योंकी एक-एक प्रतिका ही उपलब्ध होना है। जिनकी एकसे अधिक प्रतियें प्राप्त हुई हैं वे पाठान्तर भेदोंके साथ-साथ प्रायः शुद्ध ही छपे हैं। खेद है कि कतिपय अशुद्धियां प्रेस दोष और दृष्टि दोषसे भी रह गयी हैं। शुद्धिपत्र पीछे दे दिया गया है, पाठकोंसे अनुरोध है कि उससे सुधारकर पढ़ें। अधिकांश शुद्धिपत्र जालौरसे पुरातत्त्व-वेत्ता मुनिराज श्री कल्याणविजयजीने बनाकर भेजा था। अतएव हम पूज्यश्रीके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

रास-सार

काव्योंका ऐतिहासिक सार अति संक्षिप्त और सारगर्भित लिखा गया है। पहले हमारा यह विचार था कि काव्योंके अतिरिक्त इतर सामग्रीका सम्पूर्ण उपयोग कर सार-परिचय विस्तृत लिखा जाय, परन्तु ग्रन्थ बहुत बड़ा हो जानेके कारण ऐसा न करके संक्षेपसे ही लिखना पड़ा।

अयोग्यता

यह ग्रन्थ किसी विद्वानके सम्पादकत्वमें प्रकट होता तो विशेष

सुन्दर होता, क्योंकि हमारेमें एतद् विषयक ज्ञान और अनुभवका अभाव है, परन्तु अनुभवी विद्वानका सहयोग प्राप्त न होनेपर हमने अपनी अत्यधिक साहित्यरुचि और अदम्य उत्साहसे प्रेरित हो यथासाध्य सम्पादन किया है। इस कार्यमें हमें कहां तक सफलता मिली है, यह निर्णय विद्वान पाठकों पर ही निर्भर है। हम विद्वान नहीं हैं, अभ्यासी हैं, अतः भूलोंका होना अनिवार्य है। अतएव अनुभवी विद्वानोंसे योग्य सूचना चाहते हुए क्षमा प्रार्थना करते हैं।

प्रकाशनमें विलम्ब

प्रस्तुत ग्रंथका "युगप्रधान जिनचंद्रसूरि" ग्रंथके साथ ही मुद्रण प्रारम्भ हुआ था परन्तु हमारे व्यापारिक कार्यों में व्यस्त रहने व अन्यान्य असुविधाओंके कारण प्रकाशनमें विलम्ब हुआ है। अपने व्यवसायिक कार्यों से समय कम मिलनेसे हम इसका सम्पादन मनोज्ञ और सुचारु नहीं कर सके। यदि इसकी द्वितीयावृत्तिका अवसर मिला तो ग्रंथकी सुसम्पादित व्यवस्थित आवृत्ति की जायगी।

आभार प्रदर्शन

इसकी प्रस्तावना श्रीयुक्त हीरालालजी जैन M. A. L. L. B. (प्रोफेसर एडवर्ड कालेज, अमरावती) महोदयने लिख भेजनेकी कृपा की है, अतएव हम आपके विशेप आभारी हैं।

इस ग्रन्थके "कठिन शब्द कोप" का निर्माण करनेमें माननीय ठाकुर साहेब रामसिंहजी M. A. विशारद और स्वामी नरोत्तम दासजी M.A. विशारदसे पूर्ण सहायता मिली है। सोलहवीं शताब्दी-के पहलेके काव्योंका अन्तिम प्रूफ संशोधन श्रीमान् पं० हरगोविन्द

दासजी सेठ "न्याय व्याकरणतीर्थ" ने कर देनेकी कृपा की है। श्रीयुक्त मिश्रीलालजी पालरेचा महोदयसे भी हमें संशोधनमें पूर्ण सहायता मिली है। श्रीयुक्त मोहनलाल दलीचन्द देसाई B.A.L.L.B. (वकील हाईकोर्ट, बम्बई) ने भी समय समयपर सत्परामर्श द्वारा सहायता पहुंचाई है। इसी प्रकार कतिपय काव्य उ० सुखसागरजी, मुनिवर्य रत्नमुनिजी, लब्धिमुनिजी एवं जैसलमेरवाले यतिवर्य लक्ष्मीचन्दजीने और कतिपय चित्र-ब्लाक विजयसिंहजी नाहर, साराभाइ नवाब, मुनि पुण्यविजयजी आदिकी कृपासे प्राप्त हुए हैं, एतदर्थ उन सभी, जिनके द्वारा यत्किञ्चित भी सहायता मिली हो, सहायक पूज्यों व मित्रोंके चिर कृतज्ञ हैं।

निवेदक—

अगरचन्द नाहटा,

भंवरलाल नाहटा।

काव्यरचनाकालका संक्षिप्त शताब्दी अनुक्रम*

१२ वींका शेषार्द्ध ।

कवि पाल्ह कृत खरतर पट्टावली (पृष्ठ ३६५ से ३६८) ।

१३ वींका शेषार्द्ध ।

जिनवल्लभसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६९ से ३७२),

जिनपतिसूरिधवल गीतादि (पृष्ठ ६ से १०) ।

१४ वींका पूर्वार्द्ध ।

जिनेश्वरसूरिरास (पृष्ठ ३७७ से ३८३), गुरुगुणषट्पद (पृष्ठ १ से ३) ।

शेषार्द्ध :—

जिनकुशलसूरिरास (पृष्ठ १५ से १८), जिनपद्मसूरिरास (पृष्ठ २० से २३), जिनप्रभसूरि—जिनदेवसूरिगीत (पृष्ठ ११ से १४) ।

१५ वींका पूर्वार्द्ध ।

जिनोदयसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३९ से ४०), जिनोदयसूरि रासद्वय (पृ० ३८४ से ३८९), जिनप्रभसूरि गुर्वावली (पृ० ४१-४२) ।

शेषार्द्ध :—

खरतरगुरुगुणछप्पय (पृ० २४ से ३८), खरतरगच्छगुर्वावली (पृ० ४३ से ४८), कीर्तिरत्नसूरि फाग (पृ० ४०१-२),भाव-

---

* कई कृतियोंका रचनाकाल अनुमानिक है ।

प्रभसूरिगीत (पृ० ४६-५०), शिवचूला विज्ञप्ति (पृ० ३३६), वेगड़पट्टावली (पृ० ३१२) ।

१६ वींका पूर्वार्द्ध ।

क्षेमराजगीत (पृ० १३४) ।

१६ वीं का शेषार्द्ध—

जिनदत्त स्तुति (पृ० ४), जिनचंद्र अष्टक (पृ० ५), कीर्त्तिरत्नसूरि चौ० (पृ० ५१), जिनहंससूरि गीत (पृ० ५३), क्षेमहंस कृत गुर्वावली (पृ० २१५ से २१७)

१७ वीं का पूर्वार्द्ध—

देवतिलकोपाध्याय चौ० (पृ० ५५), भावहर्ष गीत (पृ० १३५), पुण्यसागर गीत (पृ० ६७), पूज्यवाहण गीतादि (पृ० ८६, ६४, ११० से ११७), जयतपदवेलि आदि साधुकीर्त्ति गीत (पृ० ३७ से ४५), खरतर गुर्वावलि (पृ० २१८ से २२७), कीर्त्तिरत्न सूरि गीत (पृ० ४०३), दयातिलक (पृ० ४१६), यशकुशल, करमसी गीतादि (पृ० १४६, २०४), आदि ।

शेषार्द्ध—

जिनचंद्रसूरि, जिनसिंह, जिनराज, जिनसागर सूरि गीत रासादि (पृ० ५८ से १३२, १५० से २३०, ३३४, ४१७), खरतर गुर्वावलि (पृ० २२८), पि० खर० पट्टावली (पृ० ३१६), गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध (पृ० ४२३), विजयसिंह सूरि रास (पृ० ३४१), पद्महेम (पृ० ४२), समयसुन्द गीत (पृ० १४६), छप्पय (पृ० ३७३ आदि ।

१८ वीं का पूर्वार्द्ध—

जिनरंग (पृ० २३१), जिनरत्नसूरि (२३४ से २४४, ४१८), जिनचंदसूरि गीत (पृ० २४५), जिनेश्वर सूरि (पृ० ३१४), कीर्त्तिरत्न सूरि छन्द (पृ० ४०७),. जिनचंद्र (पृ० ४३०), जिनधर्म (पृ० ३३५), भावप्रमोद (पृ० २५८), सुखसागर (पृ० २५३), समयसुन्दर गीत (पृ० १४८) आदि ।

शेषार्द्ध—

जिनसुख-जिनहर्षसूरि (पृ० २६१ से २६३), शिवचंद्रसूरि रास (पृ० ३२१), जिनचंद्र (पृ० ३३७), कीर्त्तिरत्न सूरि (पृ० ४१३) आदि ।

१६ वीं का पूर्वार्द्ध—

देवविलास (पृ० २६४ से २९२), जिनलाभ-जिनचंद्र (पृ० २९३ से २९९ तथा ४१४ से ४१६) जयमाणिक्य छंद (पृ० ३१०) आदि ।

शेषार्द्ध—

जिनहर्ष, जिनसौभाग्य, जिनमहेन्द्रसूरि गीत (पृ० ३०० से ३०४); ज्ञानसार (पृ० ४३३) आदि ।

ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह

—की—

प्रस्तावना

——**——

जैन-धर्म भारतवर्षका एक प्राचीनतम धर्म है। इस धर्मके अनुयायियोंने देशके ज्ञान-विज्ञान, समाज, कला-कौशलआदि वैशिष्ट्यके विकासमें बड़ा भाग लिया है। मनुष्यमात्र, नहीं-नहीं प्राणीमात्र में परमात्मत्वकी योग्यता रखनेवाला जीव विद्यमान है। और प्रत्येक प्राणी, गिरते-उठते उसी परमात्मत्वकी ओर अग्रसर हो रहा है। इस उदार सिद्धान्तपर इस धर्मका विश्वप्रेम और विश्वबन्धुत्व स्थिर है। भिन्न-भिन्न धर्मोंके विरोधी मतों और सिद्धांतोंके बीच यह धर्म अपने स्याद्वाद नयके द्वारा सामञ्जस्य उपस्थित कर देता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक उन्नतिमें सब जीवोंके समान अधिकारका पक्षपाती है तथा सांसारिक लाभोंके लिये कलह और विद्वेपको उसने पारलौकिक सुखकी श्रेष्ठता द्वारा मिटानेका प्रयत्न किया है।

जैन-धर्मकी यह विशेषता केवल सिद्धान्तोंमें ही सीमित नहीं रही। जैन आचार्योंने उच्च-नीच, जाति-पांतका भेद न करके अपना उदार उपदेश सब मनुष्योंको सुनाया और 'अहिंसा परमो

धर्मः' के मन्त्र द्वारा उन्हें इतर प्राणियोंकी भी रक्षाके लिये तत्पर बना दिया। स्याद्वाद नयकी उदारता द्वारा जैनियोंने सभीकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। अनेक राजाओं और सम्राटोंने इस धर्मको स्वीकार किया और उसकी उदार नीतिको व्यवहारमें उतारकर चरितार्थ कर दिखाया। इन्हीं कारणोंसे अनेक संकट आनेपर भी यह धर्म आज भी प्रतिष्ठित है।

किन्तु दुखकी बात है कि धार्मिक विचारोंमें उदारता और धर्म प्रचारमें तत्परताके लिये जैनी कभी इतने प्रसिद्ध थे, वे ही आज इन बातोंमें सबसे अधिक पिछड़े हुए हैं। विश्वभरमें बन्धुत्व और प्रेम स्थापित करनेका दावा रखनेवाले जैनी आज अपने ही समाजके भीतर प्रेम और मेल नहीं रख सकते। मनुष्यमात्रको अपनेमें मिलाकर मोक्षका मार्ग दिखानेवाले जैनी आज जात-पांतकी तंग कोठरियोंमें अलग-अलग बैठ गये हैं, एक दूसरेको अपनाना पाप समझते हैं। अन्य धर्मोंके विरोधोंको भी दूर कर उनमें सामञ्जस्य उपस्थित करनेवाले आज एक ही सिद्धान्तको मानते हुए भी छोटी-छोटी-सी बातोंमें परस्पर लड़-भिड़कर अपनी अपरिमित हानि करा रहे हैं।

ऐसी परिस्थितिमें यह स्वाभाविक है कि जैन-धर्मकी कुछ अनुपम निधियां भी दृष्टिके ओझल हो जावें और उनपर किसीका ध्यान न जावे। जैनियोंका प्राचीन साहित्य बहुत विशाल, अनेकांगपूर्ण ओर उत्तम है। दर्शन और सदाचारके अतिरिक्त, इतिहासकी दृष्टिसे भी जैन-साहित्य कम महत्वका नहीं है। भारतके न जाने

कितने अन्धकारपूर्ण ऐतिहासिक कालोंपर जैन-कथा साहित्य, पट्टावलियों आदि द्वारा प्रकाश पड़ता है। लोक-प्रचारकी दृष्टिसे जैन-साहित्य कभी किसी एक ही भाषामें सीमित नहीं रहा। भिन्न-भिन्न समयकी, भिन्न-भिन्न प्रान्तकी भिन्न-भिन्न भाषाओं-में यह साहित्य खूब प्रचुर प्रमाणमें मिलता है। अर्धमागधी, शौर-सेनी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत भाषाओंका जैसा सजीव और विशाल रूप जैन-साहित्यमें मिलता है वैसा अन्यत्र नहीं। किन्तु आज स्वयं जैनी भी इस बातको अच्छी तरह नहीं जानते कि उन-का साहित्य कितना महत्वपूर्ण है। उसका पठन-पाठन व परिशीलन उतना नहीं हो रहा है, जितना होना चाहिये। इस अज्ञान और उपेक्षाके फलस्वरूप उसका अधिकांश भाग अभीतक प्रकाशमें ही नहीं आया।

वर्तमान संग्रह जैन-गीति काव्यका है। इसमें सैकड़ों गीत-संग्रह हैं, जो किसी समय कहीं-कहीं अवश्य लोकप्रिय रहे हैं और शायद घर-घरमें या तीर्थ-यात्राओंके समय गाये जाते रहे हैं। विशेषता यह है कि इन गीतोंका विषय-शृङ्गार नहीं, भक्ति है; प्रिय-प्रेयसी-चिन्तन नहीं, महापुरुष-कीर्ति-स्मरण है और इसलिये पाप-बन्धका कारण नहीं, पुण्य-निबन्ध हेतु है। ये गीत भिन्न-भिन्न सरस मनोहर राग-रागणियोंके रसास्वादके साथ-साथ परमार्थ और सदाचारमें मनकी गतिको ले जानेवाले हैं। इस संग्रहको सम्पादकोंने 'ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह' नाम दिया है, जो सर्वथा सार्थक है, क्योंकि इन गीतोंमें जिन सत्पुरुषोंका स्मरण किया गया

है, वे सब ऐतिहासिक हैं। जो घटनायें वर्णन की गयी हैं, वे सत्य हैं और हमारी ऐतिहासिक दृष्टिके भीतरकी हैं। जैन गुरुओं और मुनियोंने समय-समयपर जो धर्म प्रभावना की, राजाओं-महाराजाओं और सम्राटोंपर अपने धर्मकी उत्तमताकी धाक बैठायी और समाजके लिये अनेक धार्मिक अधिकार प्राप्त किये उनके उल्लेख इन गीतोंमें पद-पदपर मिलते हैं। विशेष ध्यान देने योग्य वे उल्लेख हैं. जिनमें मुसलमानी बादशाहोंपर प्रभाव पड़नेकी बात कही गयी है। उदाहरणार्थ—

जिनप्रभसूरिके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने अश्वपति (असपति) कुतुबुद्दीनके चित्तको प्रसन्न किया था। कुतुबुद्दीनने उनसे जैन-शासनके विषयमें अनेक प्रश्न किये थे और फिर सन्तुष्ट होकर सुल्तानने गांव और हाथियोंकी भेंट देकर उनका सम्मान करना चाहा था, पर सूरिजीने इन्हें स्वीकार नहीं किया। (पृष्ट १२, पद्य ४, ५)।

इन्हीं सूरीश्वरने संवत् १३८५ (ईस्वी सन् १३२८) की पौष सुदी ८ शनिवारको दिल्लीमें अश्वपति मुहम्मद शाहसे भेंट की थी। सुल्तानने इन्हें अपने समीप आसन दिया और नमस्कार किया। इन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा सुल्तानका मन मोह लिया। सुल्तानने भी ग्राम, हाथी, घोड़े व धन तथा यथेच्छ वस्तु देकर सूरीश्वरका सम्मान करना चाहा, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सुल्तानने उनको वड़ी भक्ति की, फरमान निकाला और जलूस निकाला तथा 'वसति' निर्माण कराई। (पृ० १३, पद्य २-६) ऐसे ही उल्लेख पृ० १४ पद्य २, व पृ० १६ पद्य ६, ७ में भी हैं।

उपर्युक्त दोनों बादशाह खिजली वंशका कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह और तुगलक वंशका मुहम्मद तुगलक होना चाहिये। जो क्रमशः सन् १३१६ और १३२५ ईस्वीमें गद्दीपर बैठे थे। इसी समयके बीच खिलजी वंशका पतन और तुगलक वंशका उत्थान हुआ था। सूरीश्वरके प्रभावसे दोनों राजवंशोंमें जैन-धर्मकी प्रभावना रही।

एक दूसरे गीतमें उल्लेख है कि जिनदत्तसूरिने बादशाह सिकन्दरशाहको अपनी करामात दिखाई और ५०० बन्दियोंको मुक्त कराया (पृ० ५४, पद्य ११ आदि)। ये सम्भवतः बहलोल लोधीके उत्तराधिकारी पुत्र सिकन्दरशाह लोधी थे, जो सन् १४८९ ईस्वीमें दिल्लीके तख्तपर बैठे और जिन्होंने पहले-पहल आगराको राजधानी बनाया।

श्री जिनचंद्रसूरिके दर्शनकी सुप्रसिद्ध मुगल-सम्राट् अकबरको बड़ी अभिलाषा हुई। उन्होंने सूरीश्वरको गुजरातसे बड़े आग्रह और सन्मानसे बुलवाया। सूरिजीने आकर उन्हें उपदेश दिया और सम्राट्ने उनकी बड़ी आव-भगत की। (पृ० ५८) यह रास संवत १६२८ में अहमदाबादमें लिखा गया।

बादशाह सलेमशाह 'दरसणिया' दीवानपर बहुत कुपित हो गये थे, तब फिर इन्हीं सूरीश्वरने गुजरातसे आकर बादशाहका क्रोध शान्त कराया और धर्मकी महिमा बढ़ाई। (पृ० ८१-८२) ये सूरीश्वर मुलतान भी गये और वहांके खान मलिकने उनका बड़ा सत्कार किया (पृ० ९६, पद्य ४)

इस प्रकारके अनेक उल्लेख इन गीतोंमें पाये जाते हैं, जो इतिहासके लिये बहुत ही उपयोगी हैं।

पर इससे भी अधिक महत्व इस संग्रहका भाषाकी दृष्टिसे है। इन कविताओंसे हिन्दीकी उत्पत्ति और क्रमविकासके इतिहासमें बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है। इसमें बारहवीं-तेरहवीं शताब्दिसे लगाकर उन्नीसवीं सदीतक अर्थात् सात-आठ सौ वर्ष की रचनायें हैं, जो भिन्न-भिन्न समयके व्याकरणके रूपोंपर प्रकाश डालती हैं। प्राचीन हिन्दी साहित्य अभीतक बहुत कम प्रकाशित हुआ है। हिन्दीकी उत्पत्ति अपभ्रंश भाषासे मानी जाती है। इस अपभ्रंश भाषाका अबसे बीस वर्ष पूर्व कोई साहित्य ही उपलब्ध नहीं था। जब सन् १९१४ में जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हर्मन याकोबी इस देशमें आये, तब उन्होंने इस भाषाके ग्रंथ प्राप्त करनेका बहुत प्रयत्न किया। सुदैवसे उन्हें एक पूर्ण स्वतन्त्र ग्रन्थ मिल गया। वह था 'भविसत्तकहा' (भविष्यदत्त कथा), जिसको उन्होंने बड़े परिश्रमसे सम्पादित करके १९१९ में जर्मनीमें ही छपाया। उसके पठन-पाठनसे हिन्दी और गुजराती आदि प्रचलित भाषाओंके पूर्व इतिहासपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा। यही एक स्वतंत्र और पूर्ण ग्रन्थ इस भाषाके प्रचारमें आ सका था। सन् १९२४ में मुझे मध्यप्रान्तीय संस्कृत प्राकृत और हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची तैयार करनेके सम्बन्धमें बरार प्रांतान्तर्गत कारंजाके दिगम्बर जैनशास्त्र भण्डारोंको देखनेका अवसर मिला। यहां मुझे अपभ्रंश भापा के लगभग एक दर्जन ग्रंथ बड़े और छोटे देखने

को मिले, जिनका सविस्तर वर्णन अवतरणों सहित मैंने उस सूची में दिया जो Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS. in C. P. & Berar के नाम से सन् १९२६ में मध्य प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित हुई। उस परिचय से विद्वत् संसार की दृष्टि इस साहित्य की ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुई। इससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस साहित्यको प्रकाशित करने तथा और साहित्यकी खोज लगानेका खूब प्रयत्न किया। हर्षका विषय है कि उस प्रयत्नके फलस्वरूप कारंजा जैन सीरीज द्वारा इस साहित्यके अब तक पांच ग्रंथ दशवीं ग्यारहवीं शताब्दिके बने हुए उत्तम रीतिसे प्रकाशित हो चुके हैं। तथा जयपुर, दिल्ली, आगरा, जसवंतनगर आदि स्थानोंके शास्त्र-भण्डारोंसे इसी अपभ्रंश भाषाके कोई ४०-५० अन्य ग्रंथोंका पता चल गया है। यह साहित्य उसकी धार्मिक व ऐतिहासिक सामग्रीके अतिरिक्त भाषाकी दृष्टिसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह भाषा प्रचीन मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी आदि प्राकृतों तथा आधुनिक हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि प्रांतीय भाषाओंके बीचकी कड़ी है। यह साहित्य जैनियोंके शास्त्र-भण्डारोंमें बहुत संगृहीत है। यथार्थमें यह जैनियोंकी एक अनुपम निधि है, क्योंकि जैन साहित्यके अतिरिक्त अन्यत्र इस भाषाके ग्रंथ बहुत ही कम पाये जाते हैं। भाषा विज्ञानके अध्येताओंको इन ग्रन्थोंका अवलोकन अनिवार्य है। पर जैनियोंका इस ओर अभी तक भी दुर्लक्ष्य है। यह साहित्य गुजरात, राज-

पूताना और मालवामें विशेष रूपसे पाया जाता है। इसमें हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओंका पूर्वरूप गुंथा हुआ है। इस भाषाके अध्ययनसे पता चल जाता है कि ये दोनों भाषायें तो मूलतः एक ही हैं।

प्रस्तुत संग्रहमें अपभ्रंशका और भी विकसित रूप पाया जाता है और उसका सिलसिला प्रायः वर्तमान कालकी भाषासे आ जुड़ता है। ये उदाहरण डिंगल भाषाके विकास पर बहुत प्रकाश डालते हैं। भाषाकी दृष्टिसे इन अवतरणोंका संशोधन और भी अधिक सावधानीसे हो सकता तो अच्छा था। किन्तु अधिकांश संग्रह शायद एक-एक ही मूल प्रति परसे किये गये हैं। अब इस ग्रंथकी ऐतिहासिक व भाषा सम्बन्धी सामग्रीका विशेष रूपसे अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। आशा है नाहटाजीका यह संग्रह एक नये पथ-प्रदर्शकका काम देगा। ऐसे ऐसे अनेक संग्रह अब प्रकाशमें आवेंगे और उनके द्वारा देशके इतिहास और भाषा विकासका मुख उज्ज्वल होगा। यह प्रयत्न अत्यन्त स्तुत्य है।

किंग एडवर्ड कालेज,
अमरावती।
२१-४-३७

हीरालाल जैन
एम० ए०, एल० एल० बी०,
प्रोफेसर आफ संस्कृत।

प्रति परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित काव्योंकी मूल प्रतियां कबकी लिखी हुई और कहांपर हैं ? इसका उल्लेख कई कृतियोंके अन्तमें यथा स्थान मुद्रित हो. चुका है। अवशेष काव्योंके प्रतियोंका परिचय इस प्रकार है :—

(अ) १ गुरुगुण षट्पद, २ जिनपति सूरि धवलगीत, ३ जिनपति-सूरि स्तूप कलश, ४ जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेकरास, ५ जिन-पद्मसूरिपट्टाभिषेकरास, ६ खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय, ७ जिनेश्वरसूरि विवाहलो, ८ जिनोदयसूरि विवाहलो, ६ जिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रास, १० जिनोदयसूरि गुण वर्णन छप्पय, ये कृतियां हमारे संग्रहकी सं० १४६३ लि० शिव-कुञ्जरके स्वाध्याय पुस्तक* (पत्र ५२१) की प्रतिसे नकल की गयी है।

(आ) १ जिनपति सूरिणाम् गीतम् , २ भावप्रभसूरि गीत, ये दो कृतियें हमारे संग्रहकी १६ वीं शताब्दीके. पूर्वार्द्धकी लिखित प्रतिसे नकल की गयी हैं।

(इ) जिनप्रभसूरि गीत नं० १, २, ३, जिनदेवसूरि गीत और

---

* ॥९०॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख मासे प्रथम पक्षे ८ दिने सोमे श्री वृहत् खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि गुरौ विजयमाने श्रीकीर्तिरत्नसूरीणां शिष्येण शिवकुंजर मुनिना निज पुण्यार्थं स्वाध्याय पुस्तिका लिखिता चिरंनन्दतात् ॥ श्री योगिनीपुरे ॥ श्री ॥

जिनप्रभसूरि परम्परा गुर्वावलीकी मूल प्रति बीकानेर वृहत् ज्ञानभण्डारमें (१५ वीं शताब्दीके पूर्वार्धकी लि०) है।

(ई) खरतर-गुरु-गुण-वर्णन-छप्पयकी द्वितीय प्रति, १७ वीं शताब्दी लि० हमारे संग्रहमें है।

(उ) पृ० ४३ में मुद्रित खरतरगच्छ पट्टावलीकी मूल प्रति तत्कालीन लि०, पत्र १ हमारे संग्रहमें है। यह पत्र कहीं कहीं उदेइ भक्षित है, अतः कहीं कहीं पाठ त्रुटक था, उसे जिनकृपाचन्द्र-सूरि ज्ञानभण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे पूर्ण किया गया है। हमारे संग्रहका पत्र, सुन्दर और शुद्ध लिखा हुआ है।

(ऊ) देवतिलकोपाध्याय चौ०, क्षेमराजगीत; राजसोम, अमृत धर्म क्षमाकल्याण अष्टक-स्तव, जिनरंगसूरि युगप्रधान पद प्राप्ति गीतकी प्रतियें तत्कालीन लि० बीकानेर वृहत् ज्ञानभण्डारमें विद्यमान है।

(ए) अकबर प्रतिबोध रासकी प्रति जयचन्द्रजीके भण्डारमें सुरक्षित है।

(ऐ) कीर्तिरत्नसूरि गीत नं० २ से ६, कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डा-रस्थ गुटकाकार प्रतिसे नकल किये गये हैं।

(ओ) अन्य प्रेषित प्रतियोंकी नकलें :—

(a) गुणप्रभसूरि प्रवन्ध, जिनचन्द्रसूरि, जिनसमुद्रसूरि गीत (४२३ से ४३२), जैसलमेरके भण्डारसे नकल-कर यतिवर्य लक्ष्मीचन्द्रजीने भेजी है।

(b) जिनहंससूरिगीत, समयसुन्दर कृत ३६ रागिणी गर्भित

जिनचन्द्रसूरिगीत, जिनमहेन्द्रसूरि और गणिनी शिवचूला विज्ञप्तिगीतकी नकल पालीताणेसे उ० सुखसागर जीने भेजी थी।

(c) जिनवल्लभसूरि गुणवर्णनकी नकल रत्नमुनिजी, शिवचन्द्र सूरिरासकी प्रति लब्धि मुनिजी (यह प्रति अभी हमारे संग्रहमें है), रत्ननिधान कृत जिनचन्द्र-सूरि गीतकी नकल (पृ० १०२), सूरत भण्डारसे पं० केशर मुनिजीने भेजी है।

(d) जिनहर्ष गीतद्वय, पाटणसे साहित्य प्रेमी मुनि यशविजयजीसे प्राप्त हुए हैं।

(औ) नीचे लिखी हुई कृतियोंके सम्पादनमें मुद्रित ग्रन्थोंकी सहायता ली गयी है।

(a) देवविलास तो अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मण्डलकी ओर से प्रकाशित ग्रन्थसे ही सम्पादन किया गया है।

(b) पल्ह कृत जिनदत्तसूरि स्तुति, अपभ्रंश काव्यत्रयी और गणधर सार्द्धशतक भाषान्तर ग्रन्थ द्वयसे पाठान्तर नोंधकर प्रकाशित की गई है।

(c) बेगड़ गुर्वावली आदि (पृ० ३१२ से ३१८) की जैन श्वेताम्बर कॉन्फरेन्स हेरल्डसे नकल की गई है।

(d) पिप्पलक खरतर पट्टावली, जै० गु० क० भा० २ और देवकुल पाटक दोनों ग्रन्थोंसे मिलान कर प्रकाशित की गई है।

(अं) "श्रीजिनोदयसूरि वीवाहलउ" की ४ प्रतियां प्राप्त हुई हैं। जिनके समस्त पाठान्तर नीचे लिखे संकेतोंसे लिखे गये हैं।

(a) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २३३)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (सं० १४९३ लि० शिवकुञ्जर स्वाध्याय पुस्तकात्) हमारे संग्रहमें।

(c) प्रति—बीकानेर स्टेट लाइब्रेरी नं० ४९८७ पत्र ३, प्राचीन प्रति

(d) प्रति—ऐतिहासिक रास संग्रह भा० ३ + (पृ० ७९)

(e) प्रति—के अन्तमें निम्नोक्त श्लोक लिखा है :—

वर्षे वाण मुनि त्रिचन्द्र गणिते, येषां प्रभूणां जनिः,
पक्षाष्टे प्रमिते व्रतं गुरुपदं पंचैक वेदैकके
स्वर्गं श्री चरणं१ च नेत्र शिवदृक् संख्ये बभूवाद्भुतं।
ते श्री सूरि जिनोदयाः सुगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलम् ॥१॥

श्रीजिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रासकी २ प्रतियां—

(a) प्रति—उपरोक्त (सं० १४९३ लि०)

(b) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ०२२८)

श्रीजिनेश्वरसूरि वीवाहलउ की ३ प्रतें—

(a) प्रति—उपरोक्त (सं० १४९३ लि०)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (हमारे संग्रहमें)

(c) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २२४)

(अः) इनके अतिरिक्त और सभी काव्योंकी प्रतियां जिनके अन्तमें अन्य स्थानका उल्लेख नहीं है, वे सब प्रतियां हमारे संग्रहमें (तत्कालीन लिखित) हैं।

———

चित्र परिचय

१—ग्रन्थ प्रकाशक श्री शंकरदानजी नाहटा—सम्पादकके पितामह हैं।

२—खरतरपट्टावली:—इसी संग्रहमें पृ० ३६५से ६८में सं० ११७०-७१ के लि० प्रतिसे मुद्रित की गई है। इसमें सं० ११७१ लि० प्रतिके फोटु वड़ौदेसे उ० सुखसागरजीने भिजवाये थे उसमें खरतर विरुद प्राप्ति सम्बन्धी उल्लेखवाले पत्रका ब्लोक बनवाकर प्रस्तुत संग्रहमें दिया गया है। खरतर विरुद प्राप्तिके प्रश्नपर यह पट्टावली बहुत महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

३-४-जिन वल्लभसूरी और जिनदत्तसूरीजीके प्रस्तुत चित्र, जैसलमेर भंडारके प्राचीन ताड़पत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित थे, उसके ब्लाक बनवाकर (अपभंश काव्यत्रयीमें मुद्रित) दिये गये हैं।

५—जिनेश्वरसूरिजीका चित्र खंभातके शांतिनाथ भंडारकी ताड़पत्रीय पर्युसणाकल्प (पत्र ८७) की प्रति, जोकि लिपि आदिके देखनेसे १३ वीं शताब्दी लि० प्रतीत होती है, के आधारसे जैन चित्र कल्पद्रुम (चित्र नं० १०४) में मुद्रित हुआ है। श्री साराभाई नवाबके सौजन्यसे हमें इसको प्रकाशित करनेका सुअवसर मिला एतदर्थ उनके आभारी हैं। उक्त ग्रंथमें इस चित्रका परिचय पृ० १४३ में इस प्रकार दिया है :—

"प्रस्तुत चित्रसे बीजा जिनेश्वरसूरिके जेओ श्री जिनपति सूरिना शिष्य हता, तेओनो होय एम लागे छे। श्रीजिनेश्वरसूरि सिंहासन उपर वेठेलाछे तेओना जमणा हाथ मां मुहपति छे अने डाबो हाथ अभय मुद्राए छे। जमणी बाजुनो तेओश्रीनो खभो खुलो छे। ऊपरना छतनां भागमां चंदरवो बांधेलो छे सिंहासन नी पाछल एक शिष्य उभो छे अने तेओनी सन्मुख एक शिष्य वाचना लेतो बेठो छे। चित्रनी जमणीबाजूए एक भक्त श्रावक वे हाथनी अंजलि जोड़ीने गुरुमहाराजनो उपदेश सांभलतो होय एम लागे छे।

६—योगविधि पत्र १३ की प्रति (सं० १५११ लि०)के अन्तिम पत्रसे ब्लाक बनाया गया है। प्रशस्ति इस प्रकार है:—'सं वत् १५११ वर्ष अषाढ़ वदी १४ चतुर्दश्यां बुधे श्री खरतर गच्छेश श्री श्री जिनभद्र सूरिभिर्लिखितमिदं ॥१॥ वा० साधुतिलक गणि-भ्यो वाचनाय प्रसादी कृतेयं प्रति।

७ - जिनचन्द्रसूरि मूर्ति:—बीकानेरके ऋषभ जिनालयमें युगप्रधान आचार्यश्रीकी सं० १६८६ जिनराजसूरि प्रतिष्ठित मूर्ति है उसीका यह ब्लोक हैं, लेख नकल देखें—युग प्रधान जिन चन्द्रसूरि पृ० १५७।५८।

८—जिनचंदसूरि हस्तलिपि :—स्व० बाबू पूरणचन्द्रजी नाहरके संग्रह (गुलाव कुमारी लाइब्रेरी) की नः ११८ कर्मस्तववृत्तिकी प्रतिसे ब्लाक बनवाया गया है, पुस्तिका लेख इस प्रकार है:—

संवत् १६११ वर्षे श्री जेसलमेरू महादुर्गे। राउल श्री

मालदेवे विजयिनि । श्री वृहत् खरतर गच्छे। श्रीजिनमाक्यि सूरि पुरंदराणां विनेय सुमतिधीरेण* लेखि स्ववाचनाय ।। श्रावण सुदि त्रयोदश्यां । शनिवारे ।।श्रीस्तात्।। ।।कल्याणंबोभोतु ।। छ० ।।

९—जिनराज सूरि-जिनरंग सूरि:—यतिवर्य्य श्री सूर्यमलजीके संग्रह (कलकत्ते)में शालिभद्र चौपई पत्र २४ की सचित्र प्रतिके अन्तिम पत्रमें यह चित्र है । लिपि लेखककी प्रशस्ति इस प्रकार है—

सं० १८५२ मि० फाल्गुण कृष्ण १२ रविवारे श्री वृहत्खरतर गच्छे उपाध्यायजी श्री विद्याधीरजी गणि शिष्य मुख्य वा० मति कुमार ग० । शिष्य लि । पं० किस्तूरचन्द मु ।

प्रति यद्यपि समकालीन नहीं है तोभी इसकी मूल आधार भूत प्रतिका समकालीन होना विशेष संभव है ।

१०--जिनहर्ष हस्तलिपि:—पाटण भंडारमें कविवरके रचित एवं स्वयं लि० स्तवनादिकी पत्र ८० की प्रतिके फोटु मुनिवर्य पुण्य विजयजीने भेजे थे उसीसे ब्लाक बनवाकर मुद्रित की गई है। मुनिश्रीने हमें उक्त प्रतिकी नकल करा भेजनेकी भी कृपा की है।

११--ज्ञानसार हस्तलिपि:—हमारे संग्रहके एक पत्रका ब्लोक बनवाकर दिया गया है।

खरतर गच्छके आचार्यों एवं विद्वानोंके और भी वहुत चित्र उपलब्ध हैं, जिन्हें हो सका तो खरतरगच्छ इतिहासमें प्रकट करनेकी इच्छा है।

---

* आचार्य पद प्राप्तिके पूर्व मुनि अवस्थाका नाम। देखे यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २३ ।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

रास सार सूची ।

—※※—

चित्र सूची ।

—*—

———

चित्र-सूचीमें परिवर्तन

चित्रोंको प्रथम रास-सारमें देनेका विचार था, पर फिर मूलमें देना उचित समझ वैसा किया गया है, तथा चित्रोंकी संख्या पूर्व १२ थी पर फिर कई अन्य आवश्यक चित्र प्राप्त हो जानेसे ६ और बढ़ा दिये गये हैं। कुल १८ चित्रोंकी सूची इस प्रकार है :—

छ चित्रोंके बढ़ जानेसे मूल्यमें भी १।) के स्थानमें १॥) करना पड़ा पुस्तकके अन्तमें भी दो नीचे लिखी बातें और जोड़ दी गइ है:—

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (द्वितीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (तृतीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (चतुर्थ विभाग)

परिशिष्ट

खरतरगच्छ पट्टावली

(जैसलमेर भाण्डागारीय सं० ११७१
लि० ताडपत्रीय प्रतिका द्वितीय पृष्ठ)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

काव्योंका ऐतिहासिक सार

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित (पृ० १२८ से २२६ में) खरतर गच्छ गुर्वावलियोंमें भगवान महावीरसे पट्ट—परम्परा इस प्रकार दी गयी है :—

गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५	गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५
÷	१ वर्द्धमान १	आर्यशान्ति	११ सुस्थित
गौतम	२ गौतम	हरिभद्र	१२ इंद्र दिन्न
सुधर्म्मा	३ सुधर्म्मा	श्यामाचार्य	१३ दिन्न सूरि
जम्बू	४ जम्बू	आर्य संडिल्ल	१४ सिंहगिरि
प्रभव	५ प्रभव	रेवती मित्र	१५ वयर स्वामी
शय्यम्भव	६ शय्यम्भव	आर्य धर्म	१६ वज्रसेन
यशोभद्र	७ यशोभद्र	आर्य गुप्त	१७ चंद्र सूरि
संभूति विजय	८ संभूतिविजय	आर्य समुद्र	१८ समंतभद्रसूरि
भद्रबाहु	÷	आर्यमंगु	१९ वृद्धदेव सूरि
स्थूलिभद्र	९ स्थूलिभद्र	आर्य सोहम	२० प्रद्योतन सूरि
आर्यमहागिरी	÷	हरिवल	२१ मानदेवसूरि
आर्यसुहस्ति*	१० आर्यसुहस्ति	भद्रगुप्त	२२ देवेन्द्र सूरि

* यहांतक दोनों गुर्वावलियोंके नामोंमें साम्य है। नं०२में भद्रबाहु और आर्यमहागिरिके नाम अधिक है, इसका कारण नं० २ युगप्रधान परम्परा और नं० ५ गुरु शिष्य परम्पराकी दृष्टिसे रचित है। इससे आगेका क्रम दोनोंमें भिन्न २ है, इसका कारण सम्भवतः नं० २ के प्राचीन अव्यवस्थित पट्टावलियोंका अनुकरण, और नं० ५ के संशोधित होनेका है।

सिंहगिरि	२३	मानतुंग	नागार्जुन	३३	रविप्रभ
वयर स्वामी	२४	वीर सूरि	गोविन्दवाचक	३४	यशोभद्र
आर्य रक्षित	२५	जयदेव सूरि	संभूतिदिन्न	३५	जिनभद्र
दुर्वलिकापुष्य	२६	देवानन्द	लोकहित	३६	हरिभद्र
आर्य नंदि	२७	विक्रमसूरि	दूष्यगणि	३७	देवचन्द
नागहस्ति	२८	नरसिंह सूरि	उमास्वाति	३८	नेमिचंद्र
रेवंत	२९	समुद्र सूरि	जिनभद्र	३९	उद्योतन
ब्रह्मदीपी	३०	मानदेव	हरिभद्र		
संडिल्ल	३१	विबुधप्रभ	देवाचार्य *		
हेमवंत	३२	जयानन्द	नेमिचन्द्र		
			उद्योतन ÷		

---

* यहांतकका क्रम भिन्न २ पट्टावलियोंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे पाया जाता है। पर इसके पश्चात्‌का क्रम सभी खरतर गच्छकी पट्टावलियोंमें एक समान है। नं० १ की पट्टावलीका (संशोधित) क्रम वज्रसेन तकका नंदिसूत्र स्थिरावली आदि प्राचीन प्रमाणोंसे प्रमाणित है, पीछेके क्रमको ऐतिहासिक दृष्टिसे परीक्षा करना परमावश्यक है पुरातत्वविद्‌ विद्वानोंका हम इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

× यहां तकके आचार्योंका गुर्वावलियोंमें नाममात्र ही उल्लेख है। ऐतिहासिक परिचय नहीं। फिर भी इनके नामोंके साथ जो ऐ० विशेषण दिये गये हैं, वे ये हैं:--जम्बूः--९९ कोटि द्रव्य त्याग, संयम ग्रहण। स्थूलिभद्रः-कोश्या प्रतिबोधक, महागिरी -- जिन कल्प तुलना कारक, सुहस्तिः--संप्रति नृपके गुरु, श्यामाचार्यः--पन्नवणा कर्त्ता, वज्रसेनः--१६वर्षायु व्रत ग्रहण, वृद्धदेवः--कुमदचन्द्र विजेता, मानदेवः--शान्ति स्तव कर्त्ता,मानतुंगः-भक्तामर, भयहर स्तोत्रकर्त्ता, वयर स्वामीः--१०पूर्वधर, उमास्वातिः--५०० प्रकरणकर्त्ता।

वर्द्धमान सूरि

(पृ० ४४)

उपरोक्त उद्योतन सूरिजीके आप मुख्य शिष्य थे। आपने आबू गिरिपर छः महीनेतक तपस्या करके सूरि मन्त्रकी साधना (शुद्धि) की, पातालवासी धरणेन्द्रदेव प्रगट हुआ, उसके सूचनानुसार वहाँ आदि-जिनकी वज्रमय प्रतिमा प्रगट हुई। इससे मंत्रीश्वर विमल दण्ड नायकको अतिशय आनन्द हुआ और गुरुश्रीके उपदेशसे उन्होंने वहां नंदीश्वर प्रसादके समान, चिरस्मरणीय यशःपुञ्ज स्वरूप 'विमल वसही' बनाई। पूज्य श्रीके अतिशय प्रभावसे मिथ्यात्वीयोगी आदि हतप्रभाव हुए और जैन शासनका जयवाद फैला, आपका विशेष परिचय गणधर सार्द्धशतक बृहद् वृत्ति, पट्टावलियों और युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० ६) में देखना चाहिये।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ४४)

श्री वर्द्धमान सूरिजीके आप सुशिष्य थे। आपने गुजरातके अणहिल्लपाटणके भूपति दुर्लभराजके सभामें ८४ मठपति (चैत्यवासी) आचार्योंको, जो कि मन्दिरोंमें रहा करते थे, परास्त कर चैत्य-वासका उत्थापन और वसतिवास-सुविहित मुनिमार्ग का स्थापन किया था। नृपति दुर्लभराज आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर कहने लगे कि:— इस कलिकालमें कठिन और खरे चारित्रधारक साधु आप ही हैं। नृपतिके वचनानुसार तभीसे खरतर विरुदकी प्रसिद्धि हुई।

विशेष चरित्र सामग्री और ग्रन्थ निर्माणकी सूचि देखें :—युग प्रधान जिनचन्द सूरि पृ० १०

अभय देवसूरि

(पृष्ठ ४५)

आप श्री जिनेश्वर सूरिजीके शिष्य थे। आपने ६ अंग-सूत्रों पर वृत्ति बनाई और जयतिहूअण स्त्रोत्रकी रचना कर स्तंभन-पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा प्रकट की। श्रीमंधर स्वामीने आपके गुणोंकी प्रशंसा की और धरणेन्द, पद्मावती आपकी सेवा करते थे। विशेष देखें: यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १२

जिनवल्लभसूरि

पृ० १,४६

आप अभयदेवसूरजीके पट्टधर थे। पिन्डविशुद्धि प्रकरणकी आपने रचना की थी एवं बागड़ देशमें धर्म प्रचार कर १० हजार (नये) जैनश्रावक बनाये थे। चितौड़में चमुंडा देवीको आपने प्रतिबोध दिया था। सं० ११६७ के आषाढ़ शुक्ला षष्टीको चित्तौड़के महावीर चैत्यमें आपको देवभद्र सूरिजीने आचार्य पद प्रदान कर श्रीजिन अभयदेव सूरिके पदपर स्थापित किया।

विशेष चरित्रके लिये गण० शा० वृत्ति और कृतियोंके लिये युगप्रधान जिनचन्द सूरि पृष्ट १२ देखना चाहिये।

जिनदत्त सूरि

(पृ० १४, ४६, ३७३)

वाछिग मन्त्री (धुन्धुका वास्तव्य) की धर्मपत्नी बाहड़ देवीकी कुक्षीसे सं० ११३२ में आपका जन्म हुआ। सं० ११४१ में दीक्षा ग्रहण की। सं ११६९ वै० कृ० ६ चित्तौड़के वीर जिनालयमें

जिनवल्लभ सूरिजीके पदपर देवभद्राचार्यने (पद) स्थापना की। उज्जयन्त पर अम्बिका देवीने अंबड़ (नाग देव) श्रावकके आराधन करनेपर उसके हाथमें स्वर्णाक्षर लिख दिये और कहा कि जो इन्हें पढ़ सकेंगे उन्हींको युगप्रधान जानना। अंबड़ सर्वत्र घूमा, पर उन अक्षरोंको कोई भी आचार्य न पढ़ सके। आखिर पाटणमें जिनदत्त सूरिजीने अंबड़के हाथपर वासक्षेपका प्रक्षेपन कर उन अक्षरोंको शिष्य द्वारा पढ़ सुनाये, तभीसे आप युगप्रधान बिरुदसे प्रसिद्ध हुए।

आपने चौसठ योगिनी और बावन वीरों (क्षेत्रपाल) को जीता था और भूत-प्रेत आदि तो आपके नामस्मरण मात्रसे पास नहीं आ सकते, सूरि मन्त्रके प्रभावसे धरणेन्द्रको साधन किया था और एक लाख श्रावक श्राविकाओंको प्रतिबोध दिया था। विक्रमपुरमें सर्व संघको मारि रोग निवारण कर अभय दान दिया और ऋषभ जिनालयकी प्रतिष्ठा की। त्रिभुवन गिरिके नृपति कुमारपालको प्रतिबोध दिया।५०० व्यक्तियोंको जैनमुनियोंको दीक्षा दी। उज्जैनीमें योगिनी (६४) चक्रको ध्यानबलसे प्रतिबोधा। आज भी आपके चमत्कार प्रत्यक्ष है और स्मरण मात्रसे मन-वांच्छित फल प्रदान करते हैं। सांभर (अजमेर) नरेश (अर्णोराज) को जैन-धर्मका प्रतिबोध दिया था। आपके हस्त दीक्षित साधुओंकी संख्या १५०० थी (पृः ४६)। इस प्रकार आप-अपने महान व्यक्तित्वसे यशस्वी जीवन द्वारा चिरस्मीरणीय होकर संः १२११ के आषाढ़ शुक्ला ११ को अजमेर नगरमें स्वर्ग सिधारे।

पृ०३७३ से ३७६में प्रकाशित अवदात छप्पयोंके अपूर्ण× (आदि अंत त्रु०) होनेके कारण वर्णित विषयका स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। अतः अन्य साधनोंके आधारसे इस विषयमें जो कुछ जाना गया है, उसका अति संक्षिप्त सार यहां दिया जाता है:—

कनौजमें सीहोजी+ नामक भूपति राजा राज्य करते थे, एक बार उन्होंने यात्रार्थ द्वारिका जानेका विचार कर राज्यभार अपने छोटे भाईको देकर कुंअर आसथान (जो कि उनके यदुवंशी राणीके पुत्र थे) एवं ५०० सैनिकोंके साथ प्रस्थान किया। सिहांजी जब मारवाड़ पधारे तो राणीने एक स्वप्न देखा। × × ×

इधर मारवाड़ प्रान्तके पाली शहरमें ब्राह्मण यशोधर राज्य करते थे। उस समय खेड़ नगरके गुहलवंशी राजा महेशने पालीपर चढ़ाई कर दी, इससे भयभ्रान्त हो यशोधर नगर रक्षणका उपाय सोचने लगे कि किसी सिद्ध पुरुषकी शरण ली जाय। परामर्श करनेपर ज्ञात हुआ कि खरतर गच्छ नायक श्री जिनदत्त सूरिजीका यहीं चतुर्मास है और वे बड़े ही चमत्कारी हैं। उनके मुख्य कार्य कलाप ये हैं :—

×छप्पयोंकी पूर्ण प्रति किसी सज्जनको कहीं प्राप्त हो तो हमें भेजनेकी कृपा करें। छप्पयोंकी आदि अन्तकी संख्या, सम्बन्ध व प्रतिके पत्रसंख्याके हिसाबसे यह वर्णन बहुत बड़ा होना सम्भव है।

+आधुनिक इतिहासकारोंके मतसे सींहोजीका जन्म सं० १२५१ कन्नौजसे आना १२६८ और स्वर्ग सं० १३३० है। अतः जिनदत्तसूरिका उनके साथ सम्बन्ध होना कहांतक ठीक है, नहीं कहा जा सकता।

१ :—मुलतानमें पांच नदीके पांचो पीर आपके सेवक बने। माणिभद्र यक्ष एवं बावन वीर भी आपकी सेवामें हाजिर रहा करते थे।

२ :—मुलतानमें प्रवेशोत्सव समय (भीड़में कुचलकर) मूगलपुत्र मर गया था, उसे आपने पुनः जीवित कर सबको आश्चर्यान्वित कर दिया।

३ :—चोसठ योगनियोंके स्त्री रूप धारण कर व्याख्यानमें छलनेको आने पर उन्हें मन्त्रित पाटों पर बैठाकर, कीलित कर दिया। आखिर वे गुरुजीसे प्रार्थना कर मुक्त हो, जाते समय ७ वरदान दे गई, जो इस प्रकार हैं :—

(१) प्रत्येक ग्राम और नगरमें एक श्रावक ऋद्धिवंत होगा।

(१) आपके नाम लेनेवालेपर बिजली नहीं गिरेगी।

(३) सिन्धु देशमें आपके श्रावकोंको विशेष लाभ होगा।

(४) आपके नाम स्मरणसे भूत-प्रेत एवं चौरादिका भय, ज्वरादि रोग दूर होंगे। एवं शाकिनी नहीं छल सकेगी।

(५) खरतर श्रावक प्रायः निर्धन न होगा और कुमरणसे नहीं मरेगा।

(६) आपके स्मरणसे जलसे पार उतर जायगा, पानीमें नहीं डूबेगा।

(७) बालब्रह्मचारिणी साध्वीको ऋतुधर्म नहीं आयगा।

४ :—उज्जैनीके स्तम्भमेंसे ध्यानबलसे विद्यामन्त्रकी पुस्तक ग्रहण की, उसमेंसे स्वर्णसिद्धि आदि विद्यायें ग्रहण कर चित्तौड़के भंडारमें स्थापित की। उस पुस्तकको हेमचन्द्राचार्यके कथनसे कुमारपाल नृपतिने मंगाई, पर उसे खोलनेका (ग्रन्थके ऊपर) निषेध लिखा हुआ होनेपर भी हेमचन्द्राचार्यकी बहिन-साध्वीके पुस्तकके बन्डलको खोलनेपर वे नेत्रहीन हो गयीं और पुस्तक उड़कर जेसलमेरके भण्डारमें जा गिरी। वहां चोसठ योग-नियां उनकी रक्षा करती हैं।

५ :—प्रतिक्रमणके समय पड़ती हुई बिजलीको रोक दी।

६ :—विक्रमपुरमें मृगीके उपद्रव होनेपर 'तंजयउ' स्त्रोत्र रचकर शांति की। वहां महेश्वरी, डागा, लुणिया आदि १५०० श्रावकोंको प्रतिबोध दिया।

इस प्रकार गुरुजीकी प्रशंसा सुनकर उनसे यशोधरने राज्य रक्षण की प्रार्थना की। गुरुजीने उपरोक्त सिंहोजीको वहांका राज्य दिलवाकर उस राज्यकी रक्षा की, तभीसे राठोड़, खरतर आचार्योंको अपना गुरु मानने लगे।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० ५)

सं० ११९७ भाद्र शुक्ला ८ को रासलकी पत्नी देहल्णदेकी कुक्षिसे आप जन्मे थे। सं० १२०३ फाल्गुन शुक्ला ९ को ६ वर्षकी लघुवयमें ही जिनदत्त सूरिके समीप दीक्षा ग्रहण की। सं० १२०५ वैशाख शुक्ला षष्ठीको विक्रमपुरमें श्री जिनदत्त सूरजीने अपने पट्टे-

पर स्थापित किया था। कहा जाता है कि आपके भालस्थलपर मणि थी। अतः नरमणिमण्डित (भाल स्थल) नाम (संज्ञा) से आपकी सर्वत्र प्रसिद्धि है।

सं० १२२३ भाद्र कृष्ण चतुर्दसीको दिल्लीमें आपका स्वर्गवास हुआ।

जिनपति सूरि

(पृ० ६ से १०)

मरुस्थलके विक्रमपुर निवासी माल्हू यशोवर्द्धनकी भार्या सूहव-देकी कुक्षिसे सं० १२१० चैत्र कृष्ण अष्टमीके दिन आपका जन्म हुआ था। आपका जन्मका शुभ नाम 'नरपति' रखा गया। सं० १२१८ फाल्गुन कृष्ण १० को जिनचन्द्र सूरिजीके पास भीम-पल्लीमें आपने दीक्षा ग्रहण कर सर्व सिद्धान्तोंका अध्ययन किया।

सं० १२२३ कार्तिक शुक्ला १३ वब्बेरकपुरमें जयदेवाचार्यने श्री जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापन कर आपका नाम जिनपति सूरि रखा, इसके पश्चात् आपने अपनी अद्वितीय मेधा व प्रतिभासे ३६ वादोंमें अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज एवं जयसिंह आदिके राज्य-सभामें विजय प्राप्त की। वादी रूपी हस्तियोंके विदीर्णार्थ आप सिंहके समान थे। आपने बहुतसे शिष्योंको दीक्षा दी। अनेकों जिन बिम्बों आदिकी प्रतिष्ठायें की। शासन देवी आपके पादपद्मोंकी सेवा करती थी और जालन्धरा देवीको आपने रञ्जित किया था। खरतर गच्छकी मर्यादा (विधि) आपने ही सुव्यवस्थित की थी।

मरुकोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रजी (षष्टि शतककर्त्ता) सद्गुरुके शोधमें १२ वर्ष तक पर्यटन करते हुए पाटण पधारे और आपके सद्गुणोंसे प्रतिबोधको प्राप्त हुए। इतना ही नहीं, भण्डारीजीके पुत्रने आपके पास दीक्षा ग्रहण की थी। वास्तवमें आप युग-प्रधान आचार्य थे।

इस प्रकार स्वपर कल्याण करते हुए सं० १२७७ आषाढ़ शुक्ला १० को पाल्हणपुरमें स्वर्ग सिधारे। वहाँ संघने स्तूप बनवाया।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ३७७)

मरुस्थलके शिरोमणि मरोट कोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रकी भार्या लक्ष्मणीकी कुक्षिसे सं० १२४५ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को आपका जन्म हुआ था। अम्बिका देवीके स्वप्नानुसार आपका जन्म नाम 'अम्बड़' रखा गया।

श्री जिनपति सूरिजीके सदुपदेशसे वैराग्य वासित होकर आपने अपने माता-पितासे प्रवज्या ग्रहण करनेकी आज्ञा मांगी, माताश्रीने संयमकी दुर्द्धरता बतलाई पर उत्कट वैराग्यवानको वह असार ज्ञात हुई; क्योंकि आपका ज्ञान-गर्भित वैराग्य संसारके दुखोंसे विलग होनेके लिये ही हुआ था।

सं० १२५८ चैत्र कृष्णा २ खेड़ नगरके शान्ति जिनालयमें श्री जिनपति सूरजीने दीक्षित कर आपका नाम वीरप्रभ रखा, आप सर्वसिद्धान्तोंका अवगाहन कर श्री जिनपति सूरिके पदपर सुशोभित हुए। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात् आप जिनश्वर सूरि नामसे

प्रसिद्ध हुए। आपने अनेक देशोंमें विहार कर वहुतसे भव्यात्माओं-को प्रतिवोध दिया। इस प्रकार धर्म प्रचार करते हुए आप जालोर पधारे और अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर अपने सुशिष्य वाचनाचार्य प्रवोध मूर्तिको अपने पदपर स्थापित कर जिनप्रवोध सूरि नाम स्थापना की और वहीं अनशन आराधना कर सं० १३३१ के आश्विन कृष्णा ६ को स्वर्ग सिधारे।

जिन प्रवोध सूरि उल्लेख :—गुर्वावलियोंमें

जिनचन्द्र सूरि " "

श्री जिन कुशलसूरिजो विरचित 'जिनचन्द्र सूरि चतुःसप्तिका' प्राप्त हुई है। ग्रन्थ विस्तार भयसे उसे प्रगट नहीं की गयी, मात्र उसका सार नीचे दिया जाता है।

मारवाड़ प्रान्तमें समीयाणा (सम्माणथणि) नगरके मन्त्री देवराजकी पत्नी कोमल देवीकी रत्नगर्भा कुक्षिसे सं० १३२४ मार्ग-शीर्ष शुक्ला ४ को आपका जन्म हुआ था। आपका जन्म नाम खंभराय रखा गया। खंभराय क्रमशः वयके साथ-साथ गुणोंसे भी वढ़ते हुए जव ६ वर्षके हुए तव श्री जिवप्रवोध सूरिकी देशना श्रवणका सुअवसर मिला। उनके उपदेशसे प्रतिवोध कर सं० १३३२ के जेठ शुक्ला ३ को गुरुश्रीके समीप प्रव्रज्या ग्रहण की। पूज्य श्रीने आपका नाम "क्षेमकीर्त्ति" रखा। दीक्षाके अनन्तर आपने व्याकरण, छंद, नाटक, सिद्धान्त आदिका अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

विक्रमपुर स्थित महावीर प्रतिमाके ध्यान बलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर श्री जिनप्रबोधसूरिजी जावालपुर पधारे और वहां क्षेमकीर्त्तिजीको स्वहस्त कमलसे सं० १३४१ वै० शु० ३ अक्षय तृतीयाको वीर चैत्यमें बड़े महोत्सवपूर्वक आचार्य पद प्रदान कर गच्छभार सौंपकर जिनप्रबोधसूरिजी स्वर्ग सिधारे। आचार्य पदके अनन्तर आपका शुभ नाम जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध किया गया। आपके रूप लावण्य और गुण सचमुच सराहनीय थे। श्रीकर्णदेव जैत्रसिंह, और समरसिंहजी भूपति त्रय आपकी सेवा करनेमें अपना अहोभाग्य समझते थे। आपने बिम्ब प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं पद प्रदानादि कर अनेकानेक धर्मप्रभावनाकी। शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंकी यात्रा की। एवं गुजरात, सिन्ध, मारवाड़, सवालक्षदेश, बागड़, दिल्ली आदि देशोंमें विहार कर धर्म प्रचार किया। सं० १३७६ के आषाढ़ शुक्ल ६ को राजेन्द्रचन्द्र सूरिजीको अपने पदपर कुशल कीर्त्तिको स्थापन करने आदिकी शिक्षा देकर अनशन आराधनापूर्वक स्वर्ग सिधारे।

जिनकुशल सूरि

(पृ० १५ से १६)

अणहिल्ल पटणाधीश दुर्लभराज (की सभामें चैत्यवासियोंको परास्त कर) के समय वसतिमार्गप्रकाशक जिनेश्वर सूरि (प्रथम) के पट्टपर संवेगरंगशालाके कर्त्ता जिनचन्द्र सूरि, नवांगीवृत्तिकर्त्ता अभयदेव सूरि कि जिन्होंने (स्तम्भन) पार्श्वनाथके प्रसादसे धरणेन्द्र पद्मावती आदि देवोंको साधित किये, उनके पट्टपर संवेगीशिरोमणि

और चितौडस्थ चामुण्डा देवीको प्रतिबोध देनेवाले जिनवल्लभसूरि और उनके पट्टधर योगिराज जिनदत्त सूरि हुए कि जिन्होंने ज्ञानध्यानके प्रभावसे योगिनियां आदि दुष्ट देवोंको किंकर बना लिये थे। उनके पदपर सकल कला-सम्पन्न जिनचन्द्र सूरि और उनके पट्टधर-वादियों रूप गजोंके विदारणमें सिंह सादृश (वादी मानमर्दन) जिन-पति सूरिजी हुए।

जिनपति सूरिके जिनेश्वर सूरि उनके पट्टधर जिनप्रबोध सूरि और उनके पट्टधर जिनचन्द्र सूरि हुए, जिन्होंने बहुत देशोंमें सुविहित विहारकर त्रिभुवनमें प्रसिद्धी प्राप्त की एवं सुरताण (सम्राट्) कुत-बुद्दीनको रंजित किया था, उनके पट्टधर जिनकुशल सूरि हुए, जिनके पदस्थापनाका वृतान्त इस प्रकार है:—

दीनोद्धारक कल्पतरु और महान् राज्य प्रसादप्राप्त मन्त्री देव-राजके पुत्र जेल्हेकी पत्नि जयत श्रीके पुत्ररत्न कि जिनका दीक्षित नाम वाचनाचार्य कुशलकीर्त्ति था, को राजेन्द्रचन्द्र सूरिने पाटणमें जिन-चन्द सूरिके पदपर स्थापित किया। उस समय दिल्ली वास्तव्य महती-याण ठक्कुर विजय सिंह एवं पाटणके ओसवाल तेजपाल व उनका लघुभ्राता रूद्रपालने श्रीराजेन्द्रचन्द्र सूरि और विवेकसमुद्रोपाध्यायसे पद महोत्सव करनेका आदेश मांगा और उनकी आज्ञा प्राप्तकर सर्वत्र कुंकुंम-पत्रीकाएं प्रेपित कर बड़ा महोत्सव प्रारम्भ किया। सं० १३७७ के ज्येष्ठ कृष्णा एकादशीके दिन जिनालयको देवविमानके सादृश सुशोभित कर जिनेश्वर प्रभुके समक्ष राजेन्द्रचन्द्र सूरिने वा० कुशलकीर्त्तिको जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापित कर 'जिनकुशल

सूरि' नाम स्थापना की, उस समय अनेक देशोंके संघ आये थे, वाजित्रोंके नादसे आकाशमण्डल व्याप्त हो गया था। महतीयाण विजय सिंहने खूब गुरुभक्ति की, देश-विदेश विख्यात सामलवंशी वीरदेवने स्वधर्मीवात्सल्य किया। उस समय ७०० साधु, २४०० साध्वीयोंको तेजपाल, रुद्रपालने अपने घर आमंत्रित कर वस्त्र परि-धापन किया। अणहिल्ल पाटणकी शोभा उस समय बड़ी दर्शनीय और चित्ताकर्षक थी। महोत्सव करनेवाले तेजपालको सभी लोग बड़ी उत्सुकतासे देख रहे थे। इस प्रकार युगप्रधान पद महोत्सव कर सचमुच तेजपालने बड़ी ख्याति प्राप्त की।

आपका विशेष परिचय खरतरगच्छ गुर्वावली और पट्टावलियोंमें पाया जाता है। उक्त गुर्वावली यथावसर हमारी ओरसे सानुवाद प्रकाशित होगी। आपकी रचित "चैत्यवंदन कुलक वृत्ति" प्रकाशित हो चुकी है।

जिनपद्मसूरि

(पृ० २० से २३)

उपरोक्त श्री जिनकुशल सूरिजी महिमंडलमें विचरते हुए देरावर पधारे। वहां व्रत ग्रहण, मालाग्रहण, पदस्थापन आदि अनेक धर्मकृत्य हुए। सूरिजीने अपना आयुष्यका अन्त निकट ज्ञातकर (तरुणप्रभ) आचार्यको अपने पद (स्थापन) आदि की समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। इसी समय सिन्धु देशके राणु नगर वास्तव्य रीहड श्रावक पुनचन्दके पुत्र हरिपाल देरावर पधारे और युगप्रधान पद-महोत्सव करनेकी आज्ञाके लिये तरुणप्रभाचार्यसे विनीत प्रार्थना की और आज्ञा प्राप्त

कर दशोंदिशाओंके संघोंको कुंकुम-पत्रीयों द्वारा आमंत्रित किये, संघ आये।

प्रसिद्ध खीमड कुलके लक्ष्मीधरके पुत्र आंबाशाहकी पत्नीकी कुक्षि सरोवरसे उत्पन्न राजहंसके सादृश पद्मसूरिजी को सं०१३८९ ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी सोमवारको ध्वजा पताका, तोरण वंदनमालादिसे अलंकृत आदीश्वर जिनालयमें नांन्दिस्थापन विधिसह श्री सरस्वती कंठाभरण तरुण प्रभाचार्य (षडावश्यक बालावबोधकर्त्ता) ने जिन-कुशल सूरिजीके पदपर स्थापित कर जिनपद्म सूरि नाम प्रसिद्ध किया। उस समय चारों ओर जयजय शब्द हो रहा था। रमणियां हर्षसे नृत्य कर रहीं थीं। लोगोंके हृदयमें हर्षका पार न था। शाह हरिपालने संघभक्ति (स्वामिवात्सल्यादि) एवं गुरुभक्ति (वस्त्रदानादि) के साथ युगप्रधान पद महोत्सव बड़े समारोहके साथ किया।

पाटण संघने आपको (बालधवल) कुर्चाल सरस्वती विरुद दिया। (पृ० ४७)

जिनचन्द्र सूरि (उ० गुर्वावलिमें)

जिनोदय सूरि (पृ० ३८४से ३९४)

चन्द्रगच्छ और वज्रशाखामें श्री अभयदेवसूरिजी हुए.उनके पट्टानु-क्रममें सरस्वती कण्ठाभरण जिनवल्लभ सूरि, विधिमार्ग प्रकाशक जिनदत्तसूरि, कामदेव सादृश रूपवान् जिनचन्द्रसूरि, वादिगज केशरी जिनपत्ति सूरि, भक्तजन कल्पवृक्ष जिनेश्वर सूरि, सकलकला सम्पन्न जिनप्रबोध सूरि, भवोदधिपोत जिनचन्द्र सूरि, सिन्धुदेशमें विहित

विहार कर जिनधर्म प्रचारक जिनकुशल सूरि, सुरगुरु अवतार जिनपद्म सूरि, शासन शृङ्गार जिनलब्धि सूरिके पट्ट प्रभाकर तेजस्वी जिनचन्द्रसूरि ज्ञाननीर वर्षाते हुए खंभाते पधारे और (आयुष्यका अन्त जान, तरुण प्रभ) आचार्य को गच्छ और पद स्थापनादिकी समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे।

इसी समय दिल्ली वास्तव्य श्रीमाल रुद्रपाल, नींबा सधराके पुत्र संघवी रतना पूनिग सदगुरुवर्यको वन्दनार्थ खंभात आये और उन्होंने श्रीतरुणप्रभाचार्यको वन्दनकर पद महोत्सवकी आज्ञा ले ली। सं० १४१५ के आषाढ़ कृष्ण १३ को हजारों लोगोंके समक्ष अजित-जिनालयमें आचार्यश्रीने वाचनाचार्य सोमप्रभको गच्छनायक पद देकर जिनोदय सूरि नाम स्थापनाकी। संघवी रतना, पूनाने उस समय बड़ा भारी उत्सव किया। लोगोंके जयजयारवसे गगन मण्डल व्याप्त हो गया। वाजित्र बजने लगे, याचक लोग कलरव (शोर) करने लगे, कहीं सुन्दर रास (खेल) हो रहे थे, कहीं मृदुभाषिणी कुलाङ्गनायें मङ्गल गीत गा रही थीं। इस प्रकार वह उत्सव अतिशय नयनाभिराम था। संघवी रतना पूना और शाह वस्तपालने याचकोंको वांछित दान दिया, चतुर्विध संघकी बड़ी भक्ति और विनयसे पूजाकी, साधर्मी वात्सल्यादि सत्कार्यों में अपनी चपला लक्ष्मीको खुले हाथ व्ययकर जीवनको सार्थक बनाया, उस समय साल्हिग और गुणराजने भी याचकोंको बहुत दान दिये। उपरोक्त वर्णन ज्ञानकलश कृत रासके अनुसार लिखा गया है।

मेरुसदन कृत विवाहलेके अनुसार श्रीजिनोदयसूरिका विशेष परिचय इस प्रकार है—

गूर्जरधरा रूपी सुन्दरीके हृदयपर रत्नोंके हारके भांति पाल्हणपुर नगर है। उसमें व्यापारी मुख्य माल्हू शाखाके (शाह रतनिग कुल मण्डल) रुद्रपाल श्रेष्ठि निवास करते थे। सं० १३७५ में उनकी भार्या धारल देवीके कुक्षि सरोवरसे राजहंसके सदृश पुत्र उत्पन्न हुआ। माता पिताने उसका शुभ नाम समरा रखा। चन्द्रकलाके भांति समरा कुमर दिनोदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगा।

इधर पाल्हणपुरमें किसी समय श्री जिनकुशलसूरिजी का शुभागमन हुआ। धर्म-प्रेमी रुद्रपालने सपरिवार गुरुजीको वन्दन कर धर्म श्रवण किया। सूरिजीने समरा कुमरके शुभ लक्षणोंको देख (आश्चर्यान्वित होकर) रुद्रपालको उसे दीक्षित करनेका उपदेश देकर आप भीमपल्ली पधारे। इधर माताके खोलेमें बैठे कुमरने सूरिजीके पास दिक्षा कुमारीसे विवाह करानेकी प्रार्थना की। माताने संयम पालनकी दुष्करता, उसकी लघु अवस्था आदि बतलाकर वहुत समझाया, पर वैरागी समराने अपना दृढ़ निश्चय प्रगट किया। अतः इच्छा नहीं होते हुए भी पुत्रके अत्याग्रहसे रुद्रपालने सपरिवार भीमपल्ली जाकर वीर जिनालयमें नांदिस्थापन कर जिनकुशलसूरिके हस्तकमलसे समरा कुमरको सं० १३८२ में दीक्षा दिलाई। कालिकाचार्यके साथ सरस्वती वहनने दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार समराकुमरके साथ उसकी बहिन कील्हूने दीक्षा ग्रहण की। गुरुने समरेकुमरका नाम 'सोमप्रभ' रखा। सोमप्रभ मुनि अब बड़े

मनोयोगसे विद्याध्यन करने लगे और समस्त शास्त्रोंके पारंगत बने। सोमप्रभकी योग्यतासे प्रसन्न हो गुरुश्रीने सं० १४०६ में जेसलमेरमें 'वाचनाचार्य' पद प्रदान किया। वाचनाचार्यजी सुविहित विहार करते हुए धर्म प्रचार करने लगे।

इस प्रकार धर्मोन्नति करते हुए सोमप्रभजीको सं० १४१५ आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशीको खंभातमें श्री तरुणप्रभाचार्यने जिन चंद्र-सूरिके पदपर स्थापित किये। पदस्थापनका विशेष वर्णन ऊपर आ ही चुका है।

आचार्यपद प्राप्तके अनन्तर श्री जिनोदय सूरिजीने सिंध, गुजरात, मेवाड़ आदि देशोंमें विहार कर सुविहित मार्गका प्रचार किया। पांच स्थानोंमें बड़ी प्रतिष्ठायें की, २४ शिष्यों १४ शिष्यणियोंको दीक्षित किये, अनेकोंको संघवी, आचार्य, उपाध्याय, वाचनाचार्य महत्तरा आदि पदसे अलंकृत किये। इस प्रकार धर्म प्रभावना करते हुए सं० १४३२ के भाद्र कृष्णा एकादशीको पाटणमें लोकहिताचार्यको शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। संघने आपके अन्तक्रिया स्थलपर सुन्दर स्तूप बनाकर भक्ति प्रदर्शित की।

जिनराज सूरि
उ० गुर्वावलियोंमें

जिनभद्र सूरि
"

जिनचन्द्र सूरि
पृ० ४८

साहु शाखाके वच्छराजकी भार्या स्याणीके कुक्षिसे आप जन्मे थे।

जिन समुद्रसूरि
उ० गुर्वावलियोंमें

खरतर गुरुगुण छप्पय और गुरुगुण षट्पद्का सार

प० १ से ३ एवं २४ से ४०

नाम पदस्थापनासंवत मिती स्थान जिनालय पददाता

जिनवल्लभः—सं० ११६७ आषाढ़ शुक्ला ६ चित्तौड़, महावीर, देवभद्रसूरि

जिनदत्तः—सं० ११६६ वैशाख कृष्णा ६ „ „ „

जिनचन्द्रः—सं० १२०५ वैशाख शुक्ला ६ विक्रमपुर, „ जिनदत्तसूरि

जिनपतिः—सं०१२२३ कार्तिक शुक्ला १३ बब्बेरपुर, जयदेवसूरि

जिनेश्वरः—सं० १२७८ माह शुक्ला ६ जालौर, „ सर्वदेवसूरि

जिनप्रबोध—सं० १३३१ आश्विन (कृष्णा) ५ „

जिनचन्द्रः—सं० १३४१ वैशाख शुक्ला ३ „

जिनकुशलः—सं० १३७७ ज्येष्ठ कृष्णा ११ पाटण,

जिनपद्मसूरिः—सं० १३६० ज्येष्ठ शु० ६ देरावर,

जिनलब्धिः—सं० १४०० आषाढ़ कृष्णा १

जिनचन्द्रः—सं० १४०६ माह शुक्ला १० जैसलमेर,

जिनोदयः—सं० १४१५ आषाढ़ कृष्णा १३ खंभात, अजित,

जिनराजः—१४३३ फाल्गुण कृष्णा ६ पाटण, शांति, लोकहिताचार्य

जिनभद्र—सं० १४७५ माह (शु० १५)भाणशलि,
अजित, सागरचंद्राचार्य

अन्य महत्वके उल्लेखः—(गा २०) सं० १०८० पाटग दुर्लभ सभा चैत्यवासी विजय, जिनेश्वर सूरिको खरतर विरुद प्राप्ति,(गा० २१) गौतमके १५०० तापसोंका प्रतिबोध, (द्वि०गा २२)कालिकाचार्यका चतुर्थीको पर्यूषण करना,(गा २३)में जिनदत्त सूरिका युगप्रधानपद,(गा० ३०)में दशारणभद्रका

जिनहंससूरि

पृ० ५३

जिनहंस सूरिजीका सूरिपद महोत्सव करमसिंहने एक लाख पीरोजी खरचकर वड़े समारोहसे किया। आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर अनेक देशोंमें विहार करते हुए आप आगरे पधारे। श्रीमाल डुंगरसी और उनके भ्राता पामदत्तने अतिशय हर्षोत्साहसे प्रवेशोत्सव बड़े धूमधामसे किया, सजावट बड़ी दर्शनीय की गई, लोगोंकी भीड़से मार्ग संकीर्ण हो गये, पातशाह स्वयं हाथीके होदे उम्बर खान, वजीर इत्यादि राज्यके अमलदारोंके साथ सामने आये, वाजित्र बज रहे थे। श्राविकायें मंगलकलश मस्तकपर धारण कर गुरुश्रीको मोतियोंसे बधा रहीं थीं। रजत मुद्रा (रुपये) के साथ पान (ताम्बूल) दिये गये, इससे बड़ा यश फैला और दिल्लीपति सिकन्दर पातशाहको यह जान बड़ा आश्चर्य उत्पन्न हुआ। उन्होंने सूरिजीको राजसभा (दीवानखाना) में आमंत्रित कर करामात दिखानेको कहा, क्योंकि सम्राटके खरतर जिनप्रभसूरिजीके करामात (चमत्कार) की वातें, पहिले लोगोंसे सुनी हुई थी। पूज्यश्रीने तपस्याके साथ ध्यान करना प्रारम्भ किया, यथासमय जिनदत्तसूरिजीके प्रसाद एवं ६४ योगिनीयोंके सानिध्यसे किसी चमत्कार विशेषसे सिकन्दर

वीर वन्दन (गा० २३) पीछेकी १ गाथामें सं० १४१२ फा० व १४ अभयतिलकके रचनाका लेख है, (द्वि० गा० २३) में जिनलब्धि सूरिको नवलक्ष गोत्रीय धर्णसिंहके भार्या खेताहोके कुक्षिसे उत्पन्न होना और बाल्यवयमें व्रत लेना, लिखा है।

पातशाहका चित्त चमत्कृत कर ५०० वन्दीजनोंको कारावास (वाखरसी) से छुड़ाकर महान सुयश प्राप्त किया।

कवि भक्तिलाभने गुरुभक्तिसे प्रेरित होकर इस यशगीतकी रचना की। वि० आपके रचित आचाराङ्गदीपिका (सं० १५८२ वीकानेर) उपलब्ध है।

जिनमाणिक्य सूरि (उ० गुर्वावलियोंमें)

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि (पृ० ५८ से १२४)

जिनसिंह सूरि (पृ० २२५से १३३)

श्री जिनचन्द्र सूरिजी एवं जिनसिंह सूरिजीके सम्बन्धी गीत, रास आदि काव्योंका सर्व सारांश "युगप्रधान जिनचन्द सूरि" में दिया है। अतः यहां दुहराकर ग्रन्थके कलेवरको वढ़ाना उचित नहीं समझा गया।

जिनचन्द्र सूरि सम्वन्धी दो वड़े रास हैं, उनमेंसे "अकवर-प्रतिवोध रासका सार उक्त ग्रन्थके छठें, सातवें प्रकरणमें एवं निर्वाण रासका सार ११, १२ वें प्रकरणमें दे दिया गया है।

श्री जिनसिंह सूरिजीका ऐतिहासिक परिचय उक्त ग्रन्थके पृ० १७४ से १८२ तकमें लिखा गया है। आपके सम्वन्धमें हमें सूरचन्द कृत एक रास अभी और नया उपलब्ध हुआ है, पर उसमें हमारे लि० चरित्रके अतिरिक्त कोई विशेष नवीनता नहीं, और ग्रन्थ वहुत वढ़ा हो जानेके कारण उसे प्रकाशित नहीं किया गया।

सूरचन्द्र कृत रासमें नवीन वातें ये हैं :—

(१) जिनसिंह सूरिजीके पिताका निवास स्थान 'बीठावास' लिखा है।

(२) पाटणमें धर्मसागर कृत ग्रन्थको अप्रमाणित सिद्ध किया। संघवी सोमजीके संघ सह शत्रुंजय यात्रा की।

(३) इनके पदमहोत्सवपर श्रीमाल-टांक गोत्रीय राजपालने १८०० घोड़े दान किये थे।

(४) अकबर सभामें ब्राह्मणोंको गंगा नदीके जलकी पवित्रता एवं सूर्यकी मान्यतापर प्रत्युत्तर देकर, विजय किया था।

जिनराज सूरि

(पृ० १५० से १७७, ४१७)

राजस्थानमें बीकानेर एक सुसमृद्ध नगर है, वहां राजा रायसिंह जी राज्य करते थे, उनके मन्त्री करमचन्दजी वच्छावत थे। जिन्होंने सं० १६३५ के दुष्कालमें सत्रूकार (दानशाला) स्थापित कर डोलती हुई पृथ्वीको (दान देकर) स्थिर कर दी थी, एवं लाहोरमें जिनचन्द सूरिजीके युग प्रधान पद एवं जिनसिंह सूरिजीके आचार्य पदके महोत्सवपर क्रोड द्रव्य और नव ग्राम, नव हाथी आदिका महान दान किया था।

उस समय वीकानेरमें वोथरा कुलोत्पन्न धर्मशी शाह निवास करते थे, उनकी धर्मपत्नीका शुभ नाम धारल देवी था। सांसारिक भोगोंको भोगते हुए दम्पत्ति सुखसे काल निर्गमन करते थे।

हमारे संग्रहके प्रबन्धमें आपके ७ भाइयोंके नाम इस प्रकार हैं :—
१ राम, २ गेहा, ३ खेतसी, ४ भैरव, ५ केशव, ६ कपूर, ७ सातड,

इस प्रकार विषय भोगोंको भोगते हुए धारल देवीकी कुक्षिमें सिंह स्वप्न सूचित एक पुण्यवान जीव अवतरित हुआ।

ज्योतिषियोंको स्वप्न फल पूछनेपर उन्होंने सौभाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होनेकी सूचना दी। यथा समय (गर्भ वृद्धि होनेके साथ-साथ अच्छे-अच्छे दोहद उत्पन्न होने लगे, अनुक्रमसे गर्भ स्थिति परिपूर्ण होनेसे) सं० १६४७ वैसाख सुदी ७ बुधवार, छत्र योग श्रवण नक्षत्रमें धारलदेवीने पुत्र जन्मा।

दशूठण उत्सवके अनन्तर नवजात शिशुका नाम खेतसी रखा गया, वृद्धिमान होते हुए खेतसी * कलाभ्यास करने लगा अनुक्रमसे ६ भाषा, १८ लिपि, १४ विद्या, ७२ कला, ३६ राग और चाणक्यादि शास्त्रोंका अध्ययन कर प्रवीण हो गया। इसी समय अकबर बादशाह प्रशंसित जिन सिंह सूरिजी बीकानेर पधारे। लोक बड़े हर्षित हुए और सूरिजीका धर्मोपदेश श्रवणार्थ सभी लोग आने लगे, (अपने पिताके साथ) खेतसी कुमार भी व्याख्यानमें पधारे। और धर्म श्रवणकर वैराग्यवासित होकर घर आकर अपनी माताजी से दीक्षा की अनुमति मांगी। पर पुत्रका स्नेह सहज कैसे छूट सकता था। माताने अनेक प्रकारसे समझाया पर खेतसी कुमार अपने दृढ़ निश्चयसे विचलित नहीं हुए और सं० १६५६ मार्गशीर्ष शुक्ला १३ को जिनसिंह सूरीजीके समीप दीक्षा ग्रहण की। इस समय धर्मसी शाहने दीक्षाका बड़ा उत्सव किया, नव दीक्षित मुनि अब गुरुश्री के प्रदत्त राजसिंहके नामसे परिचित होने लगे।

* एक पट्टावलीमें लिखा है कि आपके लघु भ्राता भैरवने भी आपके साथ दीक्षा ली।

दीक्षाके अनन्तर सूरिजी शीघ्र ही अन्यत्र विहारकर गये। राज सिंहके मण्डलतप बहन कर चुकनेके सम्वाद पाकर श्री जिनचन्द्र सूरिजीने उन्हें बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय) दी और नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया।

राजसमुद्र थोड़े ही समयमें कुशाग्र बुद्धिबलसे सूत्रोंको पढ़कर गीतार्थ हो गये। श्री जिन सिंह सूरिजी स्वयं आपको शिक्षा देते थे, श्री जिनचन्द्र सूरजीने आपको वाचनाचार्य * पदसे अलंकृत किया। आपके प्रबल पुन्योदयसे अम्बिकादेवी प्रत्यक्ष हुई। जिसके प्रत्यक्ष फलस्वरूप घंघाणीके (प्राचीन) लिपीको आपने पढ़ डाली। जेसलमेरमें राउल भीमके समक्ष आपने तपागच्छीयों*को परास्त किये थे।

इधर सम्राट जहांगीरने मान सिंह (जिन सिंह सूरि) से प्रेम होनेसे उन्हें निमन्त्रणार्थ, अपने वजीरोंको फरमान-पत्रके साथ बीकानेर भेजा। वे बीकानेर आये और फरमान पत्र सूरिजीकी सेवामें रखा। सङ्घने पढ़ा तो सूरिजीको सम्राट्ने आमन्त्रित किया जानकर सभी प्रसन्न हुए।

सम्राटके आमन्त्रणसे सूरिजी विहार कर मेड़ते पधारे। वहां एक महीनेकी अवस्थिति की, फिर वहांसे एक प्रयाण किया पर आयुका अन्त निकट ही आ चुका था, अतः मेड़ते पधारे और वहीं

---

* हमारे संग्रहके प्रबन्धमें जन्मका वार बुधकी जगह शुक्र और दीक्षा सं० १६५७ मोगसर सुदी १ बीकानेर, लिखा है। वणारसपद सं० १६६८ आसाउलमें लिखा है।

स्वयं संथारा उच्चारण कर सं० १६७४ पौष शुक्ला १३ को प्रथम देवलोक सिधारे।

संघने एकत्र हो पट्टधरके योग्य कौन है इसका विचारकर राज-समुद्रजीको योग्य विदित कर उन्हें गच्छनायक और सूरिजीके अन्य शिष्य सिद्धसेन मुनिको आचार्य पदसे विभूषित किये। ये दोनों जिनराज सूरि और जिनसागर सूरिजीके नामसे प्रसिद्ध हुए। पदमहोत्सवपर संघवी आसकरण चोपड़ेने वहुत द्रव्य व्यय किया। १६७४ फाल्गुन शुक्ला ७* को पदस्थापना वड़े समारोहसे हुई।

गच्छनायक पद प्राप्तिके अनन्तर आपने अनेक जगह विहारकर अनेकानेक धर्म प्रभावनायें की, जिनमेंसे कुछ ये हैं:—(सं० १६७५ मिगसर सुदी १२ को) जेसलमेर (लोद्रवे) गढ़में (भणसाली थाहरू-कारित) सहस्त्रफणापार्श्वनाथकी प्रतिष्ठा की। (सं० १६७५ वै० शु० १३ क) शत्रुंजय पर (सोमजी पुत्र रुपजीकारित) अष्टमोद्धारके ७०० प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा की। भाणवटमें वाफणा चांपशी कारित अमीझरा पार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठाकी,मेड़तेमें चौपड़ा असकरण कारित शान्ति जिनालयकी (सं० १६७७ जे० कृ० ५) प्रतिष्ठाकी। अम्बिका देवी एवं ५२ वीर आपके प्रत्यक्ष थे, सिन्धमें विहारकर (पांच नदीके) पाँच पीरोंको आपने साधित किये। ठाणांग सूत्रकी विषम पदार्थ वृत्ति वनाई।

---

* प्रबन्धमें उपाध्याय सोमविजयका नाम भी है।

+ प्रबन्धमें द्वितीया लिखा है। सूरिमन्त्र पुनमीया हेमाचार्यने दिया लिखा है।

इस प्रकार शासनका उद्योत करनेवाले गच्छ नायकके गुण-कीर्तन रूप यह रास श्रीसार कविने सं० १६८१ अषाढ़ कृष्ण १३ को सेत्रावामें रचा। क्षेमशाखाके रत्नहर्षके शिष्य हेमकीर्त्तिने यह प्रबन्ध बनवाया। गच्छ नायकके गुणगान करते समय (वर्षा) भी अच्छी हुई। उपरोक्त रास रचनाके पश्चात् (सं० १६८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ४ रविवारको आगरेमें सम्राट शाहजहाँसे आप मिले थे और वहां ब्राह्मणोंको वादमें परास्त किये एवं दर्शनी लोगोंके विहारका जहां कहीं प्रतिषेध था वह खुला करवा कर शासनोन्नति की। राजा गजसिंहजी, सूरसिंहजी, असरपखान, आलमदीवान आदिने आपकी बड़ी प्रशंसा की।

यह सवैये (पृ० १७३) से स्पष्ट है। गीत नं० ५ में लिखा है कि मुकरबखान ने आपके शुद्ध और कठिन साध्वाचारकी बड़ी प्रशंसा की।

आपके रचित १ शालिभद्र चौ० २ गजसुकमाल चो० ३ चौवीसी ४ वीशी ५ प्रश्नोत्तर-रत्नमाला बीशी ६ कर्म बतीसी ७ शील बतीसी बालावबोध ८ गुणस्थानस्त और अनेक पद उपलब्ध हैं। नैषध-काव्य पर भी आपके ३६ हजारी वृत्ति बनानेका उल्लेख है। डेक्कन कालेजमें इसकी दो प्रतियां विद्यमान हैं।*

---

* हमारे संग्रहके जिनराज सूरि प्रबंधमें विशेष बातें यह हैं :—

आपने ६ मुनियोंको उपाध्याय, ४१ को वाचक पद और १ साध्वीजी को प्रवर्तनी पद दिया, ८ बार शत्रुञ्जयकी यात्रा की, पाटणके संघके साथ गौडीपार्श्वनाथ, गिरनार, आबू, राणकपुरकी यात्रा की, नवानगरके

जिनरतन सूरि

(पृ० २३४ से २४७)

मरुधर देशके सेरुणा ग्राममें ओशवाल लुणिया गोत्रीय तिलोकसी शाहकी पत्नी तारा देवीकी* कुक्षिसे (सं० १६७०) में आपका जन्म हुआ था। आठ वर्षकी लघुवयमें ही आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और जिनराज सूरिके पास अपने वान्धव और माताके साथ (सं० १६८४) में† दीक्षा ग्रहण की। थोड़े दिनोंमें ही शास्त्रोंका अध्ययन कर देश-विदेशोंमें विहार कर भव्य जनोंको प्रतिवोध देने लगे। ×आपके गुणोंसे योग्यताका निर्णय कर जिनराज सूरिजीने अहमदावाद बुलाकर आपको उपाध्याय पदसे अलंकित किया। इस समय जयमल, तेजसीने वहुत-सा द्रव्य व्यय कर उत्सव किया था।

सं० १७०० में जिनराजसूरिजीका चतुर्मास पाटण था। उन्होंने स्वहस्तसे जिनरतन सूरिजीकी पद स्थापना की, और अपाढ़ शुक्ला ६ को वे स्वर्ग सिधारे।

चतुर्मासके समयमें दोसी माधवादि ने ३६००० जमसाइ व्यय की, आगरेमें १६ वर्षकी अवस्थामें चिन्तामणि शास्त्रका पूर्ण अध्ययन किया, पालीमें प्रतिष्ठा की, राउल कल्याणदास और राय कुंवर मनोहरदासके आमन्त्रणसे जैसलमेर पधारे, संघवी धाहरूने प्रवेशोत्सव किया। आपके शिष्य-प्रशिष्यों की संख्या ४१ थी।

× १ नाहटा थे (देखो पृ० २४६ में)

× गीत नं० ५ में तेजस हैं। देखो पृ० २४७ × गीत नीः ४ में सदामी लिखा है।

पाटणसे विहार कर जिनरतन सूरिजी पाल्हणपुर पधारे, वहां संघने हर्षित हो उत्सव किया। वहांसे स्वर्णगिरिके संघके आग्रहसे वहां पधारे। श्रेष्ठिपीथेने प्रवेशोत्सव किया, वहांसे मरुस्थलमें विहार करते संघके आग्रहसे बीकानेर पधारे, नथमल वेणेने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर (प्रवेश-) उत्सव किया, वहांसे उग्र विहार विचरते वीरमपुरमें (सं० १७०१) में संघाग्रहसे चतुर्मास किया।

चतुर्मास समाप्त होते ही बाहड़मेर (सं० १७०२) में आये, संघके आग्रहसे चतुर्मास वहीं किया। वहांसे विहार कर कोटड़में(सं०१७०३) चौमासा किया। चौमासा समाप्त होनेपर वहांसे जेसलमेरके श्रावकोंके आग्रहसे जैसलमेर पधारे, शाह गोपाने प्रवेशोत्सव किया एवं याचकों को दान दे अपनी चंचल लक्ष्मीको सार्थक की। जेसलमेरके संघका धर्मानुराग और आग्रह सविशेष देख आचार्य श्रीने चार चतुर्मास (सं० १७०४ से १७०७ तक) वहीं किये। इसके पश्चात् आगरे संघके अत्याग्रहसे वहां पधारे। संघ बड़ा हर्षित हुआ, मानसिंहने बेगमकी आज्ञा प्राप्त कर प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया। व्रतग्रहणादि धर्मध्यान अधिकाधिक होने लगे। तीन चौमासा (सं० १७०८ से १७१०) करनेके पश्चात् चौथे चतुर्मासको (सं० १७११) भी संघने आग्रह कर वहीं रखे। वहां अशुभ कर्मोदयसे असमाधि उत्पन्न हुई। अषाढ़ शुक्ला १० से तो वेदना क्रमशः वृद्धि होनेसे औषधोपचार कराया गया, पर निष्फल देख आपने अपने आयुष्यका अन्त ज्ञात कर अपने मुखसे अनशनोच्चार एवं ८४ लाख जीवयोनियोंसे क्षमत क्षमणा कर समाधिपूर्वक श्रावण वदी ७ सोमवारको

हर्षलाभको पदस्थापन कर स्वर्गवासी हुए। संघमें शोक छा गया, पर भावीपर जोर भी नहीं चल सकता। आखिर अन्त्येष्टि क्रिया बड़ी धूमसे कर. दाहस्थलपर सुन्दर स्तूप निर्माण कर श्रावक संघने गुरुभक्तिका आदर्श परिचय दिया, भक्ति स्मृतिको चीरंजीवत की. (जिनराज सूरि शि०) मानविजयके शिष्य कमलहर्षने भी सं० १७११ श्रावण शुक्ला ११ शनिवारको आगरेमें यह निर्वाण रास रचकर गुरु-भक्ति द्वारा कवित्व सफल किया।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २४५ से २४८)

बीकानेर निवासी गणधर-चोपड़ा गोत्रीय सहसमल (सहसकरण) की पत्नी राजल दे (सुपीयार दे) के आप पुत्ररत्न थे। आपने १२ वर्षकी लघुवयमें वैराग्यवासित होकर जिनरत्न सूरिके हाथसे जेसलमेरमें दीक्षा ग्रहण की। श्रीसंघने उत्सव किया, १८ वर्षकी वयमें (सं० १७११) जिनरत्न सूरिजी आगरेमें थे और आप राजनगरमें थे, वहां) जिनरत्न सूरिके बचनानुसार पद प्राप्त हुआ और नाहटा जयमल, तेजसी (जिनरत्नपद महोत्सवकर्त्ता) की माता कस्तूरांने पदोत्सव किया। (गीत नं० २)

नं० ५ कवित्तसे ज्ञात होता है कि आपने पंचनदी साधन की थी। आपके रचित कई स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं। सं० १७३५ आषाढ़ शुक्ला ८ खम्भातमें आपने २० स्थानक तप करना प्रारम्भ किया था। तत्कालीन गच्छके यतियोंमें प्रविष्ट शिथि-

लताको निवार्णार्थ सं० १७१८ आसू सुदी १० सोमवार बीकानेरमें (१४ बोलोंकी) व्यवस्था की थी, प्रस्तुत व्यवस्थापत्र हमारे संग्रहमें है।

जिनसुख सूरि

(पृ० २४६ से २५१)

बोहरा गोत्रीय (पीचानख) रूपचन्द शाहकी भार्या रतनादे (सरूप दे) की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने लघुवयमें दीक्षा ग्रहण की थी। सं० १७६२ आषाढ़ शुक्ला ११ को सूरतमें जिनचन्द सूरिने आपको स्वहस्तसे श्री संघ समक्ष गच्छनायक पद प्रधान किया था। उस समय पारख सामीदास, सूरदासने पद महोत्सव बड़े धूमसे किया था। रात्रिजागरण श्रावकस्वामीवात्सल्य यति वस्त्र परिधापनादिमें उन्होंने बहुत-सा द्रव्य व्ययकर भक्ति प्रदर्शित की।

सं० १७८० के ज्येष्ठ कृष्णाको अनशन आराधन कर रिणीमें जिनभक्ति सूरजीको अपने हाथसे गच्छनायक पद प्रदानकर स्वर्ग सिधारे। श्री संघने अन्त्येष्टि क्रियाके स्थानपर स्तूप बनाया और उसकी माघ शुक्ला षष्टीको जिनभक्तिसूरिजीने प्रतिष्ठा की थी। आपके रचित जेसलमेर-चैत्यपरिपाटी स्तवनादि एवं गद्य (भाषा) में (सं० १७६७ में पाटणमें रचित) जेसलमेर श्रावकोंके प्रश्नोंके उत्तरमय सिद्धान्तीय विचार (पत्र ३५ जय० भं०) नामक ग्रन्थ उपलब्ध है।

जिनभक्तिसूरि

(पृ० २५२)

सेठिया हरचन्दकी पत्नी हरसुखदे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने छोटी उम्रमें ही चारित्र लेकर सद्गुरुको प्रसन्न किया था। जिनसुख सूरिजीने आपको सं० १७७९ ज्येष्ठ कृष्णा तृतीयाको रिणीमें स्वहस्तसे गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय रिणी संघने पद-महोत्सव किया। आपके रचित कई स्तवनादि प्राप्त हैं।

जिनलाभसूरि

(पृ० २६३ से २६६ एवं ४१४ से ४१६)

विक्रमपुरनिवासी बोथरे पंचाननकी धर्मपत्नी पदमा दे ने आपको जन्म दिया। आपने लघु वयमें जिनभक्ति सूरिजीके पास दीक्षा ग्रहण की। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सूरिजीने मांडवी बंदरमें आपको अपने पदपर स्थापन किया था।

सं० १८०४ भुज, वहांसे गुढ़ होकर १८०५ में जैसलमेर पधारे, वहां १८०८।१० तक रहे। उसके पीछे बीकानेरमें (१८१० से १८१५ तक) ५ वर्ष रहकर सं० १८१५ को वहांसे विहारकर गारबदेसर शहरमें (१८१५) चोमासा किया। वहां ८ महीने विराजनेके पश्चात् (मि० वि० ३) विहारकर थली प्रदेशको वंदाते हुए जैसलमेरमें प्रवेश किया। वहां (१८१६-१७-१८-१९) ४ वर्ष अवस्थितीकर लोद्रवे तीर्थमें सहस्त्रफणा पार्श्वनाथजीकी यात्रा की। वहांसे पश्चिमकी ओर विहारकर गोडीपार्श्वनाथकी यात्रा कर

गुढे (सं० १८२०) में चौमासा किया। चतुर्मासके अनन्तर शीघ्र बिहारकर महेवा प्रदेशको वंदाकर महेवेमें नाकोड़े पार्श्वनाथकी यात्रा की, वहांसे बिहारकर जलोलमें (सं० १८२१) में चतुर्मास किया। वहांसे खेजडले, खारिया रह कर रोहीठ, मंडोवर, जोधपुर, तिमरी होकर मेड़ते (१८२३) पधारे। वहां ४ महीने रहकर जैपुर शहर पधारे, वह शहर क्या था मानो स्वर्ग ही पृथ्वीपर उतर आया हो, वहां वर्ष दिनकी भांति और दिन घड़ीकी भांति व्यतीत होते थे। जैपुरके संघका अत्याग्रह होनेपर भी पूज्यश्री वहां नहीं ठहरे और मेवाड़की ओर विहारकर यश प्राप्त किया। उदयपुरसे १८ कोसपर स्थित धूलेवामें ऋषभेशकी यात्राकर उदयपुर (१८२४) पधारें और विशेष विनतीसे पालीवालै (१८२५) पाट विराजे नागौर (का संघ) बीचमें अवश्य आयगा, यह जानते हुए भी साचौर (अपने मनकी तीव्र इच्छासे (१८२६) पधारे। इस समय सूरतके धनाढ्योंने योग्य अवसर जानकर विनती पत्र भेजा और पूज्यश्री भी उस ओर बिहार करनेसे अधिक लाभ जान, (१८२७) सूरत पधारे।

वहांके श्रावकोंको प्रसन्न कर आप पैदल विचरते हुए (१८२९) राजनगर पधारे। वहां तालेवरने बहुत उछव किये और २ वर्ष तक रात दिन सेवा की। वहांसे श्रावक संघके साथ शत्रुजय गिरनारकी यात्रा कर (१८३०) वेलाउलके संघको वंदाया। वहांसे मांडवी (१८३१) पधारे। वहां अनेकों कोट्याधीश और लक्षाधिपति व्यापारी निवास करते थे। समुद्रसे उनका व्यापार चलता

मार्गशीर्ष महिनेमें आबगिरिकी यात्रा कर चतुर्मास बीलाड़े (१८२३) रहे।

था। उन्होंने १ वर्ष तक खूब द्रव्य किया। वहांसे अच्छे महूर्तमें विहार कर भुज (१८३२) आये । वहांके संघने भी श्रेष्ट भक्ति की। इस प्रकार १८ वर्ष नवीन नवीन देशोंमें विचरे। कवि कहता है कि अब तो बीकानेर शीघ्र पधारिये। अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है, कि भुजसे विहार कर १८३३ का चौमासा मनरा-बन्दर कर सं० १८३४ का चौमासा गुढ़ा किया और वहीं स्वर्ग सिधारे (गीत नं० ४)।

गहुंली नं० १ में पूज्यश्रीके पधारनेपर बीकानेरमें उत्सव हुआ, उसका वर्णन है।

गहुंली नं० २ में कवि कहता है कि कच्छसे आप यहां पधारते थे, पर जैसलमेरी संघने बीचमें ही रोक लिया। वहांके लोग बड़े मुंह मीठे होते हैं, अतः पूज्यश्रीको लुभा लिया। पर बीकानेर अब शीघ्र आवें।

आत्म-प्रबोध ग्रन्थ आपका रचित कहा जाता है। आपके रचित कइ स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं, और दो चोवीशीयें प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २६७ से २६६)

रूपचन्दकी भार्या केशरदेके आप पुत्र थे। आपने मरुस्थलमें लघु वयमें ही दीक्षा ली थी और गुढ़ेमें जिनलाभ सूरिजीने स्वहस्तसे आपको गच्छनायक पद प्रदान किया था, उस समय श्रीसंघने उत्सव किया था।

गहुंली नं० १ सिन्धु देश—हालां नगर स्थित कनकधर्मने सं० १८३४ माधव मासमें बनाई है।

गहुंली नं० २ चारित्रनन्दनने सं० १८५० वैशाख बदी ८ गुरुवारको बीकानेरमें बनाई है। उस समय पूज्यश्री अजीमगंजमें थे, गहुंलीमें उसके पूर्व उनके सम्मेतशिखर, पावापुरीकी यात्रा करनेका उल्लेख कियागया है, एवं बीकानेर पधारनेके लिये विज्ञप्ति की गयी है।

जिनहर्ष सूरि

(पृ० ३००)

बोहरा गोत्रीय श्रेष्टि तिलोकचन्दकी भार्या तारादेके कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। कवि महिमाहंसने आपके बीकानेर पधारनेके समयके उत्सव वर्णनात्मक यह गहुंली रची है। गहुंलीमें बीकानेरके प्रसिद्ध देवालय चिन्तामणि और आदीश्वरजीके दर्शन करनेको कहा गया है।

जिनसौभाग्य सूरि

(पृ० ३०१)

आप कोठारी कर्मचन्दकी पत्नी करणदेवीकी कुक्षिसे उत्पन्न हुए थे। सं० १८९२ मार्गशीर्ष शुक्ला ७ गुरुवारको जिनहर्षसूरिजीके पद पर नृपवर्य रतनसिंहजी आदिके प्रयत्नसे विराजमान हुए थे। उस समय खजानची लालचन्दने पद स्थापनाका उत्सव किया था, और याचकोंको दान दिया था।

हमारे संग्रहके एक पत्रमें लिखा है कि जिनहर्षसूरिजीके स्वर्ग सिधारनेके पश्चात् पद किसको दिया जाय, इसपर विवाद हुआ। जिन-सौभाग्य सूरिजी उनके दीक्षित शिष्य थे और

महेन्द्र सूरिजी अन्य यतीके शिष्य थे, पर जिनहर्षसूरिजीने उन्हें अपने पास रख लिया था। अतः अन्तमें यह निर्णय किया गया कि दोनोंके नामकी चिट्ठियां डाल दी जाँय, जिसके नामसे चिट्ठी उठे उसे ही पद दिया जाय। यह बात निश्चित होने-पर सोभाग्य सूरिजी वयोबृद्ध और गच्छके मुख्य यतियोंको लेनेके के लिये बीकानेर आये। पीछेसे चिट्ठी डालनेके निश्चित दिनके पूर्व ही कुछ यतीओं और श्रावकोंके पक्षपातसे जिनमहेन्द्र सूरिजीको पद दे दिया गया। इधर आप मुख्य यतियोंके साथ मंडोवर पहुंचे और वहांका वृतान्त ज्ञात कर बीकानेर वापिस पधारे। यहांके यतिवर्यों श्रावकों और राजा रत्नसिंहजीका पहलेसे ही इन्हें पद देनेका पक्ष था, अतः दे दिया गया। इन्हीं बातोंके संकेत इस गहुंलीमें पाये जाते हैं।

इनके पश्चात् पट्टधरोंका क्रम इस प्रकार है :—

जिनहंससूरि—जिनचंद्रसूरि—जिनकीर्त्तिसूरि, इनके पट्टधर जिनचारित्रसूरिजी अभी विद्यमान हैं।

भूल सुधार

जिनेश्वरसूरि (प्रथम) के शि० जिनचंद्रसूरिजीका नाम छूट गया है। उनका रचित 'संवेग-रंगशाला' ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

——*——

मंडलाचार्य और विद्वद् मुनि मंडल

भावप्रभसूरि

(पृ० ४६)

माल्हू शाखाके लुणिग कुलमें सव्व शाहकी भार्या राजलदेके आप पुत्र रत्न थे। श्री जिनराज सूरि (प्रथम) के आप (दीक्षित) सुशिष्य तथा सागरचन्द्रसूरिजीके पट्टधर थे, आप साध्वाचारका प्रशंसनीय पालन करते थे और अनेक सद्गुणोंके निवासस्थान थे।

कीर्त्तिरत्न सूरि

(पृ० ५१-५२, पृ० ४०१-४१३)

ओसवंशके संखवाल गोत्रमें शाह कोचर बड़े प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं, उनके सन्तानीय (वंशज) आपमल्ल और देपा हुए। इनमें देपाके देवलदे नामक धर्मपत्नी थी, जिसकी कुक्षिसे लक्खा, भादा, केल्हा, देल्हा ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें देल्हा कुंवरका जन्म सं० १४४६ में हुआ था, १४ वर्षकी लघु वयमें (सं० १४६३ आषाढ़ वदी ११) में आपने दीक्षा ग्रहण की थी। श्री जिनवर्द्धन सूरिजीने आपका शुभ नाम 'कीर्त्तिराज' रखा और शास्त्रोंका अध्ययन भी स्वयं आचार्यश्रीने कराया। विद्वान होनेके पश्चात् सं० १४७० में वाचनाचार्य पद (जिनवर्द्धन सूरिजीने) और सं० १४८० में उपाध्याय पद महेवेमें जिनभद्र सूरिजीने प्रदान किया, अतः माता देवलदेको वड़ा हर्ष हुआ। सिन्धु और पूर्व देशोंकी तरफ विहार करते

हुए आप जैसलमेर पधारें। वहां गच्छनायक जिनभद्र सूरिजीने योग्य जानकर सं० १४९७ माघ शुक्ला १० को आचार्य पद प्रदान किया और "कीर्तिरत्न सूरि" के नामसे प्रसिद्धि की। उस समय आपके भ्राता लक्खा और केल्हाने विस्तारसे पद महोत्सव किया।

सं० १५२५ वैशाख बदी ५ को २५ दिनकी अनशन आराधना कर समाधि पूर्वक वीरमपुरमें आप स्वर्ग सिधारे। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ, आपके अतिशयसे वहांके वीर जिनालयमें देवोंने दीपक किये और मन्दिरके दरवाजे वन्द हो गये। वहां पूर्व दिशामें संघने स्तूप वनवाया जो अब भी विद्यमान है। वीरमपुर, महेवेके अतिरिक्त जोधपुर, आवू आदि स्थानोंमें भी आपकी चरणपादुकाएं स्थापित की गयीं। जयकीर्त्ति और अभैविलास कृत गीत नं० ७-८ से ज्ञात होता है कि सं० १८७९ वैशाख (आषाढ़) कृष्णा १० को गड़ालें (नालं-वीकानेरसे ४ कोस) में आपका प्रासाद बनवाया गया था।

गीत नं० ५ (सुमतिरंग कृत छंद) और नं० ८ में कुछ नवीन वातोंके साथ विस्तारसे वर्णन हैं जिनका सार यह है:—

जालंधर देशके संखवाली नगरीमें कोचर शाह निवास करते थे, उनके दो भार्यायें थीं, जिनमें लघु पत्नीके रोलू नामक पुत्र हुआ, उसे एक दिन अर्द्ध रात्रिके समय काले सर्पने डंक मारा। विषसे अचेतन होनेसे कुटम्बीजन उसे दहनार्थ, स्मशान ले गये, इसी समय खरतर गच्छनायक जिनेश्वरसूरिजी वहीं थे उन्होंने अपने आत्मबलसे उसे निर्विष कर दिया। रोलू सचेत हो

घर आया, कुटम्बमें आनन्द छा गया और कोचर शाह तभीसे (सं० १३१३) खरतर गच्छानुयायी* श्रावक हो गये और उन्होंने जिनेश्वरसूरिजीके हस्तकमलसे जिनालयकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके बाद कोचर शाह कोरटेमें जा बसे, वहां उनके कुलगुरु (पूर्वके गुरु, अन्य गच्छीय) के पुनः अपने गच्छमें आनेके लिये बहुत अनुरोध करनेपर भी आप विचलित न हुए।

वहां सत्तूकार-दानादि शुभ कृत्य करते हुए आनन्दपूर्वक रहने लगे। रोलूके आपमल्ल और देपमल्ल नामक दो पुत्र हुए। इनमें देप-मल्लकी भार्या देवलदेकी कुक्षिसे १ लक्खा, २ भादा, ३ केल्हो, ४ देल्हा ये ४ पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें लक्खोको लक्ष्मीने प्रसन्न हो ७ पीढ़ियोंतक रहनेका वरदान दिया और वे वीसलपुरमें रहने लगे भादा जैसलमेर, केल्हा महेवा रहने लगा और चौथे लघु पुत्र देल्हेका वृतांत यह है:— सं० १४४६ में आपका जन्म हुआ, १३ वर्षकी अवस्थामें विवाह करनेके लिये आप बरात लेकर राड़द्रह जाने लगे। मार्गमें खीमजथलके समीप जान (बरात) ठहरी वहां एक खेजड़ीका वृक्ष था उसे देखकर एक राजपूतने कहा कि इस वृक्षके ऊपरसे जो बरछी निकाल देगा मैं उससे अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण कर दूंगा। देल्हे कुमारके इशारेसे उनके सेवक (नाई) ने राजपूतके कथनानुसार कर दिखाया पर इस कार्यको करनेमें अधिक परिश्रम लगनेसे उसका प्राणान्त हो गया, इस घटनासे

---

*अन्य प्रमाणोंमें इसका कारण और ही पाया जाता है पर उन सबका विचार स्वतंत्र निबंधमें करेंगे।

देल्ह-कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया और (खरतर) श्री क्षेम-कीर्तिजीको वंदनाकर (अपने) दीक्षा ग्रहण करनेके भाव प्रकट किये। एवं उनके कथनानुसार जिनवर्द्धन सूरिजीके पास सं० १४६३ में दीक्षा ग्रहण की, दीक्षा ग्रहण करनेके अनन्तर आपने शास्त्रोंका अध्ययन कर गीतार्थता प्राप्त की। सं० १४७० में आपकी योग्यता देखकर जिनवर्द्धनसूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया।

इधर जैसलमेरके जिनालयसे क्षेत्रपालके स्थानान्तर करनेके कारण जिनवर्द्धनसूरिजीसे गच्छभेद हुआ और उनकी शाखा पींपलिया नामसे प्रसिद्ध हुई, नाल्हेने जिनभद्र सूरिजीको स्थापित किया जिनवर्द्धन सूरिजीने कीर्तिराजजी (देल्हकुमार) को अपने पास बुलाया, पर आपको अर्द्धरात्रिके समय वीर (देवता) ने कहा कि उनका आयुष्य तो मात्र ६ महीनेका ही है और जिनभद्र सूरिजीकी भावी उन्नति होने वाली है। इससे आपने जिनवर्द्धन सूरिजीके पास न जाकर चार चतुर्मास महेवेमें ही किये। इसके पश्चात् जिनभद्र सूरिजीके बुलानेपर आप उनके पास पधारे। उन्होंने सं० १४८० में आपको पाठक पद प्रदान किया। शाह लक्खा और केल्हा महेवेसे जैसल-मेर आये और गच्छनायकको आमंत्रित कर उन्होंने सं० १४९७ में कीर्तिराजजीको सूरि पद दिलवाया। लक्खा और केल्हाने प्रचुर द्रव्य व्यय कर, महोत्सव किया। लक्खे केल्हेने शंखेश्वर, गिरनार, गौडी-पार्श्वनाथ और सोरठ (शत्रुंजय आदि) के चैत्यालयोंकी यात्रा की, सर्वत्र लाहिण की एवं आचार्य श्रीको चातुर्मास कराया। कीर्ति-

रत्न सूरिजीके ५१ शिष्य थे, सं० १५२५ बै० शु० ५ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपने अपने कुटम्बियोंको ७ शिक्षायें दी जो इस प्रकार हैं:—१ मालवा, थट्टा, सिंध और संखवाली नगरी न जाना, २ गच्छभेदमें शामिल न होना, ३ पाटभक्त होना, ४ दीक्षा न लेना, ५ कोरटे और जैसलमेरमें देहरे बनवाना, ६ जहां बसो, नगरके चौराहेसे दाहिनी ओर बसना ७.............................. । आपके रचित 'नेमिनाथ काव्य' प्रकाशित है एवं और भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं। आपकी शाखामें अभी जिनकृपाचन्द्र सूरिजी एवं कई यतिगण विद्यमान हैं।

उ० जयसागर

(पृ० ४००)

उज्जयंत शिखर पर नरपाल संघपतिने 'लक्ष्मी तिलक' नामक विहार बनाना प्रारम्भ किया, तब अम्बा देवी, श्री देवी आपके प्रत्यक्ष हुई और सरसा पार्श्व जिनालयमें श्रीशेष, पद्मावती सह प्रत्यक्ष हुआ था। मेदपाट-देशवर्ती नागद्रहके नवखण्डा-पार्श्वचैत्यालय में श्री सरस्वती देवी आप पर प्रसन्न हुई थी। श्री जिनकुशल सूरि जी आदि देवता भी आप पर प्रसन्न थे, आपने पूर्वमें राजगृह नगर (उद्दंड) विहारादि, उत्तरमें नगरकोट्टादि, पश्चिममें नागद्रह आदि की राज सभाओंमें वादिवृन्दोंको परास्त कर विजय प्राप्त की थी आपने संदेहदोलावली वृत्ति, पृथ्वीचन्द्र चरित्र, पर्वरत्नावली, ऋषभ स्तव, भावारिवारण वृत्ति एवं संस्कृत प्राकृतके हजारों

स्तवनादि बनाये। अनेकों श्रावकोंको संघपति बनाये और अनेक शिष्योंको पढ़ाकर विद्वान बनाये।

वि० आपके शिक्षागुरु श्री जिनराज सूरिजी और विद्यागुरु जिनवर्द्धन सूरिजी थे। सं० १४७५ के लगभग जिनभद्र सूरजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। आपने अनेकों देशोंमें विहार किया और अनेकों कृतियां रची थीं, जिनमें मुख्य ये हैं :—

(१) पर्वरत्नावली कथा (१४७८ पाटण, गा० ३२१) (२) विज्ञप्ति त्रिवेणी (सं० १४८४ सिन्धु देश मल्लिकवाहणपुरसे पाटण सूरिजीको प्रेषित), (३) पृथ्वीचन्द्र चरित्र (सं० १५०३ प्रल्हादनपुर शि० सत्यरुचिकी प्रार्थनासे रचित), (४) संदेहदोलावली लघुवृति सं० १४९५, (५-६-७) गुरुपारतन्त्र् वृत्ति, उपसर्गहर, भावारिवारणवृत्ति (८) भाषामें—वयरस्वामी रास (गा० ३६ सं० १४९०) (९), कुशल सूरि चौ० (१४८१ मल्लिकवाहणपुर) और संस्कृत भाषाके स्तवनादि (सं० १५०३ लि० पत्र १२ जय० भं०) भी अनेकों उपलब्ध हैं। आपके शिष्य परम्परादिके लिये देखें :—विज्ञप्ति त्रिवेणी, जैनसाहित्यनोसंक्षिप्तइतिहास और युगप्रधान—जिनचन्द्र सूरि (पृ० २०३), जैनस्त्रोत्रसन्दोह भा० २। प्रस्तुत ग्रन्थके पृ० २३ में मुद्रित खरतर पट्टावली भी आपके आदेशसे रचित है।

क्षेमराजोपाध्याय

(पृ० १३४)

छाजहड़ गोत्रीय शाह लीलाकी पत्नी लीलादेवीके आप पुत्र थे।

सं० १५१६ में गच्छ नायक जिनचन्द्र सूरिजीने आपको दिक्षा दी थी। वा० सोमध्वजके आप सुशिष्य थे और उन्होंने ही आपको विद्याध्ययन कराया था। आपके रचित साहित्यकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है :—

(१) उपदेश सप्ततिका (सं० १५४७ हिसारकोट वास्तव्य श्रीमाली पटु पर्पट दोदाके आग्रहसे रचित, जैनधर्म प्रसारक सभासे प्रकाशित)।

(२) इक्षुकार चौ० गा० ५० (६५) हमारे संग्रहमें नं० २५०

(३) श्रावक विधि चौ० गा० ७० (सं० १५४६) हमारे संग्रेहमें नं० ७६४।

(४) पार्श्वनाथ रास (गा० २५) ५ श्रीमंधरस्तवन, जीरावलास्त०, पार्श्व १०८ नाम स्तोत्र, वरकाणास्त०, ज्ञानपंचमीस्त०, वीरस्त०, समवसरण स्तवन, उत्तराध्यनन सझायादि उपलब्ध हैं।

सं० १५६६ आश्विन सु० २ को इनके पास कोटड़ा वास्तव्य मं० लोला श्रावकने व्रत ग्रहण किये थे, जिसकी नोंध १ गुटकेमें है। अन्य साधनोंसे आपकी परम्परा इस प्रकार ज्ञात होती है :—

(१) जिनकुशल सूरि, (२) विनयप्रभ (३) विजय तिलक (४) क्षेमकीर्ति (इन्होंने जीरावला पार्श्वनाथके प्रसाद ११० शिष्य किये) इनके नामसे क्षेम शाखा प्रसिद्ध हुई, (५) क्षेमहंस, (६) सोमध्वजजीके (७) आप शिष्य थे। आपके मुख्य ३ शिष्य थे, जिनमेंसे प्रमोदमाणिक्य शि० जयसोम और उनके शि० गुणविनयके लिये देखें युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० १९७)

देवतिलकोपाध्याय

[पृ० ५५]

भरतक्षेत्रके अयोध्या-वाहड़ गिरि नामक प्रसिद्ध स्थानमें ओशवाल वंशीय भणशाली गोत्रके शाह करमचन्द निवास करते थे और उनकी सुहाणादे नामक पत्नीसे आपका जन्म हुआ था। ज्योतिपीने आपका जन्म नाम 'देदो' रखा। देदा कुमर अनुक्रमसे वड़े होने लगे और ८ वर्षकी वयमें सं० १५४१ में दीक्षा ग्रहण की एवं सिद्धान्तोंका अध्ययन कर सं० १५६२ में उपाध्याय पदसे विभूपित हुए।

सं० १६०३ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को जैसलमेरमें अनशन आराधनापूर्वक आपकी सद्गति हुई। अग्नि-संस्कारके स्थलपर आपका स्तूप बनाया गया, जो कि बड़ा प्रभावशाली और रोगादि दुःखोंको विनाश करनेवाला है।

सं० १५८३-८५ में आपने दो शिलालेख-प्रशस्तियें रची थी, देखें जै० ले० सं० नं० २१५४।५५

आपके लिखित एवं संशोधित अनेकों प्रतियां बीकानेरके कई भण्डारोंमें विद्यमान हैं। आपके हस्ताक्षर वड़े सुन्दर और सुवाच्य थे।

आपके सुशिष्य हर्पप्रभ शि० हीरकलशकृत कृतियोंके लिये देखें यु० जिनचन्द्र सूरि चरित्र पृ० २०६ एवं आपके शि० विजयराज शि० पद्ममन्दिरकृत प्रवचनसारोद्धार वालाववोध (सं० १६५१) श्री पूज्यजीके संग्रहमें उपलब्ध है।

श्री देवतिलकोपाध्यायजीकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी। सागर चन्द्र सूरि (१५ वीं) शि० महिमराज शि० दयासागरजी केशि० ज्ञान-मन्दिरजीके आप सुशिष्य थे। महिमराजके शि० सोमसुन्दरकी परम्परामें सुखनिधान हुए, जिनका परिचय आगे लिखा जायगा।

दयातिलकजी

[पृ० ४१६]

आप उपरोक्त क्षेमराजोपाध्यायजीके शिष्य थे। आपके पिताका नाम वच्छाशाह और माताका वाल्हादेवी था। आप नव-विध परि-ग्रहके त्यागी और निर्मल पंचमहाव्रतोंके पालनेमें शूरवीर थे।

महोपाध्याय पुण्यसागर

[पृ० ५७]

उदयसिंहजीकी भार्या उत्तम दे ने आपको जन्म दिया था। श्रीजिनहंस सूरिजीने स्वहस्तकमलसे आपको दीक्षा दी थी।

आप समर्थ विद्वान और गीतार्थ थे। आपके एवं आपके शिष्य पद्मराज कृत कृतियों आदि का परिचय युगप्रधान जिनचंद्र सूरि ग्रन्थके पृष्ट १८९ में दिया गया है।

उपाध्याय साधुकीर्त्तिजी

[पृ० १३७]

ओशवाल वंशीय सचिंती गोत्रके शाह वस्तिगकी पत्नी खेमलदेके आप पुत्र थे। दयाकलशजीके शिष्य अमरमाणिक्यजीके आप

सुशिष्य थे। आप बड़े विद्वान थे। सं० १६२५ मि० व० १२ आगरेमें अकबर सभामें तपागच्छवालोंको पोपहकी चर्चामें निरुत्तर किया था और विद्वानोंने आपकी बड़ी प्रशंसाकी थी, संस्कृतमें आपका भाषण बड़ा मनोहर होता था।

सं० १६३२ माधव (वैशाख) शुक्ला १५ को जिनचन्द्र सूरिजीने आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था और अनेक स्थानोंमें विहार कर अनेक भव्यात्माओंको आपने सन्मार्गगामी बनाया था।

सं० १६४६ में आपका शुभागमन जालोर हुआ, वहां माह कृष्ण पक्षमें आयुष्यकी अल्पताको ज्ञातकर अनशन उच्चारण पूर्वक आराधना की और चतुर्दशीको स्वर्ग सिधारे। आपके पुनीत गुणों-की स्मृतिमें वहां स्तूप निर्माण कराया गया उसे अनेकानेक जन समुदाय वन्दन करता है।

सं० १६२५ के शास्त्रार्थ विजयका विशेष वृतांत आपके सतीर्थ कनक सोम कृत जयतपदवेलिमें विस्तारसे है। सरल और विरोधी होनेसे इसका सार यहां नहीं दिया गया, जिज्ञासुओंको मूल वेलि पढ़ लेनी चाहिये।

आपके एवं आपके शिष्य प्रशिष्योंके कृतियोंकी सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १६२ में दी गयी है। आपकी परम्परामे कविवर धर्मवर्धन अच्छे कवि हो गये हैं, जिनका परिचय "राज-स्थान" पत्र (वर्ष २ अंक २) में विस्तारसे दिया गया है।

महोपाध्याय समयसुन्दर

(पृ० १४६ से १४८)

पोरवाड़ ज्ञातीय रूपशी शाहकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे

साचौरमें आपका जन्म हुआ था। नवयौवनावस्थामें यु० जिन-चन्द सूरिजीके हस्तकमलसे आप दीक्षित हुए थे। श्री सकलचन्द्र-जीके आप शिष्य थे और तर्क व्याकरण एवं जैनागमोंका उच्चतम अभ्यास कर (गीतार्थता-)पांडित्य प्राप्त किया था। सम्राट अकबरको एक पद (राजा नो ददते सौख्यम्) चमत्कृत ८ लाख अर्थ बतलाकर के (रञ्जित) किया था। विद्वद् समाज और श्री संघमें आपकी असाधारण ख्याति थी। लाहौरमें जिनचन्द्र सूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया था। आपके महत्वपूर्ण कार्यकलाप ये हैं:—

(१) जैसलमेरके रावल भीमको प्रसन्न कर मयणों द्वारा मारे जानेवाले सांडा-जीवोंको छुड़ाया था।

(२) शीतपुर (सिद्धपुर) में मखनूम महमद शेखको प्रतिबोध देकर पांच नदीके (जलचर) जीवों—विशेषतया गायोंकी रक्षाका पटह बजवानेका प्रशंसनीय कार्य किया था।

(३) मंडोवराधिपतिको रञ्जित कर मेडतेमें बाजे बजवाने द्वारा शासन प्रभावना की थी।

(४) परोपकारार्थ अनेकों ग्रन्थों—भाषा काव्योंकी (वृत्तियें, गीत, छन्द) प्रचुर प्रमाणमें रचना की थी।

(५) गच्छके सभी मुनियोंको (गच्छ) पहिरामणी की थी।

(६) सं० १६६१ में क्रिया-उद्धारकर कठिन साध्वाचार पालनका आदर्श उपस्थित किया था।

(७) आपका शिष्य-परिवार बड़ा विशाल और विद्वान् था। वादी हर्षनन्दन जसे आपके उद्भट विद्वान् शिष्य थे। श्री जिनसिंह

सूरिजीने लवेरेमें आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था। सं० १७०२ के चैत्र शुक्ला त्रयोदशीको अहमदावादमें अनशन आराधनापूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। आपके विस्तृत कृति-कलापकी संक्षिप्त सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १६८ में दी गयी है।

यश कुशल

(पृ० १४६)

श्री कनकसोमजीके आप शिष्य थे। हमारे संग्रहके (अन्य) गीत द्वयसे ज्ञात होता है कि हाजीखानडेरे (सिंध) में आपका स्वर्गवास हुआ था। वहां आपका स्मृति मंदिर है आपके शिष्य भुवनसोम शि० राजसागरके गीतानुसार आप बड़े चमत्कारी थे और आपके परचे (चमत्कार) प्रत्यक्ष और प्रसिद्ध हैं। राजसागरने सं० १७५६ फाल्गुन शुक्ला ११ को वहांकी यात्रा की। आपके गुरू कनकसोमजीका परिचय देखें:—युग० जिनचन्द सूरि पृ० १६४।

करमसी

(पृ० २०४)

आपकी जन्मभूमि जेसलमेर है। आपके पिताका नाम चांपा शाह, माताका चांपल दे और गोत्र चोपड़ा था। आप बड़े तपस्वी थे। २५० बेले (छट्ठ भक्त याने २ उपवास) और निवी आम्बिलादि तो अनेकों किये थे। वैशाख शुक्ला ७ को आपने संथारा किया था और आपका गच्छ खरतर था।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप हुंबड गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतियां हमारे संग्रहमें हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये हैं:—(१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोम-सुन्दर, (४) वा० साधुलाभ, (५) वा० चारुधर्म, (६) वा० समय-कलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं और उनके शिष्य यशोलाभजी तो अच्छे कवि हो गये हैं। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमें हैं। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमें दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्महेम

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोलगशाहकी पत्नी चांगादेकी कुक्षिसे अव-तरित हुए थे। आपको लघुवयमें युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री० तिलककमलजीके शिष्य बनाए। ३७ वर्ष पर्य्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ में वालसीसर पधारे, चातुर्मास वहींपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्च-परमेष्टिका ध्यान करते हुए छः प्रहरका अनशन व्रत पालनकर मिती भाद्रव कृष्णा १५ को मध्याह्नके समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

लब्धिकल्लोल

(पृ० २०६)

श्रीकीर्तिरत्नसूरि शाखाके विमलरंगजीके आप शिष्य थे। आप श्रीमाली लाड़णशाहकी पत्नी लाडिमदेके पुत्र थे। सं० १६८१ में गच्छपतिके आदेशसे आप भुज पधारे। वहां कार्तिक कृष्णा षष्ठीको अनशन आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ। शाह पीथा-हाथी-रामसिंह मांडण आदि भुज नगरके भक्तिवान श्रावकोंके उद्यमसे पूर्व दिशाकी ओर आपकी चरणपादुकाएं मार्गशीर्ष कृष्णा ७ को स्थापित की गयी।

आपका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०९में दिया गया है।

विमलकीर्ति

(पृ० २०८)

हुवड़ गोत्रीय श्रीचन्दशाहकी पत्नी गवरादेवी आपकी जन्म-दातृ थी। आपने सं० १६५४ माह शुक्ला ७ को साधुसुन्दरो-पाध्यायके पास दीक्षा ग्रहण की। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको वाचक पदसे अलंकृत किया था।

सं० १६९२ में (मुलताण चतुर्मास आये) किरहोर-सिन्धमें आप स्वर्ग सिधारे।

आपकी कृतियोंकी सूची युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १९३ में दी गई है। सं० १६७९ मि० सु० ६ जिनराजसूरिजीके उपदेशसे वा० विमलकीर्तिजीके पास श्राविका पेमाने १२ व्रत ग्रहण किये।

वाचनाचार्यसुखसागर

(पृ० २५३)

वाचनाचार्यजी साध्वाचारकी कठिन क्रियाओंको पालन करनेमें बड़ा यत्न करते थे। सं० १७२५ में गच्छनायकके आदेशसे और स्तम्भ तीर्थकी यात्राके लिये खम्भातमें चतुर्मास किया। चतुर्मास सानन्द पूर्ण हुआ। सर्व नर-नारी आपके वचनकलासे प्रसन्न थे। चतुर्मासके अनन्तर ज्ञानबलसे अपना आयुष्य अल्प ज्ञातकर अनशन आराधना पूर्वक मार्गशीर्ष कृष्णा १४ सोमवारको स्वर्ग सिधारे। उस समय आप सावचेतीके साथ उतराध्ययन सूत्रका श्रवण कर रहे थे, श्रावक समुदाय आपके सन्मुख बैठा था। स्वर्गप्राप्तिके पश्चात् वहां आपकी पादुकाऐं स्थापित की गई।

वा० हीरकीर्ति

(पृ० २५६)

युग० श्रीजिनचन्द्रसूरिके शिष्य वा० तिलककमल शि०पद्महेमके शिष्य दानराज, निलयसुन्दर, हर्षराजादि थे। इनमें दानराजजीके शिष्य हीरकीर्ति गोलछा गोत्रीय थे। सं० १७२९में जोधपुरमें आपका चतुर्मास था। वहीं श्रावण शुक्ला १४ को ८४ लाख जीवायोनियोंसे क्षमतक्षामणाकी, दो प्रहरके अणशण आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपकी स्मृतिमें इसी संवतमें माघ कृष्णा १३ सोमवारको (१) पद्महेम, (२) दानराज, (३) निलयसुन्दर, (४) हर्षराजकी पादुकाओंके साथ आपकी पादुकाएं भी स्थापित की गई।

आपकी परम्परादिके विषयमें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ (पृ० १७३) देखना चाहिये।

उ० भावप्रमोद

(पृ० २५८)

श्रीजिनराजसूरि (द्वितीय) के शि० भावविजयके शिष्य भावविनयजीके आप सुशिष्य थे। बाल्यावस्थामें ही आपने चारित्रका ग्रहण किया था। श्रीजिनरत्नसूरिजीने आपके विमलमतिकी प्रशंसा की थी और उनके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी तो आपको (विद्वतादि गुणोंके कारण) अपने साथ ही रखते थे। आप बड़े प्रभावशाली और उपाध्याय पदसे अलंकृत थे। सं० १७४४ माघ कृष्णा ५ गुरुवारके पिछले प्रहर, अनशन (भवचरिम-पचक्खाण) द्वारा समाधिपूर्वक आप स्वर्ग सिधारे।

आपके शि० भावसागर रचित सप्तपदार्थी वृति (१७३० भा० सु० वेनातट, पत्र ३७) कृपाचन्द्र सूरि भं० (वं० नं० ४६ नं० ६११) में उपलब्ध है।

चंद्रकीर्ति

(पृ० ४२१)

सं० १७०७ पोष कृष्ण १ को बिलाड़ेमें आपका अनशन आराधन सह स्वर्गवास हुआ। यह कवित्त आपके शि० सुमतिरंगने रचा है, जो कि अच्छे कवि थे। देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०६, ३१५

कविवर जिनहर्ष

(पृ० २६१)

खरतर गच्छीय शान्तिहर्षजीके शिष्य कविवर जिनहर्ष अट्ठा-

रहवीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध कवि थे। आपने मंद-बुद्धियोंके लाभार्थ शत्रुंजय-महात्म्य जैसे अनेकों विशाल ग्रंथोंकी भाषा चौपाइ रचकर बहुत उपगार किया। आप साध्वाचार पालनेमें सदा उद्यम करते रहते थे, और आपके व्रत नियम अन्तिम अवस्था तक अखड़ित थे। आपके अनेकानेक सद्गुणोंमें १ गच्छममत्वका त्याग (जिसके उदाहरण स्वरूप सत्यविजय पन्यास रास प्रकाशित ही है) २ जन समुदाय अनुवृत्तिका त्याग ३ ऋजुता ४ राग द्वेषका उपशम आदि मुख्य है। आप रास चौपाई आदि भाषा काव्योंके निर्माण करनेमें अप्रमत्त रह, ज्ञानका बड़ा विस्तार करते रहते थे।

आपके गच्छममत्व परित्यागके सद्गुणसे तपागच्छीय वृद्धि-विजयजीने आपके व्याधि उत्पन्न होनेके समयसे बड़ी सेवा-भक्ति और वैयावच्चकी थी और अन्तिम आराधना भी उन्होंने ही कराइ थी। पाटणमें आप बहुत वर्षों तक रहे थे, आपका स्वर्गवास भी वहीं हुआ, श्रावकोंने अंत-क्रिया (मांडवी रचनादि) बड़ी भक्तिसे की। आपके विशाल कृतियों नोंध जै० गु० क० भा० २ में देखनी चाहिये। उसके अतिरिक्त और भी कइ रास आदि हमें उपलब्ध हैं, उनमें मुख्य ये हैं:—१ मृगापुत्रचौ०(१७१५ मा० व० १० सत्यपुर) (२) कुसम श्री रास (१७१७ मि० १३) (३) यशोधर रास (१७४७ वै० सु० ८ पाटण) (४) कनकावती रास (अपूर्ण) ५ श्रीमतीरास (१७६१ मा० सु० १० पाटण, ढाल १४, रामलालजी यतिका संग्रह) और स्तवन सज्झायादि अनेक उपलब्ध है।

कवि अमरविजय

(पृ० २४८)

आप वाचक उदय तिलक (जिनचंद्रसूरिशि०) के शिष्य थे। आप अच्छे विद्वान और सुकवि थे, आपके रचित कृतियोंकी संक्षिप्त नोंध इस प्रकार है :

१ रात्रि भोजन चौ० (सं० १७८७ द्वि० भा० सु० १ बु० नापासर, शांतिविजय आग्रह)

२ सुमंगलारास (प्रमाद विषये) सं० १७७१ ऋतुराय पूर्णतिथि।

३ कालाशवेली चौ० (१७६७ आखातीज, राजपुर

४ धर्मदत्त चौ० (१८०३ धनतेरस राहसर, पत्र ६६)

५ सुदर्शनसेठ चौ० (१७६८ भा० सु० ५ नापासर)

६ मेताराज चौ० (१७८६ श्रा० सु० १३ सरसा) जय० भं०

७ सुकमाल चौ० (बृहत् ज्ञानभंडार-बीकानेर)

८ सम्यक्ख ६७ बोलसज्झाय (सं० १८००) जय० भं०

९ अरिहंत १२ गुणस्तवन (१७९५) गा० १३ जय० भं०

१० सिद्धाचल स्तवन (१७६९) गा० १५ जय० भं०

११ सुप्रतिष्ठ चौ० (१७९४ मि० मरोट) जै० गु० कविओ भा० २ पृ० ५८२

१२ केशी चौ० (१८०६ विजयदशमी गारबदेसर) रामलालजी संग्रह।

१३ मुंच्छ माखड कथा पत्र ६ (सं० १७७५ विजयदशमी) हमारे संग्रहमें नं० २२८।

श्री अमर विजयजीके शि० लक्ष्मीचन्द कृत सुबोधिनीवैद्यकादि ग्रन्थ उपलब्ध है और द्वि० शि० उ० ज्ञानबर्द्धन शि० कुशलकल्याण शि० दयामेरुकृत ब्रह्मसेन चौ० (सं० १८८० जेठ सु० १ बु, भावनगर) उपलब्ध है। आपकी परम्परामें यतिवर्य जयचंदजी अभी विद्यमान है।

सुगुरुवंशावली

(पृ० २०७)

जिनभद्र-जिनचन्द्र, जिनसमुद्र-जिनहंससूरिजीके पट्टधर जिन-माणिक्यसूरिजी थे। उनके पारखवंशीय वा० कल्याणधीर नामक शिष्य थे। उनके भणशाली गोत्रीय वा० कल्याण लाभ और कल्याणलाभके उ० कुशललाभ नामक विद्वान शिष्य थे। इनका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६४ में देखना चाहिये।

श्रीमद् देवचन्द्रजी

(पृ० २६४)

वीकानेर नगरके समीपवर्ती एक रमणीय ग्राम था, वहां लुणिया शाह तुलसीदासजी निवास करते थे, उनके धनवाइ नामक शीलवती पत्नी थी। एक समय खरतर वा० राजसागरजी वहां पधारे। दम्पतिने भावसे उन्हें वंदना की और धनबाइने जो कि उस समय गर्भवती थी, कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो आपको वहरा दूंगी। गर्भ दिनों-दिन बढ़ने लगा, उत्तम गर्भके प्रभावसे असाधारण स्वप्न और उत्तम दौहद उत्पन्न होने लगे। इसी समय वहां जिनचन्द्र सूरिजी का शुभागमन हुआ इस समय धन बाइके एक पुत्र तो विद्यमान

था और गर्भवती थी। लक्षणोंसे गुरुश्रीने उनके फिर भी पुत्र होने का निश्चय किया और "इस द्वितीय पुत्रको हमें देना" कहा, पर धनबाई वाचकश्रीको इससे पूर्व ही वचन दे चुकी थी।

सं० १७४६ में पुत्र उत्पन्न हुआ, गर्भके समय स्वप्नमें इन्द्र आदि देवों द्वारा मेरु पर्वतपर प्रभुका स्नात्र महोत्सव किये जानेका दृश्य देखा था। उसीके स्मृति सूचक नवजात बालकका शुभ नाम 'देवचन्द्र' रखा। अनुक्रमसे वृद्धि पाते हुए जब वह बालक ८ वर्षका हुआ, उस समय वा० राजसागरजीका फिर वहीं शुभागमन हुआ दम्पत्ति (धनबाइ) ने अपने वचनानुसार अपने होनहार बालकको गुरु श्रीके समर्पण कर दिया। गुरु श्रीने शुभ मुहूर्त देख सं० १७५६ में लघु दीक्षा दी। यथासमय जिनचन्द्र सूरिजीके पास वड़ी दीक्षा दिलाई गई, सूरिजीने नव दीक्षित मुनिका नाम 'राजविमल' रखा। राजसागरजीने प्रसन्न होकर आपको सरस्वती मन्त्र प्रदान किया, श्रीदेवचन्द्रजीने बेनातट (बिलाड़ा) ग्रामके भूमिग्रहमें रहकर उस का साधन किया, देवी सरस्वती आपपर प्रसन्न हुई जिसके फल स्वरूप थोड़े ही समयमें आप गीतार्थ हो गये।

गुरुश्रीने स्वपरमतके सभी आवश्यक और उपयोगी शास्त्र पढ़ाकर आपके प्रतिभामें अभिवृद्धि की। उन शास्त्रोंमें उल्लेखनीय ये हैं—षडावश्यकादि जैन आगम, व्याकरण, पञ्चकल्प, नैषध, नाटक, ज्योतिष, १८ कोष, कौमुदीमंहाभाष्य, मनोरमा, पिङ्गल, स्वरोदय, तत्वार्थ, आवश्यक बृहद्वृत्ति, हेमचन्द्रसूरि, हरिभद्रसूरि और यशोविजयजी कृत ग्रन्थ समूह, ६ कर्म ग्रन्थ, कर्म प्रकृति इत्यादि।

सं० १७७४ में वाचक राजसागर और १७७५ में उपाध्याय ज्ञानधर्मजी स्वर्ग सिधारे। मरोटमें देवचन्दजीने विमलदासजी की पुत्री माइजी, अमाइजीके लिये 'आगमसार' ग्रन्थ बनाया।

सं० १७७७ में आप गुजरात-पाटण पधारे, वहां तत्वज्ञानमय स्यादवाद् युक्त आपके व्याख्यान श्रवणार्थ अनेकों लोग आने लगे। इसी समय श्रीमाली ज्ञातीय नगरसेठ तेजसी दोसीने जो कि पूर्णिमा गच्छीय श्रावक थे, अपने गुरु श्रीभावप्रभसूरि (जिनके पास विशाल ग्रन्थ भण्डार था, और अनेकों शिष्य पढ़ते थे) के उपदेशसे सहस्त्रकूट जिनालय निर्माण कराया था। एक बार देवचन्द्र जी उक्त नगरसेठ जीके घर पधारे और उनसे सहस्त्रकूटके १०००— जिनोंके नाम आपने अपने गुरुश्रीसे श्रवण किये होंगे? पूछा। श्रेष्ठिने चमत्कृत होकर प्रत्युत्तर दिया कि भगवन्! नहीं सुने। इसी अवसरपर ज्ञानविमल सूरिजी पधारे। श्रेष्ठिने उन्हें वन्दन कर सहस्त्रकूटके १००० नाम पूछे। उन्होंने नाम व उल्लेख-स्थान फिर कभी वतलानेका कहकर श्रेष्ठिकी जिज्ञासा शान्ति की। अन्यदा पाटण-साहीपोलके चौमुख वाड़ी पार्श्वनाथजीके मन्दिरमें सतरह भेदी पूजा पढ़ाई गई उसमें श्रीदेवचन्द्रजी और ज्ञानविमल सूरिजी भी सम्मिलित हुए। इसी समय सेठ भी दर्शनार्थ वहां पधारे और सूरिजीको देख फिर पूर्व जिज्ञासा जागृत हुई, अतः सूरिजीको सहस्त्र-कूट जिन के नामोंकी पृच्छा की, उन्होंने उत्तरमें 'प्रायः सहस्त्रकूट जिन नामोंकी नास्ति (विच्छेद) ज्ञात होती है, सम्भव है कोई शास्त्रमें हो, कहा'। इन वचनोंको श्रवण कर देवचन्द्रजीने उनसे कहा

कि आप तो श्रेष्ठ विद्वान कहलाते हैं फिर ऐसे अयथार्थ कैसे कहते हैं, और ऐसे वचनोंसे श्रावकोको प्रतीति भी कैसे हो सकती है।

यह सुनकर ज्ञानविमलसूरिजी कुछ तड़ककर बोलेः—तुम मरुस्थलके वासी हो, शास्त्रके रहस्यको क्या जानो! जिसने शास्त्रोंका अभ्यास किया है, वही जान सकता है। इसी समय श्रेष्ठिने कहा, सूरिजी मुझे इस वातका निर्णय करना है। तव सूरिजीने देवचन्द्रजीसे कहा कि तुम्हें व्यर्थका विवाद पसन्द ज्ञात होता है। (मारवाड़ी कहावत "वेंवती लड़ाइ मोल लेवे") अन्यथा यदि तुम्हें सहस्त्रकूटके नाम ज्ञात हो तो वतलाओ। देवचन्द्रजीने शिष्यकी ओर देखा, तव विनयी शिष्य मनरुपजीने रजोहरणसे सहस्त्रकूटके नामोंका पत्र निकालकर गुरुश्रीके हाथमें दिया। ज्ञान-विमलसूरिजीने उसे पढ़कर आश्चर्यान्वित हो देवचन्द्रजीसे पूछा कि आपके गुरुश्रीका नाम शुभ नाम क्या है? उत्तरः—उपाध्याय—राजसागरजी। तव सूरिजीने कहा, आपकी परम्परा (घराना) तो विद्वद् परम्परा है, तव भला आप विद्वान कैसे नहीं होंगे, इत्यादि मृदुवाक्यों द्वारा वहुमान किया। श्रेष्ठि तेजसीका मनोरथ पूर्ण हुआ, सहस्त्रकूट नामोंकी देवचन्द्रजीने प्रसिद्धि की। प्रतिष्ठादि अनेक उत्सव हुए।

इसके वाद देवचन्द्रजीने परिग्रहका सर्वथा परित्याग कर क्रिया-उद्धार किया। सं० १७७७ में आप अहमदावाद पधारे, नागौरी सरायमें अवस्थिति की। आपकी अध्यात्म रसमय देशना श्रवण कर श्रोताओंको अपूर्व आल्हाद उत्पन्न हुआ। श्रीमद् देवचंद्रजी

भगवती सूत्रके गम्भीर रहस्योंको उद्घाटन करने लगे। आपके उपदेशसे माणिकलालजी ढूंढ़ियेने मूर्त्ति पूजा स्वीकार की, इतना हो नहीं उन्होंने नवीन चैत्य कराके गुरुश्रीके हाथसे प्रतिष्ठा भी करवाई। श्रीमद्ने शान्तिनाथ पोलके भूमिगृहमें सहस्त्रफणादि अनेकों बिम्बों की प्रतिष्ठा की, इन प्रतिष्ठादि कार्योंमें प्रचुर द्रव्य खर्च किया गया और जैन धर्मकी महती महिमा हुई।

सं० १७७६ में आपने खम्भातमें चौमासा कर अनेक भव्योंको प्रतिबोध दिया। व्याख्यानमें आपने शत्रुञ्जय तीर्थकी महिमा बतलाई, इससे श्रावकोंने शत्रुंजयपर कारखाना स्थापित कर नवीन चैत्य और जीर्णोद्धार करवाना आरम्भ किया। सं० १७८१-८२-८३ में कारीगरोंने वहां चित्रकारी आदिका बड़ा ही सुन्दर काम किया। (वहांसे विहार कर) राजनगर आये, चातुर्मासके लिये सूरतकी विशेष आग्रहपूर्वक विनती होनेसे आप सूरत पधारे। सं० १७८५-८६-८७ में पालीताने एवं शत्रुजंयमें वधुशाह कारित चैत्योंकी देवचन्द्रजीने प्रतिष्ठा की और पुनः राजनगर आकर सं० १७८८ का चतुर्मास वहां किया। इस समय वाचक दीपचंदजीके व्याधि उत्पन्न हुई और आषाढ़ शुक्ला २ को वे स्वर्ग सिधारे। तपागच्छीय विनयी विवेकविजयजीको आप विद्याध्ययन कराने लगे और उन्होंने भी आपकी वैयावच्च-सेवा-भक्ति कर गुरु-कृपा प्राप्त की।

अहमदाबादमें शाह आणन्दरामजी जो कि रतन भंडारीके अग्रेश्वरी थें, गुरुश्रीसे नित्य धर्म-चर्चा किया करते थे और गुरुश्रीके ज्ञानकी गरिमासे चमत्कृत हो उन्होंने रतन भंडारीके आगे आप-

की प्रशंसा की, कि मरुस्थलीके ज्ञानी साधु पधारे हैं। उनके वचनोंसे रत्नसिंह भी आपको वंदनार्थ पधारे और गुरुश्रीसे ज्ञान सुधाका सेवन कर वड़े प्रसन्न हुए। देवचन्द्रजीके उपदेशसे रतन भंडारी नित्य जिन पूजनादि करने लगे, एवं वहां बिम्ब प्रतिष्ठा, १७ भेदी पूजा आदि अनेकानेक धर्मकृत्य हुआ करते, उनमें भी भंडारीजी सम्मिलित होने लगे।

एक वार राजनगरमें मृगीका उपद्रव हुआ, तब भंडारीजीने उसे निवारणार्थ गुरुश्रीसे विनयपूर्वक विज्ञप्ति की। आपने शासन प्रभावनादि लाभ जानकर जैन मंत्राम्नायसे उसे निवारण कर मनुष्यों का कष्ट दूर किया। इससे जिन-शासन और देवचन्द्रजीकी सर्वत्र सविशेप प्रशंसा होने लगी।

इसी समय रणकुजी वहुत सेना लेकर रत्नभंडारीसे युद्ध करने आये। भंडारीजी तत्काल गुरुजीके पास आये, क्योंकि उन्हें गुरुश्रीका पूरा विश्वास था, वे अपने सहायक और सर्वस्व एकमात्र आपको ही मानते थे। अतः गुरुश्रीसे निवेदन किया कि सैन्य वहुत आया है, युद्धमें विजय अब आपके ही हाथ है। गुरुश्रीने आश्वासन देकर जैनमन्त्राम्नायका प्रयोग किया, अतः युद्धमें रणकुजी हारे और भंडारीजीकी विजय हुई।

धोलका वास्तव्य श्रेष्ठि जयचंदने पुरुषोतम योगीको गुरुश्रीके चरण कमलोंमें नमन कराया। गुरुश्रीने योगीके मिथ्यात्व शल्यको निवारणकर उसे जैनशासनानुरागी बनाया। सं० १७६५ पालीताने और १७६६-६७ में नवानगरमें चतुर्मास किया। वहां आपने ढुढकोंके

टोलोंको विजय कर नवानगरके चैत्योंकी पूजा, जिसे ढुढ़कोंने वन्ध करा दी थी पुनः सञ्चालित की। परधरी ग्रामके ठाकुरको आपने प्रतिवोध दिया और वे गुरु आज्ञामें चलने लगे। फिर पालीताना और पुनः नवानगर चतुर्मास कर १८०२-३ में राणाबावमें पधारे। वहांके अधिपतिके भंगदर रोगको नष्ट किया, अतः वह भी आपका भक्त हो गया।

सं० १८०४ में भावनगर पधारे, वहां मेहता ठाकुरसी कट्टर ढुढ़कानुयायी थे, उन्हें प्रतिवोध दिया एवं वहांके ठाकुरको भी जैन-मतानुरागी बनाया। सं० १८०४ में पालीतानेके मृगी उपद्रवको भी आपने नष्ट किया। सं० १८०५ में लीवड़ी पधारे और वहांके श्रावक डोसो बोहरा, शाह धारसी, शाह जयचन्द, जेठा, रहीकपासी आदिको विद्याध्ययन कराया। लीवड़ी, ध्रागंदा, चूड़ा इन तीन गावोंमें ३ प्रतिष्ठाऐं की। ध्रागंदामें प्रतिष्ठाके समय सुखानन्दजी आपसे मिले थे।

आपके उपदेशसे सं० १८०८ में गुजरातसे शत्रुजंय सङ्घ निकला। गिरिराजपर वड़े उत्सव हुए। वहुतसे द्रव्यका सद्व्यय हुआ। सं० १८०८-९ का चतुर्मास गुजरातमें किया।

१८१० में कचराशाहने शत्रुजंयका सङ्घ निकाला, श्रीदेवचन्द्रजी भो उसके साथ पधारे थे। शाह मोतीया और लालचन्द जैन धर्म में प्रवीण और दानेश्वरी थे। शत्रुञ्जयपर गुरुश्रीने प्रतिष्ठायें की। शाह कचरा, कीकाने ६० हजार रुपये व्यय किये।

सं० १८११ में लीवड़ीमें प्रतिष्ठा की। बढ़वाणके ढुढ़क श्रावकों

को प्रतिवोध देकर मूर्तिपूजक वनायें। उन्होंने सुन्दर चैत्य निर्माण कराये और उनमें अनेकानेक पूजायें होने लगीं।

श्री देवचन्द्रजीके पास विचक्षण शिष्य मनरूपजी, वादी-विजेता विजयचन्द्रजी (एवं अन्य गच्छीय साधु भी आपके पास विद्याध्ययन करते थे) एवं मनरुपजीके वक्तुजी और रायचंदजी नामक शिष्यद्वय रहते थे, एवं गुरु आज्ञामें रहकर गुरुश्रीकी सेवाभक्ति किया करते थे।

सं० १८१२ में श्रीमद देवचन्द्रजी राजनगर पधारे, वहां गच्छ-नायक श्रीपूज्यजीको आमन्त्रित कर उनके द्वारा श्रावक समुदायने वड़े उत्सवसे आपको वाचक पदसे अलंकृत किया।

वा० श्री देवचन्दजीकी देशना अमृतके समान थी। आप हरि-भद्रसूरि, यशोविजयजीके एवं दिगम्बर गोमट्टसारादि तत्व-ज्ञानके ग्रन्थोंका उपदेश देते थे, श्रोताओंकी उपस्थित दिनोंदिन बढ़ने लगी। श्रीमद्ने मुलताण, वीकानेर आदि स्थानोंमें चतुर्मास किये एवं अनेकों नये ग्रन्थोंकी रचना की, जिनमें देशनासार, नयचक्र, ज्ञानसार अष्टक-टीका कर्मग्रन्थ टीका, आदि मख्य हैं।

इस प्रकार शासन उद्योत करते हुए राजनगरके दोसी बाड़ेमें आप विराज रहे थे, उस समय अकस्मात् वायु कोपसे वमनादिकी व्याधि उत्पन्न हुई। श्रीमद्ने अपना आयुष्य निकट ज्ञातकर विनयी शिष्य मनरुपजी और उनके विद्यमान सुशिष्य श्री रायचन्द्रजी (रूपचन्दजी) एवं द्वितीय शिष्य वादी विजयचन्दजी उनके शिष्य द्वय सभाचंद और विवेकचंद्रको योग्य शिक्षा देके उत्तराध्ययन, दशवै-

कालिकादि सूत्र श्रवण करते हुए आत्माराधना कर सं० १८१२ भाद्र कृष्ण अमावस्याको एक प्रहर रात्रि जानेपर स्वर्गवासी हुए। सभी गच्छके श्रावकोंने मिलकर बड़े उत्सवके साथ आपके पवित्र देहका अग्नि-संस्कार किया, गुरुभक्तिमें बहुत द्रव्य व्यय किया गया। श्रीमद्‌के कार्य और आत्म-जागृतिको देखकर कवि कहता है कि आपको मोक्ष सन्निकट है। ७-८ भवोंके पश्चात् तो अवश्य ही सिद्धिगतिको प्राप्त करेंगे। आपके स्वर्गगमनके समाचारों से देश विदेशमें शोक छा गया। कविके कथनानुसार आपके मस्तक में मणि थी, वह दहन समय उछल कर पृथ्वीमें समा गई। किसी के हाथ नहीं आई। श्रावक संघने स्तूप बनाकर आपकी पादुओंकी स्थापना की।

आपके शिष्य मनरुपजी भी गुरु विरहसे आकुल हो थोड़े ही दिनोंमें आपसे स्वर्गमें जा मिले। अभी (रासरचनाके समयमें) भी रायचन्द्रजी योग्यतानुसार व्याख्यानादि देकर धर्म प्रचार करते हैं। उन्होंने अपने गुरुकी प्रशंसा स्वयं करने से अतिशयोक्ति आदिका सम्भव देख प्रस्तुत रास रचनेके लिये कविसे कहा और कविने सं० १८२५ के आश्विन शुक्ला ८ रविवारको यह 'देवविलास रास' बनाया।

आपकी कृतियों श्रीमद् देवचन्द्र भा० १-२ में प्रकाशित हैं। उनके अतिरिक्तके लिये देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८६ और ३११।

महोपाध्याय राजसोम

(पृ० ३०५)

१६ वीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणजीके आप विद्यागुरु थे, अतः उन्होंने आपके गुण-गर्भित यह अष्टक बनाया है। प्रस्तुत अष्टकमें गुणोंकी प्रशंसाके अतिरिक्त इतिवृत्त कुछ भी नहीं है।

अन्य साधनोंके आधारसे आपका ज्ञातव्य परिचय इस प्रकार है—आपके रचित (१) ज्ञान पंचमी पूजा सं० (२) सिद्धाचलस्तवन सं० १७६७ फा० व० ७ (३) नवकरवाली १०८ गुणस्तवन आदि उपलब्ध हैं, और आपके लि० कई प्रतियें भी प्राप्त हैं।

आप क्षेमकीर्ति शाखाके विद्वान थे, परम्पराका नामानुक्रम इस प्रकार है :—

(१) जिन कुशल सूरि (२) विनय प्रभ (३) उ० विजय तिलक (४) उ० क्षेमकीर्ति (५) तपोरत्न (६) तेजराज (७) वा० भुवनकीर्ति (८) हर्ष कुंजर (९) वा० लब्धिमंडण (१०) उ० लक्ष्मीकीर्ति ११ सोमहर्ष (गुरु भ्राता, प्रसिद्ध विद्वान लक्ष्मीवल्लभ) १२ वा० लक्ष्मी समुद्र (१३) कपूर प्रियजीके १४ शि० आप थे। आपकी परम्परामें (१५) वा० तत्व वल्लभ (१६) प्रीतिविलास (१७) पं० धर्म सुन्दर (१८) वा० लाभ समुद्र (१९) मुनिसिंह (२०) अमृत रंग (अबीरचन्द) हुए, जोकि सं० १९७१ में स्वर्ग सिधारे।

वा० अमृत धर्म

(पृ० ३०७)

उपाध्याय क्षमाकल्याणजीके आप गुरुवर्य थे, अतः पाठकजीने

अपने गुरुजीकी भक्ति सूचक इस अष्टककी रचना की है। इसका ऐतिहासिक सार इस प्रकार है :—

कच्छ देशमें उपकेश वंशकी वृद्ध शाखामें आपका जन्म हुआ था, श्री जिनभक्तिसूरिजीके शिष्य प्रीतसागरजी (जिनलाभ सूरिके सतीर्थ-गुरु भ्राता) के आप शिष्य थे। आपने शत्रुंजयादितीर्थोंकी यात्रा थी एवं सिद्धांतोंका योगोद्वहन किया था। संवेगरगसे आपकी आत्मा ओतप्रोत थी (इसीसे आपने परिग्रहका त्याग कर दिया था)। पूर्व देशमें आपके उपदेशसे स्वर्णदंडध्वज कलशवाले जिनालय निर्माण हुए थे। अनेक भव्यात्माओंको प्रतिबोध देते हुए आप जैसलमेर पधारे, और वहीं सं० १८५१ माघ शुक्ला ८ को समाधिसे आपकी मृत्यु हुई। स्थानांग सूत्रके अनुसार आपकी आत्मा मुखसे निर्गत होनेके कारण, आप देवगतिको प्राप्त हुए ज्ञात होते हैं। आप आप वाचनाचार्य पदसे विभूषित थे। विशेप परिचय उ० क्षमा-कल्याणजीके स्वतंत्र चरित्रमें दिया जायगा।

उ० क्षमाकल्याण

(पृ० ३०८)

गुरुभक्त शिष्यने आपके परलोकवासी होनेपर विरहात्मक और गुणवर्णनात्मक इस अष्टक और स्तवको रचा है। स्तवका ऐति-हासिक सार यही है, कि सं० १८७३ पोष कृष्णा १४ को बीकानेरमें आप स्वर्ग सिधारे थे।

१९ वीं शताब्दीके खरतर विद्वानोंमें आप अग्रगण्य थे। आपका ऐ० चरित्र हम स्वतंत्र पुस्तकाकार प्रकाशित करनेवाले हैं, अतः यहां विशेष नहीं लिखा गया।

उ० जयमाणिक्य
(पृ० ३१०)

यति हरखचन्दजीके शिष्य जीवणदासजीके आप सुशिष्य थे। १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें आपकी अच्छी ख्याति थी। सेवक स्वरूपचन्दने छंदमें सं० १८२५ वैसाखके शुक्ला ६ को आपने (!) जिनचैत्यकी प्रतिष्ठा करवाई, उसका उल्लेख किया है। आपके सुन्दरदास, वस्तपाल, दीपचन्द अरजुनादि कई शिष्य थे, आपका वाल्यावस्थाका नाम 'घमडा' था। आप कीर्त्तिरत्न सूरि शाखाके थे।

हमारे संग्रहमें आपके (सं० १८५५ मिगसर वदी ३ बीकानेरमें) जीवराशि क्षमापनाको टीप है। अतः यथा संभव इसके कुछ दिनों बाद ही बीकानेरमें आपका स्वर्गवास हुआ होगा। आपको दिये हुए आदेशपत्र और अन्य यतियोंके दिये हुए अनेकों पत्र हमारे संग्रहमें हैं।

श्रीमद् ज्ञानसार जी
(पृ० ४३३)

जैंगलेवास वास्तव्य सांड ज्ञातीय उदैचन्दजीकी पत्नी जीवणदेने सं० १८०१ में आपको जन्म दिया था, सं० १८१२ बीकानेरमें श्री जिनलाभ सूरिजीके शिष्य रायचन्द (रत्नराज) जीके आप शिष्य हुए। बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी आपके परम भक्त थे। राजा रत्नसिंहजी भी आपको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। आपके सदासुखजी नामक सुशिष्य थे।

आप मस्तयोगी, उत्तमकवि और राजमान्य महापुरुष थे। आपके रचित समस्त ग्रन्थोंकी हमने नकलें कर ली है जिसे विस्तृत ऐतिहासिक जीवन चरित्रके साथ यथावकाश प्रकाशित करेंगे।

खरतरगच्छ आर्यामण्डल

लावण्य सिद्धी

(पृ० २१०)

वीकराज शाहकी पत्नी गुजरदेकी आप पुत्री थीं। पहुतणी रत्न-सिद्धिकी आप पट्टधर थीं, साध्वाचारको सुचारुरूपसे पालन करती हुई यु० जिनचन्द्रसूरिजीके आदेशसे आप वीकानेर पधारी और वहीं अनशन आराधना कर सं० १६६२ में स्वर्ग सिधारी। वहां आपके स्मृतिमें थुंभ (स्तूप) वनाया गया। हेमसिद्धि साध्वीने यह गुणगर्भित गीत वनाया है।

सोमसिद्धि

(पृ० २१२)

नाहर गोत्रीय नरपालकी पत्नी सिंघादेकी आप पुत्री थी, आपका जन्म नाम 'संगारी' था, यौवनावस्था आनेपर पिताश्रीने बोथरा जेठाशाहके पुत्र राजसीसे आपका पाणिग्रहण कर दिया। १८ वर्षकी अवस्थामें धर्म-उपदेशके श्रवण करते हुए आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और श्वास-श्वसुरसे अनुमति ले दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होनेपर आपका नाम 'सोमसिद्धि' रखा गया, आपने आर्या लावन्यसिद्धिके समीप सूत्र-सिद्धान्तोंका अध्ययन किया था और उनने आपको अपने पदपर स्थापित की थी। शत्रुंजय आदि तीर्थोंकी आपने यात्रा की थी। श्रावण कृष्णा १४ वृहस्पतिवारको अनशनकर आप स्वर्ग

सिधारी। पहुत्तणी (संभवतः आपकी पदस्थ) हेमसिद्धिने आपकी स्मृतिमें यह गीत बनाया।

गुरुणी विमलसिद्धि

(पृ० ४२२)

आप मुलतान निवासी माल्हू गोत्रीय शाह जयतसीकी पत्नी जुगतादे की पुत्री-रत्न थीं। लघुवयमें ब्रह्मचर्य व्रतके धारक अपने पितृव्य गोपाशाहके प्रयत्नसे प्रतिबोध पाकर आपने साध्वी श्री लावण्यसिद्धिके समीप प्रव्रज्या स्वीकार की थी। निर्मल चारित्रको पालन कर अनशन करते हुए बीकानेरमें स्वर्ग सिधारी। उपाध्याय श्रीललितकीर्त्तिजीने स्तूपके अन्दर आपके सुन्दर चरणोंकी स्थापना कर प्रतिष्ठा की। साध्वी विवेकसिद्धिने यह गीत रचा।

गुरुणी गीत

(पृ० २१४)

आदिकी १॥ गाथा नहीं मिलनेसे आर्याश्रीका नाम अज्ञात है।

सावंसुखा गोत्रीय कर्मचन्दकी ये पुत्री थीं। श्री जिनसिंह सूरिजीने आपको पहुतणी पद दिया था और सं० १६६६ भाद्रकृष्ण २ को विद्यासिद्धि साध्वीने यह गुरुणीगीत बनाया है।

खरतर गच्छ शाखायें

जिनप्रभसूरि परम्परा

(पृ० ११, १३, १४, ४१, ४२,)

वीर—सुधर्म-जम्बू-प्रभव-शय्यंभद्र यशोभद्र-आर्यसंभूति-भद्रबाहु स्थूलिभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती-शांतिसूरि-हरिभद्रसूरि संडिल्लसूरि-आर्यसमुद्र,-आर्यमंगू-आर्यधर्म-भद्रगुप्त-वज्रस्वामी-आर्यरक्षित-आर्यनन्दि-आर्यनागहस्ति-रेवंत-खण्डिल-हिमवन्त नागार्जुन-गोविन्द-भूतदिन्न लोहदित्य-दूष्यसूरि-उमास्वातिवाचक-जिनभद्रसूरि-हरिभद्रसूरि-देवसूरि-नेमिचन्द्रसूरि—उद्योतनसूरि-वर्द्धमानसूरि-जिनेश्वरसूरि-जिनचन्द्रसूरि-अभयदेवसूरि-जिनवल्लभसूरि-जिनदत्तसूरि- जिनचन्द्रसूरि-जिनपतिसूरि-जिनेश्वरसूरि-यहां तक तो अनुक्रम सादृश ही है।

इसके पश्चात् जिनेश्वरसूरिके पट्टधर जिनसिंहसूरि-जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि-जिनमेरुसूरि (पृ० ११) अनुक्रमसे उनके पट्टधर जिनहितसूरि तकका नाम आता है (पृ० ४२) इनमें जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरिका विशेष परिचय गीतोंमें इस प्रकार है :—

जिनप्रभसूरि

जिनप्रभसूरिजीने महम्मद पतिशाहको दिल्लीमें अपने गुण समूहसे रंजित किया।

अट्ठाही, अष्टमी चतुर्थीको सम्राट उन्हें सभामें आमन्त्रित करते थे, कुतुवुद्दीन भी आपके दर्शनसे बड़े प्रसन्न हुए थे।

पतिशाह महम्मद शाह आपसे दिल्लीमें सं० १३८५ पौष शुक्ला ८

शनिवारको मिले थे, सुरत्राणने आदरसहित नमनकर आपको अपने पास बिठाया, और उनके मृदु भाषणोंसे प्रसन्न होकर हाथी, घोड़े, राज, धन, देश ग्रामादि जो कुछ इच्छा हो, लेनेके लिये विनती करने लगा। पर साध्वाचारके विपरीत होनेसे आपने किसी भी वस्तुके लेनेसे इनकार कर दिया।

आपके निरीहताकी सुलताननने बड़ी प्रशंसाकी और वस्त्रादिसे पूजा की। अपने हाथकी निशानी (मोहर छाप) वाला फरमान देकर नवीन वसति-उपाश्रय बनवा दिया और अपने पट्टहस्ति (जिसपर बादशाह स्वयं बैठता है) पर आरोहन कराके मीर मालिकोंसे साथ पोषध-शाला बड़े उत्सवके साथ पहुंचाया। वाजित्र बाजते और युवतियांके नृत्य करते हुए बड़े उत्सवसे पूज्यश्री वसतीमें पधारे। पद्मावती देवीके सानिध्यसे आपकी धवल कीर्ति दशोदिश व्याप्त हो गई।

आप बड़े चमत्कारी और प्रभावक आचार्य थे। आपके चमत्कारों में १ आकाशसे कुलह (टोपी-घड़ा) को ओघे (रजोहरण) के द्वारा नीचे लाना २ महिष (भैंस) के मुखसे वाद करना ३ पतिशाहके साथ बड़ (वट) वृक्षको चलाना ४ शत्रुंजयके रायण वृक्षसे दुग्ध बरसाना ५ दोरड़ेसे मुद्रिका प्रगट करना ६ जिन प्रतिमासे वचन बुलवाने आदि मुख्य हैं।

आपके विषयमें स्वतन्त्र निबन्ध (ला० म० गांधी लिखित) प्रकाशित होनेवाला है उसे, और जैनस्तोत्र सन्दोह भा० २प्रस्तावना पृ० ४४ से ५२ एवं ही० रसिक० सम्पादित ग्रन्थ देखना चाहिये।

जिनदेवसूरि

(पृ० १४)

जिनप्रभसूरिजीके पट्टपर आप सूर्यके समान तेजस्वी थे। मेढ़ मंड़ल-दिल्लीमें आपके वचनामृतसे महम्मद शाहने कन्नाणापुर (कन्यायनीय) मंडण वीर प्रभुको शुभलग्नमें स्थापित किया था। ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशलके आप भण्डार थे एवं लक्षण, छन्द, नाटक आदिके आप वेत्ता थे।

कुलधर (शाह) के कुलमें वीरणी नामक नारि-रत्नके कुक्षिसे आपका जन्म हुवा था, जिनसिंहसूरिजीके पास आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पीछेके आचार्योंकी नामावलीका पता (१६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्ध तकका) हमारे संग्रहके एक पत्र एवं ग्रन्थ प्रशस्तियों से लगा है। जिसका विवरण इस प्रकार है :—

जिनप्रभसूरि—जिनदेवसूरि—पट्टधरद्वय १ जिनमेरुसूरि २ जिनचन्द्रसूरि, इनमें जिनमेरुसूरिके पट्टधर—जिनहितसूरि—जिन-सर्व्वसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—जिनतिलकसूरि (सं० १५११)—जिनराजसूरि—जिनचंद्रसूरि (सं० १५८५)—पट्टधर-द्वय १ जिनमेरुसूरि और २ जिनभद्रसूरि—(सं० १६००)—जिनभानुसूरि (सं० १६४१)

बेगड़ खरतरशाखा

(पृ० ३१२ से ३१८)

गुर्वावलीमें जिनलब्धिसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि तक क्रम एक समान ही है, जिनचन्द्रसूरिके पट्टापर भट्टारक शाखाकी ओर जिन-राजसूरि पट्टधर हुए। वे माल्हू गोत्रीय थे, इसीसे बेगड़ गच्छवाले उनकी परम्पराको माल्हूशाखा कहते है। उधर द्वितीय पट्टधर जिनेश्वरसूरि हुए, जो इस शाखाके आदि पुरुष हैं। जिनेश्वरसूरिजी आदिका विशेष परिचय गीतोंमें इस प्रकार है :—

जिनेश्वरसूरिजी

छाजहड़ गोत्रीय झांझणके आप पुत्र थे, आपकी माताका नाम झबकु था, और बेगड़ विरुद्धसे आपकी प्रसिद्ध थी। माल्हू गोत्रीय गुरु भ्राताके मानको चूर्ण कर अपने गुरु श्री जिनचन्द्र-सूरिका पाट आपने लिया। आपने वाराही त्रिरायको आराधना किया था और धरणेन्द्र भी आपके प्रत्यक्ष था, अणहिल्लवाडे (पाटण) में खानका परचा पूर्ण कर महाजन बन्द (बन्दियों) को छुड़ाया था। राजनगरमें विहार कर महम्मद वादशाहको प्रतिबोध दिया था और उसने आपका पदस्थापना महोत्सव किया था। आपके भ्राताने ५०० घोड़ोंका (आपके दर्शनपर) दान किया और १ करोड़ द्रव्य व्यय किया था इससे महम्मद शाहने हर्षित हो "बेगड़ा" विरुद्ध प्रदान किया था, (या उसने कहा आपके श्रावक भी बेगड़ और आप भी बेगड़ हैं)। एक बार आप साचोर पधारे, बेगड़ और थूल्रा दोनों गोत्र परस्पर मिले, (वहां) राडद्रहसे लखमीसिंह मन्त्रीने सङ्घ सहित आकर गुरु श्री को वन्दन किया।

लक्ष्मीसिंहने भरम नामक अपने पुत्रको गुरुश्रीको वहराया और चार चौमासे वही रक्खे। सं० १४३० में संथारा कर शक्तिपुर (जोधपुर) में आप स्वर्ग पधारें और वहाँ आपका स्तूप (थुम्भ) वनाया गया, वह वड़ा चमत्कारी है, हजारों मनुष्य वहां दर्शनार्थ आते हैं। स्वर्गगमन पश्चात भी आपने तिलोकसी शाहको ६ पुत्रियोंके ऊपर (पश्चात्) १ पुत्र देकर उसके वंशकी वृद्धि की। पौप शुक्ला १३ को जिनसमुद्रसूरिने स्तूपकी यात्राकर यह गीत वनाया।

गुणप्रभ सूरि प्रवन्ध

(पृ० ४२३)

गुणप्रभसूरि प्रवन्ध और हमारे संग्रहकी पट्टावलीके अनुसार श्री जिनेश्वरसूरिजीका पट्टानुक्रम इस प्रकार है :—

१—श्री जिनशेखरसूरि २—श्री जिनधर्मसूरि ३—श्री जिनचन्द्रसूरि ४—श्री जिनमेरुसूरि ५—श्री गुणप्रभसूरि हुए। इनका विशेप परिचय इस प्रकार है :—

सं० १५७२ में श्री जिनमेरुसूरिजीका स्वर्गवास हो जानेपर मण्डलाचार्य श्री जयसिंहसूरिने भट्टारक पदपर स्थापित करनेके लिए छाजहड़ गोत्रीय व्यक्तिकी गवेपणा की। अन्तमें जूठिल शाखा के मंत्री भोदेवरुके बुद्धिशाली पुत्र नगराज श्रावककी गृहिणी गणपति शाहकी पुत्री नागिलदेके पुत्र वच्छराजने धर्मका लाभ जानकर अपने पुत्र भोजको समर्पण किया। उनका जन्म सं० १५६५ (शाके १४३१) मिगसर शुक्ला ४ गुरुवारके रात्रिमें उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, ऋषियोग, कर्क लग्न, गण वर्गमें हुआ, सं० १५७५में सूरिजीने

दीक्षा दी। दीक्षित होनेके अनन्तर भोजकुमार गुरुश्रीसे विद्याभ्यास करते हुए संयम मार्गमें विशेष रूपसे प्रवृत हुए।

इधर जोधपुरमें राठौर राजा गंगराज राज्य करते थे, वहां छाजहड़ गोत्रीय गांगावत राजसिंह, सत्ता, पत्ता, नेतागर आदि निवास करते थे। सत्ताके पुत्र दुल्हण और सहजपाल थे, सहजपाल के पुत्र मानसिंह, पृथ्वीराज, सुरताण थे। जिनकी माताका नाम कस्तूरदे था। सुरताणकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे जेत, प्रताप और चांपसिंह तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे। उपरोक्त कुटुम्बने विचारकर गंग नरेशसे (नेतागरने) प्रार्थना की, कि हम लोगोंको गुरु महाराजके पट्टोत्सव करनेके लिए आज्ञा प्रदान करें। नृपवर्य्यका आदेश पाकर देश-विदेशमें चारों तरफ आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई, बहुत जगहका संघ एकत्र हुआ और खूब उत्सवपूर्वक सं० १५८२ फाल्गुन शु० ४ श्रीजिनमेरुसूरिके पट्टपर श्री जिनगुणप्रभ सूरिजीको स्थापित किया गया। उन्हें बड़ गच्छीय श्रीपुण्यप्रभ सूरिने सूरि मंत्र दिया संघने गंगरायको सन्मानित किया और राजाने भी संघ और पूज्यश्रीको बहुमान दिया।

सं० १५८५ में सूरिवर्य्यने संघके साथ तीर्थाधिराज सिद्धाचल जीकी यात्रा की, जोधपुरमें बहुतसे भव्योंको प्रतिबोध दिया। इस प्रकार क्रमशः १२ चतुर्मास होनेके पश्चात जेशलमेरके श्रावक देवपाल, सदारंग, जीया, वस्ता, रायमल्ल, श्रीरंग, हूटा, भोजा आदि संघने एकत्र होकर गुरु दर्शनकी उत्कंठासे पांच प्रधान पुरुषोंके साथ वीनति-पत्र भेजा, उनके विशेष आग्रहसे सूरिजी विहारकर जैसलमेर

आये, सं० १५८७ आपाढ़ वदी १३ को समारोहके साथ पुर प्रवेश कर पौपधशालामें पधारे। व्याख्यानादि धर्म कृत्य होने लगे। सं० १५९४ में राउल श्री लूणकर्णने जलके अभावमें अपनी प्रजाको महान कष्ट पाते देखकर दुष्कालकी सम्भावनासे गच्छनायकको वर्षा होनेके उपाय करनेकी नम्र विज्ञप्ति की। राउलजीकी प्रार्थना से सूरिजीने उपाश्रयमें अष्टम तप पूर्वक मंत्र साधना प्रारम्भ की, उसके प्रभावसे मेघमाली देवने घनघोर वर्षा वर्षाइ, जिससे भादवा सुदि १ को प्रथम प्रहरमें सारे तालाव-जलाशय भर गए। सुकाल हो जानेसे लोगोंके दिलमें परमानंद छा गया, सूरि महाराजकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई, राउलजीने गुरु महाराजके उपदेशसे वणिक वन्दियोंको मुक्त कर दिया और पंच शब्द, वाजित्र आदिके वजवाते हुए वड़े समारोह पूर्वक उपाश्रयमें पहुंचाये।

इस प्रकार सूरिजीने शासनकी वड़ी प्रभावनाकी थी, सं० १६५५ में ज्ञानवलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर राधा (वैशाख) कृष्णा ८ को तीन आहारके त्यागरूप अनशन ग्रहण किया, एकादशीको संघके समक्ष प्रत्याख्यानादि कर डाभके संथारेपर संलेखना कर दी, शत्रु और मित्रपर समभाव रखते हुए, अर्हन्तादि पदोंका ध्याय करते हुए, १५ दिनकी संलेखना पूर्णकर वैशाख सुदि ६ को ६० वर्ष ५ मास और ५ दिनका आयुष्य पूर्ण कर स्वर्ग सिधारे। श्री जिनेश्वर सूरिजो ने इनका प्रवन्ध बनाया।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ४३०, ३१६)

श्री गुणप्रभसूरिजीके शिष्य श्री जिनेश्वर सूरिजीके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरि हुए जिनका परिचय इस प्रकार है।—

वीकानेर निवासी बाफणा गोत्रीय रूपजी शाहकी भार्या रूपादे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, आपका जन्म नाम वीरजी था, लघु वयमें समता रसमें लयलीन देखकर जैसलमेरमें श्री जिनेश्वर सूरि जीने आपको दीक्षितकर, वीर विजय अभिधान दिया। आप पढ़-लिख खूब विद्वान् और प्रतापी हुए, आपको श्रीजिनेश्वर सूरिजीने स्वयं अपने पट्टपर स्थापित किये। जैन शासनकी प्रभावनाकरके सं० १७१३ पोप मासकी ११ भृगुवारको अनशन पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। महिमा-समुद्रजीने आपके दो गीत रचे, अन्य एक गीतमें समुद्रसूरिजीने आपके साचोर पधारनेपर उत्सव हुआ, उसका संक्षिप्त वर्णन किया है।

जिनसमुद्रसूरि

(पृ० ३१७, ४३२)

आप श्रीश्रीमाल हरराजकी भार्या लखमादेवीके पुत्र थे, श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पट्टपर स्थापित होनेके पश्चात आप सूरत और सांस नगरमें पधारे, जिनका वर्णन माईदास और महिमाहर्षके गीतमें है। सूरतमें छत्तराज शाहने महोत्सव आदि किया था।

जिनसमुद्रसूरिके पश्चात पट्टधरोंके नाम ये हैं :—जिनसुन्दर सूरि—जिनउदयसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनेश्वरसूरि (सं० १८६१) इनके पट्टधरका नाम नहीं मिलता। अन्तिम आचार्य जिनक्षेमचंद्र सूरि सं० १६०२ में स्वर्ग सिधारे।

पिप्पलक शाखा

(पृ० ३१६)

गुर्वावली* में जिनराजसूरि (प्रथम)तक तो क्रम एक-सा ही

---

*गुर्वावलीमें नवीन ज्ञातव्य यह है कि:—जिन वर्द्धमान सूरिजीने श्री-

है। उनके पट्टधर जिनवर्द्धनसूरिजीसे यह शाखा भिन्न हुई थी, उनके पट्टधर आचार्योंका नामानुक्रम इस प्रकार है :—

जिनवर्द्धन सूरि--जिनचन्द्रसूरि—जिन सागर सूरि—(जिन्होंने ८४ प्रतिष्ठायें की थीं और उनका थुंभ अहमदाबादमें प्रसिद्ध है)। जिन सुन्दर सूरि—जिनहर्पसूरि—जिनचन्द्र सूरि—जिनशील सूरि—जिनकीर्तिसूरि—जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (सं० १६६९ विद्यमान) तकका राजसुन्दरने उल्लेख किया है हमारे संग्रह की पट्टावली आदिसे इस शाखाके पश्चानुवर्ती पट्टधरोंका अनुक्रम यह ज्ञात होता है:—जिनरत्नसूरि—जिनवद्धमानसूरि—जिनधर्म सूरि—जिनचन्द्र सूरि—(अपर नाम शिवचन्द्र सूरि) इनमें जिनरत्न सूरिके पीछेके नाम प्रस्तुत शिवचन्द्र सूरि रासमें भी पाये जाते हैं। अब रासके अनुसार जिन (शिव) चन्द्र सूरिजीका विशेप परिचय नीचे दिया जाता है :—

जिन शिवचन्द्रसूरि ×

(पृ० ३२१)

मरुधर देशके भिन्नमाल नगरमें अजीतसिंह भूपतिके राज्यमें ओसवाल रांका गोत्रीय शाह पदमसी रहते थे। उनकी धर्मपत्नीका नाम पदमा था। उसके शुभ मुहूर्तमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और

मंधर स्वामीसे सूरि मंत्र संशोधन कराया। श्रीमंधर स्वामीने आचार्योंके नामकी आदिमें जिन विशेषण लगानेकी सूचना दी, इसीसे पट्टधर आचार्यों ने नामके आगे जिन विशेषण दिया जाता है।

×गृहे १३ साधुपर्याय १३ गच्छ नायक १८ इस प्रकार कुल ४४ वर्ष का आयुष्य पाया।

उसका नाम शिवचन्द रखा गया। कुंवर दिनोंदिन वृद्धि प्राप्त होने लगा और जब उसकी अवस्था १३ वर्षकी हुई, उस समय उसी नगरमें गच्छनायक जिनधर्मसूरिका शुभागमन हुआ। संघने प्रवेशोत्सत्व किया, और अनेक लोग गुरुश्रीके व्याख्यानमें नित्य आने लगे। सूरिजीके व्याख्यान श्रवणार्थ पदमसी और शिवचन्द कुमार भी जाने लगे और संसारकी अनित्यताके उपदेशसे कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया, यावत् माता पिताके पास आग्रह पूर्वक अनुमति लेकर सं० १७६३ में गुरु श्रीकेपास दीक्षा ग्रहण की। मासकल्पके परिपूर्ण हो जानेसे सूरिजी नवदीक्षित शिवचन्द्रके साथ बिहार कर गये। ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशमसे नवदीक्षित मुनिने व्याकरण, न्याय, तर्क और आगम ग्रन्थोंका शीघ्र अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

ज़िनधर्म सूरिजी उदयपुर पधारे और वहां शारीरिक वेदना उत्पन्न होनेसे आयुष्यकी पूर्णाहुतिका समय ज्ञातकर सं० १७७६ वैसाख शुक्ला ७ का शिवचन्दजीको गच्छनायक पद देकर (वहीं) स्वर्ग सिधारे। आचार्यपदका नाम नियमानुसार जिनचन्द्रसूरि रखा गया। उस समय (राणा संग्राम राज्ये) उदयपुरके श्रावक दोसी भीखा सुत कुशलेने पद महोत्सव किया और पहरावणी, याचकोंको दान आदि कार्योंमें वहुतसा द्रव्यका व्यय कर सुयश प्राप्त किया। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात् आपने, शिष्य हरिसागरके आग्रहसे वहीं चतुर्मास किया, धर्मप्रभावना अच्छी हुई। चौमासा पूर्ण होने पर आपने गुजरातकी ओर विहार कर दिया। सं० १७७८ में (गच्छनायकके) परिग्रहका त्यागकर विशेष वैराग्य भावसे क्रियोद्धार किया और

आत्म गुणोंकी साधना करते हुए भव्योंको उपदेश प्रदान आदि द्वारा स्वपर हित साधनमें तत्पर हुए।

गुजरातमें विचरते हुए शत्रुंजय तीर्थ पधारे और वहां ४ महीने की अवस्थित कर ९९ यात्राएं कीं। वहांसे गिरनारमें नेमनाथकी यात्राकर जूनागढ़की यात्रा करते हुए खंभात पधारे, वहांकी यात्रा कर चतुर्मास भी वहीं किया। वहां धरम-ध्यान सविशेष हुआ। वहांसे मारवाड़की ओर विहारकर आबू तीर्थकी यात्रा करके तीर्थाधिराज सम्मेतशिखर पधारे। वहां वीश तीर्थंकरोंके निर्वाण स्थानों को यात्रा करके, विचरते हुए बनारसमें पार्श्वनाथजी की यात्राकी। रास्तेमें पावापुरी, चम्पापुरी, राजग्रही, वैभारगिरिकी भी संघके साथ यात्राकी और हस्तिनापुरमें शान्ति, कुन्थु और अरिनाथप्रभु की यात्रा कर दिल्ली पधारे, वहां चतुर्मास करके विहार करते हुए पुनः गुजरातमें पदार्पण किया। वहां भणशाली कपूरके पास एक चतुर्मास किया और पंचमाङ्ग भगवतीसूत्रका व्याख्यान देने लगे, इति उपद्रव दूरकर सुयश प्राप्त किया। ज्ञान-भक्ति और धर्म प्रभावना अच्छी हुई, शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की, यात्राकी भावना पुनः उत्पन्न होनेसे राजनगरसे विहारकर शत्रुंजय और गिरनाथतीर्थकी यात्राकर दीवबंदरमें चौमासे रहे। वहांसे फिर शत्रुंजयकी यात्रा करके घोघाबंदर, भावनगर आदिकी यात्रा करते हुए भी १७९४ के माह महीनेमें खम्भात पधारे। वहांके गुणानुरागी श्रावकोंने आपका अतिशय बहुमान किया, उनके उपकारार्थ आप भी धर्मदेशना देने लगे।

इसी समय किसी दुष्ट प्रकृति पुरुषने वहांके यवनाधिपके समक्ष

कोई चुगली खाई, अतः उसने अपने सेवकोंको आचार्यजीके पास भेजे। राज्य सेवकोंने पूज्यश्रीको बुलाकर "आपके पास धन है वह हमें देदें" कहा, पर सूरिजी तो बहुत पहलेही परिग्रहका सर्वथा त्याग कर चुके थे, अतः स्पष्ट शब्दोंमें प्रत्युत्तर दिया कि भाई हमारे पास तो भगवत् नाम स्मरणके अतिरिक्त कोई धन माल नहीं है, पर वे अर्थ लोभी भला कब मानने वाले थे। उन्होंने सूरिजीको तंग करना शुरू किया। इतनाही नहीं राज्यसत्ताके बलपर अंधे होकर यवनाधिपतिने सूरिजीकी खाल उतारनेकी आज्ञा दे दी। सूरिजीने यह सब अपने पूर्व संचित अशुभ कर्मोंके उदयका ही फल है, विचारकर मरणान्त कष्ट देनेवाले दुष्टोंपर तनिक भी क्रोध नहीं किया। धन्य है! ऐसे समभावी उच्च आत्म-साधक महापुरुषोंको !! रात्रिके समय दुष्ट यवनने क्रोधित होकर बड़े दुःख देने आरम्भ किये। मार्मिक स्थानोंमें बड़े जोरोंसे मारने (दंड-प्रहार करने) लगा और उस पापीष्टने इतनेमें ही न रुककर सूरिजीके हाथ पैरके जीवित नखोंको उतार असह्य वेदना उत्पन्न की। वेदना क्रमशः बढ़ने लगी और मरणान्त अवस्था आ पहुंची, पर उन महापुरुषने समभाव के निर्मल सरोवरमें पैठ आत्मरमणतामें तलीन्नता कर दी। अपने पूर्वके खंदग-गजसुकमाल-इवदन्त आदि महापुरुषोंके चरित्रोंका स्मृति चित्र अपने आंखोंके सामने खड़ाकर पुद्गल और आत्माके भिन्नत्व विचाररूप, भेद ज्ञानसे उस असह्य वेदनाका अनुभव करने लगे।

यह वृतांत ज्ञात होते ही प्रातःकाल श्रावकगण सूरिजीके पास आये, तब यवन भी सरिजीका धैर्य देख और अपनी सारी दुष्टवृत्ति

की इतिश्री होनेसे उकता गया। और श्रावकोंको उन्हें अपने स्थान ले जानेको कहा। रूपा वोहरा उन्हें अपने घर लाया। नगरमें सर्वत्र हाहाकार मच गया।

इस समय नाय (न्याय !) सागरजीने सूरिजीका अन्तिम समय ज्ञातकर उत्तराध्ययन आदि सूत्रोंका श्रवण कराके अनशन आराधना करवाई। श्रावकोंने यथाशक्ति चतुर्थ व्रत, हरित त्याग, १२ व्रतादि के यथाशक्ति नियम लिये। आचार्यजीने गच्छकी शिक्षा अपने शिष्य हीरसागरको देकर, सं० १७६४ वैशाख ६ कविवार सिद्धयोग के प्रथम प्रहरमें जिनेश्वरका ध्यान करते इस नश्वर देहका परित्यागकर (प्रायः) देवके दिव्य रूपको धारण किया। श्रावकोंने उत्सवके साथ अन्त क्रिया की, और रूपा वोहरेने वहां स्तूप कराया। इसी तरह राजनगरके बहिरामपुरमें भी स्तूप वनवाया गया। हीरसागरके आग्रहसे कडुआमती शाह लाधाने सं० १७६५ के आश्विन शुक्ला ५ बृहस्पतिवारको राजनगरमें इस रासकी रचना की।

आद्यपक्षीय शाखा

जिनहर्षसूरि

(पृ० ३३३)

आद्य पक्षीय खरतर शाखा (भेद) सं० १५६६ में जिनदेव सूरिजीसे निर्गत हुई थी। हमें प्राप्त पट्टावलीके अनुसार इन शाखा की पट्ट-परम्परा इस प्रकार है :—

जिनवर्द्धनसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—पट्टधर जिन देवसूरि (इस शाखाके आदि पुरुष) जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (पंचायण भट्टारक) के शिष्य जिनहर्षसूरिजी थे। गीतके अनुसार आप दोसी वंशके भादाजीकी भार्या भगतादेके पुत्र थे।

अन्य साधनोंसे आपका विशेष वृत्तान्त निम्नोक्त ज्ञात हुआ है:— सं० १६६३ में जैतारणमें जिनचन्द्रसूरिका स्वर्गवास हुआ। भंडारी गोत्रीय नारायणने पद महोत्सवकर आपको उनके पट्टपर स्थापित किये, जेतारणमें आपने हाथीको कीलित किया, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है :—सं० १७१२ वर्षे खरतर गच्छ वृद्धाआचार्य क्षेमधाड़ शाखा पंचायण भट्टारक रे पाट सांप्रत विजयमान भ० श्रीजिनहर्षसूरि जी सोजत शहरमें हाथी कील्यो, तपा गच्छ हुंती बोल उपर आण्यों इंण वातरो सोजत शहर सिगलो साक्षीभूत थे। हाथी रे ठिकाने अजे सगिड़ो पूजीजे छै कोटवाली चोतरा कने मांडी विचमें × × × (इनके शिष्य सुमतिहंसकृत कालिकाचार्य कथा बालावबोध पत्र १४, यतिवर्य सूर्य्यमलजी के संग्रहमें)।

१७२५ चैत्र कृष्णा ११ को जेतारणमें आपका स्वर्गवास हुआ। इनके पश्चातके पट्टधरोंका क्रम यह है :—१ जिनलब्धि-जिनमाणिक्य-जिनचन्द्र-जिनोदय-जिनसंभव-जिनधर्म-जिनचन्द्र-जिनकीर्ति-जिन बुद्धिवल्लभ-जिनक्षमारत्नसूरिके पट्टधर जिनचन्द्रसूरिजी पालीमें अभी विद्यमान हैं।

भावहर्षीय शाखा

भावहर्षजी उपाध्याय

(पृ० १३५)

शाह कोड़ाकी पत्नी कोड़मदेके आप पुत्र थे। श्रीकुलतिलकजी के आप सुशिष्य थे। संयमके प्रतिपालनमें आप विशेष सावधान रहा करते थे, और सरस्वती देवीने प्रसन्न होकर आपको शुभाशीष दी थी। माह शुक्ला १० को जैसलमेरमें गच्छनायक जिनमाणिक्य-सूरिजीने (सं० १५९३ और १६१२ के मध्यमें) आपको उपाध्याय पद दिया था।

अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि शाखाके वा० साधुचन्द्रके शिष्य कुलतिलकजीके शिष्य थे। आप स्वयं अच्छे कवि थे। आपके रचित स्तवनादि बहुतसे मिलते हैं। सं० १६०६ में आपने उ० कनकतिलकादिके साथ कठिन क्रिया-उद्धार किया था। आपके हेमसार आदि कई विद्वान् और कवि शिष्य थे, आपके द्वारा खरतर गच्छ में ७ वां गच्छ भेद हुआ। और आपके नामसे वह शाखा भावहर्षीय कहलाई। बालोतरेमें इस शाखाकी गद्दी अब भी विद्यमान है। आपके शाखाकी पट्ट-परम्परा इस प्रकार

है :—भावहर्षसूरि—जिनतिलक—जिनोदय—जिनचन्द्र—जिनसमुद्र—जिनरत्न—जिनप्रमोद—जिनचन्द्र—जिनसुख—जिनक्षमा-जिनपद्म—जिनचन्द्र—जिनफतेन्द्रसूरि हुए, आपकी शाखामें अभी यतिवर्य नेमिचन्द्रजी वालोतरेमें विद्यमान है।—विशेष विचार खरतर गच्छ इतिहासमें करेंगे।

जिनसागर सूरि शाखा [लघु आचार्य]

जिनसागरसूरि

(पृ० १७८-२०३-३३४)

मरुधर जंगल देशके बीकानेर नगरमें राजा रायसिंहजी राज्य करते थे। उस नगरमें बोथरा गोत्रीय शाह बच्छा निवास करते थे, उनकी भार्या मृगादेकी कुक्षिसे सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १४ रविवारको अश्विन नक्षत्रमें आपका जन्म हुआ था। आप जब गर्भमें अवतरित हुए थे, तब माताको रक्त चोल रत्नावलीका स्वप्न आया था, उसीके अनुसार आपका नाम "चोला" रक्खा गया, पर लाड (अतिशय प्रेम) के नाम सामलसे ही आपकी प्रसिद्धि हुई।

एकबार श्रीजिनसिंहसूरिजीका वहां शुभागमन हुआ और उनके उपदेशसे सामल कुमारको वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसने अपनी मातुश्रीसे दीक्षाकी अनुमति मांगी। इसपर माताने भी साथ ही दीक्षा लेनेका निश्चय प्रकट किया। इधर श्री जिनसिंह सूरिजी विहारकर अमरसर पधारे। तब वहां जाकर सामलकुमार ने अपने बड़े भाई विक्रम और माताके साथ सं० १६६१ माह सुदी

७ को सूरिजीसे दीक्षा ग्रहण की* । उस समय अमरसरके श्रीमाली थानसिंहने दीक्षा महोत्सव किया ।

नवदीक्षित मुनिके साथ जिनसिंहसूरिजी ग्रामानु-ग्राम विहार करते हुए राजनगर पधारे । वहां युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी को वंदना की, सूरिजीने नवदीक्षित सांमल मुनिको (मांडलके तप वहन कर लिये, ज्ञातकर) वड़ी दीक्षा देकर नाम स्थापना "सिद्धसेन" की । इसके पश्चात सिद्धसेन मुनि आगमके उपधान (तपादि) वहन करने लगे और बीकानेरमें छः मासी तप किया । विनय सहित आगमादिका अध्ययन करने लगे । युगप्रधान पूज्यश्री आपके गुणोंसे बड़े प्रसन्न थे । कविवर समयसुन्दरके सुप्रसिद्ध शिष्य वादी हर्षनन्दनने आपको विद्याध्ययन वड़े मनोयोगसे कराया ।

इस प्रकार विद्याध्ययन और संयम पालन करते हुए श्री जिन-सिंहसूरिजीके साथ संघवी आसकरणके संघ सह शत्रुंञ्जयतीर्थकी यात्रा की । बहांसे विहारकर खंभात, अहमदाबाद, पाटण होते हुए वडलीमें जिनदत्तसूरिजीकी यात्रा की । वहांसे विहारकर सिरोही पधारे । वहांके राजा राजसिंहने बहुत सम्मान किया और संघने प्रवेशोत्सव किया । वहांसे जालोर, खंडप, द्रूणाड़ा होते हुए घंघाणी के प्राचीन जिन बिम्बोंके दर्शन कर बीकानेर पधारे । शा० बाघ-मलने प्रवेशोत्सव किया । जिनसिंहसूरिजीने चतुर्मास वहीं किया । इसी चतुर्मासके समय उन्हें सम्राट् सलेमने मेवड़े दूत भेजकर आमन्त्रित

---

* निर्वाण रासमें मृगादेका दीक्षित नाम माणिक्यमाला और वीकेका नाम विवेक कल्याण लिखा ।

किये। सम्राट्की विज्ञप्तिके अनुसार वहांसे विहारकर वे मेड़ते पधारे, वहां शारीरिक व्याधि उत्पन्न होनेसे आराधना पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

इस प्रकार जिनसिंहसूरिजीकी अचानक मृत्यु होनेसे संघको बड़ा शोक हुआ। पर कालके आगे कर भी क्या सकते थे, आखिर शोक निर्वतन करके संघने राजसी (राज समुद्र) जी को भट्टारक (गच्छ नायक) पद और सिद्ध सेन (सामल) जीको *आचार्य पदसे अलंकृत किये।

संघपति (चोपड़ा) आसकरण, अमीपाल, कपूरचन्द, ऋषभदास और सूरदासने पद महोत्सव बड़े समारोहसे किया। (पूनमीया गच्छीय) हेमसूरिजीने सूरिमंत्र देकर सं० १६७४ फाल्गुन शुक्ला ७को शुभ मुहूर्तमें जिनराजसूरि और जिनसागरसूरि नाम स्थापना की।

आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर आपने मेड़तेसे बिहार कर राणकपुर, वरकाणा, तिमरी (पार्श्वनाथजीकी), ओसियां और घंघाणीकी यात्राकर चतुर्मास मेड़ते किया। वहांसे जैसल्मेर पधारे। वहां राउल कल्याण और श्रीसंघने वंदन किया और भणसाली जीवराजने (प्रवेश) उत्सव किया। वहां श्रीसंघको ११ अंगोंका श्रवण कराया। शाह कुशलेने मिश्री सहित रुपयोंकी लाहण की। वहांसे संघके साथ लोद्रवा पधारे। (भणसाली) श्रीमल सुत थाहरुशाहने स्वामी—वात्सल्यादिमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया। वहांसे आचार्य जिनसागरसूरि फलवधी पधारे। श्रावक मानेने प्रवेशोत्सव किया और

---

* निर्वाण रास गा० ९ और जयकीर्ति कृत गीतके कथनानुसार आपको आचार्य पद, युग प्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके वचनानुसार मिला था।

याचकोंको दान दिया। संघने बड़ी भक्ति की। वहांसे विहारकर करणुं-अइं पधारे, वहां संघने भक्तिसे वंदना की। इस प्रकार विहार करते हुए वीकानेर पधारे, वहां पासाणीने संघके साथ प्रवेशोत्सव किया एवं (मंत्रीश्वर कर्मचन्दके पुत्र) भागचन्दके पुत्र मनोहरदास आदि सामहीयेमें पधारे।

वीकानेरसे विहारकर (लूनकरण) सर चतुर्मास कर जालय-सर पधारे। वहां मंत्री भगवन्तदासने बड़े उत्सवके साथ पूज्यश्रीको वंदन किया, वहांसे डीडवाणेके संघको वंदाते हुए सुरपुर एवं मालपुर आये, वहां भी धर्म-ध्यान सविशेष हुआ। इस प्रकार विहार करते हुए बीलाड़ेमें चौमासा किया। वहांके कटारिये श्रावक खरतर गच्छ के अनन्य अनुरागी थे., उन्होंने उत्सव किया।

बीलाड़ेसे विहार कर मेड़ते आये वहां गोलछा रायमलके पुत्र अमीपालके भ्राता नेतसिंह भ्रातृपुत्र-राजसिंहने बड़े समारोहसे नान्दि स्थापन कर व्रतोच्चारण किये, श्रीफल नालेरादिके साथ रुपयोंकी लाहण (प्रभावना) की। वहांके रेखाउत श्रीमल, वीरदास मांडण, तेजा, रीहड़ दरड़ाने भी धार्मिक कार्योंमें वहुतसा द्रव्यका सद्-व्यय किया। आचार्य श्री वहांसे विहारकर राणपुर और कुम्भलमेरके जिनालयोंको वंदन कर मेवाड़ प्रदेश होते हुए उदयपुर पधारे। वहां-के राजा करणने आपका सम्मान किया। और मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र पुत्र लक्ष्मीचन्द्रके पुत्र रामचन्द और रुघनाथके साथ अजायबदेने वन्दन किया। वहांसे विहार कर स्वर्णगिरि पधारे, वहां संघने बड़ा उत्सव किया। साचोर संघने एवं हाथीशाहने बहुत आग्रह कर चतुर्मास साचोरमें कराया।

इस प्रकार उपरोक्त सारे वर्णनात्मक इस रासको कवि धर्मकीर्ति (यु० जिनचन्द्रसूरि उपाध्याय धर्मनिधानके शि०) ने स० १६८१ के पौप कृष्णा ५ को बनाया।

उपरोक्त रास रचनेके पश्चात् सं० १६८६ में गच्छ नायक जिनराजसूरि और आचार्य जिनसागरसूरिके किसी अज्ञात कारण विशेपसे मनोमालिन्य या वैमनस्य* उत्पन्न हुआ।

फलस्वरूप दोनोंकी शाखायें (शिष्यपरिवार आदि) भिन्न २ हो गई। और तभीसे जिनराजसूरिजीकी परम्परा भट्टारकीया एवं जिनसागरसूरिजीकी परम्परा आचारजीया नामसे प्रसिद्ध हुइ, जो आज भी उन्हीं नामोंसे प्रख्यात है।

शाखा भेद होने पर जिनसागरसूरिजीके पक्षमें कौनसे विद्वान और कहांका संघ आज्ञानुयायी रहा। इसका वर्णन निर्वाण रासमें इस प्रकार है :—

श्रीजिनसागरजीके आज्ञानुवर्ती साधु संघमें उपाध्याय समय-सुन्दरजी (की सम्पूर्ण शिष्य परम्परा), पुण्य-प्रधानादि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके सभी शिष्य, और श्रावक समुदायमें अहमदावाद, वीकानेर, पाटण, खम्भात, मुल्तान, जैसलमेरके संघ नायक संख-वालादि, मेड़तेके गोलछे, आगरेके ओशवाल, वीलाड़ेके संघवी कटारिये एवं जयतारण, जालौर, पचियाख, पाल्हनपुर, भुज्ज, सूरत, दिल्ली, लाहोर, लुणकरणसर, सिन्ध प्रान्तोंमें मरोट, थट्टा, डेरा, मारवाडमें फलोधी, पोकरण आदिके (ओशवाल-अच्छे २

*जयकीर्तिके गीतके अनुसार यह कारण अहमदाबादमें हुआ था।

पदाधिकारी) थे।* उनमेंसे मुख्य श्रावकोंके धर्मकृत्य इस प्रकार है :—

करमसी शाह संवत्सरीको महम्मदी (मुद्रा) देते और उनके पुत्र लालचन्द प्रत्येक वर्ष संवत्सरीको संघमें श्रीफलोंकी प्रभावना किया करते थे। लालचन्दकी विद्यमान माता धनादेने पूठियेके उपर के खण्डकी पीटणीको समराइ (जीर्णोद्धारित की) और उसकी भार्या कपूरदेने जो कि उग्रसेनकी माता थी, धर्मकार्योंमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया।

शाह शान्तिदासने भ्राता कपूरचन्दके साथ आचार्यश्रीको स्वर्णके वेलिये दिये थे, एवं २॥ हजार रुपयोंका खर्च कर सुयश प्राप्त किया था। उनकी माता मानबाइने उपाश्रयके १ खण्डकी पीटणी करा दी थी और प्रत्येक वर्ष आषाढ़ चतुर्मासीके पोषधोपवासी श्रावकोंको पोषण करनेका वचन दिया था।

शाहमनजीके दीप्तमान कुटुम्बमें शाह उदयकरण, हाथी, जेठमल और सोमजी मुख्य थे। उनमें हाथीशाहने तो रायबन्दी-छोड़ का विरुद प्राप्त किया था। उनके सुपुत्र पनजी भी सुयशके पात्र थे। मूलजी, संघजी पुत्र वीरजी एवं परीख सोनपाल सूरजीने २४ पाक्षिकोंको भोजन कराया था। आचार्य श्रीकी आज्ञामें परीख चन्द्रभाण, लालू,

---

*समयसुन्दरजी कृत अष्टकमें आपके आज्ञानुयायिओंकी सूची में इनके अतिरिक्त भटनेर, मेवाड़, जोधपुर, नागौर, बीरमपुर, साचोर, किरहोर, सिद्धपुर, महाजन, रिणी, सांगानेर, मालपुर, सरसा, धींगोटक, भरुच, राधनपुर वाराणपुर आदिके संघोंके भी नाम भी आते हैं।

अमरसी शाह, संघवी कचरमल्ल, परीख अखा, बाछड़ा देवकर्ण, शाह गुणराजके पुत्र रायचन्द गुलालचन्द, इस प्रकार राजनगरका प्रशंसनीय संघ था और धर्मकृत्य करनेमें खंभातके भण्डशाली बधुका पुत्र ऋषभदास भी उल्लेखनीय था।

हर्षनन्दनके गीतानुसार मुकरबखान (नबाब) भी आपको सन्मान देता था। इस प्रकार आचार्य श्रीका परिवार उदयवन्त था, गीतार्थ शिष्योंको आचार्यश्रीने यथायोग्य वाचक उपाध्यायादि पद प्रदान किये थे और अपने पदपर स्वहस्तसे अहमदाबादमें जिनधर्मसूरिजीको (प्रथम पछेवड़ी ओढ़ाकर) स्थापन किया। उस समय भणशाली बधूकी भार्या विमलादे, भणशाली सधुआकी पत्नी सहिजलदे (जिसने पूर्व भी शत्रुंजय संघ निकाला और बहुतसे धर्मकृत्य किये थे) और श्रा० देवकीने पदमहोत्सव बड़े समारोहसे किया।

पद स्थापनाके अनन्तर जिनसागरसूरिके रोगोत्पति होनेके कारण आपने बैशाख शुक्ला ३ को शिष्यादिको गच्छकी शिखामण दे, गच्छ भार छोड़ा। बैशाख सुदी ८ को अनशन उच्चारण किया। उस समय आपके पास उपाध्याय राजसोम, राजसार, सुमतिगणि, दयाकुशल वाचक, धर्ममंदिर, समयनिधान, ज्ञानधर्म, सुमतिवल्लभ आदि थे। सं०१७१६ जेष्ठ कृष्णा ३ शुक्रवारको आप स्वर्ग सिधारे और हाथीशाहने अग्नि संस्कारादि अन्त-क्रिया धूमसे की। इसके पश्चात् संघने एकत्र होकर गायें, पाड़े, बकरीयें आदि जीवोंकी २००) रुपये खर्चा कर रक्षा की और शान्ति जिनालयमें देववन्दन कर शोकका परित्याग किया।

उपरोक्त (वर्णनवाले) रासकी रचना सुमतिवल्लभने (सुमति-समुद्र शिष्यके साथ) सं १७२० श्रावण शुक्ला १५ को की। आचार्य श्रीके रचित वीशी एवं स्तवनादि उपलब्ध है।

जिनधर्मसूरि

(पृ० ३३५-३६)

आप भणशाली गोत्रीय (रिणमल्ल) की पत्नी मृगादेके पुत्र थे। पद स्थापनाका उल्लेख ऊपर आही चका है। ज्ञानहर्षके गीतानुसार आप बीकानेर पधारे, उस समय गिरधरशाहने प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया था। विशेष ज्ञातव्य देखें :—खरतरगच्छपट्टावली संग्रह।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७)

आप जिनधर्मसूरिजीके पट्टधर थे। वुहरा वंशीय सांवलशाह आपके पिता और साहिबदे आपकी माता थी। विशेष ज्ञातव्य देखें—खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह।

जिनयुक्ति सूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७-३८)

उपरोक्त जिनचन्द्रसूरिके (पश्चात् पट्टावलीके अनुसार) पट्टधर जिनविजयसूरिके पट्टधर जिनकीर्तिसूरिके पट्टधर जिनयुक्तिसूरिजी हुए, उनके पट्टधर आप थे। रीहड़ गोत्रीय शा० भागचन्दकी भार्या यशोदाकी कुक्षिसे आप अवतरित हुए। बीलाड़े चतुर्मासके समय कवि आलमने यह गीत रचा था। गीतमें प्रवेशोत्सवके समयकी भक्तिका संक्षिप्त वर्णन है।

जिनचंद्रसूरिजीके पट्टधर जिनउदय-जिनहेम-जिनसिद्धसूरिके पट्टधर जिनचंद्रसूरि अभी विद्यमान हैं। विशेष ज्ञातव्य देखें:—(खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह)।

रंगविजयशाखा

जिनरंगसूरि

(पृ० २३१-३३)

श्रीजिनराजसूरि (द्वि०) के आप शिष्य थे। श्रीमाली, सिन्धूड़ गोत्रीय सांकरसिंहकी भार्या सिन्दूरदेकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। सं० १६७८ फाल्गुन कृष्णा ७ को जैसलमेरमें आपने दीक्षा ली थी, दीक्षितावस्थाका नाम रंगविजय रखा गया। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। ज्ञानकुशलकृत गीत और जिनराजसूरि गीत नं० ६ में आपको युवराज पदसे संबोधन किया गया है जोकि महत्वका है।

कमलरत्नके गीतानुसार पातिशाह (शाहजहां !) ने आपकी परीक्षाकी थी और ७ सूबोंमें (इनका) वचन प्रमाण करनेका फरमान दिया था। उसके पाटवीपुत्र दारासकी सुलताणने आपको 'युगप्रधान' पदका निसाण दिया था। सिन्धुड़ नेमीदास-पंचायणने प्रवेशोत्सव (शाही निसाणके साथ !) बड़े समारोहसे किया, सर्व महाजन संघको नालेरकी प्रभावना दी गई। सं० १७१० मालपुरेमें महोत्सवके साथ 'युगप्रधान' पद-स्थापन हुआ था।

आपके रचित अनेकों स्तवनादि उपलब्ध हैं। उनमेंसे कई दिल्लीसे (१ छोटासे ग्रन्थमें) यतिरामपालजीने प्रकाशित किये हैं।

आपके रचित कृतियोंमें १—सौभाग्यपंचमी चौ०, २—नवतत्ववाला० (श्राविका कनकादेवीके लिये रचित श्रीपूजजी सं० नं० ४११), ३—वहुत्तरी आदि मुख्य हैं। आपके लि० एक प्रति अजीमगंज भंडारमें है।

जिनरंगसूरिजीके पट्टधर आचार्योंकी नामावलीका क्रम इस प्रकार है :—जिनरंगसूरि-जिनचंद्रसूरि-जिनविमलसूरि-जिनललित-सूरि-जिनअक्षयसूरि-जिनचंद्रसूरि—जिननन्दिवर्द्धनसूरि-जिनजयशे-खरसूरि-जिनकल्याणसूरि-जिनचंद्रसूरिजीके पट्टधर जिनरत्नसूरि सं० १९९२ वै० व० १५ को लखनऊमें स्वर्ग सिधारे। इस शाखाकी गद्दी लखनऊमें है।

मंडोवरा शाखा

जिनमहेन्द्रसूरि

(पृ ३०२ से ३०४)

शाह रुघनाथकी पत्नी सुन्दरा देवीकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, श्रीजिनहर्षसूरिजीके आप पट्टधर थे। गीतमें कवि राजकरणने पूज्यश्रीके मरुदेश पधारने पर जो हर्ष हुआ और प्रवशोत्सवकी भक्ति की गई, उसका सुन्दर चित्र अंकित किया है। गहुंली नं० १में उदयपुर नरेशने आपको वहां पधारनेके लिये विनती स्वरूप परवाना भेजने और मेड़ते, अम्बेरगढ़, बीकानेर जैसलमेर संघकी भी विज्ञप्तियें जानेका सूचित किया है। एवं कविने अपनी ओरसे एक बार जोध-पुर पधारनेकी विनती की है।

आपके चरित्रके विषयमें विशेष विचार फिर कभी करेंगे। आपके पट्टधर जिनमुक्तिसूरिजीके पट्टधर जिनचंद्रसूरिजी अभी जयपुरमें विद्यमान हैं। उनके पट्टधर युवराज धरणेन्द्रसूरि विचरते हैं।

तपागच्छीयकाव्यसार

शिवचूला गणिनी

(पृ० ३३६)

पोरवाड़ गेहाकी पत्नी विल्हणदेकी कुक्षिसे जिनकीर्त्तिसूरि उत्पन्न हुए, उनकी वहिन प्रवर्तिनी राजलक्ष्मी थी।

सं० १४९३ वैशाख कृष्णा १४ को मेवाड़के देवलवाड़ेमें शिवचूला साध्वीको महत्तरा पद दिया गया, उस समय महादेव संघवीने महोत्सव किया, सोमसुन्दरसूरिने वासक्षेप दिया। रत्नशेखरको वाचक पद दिया गया। और भी पन्यास गणीश स्थापित किए एवं दीक्षा महोत्सव हुए। याचकोंको दान दिया गया, पताकाओंसे नगर सजाया गया और वाजित्र बजने लगे।

श्रीविजयसिंहसूरि

(पृ० ३४१ से ३६४)

कवि गुणविजयने सर्व प्रथम सिरोही मण्डण आदिनाथ, ओसवालोंके जिनालयमें श्रीहीरविजयसूरि प्रतिष्ठित श्रीअजितनाथ, शिवपुरीके स्वामी शान्तिनाथ, जीराउला तीर्थपति पार्श्वनाथ, बंभणवाड़ व वीरवाड़के मण्डन श्रीमहावीर एवं सरस्वती और गुरु श्रीकमलविजयके चरणोंमें नमस्कार करके श्रीहीरविजयसूरिके पट्टधर जेसिंघजी (विजयसेनसूरि) के पट्टाधीश विजयदेवसूरिके शिष्य विजयसिंहसूरिके विजयप्रकाश रासकी रचना प्रारम्भकी हैं, जिन्हें विजयदेवसूरिने अपने पट्टधर स्थापित किया था।

श्रीआदिनाथके पुत्र मरुदेवके बसाया हुआ मरु नामक देश है जहां ईति, भीति, अनीति, चोरी-चकारी और डकायतीका नामो-निशान भी नहीं है, वड़े-वड़े व्यापारी निवास करते हैं और वेरोक-टोक सत्राकार खोल रखे हैं। राजा लोग भी धर्मिष्ठ हैं, परमेश्वर की पूजा कराते हैं, जीवोंका "अमारि" नियम पलाते हैं एवं शिकार भी नहीं खेलते। वहांके सुभट शूर-वीर, लम्बी मूंछोंवाले हैं उनके हांथमें कृपाणी चमकतो है, व्यापारी प्रसन्न वदन रहते हैं और घर-घरमें सुभिक्ष सुकाल है।

जिस प्रकार मारवाड़ मोटा देश है वैसे वहांके कोश भी लम्बे हैं, निवासी भद्र प्रकृतिके हैं मनमें रोप नहीं रखते, कमरमें कटारी बांधते हैं। बणिक लोग भी जवरे योद्धा हैं हथियार धारण किये रहते हैं। रणभूमिमें पैर पीछा नहीं फेरते स्वधर्मियोंको धर्ममें स्थिर करते हैं। निष्कपट वृद्धाएं भी लम्बा घूंघट रखती हैं, सादगी जीवन और रसोईमें रावकी प्रधानता है, विधवाएं भी हाथमें चूड़ियां रखती हैं। वाहणमें ऊंठकी प्रधानता है, पथिक लोग जहां थकते हैं वही विश्राम लेते हैं परन्तु चोरीका भय नहीं है। शत्रुओंसे अभेद्य मार-वाड़के ये ६ कोट हैं :—१ मण्डोवर (जोधपुर) २ आबू ३ जालोर ४ बाहड़मेर ५ पारकर ६ जैसलमेर ७ कोटड़ा ८ अजमेर ६ पुष्कर या फलौदी।

धन्य है मंडोवर देश जहां मंडोवरा पार्श्वनाथ और फलवर्द्धि पार्श्वनाथका तीर्थ है, कवि कहता है कि उनके दर्शनोंसे मैं सफल और सनाथ हो गया।

मरु मंडलमें यशस्वी मेड़ता नगर है इसकी उत्पत्तिके लिये यह लोककथा प्रसिद्ध है कि जैसे जैनशासनमें भरतादि चक्रवर्ती हुए वैसे शिवशासनमें मान्धाता नामक प्रथम चक्री हुआ उसकी माताका देहान्त हो जानेसे वह इन्द्रकी देखरेखमें बड़ा होकर महाप्रतापी चक्रवर्ती हुआ उसका आयुष्य कोड़ा कोड़ी वर्षोंका था। उसके लिये कृत युगमें इन्द्रने राज्य स्थापना करके मेड़ता नगर बसाया।

मेड़ता नगर अति समृद्धिशाली था, सरोवरादिका वर्णन कविने रासमें अच्छा किया है। निकटवर्ती फलवर्द्धि पार्श्वनाथका तीर्थ महामहिमाशाली है, पोप दसमीको मेलेमें जहां एक लाख जनता एकत्र होती है—दूर-दूर देशोंसे यात्री आते हैं।

उस मेड़तेमें ओसवाल जातिके चोरड़िया गोत्रीय शाह मांडण का पुत्र नथमल निवास करता था, उसकी पत्नीका नाम नायकदे था। उसके घरमें लक्ष्मीका निवास था सामग्री भरपूर थी, (उसकी) दादी फूलां धर्म कार्योंमें धनका अच्छा सदुपयोग किया करती थी। नथमलके १ जेसो २ केसो ३ कर्मचन्द ४ कपूरचन्द और ५ पंचायण नामक पांच पुत्र थे, पांचो पुत्रोंमें तृतीय कर्मचन्द हमारे चरित्र नायक हैं उनका जन्म वि० सं० १६४४ (शक १५०६) फाल्गुन शुक्ला २ रविवारको उत्तरभद्रपदाके चतुर्थ चरण और राजयोगमें हुआ था।

एकबार रात्रिमें सेठ नथमल सुख शय्यापर सोये हुए थे, जागृत होकर संसारके सुखोंके मिलनेका कारण विचार करते हुए वैराग्य वासित होकर सुगुरुका संयोग प्राप्त होनेपर कृत पापोंकी-आलोयणा लेनेका विचार किया। दैवयोगसे तपा-गच्छके श्रीकमलविजयजी म०

५५ ठाणोंसे विचरते हुए मेड़ता पधारे, उनके समक्ष श्रेष्ठिने आकर आलोयणा लेनेकी इच्छा प्रगट करनेपर मुनिवरने गच्छनायकसे आलोयणा लेनेकी राय दी परन्तु आखिर नथमलजीका अत्याग्रह देखकर २१ अष्टम तप और बहुतसे बेले और उपवासोंकी आलोयणा दी।

आलोयणाके अनन्तर विशेप वैराग्य वासित होकर अपनी स्त्री नायकदे और भ्राता सुरताणको भी महाव्रत लेनेके लिए उपदेश देकर, दीक्षाका परामर्श किया, सबके साथ२ कर्मचन्द आदि पुत्रोंने भी स्वीकृति दी। सेठने गच्छनायकके मिलनेपर दीक्षा लेना निश्चित किया।

इसी अवसरपर लाहोरमें दो चातुर्मास करके विजयसेनसूरि मेड़ता पधारे। नाथू शाह पांचो पुत्रोंके साथ गुरुश्रीको वन्दनार्थ आया। शुभ लक्षणवाले कर्मचन्दको देखकर गच्छनायकने सोचा कि अगर यह चरित्र ले, तो बड़ा विचक्षण होगा। गुरुश्रीने नाथू शाहसे कहा कि अभी हम हीरविजयसूरिजीके दर्शनार्थ जा रहे हैं तुम यथावसर कर्मचन्द्रादिके साथ आ जाना, ऐसा कहकर मेड़तासे सादड़ी, पर्युषणाके पारणेपर राणकपुर, वरकाणा तीर्थकी यात्रा करते हुए जालोर पधारे वहां कमलविजयजीने उन्हें वन्दना की, बीजोवाका संघ भी आया। वहांसे विहारकर श्री विजयसेनसूरि सिरोही होकर पाटण पधारे और हीरविजयसूरिजीका निर्वाण हुआ जानकर वहीं ठहरे।

इधर मेड़तेमें कर्मचन्द आदि दीक्षाकी तैयारियां करने लगे, बहुतसे धर्मकृत्योंको करते हुए जेसा और पञ्चायणको गृह भार संभलाकर १ नाथू २ सुरताण ३ कर्मचन्द्र ४ केसा ५ कपूरचन्द्र

(६ नायकदे) ६ व्यक्तियोंने सं० १६५२ माघ (शुक्ला) २ को पाटणमें विजयसेनसूरिके पास दीक्षा ग्रहण की। उनके दीक्षाके नाम इस प्रकार रखे गए—नाथू = नेमविजय, सुरताण = सूरविजय, कर्मचन्द्र = कनकविजय, केशा = कीर्तिविजय, कपूरचन्द्र = कुंवर-विजय, इनमें कनकविजयको सुयोग्य समझकर विजयसेनसूरिने स्वशिष्य विजयदेवसूरिको सौंप दिया, उन्होंने इनको विद्याध्ययन कराया, श्रीविजयसेनसूरिने अहमदाबादमें सं० १६७० में पंडितपद से विभूपित किया। वीसा और वदाने महोत्सव किया। खंभातमें श्रीविजयसेनसूरिका स्वर्गवास हो जानेसे उनके पट्टधर विजयदेव-सूरि हुए, उन्होंने सं० १६७३ में पाटणमें चौमासा किया, पोप वदी ६ को लाली श्राविकाने इनके हाथसे प्रतिष्ठा करवाई, इसी समय कनकविजयको उपाध्याय पद भी दिया गया।

सम्राट जहांगीर विजयदेवसूरिसे माण्डवगढ़में मिले और प्रसन्न होकर "महातपा" पद दिया। विजयदेवसूरिने गुर्जर देशमें विहार करते हुए श्री शत्रुंजयकी यात्रा की, उसके पश्चात् दो चौ-मासे दीवमें करके गिरनारकी यात्रा कर नवानगर पधारे, वहां संघने २०००) जामी व्ययकर साम्हेला किया। तत्पश्चात् उन्होंने पुनः शत्रुंजयकी यात्राकर खंभात चातुर्मास किया, वहां तीन प्रतिष्ठाओंमें चौदह हजार खर्च हुए। वहांसे माघ शुक्ला ६ को सावली पधारे। ३ मास तक मौन रहे, वहां सोनी रतनजीने अमारि पालन कराई, उस समय उ० कनकविजयजी ही व्याख्यान देते थे। गुरुने बहुतसे छट्ठ अट्ठमादि किए और वे आंबिल करके पूर्वदिशिकी ओर ध्यान

किया करते थे। सूरि मंत्रके आराधनसे वैशाखमें स्वप्नमें देवने कनकविजयजीको पद स्थापनका निर्देश किया, उसके वाद पूज्य सावली और ईडर पधारे। वहां दो चौमासे किये, प्रासाद प्रतिष्ठा हुई। उसके वाद राजनगर चातुर्मास करके एक चातुर्मास वीवीपुरमें किया। चातुर्मासके अनन्तर सीरोहीके पंजावत तेजपाल और राय अखैराजके पोरवाड़-मंत्री तेजपालने गुरु वन्दना की, गुरुश्री पुनः श्री सिद्धाचलजीकी यात्राकर कमीपुर पधारे। तेजपालने पारस्परिक झगड़ा मिटाकर मेल कर लेनेको विज्ञप्ति की उन्होंने भी स्वीकार कर समझौतेका पत्र लिखा, आचार्य विजयानन्दसूरि उ० नन्दि-विजय वा० धनविजय, धर्मविजय आदिने विजयदेवसूरिकी पुनः आज्ञा शिरोधार्य की, तेजपाल पूज्यश्रीको सिरोही पधारनेकी विज्ञप्तिकर वापिस आ गया। पूज्यश्री राजनगरसे विहारकर ईडर आये, वहां तपागच्छीय संघके आग्रहसे श्री उ० कनकविजयजीको वै० शु० ६ सोमवारको पुष्प नक्षत्रके दिन सूरिपद देकर स्वपट्ट पर स्थापन किया। उस समय ईडर संघ मुख्य सोनपाल, सोमचन्द्र, सूरजीके पुत्र सादूल, सहसमल, सुन्दर, सहेजू, सोमा, धनजी मन-जी, इन्दुजी और अमीचंद, राजनगरके संघवी कमलसिंह, अहमद-पुरके पारख बेलाके पुत्र चांपसी, पारख देवजी, सूरजी, थानसिंह, रायसिंह, सा०भामा, तोला, चतुर्भुज, सिंह, जागा, जसु, जेठा—जो गुरुश्रीके भाई थे, कोठारी वच्छराज, रहीआ, कर्मसिंह, धर्मसी, तेजपाल, अखयराज मंत्री समरथ मं० लखू भीमजी, भामा, भोजा, फड़िया मालजी भाणजी लखा चौथिया, गांधी वीरजी, मेवजी

सा० वीरजी, देवकरण, पारख जस्सू, भाणजी, सूरजी, तेजपाल इत्यादि ईडरका संघ सम्मिलित हुआ इसी प्रकार द्यावड़ और अहिमनगरका संघ एवं सावलीका संघ पदमसी, चांदसी आदि एकत्र हुए, सा० नाकर पुत्र सहजूने चतुर्विध संघके साथ पद प्रदानके लिये तपागच्छ नायकको एवं उ० धर्मविजय वा० लावण्यविजय वा० चारित्रविजय पं० कुशलविजय इन चारोंको बुलाया गया। पदस्थापनाके अनन्तर कनकविजयका नाम विजयसिंहसूरि रखा गया, पं० कीर्तिविजय, लावण्यविजयको वाचकपद और अन्य ८ साधुओंको पंडित पद दिया गया। इस उत्सवमें सहजूने पांच हजार महम्मदी व्यय किये, ईडर नरेश कल्याणमल प्रसन्न हुए। ज्येष्ठ मासमें बिम्ब प्रतिष्ठा हुई, शाह रइयाने उत्सव किया, दूसरे पक्षमें अमराउतने सुयश लिया, पारख देवजीके घर पूज्यश्रीने प्रतिष्ठा की, इस प्रकार सं० १६८१में बड़े ही आनन्दोत्सव हुए। राय कल्याणने दोनों आचार्योंको ईडरमें चौमासेके लिए रखा।

सीरोहीके शाह तेजपालकी विज्ञप्तिसे चैत्र मासमें सूरिजी आबू पधारे, सं० मेहाजल दोसी, जोधा सन्मुख आए। आबूकी यात्राकी। बंभणवाड़के वीर प्रभुकी यात्रा कर चातुर्मासार्थ सीरोही पधारे। सा० तेजपालादिने बहुतसे सुकृत किये। इसी समय विजयादशमी सं० १६८३ को यह विजयप्रकाश रास कमलविजयके शिष्य विद्या-विजयके शिष्य गुणविजयने रचा।

ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १ पृ० २७ (सज्झाय नं० ३४ लालकुशलकृत) में कई बातोंका अन्तर व विशेषताएं हैं।

१ पुत्रोंके नाममें ५ वें पंचायणके स्थानमें प्रथम जेठाका नाम है।

२ पांचही व्यक्तियोंके दीक्षा लेनेका लिखा है, सुरताण-सूरविजय का उल्लेख नहीं है। नायकदेका दीक्षा नाम नयश्री लिखा है, एवं दीक्षा सं० १६५४ लिखा है।

विशेष—सं० १६८४ पौष शुक्ल ६ बुधवार जालोरके मंत्री जयमलने गुणानुज्ञाका नन्दिमहोत्सव कराया, उस समय जससागर के शिष्य जयसागरको और विजयसिंहसूरिके भाई कीर्तिविजयको वाचक पद दिया। आचार्य विजयसिंहसूरिने राणा जगतसिंहको प्रतिबोध दिया, मेड़तेमें आगरा निवासी बादशाहके मुख्य व्यवहारी हीराचंदकी भार्या मनीने इनके हाथसे प्रतिष्ठा कराई, इसी प्रकार किसनगढ़में राठौर रूपसिंहके महामन्त्री रायसिंहके आग्रहसे चातुर्मास कर प्रतिष्ठा की। सं० १७०६ असाढ़ सुदि २ अहमदाबादके नवीनपुरामें उनका स्वर्गवास हुआ।

संक्षिप्त कविपरिचय

अक्षरानुक्रमसे कवियोंके नामोंकी सूची

अभयतिलक (३०) जिनपतिसूरि पट्टधर जिनेश्वरसूरिके शिष्य थे, आपके रचित १ सं० १३१२ पालणपुरमें हेमचंद्रसूरिकृत द्व्याश्रय (२० सर्ग) काव्यवृत्ति २ न्यायालङ्कार टिप्पन (पंचप्रस्थ न्यायतर्क व्याख्या) ३ वीररास (सं० १३१७) विशेष परिचय देखें :—जैनयुग वर्ष २ पृ० १५६ ला० भ० का लेख।

१ अभैविलास (४१३) श्रीपालचरित्र कर्ता जयकीर्त्तिजीके शिष्य प्रतापसौभाग्यजीके आप शिष्य थे। आपकी परम्परामें अभी कृपाचंद्रसूरि विद्यमान हैं।

२ आनन्द (१७७)।

३ आनन्दविजय (२०६)।

४ आलम (३३८) कविवर समयसुन्दरकी परम्परामें आसकरणजीके शिष्य थे, आप अच्छे कवि थे, आपके रचित १ मौन एकादशी चौ० (१८१४ मकसूदाबाद) २ सम्यक्त्व कौमुदी चौ० ३ जीवविचारस्तवन आदि उपलब्ध हैं।

५ कनक (१३४) आप सम्भवतः उ० क्षेमराजजीके शिष्य थे, आपका पूरा नाम 'कनकतिलक' होगा।

६ कल्याणकमल (१००)—देखें :—युगप्रधान जिनचन्दसूरि पृ० १७२।

७ कल्याणचंद्र (५२) कीर्तिरत्नसूरिजीके शिष्य थे। सं० १५१७में सूरिजीसे आपने आचारांगकी वाचना ली जिसकी प्रति जे० भं० में (नं० २) अब भी विद्यमान है।

८ कल्याणहर्ष (२४७)

९ कविदास (१७४)

१० कवीयण (२६३-२९२)।

११ कनकसिंह (२४३) शिवनिधान शिष्य, देखें यु० जि० सू० पृ० ३१३।

१२ कमलरत्न (२३३) देखें यु० जि० सू० पृ० ३१५।

१३ कमलहर्ष (२४०) श्रीजिनराजसूरि शिष्य मानविजयजी के आप शिष्य थे, आपके रचित :—१ पांडवरास (१७२८ आ० व० २ र० मेड़ता) २ धना चौ० (१७२५ आ० सु० ६ सोजत) ३ अंजना चौ० (१७३३ भा० सु० २) ४ रात्रि भोजन चौ० (१७५० मि० लूणकरणसर) ५ आदिनाथ चौढ़ा० ६ दशवैकालिक सझायें इत्यादि उपलब्ध हैं।

१४ कनकधर्म (२९९)।

१५ कनकसोम (९०-१४४) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९४

१६ करमसी (२४७)

१७ कीर्तिवर्द्धन (३३३) जिनहर्ष (आद्यपक्षी) सूरिजीके शिष्य दयारत्न (कापरहेडारास कर्त्ता १६६५) के आप शिष्य थे, आपके रचित सदयवच्छसावलिंगा चौ० (१६६७ विजयदशमी) प्राप्त है।

१८ कुशलधीर (२०७) देखें युगप्रधान जिनचंद्रसूरि पृ० १६४।

१६ कुशललाभ (११७) ,, ,, ,, ,, १६६।

२० खइपति (१३८)

२१ खेमहंस (२१७) क्षेमकीर्ति (शाखाके आदि पुरुष) जीके शिष्य थे, आपकी रचित मेघदूत दीपिका उपलब्ध है। जयसोम, गुण-विनय आपहीकी परम्परामें थे।

२२ खेमहर्ष (२४२-४३) आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं।

२३ गुणविजय (३६४) आपके रचित १ विजयप्रशस्ति काव्यके अन्तिम ५ सर्गमूल और समग्रग्रन्थपर टीका २ कल्प; कल्पलता टीका ३ सातसौ बीस जिन स्त० आदि उपलब्ध हैं।

२४ गुणविनय (६३-६६-१००-१२५-१७२-२३०) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २००।

२५ गुणसेन (१३६) सागरचंद्रसूरि शाखाके वा० सुखनिधानजी के आप शिष्य थे आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं। आपके यशोलाभ नामक शिष्य थे जो अच्छे कवि थे।

२६ चारित्रनंदन (२६७)।

२७ चारित्रसिंह (२२५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६७।

२८ चन्द्रकीर्ति (४०६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०८।

२९ जयकीर्ति (३३४) कविवर समयसुन्दरजीके शि० वादी हर्षनंदनजीके शिष्य थे।

३० जयकीर्ति द्वि० (४११-१२) आप कीर्त्तिरत्नसूरि शाखाके अमरविमल शि० अमृत सुन्दरजीके शिष्य थे, आपके रचित १ श्रीपाल चारित्र (१८६८ जेसलमेर) २ चैत्रीपूनम व्याख्यान आदि उपलब्ध हैं।

३१ जयनिधान (१४५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०९।

३२ जयसोम (११८) देखें यु० „ पृ० १९७।

३३ जल्ह (१३८)।

३४ जिनचन्द्रसूरि (४१८) उसी ग्रन्थमें राससार पृ० २९९

३५ जिनसमुद्रसूरि (३१५-१६) देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० ७५

३६ जिनेश्वरसूरि (४३०) वेगड़ गुणप्रभसूरि शि०

३७ देवकमल (१३९) इनका नाम जइतपदवेलिमें आता है अतः साधुकीर्तिजीके गुरु-भ्राता होना सम्भव है।

३८ देवचंद (२९४)।

३९ देवीदास (१४७)।

४० धर्मकलश (१९)।

४१ धर्मकीर्ति (१८९) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८३।

४२ धर्मसी (२५०-५२) देखें राजस्थान पत्र वर्ष २ अंक २ में प्र० मेरा लेख।

४३ नयरंग (२२६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९५।

४४ नेमिचंद भंडारी (३७२) षष्टीशतक कर्त्ता, जिनपति शिष्य जिनेश्वरसूरिके पिता।

४५ पुण्यसागर (५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८८।

४६ पुण्य (३३७) यथासम्भव आप समयसुन्दरजीके परम्परामें (कविवर विनयचंद्रके प्रगुरु) होंगे और पूरा नाम (पुण्यचंद शि०) पुण्यविलास होगा।

४७ पदमराज (६७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६०।

४८ पद्ममन्दिर (५६) आपके रचित १ प्रवचनसारोद्धार वाला० (१५६३) उपलब्ध है।

४६ पहराज (४०)

५० पल्ह (३६८) इनका नामोल्लेख चर्चरी टीका (अपभ्रंश काव्यत्रयी पृ० १२) में आता है, आप दिगम्बर भक्त और (जिन दत्तसूरिके) अभिनवप्रबुद्ध श्राद्ध थे, लिखा है।

५१ भत्तउ (६)।

५२ भक्तिलाभ (५४) उ० जयसागरजीके शि० रत्नचंद्रजीके आप सुशिष्य थे, आपके रचित १ कल्पांतरवाच्य २ लघुजातक कारिका-टीका (१५७१ विक्रमपुर) ३ जीरावला पार्श्वस्त० संस्कृत स्तोत्र प० ३, ४ सीमंधरस्तवनादि उपलब्ध हैं। आपके शि० चारुचंद्रजी कृत १ उत्तम कुमारचरित्र २ रतिसार चौ० ३ हरिबल चौ० (१५८१ आ० सु० ३) ४ नंदनमणियारसन्धि (१५८७) आदि उपलब्ध हैं आपकी परम्परामें श्रीबलभोपाध्याय हो गये हैं, देखें यु० चरित्र पृ० २०३।

५३ महिमा समुद्र (४३१-३२) बेगड़शाखा

५४ महिमहर्ष (४३२) वेगड़ शाखा, अच्छे कवि थे।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माइदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३९९) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध है।

६० रयणशाह (७)

६१ रत्ननिधान (१०३-१२३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १०४

६२ राजकरण (३०३-३०४)

६३ राजलछी (३४०)

६४ राजलाभ (२५५-२५७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १७३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिन-राजसूरि, देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० २२

६६ राजसुन्दर (३२०) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिन-सिंहपट्टे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४९) कविवर समयसुन्दरजीके शि० हर्षनन्दन शि० जयकीर्त्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित श्रावकाराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ श्रा० सु० ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि शि० जसवीर पठ०) ३ इरियाविही मिथ्यादुष्कृतस्त०बाला० ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध है।

६८ राजहंस (२३१)

६९ रूपहर्ष (२४१) आप राजविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८-१२१-१२२)देखें यु०जिनचन्द्रसूरि पृ० २०९

७१ लब्धिशेखर (९८)

७२ ललितकीर्त्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०९

७३ लाधशाह (३२१) कडुआमती (कडुवा-खीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल-रतनपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लधुजी थोभणशि०) थे। आपके रचित, १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु सोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० ब० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रवाला० (१८०७ मि० सु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त है।

७४ वसतो (२९५) आपके रचित् १ लोद्रवास्त० (१८१७ मि० व ५ र०) २ वीशस्थानक स्त० गा० १९, ३ रात्रिभोजन सझाय, ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध है।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें है।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वेलजी (२५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्दसूरि पृ० २०७

८० श्रीसुन्दर (१७१) „ „ पृ० १७२

८१ समयप्रमोद (८६-९६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२

८२ समयसुन्दर (८८-१०६-७-८-९-२६-२७-२८-२९-३१-

२००-२२७) देखें उपरोक्त पृ० १६७ और राससार पृ० ४५।

८३ समयहर्ष (२५४)

८४ सहजकीर्ति (१७५-७६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

८५ सारमूर्त्ति (२३)

८६ साधुकीर्त्ति(६२-६७-४०४)देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६२

८७ सुखरत्न (१४६)

८८ सुमतिकाल्लोल (६४) „ पृ० १०५

८९ सुमतिवल्लभ (१६८)

९० सुमतिविजय (१७७)

९१ सुमति विमल (२५०)

९२ सुमतिरंग (४१०-४२१) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३१५

९३ विवेकसिद्धि (४२२)

९४ सोमकुंजर (४८) आप उ० जयसागरजीके विद्वान शिष्य थे। विज्ञप्तित्रिवेणी पृ० ६१ से ६३) में आपके रचित कई अलंकारिक पद्य भी पाये जाते हैं।

९५ सोममूर्त्ति (३८७) जिनपतिसूरि शि० जिनेश्वरसूरिजीके आप सुशिष्य थे और उ० अभयतिलकजीके आप सतीर्थ थे। देखें जैनयुग वर्ष २ पृ० १६४।

९६ हर्षकुल (५७) महो०-पुण्यसागरजीके शिष्य थे, उल्लेख यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६०

९७ हर्षचन्द (२४६) रूपहर्ष शि०, आपके रचित अन्य एक गहुंली भी संग्रहमें है।

९८ हर्षनन्दन(१२४-३२-३३-१४६-२०१-२०३)देखें यु०पृ० १७१

९९ हर्षवल्लभ (४१७) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८५

१०० सेवकसुन्दर (४२०)

१०१ हेमसिद्धि (२११-१३)

१०२ क्षमाकल्याण (२६६-३०६-७) देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० ६४

१०३ ज्ञानकलश (३२६)

१०४ ज्ञानकुशल (३३२)

१०५ ज्ञानहर्ष (३३५-३७८) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३०५

कवियोंके नामके आगे प्रस्तुत संग्रह (मूल) के पृष्ठोंकी संख्या दी गई है। कइ कवि एकही नामसे एकही समयमें कइ हो गये हैं अतः संदिग्ध परिचय देना उचित नहीं ज्ञात हुआ ।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
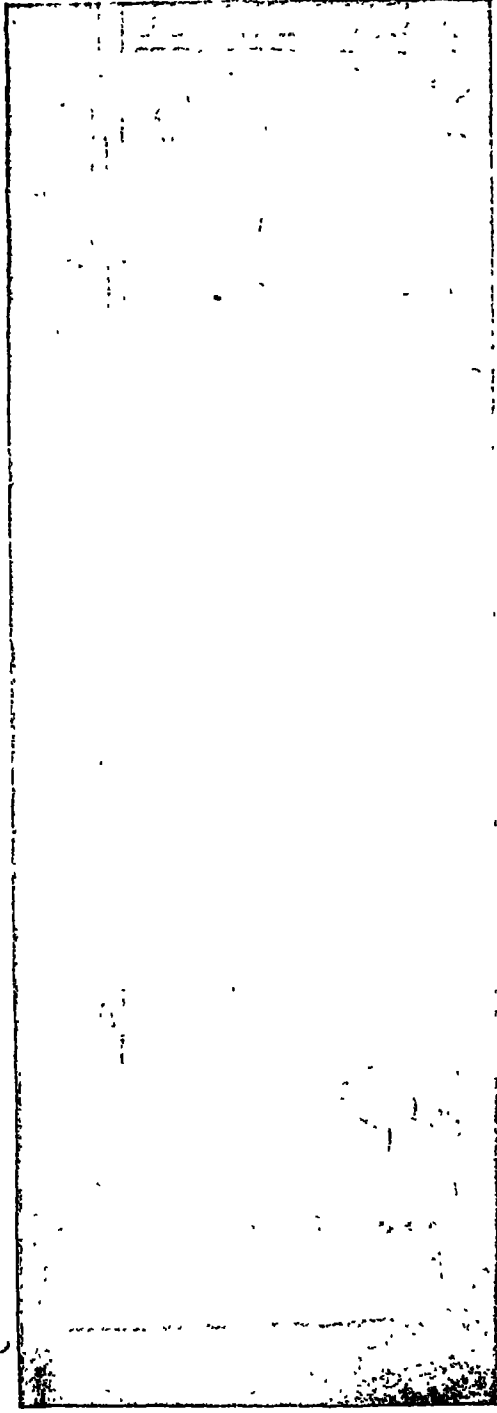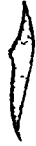
प्रगट प्रभावी योगीन्द्र युगप्रधानजी जिनदत्त सूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीयप्राचीन ताडपत्रीय
प्रतिके काष्ठफलकपर चित्रित)

॥ अर्हम् ॥

॥ श्री गुरु गुण षट्पद ॥

जिणवल्लह-पमुहाणं, सुगुरूणं जो पढेइ वर-कप्पं ।
मंगल-दीवंमि कए, सो पावइ मंगलं विमलं ॥१॥

इग्यारह सइ सट्ठसत्त समहिय संवछरि ।
आसाढइ सिय छट्ठि चित्तकोटंमि पवरपुरि ।
महावीर जिणभवणिट्ठिय संठिउ जिणवल्लह ।
जिणि उज्जोयउ चंदु गच्छु पंडिय जिणवल्लह ।
गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध घर ।
परिहरवि आवि विहि पयड़ कइ, पुहवि पसंसिजइ सुपरपरि ॥१॥

इग्यारह गुणहत्तरइ किसण वैसाख छट्ठि दिणि ।
चित्तउड़ह वर नयरि संघु मिलियउ आणंदिणि ।
वद्धमाण जिणभवणि भयउ तहि घणउ महोछवु ।
देवभद्दि संठियउ सूरि जिणदत्त सुनिछवु ।
आयस पुणंति सूरि भिछ, जिम झाण नाण संतुट्ठ मण ।
जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सक्कउं तुम्ह गुण ॥ २ ॥

अज्जवि जसु जस पसरु महि छहखंड धरत्तिहि ।
अज्जवि जसु गुण नियरु थुणहि पंडिय बहु भत्तिहि ।
अज्जवि सुमरिज्जंतु विग्घत्तु अवहरइ पवित्तण ।
नाम ग्रहणि कुणंति जसु अज्जवि भवियण दिण ।

अज्जवि जु देवु लोइ ट्ठियउ, संघ मणछिउ देइ फलु ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरूवि, धम्मु पयासिउ जिण अमलु ॥३॥
अभयदाणु जिणि दिनु सयल संवह विक्कमपुरि ।
किय पयट्ठ जिण उसभ भुवणि वहुविह उछवु भरि ।
जिणि पडिवोहउ कुमरपालु नरवय तिहुयण गिरि ।
पंचसत्त मुणि नेमि जेणि वारिउ देसण करि ।
उज्जेणी वक्कु जोइणि तणउं, जिणि पडिबोहउ झाण वलि ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरवि, हुयउ न होइ सइ इत्थु कलि ॥ ४ ॥
बारह पंचुत्तरइ धवल वैसाख छट्ठि दिणि ।
सइ जिणदत्त मुणिंद ठविउ जिनचंदु पट्टि तहि (? जिणि) ॥
विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ ।
गणहरु जेम सुहंम सामि भवियण दिण बोहइ ।
जिणचन्द सूरि जसु चन्दु सम, अज्जवि उज्जोयइउ गयणु जिणि ।
.... ॥ ५ ॥
बारह सइ तेवीस समइ कत्तिय सिय तेरसि ।
बबेरपुरि ठविउ सूरि जिणपत्ति महा रिसि ॥
मंतुं दिनु जयदेव सूरि सूरहि सुपवित्तिण,
....
अत्थाणु पहुविरायह तणउ जिणि रंजवि जयपत्तु लियउ ।
खरहरय सद्दि जगि पयडिउ, जुग पहाणु पहुविप्पयउ ॥ ६ ॥
बारअठ्ठहतरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ ।
जिणेसर सूरि पइसरइ संघु सयलु विविह सज्जइ ।

सूरिमंतु सिरि सव्वएवसूरहि जसु दिनउ ।

जालउरहि जिणवीर भुवणि वहु उच्छव (की) नउ ॥

कंसाल ताल झलरि पडह, वेण वंसु रलियामणउ ।

सुपढंति भट्ट सुंमहि गहिर, जय जय सद्द सुहावणउ ॥७॥

जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचंदु जु जिणवइ ।

तुय सुव्वइ आसीस दिंति जिणेसरसूरि मुणिवइ ।

उयहि जाम जलु रहइ गयणि जाम मह दिणेसरु ।

ताम पयासिउ सूरि धंमु जुगपवरु जिणेसरु ॥

विहि संघु स नंदउ दिणणदिणु, वीर तित्थु थिरु होउ धर ।

पूजन्ति मणोरह सयल तहि, कव्वद्व पढंति नारि नर ॥ ८ ॥

[इति पटपदम्]

॥श्री जिणदत्तसूरि स्तुति॥

सिरि सुयदेवि पसाउ करे, गुरु श्रीजिणदत्त सुरि।
वन्निसु खरतर गण गयणि, सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥
संवत इग्यारह वरसि, वतीसइ जसु जम्म।
वाछिग मंत्री पिता जणणि, वाह (ड़) देवि सुरम्म ॥ २ ॥
इगतालइ जिणव्रय गहिय, गुणहुत्तरइ जसु पाट।
वइसाखइ वदि छट्ठि दिणि, पय पणमी सुर घाट ॥ ३ ॥
अंबड सावय कर लिहिय, सोवन अखर अंबि।
जुग पहाण जगि पयडियउ ए, सिरि सोहम पडिबिंब ॥४॥
जिण चोसठि जोगिणी जितिय, खित्तवाल बावन्न।
डाइणि साइणि विभूसीय, पहुवइ नाम न अन्न ॥ ५ ॥
सूरि मंत्र बलि कर सहिय, साहिय जिण धरणिंद।
सावय सविय लख इग, पडिबोहिय जण वृन्द ॥ ६ ॥
अरि करि केसरी दुट्ठदल, चउविह देव निकाय।
आण न लोपि कोइ जगि, जसु पणमइ नरराय ॥ ७ ॥
संवत वारह इग्यार समइ, अजयमेरुपुर ठाण।
इग्यारसि आसाढ़ सुदि, सग्गिपत्त सुह झाणि ॥ ८ ॥
श्री जिणवल्लह सूरि पए, श्रीजिणदत्त मुणिंदु।
विग्घ हरण मङ्गलकरण, करउ पुण्य आणंदु ॥ ९ ॥

श्री पुण्यसागर कृत

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टकम् ॥

श्रीजिनदत्त सुरिन्दपय, श्रीजिनचन्द्र मुणिन्द ।
नय (?)र मणि मंडित भाल यस, कुसल कुमुद वणचंद॥१॥

संवत सिव सत्ताणवयं, सदट्ठमि सुदि जम्मु ।
रासल तात सुमातु जसु, देल्हण देवि सुधम्म ॥ २ ॥

संवत वार तिरोत्तरय, फागुण नवमि विशुद्ध ।
पंच महव्वय भरि धरिय, बालत्तणि पडिवुद्ध ॥ ३ ॥

वारह सइ पंचोतरइ ए, वैशाखाह सुदि छट्ठि ।
थापिउ विक्कमपुर नयरि, जिणदत्त सूरि सुपट्टि ॥ ४ ॥

तेविसइ भाद्रव कसिणि, चवदसि सुह परिणामि ।
सुरपुरि पत्तउ मुणिपवर, श्री जोयणिपुर ठामि ॥ ५ ॥

सुह गुरु पूजा जह करइ ए, नासय तासु किलेस ।
रोग सोग आरति टलइ ए, मिलइ लच्छि सुविशेष ॥६॥

नाम मंत्र जे मुख जपइ ए, मणु तणु सुद्धि तिसंझ ।
मनवंछित सवि तसु हुवइं, कज्जारंभ अबंझ ॥ ७ ॥

जासु सुजसु जगि झिगमिगै ए, चंदुज्जल निकलंक ।
प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ, हरइ डमर अरि संक ॥ ८ ॥

इय श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, संथिणिउ गुणि पुन्न ।
श्री "पुण्यसागर" वीनवइ, सहगुरु होउ सुप्रसन्न ॥ ९ ॥

इति श्रीजिनचन्द्रसूरि महाप्रभावीक अष्टकं संपूर्णम् ।
(गुलाबकुमारी लायब्रेरीके गुटका नं० १२९ से उद्धृत)

शाह रयण कृत

श्रीजिनपतिसूरि धवल गीतम्

वीर जिणेसर नमइ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपति सूरि गुण गाइसो, भत्तिभर हरसिहि मनिरमले ॥१॥
तिहुअण तारण सिव सुख कारण, वंछिय पूरण कल्पतरो ।
विघन विणासण पाव पणासण, दुरित तिमिर भर सहस करो ॥२॥
पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिश्वर, शम दम संयम सिरि तिलउ ए ।
इणि कलिकालहि एह जो जुगपवर, जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए॥३॥
अत्थि मरुमण्डले नयर विक्कमपुरे, जसोवर्द्धनु जगि जाणिइ ए ।
तासुवर गेहिणी सूहव देविय, जासु वर पुत्त वखाणिइ ए ॥ ४ ॥
विक (म) संवच्छरे बार दहोतरे, चैत्र धुरि आठमि जो जाईयउ ए ।
नयर नर नारि नय(व?)रंग भरि गायो, जसोवरधनु वधावियउ ए॥५॥
तिणि सुह दिवसहि निय मणि रंगहि, उच्छव करिय नव नविय परे ।
निरुपम "नरपति" नामु तसु किज्जए, क्रमि क्रमि बाधइ तात घरे॥६॥
बार अढार ए वीर जिणालए, फागुण वदि दसमिय पवरे ।
वरीय संजम सिरीय भीमपल्लीपुरे, नन्दि वर ठविय जिणचंदसूरे ॥७॥
अह सयल सार सिद्धांत अवगाहए, सजणमण नयण आणंदणउ ए ।
नाण गुण चरण गुण पयासए, चउ विह संघ सोहामणउ ए ॥८॥

वार त्रेवीसए नयरि वब्बेरए, कातिय सुदी दिन तेरसीए।
श्री जिणचन्दसूरि पाटि संठाविउ, श्रीजयदेव सूरि आयरीए ॥९॥
गुरुय नामेण जिनपति सूरि उदयउ, चन्द्र कुलंबर चन्दलउ ए।
विहरए सयल देसंमि गुण भरिउ,समइ सरोरह (? वर) हंसलउ ए॥१०॥
पेखि किरि रूव लावन्न गुण आयार, जण जण जंपए मनि धरी ए।
सिरि माल्हूय कुले कमल दिवायर, वादीय गय घड केसरी ए ॥११॥
पामीउ जेत्रु छतीस विवादिहि, जयसिंह पहविय परषद (इ) ए।
वोहिय पुहविय पमुह नरिन्दह, जासु वयणि जिण आदर(इ)ए ॥१२॥
दीखिय वहु सीस पयट्ठिय बहु बिंब, थापिय रीति खरतर तणी ए।
जासु पय पणमए सासणा देवि, देवि जालंधरा रंजिवी ए ॥१३॥
अह मरुकोटहि नेमुचन्द निवसए,(गुरु)गुरु देखि मनु नवि गम(इ)ए।
जासु मनि निवसए खरउ जिण धम्मु, खरउ आचारि गुरु मनि गम (इ) ए ॥१४॥
तायणु सोपुरि(पुरे) नयरि गामागरे, गुरु २ चि(वि?) रिय जोवइ अपारे
भमियउ वारह वरिस भण्डारिय, सुगुरु देखंतउ समय सारे ॥१५॥
अह अवर वासरे पट्टणे पुरवरे, श्रीयजिनपतिसूरि पेखि करे।
तउ मनि मानिय सयणजण आणिय, आदिरीयउ गुरु हरिस भरे ।१६।
तासु अंगोल मुनियपय जोगि, जाणिय सयहत्थि दीखि करे।
तयण जिण सासण पभाव पयडंतउ, पहुतउ पाल्हणपुर नयरे ॥१७॥
सुललित वाणि वखाणु करंतउ, भविय बोहंतउ विविह परे।
साह(?हू)सावय जण जस्स सेवा करइ, सेव सारइ सुर सुपरि परे॥१८॥
अन्नं दिणंतरे बार सतहोतरे, मास असाढि जिण अणसरी ए।
मन्न सुह झाणहि सिय दसमी दिवसहि, पहुतउ सूरि अमरापुरी ए।१९
एहु श्री जिणपति सूरि गुरु जुगपवरु, साह "रयण" इम संथुणइ ए।
समरइ जे नर नारि निरंतर, तहा घर नवनिधि संपज(इ) ए ॥२०॥

कवि भत्तउ कृत

श्रीमज्जिनपतिसूरीणां गीतम्

वीर जिणेसर नमीउ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपतिसूरि गुण मंडन, गुण गण गाइसो मनि रमले ।१।
तिहुअण तारण सिव सुह कारण, वंछिय पूरण कलपतरो ।
विघन विणाशन पाव पणाशन, दुरित तिमिर न(?भ)र सहस करो ।२।
काम धेनोत्तम काम कुम्भोपम, पूरण जेम चिन्तारयण ।
श्रीय जिण शासणि नव नव रंगिहि, अतुल प्रभाव प्रगटीयकरण ।३।
तिहुअण रंजण भव दुह भंजण, दंसण नाण चारित्तजुत्तो ।
सकल जिणागम सोहग सुन्दर, अभिनवउ गोयम उदयवंतो ।४।
पुहवि प्रसिद्धउ सूरि सूरीसर, चन्द्र कुलंबर चन्दलउ ए ।
कमल नयण मंगल कुल कारण, गङ्गजल तासु जसु निरमलउ ए ।५।
इणि कलिकालिहिं अवरु नवि सुणीइए, सिरि माल्हूय कुले सिर तिलउ ए
सोहम वंसिहि वयरह साखिहिं, जिणवइए सूरि महिमा निलउ ए ।६।
अवर वर वासुरि पुन्य भर भासुरे, मूल नक्षत्रि चउथइ जु सारो ।
थुणइं सुर नमइं नर चरण चूड़ामणि, जायउ पुत्रु नरवय कुमारो ।७।
नर वर नारिय घरि घरे गायउ, जसोवरद्धनु बधावीउ ए ।
तस घरणीय माणव मन हरणीय, उछव गरूअ करावीउ ए । ८ ।
देसि मुरमुण्डले नयरि विकम पुरे, जसो वरद्धनु जगि जाणीउ ए ।
सूहवदेविय उयरि ऊपंन्नउ, तिहूयण सयलि वखाणीउ ए । ९ ।
विकम संवत्सरे बार दहोतरे, चैत्र बहुल आठमि (आठमि !) पवरे ।

सलहीय जय "नरपति"इणि नामिहिं, क्रमिक्रमि वाधइ ए तातघरे ।१०

चार अढ़ारह ए वोर जिणालए, फागुण धुरि दसमीय पवरे ।
वरीय संजमसिरे भीमपल्लीय पुरे, नांदि ठविय जिणचन्दसूरे ।११।

पढय जिणागम पमुइ विजावलीय, दरसणि त्रिभुवनु मोहीऊं ए।
कमल दलावल देह सुकोमल, गुणमणि मन्दिर सोहीऊं ए। १२।

रूव कला गण गुण रयणायर, तिहूअण नयण आणंदयंतो।
महीयले सोहइ ए भविक जन मोहइ ए, चालइ ए मोह तिमर हरंतो।१३

बार तेवीसइ ए नयरि बवेरइ ए, कातिक सुदि दिण तेरसी ए।
जाणीय जयदेव सूरिहिं थापिय, तिहुअण जण मण उलहसी ए।१४।

सिरि जिणचन्दह तणय सुपाटिहिं, उवसम रस भर पूरीयउ ए।
सुवहीय चारु विहारु करंतउ, अजयमेरे नयरि सम्मोसरिउ ए।१५।

पामीउ जेतु छत्रीस विवादिहिं, जयसिंह पुहवीय परषद्इ ए।
बोहिय पुहविय पमुह नरिंदह, निसुणीय वयणि जिण ध्रम्मु करइ ए।१६।

दीखिय बहुशीस पयट्ठिय बहुविह बिंब, थापीय रीति खरतर तणीए।
प्रभ पय वेवइ ए निसि दिन सेवइ ए, देवी जालंधर रंजिवी ए।१७।

सुललित वाणि वखाण करंतउ, धवल असाढ सतहत्तरइ ए।
मन सुह झाणिहिं दसमिय दिवसिंहि, पहुतउ सूरि अमरा पुरी ए।१८।

चरण कमल नरवर सुर सेवइ, मङ्गल केलि निवास हु ए।
थूभह रयण पाल्हणपुरे नयरिहिं, तिहुअण पुरइ ए आस हु ए।१९।

लीणउ कमलेहि भमर जिम "भत्तउ", पाय कमल पणमिय कहइ।
समरइ ए जे नर नारि निरंतर, तिहां घरे रिद्धि नवनिहि लहइ ए।२०।

इति श्रीमज्जिनपति सूरीणां गीतम्।

श्रीजिनपति सूरि स्तूप कलशः
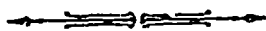
जनितभुवनतोषं रम्यसम्यक्त्वपोषं,
घटितकलुषमोषं स्नात्रमत्यस्तदोषम् ।
प्रभुजिनपतिसूरेः प्रीणितप्राज्यसूरे-
र्व्यपगतमलगात्रैः सूत्र्यते पुण्यपात्रैः ॥ १ ॥
कनककलशपूरैः कान्तिनिर्धूतसूरैः
कलकमलपिधानैः पुण्पमालाप्रधानैः ।
जिनपतियतिमूले मज्जनं सज्जनानां,
जनयति भवनोदं विश्वविश्वप्रमोदम् ॥ २ ॥
श्रीमत्प्रह्लादनपुरवरे प्रोन्नतस्तूपरत्ने,
स्फूर्जन्मूर्त्तिं जिनपतिगुरुं रत्नसानोजनंदा ।
क्षीरे नीरे स्नपय सुतरां भव्यलोका अशोकाः,
प्रेयः श्रेयः श्रियमनुपमां येन रम्यां लभध्वे ॥३॥
इति जिनपतिसूरिर्गौतमः श्रीसुधर्मा,
प्रभुयुगवरजम्बूस्वामिवत्सप्रतापः ।
मथितकुपथदर्पो मज्जितः सज्जितश्रीः,
सकलकलशराध्या पातु संघाय लक्ष्मीः ॥४॥

॥इति श्रीजिनपतिसूरीणां स्तूपकलशः ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥

खरतर गच्छि वर्द्धमान-सूरि, जिणेसर सूरि गुरो।
अभयदेवसूरि जिणवलह, सूरि जिणदत्त जुग पवरो ॥१॥
सुगुरु परंपर थुणहु तुम्हि, भवियहु भत्ति भरि।
सिद्धि रमणि जिम वरइ सयंवर नव नविय परि ॥आंचली॥
जिणचन्दसूरि जिणपतिसूरि, जिगेस तु (?र) गुणनिधानु।
तदणुक्कमि उपनले सुगुरु, जिणसिंघ सूरि जुगप्रधानु ॥२॥
तासु पाटि उदयगिरि उदय ले, जिणप्रभसूरि भाणु।
भविय कमल पडिवोहणु, मिछत तिमिर हरणु ॥ ३ ॥
राउ महंमद साहि जिणि, निय गुणि रंजियउं।
मेढमंडलि ढिल्लिय पुरि, जिण धरमु प्रकटु किउं ॥ ४ ॥
तसु गछ धुर धरणु भयलि, जिणदेवसूरि सूरिराउ।
तिणि थापिउ जिणमेरुसूरि, नमहु जसु मनइ राउ ॥ ५ ॥
गीतु पवीतु जो गायए, सुगुरु परंपरह।
सयल समीहि सिझहिं, पुहविहिं तसु नरह ॥ ६ ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥

के सलहउ ढीली नयरु हे, के वरनउ वखाणू ए।
जिनप्रभसूरि जग सलहीजइ, जिणि रंजिउ सुरताणू ॥१॥
चलु सखि वंदण जाह गुण, गरुवउ जिनप्रभसूरि।
रलियइ तसु गुण गाहिं राय रंजणु पंडिय तिलउ। आंचली।
आगमु सिद्धंतु पुराणु वखाणिइ, पडिवोहइ सव्वलोइ ए।
जिणप्रभसूरि गुरु सारिखउ हो, विरला दीसउ कोइ ए ॥२॥
आठाही आठमिहि चउथी, तेडावइ सुरिताणु ए।
पुह सितु मुख जिणप्रभ सूरि चलियउ, जिमि ससि इंदुविमाणिए ॥३
"असपति" "कुतुवदोनु" मनि रंजिउ, दीठेलि जिणप्रभ सूरी ए।
एकंति हि मन सासउ पूछइ, राय मणोरह पूरी ए ॥ ४ ॥
गाम भूरिय पटोला गज वल, तूठउ देइ सुरिताणू ए।
जिणप्रभसुरि गुरु कंपिनई छइ, तिहुअणि अमलिय माणू ए ॥५॥
ढाल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए।
इणपरि जिणप्रभसूरि गुरु आवइ, संघ मणोरह पूरा ए ॥ ६ ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरीणां गीतम् ॥

उदय ले खरतर गछ गयणि, अभिनवउ सहस करो ।
सिरी जिणप्रभुसूरि गणहरो, जंगम कल्पतरो ॥ १ ॥
वंदहु भविक जन जिणत्राशण, वण नव वसंतो ।
छतीस गुण संजूत्तो वाइय मयगल दलण सीहो ।आंचली।
तेर पंचासियइ पोस सुदि आठमि, सणिहि वारो ।
भेटिउ असपते "महमदो", सुगुरि ढीलिय नयरे ॥ २ ॥
आपुणु पास वइसारए, नमिवि आदरि नरिन्दो ।
अभिनव कवितु वखाणिवि, राय रञ्जइ मुणिंदो ॥ ३ ॥
हरखितु देइ राय गय तुरय, धण कणय देस गामा ।
भणइ अनेवि जे चाह हो, ते तुह दिउ इमा ॥ ४ ॥
लेइ णहु किंपि जिणप्रभसूरि, मुणिवरो अति निरीहो ।
श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविह परि मुणि सीहो॥५॥
पूजिवि सुगुरु वस्त्रादिकहिं, करिवि सहिथि निसाणु ।
देइ फुरमाणु अनु कारवाइ, नव वसति राय सुजाणु ॥६॥
पाट हथि चाडिवि जुगपवरु, जिणदेव सूरि समेतो ।
मोकलइ राउ पोसाल हं वहु, मलिक परि करीतो ॥७॥
वाजहि पंच सवुद गहिर सरि, नाचहि तरुण नारि ।
इंदु जम गइंदसहि तु, गुरु आवइ वसतिहिं मझारे ॥८॥
धम्म धुर धवल संववइ सयल, जाचक जन दिंति दानु ।
संघ संजूत वहु भगति भरि, नमहिं गुरु गुणनिधानु ॥९॥
सानिधि पउमिणि देवि इम, जगि जुग जयवन्तो ।
नंदउ जिणप्रभसूरि गुरु, संजम सिरि तणउ कंतो ॥१०॥

॥ श्रीजिणदेवसूरि गीतं ॥

निरुपम गुण गण मणि निधानु संजमि प्रधानु ।
सुगुरु जिणप्रभसूरि पट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥ १ ॥
वंदहु भविय हो सुगुरु जिणदेवसूरि ढिल्लियं वर नयरि देसणउ
अमियरसि वरिसए मुणिवरु जणु घणु ऊनविउ ॥ आंचली ॥
जेहि कन्नाणापुर मंडणु सामिउं वीर जिणु ।
महमद राइ समप्पिउं थापिउ सुभ लगनि सुभ दिवसि ॥ २ ॥
नाणि विन्नाणी कला कुसले विद्या वलि अजेउ ।
लखण छंद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुण असेउ ॥ ३ ॥
धनु कुल धरु जसु कुलि उपनुं इहु मुणि रयणु ।
धनु वीरिणि रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ ॥ ४ ॥
धणु जिणसिंघ सूरि दिखियाउ धनु चंद्र गछु ।
धनु जिणप्रभसूरि निज गुरु जिणि निज पाटिहि थापियउ ॥५॥
हलि सखे घणउ सोहावणिय रलियावणिय ।
देसण जिणदेवसूरि मुणिराय हं जाणउँ नितु सुणउ ॥ ६ ॥
महि मंडलि धरमु समुधरए जिण शासणिहिं ।
अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो, अवयरिउ वयंइरसामि ॥७॥
वादिय मयगल दलण सीहो त्रिमल सील धरु ।
छत्रीस गुणधर गुण कलिउ चिरु जयउ जिणदेव सूरि गुरु ॥८॥

॥ इति श्री आचार्याणां गीत पदानि ॥

श्रीधर्मकलशमुनि
कृत
श्रीजिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास

सयल कुशल कल्लाण वल्ली, घणु संति जिणेसरु ।
पणमेविणु जिणचंदसूरि, गोयमसमु गणहरु ।
नाण म होय हि गुण निहाण, गुरु गुण गाए सु ।
पाट ठवणु जिन कुशलसूरि, वर रासु भणेसु ॥ १ ॥
आसि जिणेसर सूरि पढमु, अणहिलपुर पट्टणि ।
वसहि मग्ग पयडेण, राउ रंजिउ "दुल्लह" जिणि ।
तासु पट्टि जिणचंदसूरि, गुणमणि रोहण सम ।
विहिय जेण संवेग-रंग-साला मालोवम ॥ २ ॥
अभयदेव नव अंग वित्तिकरु, पासु पसायणु ।
पउमएवि धरणिंद पमुह, सुर साहिय सासणु ।
तउ जिणवल्लभसूरि तरणि, संवेगि सिरोमणि ।
संबोहिय चित्तउड़ि तेणि, चामुंडा पउमणि ॥ ३ ॥
जोगिराउ जिणदत्तसूरि, उदियउ सहसकरु ।
नाण झाण जोइणिय दुट्ठ देविय किंकरु करु ।
रूववंतु पच्चक्खु मयणु, जण नयणाणंदू ।

सयल कला संपुन्न वंदु, जिणचन्द मुणिंदु ॥ ४ ॥

वाइ करडि केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईसू ।

पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु ।

सयल शुद्ध सिद्धंत सलिल, सायर अप्पारु ।

जिणपबोह सूरि भविय कमल, सविया गणधारु ॥५॥

तयणं तरु गोयमह सामि, सम लद्धि समिद्धिउ ।

बहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुअणि सुपसिद्धउ ।

"कुतबदीन" सुरताण राउ, रंजिउ स मणोहरु ।

जगि पयडउ जिणचंदसूरि, सूरिंहि सिर सेहरु ॥ ६ ॥

॥ घातः ॥

चंद कुल निहि चंद कुल निहि, तवइ जिम भाणु ।

नाण किरण उज्जोय करु, भविय कमल पडिबोह कारणु ।

कुग्गह गह मच्छिन्न पह, कोह लोह तमहर पणासणु ।

महि मंडलि अच्छरिय धरो, जिण रंजिउ सुरताणु ।

सूरि राउ सो सग्गहि गयउ, जाणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥

त अह ढिल्लिय पुर वर नयरि, जिणिचंदसूरि गणधारु ।

त जयवल्लह गणि तेडियउ, मंतु कियउ सुविचारु ।

त विजयसीह ठक्कर पवरो, महंतियाण कुलि सारु ।

तउ नामु ठामि (सु)तसु अप्पियउ, तउ गोलइ(गोयम)सउं गणधारु॥८॥

त गुज्जरधर मंडणउ, अणहिलवाडउ नामु ।

त मिलिय संघु समुदाउ तहि, महलियाण अभिरामु ॥ ९ ॥

त उसवाल कुल मंडणउ, तेजपाल तहि साहु ।

त लहु बंधव रूदइ सहिउ, गुरु साहम्मि पसाउ ॥ १० ॥

ता गुरु राजेन्द्रचन्दसूरि, आचारिज वर राउ।

सुय समुद्द मुणिवर रयणु, विवेउसमुद्द उवझाउ ॥ ११ ॥

संघ सयल गुरु विनवए, तेजपालु सुविसेसु।

पाट महोच्छव कारविसु, दियइ सुगुरु आएसु ॥१२ ॥

त संघ वयणि आणंदियउ, जाल्हण तणउ मल्हारु।

त देस दिसंतर पाठवए, कुंकउती सुविचारु ॥ १३ ॥

सुणिउ उछवु अणहिल्ल पुरे, सुधनवंत सुह गेह।

त सयल संघ तिक्खणि मिलिय, पावसि जिम घण मेह ॥१४॥

कंठ ट्ठिउ गोलय सहिउं, गुरु आणा संजुत्तु।

वायवंतु वाहड़ तणउ, विजयसीहु संपत्तु ॥ १५ ॥

त पइसारउ संघह कियउ, वज्जहि वज्जंतेहि।

जिम रामहि अवडा नयरि, ढक्क बुक्क पमुहेहि ॥ १६ ॥

दीण दुहिय किरि कप्पतरो, राय पसाय महंतु।

त धम्म महाधर धुरि धवलो, देवराज पवर मंत्रि ॥ १७ ॥

त तसु नंदणु जेल्हा घरणि, जयतसिरी बखाणि।

त कुसलकीरति तहि कुलि तिलकु, घण गुण रयणह खाणि ॥१८॥

तेरहसय सतहत्तरइ किन्नंग (?कृष्ण) इगारसि जिट्ठ।

सुर विमाणु किरि मंडियउ, नंदि भुवणि जिणि दिट्ठि ॥१९॥

त राजेन्द्रचन्द्रसूरि, जिणचन्दसूरिहि सीसु।

त कुशलकीरति पाटहि ठविउ, मणहर वाणारिस ॥ २० ॥

नाम ठवियउ जिणकुशलसूरि, वज्जिय नंदिय तूर।

त संघु सयलु आणंदियउ, मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

घातः—सयल संघह सयल संघह केलि आवासु ।
अणहिलपुर वर नयर गुजरात धर मुखह मंडणु ।
देस दिसंतरि तहि मिलिय, सयल संघ वरिसंत जिम घणु ।
पाट धुरन्धर संठविउ, मिलिय मिलावइ भूरि ।
संघ महोछवु कारावइ, वज्जंतइ घणतूरि ॥ २२ ॥

त आदहिए आदिजिणिंद भरहु, नेमि जिम नारायणु ।
पासह ए जिम धरणिंदु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु ।
तिण परि ए सुह गुरु भत्ति, महंतियाणि परि सलहिय ए ।
पडिवनए तहि परिपुन्न, विजयसीहु जगि जस लियइ ए ॥२३॥

संघवइ ए सामल वंशि, देसि विदेसहि जाणिय ए ।
घण जिम ए घणु वरिसंतु, वीरदेव वखाणिय ए ।
कारइए जीमणवार, साहंमिय वछल्ल वर ।
संघह ए कप्पड वार, गुरुयभत्ति गुरु पूज कर ॥ २४ ॥

दीसई ए अहिणव बात, पाटणि दरिसण संख हूय ।
सूरिहि एसउ सउ-सात साहु, साहुणि चउवीस-सय ।
रुदई ए सउ तेजपालि घरि, तेडिउ पहिरावियइ ।
जइ सई ए दूसमकालि, चन्द्रहि नामउं लिहावियइ ॥ २५ ॥

घर घरि ए मंगल चार, पुन्न कलस घर घरि ठविय ।
घर घरि ए वंदर वाल, घरि घरि गूडी ऊभविय ॥ २६ ॥

वज्जिय ए तूर गंभीर, अंबरू वहिरिउ पडिरमण ।
नाचहि ए अबलिय बाल, रञ्जिय सुर धवला रवेहिं ॥ २७ ॥

अणहिलि ए पुर मंझारि, नर नारी जोवण मिलिय ।
किसउ सु तेजउ साहु, जसु एवडउ उछव रलिय ॥ २८ ॥

पुणरविए पुणवि सो साहु, संघ सयलि सम्माणिय ए।
आ गई ए उच्छव सारु, सिरि चन्द कुलि जगि जाणिय ए ॥२६॥
इण परि ए तेडवि संघु, पाट महोछवु कारविउ।
जिण गरूए नव नव भंगि, सयल विंव सु समुद्धरिउ ॥३०॥

घातः—धवल मंगल धवल मंगल कलयलारवे।
वज्जत घण तूर वर महुर सद्दि नच्चइ पुरंधिय।
वसुधारहि वर संति नर केवि मेहु जेम मनहि रंजिय।
ठामि ठामि कल्लोल झुणि, महा महोछवु मोय।
जुगपहाण पयसंठवणि, पूरिय मग्गण लोय ॥ ३१ ॥

सयल संघ सुविहाण, जिण सासण उज्जोय करो।
कोह लोह मय मोह, पाव पंक विधंसियरो ॥ ३२ ॥
उदयाचल जिम भाणु, भविय कमल पडिबोह करो।
तिम जिणचंद सूरि पाटि, उदयउ सिरि जिण कुसल गुरो ॥३३॥
जिम उगइ रवि विंबि वि, हरपुहोइ पंथि अह कुलि।
जण मण नयणाणंदु, तिम दीठइ गुरु मुह कमलि ॥ ३४ ॥
अणहिलपुर मंझारि, अहिणव गुरु देसण करइ।
नाण नीरु वरिसंतु, पाव पंकु जिम घणु हरइ ॥ ३५ ॥
ता महि-मंडलि मेरु, गयणंगणि जा रवि तपए।
सिरि जिणकुशल मुणिंदु, जिण-सासणि ता चिरु जयउ ॥३६॥
नंदउ विहि समुदाउ, तेजपालु सावय पवरो।
साहंमिय साधारु, दस दिसि पसरिउ कित्ति भरो ॥ ३७ ॥
गुणि गोयम गुरु एसु, पढहि सुणहि जे संथुणहि।
अमराउर तहि वासु, धम्मिय "धम्मकलसु" भणइ ॥ ३८ ॥

कवि सारमूर्ति मुनि कृत

॥श्रीजिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास॥

सुरतरु रिसह जिणिंद पाय, अनुसर सुयदेवी ।
सुगुरु राय जिणचन्दसूरि, गुरु चरण नमेवी ॥
अमिय सरिसु जिणपदम सूरि, पय ठवणह रासू ।
सवणंजल तुम्हि पियउ भविय, लहु सिद्धिहि तासू ॥ १ ॥
वीर तित्थ भर धरण धीर, सोहम्म गणिंदु ।
जंबूस्वामी तह पभव-सूरि, जिण नयणाणंदु ॥
सिज्जंभव जसभद्दु, अज्ज संभूय दिवायरू ।
भद्दबाहु सिरि थूलभद्र, गुणमणि रयणायरू ॥ २ ॥
इणि अनुक्रमि उदयउ वद्धमाणु, पुणु जिणेसर सूरी ।
तासु सीस जिणचन्द सूरि, अज्जिय गुण भूरी ॥
पासु पयासिउ अभय सूरि, थंभणपुरि मंडणु ।
जिणवल्लह सूरि पावरोर, दुखाचल खंडणु ॥ ३ ॥
तउ जिणदत्त जईसुनामि, उवसग्ग पणासइ ।
रूववंतु जिणचन्द सूरि, सावय आसासय ॥
वाई गय कंठीर सरिसु, जिणपत्ति जईसरू ।
सूरि जिणेसर जुग पहाणु, गुरु सिद्धाएसु ॥ ४ ॥
जिणपबोह पडिबोह तरणि, भविया गणधारू ।

निरुवम जिणचन्द सूरि, संघ मण वंछिय कारू ॥
उइयउ तसु पट्टि सयल कला, संपत्तु मयंकू ।
सूरि मउड चूडावयंसु, जिण कुशल मुणिंदु ॥ ५ ॥
महि मण्डल विहरन्तु सुपरि, आयउ देराउरि ।
तत्थ विहिय वय गहण माल, पय ठवण विविह परि ।
नियं आऊ पज्जंतु सुगुरु, जिणकुसलु मुणेइ ।
निय पय सिख समग्ग, सुपरि आयरिह देइ ॥ ६ ॥

॥ घत्ता ॥

जेम दिनमणि जेम दिनमणि, धरणि पयडेय ।
तव तेय दिप्पंत तेम सूरि मउडु, जिणकुशल गणहरू ।
दृढ छंद लखण सहिउ, पाव रोर मिछत्त तम हरू ।
चन्द गच्छ उज्जोय करु, महि मंडलि मुणि राउ ।
अणुदिणु सो नर नमउ तुम्हि, जो तिहुपति वखाउ ॥ ७ ॥
सिंधु देसि राणु नयरे, कंचण रयण निहाणु ।
तहि रीहडु सावय हुउं, पुनचन्दु चन्द समाणु ॥ ८ ॥
तसु नंदणु उछव धवलो, विहि संघइ संजुत्तु ।
साहु राय हरिपाल वरो, देराउरि संपत्तु ॥ ९ ॥
सिरि तरुणप्पहु आयरिउ, नाण चरण आधारु ।
सु पहुचन्दि पुण विन्नवए, कर जोड़वि हरिपालु ॥१०॥
पय ठवणुछव जुगवरह, काराविसु वहु रंगि ।
ताम सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अंगि ॥११॥
कुंकुवत्रिय पाट ठवण, दस दिसि संघ हरेसु ।
सयल संघु मिलि आवियउ, वछरि करइ पवेसु ॥१२॥

पुहवि पयडु खीमड कुलहि, लखमीधरु सुविचारु ।

तसु नन्दण आंबउ पवरो, दीण दुहिय साधारु ॥ १३ ॥

तासु घरणि कीकी उयरे, रायहुंसु अवयरिउ ।

त पदमसूरि कुल कमलु रवे, बहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥

विक्कम निव संवछरिण, तेरह सइ नऊ एहिं ।

जिट्ठि मासि सिय छट्ठि तहि, सुह दिणि ससिवारेहिं ॥१५॥

आदि जिणेसर वर भुवणि, ठविय नन्दि सुविसाल ।

धय पडाग तोरण कलिय, चउदिसि वंदुरवाल ॥ १६ ॥

सिरि तरुणप्पह सूरि वरो, सरसइ कंठाभरणु ।

सुगुरु वयणि पट्टहि ठविउ, पदमसूरि ति मुणिरयणु ॥१७॥

जुगपहाणु जिणपदम सूरे, नामु ठविउ सुपवित्त ।

आणंदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ घत्ता ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिसि, संघ अपारू ।

देराउरि वर नयरि तुर सद्दि गज्जंति अंबरु ।

नच्चंतिय वर रमणि ठामि ठामि पिखणय सुन्दर

पय ठवणुछवि जुगवरह विहसिउ मग्गण लोउ

जय जय सद्दु समुछलिउ तिहुअणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥

धन्नु सुवासरु आजु, धन्नु एसु मुहुत्त वरो ।

अभिनव पुनम चन्दु, महिमंडलि उदयउ सुगुरु ॥ २० ॥

तिहुयणि जय जय कारू, पूरिउ महियलु तूर रवे ।

घणु वरिसइ वसुधार, नर नारिय अइ ।वविह परे ॥२१॥

संघ महिम गुरु पूय, गुरुयाणंदहि कारवए।
साहम्मिय घण रंगि, सम्माणइ नव नविय परे ॥ २२ ॥

वर वत्थाभरणेण, पूरिय मग्गण दीण जण।
धवलइ भुवणु जसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिइम ॥ २३ ॥

नाचइ अवलीय बाल, पंच सबद वाजहि सुपरे।
घरि घरि मंगलचार, घरि घरि गूडिय ऊभविय ॥ २४ ॥

उदयउ कलि अकलंकु, पाट तिलकु जिणकुशल सूरे।
जिण सासणि मायंडू. जयवन्तउ जिणपदम सूरे ॥ २५ ॥

जिम तारायणि चन्दु, सहस नयण उत्तिमु सुरह।
चिंतामणि रयणाह, तिम सुहगुरु गुरुयउ गुणह ॥ २६ ॥

नवरस देसण वाणि, सवणंजलि जे नर पियहि।
मणुय जम्मु संसारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥२७॥

जाम गयण ससि सूर, धरणि जाम थिरु मेरु गिरि।
विहि संघह संजत्तु, ताम जयउ जिणपदम सूरे ॥ २८ ॥

इहु पय ठवणह रासु, भाव भगति जे नर दियहि।
ताह होइ सिव वास, "सारमुत्ति" मुणि इम भणइ ॥२९॥

॥ इति श्रीजिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास ॥

खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय

सो गुरु सुगुरु जु छविह जीव अप्पण सम जाणइ।
सो गुरु सुगुरु जु सच्चरूव सिद्धंत वखाणइ।
सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मल परिपालइ।
सो गुरु सुगुरु जु दव्व संग विसम.सम भणि टालइ।
सो वेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा करइ।
गुणवंत सुगुरु भो भवियणह, पर तारइ अप्पण तरइ ॥ १ ॥
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु कूड़ भणिज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु चोरी किज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ परत्थी न रमिज्जइ।
सो धम्म रम्म जो गुण सहिय, दान सील तव भाव मउ।
भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव आलि म नीगमउ ॥२॥
सिरि वद्धमाण तित्थे जुगवर, सोहम्म सामि वंसंमि।
सुविहिय चूडामणि मुणिणो, खरतर गुरुणो थुणस्सामि ॥३॥
सिरि उज्जोयण वद्धमाण सिरि सूरि जिणेसर।
सिरि जिनचंद-मुणिंद? तिलउ[1] सिरि अभय गणेसर।

---

1 निलउ

जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचन्द नमिज्जइ।
जिणवय[2] जिणेसर जिणप्रबोह जिणचंद थुणिज्जइ।
जिणकुशल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी[3] जिणचंद गुरु।
जिणउदय[4] पट्टि जिणराजवर, संपय सिरि जिणभद्दगुरु ॥४॥

अग्यारह सइ सतसठइ जिणवल्लह पद दिद्धउ।
इग्यारह गुणहत्तरइ तहइ जिणदत्त पसिद्धउ।
बारह पंचग्गलइ तहवि जिणचन्द मुणीसरु।
बारइ तेवीसइ सहिय जिणपत्ति जईसरु।
जोगीस जिणेसर सूरि गुरु, बारह अठहत्तरि वरसि।
जिणपबोह गच्छाह वइ, तेरह इगतीसा वरसि ॥ ५ ॥

तेरह इगताला वरसि पट्ट जिणचन्दहु लद्धउ।
तेरहसय सत्तहत्तरइ सहिय जिणकुशल पसिद्धउ।
तेरह नउया एम जाणि जिणपउम गणीसरु।
लद्ध नाम जिनलब्ध सूरि चहदय सय वछरि।
जिणचन्द सूरि गच्छह तिलउ, चउदह सय छडोत्तरइ।
जिणउदयसूरि उदयवंतपहु, सय चौउदह पनरोत्तरइ ॥ ६ ॥

अग्यारह सतसठइ जेण वल्लह पद दिद्धउं।
आसाढ़ रिय छट्ठि चित्तकोटहि सुपसिद्धउ।
किसण छट्ठि वइसाख इग्यारह गुणहत्तरि।
सूरि राउ जिणदत्त ठविय चित्तउड़ह उप्परि।

---

२ वइ, ३ लब्धि, ४ सूरि।

जिणचन्दसूरि वइसाखयइ, सुद्ध छट्ठि विक्कमपुरहि।
जयवंत हुउ जिण सासणहि, सय बारह पंचत्तरहि ॥ ७ ॥
बव्वेरइ जिणपत्तिसूरि बारह तेवीसइ।
कत्तिय सिय तेरसिहि पट्ट जयवंतउ दीसइ।
माह छट्ठि जालउरि सुद्धतहि ठविय जिणेसर।
बारह अठइत्तरइ रुप लावन्न मणोहर॥
जिणपबोह सूरि आसोज पंचमि, जालउरय भयउ।
इकतीस वरसि अनुतरसइ, पट्ट तरु इणि परि लयउ ॥ ८ ॥
तेरह सय इगताल सुगुरु जिणचन्द सुणिज्जय।
वयसाखह सिय तीय नयरि जालउरि थुणज्जय॥
तेरह सय सत्तहत्तरइ सूरि जिणकुसल पसिद्धउ।
जिट्ठ कसिण इग्यारसहि पट्टु अणहिलपुरि दिद्धउ॥
जिणपद्मसूरि तेहर (रह) नवइ, जिट्ठ मासि उच्छव भयउ।
तह सुद्ध छठि देराउरहि, सयल संघ आणंदयउ ॥ ९ ॥
सय चउदह जिण लब्धि सूरि पट्टहि सुपसिद्धउ।
आसाढ़ह वदि पडवि तहवि पट्टागम किद्धउ॥
तासु पट्टि इहु सुगुरु ठविय चउदह सय छडोत्तरि।
जेसलमेरह माह दसमि सुद्धइ सुह वासरि॥
नर नारि ताह मंगल करइ, जिण सासणि उछव भयउ।
जिणचन्द सूरि परिवार सउं, सयल संघ अणुदिणु जयउ ॥१०॥
खंभ नयरि मझारि चउद पनरोतर वरसहि।
दियइ मंतु आयरिय इंद आणंदिय सग्गहि॥

अजितनाथ वर भवण नंदि मंडिय गुरु वत्थिरि ।
सयल संघ वहू परि मिलिय रलिय पूरिय मनभिंतरि ॥
जिण कुशल सूरि सीसह तिलउ, जिणचन्दह पट्टुद्धरणु ।
जिणचंदसूरि भवियह नमउ, सयल संघ वंछिय करणु ॥११॥
गुण गण वेय मयंक वरसि फग्गुण वदि छट्ठहि ।
अणहिल्पुरि वरि नंदि ठविय संतीसर दिट्ठिहि ॥
सिरि लोयआयरिय मंतु अप्पिय सुमुहुत्तहि ।
सिरि जिणउदय मुणिंद पट्ट उद्धरिय धरित्तहि ॥
छतीस गुणावलि परिवरिय, चन्द गच्छ उज्जोय करु ।
जिणराजसूरि गुरु जगि जयउ, सयल संघ आणंदयरु ॥१२॥
पण सग वेय मयंक[1] वरसि माहह छण वासरि ।
भाणुसल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि ॥
नंदि ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचन्द गणहरि ।
सूरि मंतु जसु दिद्ध[2] किद्ध मंगलु विवहु[3] प्परि ॥
जिणराजसूरि पट्टह तिलउ, जिणसासण उज्जोयकरु ।
जा चन्द सूरि ता जगि जयउ, सिरि जिणभद्द मुणिंद वरु ॥१३॥
मंत मज्झि नवकार सार नाणह धुरि केवल ।
देव मज्झि अरिहन्त सव्व फुल्लह धुरि उप्पलु ॥
रुख मज्झि वर कप्परुख संघह धुरि मुणिवर ।
पखि मज्झि जिम राजहंस पव्वय धुरि मंदिर ॥
जिणराजसूरि पट्टुद्धरण, भविय लोय पडिबोहयर ।
तिम सयल सूरि चूडारयण, जिणभद्दप्पहु जुग पवर ॥१४॥

---

१ पुव्वय २ दिट्ठ ३ विवह

मंगल सिरि अरिहन्त देव, मंगल सिरि सिद्धह ।
मंगल सिरि जुगपवर सूरि, मंगल उवझायह ॥
मंगल सुविहिय सव्व साहु, मंगल जिणधम्मह ।
मङ्गलु विहरइ सव्व सङ्घ, मङ्गल सन्नाणह ॥
सुयएवि होइ मङ्गलु अमलु, मङ्गलु जिण सासण सुरह ।
वर सीसह जिणवय सुह गुरुह, मङ्गल सूरि जिणेसरह ॥१५॥
माल्हू साख सिंगार साह रतनिग कुलमंडणु ।
झूदाउत सुख संसि पुहवि धारलदे नंदणु ॥
चउदृह सय पनरेतिरइ कसिण आसाढ़ह तेरसि ।
पट्ट महोच्छव कियउ साह रतनागर वरसि ॥
खरतरह गच्छि उज्जोय करु, जिणचन्द सूरि पट्टु धरणु ।
जिणउदय सूरि नंदउ सुपहु, विहिसंघह मङ्गल करणु ॥१६॥
जिम जलहरंमि मोर जिहा वसंतमि कोकिला हुंती ।
सूरउग्गमणे कमलु तह भविया तुह आगमणे ॥
जिम जलहर आगमणि मोर[1] हरसिय मण नच्चइ ।
जिम दिणियर उग्गमणि कमल वणसिरि सिरि विकसइ ॥
ससिहर संगम जेम सयल सायरू जल विकसइ ।
जिम वसंति महियलि हंसंति कोयल मइ मच्चइ ॥
तिम सूरि राउ जिनउदय गुरु, पट्टाहिव रसि (?वि) उक्कसिय ।
जिनराजसूरि गुरुदंसणहि भविय नयण मण उल्हसिय ॥१७॥

---

१ देहलइ

वासिग उप्परि धरणि धरणि उप्परि जिम गिरिवर।
गिरिवर उप्परि मेह मेहु उप्परि रवि ससिहर ॥
ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर[1] वर।
इंदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पंचुत्तर ॥
सव्वट्ठसिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुक्ख हलि।
तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरहिं उप्परि इत्थ कलि ॥१८॥

कुसल वड़ो संसार, कुसल सज्जण जण चाहइ।
कुसलइ मइगल वारि लछि कुसलहि घरि आवइ।
कुसलहि घण वरसंति कुसलि धण धन रवन्नउ।
कुसलहि घोड[2]घट्टि कुसलि पहिरिय सुवन्नउ ॥
एरिसउ नाम सुह गुरु तणउ, कुसलहि जग रलियामणउ।
जिण कुसल सूरि नाम ग्रहणि, घरि[3]घरि होइ वधामणउ ॥१९॥

दस सय चउवीसेहि नयरि पट्टणि अणहिलपुरि।
हूयउ वाद सुविहतह चेइवासी सउं बहु परि ॥
दुल्लभ नरवइ सभा समुखि जिण हेलइ जित्तउ।
चित्तवास उत्थप्पिय देस गुज्जरह वदित्तउ।
सुविहित्त गछि खरतर विरुद, दुल्लभ नरवइ तहि दियइ।
सिरि वद्धमाण पट्टह तिलउ, जिणेसर सूरि गुरु गहगहइ ॥२०॥

रवि किरणेहू वलग्गि चडिय अट्ठावय तित्थहि।
नियं २ वन्न पमाण बिंब वंदिय जिण भत्तिहि।

---

१ सुप्परि २ घोडाथट्ट ३ करि

पनरह सय तापस पबोह दिखिय जिण सत्तिहि ।
पारावइ इग पत्ति सव्व खीरह घिय खंडहि ॥
अखीण महाणसि लद्धिवर, गोइम सामिय गुण तिलउ ।
जसु नामिण सिज्झइ कज्ज सवि, सो झायउ तिहुयण तिलउ ॥२१॥
सो जयउ जेण वहियं पंचमि (घाउ) चउत्थिपजूसरण ।
पख चउदसि जाया नम्मविया कालकाइरियो ॥
कालिकसूरि मुणिंद जयउ तिहुअण मण रंजण ।
उज्जेणो गदभिल्ल राय मूलह निक्कंदण ॥
सरसइ साहुणि कज्जि सिघ लंछण जिणि रखिय ।
सोहम्माइवइंद सयल आउखउ अखिय ॥
मरहट्ठदेसि पयठाणपुरि, सालवाहण अवरोहपर ।
सो कालिगसूरि संघह जयउ, चउत्थि पजूसरण विहिय धरि ॥२२॥
जिणदत्त नंदउ सुपहु जो भारहंमि जुगपवरो ।
अंबाएवि पसाया, विन्नाउ नागदेवेण ॥ १ ॥
नागदेव वर सावएण उर्ज्जित[1] चडेविणु ।
पुछिय जुगवर अंब एवि उववास करे विणु ॥
तसु[2] सत्ति तुट्ठाय तीय, करि अखरि लिखिया ।
भणिउ [3]जवाईय पम्ह सय [4], जुगपवर सुधम्मिय ॥
भमिऊण पहवि अणहिलपुरि, जुगपहाण तिणि जाणियउ ।
जिणदत्तसूरि नंदउ सुपहु, अम्बाएवि वखाणियउ ॥२३॥
गह धम्मो देव सिसी फुग्गण कन्नाय च (उ)दसी दिवसे ।
पंडिय वजयाणंदो निज्जणिय "अभयतिलकेण" ॥ १ ॥

---

१ उज्जित चंडेविणु २ तासु ३ छवाइय ४ सेय

पाणि तणइ विवादि रज्ज जयसिंघ नरिंदह ।
उज्जेणी वर नयरि भुवणि पहु संती जिणंदह ।
जिणवल्लभ जिणदत्त सूरि जिणचन्द जईसरु ।
रंजिय जिणवय सूरि धरह सिरि सूरि जिणेसर ॥
ता ? उन्हउं सीयलु जयह जलु, फासूय थप्पिय विवहप्परि ।
निज्जिणिउ विजयाणंद ति(लिः)हि, अभयतिलकि चउपट्टि धरि ॥२४॥
रयणि रमन रमणि पवेसु न्हवणु नहु निसहि
जिणेसर नं दिन दोसा समय वलि न सव्वरिय विसरुह ।
नहु जामणहि पवट्ठरत्ति रहु भमइ नभमणह ।
नहु विहारि वखाणु जत्त तुगी भरि समणह ॥
भवियणहु जहिनइ त्तिय अवहि, तह सुयंमि धुयरय करउ ।
तरु मोहं मूल मूलण गयह, जिणवल्लह पय अणुसरउ ॥२५॥
जिणदत्त सूरि मंगलु मंगलु, जिणचन्द्रसूरि रायस्स ।
जिणवय सूरि जिणेसर, मंगलु तह वद्धमाणस्स ॥ १ ॥
वद्धमाण घणगुणनिहाण मंगलु कलि अमिलह ।
सुगुरु जिणेसर सूरि वसहि पयडण धुरि धवलह ।
मंगलु पहु जिणचन्द अभयदेवह जिणवल्लह ।
मंगलु गुरु जिणदत्त सूरि मंगलु जिणचन्दह ॥
जिणपत्ति सूरि मंगलु अमलु, जास सुजस पसरिय धरह ।
चउविह सुसंघ संरुलह कवि, मंगल सूरि जिणेसरह ॥२६॥
कहस चन्द्र निम्मलह कहस तारायण निम्मल ।
कहस सुपवित्त कहस बगुलउ अय उज्जल ॥

कहस नीर सुरसरीय कहस वाहलोय पवित्तिय ।
पदमराग कह गुरुय कहस पघरिय रंगिय ॥
जिणपदम सूरि पट्टु पट्टुधर, अमिय वाणि देसण वरिस ।
तुडि कर सुजोह किनगलि पडिसि, जिनलब्ध सूरि गणहरसरसु॥२७॥
एने बेरि खज्जूरि जतइ सिरिविडि करि भखिय ।
एन अंब अम्बलिय दख दाडिम जं चखिय ।
एन जंब जंवूयह सयल पिप्पल जं असियह ।
बडआरू य उबरन एय एय पसर जबसिय ॥
पउमप्पह नारिंग नह सु नयनिमल कोमल महूय ।
जिणपत्ति सूरि नालियर इह, अररि कीर वंच भंजेय तुय ॥२८॥
जिम नसि सोहइ चंद जेम कज्जलु तरुलछहि ।
हंस जेम सुरवरहि पुरिस सोहइ जिम लछिहि ।
कंचणुं जिम हीरेहि जेम कुल सोहइ पुत्तहि ।
रमणि जेम भत्तार राउ सोहइ सामंतइ ।
सुर नाह जेम सोहइ सुरह, जगि सोहइ जिणधम्म भरु ।
आयरिय मझि सिंहासणहि, तिम सोहइ जिणचन्द गुरु ॥२९॥
दसणभद्द नरनाह वीर आगमि आणंदिय ।
पभणइ वंदिसु तेम जेम केणावि न वंदिय ।
रह सज्जिय गय गुडिय तुरिय पखरिय पलाणिय ।
सुखासण सय पंच वडवि चल्ल धितिहि राणिय ॥
बहु छत्त चमर परवारि सउं, जाम सपत्त समोसरणि ।
ताम इंद तसु मणु मणवि, अयरावइ आदसइ मणि ॥३०॥

इंद वयणि गय गुडिर सहस चउसट्ठि वेउव्विय ।
वारुत्तर सय पंच तीह इक्कह मुह किय ।
मुहि मुहि किय अड दंत दंतहि दंतहि अड वाविय ।
वावि वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न(?ना)विय ॥
बत्तास वद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नच्चइ रलिय ।
इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मंउ गउ(?य) गलिय ॥३१॥
दसणभद्द चिंतेय अहह मइ सुकिय न किद्धउ ।
तउ मनि धरि संवेगि झत्ति तणि संयमु लिद्धउ ॥
वीरु पासि सु ज जाइ जामि मुणिराउ वइट्ठउ ।
ताम भत्ति सुरराय नमिय सो गुणहि गरट्ठिउ ॥
भणय इंदु तय जतु मुणिहु, उहारिय निब्भंत मइ ।
जं करउं विन्नाण आणग थुणि, मइ नि होइ संजम किमइ ॥३२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथाएँ ॥

अमरु त जिणवरु गिर त मेरु निसियरु तदसासणु,
तरु त अमरतरु धन त धनु महता पंचाणणु ।
गढ त लंक विसहर त सेसु गह गुरुय त दिवायरु,
अवल त द्रूयमणि नइ त गंग जल बहुल त सायरु ।
जिणभुवण त नंदीसर भणउ, तुंगत्तणि त्तापरि गयणु,
पुणि राउत जगि जिणपत्ति गुरु सूरि मउड़ चूड़ारयणु ॥१७॥
जिम तरु सुरतरू महि रयण मझिहिं चिंतामणि,
धेणु मझि जिम कामधेणु गह मझि दिवामणि ।

उडगण सऊहिं वंदु इंदु जिम सग्गि पसिद्धउ,
गिरवर मज्झिहिं मेरु राउ जिम रह निरुत्तउ ।
तिम एह भूरि सूरिहिं पवरु जिणपबोहसूरि सीसवरु,
जिणचंदसूरि भवियहु नमहु, पहवि पसिद्धउ जुगपवरु ॥१८॥
जिण सासण वर रज्जि चंद गछिहिं समरंगणि,
वरण तुरंगमि चडवि खंतिक्खर खग्गु गहेविणु ।
जिण आणा सिरिसिरकु सीलि संनाहु सुसज्जिउ,
पंच महव्वय राय सबल मुणिपत्ति अगंजिउ ।
एरिसउ सुहडु जिनकुसल सूरि, पिखेविण रहरियतणु ।
अणभिडिउ मुडिउ मुणिपय पडिउ मयणमाणु मिल्हेवि पुण ॥१९॥
उत्तर दिसि भद्दवइ मासि जिम गज्जइ जलहरु,
जिम हत्थी गडयडइ जेम किन्नरि सरु मणहरु ।
सायरु जिम कल्लोल करइ जिम सीह गुंजारइ,
जिम फुल्लिय सहयार सिहरि कोइल टहकारइ ।
सघोस घंट जिण जम्मक्खणि, वज्जंतिय जिम त्रहत्रहइ,
जिणपद्म सूरि सिद्धंत तिम, वखाणंतउ गहगहइ ॥ २१ ॥
जिम अन्तर गोइक दुद्धि अंतरु मणि सुरमणि,
जिम अंतरु सुरतरु पलास जिम जंबुय केसरि ।
जिम अंतरु बग रायहंस जिम दीवय दिणयर,
जिम अंतरू गो कामधेण जिम अंत(रु) सुरेसर,
जिणपद्म सूरि तिम (अ)न्नगुरु, एवड अंतरू भविय मुणि ।
खरतरह गछि मुणवर तिलउ इथु जीह किम सकउ थुणि ॥२२॥

नवलख कुलि धणसोहनंदणु सुप्रसिद्धउ,
खेताहि तिय कुखि जाउ वहु गुणह समिद्धउ।
वालकालि निज्जणवि मोह संजम सिरि रत्तउ,
गोयम चरिय पयास करणु इणि कालि निरुत्तउ।
जिणपदम सूरि पटटुद्धरणु, वयरसाह उन्नति करु।
जिनलब्धिसूरि भवियहु नमहु, चंदगछि मुणि जुगपवरु ॥२३॥
उदय वडउ संसारि उदय सुरवर नर नंदय,
उदय कितहु गह गयणि उदय सहसकर वंदय।
उदय लगी सवि कज्ज रज्ज सिझंत प्रमाणइ,
उदउ अनुपम अचल उदय वलि वलि वखाणइ।
धण धणय पुत्त परियण सयल, उदय(ल)गी जस वित्थरइ।
जिणउदय सूरि इणि कारणिहिं, उदउ सयल संघइ करइ ॥२४॥
जिम चिंतामणि रयण मझि उत्तम सलहिज्जइ,
जिम कणयाचल गिरिह मझि किरि धुरहि ठविज्जइ।
जिम गंगाजल जलइ मझि सुपवित्त भणिज्जइ,
जिम सोह गह वत्थु मझि ससहरु वन्निज्जइ।
जिम तरुह मझि वंछित्त करु, सुरतरु महिमा महमहइ।
जिम सूरि मंझि जिणभद्दसूरि, जुगपहाण गुरु गहगहइ ॥२७॥
जिणि उम्मूलिय मोहजाल सुविसाल पयंडिहिं,
जिणि सुजाणि किवाणि मयणु किउ खंडो खंडिहि।
जसु अगाइ मइ कोह लोह भड किमिहि न मंडिहि,

गय जिम जिणि भव रुक्ख भग्ग तव सुंडा दंडिहि ।

सो गछनाह जिणभद्दगुरु, वंछिय पूरण कप्पतरू,

कल्लाण वल्लि नवधार धरु, वसह मज्झि जयवंत चिरु ॥२८॥

जिणि दिणि दुल्लभ सभा सखर खरतर जे तिण दिणि,

पडिबोहिय चामुण्ड फुडवि खरतर जे तिणि दिणि ।

जिणीय वाद छट्ठमइ मासि फुड खरतर तिणिदिणि,

....

रंजिय नरवंम नरिंद जिहिं, धारनयर स्युं नरवरा ।

जिणभद्रसूरि ते तुझ सवि, अखिल खोणि खरतर खरा ॥३१॥

वशाखि (षि) का मदांति सांख्य सोगत नैयायक,

मीमांसक मुख मुखरवादि गुरु गर्व निवारक ।

उत्सूत्राविधि मार्ग्ग वर्ग्ग देशक प्रति व्रजा,

करटि घटांकुश कुल विशाल सौधोक्कल सुध्वज ।

जन नयन सुधाकर रुचिरकर, मदन महीधर कुलिशधर,

जय सूरि मुकुट गत कपट भट, गुरु जिणभद्द युगपवर ॥३२॥

सयल गरूय गुण गण गणिंद गण सीस मउड़ मणि,

नियं वयणिहिं पर वादि निद्धड़इ सुतक्खणि ।

सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ,

भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ ।

पुरि नयरि देसि गामागरहिं, विहरतउ सो होइ सुगुरु ।

सो जयउ जिणेसर सासणिहिं, श्रीजिणभद्र मुणिंदवरु ॥३३॥

शासन प्रभावक श्री जिनभद्र सूरिजीकी हस्तलिपि

(सं० १५११ लि० योगविधिका अन्तिम पत्र)

ताम तिमिर धरि फुरइ जाम दिणयरु नहु उग्गइ ।
तां मचगल मयमत्त जाम केसरीय न लग्गइ ।
ताम चिडां चिगचिगं जां न सिचाणउ दुक्कइ ।
तां गज्जइ घणु गयणि जांम नहु पवण फुरक्कइ ।
तिम सयल वादि निय निय घरिहिं, तांम गव्व पव्वइ चड़इं ।
जिनभद्र सूरि सुह गुरु तणीय, हथु न जां कन्निहिं पडइं ॥३४॥

घर पुर नयर निवासि जेय निय गव्व पयासइं ।
बोलावंता बहुय बिरुद नहु किंपि विमासइं ।
पहुवि पयड पमाण लखण वर वखाणइं ।
वादि विवाद विनोदि संक निय चित्त न याणइं ।
एरिस जि केवि भुवणिहिं भलइं, वादी मयंगल गउयड़इं ।
जिनभद्र सूरि केसरि डरिंहिं त धुज्जवि धरणिहिं पड़इं ॥३५॥

नाग कुमर नरनाह सुरनाहा जेण तिहुयणि जिन्ना ।
तिहुयण सल्लविरुद्दो विव खाउ एस भूवलए १
भूवलयंमि पसिद्ध सिद्ध जो संकरु भणियउ ।
गोरी पयतलि रुलिय सोय इणि वाणिहि हणियउ ।
दानव मानव असुर मरि हेलइ जो लिद्धउ ।
सो नारायण सोल सहस गोपी वसि किद्धउ ।
हिव एह अधिक भडि वाउलउ, न मुणिलोयहं कलिहिं ।
जिणभद्रसूरि इणि कारणिहि, मयण मल्लु जित्तउ बलिहिं ।३६।

दुर्घट घटना घटित कुटिल कपटागम सूत्कट ।
वावाटोत्कट करटि करट पाटन सिंहोद्भट ।
न विट लंपट मुक्त निकट विन तारि भट स्फट,
हाटक सुथट किरीट कोटि घृस्ट क्रम नख तर जट,
विस्टप वांछित कामघट विघडित दुष्ट घट प्रकट
जिनभद्र सूरि गुरुवर किकट, सितपटसिरोमुकुट ॥३७॥

॥ इति समस्तदेव गुरु षट्पदानि ॥

॥ पहराज कवि कृत ॥

॥ जिनोदयसूरि गुण वर्णन ॥

किणि गुणि सोववित्तवणं, सिद्धिहिका भंति तुम्ह हो मुणिणं।
संसार फेरि डहणं, दिखा वालाणए गहणं ॥१॥
वालत्तणि वय गहण सुपुणि मुणिवर संभालियउ।
अट्ठ कम्म निज्जणवि गमण दुग्ग गइ टालियउ॥
उग्गु तवणु जिण तवउ वितु संमतहि रहिउ।
संजम फरिसु पहाणु मयण समरंगणि वहिउ।
जिणउदय सूरि पुय पय नमहि, ति नर मुक्ति रमणी रमइ।
"पहराज" भणइ तुइ विन्नवउं, अजउं भवणु किणि गुणि तवहि॥१॥
लीलयति सिद्धि पावहि जे नर पणमंति एरिसा सुगुरु।
मुणिवरह वित्त कलिउ नहु मन्नइ अन्न तियस्स ॥१॥
मुणिवर मनुमय कलिउ भत्ति जिणवरह मनावइ
अवर तरुणि नहु गमइ सिद्धिरमणि इह भावइ।
करइ तवणि वहु भंगि रंगि आगम वखाणइ।
अवुह जीव बोहंत लेत सुमत्थह नाणय॥
जिणउदय सूरि गच्छाहवइ, सुख मग्गि धोरि सुपह।
"पहराज" भणइ सुपसाउ करि, सिव मारग दिखाल महु ॥२॥
सुगुरु शिव मग्ग जुय क्रिय कला विसारह
मंस भखण परिहरउ सुरा सिउं भेउ निवारइ।
वेसन रख कउ पंघ पाउ पारद्धहि अणंतउ।

चोरी म करि अयाण रखि दुग्गय जिउ जंतउ ॥
पर रमणि मिल्हि सत्तय वसणि, जीव दय दृढ संग्रहयउ ।
जिणउदयसूरि सुहगुरु नमहु, सिद्धि रमणि लीलइ लहउ ॥३॥
सुगुरु सिद्धि इम भणइ कित्ति तूय तणी थुणिज्जइ ।
सुगुरु देव इम भणय लीह गणहर तुय दिज्जय ।
सुगुरु सुविह गण वित्ति अचलु तुय नामहि लग्गउ ।
तुहत पढइ सिद्धंत सुगुरु जिनभत्ति विलग्गउ ॥
जिणउदय सूरि जग जुगपवर, तुय गुण वनउं सहसि फणि ।
एरसउ सुगुरु हो भवियणह, कहय सिद्धि णभन्तमणि ॥४॥
कवणि कवणि गुणि थुणउं कवणि किणि भेय वखाणउ ।
थूलभद्द तुह सील लब्धि गोयम तुह जाणउ ।
पाव पंक मउ मलिउ दलिउ कन्दप्प निरुत्तउ ।
तुह मुनिवर सिरि तिलउ भविय कप्पयरु पहुत्तउ ॥
जिणउदयसूरि मणहर रयण, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
"पहुराज" भणइ इमजाणि करि, फल मनवंछिउ सुह करणु ॥५॥
फल मनवंछिउ होइ जि किवि तुइ नाम पयासय ।
तुझ नाम सुणि सुगुरु रोर दारिद पणासइ ।
नामगहणि तुय तणय सयल आवय उस्सासहि ।
.... ॥
जिणउदयसूरि गणहर रयणु, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
"पहुराज" भणइ इम जाणि करि, सयल संघ मंगलु करणु ॥६॥

श्रीजिनप्रभसूरि परम्परा
गुर्वावली

वंदे सुहंम सामिं, जंवू सामिं च पभवसूरिं च।
सिज्जंभव जसभद्दं, अज्जसंभूयं तहा वंदे ॥ १ ॥
तह भद्द बाहु सामिं च, थूलभद्दंजइ जिणवरिट्ठं।
अज्ज महइरि सूरिं, अज्ज सुहत्थिच वंदामि ॥ २ ॥
तह संति सूरि हरिभद्द सूरिं, संडिल्ल सूरि जुगपवरं।
अज्ज समुद्दं तह अज्ज मंगु, अज्ज धम्मं अहं वंदे ॥ ३ ॥
भद्दगुत्तं चं वइरं च, अज्जरखिय मुणिवरं।
अज्ज नंदिं च वंदामि, अज्ज नागहत्थिं तहा ॥ ४ ॥
रेवय खंडिल्ल हिमवंत, नाग उज्जोय सूरिणो वंदे।
गोविन्द भूइदिन्ने, लोहच्चिय दूस सूरीउ ॥ ५ ॥
उमासाइवायगे वंदे, वंदे जिणभद्द सूरिणो।
हरिभद्द सूरिणो वंदे, वंदेहिं देवसूरिंपि ॥ ६ ॥
तह नेमिचन्दसूरिं, उज्जोयण सूरि पज्जिइणो वंदे।
तह वद्धमाण सूरिं, सूरि सिरि जिणेसरं वंदे ॥ ७ ॥
जिणचन्द अभयसूसूरिं, सूरि जिण वल्लहं तहा वंदे।
जिणदत्तं जिणचंदं, जिणवइय जिणेसरं वंदे ॥ ८ ॥

संजम सरसइ निरुयंसु, सुणीण तित्थभर च (ध) रणं ।
सुगुरुं गणहररयणं, वंदे जिणसिंह सूरिमहं ॥ ६ ॥
जिणपह सूरि मुणिंदो, पयडिय नीसेस तिहुऊयणाणंदो ।
संपइ जिणवर सिरि, वद्धमाण तित्थं पभावेइ ॥१०॥
सिरि जिणपह सूरीणं, पट्टंमि पइट्ठि ओगुण गरिट्ठो ।
जयइ जिणदेव सूरी, निय पन्ना विजय सूरसूरी ॥११॥
जिणदेव सूरि पहोदय, गिरि चूडाविभूसणे भाणू ।
जिण मेरु सूरि सुगुरु, जयउ जए सयल विज्जनिहिं ॥१२॥
जिणहित सूरि मुणिंदो, तप्पजेरविय कुमुयवण चंदो ।
मयणकरि कुम विहडण, दुद्धरपंचाणणो जयउ ॥१३॥
सुगुरु परंपरा गाहा, कुलय मिणज्जो पढेइ पच्चूसे ।
सो लहइ मणोवंछिय, सिद्धिं सव्वंपिभव्वजणे ॥१४॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि छप्पय ॥

गयण थकी जिण कुलह आणि[१] ओघइ उत्तारी ।
कियो महिष स्युं[२] वाद सुण्यउ[३] नगरी नवबारी ॥
पातिसाह रंजियउ साथि[४] वड़ वृक्ष चलायउ ।
शत्रुंजय राइण सरिस[५], वरिस दुद्धइ झड़ ल्यायउ ॥
जिण दोरड़इ मुद्रिका प्रकट कीय, जिन प्रतिमा बुल्लिय वयण ।
जिणप्रभसूरि खरतर सुगच्छि, भरतक्षेत्र मंडिय रयण ॥१॥

॥ इति गुरावली गाथा कुलकं समाप्तम् ॥

---

१ नांखि, २ मुख, ३ नयर पिक्खइ, ४ दिल्लीपति सुरताण पूठि ५ सिहरि ।

खरतरगच्छ पट्टावली

प्रथम श्री(धवल) राग

धन[1] धन जिण (शासन?) पातग नाशन, त्रिभुवन गरुअउं गहगहए ।
जासु[2] तणउ जसुवाउ गंगाजल, निरमल महियले महमह[3] ए ॥१॥
श्रीवयरस्वामी गुरु अनुक्रमि चिहु दिसे, चंद्रकुल[4] चउपट जाणिइए ।
गच्छ चउरासीय माहि अति गरुअउ, खरतरगच्छ वक्खाणिइए ॥२॥

छंदः—

वखाणियइ गिरि मांहि गरुअउ, जेम मेरु महीधरो ।
मणि मांहि गिरूयउ जेम सुरमणि, जेम ग्रह गणि दिणयरो ॥
जिम देव दानव माहि गरुअ, गज्जए अमरेसरो ।
तिम सयल गच्छह मांहि गरुअउ, राजगच्छ सु खरतरो ॥३॥

राग देशाखः—

खरतरगच्छहिं खरउ ववहार, खरउ आचार मुनि आचरइ ए ।
खरउ सिद्धांत वखाणेइ सुहगुरु, खरउ विधि मारग वापरइ ए ॥ ४ ॥
तसु गच्छ[5] मण्डण पाप विहंडण, जे हुआ सुविहित सिरोमणि ए ।
श्री जयसागर गुरु उपदेसिहिं, गाइसु खरतर गच्छ धणी ए ॥ ५ ॥

---

१ श्रीजिनशासन २ ताछ ३ गहगहए ४ कुभवउपट ५ गछ

छंदः—

गुरु गच्छ धणी हुंउ हरखि गाइसु, प्रथम हरिभद्द सूरि गुरो ।
तसु वंसि क्रमि उदयउ मुणीसर, देवसूरि सुगणहरो ॥
सिरि नेमिचन्द मुणिंद सुंदर, पाट तसु उज्जयाल ए ।
सिरि सूरि उज्जोयण जईसर, पाव पंक पखालए ॥ ६ ॥

रागदेशाख छाया

आबुय ऊपरि मास छ सीम, साधिउ सूरिमंत्र लेइ (य) नीम ।
पायालह पहुतउ धरणिंदो, प्रगटियो वज्रमय आदिजिणंदो ॥ ७ ॥
मिथ्याती जे जोगी (य) जडिया, सुहगुरु अतिसइ ते सहुनडिया ।
जिणशासन हूउ जयवाउ,[1] विमल तगइ मनि आणंद जाउ ॥ ८ ॥
विमल सुवसहोय विमलि करावी (य),
जसु उवएसिहिं (य) त्रिभुवनि भावो ।
जाणि कि नंदीसर परसादो, परतखि देउल मिसि जसवादो ॥६॥

॥ छंदः ॥

जसुवाउ जसु उवएसि लीधउ, विमलवर मंतीसरे ।
कारविय निरुपम विमल वसही, गरुअगिरि आबू सिरे ॥
सिरि सूरि मंत्र प्रभाव प्रगटिय, सुविहित मग्ग दिवायरो ।
सिरि वद्धमाण मुणिंद नंदउ, सयल गुण रयणायरो ॥१०॥

॥ राग राजवलभः ॥

गूजर देसिहिं जाणियइ, पाटण अणहिलपुर नामी ए ।
राज करइ गजपति तिहां सिरि, दुल्लह नरवइ नामो ए ॥११॥
चउरासी मठपति तिहां, आचारिज छइ तिणि कालि ए ।
जिणवर मंदिरि ते वसइ, इक सुविहित मुनिवर टालि ए ॥१२॥

---

१ वाद ।

सुविहित नइ मठपति हुउ, ग (?रा)यंगणि वसिहि विवादू ए।
सूरि जिणेसरि पामिउ, जग देखत जय जयवादू ए ॥१३॥
दससय चउवीसहिं गए, उथापिउ चेइयवासू ए।
श्रीजिनशासनि थापिउ वसतिहिं, सुविहित मुनि(वर)वासू ए ॥१४॥
गुरू गुणि रंजिउ इम भणइ श्री मुखि दुल्लह नरनाहू ए।
इणि कलिकालिहि खरहरा, चारित्रधर एहजि साहू ए ॥१५॥

॥ छन्दः ॥

खरहरा चारित्रधर गुरु, एहु विरुद प्रकासिउ।
उथप्पिय चियवास[1] सुविहिय, संघ वसहि निवासिउ।
रजइउ जिणि राउ दुल्लह, जयउ सूरि जिणेसरो।
तसु पाटि सिरि जिणचन्द गणहर, भविय लोअ दिणेसरो ॥१६॥

॥ राग धन्याश्रीः ॥

श्रीजिन शासन उधरिउंए,
नव अंगए तणइ[2] वखानि, श्री अभयदेवसूरिजुगपवरो
प्रगटिऊ एथंभण पास, श्रीजयतिहुअणि जेणे गुरो ॥१७॥

॥ छन्दः ॥

गुरु गरुअ खरतर गच्छि उदयउ, अभयदेव गणेसरो।
जसु पायत्र वंदइ देवि पदमावती, धरण सुरेवरो ॥
निय वयण सीमंधर जिणेसर, जासु गुण वक्खाण ए।
किम मु सरीखउ मूढ़ ते गुरु, वरणवी जगि जाण ए ॥१८॥

---

१ उधरियपियवास २ थणइ।

जाणियइ सुविहित सिरोमणि ए।
तसु तण ए पाटि सिंगार, पुह विहिं "पिंडविशुद्धि" करो।
इणि जुगी ए एक जोगिंद, श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरो ॥१९॥

छंद:—

गुरु गुण तणउ भंडार गणहर, सयल संयम भर धरो।
वागडी देसि वखाणि जिणध्रम, दससहस श्रावक करो।
चीत्रउड ऊपरि देवि चामुंड, प्रसिद्ध जिणि प्रतिबोधिया।
तिणि सूरि जिण वल्लह जईसरि, कवण लोय न मोहिया ॥२०॥
श्रीजिनदत्त सूरि गुरु नमउ ए।
अम्बिका ए देवि आदेसि, जाणियइ त्रिहुं जुगे जुग प्रधान।
सयंभरी ए राय डइ जेहि, दीधउ श्रीजिनधर्म दान ॥२१॥

छंद:—

जिनधर्म दानिहि पनरसय मुनि, दीखिया जिण निज करे।
वखाण सुणिवा देव आवइ, सेव सारइ बहु परे॥
चउसट्ठि योगिणी नामि देवी, जासु आण न लंघ ए।
तसु गुरु तणइ सुपसाइ नंदउ, एहु खरतर संघ ए॥२२॥
श्रीजिनचंद सूरि नर रयण।
नरमणी ए जासु निलाडि, झलहलइ जेम गयणहिं दिणंदो।
तसु तणइ ए पाटि प्रचंड, श्रीसूरिजिनपति सूरिइंदो ॥२३॥

छंदः—

सिर सूरिंइन्द मुणिंद जिनपति, श्रीजिन[1] शासनि गज्ज ए।
छत्री वादइ जयपताका, विरुद जसु जगि छज्ज ए॥
अर्हंसि(जि)रि जिणेसर सूरि वंदउ, जिण प्रबोह मुनीसरो।
कलिकाल केवलि विरुद गणहर, तयणु जिणचंद सूरि गुरो॥२४॥

राग धन्याश्री भासः—

साहेलीए नयरि देरउरि सुरतरु, सुगुरु वर श्रीजिनकुशल सुरे।
साहेली ए थूभिहिं प्रणमइ तसुपय, भवियजन[2] भगति ऊांति सूरे।
साहेली ए तीह तणे जाइहि दोहग, दुरिअ दालिद दुहसयल दूरे।
साहेलीए तीह तणइ मंदिर विलसइ, संपति सय वरसु भरि पूरे॥२५॥

छंदः—

भरि पूरि आवइ सयल संपय, भविय लोयह नितु घरे।
जे थूभि श्री जिनकुसल सुह गुरु, पय नमइ देराउरे।
तसु पाटि सिरि जिणपदम गणहर, नमउ पुहवि प्रसिद्धउ।
"कूंचालि सरसती" विरुद पाटणि जासु संघहिं दिद्धउ॥२६॥
साहेली ए इणिगच्छि लब्धिहि गोयम गह गहइ श्रीजिनलब्धि सूरे।
साहेली ए चन्द्र गच्छे पूनिमचन्द जिम सोह ए श्रीजिनचंद सूरे॥
साहेली ए श्रीसंघ उदयकर चंदउ नदेन श्रीजिनउदय सूरे।
साहेली ए सूरि पुरंदर सुंदर गुरुअउ श्रीजिनराज सूरे॥२७॥

---

१ जैनपति २ जे

साहेली ए नितु नवतत्व वखाण ए जाण ए सयल सिद्धान्त सारो ।
साहेली ए मणहर रूपि अनोपम संजम निरमल गुण भंडारो ।
साहेली ए गोयम जंबु कि अभिनवउ अभिनवउ थूलभद्द वयर गुरि ।
साहेली ए संपइ[1] प्रणमउ गच्छपति श्रीजिनभद्रसूरि जुग पवरो ।२८।
साहुसाखह तिलउ बछराज साह मल्हारो ।
स्याणीय कुखंहि अवयरिउ छाजइ खरतर गच्छ भारो ।
साहेली ए संपय पणमउ गच्छपति श्रीजिनचन्द्र सूरि युगपवरो ।
दंसणि भवियण मोहए सोहइ सूरि गुणरयण धरो ।।२६।।

छंदः—

जुगवर तणा गुणरयण पूरी गरुअ एह गुरावली ।
श्रीसंघि भाविहिं सांभलो ती मन तणी पूरउ रली ।।
आराधतउ विधि खरतर सं........................ ।
इम भणइ भगतिहि सोमकुंजर जाम चंद दिणंदउ ।।३०।।
इति श्रीविधिपक्षालंकार श्रीखरतर गुरुणा गुर्वावली समाप्ता ।।

——*——

नोटः—श्रीजिनकृपाचन्द्र सूरि ज्ञानभण्डारस्य गुटकेमें २६ वीं गाथा अतिरिक्त मिली है ।

ज्ञात होता है उस प्रतिके लिखने के समय जिनचन्द्रसूरि विद्यमान होंगे अतः यह १ गाथा उसीमें वृद्धि कर दी है।

१ दंदइ गणधर गरूयउ

श्रीभावप्रभसूरि गीतम्
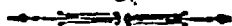
समरवि सुहगुरु पाय अहे, ज(सु) दरसणि मनु उल्हसइ ए।
थुणीयइ मुणिवर राय अहे, कलियुगे जसु महिमा वसइ ए ॥१॥
निरमल निय जस पूरि अहे, चन्दन वन जिम महिमहइ ए।
श्रीय भावप्रभसूरि अहे, श्रीयखरतरगछे गहगहइ ए ॥ २ ॥
अमिय समाणीय वाणि अहे, नवरस देसण जो करइ ए।
समय विवेक सुजाणि अहे, समकित रयण सो मनि धरइए ॥३॥
पंच महव्वयधार अहे, पंच विषय परि गंजणू ए।
पालय पंच आचार अहे, पंचमि (ज्ञानत्व) भंजणू ए ॥ ४ ॥
भंजणु मोह नरिंदो अहे, मयणु महाभडो वसि कीउ ए।
वसि कीउ कोहु गयंदो अहे, मानु पंचाननु वन (स?)कीउ ए ॥५॥
चमकीउ दलिउ कषाय अहे, लोभ भुजंगमु निरुजणिउ ए।
निजणिउ अरि रागाय अहे, सयल सुरा सुरे सेवीयउ ए ॥ ६ ॥
सेवइ जसु पय साथ अहे, पंकय महूअर रुण उणइ ए।
धन धनु जे नरनारि अहे, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइ ए ॥७॥
मंगल लछि विलास अहे, पूरइ ए वंछिय सुहकरू ए।
निरुवम उवसम वास अहे, रंजण भविअण मुणिवरू ए ॥ ८ ॥
नव रस देसग वाणि अहे, घण जिम गाजइ ए गुहिर सरे।
मयग दवानल वारि अहे, नागिहिं जलि वरिसइ सुखरे ॥ ६ ॥
विहरइ सुविही याचार अहे, कास कुसुम जसु निरमलउ ए।

माल्हूअ साख विशाल अहे, लूणिग कुलि महियलि तिलउ ए ॥१०॥
लब्धिहिं गोयम सामि अहे, सीयलिहिं साधु सुदरशनु ए ।
सव्वड़ साह मल्हार अहे, राजल देविय नंदनुं ए ॥११॥
निरमल गुण भंडारो अहे, श्रीय जिनराजसूरे शीस वरो ।
संयम सिरि उरि हारो अहे, सागरचन्द्रसूरे पाटु धरो ॥१२॥
सुमत्तणु-सुरतरु तेम अहे, सुकृत रसो भरि पूरीउ ए ।
गुणमणि रयणिहिं जेम अहे, लवणिम मंजरि अंकूरीउ ए ॥१३॥
दिणियर जिम सविकासो अहे, जस कीयरतिगुण विसतरीए ।
जगि जयवंतउ सूरे अहे, पूरव गुर सवि उद्धरी ए ॥१४॥
उद्धरिय धीरिम मे(रु) गिरि जिम, चन्द्रगछि मुख मंडणो ।
पंच समतिहिं त्रिहुं गुपिति गुपतउ, दुरित भवभय खंडणो ।
सिरि आइरिय मुवर कांति दिणियर, भविक कमल सविकासणो ।
जयवंतु श्रीय गुरु भावप्रभसूरि, जाम ससि गयणंगणो ॥१५॥

॥ इति श्रीमदाचार्याणां गीतम् ॥

श्रीरागि ढाल ॥ छ ॥

श्रीकल्याणचन्द्रगणि कृत

श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ

सरसति सरस वयण दे देवि, जिम गुरु गुण बोलिउं संखेवि ।
पीजइ अमोय रसायण विंदु, तहवि सरीरिइ हुइ गुण वृन्द ।१।
महि मंडण पयडउ धण रिद्धि, नयर महेवउ नर बहु बुद्धि ॥
ओसवंश अति घण तिणि ठाण, वसइ सुरद्रुम जिम धणदाण ।२।
तहि श्री संखवाल गुणवंत, उदयवंत साखा धनवंत ।
कोचर साह तणइ संतान, आपमल्ल देपा बहु मानि ॥ ३ ॥
सीलिहि सीता रुपइ रंभ, दान देइ न करइ मनि दंभ ॥
देप घरणी देवलदे नारि, पुत्त रयण तिणि जन्मा च्यारि ॥४॥
लखउ भादउ साह सुरंग, केल्हउ देल्हउ बंधव चंग ॥
धनद जेम धन्नवंत अनेक, धर्मकाजि जसु अति सविवेक ॥५॥
चउदह गुणपचासह जम्मु, दिखिउ देल्ह त्रेसठ्ठइ रंमु ॥
श्रीजिनवर्द्धन सूरिहि शास्त्र, कीर्तिराइ सीखविय सुपात्र ॥६॥
हिव वाणारीय पद सत्तरइ, पाठक पद असीयइ ऊधरइ ॥
तयणंतरि आयरिह मंतु, जोगि जाणि गुरि दीधउ मंतु ॥७॥
लखउ केल्हउ करइ विस्तारि, उछव जेसलमेर मंझारि ॥
श्रीजिनभद्रसूरि सत्ताणवइ, किया श्री कीर्तिरयण सूरिवइ ॥८॥
वादो मइंगल ता गड़ अड़इ, जां गुरु केसरि दृष्टि नव्व चड़इ ॥
जव फिरि अम्ह गुरु बोलइ बोल, वादी मूकइ मांन निटोल ॥९॥

जहि मस्तकि गुरु नियकरु ठवइ, तइ घरि नवनिद्धि संपद हवइ ।
सुह गुरु जेह भणावइ सीस, ते पंडित हुइ विस्वा वीस ॥१०॥
जिहां जिहां गुणवंता रहइ, तिहां श्रावक रिधिहि गहगहइ ॥
गाम नगर ते अविचल खेम, लबधिवंत जणिजइ एम ॥११॥
पनरह पणवीसइ वरसंमि, वइसाखा वदिदिण पंचमि ।
पंचवीस दिण अणसण पालि, सरगि पहुंता पाव पखालि ॥१२॥
रविजिम झगमगि झिगमिग करइ, नवइ तेज तनु अणसण धरइ ।
अतिसय जिम तित्थंकरतणा, गुरु अनुभवि हुया अतिघणा ॥१३॥
सुह गुरु अणसण सीधउं जांम, वीर विहारे देविहि ताम ।
झल हलंत दीवो पुण कीध, जडिय किमाडिहि लोक प्रसिद्धि ॥१४॥
जिम उदयाचलि उगउ भाणु, तिमपूरव दिसि प्रगट प्रमाणु ।
थापिउ थूभ सुनिश्चलजाण, श्री वीरमपुर उत्तम ठाणि ॥१५॥
श्रीखरतर गणि सुरतर राय, जहि सिरि किर्त्तिरयण सूरि पाय ।
आराहउ भवियणइकचित्ति, ते मण वंछित पामइ झत्ति ॥१६॥
चिन्तामणि जिम पूरइ आस, पूजइ जे मनि धरिय उल्लास ।
तिणि कारणि गुरु चरण त्रिकाल, सेवइ नर नारि भूपाल ॥१७॥
श्री कीर्त्तिरतन सूरिं चउपइ, प्रहउठी जे निश्चल थइ ।
भणइ गुणइ तिहि काज सरंति, "कल्याणचन्द्र" गणि भगतिभणंति ॥१८॥

॥ इति श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ ॥

सं० १६३७ वर्षे शाके १५८२ प्र० ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे षेष्टा तिथौ गुरुवासरे । श्रीमहिमावती मध्ये श्रीवृहत्खरतर गच्छे श्रीजिन चन्द्रसूरि विजयराज्ये संखवाल गोत्रीय संघभार धुरन्धर साहकेल्हात-त्पुत्रसा० धन्ना तत्पुत्रसा० वरसिंघ तत्पुत्र सा० कुवरा तत्पुत्र सा० नव्वा तत्पुत्र सा० सुरताण तत्पुत्रसा० खेतसीह भातृ साह चांपशी पुस्तिका करापिता पुत्र पुत्रादि चिरनंद्यात् । शुभं भवतु ।

[श्रीपूज्यजीके संग्रहस्थ गुटकाके पृ० ४२ से]

श्रीभक्तिलाभोपाध्याय कृत

॥ श्रीजिनहंससूरि गुरुगीतम् ॥

सरसति मति दिउ अम्ह अतिघणी, सरस सुकोमल वाणि
श्रीमज्जिनहंससूरिगुरुगाइसिउं, मन लीणउ गुण जाणि ॥१॥सर०
अति घणीयदियउ मति देव सरसति, सुगुरु वंदण जाईइ।
प्रहउठि श्रीजिनहंससूरि गुरु, भाव भगतिहिं गाईइ ॥२॥
पाट उत्सव लाख वेची (पिरोजी) कर, करमसिंह करावए।
गुरु ठामि ठामि विहार करता, आगरा जव आवए ॥३॥
तव हरखिउ डुंगरसी घणो, बंधव वली पामदत्त।
श्रीमाल चतुर नर जाणियइ, खरतर गुरुगुण रत्त ॥४॥
तव हरखिउ डुंगरसी करावइ, सुगुरु पइसारा तणी।
वहु परें सजाई सहु सुगज्यो, वात ए छे अति घणी ॥५॥
पाखरया हाथी पादसाह, सुगुरु साम्हो संचरइ।
गुरु पाय हेठइ कथीपानइ, पटोला वहु पाथरइ ॥६॥
पातसाह साहमो आविउ, उंबर खान वजीर।
लोक मिलिया पार न जाणियइ, मोरइ काच कपूर ॥७॥
आवीया साहमा पादसाह सवे वाजा वाजए।
जेण सरणाइ जल्लरि संख वाजइ, ससरिभ अंबर गाजए ॥८॥
मोति वधावइ गीत गावइ, पुण्य कलस धरइ सिरे।
सिंगारसारा सव नारी करइ, उच्छव घर घरे ॥९॥

रूपटंका सहित तंबोल दियइ, वेंचिउ वित्त अपार ।
इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिऔ जय जयकार ॥१०॥
तंबोल दिधउ सुजस लीधउ, इसी बात घणी सुणी ।
श्रीसिकन्दर बादशाह, वडइ दिल्लीनउ धणी ॥११॥
जिसी जिनप्रभसूरि किरामति, पादशाहे जणियइ ।
एथी सहु लोकमांही, घणुं घणुं वखाणीयइ ॥१२॥
दीवान मांहे तेडाविया, कीधी पूछ बहुत ।
देखाडी किरामती आपणि, गुरुया गुरु गुणवंत ॥१३॥
दीवान मांहे घोर तप नइ, जाप सुगुरु मन धरइ ।
जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि, योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
श्रीसिकंदर चित्त मानियउ, किरामत कांइ कही ।
पांचसइ बंदी बाखरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
बंदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
गुरु मोटा करम तणा धणी, जाणिउं इणउ इहनाणि ॥१६॥
बंदि छोडि मोटउ विरुदलाधउ, बादशाहे परखिया ।
श्रीपासनाह जिणंद तुट्ठउ, संघ सकलइ हरखीया ॥१७॥
श्रीभक्तिलाभ उवझाय बोलइ, भगति आणी अति घणी ।
श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्

श्री पद्ममन्दिर कवि कृत

॥ श्री देवतिलकोपाध्याय चौपई ॥

पास जिणेसर पय नमुं, निरुपम कमला कंद ।
सुगुरुथुणंता पामियइ, अविहड सुख आणंद ॥१॥
भारहवास अजोध्या ठाम, वाहड गिरि बहुधण अभिराम ।
चवदहसइ चम्माल प्रसिद्ध, निवसइ लोक घणा सुसमृद्ध ॥२॥
ओसवाल भणसाली वंश, निरमल उभय पक्ष ।
करमचंद सुहकरम निवास, तसुघरि जनम्या गुणह निवास॥३॥
तासु घरणि सोहण जाणियइ, सील सीत उपम आणीयइ ।
पनरहसइ तेत्रीसइ वास, तसु घरि जनम्या गुणह निवास ॥४॥
दीधउ जोसी देदो नाम, अनुक्रमि वाधइ गुण अभिराम ।
रामति रमतउ अति सुकमाल, माइ ताइ मन मोहइ बाल ॥५॥
इगतालइ संजम आदरि, पाप जोग सगला परिहरी ।
भणीय सयल सिद्धांतां सार, छासठइ पद लह्यो उदार ॥६॥
श्रीदेवतिलक पाठक गहगहइ, महियलि महिमा सहुकों कहइ ।
देस विदेशे करी विहार, भवियण नइ कीधा उपगार ॥७॥
ईसनयण नभरस ससि वास, सेय पंचमी मिगसर मास ।
करि अणशण आराहण ठाण, पाम्यउ अनिमिष तणउ विमाण ॥८॥

जेसलमेरु थुंभ जाणियइ, प्रगट प्रभाव पुहवि माणीयइ ।
दरसण दीठइ अति उछाह, समरणि सवि टालइ दुखदाह ॥९॥
खास सास जर पमुहज रोग, नाम लियइ नवि आए सोग ।
अधिक प्रताप सलहियइ आज, जो प्रणमइ तसु सारइ काज ॥१०॥
थाल विसाल थापना करी, निरमल नेवज आगलि धरी ।
केसरि चन्दन पूज रसाल, विरची चाढइ कुसमह माल ॥११॥
मृगमद मेलि अगर घनसार, भोग ऊगाहउ अतिहि उदार ।
करि साथियउ अखंड तंदुलइ, सुगुणगान कीजइ तिह वलइ ॥१२॥
चित्त तणी सहि चिंता टलइ, मनह मनोरथ ततखिण फलइ ।
खरतरगणगयणिहि ससि समउ, भाविकलोक करिजोड़ी नमउ॥१३॥
गुरु श्रीदेवतिलक उवझाय, प्रणम्यइ बाधइ सुह समवाय ।
अरि करि केसरि विसहर चोर, समयंउ असिव निवारइ घोर ॥१४॥
ए चउपई सदा जे गुणइ, उठि प्रभाति सुगुरु गुण थुणइ ।
कहइ "पदममंदिर" मनशुद्धि, तसु थाए सुख संपति रिद्धि ॥१५॥

मुनि हर्षकुल कृत

महो० श्रीपुण्यसागर गुरु गीतम्

राग:---सूहव

श्रीजगगुरु पय वंदीयइ, सारद तणइ पसायजो।
पंचइंद्रिय जिणि वशिकीय, ते गाइसु मुणिरायजी ॥१॥
मन शुद्धि भवियण भावियइ श्रीपुण्यसागर उवझाउ जी।
पालइ शील सुदृढ़ सदा, मन वंछित सुखदाउ जी ॥
विमल वदन जसु दीपतउ, जिम पूनम नउ चंद जी।
मधुर अमृत रस पीवता, थाइ परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥
दस विधि साधु धरम धरइ, उपशम रस भण्डारो जी।
क्षमा खड़ग करि जिन हण्यउ, हेलइ मदन विकारो जी ॥३॥मन॥
ज्ञान क्रिया गुणि सोहतउ जसु, पणमइ नरवर राउ जी।
नामइं नव निधि संपजइ, सेवइ मुनिवर पाउ जी ॥४॥म०॥
धन उत्तम दे उरि धरयउ, उदयसिंह कुलि दिनकार जी।
जिन शासन मांहि परगड़उ, सुविहित गच्छ सिणगार जी ॥५॥म०॥
श्रीजिनहंस सूरिसरइ सइ हथि दीखिय शीस जी।
हरषी "हरष कुल" इम भणइ, गुरु प्रतपउ कोड़ि वरीस जी ॥६॥म०॥

---*---

श्री जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास

दोहा :—राग असावरी

जिनवर जग गुरु मन धरि, गोयम गुरु पणमेसु ।
सरस्वती सद्गुरु सानिधइ, श्री गुरु रास रचेसु ॥ १ ॥
बात सुणी जिम जन मुखइ, ते तिम कहिस जगीस ।
अधिको ओछो जो हुवइ, कोप(य?) करो मत रीस ॥ २ ॥
महावीर पाटइं प्रगट, श्री सोहम गणधार ।
तास पाटि चउसट्ठिमइ, गच्छ खरतर जयकार ॥ ३ ॥
संवत सोल बारोत्तरइ, जैसलमेरु मंझार ।
श्री जिन माणिक सूरि ने, थापिउ पाट उदार ॥ ४ ॥
मानियो राउल माल दे, गुण गिरूओ गणधार ।
महीयलि जसु यश निरमलो, कोय न लोपइ कार ॥ ५ ॥
तेजि तपइ जिम दिनमणि, श्री जिनचन्द्र सूरीश ।
सुरपति नरपति मानत्री, सेव करइ निश दीश ॥ ॥
युगप्रधान जगि सुरतरू, सूरि शिरोमणि एह ।
श्री जिन शासनि सिरतिलौ, शील सुनिम्मल देह ॥ ७ ॥
पूरब पाटण पामियो, खरतर विरुद अभंग ।
संवत सोल सतोतरे, उजवालइ गुरू रंगि ॥ ८ ॥
साधु विहारे विहरतां, आया गुरु गुजराति ।
करइ चउमासो पाटणे, उच्छव अधिक विख्यात ॥ ९ ॥
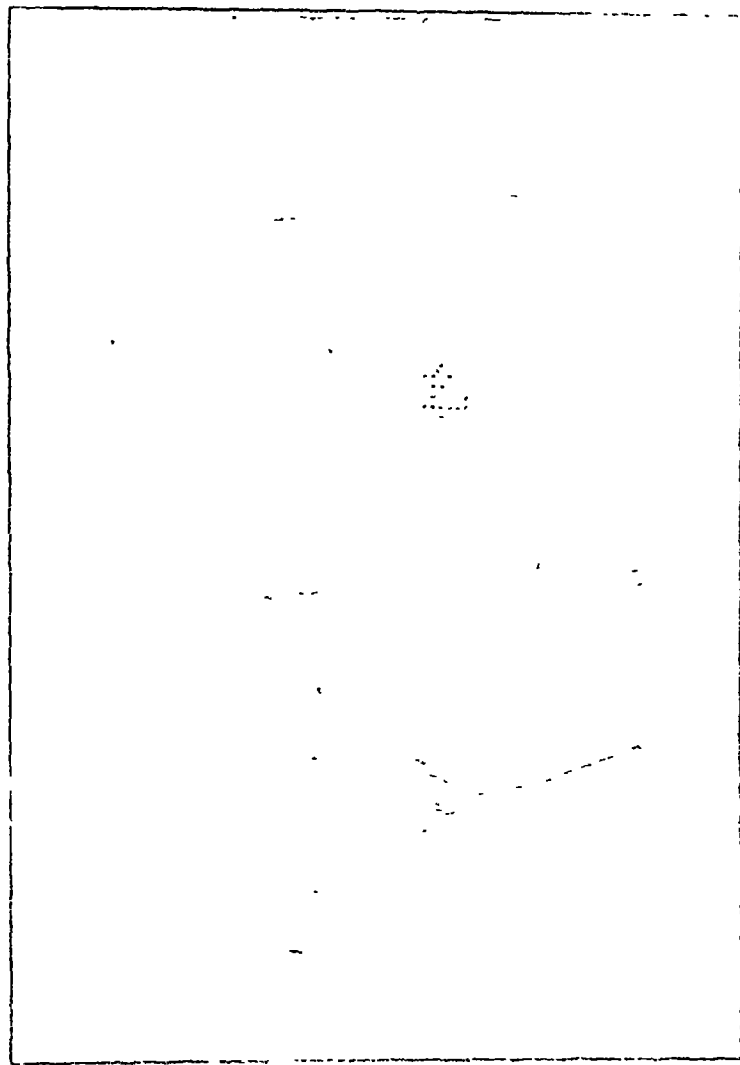
युगप्रधान जिनचन्द्र सूरिजीको हस्तलिपि

(सं० १६११ लि० कर्म
स्तव वृत्तिका अन्तिम पत्र)

चालि राग सामेरी

उच्छव अधिक विख्यात, महीयलि मोटा अवदात ।
पाठक वाचक परिवार, जूथाधिपति जयकार ॥ १० ॥
इणि अवसरि वातज मोटी, मत जाणउ को नर खोटी ।
कुमति जे कीधउ ग्रन्थ, ते दुरगति केरउ पंथ ॥ ११ ॥
हठवाद घणा तिण कीधा, संघ पाटण नइ जसलीधा ।
कुमति नउ मोड़िउ मांन, जग मांहि बधारिउ वांन ॥ १२ ॥
पेखी हरि सारंग त्रासइ, गुरु नामइ कुमति नासइ ।
पूज्य पाटण जय पद पायउ, मोतीड़े नारि बधायउ ॥ १३ ॥
गामागर पुरि विहरंता, गुरू अहमदाबाद पहुंता ।
तिहां संघ चतुर्विध वंदइ, गुरु दरसण करि चिर नंदइ ॥ १४ ॥
उच्छव आडम्बर कीधउ, धन खरची लाहउ लीधउ ।
गुरु जांणी लाभ अनन्त, चउमासि करइ गुणवन्त ॥ १५ ॥
चउमासि तणइ परभाति, सुह गुरु पहुंता खंभाति ।
चउमासि करइ गुरुराज, श्री संघ तणइ हितकाज ॥ १६ ॥
खरतर गच्छ गयण दिणंद, अभयादिम देव मुणिंद ।
प्रगट्या जिण थंभण पास, जागइ अतिसइ जसवास ॥ १७ ॥
श्री जिनचन्द सूरिन्द, भेटयउ प्रभु पास जिणन्द ।
श्री जिन कुशल सुरीस, वंदया मन धरि जगीस ॥ १८ ॥
हिव अहमदावाद सुरम्म, जोगीनाथ साह सुधम्म ।
शत्रुंजय भटेणरंगि, तेड्या गुरु वेगि सुचंगि ॥ १६ ॥

मेली सहुसंघ गुरु साथि, परघल खरचइ निजआथि ।
चाल्या भेटण गिरिराज, संघपति सोमजी सिरताज ॥ २० ॥

राग मल्हार दोहा

पूर्व पच्छिम उत्तरइ, दक्षिण चहुं दिसि जाणि ।
संघ चालिउ शैत्रुंज भणी, प्रगटो महीयलि वांणि ॥ २१ ॥
विक्रमपुर मण्डोवरउ, सिन्धु जेसलमेर ।
सीरोही जालोर नउ, सोरठि चांपानेर ॥ २२ ॥
संघ अनेक तिहां आविया, भेटण विमल गिरिन्द ।
लोकतणी संख्या नहीं, साथि गुरु जिणचन्द ॥ २३ ॥
चोर चरड़ अरि भय हणो, वंदी आदि जिणंद ।
कुशले निज घर आविया, सानिध श्री जिनचंद ॥ २४ ॥
पूज्य चउमासो सूरतइ, पहुंता वर्षा कालि ।
संघ सकल हर्षित थयउ, फलो मनोरथ मालि ॥ २५ ॥
वली चौमासो गुरु कीयउ, अहमदावादि रसाल ।
अवर चौमासो पाटणे, कीधो मुनि भूपाल ॥ २६ ॥
अनुक्रमि आव्या खम्भपुरि, भेटण पास जिणंद ।
संघ करइ आदर घणउ, करउ चउमासि मुणिंद ॥ २७ ॥

राग धन्याश्री० ढालउलालानी

हिव विक्रमपुर ठाम, राजा रायसिंह नाम ।
कर्मचन्द्र तसु परधान, साचउ बुद्धिनिधान ॥ २८ ॥
ओस महा वंश हीर, वच्छावत बड़ वीर ।
दानइ करण समान, तेजि तपय जिम भांण ॥ २९ ॥

सुन्दर सकल सोभागी, खरतर गच्छ गुरु रागी ।
बड़ भागी बलवन्त, लघु बंधव जसवन्त ॥ ३० ॥
श्रेणिक अभय कुमार, तासु तणइ अवतार ।
मुहतो मतिवन्त कहियइ, तसु गुण पार न लहियइ ॥ ३१ ॥
पिसुण तणइ पग फेर, मुंकी बीकम नयर।
लाहोरि जईय उच्छाहि, सेव्यो श्री पातिशाह ॥ ३२ ॥
मोटउ भूपति अकबर, कउण करइ तसु सरभर ।
चिहुं खण्ड वरतिय आण, सेवइ नर राय रांण ॥ ३३ ॥
अरि गंजण भंजन सिंह, महीयलि जसु जस सीह ।
धरम करम गुण जांण, साचउ ए सुरताण ॥ ३४ ॥
बुद्धि महोदधि जाणी, श्रीजी निज मनि आणी ।
कर्मचन्द तेड़ीय पासि, राखइ मन उलासि ॥ ३५ ॥
मान महुत तसु दीधउ, मन्त्रि सिरोमणि कीधउ ।
कर्मचन्द शाहि सुं प्रीत, चालइ उत्तम रीति ॥ ३६ ॥
मीर मलक खोजा खांन, दीजइ राय राणा मांन ।
मिलीया सकल दीवांणि, साहिब बोलइ मुख वाणि ॥ ३७ ॥
मुंहता काहि तुझ मर्म, देव कवण गुरु धर्म ।
भंजउ मुझ मन भ्रन्ति, निज मनि करिय एकन्ति ॥ ३८ ॥

राग सोरठी दोहा

वलतउ मुंहतउ विनवइ, सुणि साहब मुझ बात ।
देव दया पर जीव ने, ते अरिहंत विख्यात ॥ ३९ ॥

क्रोध मान माया तजी, नहीं जसु लोभ लगार ।
उपशम रस में झीलता, ते मुझ गुरु अणगार ॥ ४० ॥
शत्रु मित्र दोय सारिखा, दान शीयल तप भाव ।
जीव जतन जिहां कीजिय, धर्मह जाणि स्वभाव ॥ ४१ ॥
मइं जाण्या हइं बहुत गुरु, कुग'. तेरइ गुरु पीर ।
मन्त्रि भणइ साहिब सुणउ, हम खरतर गुरु धीर ॥ ४२ ॥
जिनदत्त सूरि प्रगट हइ, श्री जिन कुशल मुणिन्द ।
तसु अनुक्रमि हइ सुगण नर, श्रीजिनचन्द सुरिंद ॥ ४३ ॥
रूपइ मयण हराविउ, निरुपम सुन्दर देह ।
सकल विद्यानिधि आगरु, गुण गण रयण सुगेह ॥ ४४ ॥
संभलि अकबर हरखियउ, कहां हइ ते गुरु आज ।
राजनगर छइं सांप्रतइ, सांभलि तु महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

बात सुणी ए पातिशाह, हरखियउ हीयइ अपार ।
हुकम कियो महुता भणी, तेडि गुरु लाय म वार ॥ ४६ ॥
मत वार लावइ सुगुरु तेडण. भेजि मेरा आदमी ।
अरदास इक साहिब आगइ, करइ मुहतउ सिर नमी ॥ ४७ ॥
अब धूप गाढि पाव चलिय, प्रवहण कुछ बइसे नहीं ।
गुजराति गुरु हइ डीलि गिरुआ, आवि न सकइ अबसही ॥४८॥
चलतउ कहइ मुहता भणी, तेड़उ उसका सीस ।
दुइ जण गुरु नइ मुकीया, हित करी विश्वा वीस ॥ ४९ ॥
हितकरि मूंक्या वेगि दुइजण, मानसिंह इहां भेजीय ।
जिम शाहि अकबर तासु दरसणि, देखि नियमन रंजीय ॥५०॥

महिमराज वाचक सातठाणे, मुकीया लाहोर भणी ।
मुनि वेग पहुंता शाहि पासइ, देखि हरखिउ नरमणी ॥ ४७ ॥
साहि पूछइ वाचक प्रतइं, कब आवइ गुरु सोय ।
जिण दीठइ मन रंजीय, जास नमइ बहुलोय ॥
बहु लोय प्रणमइ जासु पयतलि, जगत्रगुरु हइ ओ वड़ा ।
तव शाहि अकबर सुगरु तेड़ण, वेगि मुंकइ मेवड़ा ॥
चउमासि नयडी अबही आवइ, चालवउ नवि गुरु तणउ ।
तब कहिइ अकब्बर सुणो मंत्री, लाभ द्यउंगउ तसु घणउ ॥४८॥
पतशाहि जण अविया, सुह गुरु तेड़ण काजि ।
रंजस कुछ ते नवि करइ, गह गहीयउ गच्छराज ॥
गच्छराज दरसणि वेगि देखि, हेजि हियड़उ हींस ए ।
अति हर्ष आणी साहि जणते, वार वार सलीस ए ॥
सुरताण श्रीजी मंत्रवीजी, लेख तुम्ह पठाविया ।
सिर नामी ते जण कहइ गुरु कुं, शाहि मंत्री बोलाविया ॥४९॥
सुह गुरु कागल बांचिया, निज मन करइ विचार ।
हिव मुझ जावउ तिहां सही, संघ मिलिउ तिण वार ॥
तिणवार मिलियउ संघ सघलो, वइस मन आलोच ए ।
चउमास आवी देश अलगउ, सुगुरु कहउ किम पहुंच ए ॥
समझावि श्रीसंघ खंभपुर थी, सुगुरु निज मन दृढ़ सही ।
मुनिवेग चाल्या शुद्ध नवमी, लाभ वर कारण लही ॥५०॥

राग सामेरी दूहा:—

सुन्दर शकुन हुआ बहु, केता कहुं तस नाम ।
मन मनोरथ जिण फलइ, सीझइ वंछित काम ॥५१॥

वंदो वउलावी वलइ, हरखइ संघ रसाल ।
भाग्यबली जिणचंद गुरु, जांणइ बाल गोपाल ॥५२॥
तेरसि पूज्य पधारिया, अमदाबाद मंझार ।
पइसारउ करि जस लीयउ, संघ मल्यो सुविचार ॥५३॥
हिव चउमासो आवियउ, किम हुइ साधु विहार ।
गुरु आलोचइ संघ सुं, नावइ बात विचार ॥५४॥
तिण अवसरि फुरमाणि वलि, आव्या दोय अपार ।
घणुं २ मुहतइ लिख्यो, मत लावउ तिहां वार ॥५५॥
वर्षा कारण मत गिणउ, लोक तणउ अपवाद ।
निश्चय वहिला आवज्यो, जिम थाइ जसवाद ॥५६॥
गुरु कारण जांणी करी, होस्यइ लाभ असंख ।
संघ कहइ हिव जायवउ, कोय करउ मत कंख ॥५७॥

ढालःगौड़ी (निंबीयानी) (आंकडी)

परम सोभागी सहगुरु वंदियइ, श्रीजिनचंद सूरिन्दो जी ।
मान दीयइ जस अकबर भूपति, चरण नमइ नरवृन्दो जी ॥५८॥
संघ वंदावी गुरुजी पांगुरया, आया म्हेसाणे गामो जी ।
सिधपुर पहुंता खरतर गच्छ घणी, साह वनो तिण ठामो जी ॥
गुरु आडंबर पइसारो कियउ, खरचिउ गरथ अपारो जी ।
संघ पाटण नउ वेगि पधारियउ, गुरुवंदन अधिकारो जी ॥५९॥
पुज्य पाल्हण पुरि पहुंता शुभ दिनइ, संघ सकल उच्छाहो जी ।
संघ पाटण नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिल्यइ लाहो जी ॥६०॥

महुर वधाउ आविउ सिवपुरि, हरखिउ संघ सुजाणो जी।
पाल्हणपुर श्रीपूज्य पधारिया, जाणिउ राव सुरताणो जी ॥६१॥प०
संघ तेड़ी ने रावजी इम भणइ, आपुं छुं असवारो जी।
तेडि आवउ वेगि मुनिवरु, मत लावउ तुम्ह वारो जी ॥६२॥
श्रीसंघ राय जण पाल्हणपुरि जइ, तेडी आवइ रंगो जी।
गामागर पुर सुहगुरु विहरता, कहता धर्म सुचंगो जी ॥६३॥

राग देशाख ढाल (इकवीस ढालियानी)

सीरोही रे आवाजउ गुरु नो लही, नर-नारी रे आवइ साम्हा उमही।
हरि कर रथ रे पायक बहुला विस्तरइ,
कोणी(क) जिम रे गुरु वंदन संघ संचरइ॥
संचरइ वर नीसांण नेजा, मधुर मादल वज्ज ए।
पंच शब्द झलरि संख सुस्वर जाणि अंबर गज्ज ए॥
भर भरइ भेरी वलि नफेरी, सुहव सिर घटकिज ए।
सुर असुर नर वर नारि किन्नर, देखि दरसण रंज ए॥६४॥
वर सूहव रे पूठि थकी गुण गावती, भरि थाली रे मुक्ताफल वधावती।
जय २ स्वर रे कवियण जण मुख उचरइ, वर नयरी रे मांहे इम गुरु संचरइ
संचरइ श्रावक साधु साथइ, आदि जिन अभिनंदिया।
सोवनगिरि श्रीसंघ आवउ, उच्छव कर गुरु वंदिया।
राय श्रीसुलताण आवी, वंदि गुरु पय वीनवइ।
मुझ कृपा कीजइ बोल दीजइ, करउ पजुसण हिवंइ॥६५॥
गुरु जाणि रे आग्रह राजा संघ नउ, पजुसण रे करइ पूज्य संघ शुभ मनउ।
अट्ठाही रे पाली जीव दया खरी, जिनमंदिर रे पूजइ श्रावक हितकरी।

हितकरिय कहइ गुरु सुणउ नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
किण पर्व पूनिम दिद्ध मंइ तुझ, अभय अविचल पालीयइ ।
गुरु संघ ओजावालपुर नइं वेगि पहुंता पारणइं ॥
अति उच्छव कियउ साह वन्नइ सुजस लीधो तिणि खिणइ ॥६६॥
मंत्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुसाहिनइ ।
फुरमाणा रे मूंक्या दुइ जण पूज्य ने ॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजो ।
पण किण इक रे पछइ वार म लगाड़जो ।
म लगाड़िजो तिहां बार काइ, जहति जाणी अति घणी ॥
पारणइ पूज्य विहार कीधउ, जायवा लाहुर भणी ।
श्रीसंघ चउविह सुगुरु साथइ, पातिशाही जण वली ॥
गांधर्व भोजक भाट चारण मिला गुणियन मन रली ॥६७॥
हिव देछरे गाम सराणउ जाणियइ, भमराणी रे खांडपरंगि वखाणियइ,
संघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही ।
गुरु वंद्यारे महाजन मजलइ गहगही ॥
गहि गहीय लाहिण संघ कीधी नयर द्रुणाडइ गयो ।
श्रीसंघ जेसलमेरु नो तिहां वंदी गुरु हरखित थयो ।
रोहीठ नइरइ उच्छव बहु करि, पूज्य जी पधराविया ।
साह थिरइ मेरइ सुजस लाधा, दान बहु दवराविया ॥ ६८ ॥
संघ मोटउ रे, जोधपुरउ तिहां आवीयउ,
करि लाहिण रे शासनि शोभ चढ़ावियो ।
व्रत चोथौ रे, नांदी करी चिहुं उच्चर्यो ।

तिथि वारस रे, मुंको ठाकुर जस वर्यो ।
जस वर्यो संघइ नयर पाली, आडंबर गुरु मंडियउ ।
पूज्य वांदिया तिहां नांदि मांडी, दानि दालिद्र खंडियउ ।
लांबियां ग्रामइं लाभ जाणो, सूरि सोझित निरखिया ।
जिनराज मंदिर देखी सुन्दर, वंदि श्रावक हरखिया ॥ ६६ ॥
वीलाड़इ रे, आनन्द पूज्य पधारीए ।
पइसारउ रे, प्रगट कीयउ कट्टारीए ।
जइतारणि रे, आवे वाजा वाजिया ।
गुरु वंदी रे, दान वलइ संघ गाजिया ॥
गाजियउ जिनचंद्रसूरि गच्छपति, वीर शासनि ए बड़ो ।
कलिकाल गोतम स्वामि समवड़, नहींय को ए जेवड़उ ।
विहरता मुनिवर वेगि आवइ, नयर मोटइ मेड़तइ ।
परसरइ आया नयर केरे, कहइ संघ मुंहता प्रतइ ॥ ७० ॥

॥ राग गौडो धन्या श्री ॥

कर्मचन्द कुल सागरे, उदया सुत दोय चन्द ।
भागचन्द मंत्रीसर, बांधव लिखमीचन्द ।
हय गय रह पायक, मेली बहु जन वृन्द ।
करि सबल दिवाजउ, वंदइ श्री जिनचन्द ॥ ७१ ॥
पंच शब्दउ झल्लरि, वाजइ ढोल नीसांण ।
भवियण जण गावइ, गुरु गुण मधुरि वाण ।
तिहां मिलीयो महाजन, दीजइ फोफल दांन ।
सुन्दरी सुकलोणी, सूहव करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

गज डम्बर सबलइ, पूज्य पधार्या जांम ।
मन्त्री लाहिण कीधी, खरची बहुला दाम ।
याचक जन पोष्या, जग में राख्यो नाम ।
धन धन ते मानव, करइ जउ उत्तम काम ॥ ७३ ॥
व्रत नन्दि महोत्सव, लाभ अधिक तिण ठांण ।
ततखिण पातशाहि, आव्या ले फुरमाण ।
चाल्या संघ साथइ, पहुंता फलवधि ठाणि ।
श्री पास जिणेसर, वंद्या त्रिभुवन भाणि ॥ ७४ ॥
हिव नगर नागोरउ रइं आया श्री गच्छराज ।
वाजित्र बहु हय गय मेली श्री सङ्घ साज ।
आवि पद वंदी करइ हम उत्तम आज ।
जउ पूज्य पधार्या तउ सरिया सब काज ॥७५॥
मन्त्रीसर वांदइ मेहइ मन नइ रङ्ग ।
पइसारो सारउ कीधो अति उच्छरङ्ग ।
गुरु दरसण देखि बधियो हर्ष कलोल ।
महीयलि जस व्यापिउ आपिउ वर तंबोल ॥७६॥
गुरु आगम ततखिण प्रगटियो पुन्य पडूर ।
संघ बीकानेरउ आविउ संघ सनूर ।
त्रिणसइं सिजवाला प्रवहण सइं वलि च्यार ।
धन खरचइ भवियण, भावइ वर नर नारि ॥७७॥
अनुक्रम पड़िहारइ, राजुलदेसर गामि ।
रस रंग रीणीपुर, पहुंता खरतर स्वामि ।

संघ उच्छव मंडइ आडंबर अभिराम।
संघ आवियो वंदण, महिम तणउ तिण ठाम ॥७८॥
खरची धन अरची श्री जिनराय विहार।
गुरु वाणि सुणि चित्त हरखिउ संघ अपार।
संघ वंदी वलीयउ, पहुंतउ महिम मंझार।
पाटणसरसइ वलि, कसूर हुयउ जयकार ॥७९॥
लाहुर महाजन वंदन गुरु सुजगीस।
सनमुख ते आविउ चाली कोस चालीस।
आया हापाणइ श्रीजिनचन्द सूरीश।
नर नारी पयतलि सेव करइ निसदीस ॥८०॥

राग गौड़ी दूहा:—

वेगि वधाउ आवियउ, कीयउ मंत्रीसर जांण।
क्रम २ पूज्य पधारिया, हापाणइ अहिठाण ॥८१॥
दीधी रसना हेम नी, कर कंकण के कांण।
दानिइ दालिद खंडियउ, तासु दीयउ बहुमान ॥८२॥
पूज्य पधार्या जांण करि, मेली सब संघात।
पहुंता श्री गुरु वांदिवा, सफल करइ निज आथ ॥८३॥
तेड़ी डेरइ आंण करि, कहइ साह नइं मन्त्रीस।
जे तुम्ह सुगुरु बोलाविया, ते आव्या सुरीस ॥८४॥
अकबर वलतो इम भणइ, तेड़उ ते गणधार।
दरसण तसु कउ चाहिये, जिम हुइ हरप अपार ॥८५॥

राग गौड़ा वालूडानोः—

पंडित मोटा साथ मुनिवर जयसोम,
कनकसोम विद्या वरू ए।
महिमराज रत्ननिधान वाचक,
गुणविनय समयसुन्दर शोभा धरू ए ॥८६॥
इम मुनिवर इकतीस गुरु जी परिवर्या,
ज्ञान क्रिया गुण शोभता ए।
संघ चतुर्विध साथ याचक गुणी जण,
जय जय वाणी बोलता ए ॥८७॥
पहुंता गुरु दीवांण देखी अकबर,
आवइ साम्हा उमही ए।
वंदी गुरु ना पाय मांहि पधारियां,
सइंहथि गुरु नौ कर ग्रही ए ॥८८॥
पहुंता दउड़ी मांहि, सुहगुरु साह जो
धरमवात रंगे करइ ए।
चिंते श्रीजी देखी ए गुरु सेवतां,
पाप ताप दूरइ हरइ ए ॥८९॥
गच्छपति द्ये उपदेश, अकबर आगलि
मधुर स्वर वाणी करी ए।
जे नर मारइ जीव ते दुख दुरगति,
पामइ पातक आचरी ए ॥९०॥

बोलइ कूड़ बहुत ते नर मध्यम,
इण परभवि दुख लहइ ए।
चोरी करम चण्डाल चिहुं गति रोलवइ,
परम पुरुष ते इम कहइ ए ॥६१॥
पर रमणि रस रंगि सेवइ जे नर,
दुरगति दुख पावइ वही ए।
लोभ लगी दुखहोय जाणउ भूपति,
सुख संतोष हवइ सही ए ॥६२॥
पंचइ आश्रव ए तजे नर संवरइ,
भवसायर हेलां तरइ ए।
पामइ सुख अनन्त नर वइ सुरपद,
कुमारपाल तणी परइ ए ॥६३॥
इम सांभलि गुरु वाणि रंजिउ नरपति,
श्री गुरु ने आदर करइ ए।
धण कंचन वर कोड़ि कापड़ बहु परि,
गुरु आगइ अकब्बर धरइ ए ॥६४॥
लिउ टुक इहु तुम्ह सामि जा कुछ चाहिये,
सुगुरु कहइ हम क्या करां ए।
देखि गुरु निरलोभ रंजिउ अकबर,
बोलइ ए गुरु अणुसरां ए ॥६५॥
श्रीपुज्य श्रीजी दोय आव्या बाहिरि,
सुणउ दिवांणी काजीयो ए।

धरम धुरंधर धीर गिरुओ गुणनिधि,
जैन धर्म को राजीयो ए ॥९६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

सफल ऋद्धि धन संपदा, कायम हम दिन आज ।
गुरु देखी साहि हरखियो, जिम केकी घन गाज ॥९७॥
अणी मुइं चाली करि, आया अब हम पासि ।
पहुंचो तुम निज थानकै, संयमनि पूरी आस ॥९८॥
वाजित्र-हयगय अम्ह तणा, मुंहता ले परिवार ।
पूज्य उपासरइ पहुंचवउ, करि आडम्बर सार ॥९९॥
चलतउ गुरुजी इम भणइ, सांभलि तूं महाराय ।
हम दोवाज क्या करां, साचउ पुन्य सखाय ॥१००॥
आग्रह अति अकबर करी, म्हेलइ सवि परिवार ।
उच्छव अधिक उपासरइ, आवइ गुरु सुविचार ॥१०१॥

राग आशावरी:—

हय गय पायक बहुपरि आगइ, वाजइ गुहिर निसाण ।
धवल मंगल द्यइ सूहव रंगइ, मिलीया नर राय राण ॥२॥
भाव धरीने भवियण भेटउ, श्रीजिनचन्दसूरिन्द ।
मन सुधि मानित साहि अकबर, प्रणमइ जास नरिन्द रे ॥भ०॥आं॥
श्री सङ्घ चउविह सुगुरु साथइ, मंत्रीश्वर कर्मचन्द ।
पइसारो शाह परवत कीधउ, आणिमन आणंद रे ॥ ३ । भाव० ॥
उच्छव अधिक उपाश्रय आव्या, श्री गुरु द्यइ उपदेश ।
अमीयं समाणि वांणि सुणंता, भाजइ सयल किलेस रे ॥४॥भा०॥

भरि मुगताफल थाल मनोहर, सूहव सुगुरु वधावइ।
याचक हर्षइ गुरु गुण गांता, दान मान तव पावइ रे ॥५॥ भा०
फागुण सुदि बारस दिन पहुंता, लाहुर नयर मंझारि।
मनवंछित सहुकेरा फलीया, वरत्या जय जयकार रे ॥६॥भा०॥
दिन प्रति श्रीजी सुं वलि मिलतां, वाधिउ अधिक सनेह।
गुरु नी सूरति देखि अकबर, कहइ जग धन धन एह रे ॥७॥ भा०
कइ क्रोधी के लोभी कूड़े, के मनि धरइ गुमान।
षट् दरशन मइं नयण निहाले, नहीं कोइ एह समान रे ॥८॥भा०
हुकम कीयउ गुरु कुं शाहि अकबर, दउढ़ी महुल पधारउ।
श्री जिनधर्म सुणावी मुझ कुं, दुरमति दूरइ वारउ रे ॥९॥भा०
धरम वात (रं) गइ नित करता, रंजिउ श्री पातिशाहि।
लाभ अधिक हुं तुम कुं आपीस, सुणि मनि हुयउ उच्छाहि रे ॥१०॥

रागः—धन्याश्री । ढालः सुणि सुणि जंबू नी

अन्य दिवस वलि निज उलट भरइं, महुरसउ ऐकजं गुरु आगे धरइ।
इम धरइ श्री गुरु आगलि तिहाँ अकब्बर भूपति।
गुहराज जंपइ सुणउ नरवर नवि ग्रहइ ए धन जति।
ए वाणि सम्भलि शाहि हरख्यो, धन्य धन ए मुनिवरू।
निरलोभ निरमम मोह वरजित रूपि रंजित नरवरू ॥११॥
तव ते आपिउ धन मुंहताभणी, धरम सुथानिक खरचउ ए गणी।
ए गणीय खरचउ पुन्य संचउ कीयउ हुकम मुंहता भणी।
धरम ठामि दीधउ सुजस लीधउ वधी महिमा जग घणी।

इम चैत्री पूनम दिवस सांतिक, साहि हुकम मुंहतइ कीयउ।
जिनराज जिनचंदसूरि वंदी, दान याचक नइ दीयउ ॥ १२॥

सज करी सेना देस साधन भणी,
कास्मीर ऊपर चढ़ीयउ नर मणी।
गुरु भणीय आग्रह करीय तेड़या, मानसिंह मुनि परवर्या।
संचर्या साथइ राय रांणा, उम्बरा ते गुणभर्या ॥
वलि मीर मिलक बहु खान खोज, साथि कर्मचन्द मंत्रवो।
सब सेन वाटइं वहइ सुखधइ, न्याय चलवइ सूत्रवी ॥ १३ ॥

श्री गुरु वांणि श्रीजी नितु सुणइ,
धर्म मूर्ति ए धन धन मुह भणइ।
शुभ दिनइ रिपु बल हेलि भंजी, नयर श्रीपुरि ऊतरी।
अम्मारि तिहां दिन आठ पाली देश साधी जयवरी।
आवियउ भूपति नयर लाहुर, गुहिर वाजा बाजिया।
गच्छराज जिनचंदसूरि देखी, दुख दूरइ भाजीया ॥ १४ ॥

जिनचन्दसूरि गुरु श्रीजी सुं आवि मिली,
एकान्तइ गुण गोठि करइ रली।
गुण गोठि करतां चित्त धरतां सुणिवि जिनदत्तसूरि चरी।
हरखियउ अकबर सुगुरु उपरि प्रथम सइं मुख हितकरी।
जुगप्रधान पदवी दिद्धगुरु कुं, विविध वाजा बाजिया।
बहु दान मानइ गुणह गानइ, संघ सवि मन गाजिया ॥ १५ ॥

गच्छपति प्रति बहु भूपति वीनवइ।
सुणि अरदास हमारी तुं हिवइ ॥

अरदास प्रभु अवधारि मेरी, मंत्रि श्रीजो कहइ वली ।
महिमराज ने प्रभु पाटि थापउ, एह मुझ मन छइ रली ॥
गुणनिधि रत्ननिधान गणिनइं, सुपद पाठक आपीयइ ।
शुभ लगन वेला दिवस लेइ, वेगि इनकुं थापियइ ॥ १६ ॥
नरपति वांणी श्रीगुरु सांभली,
कहइ मंइ मानी वातज ए भली ।
ए वात मांनी सुगुरु वांणी, लगन शोभन वासरइं ।
मांडियउ उच्छव मंत्रि कर्मचन्द, मेलि महाजन बहुरइं ॥
पातिशाहि सइमुख नाम थापिउ, सिंह सम मन भाविया ।
जिनसिंह सूरि सुगुरु थाप्या, सूहवि रंग वधाविया ॥ १७ ॥
आचारज पद श्री गुरु आपिउ,
संघ चतुर्विध साखइ थापियउ ।
व्यापीउ निरमल सुजस महीयलि, सयल श्रीसंघ सुखकरू ।
चिरकाल जिनचंदसूरि जिनसिंह, तपउ जिहां जगि दिनकरू ॥
जयसोम रत्ननिधान पाठ (क), दोय वाचक थापिया ।
गुणविनय सुन्दर, समयसुन्दर, सुगुरु तसु पद आपीया ॥ १८ ॥
धप मप धों धों मादल बाजिया,
तत्र तसु नादइ अम्बर गाजिया ।
वाजिया ताल कंसाल तिवली, भेरि वीणा भृंगली ।
अति हर्ष माचइ पात्र नाचइ, भगति भामिनी सवि मिली ।
मोतीयां थाल भरेवि उलटि, वार वार वधावती ।
इक रास भास उलासि देती, मधुर स्वर गुण गावती ॥ १६ ॥

कर्मचन्द परगट पद ठवणो कीयो,

संघ भगति करि सयण संतोषीयउ।

संतोषिया जाचक दान देइ, किद्ध कोडि. पसाउ ए।

संग्राम मंत्री तणउ नन्दन, करइ निज मनि भाउ ए॥

नव ग्राम गइंवर दिद्ध अनुक्रमि, रंग धरि मन्त्री वली।

मांगता अश्व प्रधान आप्या, पांचसइ ते सवि मिली॥ २०॥

इण परि लाहुरि उच्छव अति घणा,

कीधा श्री संघ रंगि बधावणा।

इम चोपडा शाख शृङ्गार गुणनिधि, साह चांपा कुल तिलउ।

धन मात चांपल देइ कहीय, जासु नन्दन गुण निलउ॥

विधि वेद रस शशि मास फागुन, शुक्ल बीज सोहामणी।

थापी श्री जिनसिंह सूरि, गुरुयउ संघ बधामणी॥ २१॥

राग—धन्याश्री

ढाल—(जीरावल मण्डण सामो लहिस जी)

अविहड़ि लाहुरि नयर बधामणाजी, वाज्या गुहिर निसांण।

पुरि पुरि जी (२) मंत्री बधाऊ मोकल्या जी॥ २२॥

हर्ष धरी श्रीजी श्रीगुरु भणी जो, वगसइ दिवस सुसात।

वरतइ जी (२) आण हमारी, जां लगइ जी॥ २३॥

मास असाढ़ अठाइ पालवी जी, आदर अधिक अमारो।

सघलइ जी (२) लिखि फुरमाण सु पाठवीजी॥ २४॥

वरस दिवस, लगि जलचर मूकियाजी, खंभनगर अहिठाणि।

गुरु नइ जी (२) श्रीजी लाभ दीयउ घणउजी॥ २५॥

द्यइ आसीस दुनी महि मंडलइजो, प्रतिपइ कोडि वरीस।
ए गुरुजो (२) जिण जगिजीव छुड़ाविया जो ॥ २६॥

राग—धन्याश्री।

ढाल:—(कनक कमल पगला ठवइ ए)

प्रगट प्रतापी परगडो ए, सूरि वडो जिणचन्द।
कुमति सवि दूरे टल्या ए, सुन्दर सोहग कन्द ॥ २७॥

सदा सुहगुरु नमोए, दइ अकबर जसु मांन। सदा०। आंकणी।
जिनदत्तसूरि जग जागतउ ए, गरुने सानिधकार। स०।
श्रीजिनकुशल सूरीश्वरू ए, वंछित फल दातार ॥स०॥ २८॥

रीहड़ वंशइ चंदलउ ए, श्रीवन्त शाह मल्हार। स०।
सिरीयादे उरि हंसलउ ए, माणिकसूरि पटधार ॥स०॥ २६॥

गुरु ने लाभ हुया घणां ए, होस्यइ अवर अनन्त। स०।
धरम महाविधि विस्तरइ ए, जिहां विहरइ गुणवंत ॥ स०॥३०॥

अकबर समवड़ि राजीयउ ए, अवर न कोई जांण। स०।
गच्छपति मांहि गुणनिलउ ए, सूरि वड़उ सुरतांण ॥ स०॥३१॥

कवियण कहइ गुण केतलाए, जसु गुण संख न पार। स०।
जिरंजीवउ गुरु नरवरू ए, जिन शासन आधार ॥स०॥३२॥

जिहां लगी महीयलि सुर गिरी ए, गयण तपइ शशि सूर।स०।
जिनचन्द रि तिहां लगइ, प्रतपउ पून्य पडूर ॥३३॥स०॥

वसु युग रस शशि बच्छरइ ए, जेठ वदि तेरस जांणि ।स०।
शांति जिनेसर सानिधइ ए, रास चड़िउ परमाणि ।।३४।।स०।।
आग्रह अति श्री संघ नइ ए, अहमदाबाद मंझारि ।स०।
रास रच्यो रलियामणउ ए, भवियण जण सुखकार ।।३५।।स०।।
पढ़इ गु(सु)णइ गुरु गुण रसो ए, पूजइ तास जगीस ।स०।
कर जोड़ी कवियण कहइ, विमल रंग मुनि सीस ।।३६।।स०।।

इति श्री युगप्रधान जिनचन्द्र सूरीश्वर रास समाप्ता मिति। लिखितं लब्धिकल्लोल मुनिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे, पं० लक्ष्मीप्रमोद मुनि वाच्यमानं चिरं नंद्यात् यावच्चन्द्र दिवाकरौ। श्रीरस्तु।

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीकी मूर्त्ति
(बीकानेरके ऋषभ जिनालयमें
सं० १६८६ प्रतिष्ठित मूर्त्ति)

* कवि समयप्रमोद कृत *

॥ श्री युगप्रधान निर्वाण रास ॥

दोहा राग (आसावरी)

गुणनिधान गुरु[1] पाय नमि, वाग वाणि अनुसार (आधारि)।
युगप्रधान निर्वाण नी, महिमा कहिसुं विचार ॥ १ ॥
युगप्रधान जंगम यति, गिरुआ गुणे गम्भीर।
श्री जिनचन्द सुरिन्दवर, धुरि धोरी ध्रम धीर ॥ २ ॥
संवत पनर पंचाणूयइ, रीहड़ कुलि अवतार।
श्रीवन्त सिरिया दे धर्यउ,[2] सुत सुरताण कुमार ॥ ३ ॥
संवत सोल चड़ोत्तरइ, श्री जिनमाणिक सूरि।
सइ हथि संयम आदर्यउ, मोटइ महत पडूरि ॥ ४ ॥
महिपति जेसलमेरु नइ, थाप्या राउल माल।
संवत सोल बारोत्तरइ, शत्रु तणइ सिर साल ॥ ५ ॥

ढाल (१) राग जयतसिरि

(करजोड़ी आगल रही एहनी ढाल)

आज बधावौ संघ मइं, दिन दिन बधते[3] वानइ रे।
पूज्य प्रताप बाधइ[4] घणौ, दुश्मन कीधा कानइ रे ॥६॥ आ०

---

१ गौतम २ देवीनइ ३ बाधइ ४ बधइ

सुविहित पद उजवालियउ, पूज्य परिहरइ परिग्रह माया रे ।
उग्र विहारइ विहरतां, पूज्य गुर्जर खंडइ आया रे ॥ ७ ॥

रिषिमतीयां सुं तिहां थयउ, अति झूठी पोथी वादो रे ।
पुज्य वखत बल कुमतियां, परगट गाल्यउ नादो रे ॥८॥ आ०॥
पूज्य तणी महिमा सुणी, सन्मान्या अकबर शाहइ रे ।
युगप्रधान पद आपियउ, सह लाहउर उच्छाहइ रे ॥९॥ आ०॥
कोड़ि सवा धन खरचियउ, मंत्रि क्रमचन्द्रजी भूपालइ रे ।
आचारिज पद तिहां थयउ, संवत सोल अड़तालइ[1] रे ॥१०॥आ०॥

संवत सोलसइ बावनइ, पुज्य पंच नदी (सिन्धु) साधी रे ।
जित कासो जय पामियउ, करि गोतम ज्युं सिधि वाधी रे ।११।आ०॥
राजा राणा मंडली, एतउ आइ नमें निज भावइ रे ।
श्रीजिनचंदसूरिसरु, पुज्य सुशब्द नित २ पावइ रे ॥१२॥आ०॥
संइ[2] हथि करि जे दीखिया, पूज्य शीश तणा परिवारो रे ।
ते आगम नइ अर्थे भर्या, मोटी[3] पदवीधर सुविचारो रे ।१३।आ०
जोगी, सोम, शिवा समा , पूज्य कोधा संघवी साचा रे ।
ए अवदात सुगुरु तणा, जाणि माणिक हीरा जाचा रे ।१४।आ०।

---

१ इस रासकी ३ प्रतियें हमारे पास हैं जिनमें ऐसा ही लिखा है । मुद्रित, "गणधर सार्ध शतक" में भी इसी प्रकार है । किन्तु पट्टावलि आदि में सर्वत्र सं० १६४९ ही लिखा है ।

२ आप तणइ ३ वलि

॥ दोहा सोरठी ॥

महा मुणीश्वर मुकुट मणि, दरसणियां दीवांण ।
च्यारि असी गच्छि सेहरो, शासण नउ सुरतांण ॥१५॥
अतिशय आगर आदि लगि, झूठ कहुं[४] तउ नेम ।
जिम अकब्बर सनमानिउ, तिम वलि शाहि सलेम ॥१६॥

ढाल (जतनी)

पातिसाहि सलेम सटोप, कियउ दरसणियां सुं कोप ।
ए कामणगारा कामो, दरबार थी दूरि हरामो ॥१७॥
एकन कुं पाग वंधावउ, एकन कुं ना[१]आस अणावउ ।
एकन कुं देशवटौ जंगल दीजै, एकन कुं पखाली कीजइ ॥१८॥
ए शाहि हुकुम सांभलिया, तसु कोप (कउप) थकी खलभलिया ।
जजमान मिली संयतना, दरहाल करइ गुरु जतना ॥१९॥
के नासि हीइं[२] पूंठि पड़ीया, केइ मइवासइ जइ चढ़ीया ।
केइ जंगल जाई वइठा, केइ दौड़ि गुफा मांहि (जाइ) पइठा ॥२०॥
जे नासत यवने झल्या, ते आणि भाखसी घाल्या ।
पाणी नै अन्नज पाल्या, वयरीड़ा वयर सुं साल्या ॥२१॥
इम सांभलि शाशन हीला, जिणचंद सुरीश सुशीला ।
गुजराति धरा थी पधारइ, जिन शाशन वान वधारइ ॥२२॥
अति आसति वलि गुरु चालो, असुरां भय दूरइ पाली ।
उग्रसेनपुरइ पउधारइ, पुज्य शाहि तणइ दरबारइं ॥२३॥

---

४ कथुं १ का २ हिंदु

पुज्य देखि दीदारई मिळिया, पातिशाह तणा कोप गलीया।
गुजराति धरा कगुं आए, पातिशाहि गुरु बतळाए ॥२४॥
पातिशाहि कुं देण आशोश, हम आए शाहि जगीश।
काहे पाया दुःख शरीर, जाओ जउख करउ गुरु पीर ॥२५॥
एक शाहि हुकुम जउ पावां, बंदियड़ां[1] बंदि छुड़ावां।
पतिशाहि खयरात करीजई, दरशणियां पूरु (दूत्रउ) दीजई ॥ २६ ॥
पतिशाहि हुंतउ जे जूठउ, पूज्यभाग बलइ अति तूठउ।
जाउ विचरउ देश हमारे, तुम्ह फिरतां कोइ न वारइ ॥ २७ ॥
धन धन खरतरगच्छ राया, दर्शनियां[2] दण्ड छुडाया।
पूज्य सुयश करि जगि छाया, फिरि सहरि मेडतइ[5] आया ॥२८॥

दूहा (धन्यासिरि)

श्रावक श्राविका[3] बहु परइ, भगति करइ सविशेष।
आण वहै गुरुराज नी, गौतम समवड़ देखि ॥ २६ ॥
धरमाचारिज धर्म गुरु, धरम तणउ आधार।
हिव चउमासउ जिहां करइ, ते निसुणौ सुविचार ॥ ३० ॥

ढाल (राग--धवल धन्यासिरी, चिन्तामणिपासपूजियै)

देश मंडोवर दीपतउ, तिहा बीलाड़ा नामौ रे।
नगर वसै विवहारिया, सुख संपद अभिरामौ रे ॥३१॥ दे० ॥
धोरी धवल जिसा तिहां[4], खरतर संघ प्रधानो रे।
कुंल दीपक कटारिया, जिहां घरि बहु धन धानो रे ॥३२॥दे०॥

---

१ बंध, २ दंद, ३ श्रावी, ४ जिहाँ रहै, ५ सहुरमतइ।

पंच मिली आलोचिया, इहां पूज्य करै चोमासो रे।
जन्म जीवित सफलउ हुवइ, सयणां पूजइ आसो रे ॥३३॥दे०॥
इम मिली संघ तिहां थकी, आवइ पुज्य दिदारइ रे।
महिमा बधारइ मेड़तै, पूज्य वन्दी जन्म समारइ रे ॥३४॥दे०॥
युगवर गुरु पउधारीयइ, संघ करइ अरदासो रे।
नयर बिलाड़इ रंग सुं, पूज्यजो करउ चौमासो रे ॥३५॥दे०॥
इम सुणि पूज्य पधारिया, बिलाड़इ रंगरोल रे।
संघ महोत्सव मांडियउ, दोजै तुरत तंबोल रे ॥ ३६ ॥ दे० ॥

दोहा (राग गौडी)

पूज्य चउमासो आवियउ[1], श्री संघ हर्ष उत्साह।
विविध करइ परभावना, ल्ये लक्ष्मी नो[2] लाह ॥ ३७ ॥
पूज्य दियइ नित्य देशना, श्रीसंघ सुणइ वखाण।
पाखी पोसहिता जिमइ, धन जीवित सुप्रमाण ॥ ३८ ॥
विधि सुं तप सिद्धान्त ना, साधु वहइ उपधान।
पूज्य पजूसण पड़िकमै, जंगम युगहप्रधान ॥ ३९ ॥
संवत सोलेसित्तरइ, आसू मास उदार।
सुर संपद सुह गुरु वरी, ते कहिसुं अधिकार ॥ ४० ॥

(ढाल भावना री चंदलियानी)

नाणैं (नइ) निहालइ हो पूज्य जो आउखउ रे, तेड़ी संघ प्रधान।
जुगवर आपै हो रूड़ो सोखड़ो रे, सुणिज्यो"पुण्य-प्रधान"॥४१॥ना०॥

---

१ गहउ, २ रो

गुरु कुल वासै हो वसिज्यो चेलडां रे, मत लोपउ गुरु कार ।
सार अनइ वऌि संयम पालिज्यो रे, सूधौ साधु आचार ॥४२॥ना०॥
संघ सहु नै धर्मलाभ कागलइ रे, लिखिज्यौ देश विदेश ।
गच्छा धुरा जिनसिंहसूरिनिर्वाहिस्यै रे,करिज्यो तसुआदेश॥४३॥ना०॥
साधु भणी इम सीख द्यै पूज्जजी रे, अरिहन्त सिद्ध सुसाखि ।
संइमुख अणसण पूज्य जा उच्चरइ रे, आसू पहिले पाखि ॥४४॥ना०॥
जीव चउरासि लख (राशि) खामिनै रे, कञ्चन तृण सम निन्द ।
ममता नै वलि माया मोसउ परिहरी रे, इमतिज पाप निकंद ॥४५॥ना०॥
वयर कुमार जिम अणसण उजलउ रे, पालो पहुर चियार ।
सुख ने समाधे ध्यानै धरम नइ रे, पहुंचइ सरग मझार ॥४६॥ना०॥
इन्द्र तणो तिहां अपछर ओलगइ रे, सेव करइ सुर वृन्द ।
साधु तणउ धर्म सूधौ पालियौ रे, तिण फलिया ते आणंद ॥४७॥ना०॥

दोहा (राग गौड़ी)

गंगोदक पावन जलइ, पूज्य पखाली अंग ।
चोवा चन्दन अरगजा, संघ लगावइ रंग ॥ ४८ ॥
बाजा बाजइ जन मिलइ, पार विहूणा पात्र ।
सुर नर आवै देखवा, पूज्य तणउ शुभ गात्र ॥४६॥
वेश वणावी साधु नउ, धूपि सयल शरीर ।
बैसाड़ी पालखियइ, उपरि बहुत अबीर ॥ ५० ॥

ढाल राग--गउड़ो (श्रेणिक मनि अचरिज थयउ एहनी)

हाहाकार जगत्र हुयउ, मोटो पुरुष असमानौ रे ।
वड़ वखती विश्रामियउ, दीवइ जिउं बूझाणउ रे ॥ ५१ ॥

पुज्य पुज्य मुखि उच्चरइ, नयणि नीर नवि मायइ रे।
सहगुरु सो(?सा)लइ सांभरइ, हियडुं तिल तिल थायइ रे ॥५२॥पूज्य०॥
संघ साधु इम विलविलइ, हा! खरतर गच्छि चंदउ रे।
हा! जिणशासण सामियां, हा! परताप दिणंदउ रे ॥५३॥पूज्य०॥
हा! सुन्दर सुख सागरु, हा! मोटिम भंडारउ रे।
हा! रीहड़ कुल सेहरउ, हा! गिरुवा गणधारउ रे ॥५४॥पूज्य०॥
हा! मरजाद महोदधि, हा! शरणागत पाल रे।
हा! धरणीधर धीरमा, हा! नरपति सम भाल रे ॥५५॥पूज्य०॥
बहु वन सोहइ भूमिका, वाणगंगा नइ तीर रे।
आरोगी किसणागरइ, बाजाइ सुरभि समीर रे॥ पू०॥५६॥
बावन्ना चंदन ठवी, सुरहा तेल नी धार रे।
घृत विश्वानर तर पिनइ, कीधउ तनु संस्कार रे॥ पू०॥५७॥
वेश्वानर केहनउ सगउ, पणि अतिसय संयोग।
नवि दाझो पुज्य मुंहपत्ति, देखइ सघला लोग रे॥ पू०॥५८॥
पुरुष रत्न विरहइ करी, साथि मरवउ न थावइ रे।
शान्तिनाथ समरण करी, संघ सहु घर आवइ रे॥ पू०॥५९॥

राग—धन्यासिरी

(सुविचारी हो प्राणी निज मन थिर करि जोय)

ढाल:—

सुविचारी हो पूज्यजी, तुम्ह विनु घड़ी रे छः मास।
दरसण दिखाड़उ आपणउ हो, सेवक पूजइ आश ॥६०॥ सुवि०

एकरसउ पउधारियइ हो, दीजइ दरशण रसाल ।
संघ उमाहु अति घणउ हो, वंदन चरण त्रिकाल ॥६१॥ सुवि०
वाल्हेसर रलियामणा हो, जे जगि साचा मीत ।
तिण थी पांगरउ पूज्यजी रे, मो मनि ए परतीत ॥६२॥ सुवि०
इणि भवि भवे भवान्तरइ हो, तुं साहिब सिरताज ।
मातु पिता तुं देवता हो, तुं गिरुआ गच्छराज ॥६३॥ सुवि०
पूज्य चरण नित चरचतां हो, वन्द्त वंछित जोइ ।
अलिअ विघन अलगा टरइ हो, पगि २ संपत होइ ॥६४॥ सुवि०
शांतिनाथ सुपसाउलइ हो, जिनदत्त कुशल सूरिन्द ।
तिम जुगवर गुरु सानिधइ हो, संघ सयल आणंद ॥६५॥ सुवि०
मीठा गुण श्रीपूज्य ना हो, जेहवी साकर द्राख ।
रंचक कूड़ इहा त(न?)ही हो, चन्दा सूरिज साख ॥६६॥ सुवि०
तासु पाटि महिमागरु हो, सोहग सुरतरु कन्द ।
सूर्य जेम चढती कला हो, श्री जिनसिंह सुरींद ॥६७॥ सुवि०
हो युगवर, नामइ जय जय कार ।
वंश बधावइ चोपड़ा हो, दिन दिन अधिकउ वान ।
पाटोधर पुहवी तिलउ हो, चिर नन्दउ श्रीमान् ॥६८॥ सुवि०
युगवर गुरु गुण गांवतां हो, नव नव रंग विनोद ।
एहनुं[१] आस्या फलइ हो, जंपइ "समयप्रमोद" ॥६९॥ सुवि०

॥ इति युगप्रधान जिनचन्द सूरि निर्वाणमिदं ॥

---

१ दूसरी हस्तलिखित प्रतिमें रुड़ई है ।

॥ युगप्रधान आलजा गीतम् ॥

आसू मास वलि आवीयउ, पूज्य जी, आयउ दीवाली पर्व पू० ।
काती चउमासौ आवीयउ, पू० आया अवसर सर्व ॥१॥
तुम्हे आवो रे श्रियादे का नंदन, तुमे बिनु घड़िय न जाय पू० ।
तुम्हे विन अलजो जाय पूज्य० ॥ तुम्हे० ॥
शाहि सलेम वली उंबरा, पू० संभारइ सहु कोइ ।
धर्म सुणावउ आविनइ पू०, जीव दया लाभ होइ ॥तु०॥२॥
श्रावक आया वांदिवा पू०, ओसवाल नइ श्रीमाल ।
दरशण द्यउ इक वार कउ, पू० वाणि सुणावउ विशाल ॥तु०॥३॥
वाजउठ मांड्यउ बैसणइ, पू० कमली मांडी सुघाट ।
वखाण नी वेला थइ पू०, श्रीसंघ जोयइ वाट ॥पू०॥तु०॥४॥
श्राविका मिलि आवी सहु, पू० वांदण वे कर जोड़ ।
वंदावी धर्मलाभ द्यो पू०, जिम पहुंचइ मन कोड़ि ॥पू०॥तु०॥५॥
श्राविका उपधान सहु वहै पू०, मांड्यउ नंदि मंडाण ।
माल पहिरावउ आविनइ पू०, जिम हुवै जन्म प्रमाग ॥पू०॥तु०॥६॥
अभिग्रह वांदण उपरि पूज्य०, कीधा हुंता नर नार ।
ते पहुंचावउ तेहना, पू० वंदावउ एक वार ॥पू०॥तु०॥७॥
परव पजूसण वहि गया पूज जी, लेख वाछै सहु कोय ।
मन मान्या आदेश द्यउ, पू० शिष्य सुखी जिम होय ॥पू०॥तु०॥८॥

तुम सरिखउ संसारमें पू०, देखुं नहिं को दीदार ।
नयना तृप्ति पामइ नहीं, पू० संभारूं सौ वार ॥पू०॥तु०॥९॥
मुझ मिलवा अलजौ घणौ पूज्य०, तुम्हे तौ अकल अलक्ष ।
सुपनि में आवि वंदावज्यो, पू० हुं जाणिसि परतक्षि ॥पू०॥तु०॥१०॥
युगप्रधान जगि जागतउ, पू० श्री जिनचन्द मुणिंद ।
सानिधि करिज्यो संघ ने, पू० समयसुंदर आणंद ॥पू०॥तु०॥११॥

॥ इति श्री जिनचन्द्र सूरीश्वराणां आलजा गीतं ॥

स० १६९६ वर्षे श्री समयसुं(द)र महोपाध्याय तच्छिष्यमुख्य श्री वाचनाचार्य श्रीमहिमासमुद्र ×गणि तच्छिष्य पं० विद्याविजय गणि शिष्य पं० वीरपालेनालेखि ॥ १ ॥ (पत्र ४ हमारे संग्रहमें)

× पाठक श्री समयसुन्दरजीगणि ने इनके आग्रहसे सं० १६६७ में "श्रावकाराधना" बनाई जिसकी अन्त्य प्रशस्ति इस प्रकार है :—
आराधनां सुगम संस्कृत वार्तिकाभ्यां, चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण ।
उच्चाभिधान नगरे महिमासमुद्र शिष्याग्रहेण मुनि षड्रस चन्द्र वर्षे ॥

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

मन धरीय सासण माइ, तुं मुझकरि सुपसाउ,
मन वचन दृढ़ करिकाय, चिदानंद सुं लयलाय,
गाइवा श्री गछराउ, मुझ ,उपज्यौ बहु भाउ ॥ १ ॥
धन धन खरतर गच्छ मंडण, श्रीजिनचंद्रसूरि पय वंदण । टेर ।
मारवाड़ि देस उदार, जिहां धरम कौ विस्तार ।
तिहां खेतसर मंझारि, ओसवंश कउ सिणगार ।
सिरवंत साह उदार, तसु सिरीय देवी नार ॥ धन० ॥ २ ॥
सुख विलसतां दिन दिन्न, पुण्यवंत गरभ उपन्न ।
नव मास जिहां पडिपुन्न, जनमीया पुत्र रतन्न ।
तिहां खरचीया बहु धन्न, सब लोक कहइ धन धन्न ॥धन०॥३॥
नाम थापना सुलताण, नितु नितु चढ़ते वान ।
जग मांहे अमली मान, सूरिज तेज समान ।
मतिमंत सब गुण जाण, रूप रंजवइ रायराण ॥ धन० ॥ ४ ॥
तिहां विहरता माणिकसूरि, आविया आणंद पूरि ।
देसणा दिद्ध सनूरी, निसुणइ भवियण भूरि ।
पूरव पुण्य पडूरि, मोहनी कर्म करि चूरि ॥ धन० ॥ ५ ॥

सुलताण मनहि विचार, लेइवा संयम भार ।
सुणि मात निज परिवार, यहु अथिर सब संसार ।
अनुमति द्यो सुविचार, हम हांसिंगे अणगार ॥ धन० ॥ ६ ॥
सुणि पूत तूं सुकमाल, तेरो नव योवन सुरसाल ।
यहु मदन अति असराल, क्या जाणही तूं बाल ।
आपणि मति संभाल, तब पीछइ चारित्रपाल ॥ धन० ॥ ७ ॥
अब निसुणि मोरी मात, ए छोडि जूठी बात ।
चारित्र कउ व्याघात, नहु कीजइ कहि तात ।
संजम्म लेइ विख्यात, लइ जु नीकी भाँति ॥ धन० ॥ ८ ॥
भणिया इम इग्यारह अंग, मन मांहे आणि रंग ।
गुरु भालि अतिहि उत्तंग, गुरु रूपि विजित अनंग ।
परवादि वाद अभंग, गुरु वचन गंग तरंग ॥ धन० ॥ ६ ॥
सोलसइ संवत बार, जिनमाणिकसूरि पटधार ।
जिणि सूरि मन्त्र उचार, पामीयो पुण्य अवतार ।
सिरिवंत शाह मल्हार, सब लोक मानइ कार ॥ धन० ॥ १० ॥
सुखकरउ श्रीजिणचंद, सब साधु केरे वृन्द ।
जां लगि रवि ध्रू चन्द, तां लग तूं चिरनन्द ।
कहइ कनकसोम मुणिंद, करउ संघ कूं आणंद ॥ धन० ॥ ११ ॥

॥ सं० १६२८ वर्षे पं० कनकसोमैविलेखि ॥

(२)

राग—मल्हार

भलइ री भलइ आज पूज्य पधारइ, त्रिहरंता गुरु साधु विहारइ ।भ०।
जुगवर श्रीजिन शासनि जागइ, महियल मोटइ भाग सोभागइ ॥भ०१॥

सूरिमन्त्र गुरु सानिध सोधिउ, पातिमाहि अकबर प्रतिबोधिउ ।भ०।
सब दुनीया मांहे कीधी भलाइ, हफतह रोज अमारि पलाई ।।भ०।।२।।
परतिख पंचे पोर आराधी, संघ उदय काजि पंचनदी साधी । भ० ।
वाणी अमृत वखाण सुणावइ, सूत्र सिद्धांत ना अरथि जणावइ।।भ०।।३
बलिहारी म्हारा पूजजी ने वयगे, बलिहारी अणियाले नयणे ।भ०।
श्रीवन्त-नन्दन सकल सनूरइ, उदयवन्त गुरु अधिक पडूरइ।।भ०।।४।।
? ....,................................।भ०।
श्रीजिनमाणिकसूरि पटधारी, वाचक श्रीसुन्दर सुखकारी ।।भ०।।५।।

(३)

ए मेरउ साजणीयउ सखि सुन्दर सोइ, जो मुझ वात जणावइ रे ।
किणि वाटड़ियइ मेरउ पूज्य पधारइ, श्रीगुरु सबहि सुहावइ रे ।
गुरु सबहि सुहावइ, जिणि पुरि आवइ, तिणिपुरि सोह चढ़ावइ ।
गुरु सोभागी, गुरु विधि आगो, पुण्य उदय स चढ़ावइ ।
गच्छराउ गुणी जिनचन्द मुणी, जण कार न लोपइ कोइ ।
आवा जउ गुरु कउ जो जांणइ, मेरउ साजण सोइ ।।१।।
ए जिम मइगलीयउ वण वीझ विनोदो, जिम घन दरसण मोरा रे ।
रवि दंसणियइ कोक सुरंगी, दरसण चन्द चकोरा रे ।
जिम चन्द चकोरा रे, तेम अघोरा देखि दरसण तोरा ।
हित संतोषइ पुण्यइ पोषइ, अति हरषित मन मोरा ।
निरदन्दी श्रीजिनचन्द्र पधारउ, वेगइ होइ प्रमोदी ।
तुम्हि देखि सहु जण जिम वीझावण, मइगलीयउ सुविनोदी ।।२।।

ए गुरु जोवणीयइ विधि मारगि लीणउ इणिगुरि लोहन मायारे ।
कसि कंचणीयइ जेम परीखा, दिन दिनि वान सवाया रे ।
नितु वान सवाया मोह न माया, मन्मथ आण मनाया ।
पद सोहाया कोमल काया, श्री खरतर गच्छ राया ।
लय लागी रंगीरसि जिउं रमतउ, अलि मकरंदइ पीणउ ।
भाग बली गुणि वय जोवणि, जो विधि मारग लीणउ ॥३॥
ए मनि आणंदियइ साधु कीरति, बोलइ ए गुरु शील उदारा रे ।
गुरु सूहव दे कूखि मराला, श्रीवन्त साह मल्हारा रे ।
सिरि वंत मल्हारा श्रीजयकारा, रीहडकुलि सिणगारा ।
जग आधारा नितु अविकारा, माणिकसूरि पटधारा ॥
चउरासी गण महि गणी निहाल्या, कोइ नहीं इणि तोलइ ।
चिरनंदउ जिणचन्द मुनीश्वर, साधुकीर्ति इम बोलइ ॥ ४ ॥

(४)

राग—देशाख

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदउ, सुललित वाणि करइ रे वखान ।
युगप्रधान जिन शासनि सोहइ, अकब्बर शाहु दीयइ बहुमान ॥१॥
गुजर मंडलतें बोलाये, संतन मुखि सुनि जसु गुणगान ।
बहुत पडूरि सुगुरु पाउधारइ, वखत योगि लाहोर सुथान ॥२॥श्री०॥
अरथ विचार पूछि सब विध विध, रीझे अकवर साहि सुजान ।
बहुत २ दरसनि मइ देखे, कौन कहुं या सुगुरु समान ॥श्री०॥३॥
भाग सोभाग अधिक या गुरु कउ, सूरनि पाक अमृत समवानि ।
पेस करइ अकब्बर अणमांगये, सब दुनीयां महि अभयादान ॥श्री०॥४॥

श्रीजिनमाणिकसूरि पटोधर, रोहड़ वंशि चढ़ावत वांन।
कहइ गुणविनय पूजजो प्रतपउ, खरतरगच्छ उदयाचलभान।श्री०।५।

(९)

राग—सारंग

सरसति सामिणी विनवुं, मांगु एक पसाय। सखीरी।
उलट आणी गाइसुं, श्रीखरतर गच्छराय ॥ स० ॥ १ ॥
श्रीजिणचन्द सूरिश्वरू, कलि गौतम अवतार। स०।
सूरि सिरोमणि गुणभर्यो, सकल कला भंडार ॥श्री०॥ २ ॥
ओसवंश सिरि सेहरउ, रोहड़ कुलि सिणगार। स०।
सिरियादे उरि जन्मीया, श्रीवंत शाह मल्हार ॥श्री०॥ ३ ॥
श्रीजिनशासन परगड़उ, वड खरतरगच्छ ईस। स०।
नर नारी नित जेहनउ, नाम जपइ निशदीस ॥श्री०॥ ४ ॥
श्रीजिनमाणिकसूरि नइ, पाटइ प्रगट्यउ भाण। स०।
राय राणा मुनि मंडली, मानइ मोटा जाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥
सोभागी महिमानिलउ, महियल मोहनवेलि। स०।
अबूझजीव प्रतिबूझवइ, वाणि सुधारस रेलि ॥ श्री० ॥ ६ ॥
जग सगले जस पामीयउ, प्रतिबोधी पातिशाह। स०।
खंभाइत दधि माछली, राखी अधिक उच्छाह ॥ श्री० ॥ ७ ॥
आठ दिवस आषाढ़ के, अट्ठाही निरधारि। स०।
सब दुनीयां मांहि सासती, पालावी अमारि ॥ श्री० ॥ ८ ॥
शील सुलक्षण सोहतउ, सुन्दर साहस धीर। स०।
सुविधि सुपरि करि साधीया, पंचनदी पंचपीर ॥श्री०॥ ९ ॥

सूधउ मारग उपदिसी, पाय लगाड्या लाख । स० ।

दरसण ज्ञान क्रिया धर, सविगच्छ पूरइ साख ॥श्री०॥१०॥

सइं हथि अकबर थापिया, सद्गुरु युगहप्रधान । स० ।

श्रीसुन्दर प्रभु चिरजयउ, दिन दिन चढ़तइ वान ॥श्री०॥११॥

(६)

श्री अकबर वहुमान, कीधउ युगप्रधान ।

कर्मचन्द बुद्धिनिधान । मीर मलिक खोजा खान,

काजीमुला परधान । पयनमइ करि गुणगान, दिन चढ़ते वान ॥१॥

सब दिन मुझ मन खंति घणी, श्रिय जिणचन्द सूरिसेव तणो । आं ।

मारवाड़ गुजर वंग, मेवाड़ सिन्धु कलिंग ।

मालव अपूरव अंग, पूरव सुदेस तिलंग ।

सब देस मिलि मनरंग, गावइ सुगुरु गुण चंग ।

जिम केतकि वनभृङ्ग, तिम सुगुरु सुं मुझ रङ्ग ॥ २ ॥सब॥

कलि गोतमा अवतार, तजि मोह मदन विकार ।

निरमाय निरहंकार, धन धन्न ए अणगार ।

माणिक्यसूरि पटधार, अति रूप वयर कुमार ।

श्रीवंत शाह मल्हार, 'सुमतिकलाल' सुखकार ॥ ३ ॥सब०॥

(७)

अकबर भूपति मानीया, तिण मानइ सहु लोइ ।

जिनचन्दसूरि सुरीश्वरु, वन्दै वंछित होइ ।

वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखतां चित हींस ए ।

श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि समवड़ि अवर कोइ न दीसए ।

सम्पति कारक, दुखनिवारक धर्मधारक महाव्रती ।

मन भाव आणी लाभ जाणो, नमइ अकबर भूपती ॥ १ ॥

असुरां गुरु प्रतिबोधीउ, दाखी धरम विचार।

शासन सोह चढावीयो, माणिकसूरि पट्टधार ॥

पट्टधार माणिकसूरि नइ ए, रीहड़ वंसइ दिन मणी।

श्रीवंत श्रीयादेवी नंदन, सुविहित साधु सिरोमणी ॥

गुणरयण रोहण भविय मोहन, कम्म सोहण व्रत लीउ।

सुविचार सार उदार भावइ असुरां गुरु प्रतिबोधीयउ ॥ २ ॥

एहवो गुरु वंद्यो नहीं इणि जगि ते अकयथ।

अकबर श्रीमुख इम कहइ, खरतर गच्छ मणिमथ ॥

मणिमथ खरतर गच्छ केरउ, अभिनवेरउ सुरतरु।

मन तणा कामित सयल पूरइ, रुप जेम पुरन्दरु ॥

जसु तणइ दरसणि दुरित नासइ, रिद्धि वासइ घर सही।

इम कहइ अकबर तेह अकयथ, जेणि गुरु वंद्यो नहीं ॥ ३ ॥

युगप्रधान पदवी भली, आपइ अकबर राज।

सइमुख हरखै इम कहइ, ए गुरु सब सिरताज।

सिरताज सब गच्छ एह सहगुरु, करइ बगसीस इम वली,

गुजरात खभायत मंदरि करउ निरभय माछली।

वर्धमान सामि तणइ शासनि, करी उन्नति इम रली।

आपइ अकबर अधिक हरषे, युगप्रधान पदवी भली ॥ ४ ॥

जां लगि अम्बर रवि शशि, जां सुर शैल नदीस।

तां नंदउ ए राजियो, मानइ आण नरेस ॥

जसु आण मानइ राव राणा, भाव बहु हियडै धरी।

नन्द ब्रुधिरस शशि वरसि चैत्रह नवमि तिहि अति गुण भरी।

इम विमल चित्तइ भणइ भत्तइ, समयप्रमोद समुल्लसो ।
युगप्रवर जिनचन्द्रसूरि वंदो, जाम अम्बर रवि शशि ॥ ५ ॥

(८)

॥ पंच नदी साधनं गीत ॥

विक्रम (पुर) नयरे श्री संघ हरषियो एह नी ढाल ।

श्री गौयम गणधर प्रणमी करी आणी उलट अङ्ग ।
गुरु गुण गावण मुझ मन गह गहै, थायइ अति उच्छरङ्ग ॥१॥

धन श्रीजिनशासन सलहियै, खरतर गच्छ सिणगार ।
युगप्रधान जिनचन्द जतीसरु, गुरु गौयम अवतार ॥२॥ध०॥

लाभपुरे जिनधर्म सुणाविनैं, बूझव्यो पातिसाह ।
श्री गुरु पंचनदी पति साधिवा, कीयो मनहि उछाह ॥३॥धन॥

संघ साथि मुलताण पधारिया, पइसार्यो सविशेष ।
देख हरंष्या सवि जन पय नमै, खान मलिक तिम सेख॥४॥धन०॥

ठामि ठामि हुकुमइ श्री शाहिनै, कइतां धर्म विचार ।
अभयदान महियल वरतावनां, संघ उदय जयकार ॥५॥ध०॥

आया पंचनदी तट पत्तणइ, चन्द्रबेलि अभिधान ।
आंबिल अठ्ठम तप गुरु आदरी, बैठा निश्चल ध्यान ॥६॥धन०॥

सोलसय बावनै वच्छरै, पुष्प सहित रविवार ।
माहधवल बारस तिथि निरमली, शुभ महूरत तिणि वार ॥७॥ध०॥

बेड़ी बइसी पहुतां जिहां मिलै, पंचनदी भर नीर ।
अधरति निश्चल नाव तिहां रही, ध्यान धरै गुरु धीर ॥८॥धन०॥

शील सत्त तप जप पूजा वसै, माणिभद्र प्रमुख सुमन्न ।
यक्ष सहु जिनदत्तसूरि सानिधै, तेह थया सुप्रसन्न ॥९॥धन०॥
प्रहसमि गुरुजी पत्तणि अविया, वाज्या जेत्र निसाण ।
ठाम २ ना संघ मिल्या घणा, आपै दान सुजाण ॥१०॥धन०॥
घोरवाड़ वंसे परगड़ा, नानिग सुत राजपाल ।
सपरिवार तिहां बहु धन खरचिनै, लीधो यश सुविशाल ॥११॥धन०॥
तिहां थी उच्चनगर गुरु आविया, वंद्या शान्ति जिणंद ।
देरावर प्रणम्या जग दीपता, श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥१२॥धन०
हिव तिहां थी मारग विचि आवतां, सुन्दर थुंभ निवेश ।
पद पंकज जिनमाणिकसूरिना, भेट्या तिणे प्रदेश ॥१३॥ध०॥
नवहर पास जुहारी पधारिया, जेसलमेरु मंझार ।
फागन सुदी बीजै सहु हरषीया, राउल संघ अपार ॥१४॥धन०॥
श्रीजिनचंद यतीश्वर गुणनिलो, प्रतपो युग प्रधान ।
'पद्मराज' इम पभणइ मन रसइ, दिन दिन वधतै वान ॥१५॥धन०॥

(९)

वनी है सहगुरुकी ठकुराई
श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदो, जो कुछ हो चतुराई ॥१॥वनी०॥
सकल सनूर हुकम सब मानति तै जिन्ह कुं फुरमाई ।
अरु कछु दोष नहीं दिल अंतरि, तिमि सवहीं मनिलाई ॥२॥वनी०॥
माणिकसूरि पाट महिमा वरी, लइ जिन स्युं वितणाइ ।
झिगमिग ज्योति सुगरुकी जागी, 'साधुकीरति' सुखदाइ ॥३॥वनी०॥

(१०) राग मल्हार

पूज्य आवाजउ सांभलउ सहिए, हरख्या सगलालोक।
मोरउ मन पिंण उलस्यउ सहिए, जिम हरि दंसण कोक ॥१॥
इण रे सुगुरु जी जग माहि जस पडहउ बजाइयउ ॥आ०॥
पहिलुं अकबर मानीया सहीए, ए गुरु हीरा खाणि।
युगप्रधान पद तिण दियउ सहिए, पय लागइ रायराणि ॥२॥इण०॥
गच्छ अनेक मई जोइया सहिए, तुम सम अवर न कोइ।
हेलइ मयण वसी कीयउ सहिए, शीलइ थूलभद्र जोइ ॥३॥इण०
अनुक्रमि श्रीगुरु विहरता सहीए, आव्या पाटण मांहि।
चउमासउ प्रभु तिहां करइ सहीए, मन आणी उच्छाह ॥४॥इण०॥
लेख आयउ आगरा थको सहीए, जाणी सगली बात।
साहि सलेम कोपइ चढ़यइ सहीए, कुमती बांध्या राति ॥५॥इण०॥
चउमासो करि पांगुर्या सहीए, करता देस विहार।
उग्रसेनपुर आविया सहीए, वरत्या जय जयकार ॥६॥इण०॥
श्रीपातिशाह बोलाविया सहीए, ज़ंगमजुगहप्रधान।
धरम मरम कहि बूझव्यउ सहीए, तुरत दीया फुरमान ॥७॥इण०॥
जिण शासन उजवालियउ सहीए, साह श्रीवंत कुल चन्द।
साधु विहार मुगता कीया सहीए, खरतर पति जिणचन्द ॥८॥इण०
सिरिया दे उरि हंसलउ सहीए, तेजइ दीपइ भाण।
"लब्धिशेखर" मुनि इम भणइ सहीए, सेवक आपणउ जाणि ॥९॥इण०॥

(११)

राउल श्री भीम इम कहइ जी, जादव वंसि वदीत रे ॥ पूज जी ॥
पधारो जेसलमेरु नइ जी, प्रीति धरी निज चित्त रे ॥रा०॥१॥

वखत वडा गुजराति ना जी, पूज पधार्यां जेथ रे।
धन धन लोक सहुवलि रे, जेह वसइ छइ तेथ रे ॥२॥रा०॥
पूज तणइ जे श्रीमुखइ जी, निसुणइ अमृत वाणि रे।
सेव करइ गुरु नी शाश्वती रे, तेहनो जन्म प्रमाणि रे ॥३॥रा०
दिवस घणा विचि वउलीया जी, आवण केरी आस रे।
हुंसि अछइ माहरइ हियइ जी, इहां जइ करउ चउमासि रे ।४॥रा०॥
श्री जेसलगिरि संघ नी जो, अधिक अछइ मन कोडि रे।
गुरुजी चरणइ लागिवा, रे त्रिकरण शुद्ध कर जोड़ि रे ॥५॥रा०॥
साधु नी संगति जउ मिलइ रे, तउ पूजइ मन नी आस रे।
चिंतामणि करि जउ चढयइ रे, तउ चित्त थाइ उल्लास रे ॥६॥रा०॥
मुझ मन हरख घणउ अछइ जी, तुम्ह मिलवा नुं आज रे।
तुम्ह आव्यां सवि साध्यस्यां रे, अधिक धरम तणा काज रे ।७॥रा०॥
इहां विलम्ब नवि कीजियइ जी, श्री खरतर गणधार रे।
श्री जिनचन्द्र गुणभणइ रे, "गुणविनय" गणि सुखकार रे ॥८॥रा०॥

(स्वयंलिखित-पत्र १ हमारे संग्रह में)

(१२) राग—सामेरी

सुगुरु कइ दरसन कइ बलिहारी।
श्री खरतरगच्छ जंगम सुरतरु, जिनचन्दसूरि सुखकारी ॥१॥सु०॥
अकब्बर शाहि हरख करि कीनउ, युगप्रधान पदधारी।
खंभायत मइ शाहि हुकम तइं, जलचर जीव उबारी ॥२॥सु०॥
सात दिवस ज़िनि सब जीवन की, हिंसा दूर निवारी।
देश देशि फुरमान पठाए, सब जग कु उपगारी ॥३॥सु०॥

जिनमाणिकसूरि पाट प्रभाकर, कलि गौतम अवतारी।
कहइ "गुणविनय" सकल गुण सुंदर, गावत सब नर-नारी ॥४॥सु०॥

(कवि के हस्तलिखित पत्र से उद्धृत)

(१३) राग—धन्यासिरी मारूणी

सुगुरु मेरइ चिरि जीवउ चउसाल।
खम्भायत दरिया की मच्छली, बोलत बोल रसाल ॥१॥सु०॥
भाग हमारइ तिहां जावत हइ, लाभपुरइ भय टाल।
श्रीजी कुं अइसी अरज करेज्यो, जलचर कुं प्रतिपाल ॥२॥सु०॥
एह अरज निसुणी पूज्यां तइ, रंज्यु वर भूपाल।
हुकम करि नइ छाप पठाइ, हरख्या बाल गोपाल ॥३॥सु०॥
युगप्रधान जिनचन्द यतीसर, छइ जसु नाम विशाल।
शाहि अकबर तसु फरमाइ, तिणि झाड़ायाला जाल ॥४॥सु०॥
निशभरि नींद अबइ आवत हइ, मरण तणु भय टाल।
जय जय जय आशीस दियत हइ, मिलि जीवन की माल ॥५॥सु०॥
धन धन धोर हुमाऊं कुं नन्दन, जीवत दान दयाल।
धन धन श्रीखरतरगच्छ नायक, षटकाया रखवाल ॥६॥सु०॥
धन मन्त्री कर्मचन्द वछावत, उद्यम कीउ दरहाल।
साहिब नइ साचइ सुप्रसादइ, अलीय विघ्न सब टालि ॥७॥सु॥
धन ते संघ इणइ जे अवसर, परवल खरचइ माल।
तसु "कल्याण कमल" नो संपद, आपद न हुवइ वाल ॥८॥सु०

(१४) अपूर्ण

सरस वचन सरसति सुपसायइ, गाइसु श्री गुरुराय री माइ।
युगप्रधान जिनचन्द यतीश्वर, सुर नर सेवे पाय री माई॥
कलियुग कल्पवृक्ष अवतरियो, सेवक जन सुखकार री माई॥आं॥
जिन शासन जिनचन्द तणो यश, प्रतपै पुहवि मझार री माई।
प्रहसम नित नित श्रीगुरु प्रणमो, श्रीखरतर गणधार री माई॥२॥
संवत पनर पचाणुं वर्षे, रीहड़ कुल मनु भाण री माई।
श्रीवंत शाह गृहणी सिरियादे, जनम्या श्री "सुरताण" री माई॥३॥
संवत सोल चड़ोतर वरसे, लीधो संयम भार री माई।
जिनमाणिक्यसूरि सैं हाथै दिक्षा, शिष्यरत्न सुविचाररी माई॥४॥क०
लघु वय बुद्धि विनाणे जाण्यो, श्रुतसागर नो सार री माई।
अभिनव वयर कुमर अवतारै, सकल कला भंडार री माई॥५॥क०॥
वखत संयोगे सोल बारोत्तर, जेशलमेर मंझार री माई।
पाम्यो सूरीश्वर पद प्रकट्यो, श्रीसंघ जय २ कार री माई॥६॥क०
उग्र विहार आदर्यो श्रीगुरु, कठिन क्रियाउद्धार री माई।
चारित्र पात्र महंत मुनीश्वर, रत्नत्रय आधार री माई॥७॥क०॥
सतरोत्तर वर्षे पाटण में, अधिक वधारी माम री माई।
च्यार असी गच्छ साखै खरतर, विरुद दीपायौ ताम री माई॥८॥क०
हथगाउर सौरीपुर नामै, तीरथ विमलगिरिंद री माई।
आवूगढ़ गिरनार सिखर तिहां, प्रणम्या श्रीजिनचन्दरी माई॥९॥क०
आरासण तारंगै तीरथ, राणपुरै गुरुराज री माई।
वरकाणा संखेश्वर ग्रामे, प्रणम्या श्री जिनराजरी माई॥१०॥क०॥

अवर तीर्थ पण श्रीगुरु भैट्या, प्रतिबोध्यो पातिसाह री माई ।
अकबर अधिकी आसति निरखी, दीधौ मौटौ लाह री माई ॥११॥
खम्भायत नो खाड़ी केरा, राख्या जीव अनेक री माई ।
बरस एक लग श्री गुरु वचने, पाम्यो परम विवेक री माई ॥१२॥क०
सात दिवस लगि निज आणा में. वरतावी अमारि री माई ।
अकबर अवर अपूर्व कारिज, कींधा गुरु उपकार री माई ॥१३॥क०॥
पंचनदी पति परतिख साध्या, माणभद्र विख्यात री माई ।
.... ॥

(१८) श्री गुरुजी गीत

युगवर श्री जिनचन्दजी, जगि जिनशासनि चन्द रे ।
प्रहसमि उठी पूजियइ, कामित सुरतरु कंद रे ॥१॥जुग०॥
संवति पनर पंचाणुयइ, श्रीवंत साह मल्हार रे ।
मात सिरियादेवि जनमीयउ, रीहड़ कुल सिणगार रे ।२।जुग०।
संवत सोल चिडोत्तरइ, जाणी जिणि अथिर संसार रे ।
हाथि जिनमाणिकसूरि नइ, संग्रह्यउ संयम भार रे ॥३॥जुग०॥
वयरकुमार तणी परइ, लघुवइ बुद्धि भंडार रे ।
गुरुकुल वास वसि पामियउ, प्रवचन सागर पार रे ।४।जुग०।
संवत सोल बारोतरइ, जेसलमेरु मझारि रे ।
भाग्य बलि सूरि पदवी लही, हरखिया सवि नर नारि रे ।५।जुग०।
कठिण क्रिया जिण उद्धरि, मांडियउ उग्र विहार रे ।
सूरि जिणवल्लभ सारिखउ, चरण करण गुणधार रे ।६।जुग०।

पाटण सोल सतरोतरइ, च्यारि असी गच्छ साखि रे।
खरतर विरुद दीपावियउ, आगम अक्षर दाखि रे ॥ ७ ॥ जुग० ॥
सौरीपुर हथिणाउरे, विमलिगिरि गढ़ गिरिनार रे।
तारङ्ग अर्बुदि तीरथइ, यात्र करि बहु वारि रे ॥ ८ ॥ जुग० ॥
अकब्बर शाहि गुरु परिखोयउ, कसवटि कंचण जेम रे।
पूज्यनी मधुर देसण सुणी, रंजियउ साहि सलेम रे ॥९॥ जुग० ॥
सात दिवस वरतावियउ, मांहि दुनिया अभयदान रे।
पंच नदी पति साधिया, वाधियउ अति घणउ वान रे ॥१०॥जुग०॥
राजनगर प्रतिष्ठा करी, सबल मंडाण गुरुराइ रे।
संघवी सोमजी लछिनउ, लाह लियइ तिणि ठाइ रे ॥११॥जुग०॥
सुप्रसन्न जेहनइ मस्तकइ, गुरु धरइ दक्षिण पाणि रे।
तेह घरि केलिकमला करइ, मुखवसइ अविर(ल) वाणि रे ॥१२॥जुग०॥
दरसनी जिन मुगता करी, सोल सित्तर वासि रे।
अविया नगर बिलाड़ए, सुगुरु रह्या चउमासि रे ॥१३॥जुग०॥
दिवस आसु वदि बीजनइ, उच्चरी अणशण सार रे।
सुरपुरि सुगुरु सिधारिया, सुर करइ जय जयकार रे ॥१४॥जुग०॥
नाम समरणि नवनिधि मिलइ, सवि फळइ संघनी आस रे।
आधि नइ व्याधि दूरइ टलइ, संपजइ लील विलास रे ॥१५॥जुग०॥
केशर चन्दन कुसुम सुं, चरचतां सहगुरु पाय रे।
पुत्र संतान परघल हुवइ, दिन दिन तेज सवाय रे ॥१६॥जुग०॥
श्रीजिनचन्दसूरीसरू, चिर जयउ जुगहप्रधान रे।
इणपरि गुरु गुण संथुणइ, पाठक 'रत्ननिधान' रे ॥१७॥जुग०॥

(श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार-सूरतस्थ हस्त लिखत ग्रन्थात्
प्रेषक पन्यास केशरमुनिजी)

॥ इति श्री गुरुजी गीतं ॥

(१६)

॥ ६ राग ३६ रागिणी गर्भित् गीत ॥

कीजइ ओच्छव सन्तां सुगुरु केरउ (१)
सुललित वयण सुण सखि मेरउ (२)
कहउरी संदेस खरा गुरु आवतिया (३)
तिणवेला उलसी मेरी छातिया (४) ॥१॥

आएरी सखि श्रीवंतमल्हारा,
खरतर गच्छ श्रृङ्गारहारा । ए आंकड़ी (५)
अइसा रंग वधावन कीजइ (६)
गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ (७)
ऐसे सुगुरु कुं नित्य उलगउरी (८)
सुन्दर शरीरा गच्छपति अउरी ॥ ६ ॥ आ० ॥२॥

दुःख के दार सुगुरु तुम हउ री (१०)
गाउं गुण गुरु केदारा गउरी (११)
सोरठगिरि की जात्रा करणकुं आपणरी गुरु पाय परउ (१२)
भाग्यफल्यो ओच्छव लोकणरओ (१३) ॥३॥
तुं कृपापर दउलति दे मोहि हुं तेरो भगत हुं री (१४)
गुरुजी तुं उपर जीव राखी रहुंरी (१५)
इहु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी (१६)
हुं चरण लागुं डर डमर वारी (१७) आ० ॥४॥

अहो निकेत नटनराइण कइ आगइ

अइसइ नृत्य करत गुरुके रागइ (१८)

ऐसे शुद्ध नाटक होता गावत सुंदरी

वेणु वीणा मुरज वाजत घुमर घुघरी (१६) ॥५॥

रास मधु माधवइ देति रंभा, सुगुरु गायंति वायंति भंभा (२०)

तेजपुज जिमसे भेइरवी, जुगप्रधान गुरु पेखउ भवि(२१)आ०॥६॥

सबहि ठउर त्ररी जयतसिरी (२२)

गुरुके गुण गावत गुजरी (२३)

मारुणि नारी मिली सब गावत सुन्दर रूप सोभागी रे (२४)

आज सखि पुन्य दिसा मेरो जागी (२५) ॥७॥

तोरी भक्ति मुज मन मां वसी री (२६)

साहि अकबर मानइ जसु बाबरवंसी (२७)

गुरुके वंदणी तरसइसिंधुया (२८)

इया सारी गुरुकी मूरतिया (२६) आ० ॥८॥

गुरुजी तुंहिजकृपाल भूपाल कलानिधि तुंहिज सबहि सिरताज(३०)

आवइ ए रीतइ गच्छराज (३१)

संकरा भरण लांछन जिन सुप्रसन्न

जिनचंदसूरि गुरुकुं नतिकरुं (३२) ॥६॥

तेरी सुरतकी बलिहारी, तुं पूरव आस हमारी,

तुं जग सुरतरु ए (३३)

गुरु प्रणमइरी सुरनर किन्नर धोरणी रे

मनवंछित पूरण सुरमणी रे (३४) ॥१०॥

मालवा गउडमिश्री अमृत थइ वचन मीठे गुरु तेरे हइ ताथइ (३५)

करउ वंदणा गुरुकुं त्रिकालइ हरउ पंच प्रमाद रे (३६)

सबइकुं कल्याण सुख सुगुरु प्रसाद रे (३७) आ० ॥११॥

बहु परभाति वउ उछव सार (३८)

पंचमहाव्रत धर गुरु उदार (३६)

हुं आदेसकार प्रभुतेरा, जुगप्रधान जिनचन्द

मुनिसरा, तुं प्रभु साहिब मेरा (४०) ॥१२॥

दुरित मे वारउ गुरुजी सुख करउ रे श्रीसङ्घ पुरउ आशा

नाम तुमारइ नवनिधि संपजइ रे लाभइ लील विलास (४१) ॥१३॥

धन्यासरी रागमाला रची उदार, छः राग छत्रीसे भाषा भेद विचार,

सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरुवार,

थंभण पास पसायइं त्रंबावती मजार (२) ध०) ॥१४॥

जुगप्रधान जिनचन्द सूरींद सारा

चिर जयउ जिनसिंघसूरि सपरिवार (३ ध०)

सकलचन्द मुणीसर सीस उन्नतिकार,

"समयसुन्दर" सदा सुख अपार (६ ध०) ॥१५॥

इति श्रीयुगप्रधान जिनचन्दसूरीणां रागमाला सम्पूर्णा,

कृता च० समयसुन्दरगणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे

कार्तिक शुदि ४ दिने श्री स्तंभतीर्थ नगरे ।

(१७) रागः—आसावरी

पूज्यजी तुम्ह चरणे मेरुउ मन लीणउ, ज्युं मधुकर अरविंद ।
मोहन वेलि सबइ मन मोहियउ, पेखत परमाणंद रे ॥१॥पूज्य०॥
सुललित वाणि वखाण सुणावति, श्रवति सुधा मकरंद रे ।
भविक भवोदधि तारण बेरी, जनमन कुमदनी चंद रे ॥२॥ पूज्य०॥
रीहड वंश सरोज दिवाकर, साह श्रीवंत कउ नंद रे ।
"समयसुन्दर" कहइ तुं चिरप्रतपे,श्रीजिणचन्द मुणिंद रे ॥३॥पूज्य०॥

(१८) आसावरी

भले री माई श्री जिनचन्द्रसूरि आए ।
श्रीजिन धर्म मरम बूझण कूं, अकबर शाहि बुलाए ॥ १ ॥
सद्गुरु वाणी सुणि शाहि अकबर, परमाणंद मनि पाए ।
हफतहरोज अमारि पालन कुं, लिखि फुरमान पठाए ॥ २ ॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी, दुरजन दूर पुलाए ।
"समयसुन्दर" कहै श्रीजिनचन्दसूरि सब जनके मन भाए ॥३॥

(१९) आसावरी

सुगुरु चिर प्रतपे तुं कोड़ि वरीस ।
खंभायत बन्दर माछलड़ी, सब मिलि देत आशीस ॥ १ ॥ सु०
धन धन श्री खरतरगच्छ नायक, अमृतवाणि वरीस ।
शाहि अकबर हमकुं राखणकुं, जासु करी बकशीस ॥ २ ॥
लिखि फुरमाण पठावत सबही, धन कर्मचन्द्र मंत्रीश ।
"समयसुन्दर" प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥३॥

(२०)

श्री खरतर गच्छ राजीयउ रे माणिक सूरि पटधारो रे।
सुन्दर साधु सिरोमणो रे, विनयवंत परिवारो ॥ १ ॥
विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखी आज हमारो।
ए चन्द्रालउ छइ अति सारउ, श्रीपूज्यजी तुम्हे वेगि पधारो॥१॥
जिणचन्दसूरिंजी रे, तुम्ह जग मोहण वेलि।
सुणज्यो वीनती रे, आवउ आम्हारइ दिसि, गिरूआ गच्छपतिरे॥
वाट जोवतां आवीया रे हरख्या सहु नर-नारो।
संघ सहु उच्छव करइ रे घरि २ मंगलाचारो॥
घरिघरि मंगलचारो रे गोरी, सुगुरु बधावउ बहिनी मोरी।
ए चन्द्राउलउ सांभलज्योरी, हुं बलिहारी पूजजी तोरी॥२॥श्री०
अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतो सुख थाज्यो।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि जाज्यो॥
अलिय विघन सहु जायइ रे दूरइ, श्रीपूज्य वांदु उगमते सूरइ।
ए चन्द्रालउ गांउ हजूरइ, तउ मुझ आस पूलइ सवि नूरइ॥ ३॥
जिणदीठा मन उलसइ रे नयणे अमीय झरंति।
ते गुरुना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति॥
वंछित काज सरंति सदाइ, श्रीजिणचन्दसूरि वांदउ माई।
ए चन्द्राउला भास मइंगाई, प्रीति "समयसुन्दर" मनिपाई॥४॥श्री

(२१)

जनचन्दसूरि आलीजा गीत राग:—आस्यासिंधूडो

थिर अकबर तुं थापीयउ, युग प्रधान जग जोइ।
श्रीजिनचन्दसूरि सारिखउ, सारि० कलिमें न दीसइ कोय॥१॥

उमाह धरी नइ तातजी हुं आवियउरे, हो एकरसउ तुं आवि ।
मनका मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिखाउ ॥ २ ॥
जिनशासनि राख्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोल ।
समझायउ श्री पातिसाह, सद्गुरु खाटयउ तइं सुबोल । ऊ० ॥३॥
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिन्ध थी एथ ।
नगर गाम सहु निरखीया, कहो क्युं न दीसइ पूज्य केथ ।उ० ॥४॥
शाहि सलेम सहु अंबरा, भीम सूर भूपाल ।
चीतारइ तुं नइ चाह मुं, हो पूज्यजी पधारउ किरपाल । ऊ० ॥५॥
वावा आदिम वाहुवलि, वीर गौयम ज्युं विलाप ।
मेलउ न सरज्यउ माहरउ मा०, ते तउ रह्यो पछताप । ऊमा०।६।
साह वडउ हो सोमजी राख्यउ कर्मचन्द राज ।
अकवर इंद्रपुरि आणीयउ हो, आस्तिक वादी गुरु आज । उमा०।७।
मूयइ कहइ ते मूढ़नर, जीवइ जिणचन्दसूरि ।
जग जंपइ जस जेहनउ, जेह० हो पुहवि कीरत पडूरि ।ऊमा०।८।
चतुर्विध संघ चीतारस्यइ, जां जीविसइ तां सीम ।
वीसार्या किम विसरइ,विस० हो निर्मल तप जप नीम ।ऊमा०।९॥
पाटि तुम्हारइ प्रगटीयउ, श्री जिणसिंह सूरीस ।
शिष्य निवाज्या तइ सहु , तइं० रे जतीयां पूरी जगीस ।ऊमा०।१०।

समयसुन्दर कृत अपूर्ण—प्रास

कवि कुशल लाभ कृत

॥ श्रीपूज्य वाहण गीतम् ॥

राग—आसावरी

पहिलो प्रणमुं प्रथमजिण, आदिनाथ अरिहंत।
नाभि नरेश्वर कुलतिलक, आपइ सुख अनंत ॥ १ ॥
चक्रवर्ती जे पांचमो, सरणागत साधारि।
शांति करण जिन सोलमो, शान्तिनाथ सुखकार ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी सिर मुकटमणि, यादव वंश जिणिंद।
नेमिनाथ भावइ नमुं, आणी मन आणंद ॥ ३ ॥
श्री खंभायत मंडणो, प्रणमुं थंभण पास।
एक मना आराधतां, पूरइ जन नी आस ॥ ४ ॥
शासननायक समरीयइं, वर्द्धमान वर वीर।
तीर्थंकर चौवीसमो, सोवन वर्ण शरीर ॥ ५ ॥
च्यारि तीर्थंकर शाश्वता, विहरमाण जिन वीश।
त्रिण चोवीशी जिन तणा, नाम जपूं निशदीस ॥ ६ ॥
श्रीगौतमगणधर सधर, नमिसुं लब्धिनिधान।
केवलिकमला करि वशइ, महिमा मेरु समान ॥ ७ ॥
समरूं शासनदेवता, प्रणमुं सदगुरु पाय।
तासु प्रसादे गाइस्युं, श्री खरतरगच्छ राय ॥ ८ ॥

सतर भेद संयम धरइ, गिरुआ गुण छतीस।
अधिकी उत्कृष्टी क्रिया, ध्यान धरइ निसदीस ॥ ६ ॥
सूयगडांग सूत्रे कह्या, वीर स्तव अधिकार।
भव समुद्र तारण तरण, वाहण जिम विस्तार ॥ १० ॥
आ भव सागर सारिखुं, सुख दुख अंत न पार।
सद्‌गुरु वाहण नी परइ, उतारइ भवपार ॥ ११ ॥

ढालः—सामेरी

भवसागर समुद्र समान, राग द्वेष वि नेऊ धाण ?।
ममता तृष्णा जल पूर, मिथ्यात मगर अति क्रूर ॥ १२ ॥
मोजा ऊंचा अभिमान, विषयादिक वायु समान।
संसार समुद्र मंझारि, जीव भम्या अनंत वारि ॥ १३ ॥
हिव पुण्य तणइ संयोग, पाम्यो सद्‌गुरु नो योग।
भवसागर तारणहार, जिन धर्म तणउ आधार ॥ १४ ॥
वाहण नी परि निस्तारइ, जीव दुर्गति पडितो वारइ।
कालरि जलि किहांन छीपइ, पर वादी कोइ न जीपइ ॥ १५ ॥
इहनइ तोफान न लागइ, सुखि वायु वहइ वैरागइ।
जल थल सविहुं उपगारइ, भवियण जण हेलां तारइ ॥ १६ ॥

ढालः—हुसेनी धन्यासिरी

श्रीजिनराय नीपाइयउ ए, वाहण समुं जिनधर्म,
भविक जनतारवा ए ॥ १७ ॥

तारइ २ श्रीवंत शाह नो नन्दन वाहण तणी परइ ।
तारइ २ सिरियादे नो सुत कि, वाहण सिला मती ए ।
तारइ २ श्रीपूज्य सुसाधु, श्रीखरतरगच्छ गच्छपत्ति ए ॥ आं० ॥
अविहड़ वाहण ए सही ए, सविहुं सुख व्यापार ।
धर्म धन दायकू ए ॥ १८ ॥
तारइ तारइ श्री समकित अति निर्मलो ए ।
पहलउ ते पयठांण, सुमति सूत्रेधर्यो ए ॥ १६ ॥
ता० गुण छतीस सोहामणा ए ।
विहु दिसि बांक मंडाण, सुकृत दल मलिवा ए ॥ २० ॥
ता० कूया थुंभ चारित्र तणउ ए ।
जयणा जोडी संधि, सबल सढ तप तणउ ए ॥ २१ ॥
ता० शील डबू सो सोभतो ए ।
ले मत सुगुरु वखाण, दया गुण दोरड़ो ए ॥ २२ ॥
तारइ तारइ कलमी ते शुद्धी क्रियाए,
पुण्य करणी पंतांस, संतोष जलइ भर्याउ रे ॥२३॥
ता० दशविध धर्म वेडूं गवी ए ।
संवर तेह जना रखि मासरि छत्रडी ए ॥२४॥
ता० सतर भेद संयम तणा ए,
ते आउला अपार । संवेग सु पंजरी ए ॥२५॥
ता० आज्ञा नालु अणी समोए ।
पंच समिति पर वांण, कीर्त्तिधज जह लहइ ए ॥२६॥
ता० विजइ वारह भावनाए ।
(दा) हांडा शुभ परिणाम, नागर नवतत्त्व तणाए ॥२७॥

ता० करूणा कीलइ लेपीउ ए, ज्ञान निरुपम नीर ।
झीलउ समरस भर्यांए ॥२८॥
ता० शासन नायक हू (क्रू) यउए, मालिम श्री गुरुराज ।
कराणि मुनिवरुए ॥२९॥
ता० जिन भाषित मारग वहइ ए, वाजित्रनाद सिझाय ।
सुसाधु खलासीयाए ॥३०॥
तारइ २ ए मारग जिनधर्म तणउए, को डोलइ नहीं लगार ।
सदा सुखियां करइए ॥३१॥
ता० मल (चा ?) वारी ते काठीया ए, कुमती चोर हीनोर ।
सहु भय टालताए ॥३२॥
ता० पुण्य क्रियाणे पूरीया ए, वहुरति वस्तु अनेक ।
सुजस पाखर खरीए ॥३३॥
ता० कषाय डूंगर जालवइए, वइतउ ध्यान प्रवाह ।
सिलामति आवीयोए ॥३४॥

ढाल-रामगिरीः—

धर्ममारग उपदेशता, करता २ विधइ विहार रे ।
आव्याजी नगर त्रंबावती, श्री संघ हर्ष अपार रे ॥३५॥
पूज्य आव्या ते आसा फली, श्री खरतरगच्छ गणधार रे ।
श्री जिनचन्दसूरि वांदीयइ, साथइ २ साधु परिवार रे ॥३६॥पू०॥
आगम सूत्र अर्थे भर्या, सुकृत क्रियांण ते सार रे ।
चारित्र वखारि अति भली(यी), व्रत पचखाण विस्तार रे ॥३७॥

वस्त अपूर्व वहुरिवा, मिल्या २ भविक नर-नार रे।
विनय करि पूज्य नइ वीनवइ, आपउ २ वस्तु उदार रे ॥३८॥पू०॥
मोटा २ श्रावक श्राविका, करइ मंडाण अनेक रे।
महोत्सव अधिक प्रभावना, जाणइ २ विनय विवेक रे ॥३९॥पू०॥
ज्ञान दरशण चारित्र तणा, अमोलक रत्न महंत रे।
पुण्य व्यापारि आवि मिल्या, वहुरतां लाभ अनन्त रे ॥४०॥पू०॥
दान गुण मोतीय निर्मला, पंच आचार ते पांच रे।
दश पचखाण ते कहरबउ, अगर ते शीतल वाच रे ॥४१॥पू०॥
सूफ ते सद्दहणा खरी, सुगुरु सेवा सिकलात रे।
पोत सुरासुर पोसहा, मकमल प्रवचन मात रे ॥४२॥पू०॥
हीर पेटी महोत्सव घणा, इ भ्रा (त्रा ?) मी ते सूत्रनी साख रे।
भाव(जाच)परिवार लिय अति भलो, निवृति ते किसमिस दाख रे।४३पू।
श्रीफल श्रीगुरु देशणा, वीश थानिक कमखाब रे।
नांदि उछव मलीयागरउ, पूज्यनी भगति गुलाब रे ॥४४॥पू०॥
देश विरति ते कचकडउ, चोली(ल) यां ते उपधान रे।
दांत(न)? शीलांगरथ उजलउ, राती जगु तेह कंताण रे ॥४५॥पू०॥
शीतल सुकडि भावना, स्नात्र तेकपूर बरास रे।
कतीफउ कल्याणिक जाणीयइ, कंस बण्यो सह उपवास रे ॥४६॥पू०॥
मासखमण मसझारे समुं (भलुं), लारीते लाख नवकार रे।
सूत्र ना भेद हीरा खरा, उचित नुं दान दीनार रे ॥४७॥पू०॥
पाखर कमण बरीया बिसइ, लवंग ओ(ड)ली विश्वा(सय)वीस रे।
नाम आलोयण वाडीया, छठ तप बिसय गुणतीस रे ॥४८॥पू०॥

संसार तारण दु कांवली, चउथो व्रत तेह दस्तार रे ।
अखोड आंविल निम जाणवी, कल(इ)य वेयावच्चसार रे ॥४९॥पू०॥
अठम तप ते टोक(प)रां, अठाही ते सेव खजूर रे ।
समवसरण तप ते मिरी, सोपारी सामायिक पूर रे ॥५०॥पू०॥
लाहिण माल पहिरावणी, उत्तम क्रियाण ते जोइ रे ।
परखीय वस्त जे संग्रही, लाख असंखित होइ रे ॥५१॥पू०॥
श्री गुरु शासण देवता, वाहण ना रखवाल रे ।
भगति भणी सानिध करइ, फलइ मनोरथ माल रे ॥५२॥पू०॥

राग:—केदार गौड़ी

दिन २ महोत्सव अति घणा, श्रीसंघ भगति सुहाइ ।
मन शुद्धि श्रीगुरु सेवीयइ, जिणि सेव्यइ शिवसुख पाइ ॥५३॥पू०॥
भविक जन वंदो सहगुरु पाय, श्री खरतर गच्छराय ॥आं०॥
प्रभु पाटिए चउवीसमइ, श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि ।
उद्योतकारी अभिनवो, उदयो पुन्य अंकूर ॥५४॥भ०॥
शाह (श्रावक) भंडारी वीरजी, साह राका नइ गुरुराग ।
वर्द्धमानशाह विनयइ घणो, शाह नागजी अधिक सोभाग ॥५५॥भ०॥
शाह वछा शाह पदमसो, देवजीने जैतशाह ।
श्रावक हरखा(षा)हीरजो, भाणजी अधिकउ उच्छाह ॥५६॥भ०॥
भंडारी माडण नइ भगति घणी, शाह जावडने घणा भाव ।
शाह मनुआने शाह सहजीया, भंडारी अमीउ अधिक अछाह रे॥५७॥
नित मिलइ श्रावक श्राविका, संभलइ पूज्य वखाण ।
हीयडउ ऊलटइ उलसइ, एम जीव्यो जन्म प्रमाण ॥५८॥भ०॥

आग्रह देखी श्री संघनो, पूज्यजी रह्या चउमास ।
धर्मनो मार्ग उपदिसइ, इम पहुंतो मननी आश ॥५६॥भ०॥
प्रतिमाप्रतिष्टा थापना, दीक्षा दीयइ गुरुराज ।
इम सफल नर भव तेहनो, जे करइ सुकृत ना काज रे ॥६०॥भ०॥

राग :—गुड मल्हार

आव्यो मास असाढ़ झबूके दामिनी रे ।
जोवइ २ प्रीयडा वाट सकोमल कामिनी रे ॥
चातक मधुरइ सादिकि प्रीऊ २ उच्चरइ रे ।
वरसइ घण वरसात सजल सरवर भरइ रे ॥६१॥
इण अवसरि श्रीपूज्य महा मोटा जती रे ।
श्रावक ना सुख हेत आया त्रंबावती रे ।
जोवउ २ अम गुरु रीति प्रतीति वधइ वली रे ।
दिक्षारमणी साथ रमइ मननी रली रे ॥६१॥आं०॥
संवेग सुधारसनीर सबल सरवर भर्या रे ।
पंच महाव्रत मित्र संजोगइ संचर्या रे ।
उपशम पालि उतंग तरंग वैरागना रे ।
सुमति गुप्ति वर नारि संजोग सौभाग्यना रे ॥६२॥
प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरुवर घणा रे ।
कोकिल कामिनी गीत गायइ श्री गुरु तणा रे ।
गाजइ २ गगन गंभीर श्री पूज्यनी देशना रे ।
भवियण मोर चकोर थायइ शुभ वासना रे ॥६३॥

सदा गुरु ध्यान स्नान लहरि शीतल वहइ रे।
कीर्त्ति सुजस विसाल सकल जग मह महइ रे।
सातें खेत्र सुठाम सुधर्मह नीपजइ रे।
श्री गुरु पाय प्रसाद सदा सुख संपजइ रे ॥६४॥
सामग्री संयोग सुधर्म सहुइ सुणइ रे।
फलीया पुण्य व्यापार आचार सुहामणा रे। २
पुण्य सुगाल हवंति मिल्या श्री पूज्यजी रे।
वाहण आव्या खेति वर वाइ हर ? रमजी रे ॥६५॥
जिहां २ श्रीगुरु आण, प्रवर्तें जिह क्रिगइ रे।
दिन २ अधिक जगीस जो थाइज्यों तिह क्रिणइ रे।
ज्यां लग मेरु गिरिन्द गयणि तारा घणा रे।
तां लगि अविचल राज करउ, गुरु अम्ह तणा रे ॥६६॥
परता पूरण पास जिणेसर थंभणउ र।
श्रीगुरु ना गुण ज्ञानहर्ष भवियण भणउ रे ॥
"कुशललाभ" कर जोडि श्रीगुरु पय नमइ रे।
श्रीपूज्य वाहण गीत सुणतां मन रमइ रे ॥६७॥

गुरु गीत नं० २३

सभ (ब?) नमइ चक्रवर्त्ती जिनचन्दसूरि,
चतुर (विध)संघ चतुरंग सेन सजि, वारे विघन अरि दूरि ।
नव तत नवनिधान जिन पाए, आगम गंगा कूरि ।
चवद विद्या गुण रतन संग करि, नीकउ नीलवट नूरि ॥१॥स०॥
पंच महाव्रत महल (ण?)श्रमण गुण, हइ दरवार हजूरि ।
दरसण ज्ञान चरण त्रिण्ह तीरथ, साधि सकति अरि चूरि ॥२॥स०॥
मरुधर गूजर सोरठ मालव, पूरब सिंध संपूरि ।
षटखण्ड साधि परम गुरु सानिधि, घुरे सुजस के तूरि ॥३॥स०॥
निरमल वंस उदय फुनि पाए, दरसन अंगि अंकूरि ।
मुनि"जयसोम"बदति जय २ धुनि, सुगुरु सकति भरपूरि ॥४॥स०॥

जयप्राप्ति गीत

(२४) राग :—

देखउ माई आसा मेरइ मनकी, सफल फलीरे उलटि अंगि न माइ ।
सुजस जसु देसंतरइ, नवखंडि दीपायउ नाम रे ।
माम मोटी महि मंडले, सव जन काइ प्रणाम रे ॥१॥जीतउ०॥
श्रीखरतरगच्छ राजीयउ, श्रीजिनचंद्र मुणिंद रे ।
मान मोड्यो कुमति तणउ, त्रिभुवन हुओ आणंद रे ॥२॥अं॥
पाटणि भूप दुर्लभ मुखे, बरस दससइअसी मानि रे ।
सूरि गण पमुह तिहां चउरासो, मढ़पति जीपी आसाणि रे॥३॥जीतउ०॥
दिवस शुभ थान पंचासरइ, करीय परणाम विसार रे ।
सूरि जिणेश्वर पामीयो, खरतर विरुद उद्दार रे ॥४॥जीतउ०॥

संवत सोल सतरोत्तरइ, पाटण नयर मझार रे।
मेली दरसण सहु संमत, ग्रन्थ नी साखि साधार रे ॥५॥जीतउ०॥
पूर्व बिरुद उजवालियउ, साखि दाखइ सहु लोक रे।
तेज खरतर सहगुरु तणउ, ऋपिमती ते थयउ फोकरे॥६॥जीतउ०॥
रिगमती (ऋपिमती) जे हुंतउ 'कंकली' बोलतो आल पंपाल रे।
खण्ट कोधउ खरतर गुरे, जाणइ बाल गोपाल रे ॥७॥जीतउ०॥
निलवट नूर अतिसउ घणउ, खरतर सोह सम जोडि रे।
जंबु करिगमता जे भिडइ, जय किम पामइ सोइ रे ॥८॥जीतउ०॥
माणिकसूरि पाटइ तपइ, रिहड कुल सिणगार रे।
श्रीजिनचन्द सूरि गुणधा निलउ, सेवक जन सुखकार रे ॥९॥जी०

---

(२५) विधि स्थानक चौपई

गरुवौ गच्छ खरतर तणो, जेहनै गुरु श्रीजिनदत्तसूरि।
भद्रसूरि भाग्यइ भयौं, प्रणमन्ता होइ आणंद पूरि कि ॥१॥
सूरि शिरोमणि चिरजयउ, श्रीजिनचन्द्रसूरि गणधारि।
कुमति दल जिण भांजियउ, वर्त्यौ जग मांहिं जय २ कार कि ॥२॥
बालपणइ चारित लियउ, विद्या बुद्धि विनय भंडार।
अविधि पंथ जिण परिहरी, धारइ पंच महाव्रत धार कि ॥३॥
गुण छत्तीस सदा धरइ, कलिकालइ गोयम अवतार।
सहु गच्छ माहे सिर धणी, रुपे मयण मनायउ हार कि ॥४॥
सूरि "जिनेश्वर" जगतिलउ, तासु पाटाऽभय देव विख्यात।
वृत्ति नवांगि जिणइ करी, तेतो खरतर प्रगटावदात कि ॥५॥

श्रीसेढी तटनो तटइ, प्रगट कियउ जिण थंभण पास ।
कुष्ट गमाड़यउ देहनो, ते खरतर गच्छ पूरइ आस कि ॥६॥
संवत सोल सत्तोतरइ (१६१७), अणहिल पाटण नगर मझार ।
श्रीगुरु पहुंता विचरता, सहु भवियण मन हर्ष अपार ॥७॥
केई कुमति कलंकिया, बोलइ सूत्र अरथ विपरीत ।
निज गुरु भाषित ओलवइ, तिहां कणि श्रीगुरु पाम्यो जीत कि ॥८॥
कंकाली मही मूलगौ, पंडित तणौ वहै अभिमान ।
सागर छीतर सम थयो, जिहि उदयौ खरतर गुरु भानि कि ॥९॥
पाटण मांहि पंचासरौ, पाडा पाखलि जे पोशाल ।
पौल देई पैशी रह्यौ, जे मुखि लावत आल पंपाल कि ॥१०॥
गच्छ चौरासी मेलवी, पंच शास्त्र नी साखि उद्वार ।
जीत्यउ खरतर राजियौ, ए सहुको जाणै संसार कि ॥११॥
श्रुति उघाड़ा पौरसी, बहु पड़िपुना कहतां दोष ।
मृषावाद इम बोलतां, बीजौ व्रत किम पामै पोष कि ॥१२॥
घणा दिवस ना बाकुला, मांडा गोरस लीधा वीर ।
विधिवादइ साधु लिया, ठामि २ ए दीखै हीर कि ॥१३॥
वर्धमान जिन वा (पा?) रणै, लीधा वासी शुद्ध आधा(हा?)र ।
संघट्टा तेहना तुम्हें, टालो छो ए कवण आचार कि ॥१४॥
पर्व चारि पोसह तणा, बोलइ सूत्र अरथ नै भाखि ।
पर्व पखै पोसह करौ, तेहनी नवि दीसै किह साखि कि ॥१५॥
सातवीस झाझेरड़ा, इम पूछइवा छइ बहु बोल ।
ते सूधी परि सदहो, भव भ्रामक कांइ (ग) वाओ निटोल कि ॥१६॥

रोस रोस हम मनि नहीं, एक जीभ किम करउं वखाण।
श्रीजिनकुशल सूरिन्द्र नै, समरणि लाभै कोड़ि कल्याण कि ॥१७॥

गहुंली नं० (२६) राग:—गूजरी।

अब मइ पायउ सब गुणज्ञांण।
साहि अकबर कहइ ए सुहगुरु, जिनशासन सुलताण ॥अब०॥आंकणी॥
यतीय सती मइं बहुत निहाले, नही को एह समान।
के क्रोधी के लोभी कूड़ा, केइ मन धरइ गुमान ॥१॥अब०॥
गुरुनी वाणि सुणी अवनिपती, बूझयउ थइ सन्मान।
देस विदेश जीऊ हिंस्या दली, भेजी निज फुरमान ॥२॥अब०॥
श्रीजिनमाणिक सूरि पटोधर, खरतरगच्छ राजान।
चिरजीवो जिनचंद यतीश्वर, कहइ मुनि"लब्धि"सुजान॥३॥अब०॥

गहुंली नं० (२७) राग:—गूजरी।

दुनिया चाहइ दौ सुलतान।
इक नरपति इक यतिपति सुन्दर, जाने इह रहमांन ॥दु०॥आंकणी॥
राय राणा भू अरिजन साधी, वरतावो निज आण।
बब्बर वंस हुमाऊ नंदन, अकबर साहि सुजांण ॥१॥दु०॥
विधि पथ हीलक दुरजन जनके, गालो मद्द अभिमान।
श्रीवंत सुत सब सूरि सिरोमणी, जग मांहि "जुगप्रधान" ॥२॥दु०॥
चइठ्ठ सिंहासण हुकुम सुनावति, कौ नवि खंडत आण।
मिर 'मलक' बहु उनकुं सेवति, इनकुं मुनि राजान ॥३॥दु०॥

इक छत्र सिरु वरि मथाडंबर, धारति दोऊ समान ।
कहति "लब्धि" जिनचंद धराधर, प्रतिपो जहां दोऊ भांन ॥भा० दु०॥

गहुंली नं० (२८) रागः—धवल धन्याश्री ।

नीकौ नीकउरी जिनशासनि ए गुरु नीको ।
युगप्रधान जगि जंगम एही, दीयउ जसु अकबर ठो(टो?)कउरी॥जि०॥आं०
राज काज (आज) हम सुन्दर, सफल भयउ अब नीको ।
साहि अकबर कहइ जु मोकुं, दरसण थयो गुरुजी कउरी ॥१॥जि०॥
मोहन रूप सुगुरु बडभागी, लह्यौ मान श्रीजीउ को ।
जे गुरु उपर मद मच्छर धरतां, हुउ मुख तिहकु फोकउ री॥२॥जि०॥
श्रीगुरु नामि दुरति हरि भाजइ, नाद सुणी जिउ सीह को ।
सार (ह?)श्रीवंत सुतन चिर जीवउ, साहिब "लब्धि" मुनी को ॥३॥

गहुंली नं० (२९) रागः—सोरठी ।

आज उछरंग आणंद अंगि उपनौ,
आज गच्छ राज ना गुण थुणीजइ ।
गाम पुरि पाटणइ रंगि वधावणा,
नवनवा उछव संघ कीजइ ॥ आज०॥आ०॥
हुकम श्री साहि नइ पंच नदि साधिनइ,
उदय कीयउ संघनो सवायौ ।
संघपति सोमजी, सुणउ मुझ विनती,
सोय जिणचंद गुरु आज आयो ॥१॥आ०॥

साहि प्रतिबोधता पंच नदी साधतां,

सुजसमइ जास जगि भेर वागी ।

"लब्धिकलोल" मुनि कहइ (कहत्ति) गुरु गावतां,

आज मुझ परम मनि प्रीत जागी ॥२॥आ०॥

---

(३०) गहुंलो

सुगुरु मेरउ कामित कामगवी ।

मनशुद्ध साही अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥१॥सु०॥

सकल निसाकर मंडल समसरि, दीपति वदन छवि ।

महिमंडल मइ महिमा जाकी, दिन प्रति नवीनवी ॥२॥सु०॥

जिनमाणिक सूरि पाटि उदयगिरि, श्रीजिनचंद्र रवी ।

पेखत ही हरखत भयउ मन मइ, "रत्न निधान" कवी ॥३॥सु०॥

---

(३१) सुयश गीत ॥ रागः—धन्याश्री ॥

नमो सूरि जिणचन्द दादा सदादीपतउ,

जीपतउ दुरजण जण विशेष ।

रिद्धि नवनिद्धि सुखसिद्धि दायक सही,

पादुका प्रहसमइ उठि देख ॥ १ ॥ नमो० ॥

सधवट मोटिकउ बोल खाटयउ खरउ,

शाहि सलेम जसकीध सेवा ।

गच्छ चउरासी ना मुनिवर राखिया,

साखीया सूरिजचन्द देवा ॥ २ ॥ नमो० ॥

भाग सोभाग वइराग गुण आगला,

जीवता कलियुगि जीव जाण्यउ ।

अन्तलगि आतम धरम कारिज(क)री,

स्वर्ग पहुतां पछी सुर वखाण्यउ ॥ ३ ॥ नमो० ॥

खरतर सेवकां सुरतरू सारिखउ,

कष्ट संकट सवि दूर कीजइ ।

"हर्षनंदन" कहइ चतुविध श्रीसंघ,

दिन दिन दौलति एम दीजइ ॥ ४ ॥ नमो० ॥

॥ श्रीजिनसिंहसूरि गीतानि ॥

रागः—वेलाउल

(१)

शुभ दिन आज वधाइ, धवल मंगल गावो माइ ।
श्रीजिनसिंहसूरि आचारज, दीपइ बहुत सवाइ ॥१॥शुभ०॥
शाहि हुकम श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, सइंहथि दीन बडाइ ।
मंत्रीश्वर कर्मचंद्र महोच्छव, कीनउ तबहुं बनाइ ॥२॥शु०॥
पोतिशाह अकबर जाकुं मानत, जानत सब लोकाइ ।
कहइ 'गुणविनय' सुगुरु चिरजीवउ,श्रीसंघ कुं सुखदाइ ॥३॥शु०॥

---

(२) रागः—मेवाडउ

श्रीगौतम गुरु पायनमी, गाउं श्री गच्छराज
श्रीजिनसिंघ सूरीसरु, पूरवइ वंछित काज ॥
पूरवइ वंछित काज सहगुरु, सोभागी गुण सोहइ ए
मुनिराय मोहन वेलि ने परे, भविक जन मन मोहइ ए ।
चारित्रपात्र कठोर किरिया, धरमकारज उद्यमी,
गच्छराजना गुणगाइस्युंजी, श्रीगौतम गुरु पयनमी ॥१॥
गुरु लाहोर पधारिया, तेडाव्या कर्मचंद ।
श्री अकबर ने सहगुरु मिल्या, पाम्या परमाणंद ।
पामीया परमाणंद ततक्षण, हुकम दिउ उठो ने कियो ।

अत्यंत आदर मान गुरुने, पादशाह अकबर दियउ।
धर्म गोष्ठि करतां दया धरता, हिंसा दोष निवारिया।
आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥२॥
श्रीअकबर आग्रह करी, काश्मीर कियो रे विहार,
श्रीपुरनगरसोहामणुं, तिहां वरतावी अमार ॥
अमार वरती सर्व धरती, हुओ जयजयकार ए,
गुरु सीत ताप(ना) परीसह, सह्या विविध प्रकार ए।
महालाभ जाणी हरख आणी, धीरपणुं हियडे धरी,
काश्मीर देश विहार कीधो, श्रीअकबर आग्रह करी (३)
श्री अकबर चित रंजियो, पूज्यने करइ अरदास।
आचारिज मानसिंघ करउ, अम मन परमउल्लास
अम्ह मन आज उलास अधिकउ, फागुण शुदी बीजइ मुदा।
सइहत्थि जिनचंदसूरी दीधी, आचारिज पद संपदा।
करमचंद मंत्रीसर महोत्सव, आडंबर मोटो कियो।
गुरुराजना........................... ॥४॥
गुण देखि गिरुआ, वरीस सह गुरु, चापडां चडती कला।
चांपशी साह मल्हार चांपल. देवि माता तन इला,
पादसाह अकबरसाहि परख्यो, श्रीजिनसिंघ सूरि चिरजयउ।
आसीस पभणइ "समयसुन्दर", संघ सहु हरखित थयउ ॥५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां जकड़ी गीतं समाप्तम्

(३) गुरु गीतम्

आज मेरे मन की आश फली ।
श्रीजिनसिंहसूरि मुख देखत, आरति दूर टली ॥१॥
श्रीजिनचंद्रसूरि सइंहत्थइ, चतुर्विध संघ मिली ।
शाहि हुकम आचारज पदवी, दीधी अधिक भली ॥२॥
कोडि वरिस मंत्री श्रीकरमचंद्र, उत्सव करत रली ।
"समयसुन्दर" गुरुके पदपंकज, लीनो जेम अली ॥३॥

---

(४)
जिनसिंहसूरि हीडोलण गीतं

सरस्वति सामणि वीनवुं, आपज्यो एक पसाय ।
श्रीआचार्य गुण गाइमुं, हीडोलणा रे आणंद अंगि न माय ॥१॥ही०॥
वांदउ श्रीजिनसिंहसूरि, ही० प्रह उगमत(ल)इ सूरि ।ही०।
मुझ मन आणंद पूरि, ही० दरसण पातिक दूरि ॥आं०॥
मुनिराय मोहण वेलड़ी, महियल महिमा आज ।
चंद जिन चढ़ती कला ही० श्रीसंघ पूरवइ आस ॥२॥
सोभागी महिमा निलउ, निलवट दीपइ नूर ।
नरनारि पाय कमल नमइ, हो० प्रगट्यो पुण्यपडूर ॥३॥ही०॥
चोपड़ा वंशइ परगडउ, चांपसी शाह मल्हार ।ही०।
मात चांपल दे उरि धर्या, ही० प्रगटयउ पुण्य प्रकार ॥४॥ही०॥
चौरासी गच्छ सिर तिलउ, जिनसिंहसूरि सूरीस ।
चिरजयउ चतुर्विध संघ सुं, ही० 'समयसुन्दर' द्यइ आसीस ॥५॥ही०

—:**:—

(५) जिनसिंहसूरि गहुंली

चालउ सहेली सहगुरु वांदिवाजो, सखि मुझ मनि वांदिवानो कोड़ रे।
श्रीजिनसिंहसूरि आवीयाजो, सखो करूं प्रणाम कर जोड़ रे ।१।चा०
मात चांपलदे उरि धर्याजी, सखो चांपसो शाह मल्हार रे।
मनमोहन महिमा निलउजो, सखी चोपड़ा साख श्रृङ्गार रे ।२।चा०
वइरागइ व्रत आदर्योजी, सखी पेंच महाव्रत धार रे।
सकल कलागम सोहनाजी, सखो लब्धि विद्या भंडार रे ॥३॥चा०॥
श्री अकबर आग्रह करिजी, सखी कास्मीर कियउ विहार रे।
साधु आचारइ साहि रंजीयउ रे, सखो तिहां वरताविं अमारि रे।४।चा०
श्रीजिनचंद्रसूरि थापोयउजी, सखी आचारिज निज पटधार रे।
संघ सयल आस्या फली, सखो खरतर गच्छ जयकार रे ।५।चा०।
नंदि महोच्छव मंडोयउजी, सखि कर्मचंद्र मंत्रीस रे।
नयर लाहोर वित्त बावरइजो, सखो कवियण कोडि वरीस रे ।६।चा०।
गुरुजी मान्या रे मोटे ठाकुरेजो, सखी गुरुजी मान्या अकबरसाहि रे।
गुरुजी मान्या रे मोटे ऊंबरेजो, सखी जसु श त्रिभुवनमांहि रे ।७।चा०
मुझ मन मोह्यो गुरुजी तुम गुणेजो, सखि जिम मधुकर सहकार रे।
गुरुजी तुम दरसण नयणे निरखतांजी, सखी मुझमनि हर्षअपार रे।८।
चिर प्रतपइ गुरु राजीयउजी, सखो श्रीजिनसिंघसूरीस रे।
'समयसुंदर' इम विनवइजी, सखो पूरउ माहरइ मनहीं जगीस रे।६।चा०

बधावा (६)

आज रंग वधामणां, मोतीयडे चउक पूरावउ रे।
श्रीआचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे ॥१॥आ०॥

जुगप्रधान जगि जाणीयइ, श्रीजिनचंदसूरि मुणिंद रे।
सइहथि पाटइ थापीया, गुरु प्रतपइ तेजि दिणंद रे ॥२॥आ०॥
सुर नर किन्नर हरषीया, गुरु सुललित वाणि वखाणइ रे।
पातिशाहि प्रतिबोधियउ, श्रीअकब्बर साहि सुजाण रे ॥३॥आ०॥
बलिहारी गुरु वणयडे?(वयणडे)बलिहारी गुरु मुखचन्द रे।
बलिहारी गुरु नयणडे, पेखहांत परमाणंद रे ॥४॥आ०॥
धन चांपल दे कूखड़ी, धन चांपसी साह उदार रे।
पुरष रत्न जिहां उपना, श्री चोपड़ा साख शृङ्गार रे ॥५॥आ०॥
श्री खरतर गच्छ राजियउ, जिनशासन माहि दीवउ रे।
"समयसुंदर" कहइ गुरु मेरउ, श्रीजिनसिंघसूरि चिर जीवउ रे॥६आ०

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्
॥ श्री हर्षनन्दन मुनिनालिपीकृतम् ॥

———**———

(७)

आज कुं धन दिन मेरउ।
पुन्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥ १ ॥ आ० ॥
श्री जिनसिंहसूरि तुंहि (२) मेरे जीउ में, सुपनइ मइं नहींय अनेरो।
कुमुदिनी चन्द जिसउ तुम लीनउ, दूर तुही तुम्ह नेरउ ॥२॥आ०॥
तुम्हारइ दरसण आणंद (मोपइ) उपजती, नयन को प्रेम नवेरउ।
"समयसुन्दर"कहइ सब कुं वलभ, जीउ तुं तिन थइ अधिकेरउ॥३आ०

———

(८) चौमासा गीत।

श्रावण मास सोहामणो, महियल बरसे मेहो जी।
बापीयड़ारे पिउ २ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी ॥
अम मन सुगुरु सनेह प्रगट्यो, मेदिनी हरयालियां।
गुरु जीव जयणा जुगति पालइ, वहइ नीर परणालियां ॥
सुध क्षेत्र समकित बीज वावइ, संघ आनंद अति घणो।
जिनसिंघ सूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणो ॥ १ ॥
भलइ आयउ भादवउ, नीर भर्या नीवाणो जी।
गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिही बखाणो जी ॥
वखाण कल्पसिद्धांत वांचइ, भविय राचइ मोरड़ा।
अति सरस देसण सुणी हरषइ, जेम चंद चकोरड़ा ॥
गोरडी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंहसूरि मुणिंद गातां, भलै रे आव्यो भादवउ ॥२॥
आसू आस सहु फली, निरमल सरवर नीरो जी।
सहगुरु उपशम रस भर्या, सायर जेम गंभीरो जी ॥
गंभीर सायर जेम सहगुरु, सकल गुण मणि सोहए।
अति रूप सुंदर मुनि पुरंदर, भविय जण मण मोहए ॥
गुरु चंद्रनो परि झरइ अमृत, पूजतां पूरइ रली।
सेवतां जिनसिंध सूरि सह गुरु, आसू मास आसा फली ॥ ३ ॥
काती गुरु चढती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
धरतीयइ रे धान नीपनां, जन मनि परमाणंदो जी ॥
जन मनि परमाणंद प्रगट्यो, धरम ध्यान थया घणा ॥

वलि परव दिवाली महोत्सव, रलीय रंग वधामणा ॥
च्उमास च्यारे मास जिनसिंघ, सूरि संपद आगला ।
वीनवइ वाचक "समय सुन्दर", काती गुरु चढ़ती कला ॥४॥

(९) गहुंली

आचारिज तुमे मन मोहियो, तुमे जगि मोहन वेलि ।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि ॥ १ ॥आ०॥
राय राणा सव मोहिया, मोह्यो अकवर साह रे ।
नर नारी रा मन मोहिया, महिमा महियल मांह रे ॥ २ ॥आ०॥
कामण मोहन नवि करौ, सुधा दीसो छो साधु रे ।
मोहनगारा गुण तुम तणा, ए परमारथ साध रे ॥ ३ ॥आ०॥
गुण देखी राचे सहुको, अवगुण राचे न कोय रे ।
हार सहुको हियड धरै, नेउर पाय तलि होय रे ॥ ४ ॥आ०॥
गुणवंत रे गुरु अम्हतणा, जिनसिंहसूरि गुरुराज रे ।
ज्ञान क्रिया गुण निर्मला, "समय सुन्दर" सरताज रे ॥ ५ ॥आ०॥

(१०) गुरुवाणी महिमा गीत

गुरु वाणी (जग) सगलउ मोहीयउ, साचा मोहण वेलो जी ।
सांभलता सहुनइ सुख संपजइ, जाणि अमी रस रेलो जी ॥१॥गुरु०॥
बावन चंदन तइं अति सीतली, निरमल गंग तरंगो जी ।
पाप पखालइ भवियण जण तणा, लागो मुझ मन रंगो जी ॥२॥गुरु०॥

वचन चातुरी गुरु प्रतिबूझवी, साहि "सलेम" नरिंदो जी ।
अभयदान नउ पडहो बजावियउ, श्रीजिनसिंह सूरिंदो जी ।३।गुरु०॥
चोपड़ा वंशइ सोभ चढ़ावतउ, चांपसी शाह मल्लारो जी ।
परवादी गज भंजण केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी ।४।गुरु०॥
युगप्रधान सईहाथइ थापिया. अकबर शाहि हजूरो जी ।
'राजसमुद्र' मनरंगइ उच्चरइ, प्रतपउ जां ससि सूरो जी ।५।गुरु०॥

---

(११) गच्छपति पद प्राप्ति गीत

श्रीजिनसिंहसूरि पाटइ बइठा, श्रीसंघ आव्या (ज्ञा?) मान रे ।
खरतरगच्छपति साही (पदवो) पाइ, वाध्यउ दिन दिन वान ॥ १ ॥
माई ऐसा सदगुरु वंदीयइ, जंगम जुगहपूरधान रे ।
कोडि दीवाली राज करउ ज्युं, ध्रुवतारा असमान रे ।२।मा०॥
सूरिमंत्र सिर छत्र विराजइ, क्षमा मुगट प्रधान रे ।
सुमति गुपति दुइ चामर बींजइ, सिंहासण धर्मध्यान रे ।३।मा०॥
श्रीसंघ रे युगप्रधान पदवी लही, आया "मकुरबखान" रे ।
साजण मण चिंत्या हुआ, मल्या दुरजण माण रे ।४।मा०॥
श्रीसंघ रंग करइ अति उच्छव, दीधा बहुला दान रे ।
दश दिशि कीर्त्ति कवियण बोलइ, 'हरषनन्दन' गुणगान रे ।५।माई०॥

---

(१२) ॥निर्वाण गीतं॥ ढालः—निंदलरी

मेडतइ नगरि पधारीया, श्रीजिनसिंह सुजाण हो । पूजजी० ।
पोस वदि तेरस निसि भरइ, पाम्यउ पद निरवांण हो ।१।पूजजी०॥

तुम पउढयां माहरे किम सरइ, पउढण नी नही वार हो ।पूजजी०॥
नयण निहालउ नेह सुं, बइठउ सहू परिवार हो ॥ आंकणी० ॥
दीर्घ नींद निवारीयइ, धर्म लगइ प्रस्ताव हो । पूजजी० ॥
राइ प्रायच्छित साचवउ, पडिकमणउ शुभ भाव हो ॥२॥पू०॥
झालर बाजी देहरइ, वाजउ संख पडूर हो ।
तरवर पंखी जागीया, जागउ सुगुरु सनूर हो ॥३॥पू०॥
प्रहफाटी पगडउ थयउ, हीयउ पिण फाडण हार हो ।
बोलायां बोलइ नहीं, कइ रूठउ करतार हो ॥४॥पू०॥
समरइ सगला उंबरा, "मुकुरवखान" नबाब हो ॥पू०॥
कागल देस विदेश ना, वांची करइ (उ?) जबाव हो ॥५॥पू०॥
लहुडा चेला लाडिला, मी(वि?)नति करइ विशेष हो ॥पू०॥
पाटी परवाडि दीजीयइ, मुहडइ सामउ देख हो ॥६॥पू०॥
ए पातिसाही मेवडउ, ऊभो करइ अरदास हो ॥पू०॥
एक घड़ी पडखुं नहीं, चालउ श्री जी पास हो ॥७॥पू०॥
आवी वांदिवा श्राविका, ओसवाल श्रीमाल हो ॥पू०॥
यथासमाधि कहइ करउ, एक वखाण रसाल हो ॥८॥पू०॥
बोलणहारउ चलि गयउ, रह्या बोलावण हार हो ॥पू०॥
आप सवारथ सोझव्यउ, पाम्यउ सुरलोक सार हो ॥६॥पू०॥
मौन ग्रह्यउ मनचिंतवी, कीधउ कोइ आलोच हो ॥पू०॥
सगला शिष्य नवाजीया, भागउ मूल थी सोच हो ॥१०॥पू०॥
पाट तुम्हारइ प्रतपीयउ, श्रीजिनराज सनूर हो ॥पू०॥
आचारिज अधिकी कला, श्रीजिनसागर सूरि हो ॥पू०॥११॥
भवि २ थाज्यो वंदना, श्रीजिनसिंह सूरिंद हो ॥पू०॥
सानिध करज्यो सर्वदा, 'हरषनन्दन' आणंद हो ॥१२॥पू०॥

श्री क्षेमराज उपाध्याय गीतं

सरसति करि सुपसाउ हो, गाइ सु सुहगुरु राउहो ।
गाइसुं सुह गुरु सफल सुरतरु, गछि खरतर सुहकरो ।
महियलइ महिमावंत मुणिवर, बालपणि संजम धरो ।
सिद्धान्त सार विचार सागर, सुगुणमणि वयरागरो ।
जयवंत श्री उवझाय खेमराज, गाइसु सही ए सुह गुरो ॥१॥
भवियण जण पडि बोहइ हो, छाजहडह कुलि सोहइ हो ।
छाजहड कुलि अवतरीय सुहगुरु, साह लीला नन्दणो ।
बर नारि लीलादेवी उयरइं, पाप तापह चन्दणो ।
दिखीया श्री जिनचन्द्रसूरि गुरि, संवत पनर सोलेत्तरइ ।
सीखविय सुपरइं सोमधज गुरि, भवियण, (जण) संशय हरइ ॥२॥
उपसम रसह भंडारू हे, संजमसिरि उर हारू ए ।
संजम सिरि उर हार सोहइ, पूरव ऋषि समवडि धरइ ।
नवतत्त नवरस सरस देसण, मोह माया परिहरइ ।
जिणआण धरइ हीयडइ, पंच पमाय निवारए ।
उवझाय श्री खेमराज सुहगुरु, चवद विद्याधारए ॥३॥
कनक भणइ सिरनामी हे, मइ नवनिधि सिद्धि पामी हे ।
पामीय सुहगुरु तणीय सेवा, सयल सिद्धि सुहामणी ।
चाउले चौक पूरेवि सुहव, वधावउ वर कामिणी ।
दीपंत दिनमणी समउ तेजइ भवियजण तुम्हि वंदउ ।
उदिवंता श्री उवझाय खेमराज, 'कनक' भणइ चिरनंदउ ॥४॥
गुरु गीतं (वर्द्ध० भं० गुटका से) १७ वीं सदी लि०

श्री भावहर्ष उपाध्याय गीतं

श्री सरसति मति दिउ घणी, सुहगुरु करउ पसाय।
हरष करी हुं वीनवुं, श्रीभावहर्ष उवझाय ॥ १ ॥
श्री भावहर्ष उवझायवर, प्रतपउ कोडि वरीस।
तूठी सरसति देवता, हरषि दीयइ आसीस ॥ २ ॥
तुडि करीनइ किम तोली(य)इ, धीर गम्भीर गुणेहि।
मेरु महासागर मही, अधिका ते गुरु देहि ॥ ३ ॥
दिन दिनि संजमि संचडइं सायर जिम सित ! पाखि।
तप जप खप तेहवी करइ, जिसी न लाभइ लाखि ॥ ४ ॥
सुरतरु जिम सोहामणा, मन वंछित दातार।
हर्ष ऋद्धि सुख संपदा, तरु श्रावण जलधार ॥ ५ ॥

राग :—सोरठी

जलधर जिउं जगत्र जीवाडइ, मन परम प्रीति पदि चाडइ।
देसण रस सरस दिखाडइ, दुख दहनति दूरि गंमाडइ ॥ ६ ॥
श्रावक चातक उछाह, मोर जीम श्री संघ साह।
सरवर ते भवियण श्रवण, वाणी रसि भरियइ विवण ॥ ७ ॥
ऊगइ तिहां सुकृत अंकूर, टलइ मिथ्या भर तमल (तिमिर?)पूर।
संताप पाप हुइ चूर, जिनशासन बिमवणउ नूर ॥ ८ ॥
श्री भावहर्ष उवझाय, ते जलहिर कहियइ न्याय।
उपसम रसि पूरित काय, सोहइ संसारि सछाय ॥ ९ ॥

दूहा:—श्रीजिन माणिकसूरि गुरु, दीधउ पद उवझाय।
जेसलमेरइ माहि सुदि, दसमि नमउ तसु पाय ॥ १० ॥

सुगुरु पाय प्रमोद नमीयइ, दुख दुरगति दूरइ गमीयइ।
भव सागरि भिमि न भमीयइ, सुख संपति सरिसा रमीयइ ॥११॥

खरतरगछि पूनिम चन्द, गुरु दीठइ मनि आणंद।
सेवंता सुरतरु कंद, रंजइ गुरु वचनि नरिंद ॥१२॥

साह कोडा नंदन धन्न, कोडिम दे उयरि रतन्न।
'कुलतिलक' सुगुरु चा सीस, उवझाय सदा सुजगीस ॥१३॥

श्री भावहर्ष हितकारी, सुधउ मुनि पंथ विचारी।
पंच समिति गुपति गुणधारी, विहरइ गुरु दोष निवारी ॥१४॥

श्री भावहर्ष उवझाया, चिरजीवउ मुनिवर राया।
मइं हरखइ सुहगुरु गाया, मुझ हीयडइ अधिक सुहाया ॥१५॥

(संग्रहस्थ पत्र १ तत्कालीन लि० रचित)

सुखनिधान गुरुगीतम्

राग धन्याश्री

सुगुरु के पणमो भवियण पाया,
श्रीसमयकलश गुरु पाटि प्रभाकर, सुखनिधान गणिराया ।१।

हुंवड वंस विख्यात सुणीजइ, धइ सुख सम्पति ध्याया।
गुणसेन वदति सुगुरु सेवातइं, दिन २ तेज सवाया ।२।

* १ सं० १६८९ चैत्रवदि ३ दिने शुक्रवारे पं० गुणसेन लिखीतं
ऋषिदेव रतन वाचनार्थं (श्रीपूज्यजी संग्रह हथगुटकेसे)

श्री साधुकीर्त्ति जयपताका गीतम्

॥ जयपताका गीत ॥

सोलहसइ पंचवीसइ समइ, आगरइ नयरि विशेष रे।
पोसहकी चरचा थकी, खरतर सुजस नी रेख रे। १।
खरतर जइत पद पामीयउ, साधुकीर्त्ति जय सार रे।
साहि अकबर कह्यउ श्रीमुखइं, पण्डित एह उदार रे। खर०
"वुद्धिसागर" तणी वुद्धि गइ, भाखीयउ अति अविचार रे।
पष्ट थया तपा ऋषिमती, खरतरे लह्यउ जयकार रे। २।
संस्कृत तपलो न बोलीयउ, थया खिसाण अपार रे।
चतुर अकबर मुख पंडिते, करी सागर वुधि हार रे। ३। खर०
तर्क व्याकर्ण पढ़यउ नहीं, मरम ए सुण्यउ अखण्ड ए।
मलम सागर वुधि ऊवडयउ, जाणीयउ अशुचि नउ पिंड रे। ४। ख०
गंगदासि साह धोधू तणइ, मोड़ीयउ कुमत नउ माण रे।
बचन पतिशाह ए बोलियउ, वुद्धि सागर अजाण रे। ५। खर०
पीतलि मांहि थी नीकली, अहवा रङ्ग पतङ्ग रे।
ऋषिमती सहु अछइ एहवा, सागर वुद्धि तणइ भंग रे। ६। खर०
हुकम करि पातिशाहइ दीया, भेरि दमाम नीसाण रे।
गाजतइ वाजतइ आवीया, खरतर सुजस वखाण रे। ७। खर०

श्रीजिनचन्द्रसूरि सानिधइ, "दया कलश" गुरु सीस रे।
"साधुकीर्त्ति" जगि जयत छइ, कहइ कवि "जल्ह" जगीस रे।८।खर०९।
॥ इति श्री साधुकीरति गुरु जयपताका गीतं ।

(२)

संवत् दस सय असीयइ पाटणइ, ची (चैत्य) वासी मलिमाणो जी।
खरतर विरुद लहयउ दुलंभ मुखइ, सूरि जिणेसर जाणोरे । १ ।
जय पाडयउ (पाम्यो?)खरतर पुरि आगरइ, साधुकीर्त्ति बहु नूरे जी।
पोसह पर्व दिनइ जिण थापीयउ, अकबर साहि हजूरे रे ।२। जय
आगरइ पुरि मिगसरि धुरि बारसी, सोलपंचवीस वरीस जी।
पूरव बिरुद सही उजवालियउ, साधुकीर्त्ति सुजगीशो रे ।३।ज०
च्यारि वरण खरतर (कुं)जय (जय)करि, जाणइ बाल-गोपालजी।
बूठा वाट बटाऊ सहु कहइ, कुमती सिर पंच तालोजी ।४। जय
कुबुद्धि पष्ट थयउ तउ पिण सही, नीलज्ज अनइ..................॥
तस्कर जिम दुइ भेरि बजाविनइ, आ०यउ रयणी ठामजी ।५।ज०
चाइमल मेघदास नेतसी, ले अकवर फुरमाणो जी।
पंच शब्द बजावी जय लहयउ, खरतर कीयउ मंडाणो जी ।६।ज
श्रीजिनदत्त कुशलसूरि सानिधइ, उत्तम पुण्य प्रकारो जी।
कर जोडी नइ"खइपति"वीनवइ,खरतर जय-जयकारोजी ।७।ज
इति श्री जयपताका गीतं ॥ श्री । श्रा० भरही पठनार्थं ॥
(पत्र १ श्रीपुजजी सं०)

---

(३) गहुंली राग—असावरी

वाणि रसाल अमृत रस सारिखी, मोह्या भवियण लोइ जी।
सूत्र सिद्धंत अर्थ सूधा कहइ, सुणतां सवि सुख होइ जी ॥१॥
सद्गुरु साधुकीर्त्ति नितु वन्दीयइ, उपशम रस भंडारो जी।
शील सुदृढ़ संजम गुण आगला,सयल संघ सुखकारो जी ।स०।
पंच सुमति त्रण गुप्ति भली परइ, पालइ निरतीचारो जी।
जे नर-नारी पय सेवा करइ, दुत्तर तरइ संसारो जी ॥२॥स०॥
वस्तिग नन्दन गुरु चढ़ती कला, ओसवंश सिंगारो जी।
धन खेमल दे जिणि उयरइ धर्या,सचिंती कुलि अवतारो जी ।३स०
दरसणि नवनिधि सुख सम्पति मिलइ, दयाकलश गुरु सीसोजी।
"देवकमल" मुनि कर जोडी भणइ, पूरवउ मनह जगीसो जी ।४।स०

॥ सं० १६२५ वर्षे श्रावणसुदि १० आगरा नगरे जिनचन्दसूरि राज्ये हंसकीर्त्तिं लिखितं श्राविका साहिब्री पठनार्थं ॥ पत्र १ श्री-पुजजीके संग्रहमें। (अनाथी, पार्श्व गीतसह)

(४) कवित्त

साधुकीर्ति साधु अगस्ति जिसो, सब सागरको नाद उतार्यो।
पतिशाह अकबरके दरबार जीतउ जिणवाद कुमति विदार्यो।
पीयउ जिण तिण चरुवार भडार दीयउ रघु नीति विगार्यो।
सकुच्यउ अद्ध सागर मांजि गयो,
गरब इक हानि भज गच्छ निकार्यो ।१।

कवि कनकसोम कृत

जइतपद वेलि

सरसति सामणी वीनवुं, मुझ दे अमृत वाणि।
मूल थकी खरतर तणा, करिस्युं विरुद बखाणि ॥१॥
श्रावक आवी मिली सुणो, मनधरि अति आणंद।
चित्त विषवाद न को धरउं, साचउं कहइ मुनिंद ॥२॥
सोलहसय पंचीसइ समइं, वाचक दया मुनीस।
चउमासि आया आगरै, बहु परि करि सुजगीस ॥३॥
"रतनचन्द" वयराग गणि, पण्डित "साधुकीर्त्ति"।
"हीररंग" गुण आगलो, ज्ञाता "देवकीरत्ति" ॥४॥
तप करि "हंसकोर्त्ति" भलो, "कनकसोम" जसवंत।
"पुण्यविमल" मनि ध्यान धरि, "देवकमल" बुधिवंत ॥५॥
"ज्ञानकुशल" ज्ञाता चतुर, "यशकुशल" हि जस लिद्ध।
"रंगकुशल" अति रंग करी, "इलानंद" सुप्रसिद्ध ॥६॥
वैरागे चारित्र लीयो, "कीरत्ति(वि)मल" सूजाण।
वड़ जिम साखा विस्तरौ, दिन २ चढ़ते वान ॥ ७ ॥
चालि—नितु दिन २ चडतइ वान, श्री संघ दीयइ बहुमान।
तपले चरचा उठाइ, श्रावकने बात सुणाइ ॥८॥
मो सरिखो पंडित जोइ, नही मझि आगरै कोइ।
तिणि गर्व इसो मन कीधउं, वुद्धिसागर अपयश लीधो ॥९॥

श्रावक आगै इम बोलइं, अम्ह गाथारस(थ?) कुण खोलइ ।
श्रावक कहइ गर्व न कीजइ, पूछी पंडित समझीजइ ॥१०॥
संघवी सतीदास कुं पूछइं, तुम्ह गुरु कोइ इहां छइ।
संघवी गाजी नइं भाखइं, साधुकीर्त्ति छै इम दाखइं ॥११॥
लिखि कागद तिणि इक दीन्हउं, श्रावक वचने न पतीनउं ।
पोसह तिहि एक प्रकार, भ्रमि भूलउ ते अविचार ॥१२॥
साधुकीर्त्ति तत्व विचार्यो, तत्वारथ मांहि संभार्यो ।
पौषध छइं दोइ प्रकार, बूझ्यो नहीं सही गमार ॥१३॥
तिहां लिखत दोष दस दीठा, तपला तब थया निकीठा ।
मिली पद्मसुंदर नइं आखउं, गच्छ त्यासीकी पत राखउं ॥१४॥
दूहा—पद्म सुंदर इम बोलियउं, वंदन नायउं कांइ ।
स्वारथ पडीओ आपणइं, तउं आयो इण ठांइ ॥१५॥
हिव अपराध खमउं तुम्है, पड्यो बरांसउ एह ।
हिव सरणै तुम आविया, कांइ दिखाडउ छैह ॥१६॥
तपले ने संतोषीउ, पिणि सांक्यउं मन मांहि ।
साधुकीर्त्ति जिहां आविस्यै, तिहां हुं आविसुं नांहि ॥१७॥
सुणी बात खरतर खरी, संघ मिल्यो सब आइं ।
गाल बजाडइं ऋषिमती, हिव ढीला तुम्ह कांइं ॥१८॥
चालि—ढीला हिव हम्हे न होस्यां, ऋषिमतीयनकी पत खोस्यां ।
खरतरे तेजसी वोलायो बहु आणंद सुं ते आव्यो ॥१९॥
पंचे मिलि बात पतीठी, परगच्छी हुआ वसीठी ।
चउथान कि चरचा थापों, ते घर लिखि अनइ अम्ह आपउं ॥२०॥

तपला रिष तुं सोचावइं, इहां पदमसुंदर नहीं आवइं ।
करिस्यां पातिसाह हजूर, खरतर घरि वाज्या तूर ॥२१॥
मिगसर बदी छट्ठ प्रभातइं, मिलिआ पातिसाह संघातइं ।
वाइमल्ल बोलायउं पिछाणी, साहि बात सहु गुदराणी ॥२३॥
आणंदइ खरतर माल्हइं, कविराज कइंकी आहवालइं ।
निज २ थानक सवि आया, विहाणइं कविराज बुलाया ॥२३॥
अनिरुद्ध महादे मिश्र, मिलिया तिह भट्ट सहश्र ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत भाखइं, बुधिसागर स्युं स्युं दाखइं ॥२४॥
पंडित कहइ मूढ गमार, तेरो नाम छै बुद्धि कुठार ।
पोषह चरचा दिन पंच, साचउं खरतर पक्ष संच ॥२५॥

दूहा:—

कविराजइं निर्णय कीयउं, जूठउं बुद्धि कुठार ।
साहि पासि जाई कहू, पोषह पर्व विचार ॥२६॥
पदमसुन्दर इम चिंतवइं, इणि हाणइं मो हानि ।
साहि पास जाइ कहइं, द्यो हम जीवीदान ॥२७॥
मिगसर वदी बारस दिने, गया साहि आवासि ।
खरतर पूठइ देवगुरु, तपा गया सब नासि ॥२८॥
साहि हजूर बोलाविआ, श्वेताम्बर कउ न्याय ।
हुं करिस ततखिण खरउं, तेड्या पण्डित राय ॥२९॥

ढाल

हिव तेड्या पंडित रायइं, कविराज सभा बोलायइं ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत बोलइं, खरतर कहि केहनइ तोले ॥३०॥

साहि सुगत दीयइ साबासि, खरतर मनि अधिक उल्हास ।
बुद्धिसागर कछु न जाणइं, साहि साधुकीर्त्ति कुं बखाणइ ॥३१॥
पंडित सभ (ब? भा?) बोलइं एम, निर्णय कीधो छै जेम ।
खरतर गच्छ कउं पक्ष साचउं, तपला पखि कोइ न राचउ ॥३२॥
मूढ़ पंडित सम किम होइ, पातिसाह विचार्यों जोइ ।
तब पदमसुंदर बोलायउ, लुकि रह्यो सभा मांहि नाव्यो ॥३३॥
चउपर्वी पोषह थाप्यो, खरतर कुं जयपद आप्यो ।
गजबजीया खरतर लोक, ऋषिमती थया सब फोक ॥३४॥
विण हुकम भेरि हु (दु?) इं वावइं, तपा राति दीवी ले आवइं ।
पातिसाह सुणी ए बात, तपलारउं करउं निपात ॥३५॥
चाइमल्ल मेघइं छोड़ाया, मान भंग करी कढ़वाया ।
तपला कहइं सर भरि कीजइं, दुरि(इ?)भेरि हुकम इन्ह दीजइं ॥३६॥

दूहा:—

खरतर मनहि विचारीयो, एह बात किम होइ ।
जीती वाजी हारीयइं, करउं पराक्रमकोइ ॥३७॥
धोधू चाइमल्ल नेतसी, मेघउ पारस साह ।
नेमिदास धणराज सहजसिंघ, गंगदास भोज अगाह ॥३८॥
श्रीचंद श्रीवच्छ अमरसी, दरगह परबत वखाण ।
छाजमल गढ़मल भारहू रेडउं सामीदास सुजाण ॥३९॥
चीकानघ (य?)री तिहि मिल्या, महेवचा संघवाल ।
श्रावक सभ (ब?) तेडावीया, महिम के कोटीवाल ॥४०॥

चालि:—

मिलि पहुतावी चांपसि, वइट्ठी छइं जिहां आवासि ।
आदर तिह अधि(क?)उंदीधउं, गुरु मंत्रि चित्त वसि कीधउं॥४१॥
चाइमल्ल मेघइ वात बणाइ, अकब्बर रे तिहां लीया बुलाइ ।
परवत नेमीदास हजूर, दीजइं बाजा हुकम पडूर ॥४२॥
अउलीआ पातिसाहि तूठ्ठउं, सइंहाथि थापि लीउं पूठइं ।
सभ बाजा जइत बजावउं, अपणां पोरह कुं बधावउं ॥४३॥
खोजा छडीदार पठ्ठाया, खरतर साचा जस पाया ।
भेरि मद्दल ढोल नीसाणा, वाज्या चड्यो वोल प्रमाण ॥४४॥
संघ मेलि मिल्यउं आणंदइं, गुरु सोहइ श्रीसंघ वृन्दइं ।
बाजार आगरइं केरइ, पइसारउं कीधउं भलेरइं ॥४५॥
खरतरै जइत पद पायो, मागत जन सहु अबुलायउं ।
पंच वरण व बाइ अनेक, पहिराया संधि विवेक ॥४६॥
हारयउं तपलो सहु जाणइं, खरतर कुं लोक वखाणइं ।
साखी भट्ट छइं इण बातइं, खरतर परव शुद्ध विख्याते ॥४७॥
जिनदत्त कुशल सानिद्धइं, जिनभद्रसूरि वंश वृद्धइं ।
जिनचंद्रसूरि सुप्रसादइ, खरतरे जीतउं इण वादइं ॥४८॥
दया "अमरमाणिक्य" गुरु सीस, साधुकीर्त्ति लही जगीस ।
मुनि "कनकसोम" इम आखइं, चउविह श्रीसंघकी साखइं॥४९॥
(तत्कालीन लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

——:**:——

जयनिधान कृत

साधुकीर्त्ति गुरु स्वर्गगमन गीतम्

सुखकरण श्रीशांति जिणेसरू, समरी प्रवचन बचनए जी।
सोहण सुहगुरु गाईए, नि..............................नभाए जी ॥१॥
चतुर सिरोमणि भावइं वंदीयइ, 'श्रीसाधुकीरति' उवझायो जी।
प्रहसमि भवियण कामित सुरतरू, खरतरगच्छ गुरुरायोजी ॥आं०॥
संवत सोल बतीसइ सुह दिनइ, 'श्रीजिनचंद्रसूरिंदो' जी।
माधव मासइं सुदि पुनम थापिया, पाठक पद आणंदो जी ॥२॥च०॥
सु कुल 'सचिंती' श्रीगुरु उपना, 'खेमलदे' उरि हंसो जी।
'वस्तपाल' पिता जसु जाणिये, मुनिजन महिं अवतंसो जी ॥३॥च०॥
नाण चरण गुण सयल कला धरू, जश परिमल सुविसालो जी।
'अमरमाणिक्य' गुरु पाटइं दीपता, अठमि शशिदल भालो जी ।४।च०।
गाम नयर पुरि विहरी महीयलइं, पडिवोही जणवृन्दो जी।
सोल छयालइ आया संवतइ, पुरि 'जालोर' मुणिंदो जी ॥५॥च०॥
माह बहुल पखि अणसण उच्चरि, आणी निय मन ठामो जी।
....॥६॥च०॥

आउ पूरी चउदसि दिन भलइ, पहुता तब सुरलोक जी।
थूंभ अपूर्व कियउ गुण (रु?)तणउ, प्रणमीजइ बहुलोक जी ॥७॥च०॥
इण कलिकाले श्रीगुरु जे नमइ, भाव धरी नरनारी जी।
समकित निर्मल हुइ वलि तेहनइं, धन कण सुत सुखकारी जी ।८।च०।
धन धन 'साधुकीर्त्ति' रलियामणा, सबही नाम सुहाए जी।
पाय कमल जुग नितु तस प्रणमतां, घरि घरि मंगल थाए जी ।९।च०।
ऊलट आणी सहगुरु गाइया, वाचक 'रायचंद्र' सीसि जी।
आसा पूरण सुरमणि सुरगवी, 'जयनिधान' सुह दीसि जी ॥१०॥च०।

वादी हर्षनन्दन कृत

श्री समयसुन्दर उपाध्यायानां गीतम्

(१) राग (मारूणी)

साच 'साचोरे' सद्गुरु जनमिया रे, 'रूपसीजीरा' नंद ।
नवयौवन भर संयम संग्रह्योजी, सइंहथ 'श्रीजिनचंद' ॥ १ ॥
भले रे विराज्यो उपाध्याय देशमें रे, 'समयसुन्दर' सरदार ।
अधिक प्रतापी वड़ जिम विस्तरै रे, शिष्य शाखा परिवार ॥भले॥२॥
चवदै विद्या आपण अभ्यसी रे, पण्डित राय पडूर ।
छोड़ाया सांडा मयणे मारता रे, रावल 'भीम' हजूर ॥भले०॥३॥
'लाहाउरे' 'अकबर' रंजियो रे, आठ लाख अरथ दिखाड़ ।
वाचक पदवी पण पामी तिहां रे, परगड़ वंश 'पोरवाड़' ॥भले०॥४॥
सिन्धु विहारे लाभ लियउ घणो रे, रंजी 'मखनूम' सेख ।
पांचे नदियां जीवदया भरी रे, राखी धेनु विशेष ॥भले०॥५॥
पहिराया पूरा मुनिवर गच्छ ना रे, प्रणमे भूपति पाय ।
बजड़ाव्या वाजा ताजा मेड़ता रें, रंजी मंडोवर राय ॥भले०॥६॥
वाल्हो लागे चतुर्विध संघ ने रे, 'सकलचंद' गणि शीश ।
वड़वखती वादी सदा रे, 'हर्षनंदन' सुजगीश ॥भले०॥७॥

———

कवि देवीदास कृत

(२) राग:—आसावरी सिन्धुड़ो

'समयसुन्दर' वाणारस वंदिये, सुललित वाणि वखाणो जी ।
राय रंजण गीतारथ गुणनिलो जो, महिमा मेरू समाणो जी ॥स०॥१॥
अरथ करी 'अकब्बर' मन रीझव्यो, वलि कहूं बीजी वातो जी ।
'जेसलमेर' सांडा जीव छोड़ाव्या, रावल करि रलिआतो जी॥स०॥२॥
'शीतपुर' मांहें जिण समझावियो, 'मखनूम' महमद सेखो जी ।
जीवदया परा पडह फेरावियो, राखी चिहुंखंड रेखो जी ॥स०॥३॥
दड़ दिवाने सगले दीपता, संघ घणो सोभागो जी ।
माने मोटा राणा राजिया, वणारीस बडभागो जी ॥स०॥४॥
सद्गुरु सिगलो गच्छ पहिरावियो, लोक मांहे यश लीधो जी ।
'हर्षनन्दन' सरखा शिष्य जेहने, 'वादी' विरुद प्रसिद्धो जी॥स०॥५॥
जन्मभूमि 'साचोरे' जेहनी, वंश 'पोरवाड़' विख्यातो जी ।
मातु 'लीलादे' 'रूपसी' जनमिया, एहवा गुरु अवदातो जी॥स०॥६॥
(श्री) 'जिनचन्दसूरि' संइहथे दीखिया, 'सकलचन्द' गुरु शीशो जी ।
'समयसुंदर' गुरु चिर प्रतपै सदा, द्यै 'देवीदास' आसीसो जी॥स०॥७॥

॥ *इति श्रीसमयसुंदरोपाध्यायानां गीतद्वयं* ॥

[हमारे संग्रहमें तत्कालीन लि० प्रति, पत्र १ से]

———

राजसोम कृत

महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्

(३) ॥ ढाल हांजरनी ॥

नवखंडमें जसु नाम पंडित गिरुआहो, तर्क व्याकर्ण भण्या ।
अर्थ किया अभिराम पदएकणराहो, आठ लाख आकरा ॥१॥
साधु बड़ो ए महन्त 'अकबर' शाहे हो, जेह वखाणीयो ।
'समयसुन्दर' भाग्यवंत पातिशाह पू(तू?)ठोहो,थापलि इम कह्योरे॥२॥
जोवदया जशलीध राउल रंजी हो, 'भीम' 'जेशलगिरि' ।
करणो उत्तम कीध 'सांड़ा' छोड़ाया हो, देशमें मारता ॥३॥
'सिद्धपुर' मांहे शेख 'महम्मद' मोटो हो, जिण प्रतिवोधीयो ।
सिन्धु देश मांहे विशेष 'गायां' छोड़ावी हो, तुरके मारती ॥ ४ ॥
सखर वस्त्र पटकूल गच्छ पहरायो, खरतर गरुअडो ।
बचनकला अनुकूल प्रबंध देखी हो, शास्त्र कीधाघणां ॥ ५ ॥
पर उपगार निमित्ति कीधो सगलो हो,धन-धन इम कहे ।
गीत छंद बहु वृत्ति कलियुग मांहे हो, जिणे शाको कियो ॥ ६ ॥
जुगप्रधान 'जिनचन्द' स्वयंहस्त वाचक हो, पद 'लाहोरे' दियो ।
'श्रीजिनसिंहसूरिंद' शहर 'लवेरे' हो, पाठक पद कीयो ॥ ७ ॥
आगम अर्थ अगाह सदमुख साचो हो, जेणे प्ररुपीयो ।
गिरुओ गुरु गजगाह परिवार पूरो हो, जेहनो परगड़ो ॥ ८ ॥
कीधो क्रियाउद्धार संवत सोले हो, इकाणु समे ।
गौतमने अणुहार पंचाचार पाले हो, घणुं वली खप करे ॥ ९ ॥

अणसण करि अणगार संवत सतरे हो,सय बिडोत्तरे ।
'अहमदावाद' मझार परलोक पहुंचा हो, चैत्र शुदि तेरसे ॥ १० ॥
वादीगज दल सींह पाट प्रभाकर हो, प्रतपे तेहने ।
'हरषनन्दन' अणवीह पण्डित मांही हो, लीह काढी जिणे ॥ ११ ॥
प्रगट जासु परिवार भाग्यवन्त मोटो हो,वाचक जाणीये ।
दिन-दिन जय-जयकार जग जिरंजीवो हो,'राजसोम' इम कहे॥१२॥*

[इति महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतं]

॥ श्रीयशकुशल सुगुरु गीतम् ॥

॥ राग काफी ॥

'श्री यशकुशल' मुनीसर (नागुण) गावो तुम्ह सुखकारी ।
सहु जनने सुखसातादायक, विघ्न विडारण हारी ॥१॥य०॥
ठाम ठाम महिमा सद्गुरुनी, जाणे लोक लुगाइ ।
तिम वलि इण देशे सविशेषै, कहतां नावै काई ॥२॥य०॥
भर दरियावै समरण करतां, हाथे कर ऊबारै ।
ध्यान धरै इक मन जे साचौ, तेहना कारज सारै ॥३॥य०॥
'कनकसोम' पाटै उदयाचल, श्री 'यशकुशल' मुणिन्द ।
दिन दिन अधिको साहिब्र सोहे, जिम ग्रह माहिं चंद ॥४॥य०॥
महिर करी नइ दीजइ दरिशन, जोजइ सेवक सार ।
'सुखरतन' कहै कर जोड़ी नै, भवि भवि तूं ही आधार ॥५॥य०॥

---

* यह गीत बाडमेरके यति श्री नेमिचन्द्रजीसे प्राप्त हुआ है । एत-दर्थ उन्हें धन्यवाद देते हैं ।

कविवर श्रीसार कृत

श्री जिनराजसूरिरास

[रचना समय सं० १६८१]

——***——

....तोरण चंग।

दीठां सगला दुख हरंइ, थायइ अति उछरंग ॥ ६ ॥ मेरी०।

अति सखर सुंदर अति भली, सोहइं घणी ध्रमसाल।

जिह आवी व्यवहारिया, धरम करइ सुविसाल ॥१०॥ मेरी०।

वन वाग वाड़ी अति घणी, तिहां रमइ लोक छयल।

सोहइ नगर सुहामणउ, भोगी करइ सयल ॥११॥ मेरी०।

'रायसिंघ' राय करावियउ, 'नवउ कोट' अमली माण।

कचमहले करि सोभतउ, केहउ करूं वखाण ॥१२॥ मेरी०।

हिव राज पालइ रंग सेती, राजा तिहां 'रायसिंघ'।

वयरी मृगला भांगिवां, ए सादूलोसिंघ ॥१३॥ मेरी०।

प्रतिपयउ 'राठोड़ा' कुलइं, सेवकां पूरइ आस।

पट्टराणी साथइ सदा, विलसहि भोगविलास ॥१४॥ मेरी०।

तेहनइ 'मुहतउ' मलहपतउ, परदुख काटनहार।

'कर्मचन्द' नामइ दिपतउ, बुद्धइं अभयकुमार ॥१५॥ मेरी०।

डोलती 'राखी' जेण पृथ्वी, दिया दान अपार।

'पैंत्रीसइ' मांहि मांडियउ, सगलइ सत्तूकार ॥१६॥ मेरी०।
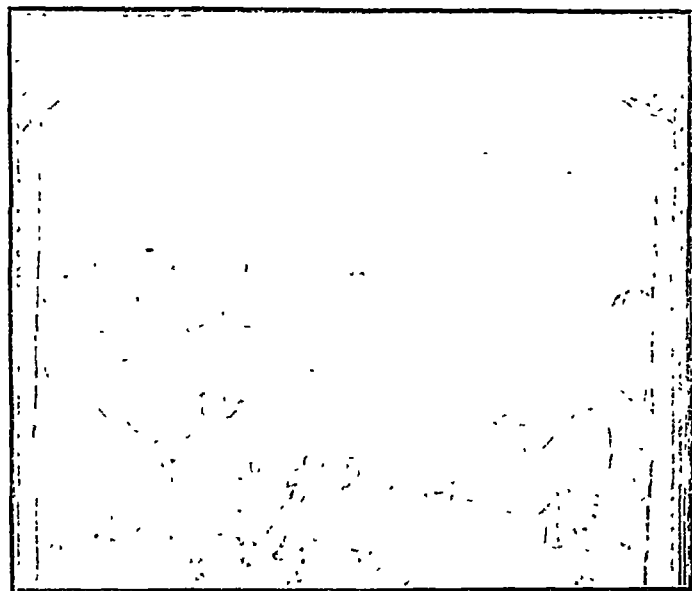
जिनराज सूरिजी—जिन रंगसूरिजी

(शालिभद्र चौपइकी प्रतिसे)

'कोडि' द्रव्य दीधा याचकां, 'लाहोर' नयर उच्छाह।
श्री 'जिनचन्द' युगवर कीया, पत्तगरियउ 'पतिशाहि' ॥१७॥ मेरी०।
'नव' गाम नइ 'नव' हाथीया, तिहां दिया द्रव्य अनेक।
श्री 'जिनसिंहसूरिंद' नइ, आचारिज सविवेक ॥१८॥ मेरी०।
'रायसिंघ' राजा राज पालइ, मंत्रवी तिहि 'कर्मचंद'।
सहू को लोक सुखइ वसइ, दिन-दिन अधिक आणंद ॥१६॥मेरी०॥

दूहा— वसइ तिहां व्यवहारिउ, सोभागो सिरदार।
धर्म धुरन्धर 'धर्मसी', वोहिथ कुल सिणगार ॥ १ ॥
दुखियां नउ पीहर सदा, धर्मी नइ धनवंत।
कुल मंडण महिमा निलउ, गुणरागी गुणवन्त ॥ २ ॥
पतिभक्ता नइ गुणवती, शीयलवती वरियाम।
मनहर नारी तेहनइ, 'धारलदे' इणि नाम ॥ ३ ॥
भणि जाणइ चउसठि कला, रूपइ जीती रंभ।
एहवो नारि को नहि, अद्भूत रूप अचम्भ ॥ ४ ॥
दोगंदक सुरनी परइ, सही सगला संजोग।
निज प्रीतम साथइ सदा, विलसइ नव-नव भोग ॥ ५ ॥

ढाल वीजी—मांहका जोगना नुं कहिज्योरे अरदास। ए जाति।
उत्तम गृह मांहि (ए) कदा रे, पउठि 'धारल' देवि। प्रीतमजी। पउ०
झवकइ मोती झुंवका रे, सुख सज्या नित मेव ॥ प्री० सु०। १।
प्रीतमजी वोलइ अमृत वाणि, प्रीतमजी वोलइ कोयल वाणि।
प्रीतमजी तुं मेरउ सुलताण, प्रीतमजी तुं तो चतुर सुजाण।

प्रीतमजी दिठउ स्वप्न उदार, प्रीतमजी कहउ नइ तासु विचार।
प्रीतमजी थे पण्डित सिरदार ॥ आंकणी० ॥

चोवा चन्दन अरगजा रे, कसतूरि घनसार। प्री० कस्तूरि०।
चिहुं दिशि परिमल महमहइ रे, इन्द्र भुवन आकार ॥प्री० इन्द्र०॥२
दमणा पाडल केतकी रे, जाइ जुही सुविशाल। प्री०। जा०।
फूल तिहां महकइ घणा रे, तिम फुलांरी माल ॥ प्री०ति०।३।प्री०बो०।
दहदिशी दीवा झलहलइ रे, चन्द्रूअडा चउसाल। प्री० चं०।
भींतइ चीतर भिख्या भला रे, वारू वन्नरमाल ॥ प्री० वा० ।४। प्री०
मनहर मोती जालियां रे, करइ कली उजास। प्री० क०।
पुन्य पखइ किम पामीयइ रे, एहवा सखर आवास। प्री०ए०।५।प्री०।
'धारलदे' पउढि तिहां रे, कोइ न लोपइ लीह। प्री० को०।
किउं सूती किउं जागती रे, दीठइ सुहणे सींह ॥ प्री० दी० ।६। प्री०
सुहणउ देखी सुहामणउं रे, पामइ हरख अपार। प्री० पा०।
स्वप्न तणउ फल पूछिवा रे, वीनवीयउ भरतार ॥ प्री० वि० ॥७। प्री०
अमृत समी वाणि सुणीरे, जाग्या 'धरमसी' साह। प्री० जा०।
पुण्ययोग जाणे मिली रे, साकर दूधहि मांहि ॥ प्री० सा० ॥८ ।प्री०।
धरि आणंद इसउ कहइ रे, सखरउ लह्यउ सुपन्न। प्री० स०।
सूरवीर विद्यानिलउ रे, हुइस्यइ पुत्र रतन ॥ प्री० हु०। ९ प्री०।
कुलदीपक वोहित्थरां रे, अन्ति हुस्यइ राजांन। प्री० अं०।
सिंह तणी परि साहसी रे, थास्यइ पुत्र प्रधान ॥ प्री० था० ।१०।प्री०।
गरभकाल पूरउ हुस्ये रे, सात दिवस नव मास। प्री० सा०।
पुत्र मनोहर जनमिस्यइ रे, फलिस्यै मन नी आस ॥प्री० म०।११प्री०

हीयडइ हरख थयउ घणउरे, सुणियउ सुपन विचार । प्री० सु० ।
तहत्ति करी उठि तदा रे, पहुंती भुवन मंझार ।।प्री०प० ।।१२।।प्री०वो०

दूहा—घरि (भुवन?) आवी इम चिंतवइ, अजेसीम वहु रात ।
धरम जागरि जागतां, प्रकटाणउ परभात ।। १ ।।
जे भणिया वहुत्तरि-कला, भणिया वेद पुराण ।
प्रहउगइ घर तेडिया, जोसी ज्योतिप जांण ।। २ ।।
'श्रीधर' 'धरणीधर' सही, जोसी 'विट्ठलदास' ।
पहरी खीरोदक धोतीया, आव्या मन उल्लासि ।। ३ ।।
संतोष्या जोसी कहइ, सुपन तणउ फल एह ।
कुलदीपक सुत होइस्यइ, कूड कहां तउ नेम ।। ४ ।।
इम फल सुपन तणउ सुणी, किया उच्छव असमान ।
सनमान्या जोसी सहु, दिया अनर्गल दान ।।५।।

ढालतीजी:—मनि मेघकुमर पछतावी ।। ए जाति ।
हिव दीजइ दान अनेक, परियण मांहे वध्यउ विवेक ।
सुरलोक थकी सुर चवियउ, धारलदे उरि अवतरिउ ।। १ ।।
वधिवा लागउ परिवार, माता हरखि तिणवार ।
राजा पिण द्यइ सन्मान, तिण दिन थी वधियउ वान ।। २ ।।
इम गरभ वधइ सुखदाइ, तसु महिमा कहयि न जाइ ।
मास त्रीजइ दोहला पावइ, माता मनि घणुं सुहावइ ।। ३ ।।
जाणइ चन्द्र पान करीजइ, भरि घुंट अमिरस पीजइ ।
वलि दान अनर्गल दीजइ, लखमी रो लाहो लीजइ ।। ४ ।।
जिनवरनी कीजइ जात्र, घरि तेडी पोखुं पात्र ।
खरचीजइ धन असमान, छोड़ावुं बन्दीवान ।। ५ ।।

सुणियइ श्री जिनवर वाणि, मन लागी अमियं समाणि।
ध्याउ श्रीअरिहन्त देव, कीजइ सहगुरुकी सेव ॥ ६ ॥
कर्म रोग गमेवा ओसउ, कीजइ पडिक्रमणउ पोसउ।
मनशुद्धि ध्यावुं नवकार, दुखियां नइ करू उपगार ॥ ७ ॥
वन वाग जइ उछरंग, प्रीतम सुं कीजइ रंग।
मनमान्या वरसइ मेह, तउ फलइ मनोरथ एह ॥ ८ ॥
'विमलाचल' नइ 'गिरनार', 'सम्मेतसिखर' सिरदार।
भेटूं 'आबू' सुखकारी, पूजा करुं 'सतर'—प्रकारी ॥ ६ ॥
ताल:—जा 'खाजा' लापसी आही, वलि लाडु लाखणसाही।
परसुं खुरसाणि मेवा, कीजइ साहमीनी सेवा ॥ १० ॥
धन खरची नाम लिखावुं, 'सात क्षेत्रे' वित्त वावुं।
तिम दुखित दीन साधारू, इणि परि आपउ निसतारू ॥११॥
इम डोहला पामइ जेह, 'धरमसी' शाह पूरइ तेह।
उत्तम नर गरभइ आयउ, माता पिण आणंद पायउ ॥ १२ ॥
जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहाला खावइ।
कइ ठिकरि ना खाइ खण्ड, कइं खायइ भींत लवंड ॥ १३ ॥
एतउ गरभ सदा सुकमाल, फलि मात मनोरथ माल।
गुणवन्त हुस्यइ ए आगइ, तिण सहको पाये लागइ ॥ १४ ॥
माता मनि घणउ सनेह, सुख देस्यइ नन्दन एह।
खाटउ खारउ नवि खायइ, इम काल सुखे करि जायइ ॥१५॥
दिन सात अनइ नव मास, पूरउ थयउ गरभावास।
फल फूले दहदिशी फलियां, माता मन हुइ रङ्गरलियां ॥१६॥

अति शीतल वाजइ वाय, दुखियांनइ पिण सुख थाय।
गुणवन्त पुरुष जब जायइ, तब सगलउ जग सुख पायइ॥१७॥
मुंह माग्या वरसइ मेह, लोके २ निवड सनेह।
सगलइ जगि हुयउ सुगाल, गुंणगावइ बालगोपाल ॥ १८ ॥
इम उच्छव सुं अधरात, सुखसज्या सूती मात।
'धारलदे' नन्दन जायउ, सूरिज जिम तेज सवायउ ॥१६॥

दूहा:—वइसाखा सुदि (सातमा !) दिन, सोलहसय सइंताल।
श्रवण नक्षत्र सुहामणउ, बुधवार (इ) सुविशाल ॥१॥
पंच उंच ग्रह आविया, छत्र जोग सुखकार।
शुभवेला सुत जन्मयिउ, वरत्यउ जय-जयकार ॥२॥
चन्द्र अनइ सूरिज थकी, सुत नउ अधिकउ तेज।
रत्नपुंज जिमि दीपतउ, सोहइ माता सेज ॥३॥

ढाल चौथी, वधावारी :—

दासी आवि दौड़ति ए, जिण (हां ?) छइ 'धरमसी' शाह।
वधाइ पुत्रनी ए-दीधी मन उमाह ॥ १ ॥
फली आसा सहू ए, जायउ पुत्र रतंन। फलि०।
कीजइ कोडि जतन० फली०, 'धरमसी' साह धन धंन्न० ॥फली०॥
उदयउ पूरव पुन्य, फली आस्या सहू ए। आं०।
सुत दीठइ दुख वीसर्या ए, वाजइ ताल कंसाल॥
दमामा दुडवडी ए, वाजइ वनर माल ॥ २ ॥ फली० ॥
वाजइ थाली अति भली ए, बाजइ जांगी ढोल।
हवइ उच्छव घणाए, गीतां रा रमझोल ॥ ३ ॥ फली०।

कुंकु हाथां दीजीयइ ए, सूहव द्यइ आसीस।
कुमर धरमसी तणउए, जीवउ कोडि वरीस ॥४॥ फली०।
गलिए फूल विछाइया ए, नाटक पडइ बत्रीस।
कुमर भलइ जनमियउ ए, हरख घणउ निसदीस ॥५॥फली०।
जन्म महोछव इम करइ ए, खरचइ परघल दाम।
सजल जलधर परइ ए, न गिणइ ठाम कुठाम ॥ ६ ॥फली०॥
याचक जय-जय उच्चरइ, सगा लहइ सनमान।
सयण संतोषिया ए, सखियां करइ गुणगान ॥ ७ ॥ फली०।
हिव दिन दसमइ आवियइ ए, करइ दसूठण प्रेम।
सगा सहि निहतरइ ए, असुचि उतारइ एम ॥ ८ ॥फली०।
सतर भक्ष भोजन भला ए, सालि दालि घृत घोल।
सहू संतोषिया ए, उपरि सरस तंबोल ॥ ९ ॥ फली०।
एम जमाडि जुगतसुं ए, दिया नालेर सद्रूप।
भलउ सहको भणइ ए, उछव कियउ अनूप ॥१०॥ फली०।
धन 'धारलदे' बायडी ए, धन्न २ 'धरमसी' साह।
कियउ उच्छव भलउ ए, लियइ लखमीरउ लाह ॥ ११ ॥ फली०।

दूहा:—करि उच्छव रलियामणउ, पुत्र तणउ मुख जोय।
श्री *खेतसी* नामउ दियउ, दीठां दउलति होय ॥ १ ॥
सहको लोक इसउ कहइ, सयणां तणइ समक्ख (क्ष)।
'धरमसी' साह प्रतइं हूयउ, परमेसर परतक्ख ॥ २ ॥
कुलदीपक सुत जनमियउ, करिस्यइ कुल उद्धार।
इणि नन्दन जाया पछइ, उदय हुअउ संसार ॥ ३ ॥

वखत वलइं इम जाणियइ, शास्त्र तणइ वलि न्याय।
सहको राणा राजवी, पडिस्यइ एहनइ पाय ॥ ४ ॥
पगे पदम झलकइ भलउ, लखण अंगि वत्रीस।
कइ गढपति कइ गच्छपति' हुइस्यइ विश्वावीस ॥ ५ ॥

ढाल ५—सुगुण सनेही मेरे लाला। इण जाति।

वीज तणउ जिम वाधइ चन्द, तिम वाधइ 'धारलदे' नन्द।
मात पिता उमहइ आणंद, देवलोक नउ जिम माकन्द ॥१॥
माता सुत नइ ले धवरावइ, वेटा-वेटा कहिय चुलावइ।
उन्हउ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणंद पावइ ॥२॥
आउ मेरा नन्दन गोदि खिलावुं, वंगू लट्टु तुंनइ अणावुं।
केलवि काजल घालइ अखियां, खोलइ ले खेलावइ सखियां ॥३॥
कांनि अडगनिया पाइ पन्हइयां, घमकइ पगि घूघरियां वनियां।
चंदलउ करि वागउ पहिरावइ, सिरिकसवीकी पाग वनावइ ॥४॥
कइयइं माता कंठइ लागइं, कइयइ लोटइ माता आगइं।
कइयइ घडा ना पाणी डोहइ, कइयइ हसि माता मन मोहइ ॥५॥
कइयइ दूधनी दोहणी ढोलइ, कइयइ हींचइ चढि हींडोलइ।
कइयइ झालइ माखण तरतउ, कइयइ छिपइ माता थी डरतउ ॥६॥
कइयइ मा नउ कंचूअउ ताणइ, कइयइ कांधइ चढिय पलाणइ।
कइयइ हसि मा साम्हउ जोवइ, कइयइं रूसण मांडी रोवइ ॥७॥
देखी कुंवर कहइ इम माता, इणि सुत दीठां थायइ साता।
मति को पापी नजरि लगावइ, गुली कांठिलउ गलइ बंधावइ ॥८॥
माऊ २ कहतउ पासइ आवइ, क़ांइ पूत मां एम बुलावइ।
प्रेम नजरि माँ साम्ही मेलइ, दूध मांहि जाणे साकर मेलइ ॥९॥

मणमणा बोलइ बोल अमोल, पहिरयउ वागो रातउ चोल ।
अंगि श्रृङ्गार करावइ सोल, माता सूं इम करइ रंगरोल ॥१०॥
फेरइ चकरडी माता प्रेरइ, बालूडा बलिहारी तेरइ ।
दंगू लट्टू फेरइ चंगा, हाथइ गोटा ल्यइ पंचरंगा ॥११॥
ऊंचउ उपाडइ ले बांहडियां, माता कहइ आउ मेरा नान्हडियां ।
हाथे घालइ सोवन कडियां, गूंथी द्यइ फूलनी दड़ियां ॥१२॥
मइ सोलही पासा सारइं, रमइ पंचेटे विविध प्रकारइ ।
बीजा बालक सहको हारइ, जीपइ कुमर भाग्य अणुसारइ ॥१३॥
इम उच्छव सुं नव-नव केलइ, 'धारलदे' रउ धोटउ खेलइ ।
रूपइ मयण तणउ अवतार, सात वरस नउ थयउ कुमार ॥१४॥
बुद्धइं वीजउ वयर (अभय?) कुमार, आवइ सहु सुणियउ इक वार ।
मात पिता चिंतइ उल्हासइ, कुमर भणावउ पंडित पासइ ॥१५॥

दूहा:—पुत्र भणइवा मांडियइ, पण्डित गुरुनइ पाय ।
विद्याआवी तेहनइ, सरसति मात पसाय ॥ १ ॥
भली परइ आवी भले, सिद्धो अनइ समान ।
"चाणाइक" आवइ भला, नीतिशास्त्र असमान ॥ २ ॥
तेह कला कोइ नहीं, शास्त्र नहीं वलि तेह ।
विद्या ते दीसइ नहीं, कुमर नइ नावइ जेह ॥ ३ ॥
कला 'वहुत्तरि' पुरपनी, जाणइ राग 'छतीस' ।
कला देखि सहु को कहइ, जीवो कोड़िवरीस ॥ ४ ॥
"षड़ भाषा" भाषइ भली, "चवदह-विद्या" लाध ।
लिखइ 'अठारह लिपी' सदा, सिगले गुणे अगाध ॥ ५ ॥

ढाल संधिनी छट्ठो:—पणमिय पास जिणेसर केरा। इणजाति।

कुमर हिवइ जोवन वय आयउ, दिन दिन दिपइ तेज सवायउ।
गरुअउ यश तिहुभवणे गायउ, धन धन ,धारलदे' उ(द)र जायउ ॥१॥
सूरिज जिम तेजइ करि सोहइ, मेह तणी परि महियल मोहइ।
'क्रिसण' तणी पर सूर सदाइ, दानइ 'करण' थकी अधिकाइ ॥२॥

....

रूपइ 'मनमथ' नउ मद गाल्यउ, काम क्रोध विषयारस टाल्यउ ॥३॥
सायर जिम सोहइ गंभीर, मेरु महीधर नी परि धीर।
कल्पवृक्ष जिम इच्छा पूरइ, चिंतामणी जिम चिंता चूरइ ॥४॥
'विक्रमादित्य' जिसउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी।
पांच 'पंडव' जिम वलवंत, सीह तणी परि साहसवंत ॥५॥
नयन कमल नी परि अणियाली, सोहइ अधर जाणइ परवाली।
करइ हाथ सुं लटका मटका, बोलइ वचन अमी रा गटका ॥६॥
काया सोहइ कंचण वरणी, सोहइ हाथे सखर समरणी।
लखतवंतो मोहण वेलि, हंस हरावइ गजगेतिगेली ॥७॥
मस्तक सुंदर तिलक विराजइ, दरसण दीठा भावठि भाजइ।
पहिरइ नित २ नवरं वागउ, तेगदार मांहे अधिकउ तागउ ॥८॥
रायराणा सहुको द्यइ मान, धरमध्यान करिवा सावधान।
न करइ परनिन्दा परघात, केहा केहा कहूं अवदात ॥९॥
देखि दिन दिन अधिक प्रतापइं, वाकां वयरी थरथर कांपइ।
महीयलि सिगले बोलइ पूरउ, इणपरि विचरइ कुमर सनूरउ ॥१०॥
हिव इणि अवसर श्री} 'बीकाणइ', 'अकवर' जेहनइ आप वखाणइ।
खरतरगच्छ मांहे प्रवल पडूर, आव्या गुरु 'श्रीजिनसिंह'सूर॥११॥

सुविहत साधु तणइ परिवारइं, दे उपदेश भविक निस्तारइं।
विचरइ महियल उग्र विहारइ, आप तरइ लोकां नइ तारइ ॥१२॥
हुवइ सबल तिहां पइसारइ, जिनशासनि रो वान बधारइ।
कलिकालइ गौतम अवतारइ, पूजजी 'बीकानयर' पधारइ ॥१३॥
हरखित हुआ सहूको लोक, जिम रवि दंसणि थायइ कोक।
बड़ा बड़ा श्रावक सुणइ अशेष, पूजजी एहवउ द्यइ उपदेश ॥१४॥

दोहा :—ए सायर गाजइ भलउ, अथवा गाजइ मेह।
वाणी सांभलतां थकां, एहवउ थयउ संदेह ॥१॥
पोषइ 'नव रस' परगड़ा, करइ 'राग छतीस'।
सरस वखाण सुणी करी, सहु को द्यइ आसीस ॥२॥

ढाल सातमी :—मेघमुनि कांइ डमडोलइरे। इणजाति।
सहको श्रावक सांभलइजी, लोक सुणइ लख गान।
"खेतसी" कुमर पधारियाजी, इणपरि सुणइ वखाण ॥१॥
भविकजन धरम सखाइ रे, जीवनइ सुखदाइ रे।
कीजइ चित्त लाइ रे, भविकजन धरम सखाइ रे ॥आँकणी०॥
सदगुरुनी संगति लहीजी, लाधौ आरिज खेत।
मानव भव लाधउ भलउजी, चेत सकइ तउ चेत ॥२॥ भविक० ॥
इण जगि सरव अश्वाशतउजी, हीयइ बिचारी जोय।
इम जांणिरे प्राणियाजी, ममता मां करउ कोय ॥३॥भविक०॥
माया मोह्या मानवीजी, धन संचइ दिन राति।
वयरी जम पूठइ वहइंजी, जीव न जाणइ घात ॥४॥भविक०॥
दश दृष्टंते दोहिलउजी, लाधउ नर भव सार।
तिहां पणि पुण्यइ पामियइंजी, उत्तम कुल अवतार ॥५॥भविक०॥

बत्रीस लाख विमान नउ जी, साहिब छइ जे इन्द्र ।
ते पणि श्रावक कुल सदा, वंछइ धरि आणंद ॥६॥भविक०॥
वरजीजइ श्रावक कुलइं जी, अनंतकाय बत्रीस ।
मधु माखण वरजइ सदाजी, तिम अभक्ष बावीस ॥७॥भविक०॥
सामायिक ले टालयइजी, त्रीस अनइ दुइ दोष ।
परनिंदा नवि कीजियइजी, मन धरियइ संतोप ॥८॥भविक०॥
इक दिन दिक्षा पालीयइजी, आणी भाव प्रधान ।
तउ सिवपुर ना सुख लहइजी, निश्चय देव विमान ॥६॥भविक०॥
इणि जगि सरब अशाश्वतोजी, स्वारथ नउ सहु कोय ।
निज स्वारथ अणपूजतइजी, सुत फिरी वयरी होय ॥१०॥भविक०॥
चिंतामणी सुरतरू समउजी, जिनवर भाषित धर्म ।
जउ मन शुद्धइं कीजियइजी, तउ त्रूटइ सही कर्म ॥११॥भविक०॥

दोहा:—खेतसी कुमरइं संभल्यउ, जिनसिंह सूरि वखाण ।
वाणी मनमांहे वसी, मिठ्ठी अमिय समाण ॥१॥
करजोड़ी एहवउ कहइ, आणि हरख अपार ।
तुम्ह उपदेशइ जाणियउ, मइ संसार असार ॥२॥
तिणि कारण मुझनइ हिवइ, दीजइ संजमभार ।
कृपा करि मो उपरइ, इणि भविथी निस्तार ॥३॥
वलतउ गुरु इणि परि कहइ, मकरउ ए प्रतिबंध ।
मात पिता पूछउ जइ, करउ धरम सम्बन्ध ॥४॥

ढाल आठमी:—मांहके देह रंगीली चूनरी—इणजाति ।

अहो गुरु वांदी नइ उठियउ, आव्यउ माता नइ पास हो ।
कर जोडिनइ इणि परि कहइ, आणी मन मांहि उलास हो ॥१॥

मोनइ अनुमति दीजइ मातजी, हुं लेइस संजमभार हो ।
जगि स्वारथ नउ सहु को सगउ, मिलीयोछइ ए परिवार हो ॥२॥मो०॥
सद्गुरु नी देसण सुणी, मन मांहि धरी अनुराग हो ।
हिव इणिभवथी मन उभगउ, मुझ नइ आव्यउ वयरागहो ॥३॥मो०॥
अहो देस विदेश फिरी करी, खाटीजइ परिघल आथि हो ।
पणि परलोकइ जातां थकां, तो नावइ प्राणी साथि हो ॥४॥मो०॥
अहो इणभवि परभवि जीवनइ, सुख कारण श्रीजिनधर्म हो ।
जिणथी सुख सम्पति सम्पजइ, कीजइ तेहिज कर्म हो ॥५॥मो०।
अहो डाभ अणि-जल जेहवउ, जेहवउ चञ्चल नय (हय?) वेग हो ।
माता अथिर तिसउ ए आउखउ, आण्यउ इम जाणि संवेग हो ॥६॥मो०।
अहो इणि जगि को केहनउ नहीं, परिजन नइ वलि परिवार हो ।
भगवन्तरउ भाख्यउ जीवनइ, इक धर्म अछइ आधार हो ॥७॥मो०॥
अहो जीव तणइ पूठइ वहइ, सर सान्ध्यइ वयरी काल हो ।
तिण कारण करसुं मातजी, पाणी आव्या पहलइ पाल हो ॥८॥ मो०।
अहो ए सुख भोगवतां छतां, दुख थाय पछइ असमान हो ।
ते सोनउ केथउ कीजियइ, जे पहिरयउ तोडइ कान हो ॥९॥ मो० ।
अहो जेह बडा सुखिया अछइ, वलि हुस्यइ सुखिया जेह हो ।
ते सहु को पुण्य पसाउलइ, इहां कोइ नहीं सन्देह हो ॥१०॥ मो० ।
भेदाणी धरमइ करी, माता मुझ साते धात हो ।
मुनिवर नउ मारग मांहरइ, हियडइ वसियउ दिनरात हो ॥११ मो० ।

दोहा :—पुत्र वयण इम सम्भली, संजम मति सुविशाल ।
मुर्छाङ्कत माता थइ, पड़ी धरणी तत्काल ॥ १ ॥

गंगोदक सुं छांटिनइ, बींझया शीतल वाय।
सावधान हुइ तदा, इणि परि जम्पइ माय ॥ २ ॥
तुं नान्हडियउ माहरइ, तुं मुझ जीवनप्राण।
एक घड़ी पिण दिन समी, तोरइ विरह सुजाण ॥ ३ ॥
तुं सुकमाल सोहामणउ, दोहिलउ संजम भार।
बोल विचारी बोलियइ, संजम दुक्करकार ॥ ४ ॥
तन धन यौवन लही करी, विलसउ नवनव भोग।
वलि वलि लहतां दोहिला, एहवा भोग संजोग ॥ ५ ॥

वेलि (९):—लही एहवा भोज संजोग, विलसीजइ नवनवभोग।
तुं "वोहिथरा" कुल दीवउ, तिणि कोडि वरस चिरजीवउ ॥१॥
सुत तुं सुकमाल सदाइ, तुं सिगलानइ सुखदाइ।
जिणवर भासित ले दीक्षा, तुं किणी परि मांगिसी भिक्षा ॥२॥
तुं पंडित चतुर सुजाण, तुं बोलइ अमृत-वाणि।
तुज गुण गावइ सहु कोइ, तुज सरिखउ पुरिस न कोइ ॥३॥

दोहा :—सांभलतां पिण दोहिली, सुत संजमनी बात।
श्रावक धरम समाचरउ, तुं सुकमाल सुगात ॥ १ ॥

वेलि :—सुत तुं सुकमाल सुगात, मत कहिजो संजम बात।
इणि गरुअइ संजम भारइ, विचरेवउ खड्गां धारइ ॥१॥
बहुला मुनिवर आगेइ, चूका छइ चारित लेइ ॥
तिणी वात इसी मत कहिजो, डोकरपणि चारित लेज्यो ॥२॥
इणि जोवनवय तुं आयउ, तुं नन्दन पुण्यइ पायउ।
घणा दुखित दीन सधारउ, 'बोहिथ कुल' वान वधारउ ॥३॥

दोहा :—वचन एहवउ सांभलि, इणि परि कहइ कुमार।
कायर कापुरिसां भणी, दुहिलउ संजम भार ॥ १ ॥

वेलि :—माता दुहिलउ संजम भार, जे कायर हवइ नर-नारि
जो सूर वीर सरदार, तिणनइ स्यु दुक्करकार ॥ १ ॥

गाथा :—ता(उ)तूंगो मेरु गिरी, मयरहरो(सायरो) ताव होइ दुत्तारो।
ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति ॥ १ ॥

वेलि :—जे कुल ना जाया होवइ, ते कुलवटि साम्हउ जोवइ।
तिण कारण ढील न कीजइ, माताजी अनुमति दीजइ ॥२॥

दोहा :—संजम उपर जाणियउ, सुत नउ निवड सनेह।
हिव जिम जांणो तिम करउ, दीधी अनुमति एह ॥ १ ॥

वेलि :—हिव दीधी अनुमति एह, संयम सुं निवड सनेंह ॥
दिक्षा नउ उच्छव कीजइ, मुंह मांग्या धन खरचीजइ ॥१॥
धरि रङ्ग 'धरमसी' शाह, इम उच्छव करइ उच्छाह।
धरि मंगल वाजित्र वाजइ, तिणि नादइ अम्बर गाजइ ॥२॥
वाजइ भुंगल नइ भेरी, वाजइ नवरंग नफेरी।
वाजइ ढोल दमामा ताली, गुण गावइ अबलाबाली ॥३॥
वाजइ सुन्दर सरणाइ, सुणतां श्रवणे सुखदाइ।
वाजइ झलरि ना झणकार, पड़इ मादल ना दोंकार ॥४॥
वाजइ राय गिडगिडी रंग, विध विध वाजइ मुख चंग।
गन्धर्व बजावइ वीणा, सुणइ लोक सहु तिहां लीणा ॥५॥
वाजइ त्रिवली ताल कंसाल, गीत गावइ बाल-गोपाल
आलापइ राग छत्तीस, इम उच्छ (व) थाय जगीस ॥६॥

दोहा :—उष्णोदक सुं कुमर नइ, भलउ करायउ स्नान।
अङ्गि शृङ्गार कीया सहु, वणियउ वेष प्रधान ॥ १ ॥
वेलि :—हिव वणियउ वेश प्रधान, गंगोदक सुं कीया स्नान।
मोतीयडे कुमर वधायउ, आभरणे अंग वणायउ ॥ १ ॥
मस्तकि भलउ मुकुट विराजइ, दोइ कानइ कुण्डल छाजइ।
विहुं बांहे बहरखा खंध, करि सोहइ बाजूबन्ध ॥२॥
उर वर मोतिन कउ हार, पाइ घुघरिया घमकार।
अश्व उपरि थयउ असवार, याचक करइ जयजयकार ॥३॥
ताजां नेजां गयणइ सोहइ, वरनोलइ इम मनमोहइ।
....॥४॥
दोहा:—हिव गुरु पासइ आवियइ, मिलीया माणस थाट।
कुमर तणउ जस उच्चरइ, 'चारण' 'भोजिग' 'भाट' ॥ १ ॥
वेलि:—हिव 'चारण' 'भोजिग भाट', "धरमसी" शाह करइ गहगाट
"खेतसी" गुरु पायइ लागइ, गुरु वांदी बइठउ आगइ ॥१॥
इम पभणइ "धरमसी" शाह, ए कुमर वडउ गज गाह।
पूजजी हिव कृपा करीजइ, ए मांहरि थापण लीजइ ॥ २ ॥
हिव कुमर सुणे बालूड़ा, ले दिक्षा चलिजे रूड़ा।
गुरुजीनो कह्यो करेजो, सूधउ संजम पालेजो ॥ ३ ॥
जिम दीपइ 'बोहिथ' वंश, तिम करिजो सुत अवतंश।
क्रोधादिक वयरी दाटे, महियली बहुलउ जस खाटे ॥ ४ ॥
तुजनइ किसी सीख सीखांवा, स्युं दांत नइ जीभ भलावां।
जिम सहुको कहइ धन धन्न, तिम करिज्यो पुत्र रतन्न ॥५॥

दोहा :—'सोलहसय छपन्न' मई, संवछर सुखकार।
'मिगसर सुदी तेरसि' दीनइ, लीधउ संजम भार ॥१॥
माणक मोती माल सहु, हय गय रथ परिवार।
छंडी संजम आदर्यो, जाण्यो अथिर संसार ॥२॥
दे दिक्षा नामउ कीयउ, 'राजसिंह' अणगार।
हिव 'श्रीजिनसिंहसूरि' गुरु, करइ अनेथ विहार ॥३॥

वेलि :— हिव करइ अनेथ विहार, 'राजसिंह' हुओ अणगार।
लीधउ पंच महाव्रत भार, षट जीव नउ राखणहार ॥१॥
पंच सुमति भली परि पालइ, विषयारस दूरइं टालइ।
करइ धरम दश परकारइ, पाटोधर वान वधारइ ॥२॥
ग्रहणा सेवन दुइ शिक्षा, सीखी संजम नी रिक्षा।
मंडलि तप वूहा जाणि, 'श्रीजिनचन्दसूरि' विनाणी ॥३॥
दीधी दीक्षा वड़इ विरुद्द, नामउ दीयउ 'राजसमुद्र'।
हिव शास्त्र भण्यां असमान, ते गिणतां नावइ गान ॥४॥
उपधान वूहा मन रंग, 'उत्तराध्यन' नइ 'आचारंग'।
तप कलप तणउ आरुहउ, छम्मासी तप पिण वूहउ ॥५॥
वयसइं बहु पंडित आगइ, लुलि लुलि सहि पाये लागइ।
इम लोक कहइ गुणरागी, जयउ 'राजसमुद्र' सउभागी ॥६॥

दोहा :—आवइ 'आठे व्याकरण' 'अट्ठारह-नाममाल'।
'छए-तर्क' भणिआ भला, 'राग छत्रीस' रसाल ॥ १ ॥
भलइ मेली भणिया वलि, 'आगम पैंतालीस'।
सइंमुख श्री 'जिनसिंह' गुरु, सीखि दीयइ निशदीस ॥२॥

महियलि वादि वड वड़ा, ताता (तां लग?) गरव वहंति।
जां लगि 'राजसमुद्र' गणि, गरुआ नवि वुझंति ॥ ३ ॥
मोटइ मुनिवर महियलइ, 'राजसमुद्र' अणगार।
जे जे विद्या जोइयइ, तिणि नहु लाभइ पार ॥ ४ ॥
'वाचनाचारिज' पद दीयउ, 'श्रीजिनचंद्र सूरिंद'।
पाटोधर प्रतिपउ सदा, रलिय रंग आणंद ॥ ५ ॥
वड वखती सुप्रसन्न वदन, जाग्यो पुण्य अंकूर।
परतखी देवी 'अम्बिका', हुइ हाजरा हजूर ॥ ६ ॥
परतखि परतउ दिठ ए, 'अम्बा' नइ आधार।
लिपि वांची 'घंघाणीयइ', जाणइ सहू संसार ॥ ७ ॥
'जेसलमेरु' दुरंग गढ़ि, रावल 'भीम' हजूर।
वादइं 'तपा' हराविया, विद्या प्रवल पडूर ॥ ८ ॥
इम अनेक विद्या बलइ, खाटया वडा बिरुद।
विद्यावंत वडउ जती, सोहइ 'राजसमुद्र' ॥ ९ ॥

ढाल दसमी—उलाला जाति।

हिव श्री शाहि 'सलेम', 'मानसिंघ' सूं धरि प्रेम।
वड वडा साहस धीर, मूंकइ अपणा वजीर ॥ १ ॥
तुम्ह 'वीकाणइ' जावउ, 'मानसिंघजी' कूं बुलावउ।
इक वेर 'मानसिंघ' आवइ, तउ मुझ मन (अति) सुख पावइ ॥ २ ॥
ते 'वीकाणइ' आया, प्रणमइ 'मानसिंघ' पाया।
दीधा मन महिराण, 'पतिसाही-फुरमाण' ॥ ३ ॥

मिलियउ संघ सुजाण, वाच्या ते फुरमांण।
तेडावा (या?) 'पतिसाह', सहु को धरइ उच्छाह ॥ ४ ॥
हिव श्री 'जिनसिंघ सूर', साहसवंत सनूर।
चिंतइ एम उल्हासइ, जाइवउ 'पतिसाह' पासइ ॥ ५ ॥
'बीकानेर' थी चलिया, मनह मनोरथ फलिया।
साधु तणइ परिवारइ, 'मेडतइ' नयरि पधारइ ॥ ६ ॥
श्रावक लोक प्रधान, उच्छव हुआ असमान।
श्री गच्छनायक आयउ, सिगले आनंद पायउ ॥ ७ ॥
तिहां रह्या मास एक, दिन २ वधतइ विवेक।
चलिआ उद्यम कीधउ, 'एक—पयाणउ' दीधउ ॥ ८ ॥
काल धरम तिहां भेटइ, लिखत लेख कुण मेटइ।
'श्री जिनसिंघ' गुरुराया, पाछा 'मेडतइ' आया ॥ ९ ॥
सइंमुखि लीधउ संथारउ, कीधउ सफल जमारो।
शुद्ध मनइ गहगहता, 'पहिलइ देवलोक' पहुता ॥ १० ॥
संवत 'सोल चिहुत्तरइ', 'पोषसुदि 'तेरस' वरतइ।
सोग करइ सहि लोक, पूज पहुंता परलोक ॥ ११ ।
हिव देही संसकार, कीधउ लोक आचार।
वीजइ दिन धरि प्रेम, लोक विमासइ एम ॥ १२ ।
आगम गुणे अगाध, मिलीया वड बड़ा साध।
संघ मिल्यउ गजथाट, कुणनइं दीजियइ पाट ॥ १३ ।
तब बोल्या सही लोग, 'राजसमुद्र' पाट जोग।
दीजइ एहनइं पाट, जिम थायइ गहगाट ॥ १४ ॥

'चवदह विद्या' निधान, मुनिवर मांहि प्रधान।
एह हवइ गच्छइसर, तउ तूठउ परमेसर ॥ १५ ॥
सायर जेम गंभीर, मेरु महीधर धीर।
दीठां दालिद्द जायइ, वांद्या नवनिधि थायइ ॥ १६ ॥
'राजसमुद्र' हवइ राजा, 'सिद्धसेन' हवइ युवराजा।
तउ खरतरगच्छ सोहइ, संघ तणा मन मोहइ ॥ १७ ॥

दोहा—इम आलोच करि हिवइ, उठइ श्रीसंघ जाम।
'आसकरण' आवइ तिसइ, 'संघवी' पद अभिराम ॥ १ ॥
कुलदीपक श्री 'चोपड़ा', वड़ जेहइ विस्तार।
लखमी रो लाहउ लीयइ, संघ मांहे सिरदार ॥ २ ॥
श्री संघ आगलि इम कहइ, ए मोरी अरदास।
'पद ठवणो' करिवा तणउ, द्यो आदेश उलास ॥ ३ ॥
इम अनुमति ले संघनी, धरइ चित्त उच्छरंग।
पद ठवणउ संघवी करइ, आणी उलट अंग ॥ ४ ॥
संवत 'सोलन्हिहुत्तरइ', सोमवार सिरताज।
'फागुणसुदि' 'सातम' दिनइ, थाप्या श्री जिनराज ॥५॥
भट्टारक सोहइ भलउ, 'श्री जिनराज सूरिंद'।
प्रतिपउ तां लगि महियलइ, जां लगि ध्रू रवि चंद ॥६॥
सइ हथ 'श्री जिनराज' गुरु, थाप्या प्रबल पडूर।
आचारिज चढ़ती कला, 'श्री जिनसागरसूरि' ॥ ७ ॥
सूरिज जिम सोहइ सदा, 'श्री जि(न?)राज सुरिंद।
श्री 'जिनसागर' सूरि गुरु, प्रतपइ पूनिम चंद ॥ ८ ॥

हिव श्री 'जिनराज सूरिश्वरु', महियल करइ विहार।
थायइ उच्छव अति घणा, वरत्यउ जय जयकार ॥ ९ ॥
'जेसलमेर' दुरंग गढ़ि, 'सहसफणउ-श्रीपास'।
थाप्यउ श्री जिनराज गुरु, समर्या पूरइ आस ॥ १० ॥
श्री 'विमलाचल' उपरइ, जे आठमउ उद्धार।
कीधी तेहनी थापना, जाणइ सहु संसार ॥ ११ ॥
परतिख पास 'अमीझरउ' थाप्यउ 'भाणवट' मांहि।
इम अवदात किता कहूं, मोटउ गुरु गजगाह ॥ १२ ॥
परतिख देवी 'अम्बिका', परतिखि 'बावन बीर'।
'पंचनदी' साधी जिणइ, साध्या 'पांच पीर' ॥ १३ ॥
श्री खरतरगच्छ सेहरउ, महियलि सुजस प्रधान।
प्रतपइ श्री 'जिनराज' गुरु, दिन २ वधतइ वान ॥ १४ ॥

ढाल इग्यारहमी—आयो आयउरी समरंता दादा आयउ।
गायउ गायउरी जिनराजसूरि गुरु गायउ ॥
'श्री जिनसिंह सूरि' पाटोधर, प्रतपइ तेज सवायउरी ।जि०।१।आ०।
पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर, चिहुं दिसी सुजस सुहायउ।
रंगी रंगीली छयल छबीली, मोती (य) वेगि बधायउरी ॥२॥जि०॥
धन धन 'धर्मसी' शाह नो नंदन, धन 'धारलदे' जायउ।
तू साहिब मैं तेरउ सेवक, तुझ चल(र?)णे चित्त लायउ री ।३।जि०।
'सिंधु' देस विहार करीनइ, 'पांच पीर' वर ल्यायउ।
उदय हवइ तिणि देसइ अधिकउ, जिणि दिशि पूज गवायउरी ।४।जि०।
श्री 'ठाणांग' नी वृति करिनइ, विषमउ अरथ वतायउ।
सूरि मंत्रधारी परउपगारी, इंदु नउ बीजउ भायउरी ॥५॥जिन०॥

सह को श्रावक रंजी 'नव खंड', निज नामउ वरतायउ।
विद्यावंत वडउ गच्छ नायक, सहको पाय लगायउरी ॥६॥जिन०॥
सोहइ शहर सदा 'सेत्रावउ' 'मरुधर' मांहि मल्हायउ।
संवत 'सोल इक्यासी', वरसइ, एह प्रबंध वणायउरी ॥७॥जिन०॥
'आसाढ़ा वदि तेरसि' दिवसइ, सुरगुरु वार कहायउ।
श्री गच्छनायक गुण गावतां, 'मेह पिण सबलउ आयउ'री ॥८॥जि०॥
'रत्नहर्ष' वाचक मन मोहइ, 'खेम' वंश दीपायउ।
'हेमकीर्त्ति' मुनिवर मन हरपइ, एह प्रबंध करायउरी ॥९॥जिन०॥
श्री 'जिनराजसूरि' गुरु सुरतरु, मइ निज चित्ति वसायउ।
मुनि "श्रीसार" साहिब सुखदाइ, मनवांछित फल पायउरी॥१०॥जि०॥

इति श्री खरतरगच्छाधिराज सकल साधुसमाज वृंद वंदित पादपद्म निछद्म सदनेक मंगलसद्म श्री जिनराजसूरि सूरिश्वराणां प्रबंध शुभ बंध बंधुरतरो लिखितोयं श्री कालू ग्रामे॥ शुभं भूयात् पठक पाठकना मशठमनसां॥ श्राविका पुण्यप्रभाविका धारां पठनार्थं॥ श्री प्रथम दूहा २१, प्रथम ढाल गाथा १६ दूहा ५, बीजी ढाल गाथा १२ दूहा, ५ तीजी ढाल गा: १६ दूहा ३, चौथी ढालगा: ११ दूहा ५, पांचमी ढाल गाथा १५ दूहा ५, छठ्ठी ढाल गाथा १४ दूहा २, सप्तमी ढाल गाथा ११ दूहा ४, आठमी ढाल गाथा ११ दूहा ५, नवमी ढाल गाथा ३७ दूहा ६, दशमी ढालगाथा १७ दूहा १४, इगारमी ढालगाथा १० सर्व गाथा २५४, सर्व श्लोक ३२४ सर्व ढाल ११, (पत्र २ से ६, प्रत्येक पत्रमें १५ लाइनें सुन्दर अक्षर, ज्ञानभंडार, दानसागर बंडल नं० १३ तत्कालीन लि०)

———*———

॥ श्री जिनराज सूरि गीतम् ॥

(१)

'श्री जिनराज सूरीश्वर' गच्छ धणी, धुरि साधु नउ परिवार ।
ग्रामानुग्रामइ विहरता सखि, वरसता हे देसण जल धार ॥१॥
कइयइ सुगुरु पधा रिस्यइजी, इण नयरइ हे सखि पुण्य पडूर ।
सूहवि मोती बधारि (वि?) स्ये जी ॥ आं ॥
जेहनइ वंसइ बड़बड़ा, गच्छपति हुआ निरदोष ।
देवता जिहनी साखि द्यै सखि, तिण मुं हे कुण करइ मन रोष ॥२॥
'श्री अभयदेवसूरि' जिहां हुआ, सखि नव अंग विवरणकार ।
चउसठि योगिणी जिण जीतली, 'जिनदत्तसूरि' हे जिहां सुखकार ॥३॥
जेहनी महिमा नउ नहीं सखि, पार एह निहाल ।
'श्री जिनकुशल सूरीश्वरु' सखि, दीपइ हे इणि जगि चउसाल ॥४॥क०
पतिशाहि अकबर बूझव्यउ, जिणि अमृत वाणि सुणावि ।
"श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वर' हुअउ सखि, इणि गच्छि हे जग अधिक प्रभाव ॥५॥क०
"लाहोरि' दीधी जेहनइ, गुण देखि आप हजूर ।
श्रीयुगप्रधान पदवी भली सखि, छानउ हे रहै किम जगि सूर ॥६॥ क०
तेहनइ पाटइ प्रगटियउ सखि, 'श्री जिनसिंहसुरिन्द' ।
तसु पाटि परतखि थप्पियउ सखि, ए गुरु सोहगनउ कन्द ॥७॥ क०
निर्मलइ वंश(इ) ऊपनउ, वजू स्वामि शाखि शृङ्गार ।
श्री'गुणविनय' सद्गुरु इसउ सखि, चाहिवा हे मुझ हर्ष अपार॥८॥क०

(२) श्री जिनराजसूरि सवैया।

'जिनदत्त' (सूर) अर 'कुशल' सूरि मुनिंद
वंछित दायक जाकुं हाजरा हजूर जु।
चारित पात (विख्यात) जीते (है) मोह मिथ्यात
और जो अशुभ कर्म किये जिन दूर जु.
'जिणसिंघ सूर' पाट सोहै मुनिवर थाट
भणत सुजाण राय विद्या भरपूर जु।
नछत्तन (नक्षत्र?) मांझ जैसे राजत निछतपति,
सूरिन मैं राजे ऐसे 'जिनराज सूर' जु ॥१॥
जैसे बीच वारण(?)के गंगके तरंग मानो,
कोट सुखदायक भविक सुख साजकी।
गगन अना····नकी ब्रह्म वेद विचरत
सब रस सरस सबल रीझ काजकी।
गाजत गंभोर अ (घ?) न धार सुध खीर वृंद,
श्रवण सुणत धुन (ध्वनि?) ऐन मेघ गाज की।
'जिनसिंघ सूर' पाट विधना सो घड़ी (य) घाट,
अमृत प्रवाह वांनी(णी?) सूर 'जिनराज' की।२।
'साहिजहां' पातिशाह प्रबल प्रताप जाको,
अति ही करूर नूर को न सरदाखी (?)है।
'असी चउ गछ' सब थहराये जाके भय,
ऐसो जोर चकतौ हुवौ न कोउ भाखी है।

श्रीय 'जिनसिंघ' पाट मिल्येउ साहि सनमुख,
'धरमसी' नंदन सकल जग साखी है।
कहै 'कविदास' षट्दरशन कुं उबारै,
शासनकी टेक 'जिणराज सूरि' राखी है।३।
'आगरै' तखत आये सबहीके मन भाये,
विविध वधाये संघ सकल उछाह कुं।
राजा 'गजसंघ' 'सूरसंघ' 'असरपखान',
'आलम' 'दीवान' सदा सुगुरु सराह कुं।
कहै 'कविदास' जिणसिंघ पाट सूर तेज,
अगम सुगम कीने शासन सुठाह कुं।
'मिगसर वहु (वदि?)चोथ' 'रविवार' शुभ दिन,
मिले 'जिनराज' 'शाहिजहां' पतिशाह कुं।४।

॥ श्री गच्छाधीश जिनराजसूरि गुरु गीतम् ॥
(३) ॥ ढाल अलबेल्यानी जाति मांहे ॥

——※※※——

आज सफल सुरतरु फल्यउ रे लाल, आज सफल थयउ दीस। सुखदाइ
गच्छ-नायक भेट्यो भलेरे लाल, 'श्रीजिनराज सूरीश' ॥१॥सु०
सोभागी सवि सूरि मइं रे लाल, समता लीन शरीर। सु०।
दिनकर नी परि दीपतउ रे लाल, धरणीधर वर (परि?)धीर ।सु॥२॥
तूठी जेहनइ 'अंबिका' रे लाल, अविचल दीधो वाच। सु०।
लिपि वांची 'घंघाणियइ' रे लाल, सहुको मानइ साच सु०॥३॥सो०॥

राउल 'भीम' सभा भली रे लाल, 'जेसलमेर' मझार । सु० ।
परवादी जीता जियइ रे लाल, पाम्यउ जय-जयकार । सु०॥४॥सो०
'श्री जिनवल्लभ' सांभल्यउ रे लाल, कठिन क्रिया प्रतिपाल । सु० ।
इण जगि परतखि पेखियइ रे लाल, 'श्रीजिनराज'कृपाल ।सु०॥५॥सो०
प्रतिपइ पुण्य पराक्रमइ रे लाल, मानइ सहुको आण । सु० ।
पिशुन थया सहु पाधरा रे लाल, दूरइं तजि अभिमान ।सु०॥६॥सो०
मइंगल जिम गुरु माल्हतउ रे लाल, मोटा साथि मुणिंद । सु० ।
जन मन मोहइ चालतां रे लाल, पामइ परमाणंद । सु०॥७॥ सो०॥
क्रोध तज्यउ काया थकी रे लाल, दूरि कियउ अहङ्कार । सु० ।
मायानइ मानइ नहीं रे लाल, लोभ न चित्त लिगार । सु०॥८॥ सो०॥
श्री संघ सोभ बधारतउ रे लाल श्रीजिनराज मुनीश । सु० ।
प्रतिपउ गुरु महिमंडलइ रे लाल, 'सहजकीरति' आशीस ।सु०॥९॥सो०

॥ इति श्री गच्छाधीश गुरु गीतम् ॥

---

(४) ॥ ढाल, वहिनोनी जाति मांहि ॥

गच्छपति सदा गरुयड़ निलउ, पंच सुमति गुपति दयाल ।
सुविहित शिरोमणि साचिलउ, पंच महाव्रत पाल ॥ १ ॥
सद्गुरु वंदियइ, 'श्रीजिनराजसुरिन्द' ।
दरशन अधिकआणंद, जंगम सुरतरु कन्द ॥ आंकणी
संघपति शिरोमणि संघवी, श्री 'आसकरण' महन्त ।
पद ठवणउ जिहनउ कियउ, खरची धन बहु भांति ॥ २ ॥ स०॥

पहिराविय‌उ निज गच्छ सहुए, अधिकी करणी कीध ।
'श्रीजिनसिंह' पटोधरु, जग मांहें जस लीध ॥ ३ ॥ स०॥
'बोहित्थ' वंशइ वाधतउ, श्री 'धर्मशी' धन धन्न ।
'धारलदे' धरणी परइं, जायउ पुत्र रतन्न ॥ ४ ॥ स०॥
जसु देखि साधुपणउ भलउ, हरखि दियउ बहुमान ।
साबासि तुम्ह करणी भली, कहइ श्री 'मुकरबखान' ॥ ५ ॥ स०॥
श्री संघ करइ बधामणा, जसु देखि करणी सार ।
गुणवंत सगले ही लहै, पूजा विविध प्रकार ॥ ६ ॥ स०॥
जिण मांहिं बहु गुण सूरिना, देखियइ प्रकट प्रमाण ।
वरणवी हुं नवि सकूं, जसु विद्या तणउ गान ॥ ७ ॥ स०॥
श्री गच्छ खरतर चिरजयउ, जिहां एहवा गच्छराय ।
सीह अनंइ वलि पाखयंउ, कहु किम जीपणउ जाय ॥८॥ स०॥
जिहां लगे मेरु महीधरु, जिहां लगइ शशि दिनकार ।
प्रतिपउ तिहां लगि गच्छधणी, 'सहजकीरति' सुखकार ॥९॥स०॥

(५)

श्री जिनराजसूरि गुरु राजइ, सिरि जैन तणउ छत्र छाजइ ।
सद्गुरु प्रतपउ जी ॥
दिन-दिन तेज सवायो, भविक लोक मनि भायउ ॥ १ ॥ श्री०॥
गजगति गेलइ चालइ, पञ्च महाव्रत पालइ । स० । श्री०॥
मुनिवर मुनि परवारइ, कुमति कदाग्रह वारइ ॥ २ ॥ स०।श्री०॥
श्रीजिनसिंह सूरि पाटइ, पूज्य सोहइ मुनि (वर)थाटइ ।स०। श्री०॥
महिमा मेरु समानइ, दिन-दिन चढ़तइ वानइ ॥३॥ स० । श्री०॥

'धरमसी' शाह मल्हार, उरि 'धारलदे' अवतार । स० । श्री०

रूपइ वइरकुमार, विद्या तणउ भण्डार ॥ ४ ॥ स० । श्री०

वाद करी 'जेसाणइ', जस लीधउ सहुको जाणइ । स० श्री०

पास वरइ जिण जाणी, लिपि बांची 'घंघाणी'॥ ५ ॥ स०। श्री०

बोलइ अमृत वाणी, सुरनर कइ मन भाणी । स० । श्री० ।

सुललित करिय वखाण, रीझविया रायराण ॥ ६ ॥ स० । श्री०

'बोहित्थरा' वंसइ दीवउ, कोड़ि वरस चिरजीवउ ॥स०।श्री०

जां लगि सूरज चन्द, 'आनन्द'प्रभु चिरनन्द ॥ ७ ॥ स० श्री०

(६)

आवउजी माहरइ पूज इणि देसड़इरे, चीतारइ श्री 'करण' नरेश रे ।

चीतारइ नरनारि नरेश ।

मुझ मुख थी पंथीड़ा वीनवे रे, जाई जिण छइ पूज तिण देश रे ॥१॥

तीन प्रदिक्षण तूं देइ करीरे, श्री जी रे तुं लागे पाय रे ।

वलि युवराजा 'रंगविजइ' भणी रे,इतरउ करिजे वीर पसाय रे॥२॥आ०

जसु दरशनि दीठइ तन ऊलसइ रे,मेरु तणी पर पूजजी धीर रे ।

मिहर करि पूज माहरइ देसड़इ रे,आवउ पुहपां(?) केरा वीर रे ॥३॥

संवेग्यां मांहे सिर सेहरउ रे, कलि मइ गौतम नइ अवतार रे ।

जंगम तीरथ तारक जगतमइं रे,जिण जीतउ वलि मदन विकाररे॥४॥

पूजजी जे किम मुझ नइ वीसरइ रे, जिणसुं धरम तणउ मुझ राग रे ।

ते गुरु वीसार्यां नवि वीसरइ रे, जेहनउ साचउ जससोभाग रे ॥५॥

'श्री जिनराजसूरीसर' गच्छ धणी रे, मानी मझनी ए अरदास रे ।

'सुमतिविजय' कहि चतुर्विध संघनी रे पूजजी सफल करउ हिव आश ॥ ६ ॥ आ०

——×*×——

कवि धर्मकीर्त्ति कृत

॥ श्री जिनसागर सूरि रास ॥

दूहा:—श्री 'थंभणपुर' नउ धणी, पणमी पास जिणंद।
श्री 'जिनसागर सूरि' ना, गुण गावुं आणंदि ॥ १ ॥
सरसति मति मुझ निरमली, आपउ करिय पसाय।
आचारज गुण गांवतां, अविहड वर द्यो माय ॥ २ ॥
वीर जिणिंद परम्परा, 'उद्योतन' 'वर्द्धमान'।
सूरि 'जिणेश्वर' पाटवी, 'जिनचन्द्र' सूरि गुणजाण ॥३॥
'अभयदेव' 'वलभ' गुरु, पाटइ श्री 'जिनदत्त'।
'जिनचंद सूरीसर' जयउ, सूरिसर 'जिनपत्ति' ॥ ४ ॥
'जिणेसर सूरि' 'प्रबोध' गुरु, 'चंद्र सूरि' सिरताज।
'कुशलसूरि' गुरु भेटतां, आपइ लखमी राज ॥ ५ ॥
'पदमसूरि' तेजइ अधिक, 'लबधि सूरि' 'जिनचंद'।
पाटि 'जिनोदय' तसु पटइ, श्री 'जिनराज' मुणिंद ॥ ६ ॥
'जिनभद्र' श्री 'जिनचंद' पटि, 'जिनसमुद्र' 'जिनहंस'।
नामइ नव निधि संपजइ, धन धन 'चोपड' वंश ॥ ७ ॥
मनवंछित सुख पूरवइ, 'माणिक सूरि' मुणिंद।
'रीहड' वंशइ गरजीयउ, युग प्रधान 'जिणचंद' ॥८॥

श्री 'अकब्बर' प्रतिबोधीयो, वचने अमृत धार।
श्री 'खरतर' गच्छराज नी, कीरति समुद्राँ पार ॥ ९ ॥
'युगप्रधान' पद आपीयो, 'अकब्बर' साहि सुजाण।
निज हाथि श्री 'जिनसिंह' नइ, पदवो दीध प्रधान ॥१०॥
तिण अवसर बहु भाव सुं, देइ 'सवा कोडि' दान।
'वच्छावत' वित वावरइ, 'कर्मचंद' मंत्रि प्रधान ॥११॥
युगवर 'जंबू' जेहवउ, रूपइ 'वइर-कुमार'।
'पंच नदी' साधी जिणइ, शुभ लगन शुभ वार ॥१२॥
संवत 'सोल गुणहत्तरइ', बूझवि साहि 'सलेम'।
'जिनशासनि मुगतउ' कर्यो, 'खरतर' गच्छ मइ खेम ।१३।
तासु पाटि 'जिनसिंह' गुरु, तासु शीस सिरताज।
'राजसमुद्र' 'सिद्धसेनजी', दरसणि सीझइ काज ॥१४॥
युगवर श्री 'जिनसिंह' नइ, पाटइ श्री 'जिनराज'।
'जिनसागरसूरि' पाटवी, आचारिज तसु काज ॥१५॥
कवण पिता कुण मात तसु, जनम नगर अभिहाण।
कुण नगरइ पद थापना, 'धरमकीरति' कहइ वाणि ॥१६॥

ढाल:— तिमरीरइ

'जंबू' दीपह थाल समाण, 'लख जोयण जेहनो परिमाण।
'दक्षिण' 'भरतइ' आरिज देस, 'मरुधरि' 'जंगलि' देस निवेस ॥१७॥
तिहां कणि राजइ 'रायसिंघ' राज, 'बीकानयर' वसइ शुभकाज।
ठाम ठाम सोहइ हट सेरी, वाजित्र वाजइ गावइ गोरी ॥१८॥

नगर मांहि बहुला व्यवहारी (व्यापारी), दानशील तप भावि उदारी।
वसइ तिहां पुण्यइ बहु वित, साह 'वछा' नामइ थिर चित्त ॥१६॥

राग :—रामगिरी।

दोहा—रयणी सोहइ चंद सुं, दिनकर सोहइ दीस।
तिम 'वछा' 'बोहिथ' कुलइ, पूरउ मनह जगीस ॥२०॥

ढाल:— पाछली

तासु घरणि 'मिरगा दे' सती, रूपइ रंभा नु जीपति।
'चउसठि' कला तणी जे जाण, मुखि बोलइ सा अमृत वाणि ॥२१॥
प्रिय सुं प्रेम धरइ मनि घणउ, 'दसरथ' सुत जिम 'सीता' सुणउ।
चंद्र चकोर मनइ जिम प्रीति, पालइ पतिव्रत धरम नी रीति ॥२२॥
पांचे इंद्री विषय संयोग, नित नित नवला बहुविध भोग।
नव यौवन काया मद मची, इंद्र संघातइ जांणे सची ॥२३॥

राग:— आसावरी

दूहा—सुखभरि सूती सुंदरि, पेखि सुपन मध राति।
रगत चोल रत्नावली, प्रिउ नै कहइ ए बात ॥ २४ ॥
सुणी वचन निज नारि ना, मेघ घटा जिम मोर।
हरख भणइ सुत ताहरइ, थासइ चतुर चकोर ॥२५॥

ढाल—आस फली माइडी मन मोरी, कूखइ कुमर निधान रे।
मनवंछित डोहलां सवि पूरइ, पामइ अधिकउ मान रे।२६।आ०।
संवत 'सोल बावन्ना' वरषइ, 'काती सुदी' 'रविवार' रे।
'चउदसि'ने दिनि असिणि रिखइ(नक्षत्रइ?),जनम थयो सुखकाररे॥२७

नित नित कुमर वाधइ वहु लक्खणि, सुरतरु नउ जिम कंद रे ।
नयणी अनोपम निलवट सोहइ, वदन पूनम नउ चंद रे ॥२८॥
सहुअ सजन भगतावी भगतइ, मेलि वहु परिवार रे ।
'चोलउ' नाम दियउ मन रंगइ, सुपन तणइ अनुसारि रे ॥२९॥
सहिअ समाण मिलि मात पासइ, साह 'वछराज' कुलि दीव रे ।
'सामल' नाम धरि हुलरावइ, मुखि बोलइ चिरजीव रे ॥३०॥

रागः— मारु

दोहा—रमइ कुमर निज हरखसुं, मात 'मृगा दे' पुत्र ।
गजगति गेलइ चालतउ, कुलमंडण अदभूत ॥ ३१ ॥
मीठा बोलइ बोलडा, काय कनक नइ वान ।
वालक 'बत्रीस लखणो', मात पिता द्यइ मान ॥ ३२ ॥

ढालः— पाछलो

माइडी मनोरथ पूरइ, सुन्दर सुंखड़ी आपइ रे ।
वड़ा वचन नवि लोपीयइ, मन सुधि सीख समापइ रे ॥३३॥
आसा वांधी माइड़ी, सेवइ सुरतरु जेमो रे ।
पोसइ कुमर नइ वहु परइ, 'शालिभद्र' जिम प्रेमो रे ॥३४॥
इण अवसरि तिहां आवीया, 'जिनसिंह सूरि' सुजाणो रे ।
श्री संघ वंदइ भावसुं, उछव अधिक मंडाणो रे ॥३५॥
मात 'मृगादे' सुत सहू, निसुणइ अरथ विचारो रे ।
मन मइ वैराग उपनो, जांणी अथिर संसारो ॥ ३६ ॥
दोहा—'गजसुकमाल' जिम 'मेघ मुनि', 'अइमतो तिण काले ।
'सामल' ते करणी करइ, जाणइ बाल गोपाल ॥३७॥

ढाल :—केदारा गौडी

सांभली वचन सहगुरु केरा, जीवादिक नवतत्व भलेरा ।
उपशम रस ध(भ?)र कायकलेसी, संजम सेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
मात पासे जइ कुमर सोभागी, पभणइ संजमि लीउ मनरागी ।
अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, नवि कीजइ चारित्र अंतराइ ॥३९॥
मात भणइ वछ सांभलि साचुं, इण वचनइ पुत्र हुं नवि राचुं ।
लोह चणा मयण दांति चबायइ, तेहथी संजम कठिन कहायइ ॥४०॥
कुमर भणइ माता किं सूरे परचारइ, कायर हुइ ते हीयडुं हारइ ।
संजम लेवा बात कहेवी, मइ पिण निश्चइ दिक्षा लेवी ॥ ४१ ॥

राग :—देसाख

दोहा :—वडभाइ 'विक्रम' सहित, 'मात' भणइ मु(तु?)झसाथि ।
करिसुं आत्माराधना, 'जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
दूध मांहि साकर मिली, पीतां आणंद होइ ।
वचन सुणि निज मातना, हरखउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
'विक्रमपुर' थी अनुकमइ, सदगुरु करइ (अ) विहार ।
'अमरसरइ' पउधारिया, 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
सामाइक पोसउ करइ, पडिकमणउ गुरु पासि ।
संजम लेवा कारणइ, कुमर मनइ उलासि ॥४५॥
श्री'अमरसर' संघ तिही, हरखित थयउ अपार ।
वाजित्र बाजइ नवनवा, वरनउलां सुप्रकार ॥४६॥
'श्रीमाल' वंशि सुहामणउ, 'थानसिंह' थिर चित्त ।
संजम उछव कारणइ, खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

संवत 'सोल इकसठइ' 'माह' मासि सुभ मासि ।
मात सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥
तिहांथी चारित लेइ नइ, सदगुरु साथि विहार ।
विद्या सीखइ अति घणी, धरता हर्ष अपार ॥४६॥
अनुक्रमि देस वंदावतां, आया 'जिनसिंह' राया ।
'राजनगर' 'जिनचंद' ने, लागइ जुगवर पाया ॥५०॥
पांच समिती तीन गुप्ति जे, पालइ प्रवचन मात ।
छ जीवनी रक्षा करइ, न करइ पर नी तात्ति ॥५१॥
सामाचारि सूत्र अरथ, जाणइ सरव प्रकार ।
'सतावीस' गुणे करी, सोहइ 'सामल' सार ॥५२॥
तप वूहा मांडलि तणा, वड दिखा तिहां दीध ।
'श्रीजिनचंद्र सूरि' सइंहथइ, 'सिद्धसेन' मुनि कीध ॥५३॥
वूहा उपधान उलटइ, आगम ना वलि जोग ।
'छ मासी' 'विक्रमपुरइ' सरिया सकल संयोग ॥५४॥
सुगुरु भणावइ चाह सुं, उत्तम वचन विलास ।
युगप्रधान वहु हित धरइ, पहुंचइ वंछित आस ॥५५॥

चउपइ :—पभणइ शास्त्र सिद्धांत विचार, मुणिवर 'सिद्धसेन' सिरदार
गुरु नउ विनय साचवइ भलउ, 'सिद्धसेन' विद्या गुण निलउ ॥५६॥
'अंग इग्यारह' 'बार-उपंग', 'पयन्ना-दस भणइ मन चंग ।
'छ छेद' ग्रन्थ मूल सूत्रह 'च्यारि',
'नन्दी', अनइ 'अनुयोगदुआर' ॥५७॥

'चउदह' विद्या तणउ निहाण, सदगुरु उत्तम करइ वखाण।
उदयवंत अवसर नउ जाण, निज गुरु तणइ जे मानइ आण ॥५८॥
खमावंत मांहे पहली लीह, सोहइ गुरु पासइ निसदीह।
दस विध जतीधरम नउ धणी, तप जप संयम करुणा घणी ॥५९॥
यात्र करी 'सैत्रुजां' तणी, साथइ 'जिनसिंह सूरि' दिनमणी।
संघवी 'आसकरण' विख्यात, संघ करावी कारिअ जात ॥६०॥
'खंभात' नइ 'अमदाबाद', 'पाटण' मांहि घणउ जसवाद।
'वडली' वंदया 'जिनदत्तसूरि', भेट्या पातक जायइ दूर ॥६१॥
इणि अनुक्रमि 'जिनसिंह सूरि', 'सीरोहीयइ' गुरु सबल पडूरि।
करिअ पइसारौ वंदइ संघ, राजा मान दियइ 'राजसिंह' ॥६२॥
'जालउरइ' आवइ गच्छराज, वाजित्र बाजइ बहुत दिवाज।
श्रीसंघ सुं वंदइ कामिनी, रूपइ जीति सुर भामिनी ॥६३॥
'खंडप' नई 'द्रूणाडा हेव, 'घंघाणी' भेटया बहु देव।
अनुक्रमि मन मइ धरिअ ऊलासि, आव्या'बीकानेर' चउमासि ॥६४॥
'वाघमल' पइसारो करइ, नीसाणइ अंबर थरहरइ।
कीधा नेजां पोलि पागार, वसतिइं आयां श्रीगणधार ॥६५॥
आनन्दइ चउमासउ करी(इ), आया 'मेवडा' बहु हित धरी।
तेडावइ श्रीशाहि 'सलेम', 'मेडता' आया कुसले खेम ॥६६॥

रागः— वैराडी

दूहा — तिणि अवसर 'जिणसिंह' नउ, परवसि थयउ सरीर।
देवगतइ छूटा नही, पुरष वडा बहु मीर ॥६७॥

अवसर जाणी तिण समइ, श्रीसंघ कहइ विचारि ।
बोलइ सदगुरु चित धरी, वड वखती सिरदार ॥६८॥
अणशण आराधन करी, पहुंता गुरु सुर लोग ।
वाजित्र वाजइ तिहां घणा, मांडवी तणइ संजोगि ॥६९॥
सोग निवारी थापीया, सखर महुरत लीध ।
भट्टारक गुरु 'राजसी', 'सामल' आचारज कीध ।७०॥
'आसकरण' 'अमीपाल' वलि, 'कपूरचन्द' सुविलास ।
पद ठवणउ करइ रंग सुं, 'ऋषभदास' 'सूरदास' ॥७१॥

रागः— आसावरी

तव सिणगार्यां पोलि पगारा, तंबू उंचा खचीयां ।
मस्तक उपरि मोती झुंबइ, वहींचइ आरइ लचीयां ॥
तेह तलइ बइठा बहु लोग, भूमि भाग नहिं माग ।
एक एकनइ वेल्हइ मेल्हइ, तिल पडिवा नहीं लाग ॥७२॥
सबली नांदि मंडाइ तिहां कणि, वाजित्र विविध प्रकार ।
सूरी मंत्र आप्यउ तिण अवसरि, 'हेमसूरि' गणधार ॥
श्री 'जिनराज' सूरिश्वर नामइ, साधु तणा सिणगार ।
बालपणइ सूरि पद आपी, सुंप्यउ गच्छ नउ भार ॥ ७३ ॥
तेहिज नांदि आचारिज पदवी, 'श्री जिनराज' समीपइ ।
मन सुद्धइ सूरि मंत्र ज देइ, 'जिनसागर सूरि' थापइ ।
सजि सिणगारने कामिणी आवइ, भरि भरि मोतिन थाल ॥
सोवन फूलि बधावइ सदगुरु, गांवइ गीत धमाल ॥ ७४ ॥

संवत 'सोल चउहत्तरि' वरसइ, 'फागुण सुदि' 'सनिवार'।
शुभ वेला सुभ महूरत जोगइ, 'सातमि' दिवस अपार ॥
संघ सहु हरखित थइ वंदइ, द्यइ बहुलउ बहुमान।
'आसकरण' संघवी तिण अवसरि, आपइ वांछित दान ॥७५॥
भट्टारक 'जिनराजसूरि', वर्त्तमान गणधार।
पाटइ 'जिनसागर' वरू, आचारिज अधिकार ॥७६॥

ढाल :—तेहिज

विहिरिअ 'राणपुरइ' 'वरकाणइ', 'तिमिरि' भेट्या पास।
'ओइस' 'घंघाणी' यात्र करीनइ, 'मेडतइ' करिअ चउमास।
तिहाथी उच्छव कीध 'जेसाणइ', 'भणसाली' 'जीवराज'।
'राउल' 'कल्याण' सुं श्री संघ वंदइ, सीधा सगला काज ॥७७॥
अमृत वाणि सुणइ तिहां श्रीसंघ, बंच्या इग्यारह अंग।
मिश्री सहित रुपइआ लाहइ, साह 'कुसला' मन रंग ॥
लद्रुपुरइ पाउधारइ सदगुरु, श्रीसंघ साथइ आवइ ;
साहमीवछल करइ साह 'थाहरु', 'श्रीमल' सुत वित्त वावइ ॥७८॥
तिहांथी विहार करि 'जिनसागर', आचारज हितकार।
'फलवद्धीयइ' आवइ ततखिण, थावइ बहुअ प्रकार ॥
उलट धरिअ तिहां कणि वांदइ, श्रीसंघ द्यइ बहुमान।
पइसारउ करि 'झावक' 'मानइ', दीधउ याचक दान ॥७९॥
श्रीखरतर गच्छ सोह चडावइ, तिहांथी करिअ विहार।
'करणुंअइ' आया बहु रंगइ, संघ वंदइ गणधार ॥

वीकानयर वंदीइ पहुंचइ, 'श्रीजिनसागर सूरि' ।

'पासणीए' करयुं पइसारउ, रंगइ बहुत पडूरि ॥८०॥

राग :—सामेरी

पासाणी बहु वित बावइ, पइसारउ साम्ही आवइ ।

'सोलह सिणगारे' सारी, सिरि(श्री?) कलश धरि बहु नारी ॥८१॥

सिरि 'भागचंद' सुत आवइ, 'मणुहरदास' निज दावइ ।

वलि संघ सहगुरु वंदइ, श्रीखरतरगच्छ चिरनंदइ ॥८२॥

तिहां वाजइ ढोल नीसाण, संख झालरनउ मंडाण ।

बहु उछवि वसतइ आयां, श्रीसंघ तणइ मनिभाया ॥८३॥

सुहव मिली निउंछण कीजइ, निज जन्म तणउ फल लीजई ।

तंबोल भली पर दीधा, मन वंछिन कारिज सीधा ॥८४॥

राग :—धन्याश्री

'विक्रमपुर' थी संचरी ए, 'सर' मांहि करिअ चउमास ।

दिन दिन रंग वधामणाए पूरइ मननीआस ।।आं०।।

वधावउ सद्‌गुरु ए,'जिनसागरसूरि'वधावउ ।आ०।खरतरगच्छपडूर।व०।

तिहां श्री रंगइ आवियाए, 'जालयसर' सुखवास ।व०।

उच्छव सुगुरु वांदिआए, मंत्री 'भगवंत दास' ।।८५।।व०।।

विचरिय तिहां थी भावसुं ए, 'डीडवाणउ' वंदावि ॥ व० ॥

'सुरपुर' संघ सुहामणउ, भेटइ बहुलइ भावि । व० ॥ ८६ ॥

'मालपुरइ' महिमा थइ ए, लीधउ लाभ विशेष ॥ व० ॥

श्री संघ वंदइ चाह सुं, प्रहसमि नयणे पेखि ॥ व० ॥ ८७ ॥

नयर 'वीलाडइ' चित धरी ए, चतुर करइ चउमास ॥ व० ॥
उच्छव करइ 'कटारिआ' ए, पांखी पारण खास ॥ व ॥ ८८ ॥
अनुक्रमि सदगुरु पांगुरइ ए, 'मेदनीतटह' निहाली ॥ व० ॥
'रायमल' सुत जगि परिगडउए, 'गोलवछा' 'अमीपाल' ॥८६॥व॥
बंधव जेहनइ अति भलउए, वड वखती 'नेतसीह' ॥ व० ॥
बहु परिवारइ दीपताए, भात्रीजउ 'राजसीह' ॥ व० ॥ ६० ॥
सबली नांदइ आदर्यो ए, व्रत उच्चार सवेर ॥ व० ॥
रूपइए लाहण करिए, तंबोलइ नालेर ॥ व० ॥ ६१ ॥
'रेखाउत' वित्त वावरइ ए, 'सीरीमाल' 'वीरदास' ॥ व० ॥
'माडण' 'तेजा' रंगसुं ए, 'रीहड' 'दरडा' खास ॥ व० ॥ ६२ ॥
सुंदर गुरु सोहामणउ ए, भावइ कीजइ सेव ॥ व० ॥
तिहाथी विहरी अनुक्रमि ए, वंद्या 'राणपुर' देव ॥ व० ॥ ६३ ॥
'कुंभलमेरइ' जिन थुणी ए, 'मेवाडइ' गुणगांन ॥ व० ॥
'उदयपुरां' नउ राजीयउ ए, राणउ 'करण' द्यइ मान ॥६४॥व०॥
'लखमीचंद' सुत परगडाए, 'रामचंद' 'रघुनाथ' ॥ व० ॥
चित्त धरि वंदइ प्रहसमइए, 'अजाइब दे' सुत साथि ॥६५॥व०॥
साधु विहारइ पग भरइ ए, 'सोनगिरइ' अहिठाण ॥ व० ॥
श्री संघ उच्छव नित करइ ए, अवशर नउ जे जाण ॥६६॥व०॥
'साचउर' संघ सहु मिली ए, आग्रह हे 'हाथिसाह' ॥ व० ॥
चउमासइ गुरु राखीयाए, 'जिनसागर' गजगाह ॥ ६७ ॥ व० ॥
वर्त्तमान गच्छराजजी ए, 'जिनसागर सूरि' सुखकार ॥व०॥
'श्री जिनसागर' चिरजयउए, आचारिज पद धार ॥६८॥व०॥

युगवर खरतर गच्छ धणीए, 'जिनचंद सूरि' गुरुराय ॥व०॥
शीस सिरोमणी अतिभलाए, 'धरमनिधान' उवझाय ॥९९॥व०॥
तास शीस अति रंगसु ए, 'धरमकीरति' गुण गाइ ॥ व० ॥
संवत 'सोलइक्यासीयइए, 'पोस वदि' 'पंचमि भाइ ॥१००॥
'श्री जिनसागरसूरि' नउ ए, रास रच्युं सुखकंद ॥ व० ॥
सुणतां नवनिध संपजइ ए, गातां परमाणंद ॥ १०१ ॥ व० ॥
तां प्रतपउ गुरु महियलइ, जां गगनइ दिनईस ॥ व० ॥
"धरमकीरति" गणि इम कहइ ए, पूरे सकल जगीस ॥१०२॥व०

इति भट्टारक जिनसागर सूरिणाम् रास
(बीकानेर स्टेट लायब्रेरीमें पत्र ४)

——**——

श्रीजिनसागर सूरि सवैया

धुरा देस मरुधरा शहर 'बीकाण' सदाइ,
'बोहिथ' हरे विरुद इत वसइ 'वछउ' वरदाइ ।
'मृगा मांत' मोटिम्म, सुपन सूचित सुत सुन्दर,
'आठ' वर्ष अधिकार कला अभ्यास कुलोधर ।
वैराग जोग मां रमतइ, लखमी तजी कोडे लखे,
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसडे आरखे ॥१॥
युगप्रधान 'जिनसिंह' वंस 'चोपडा' विसेखइ,
श्रावक 'अकबर' शाहि लीध धर्मलाभ अलेखइ ।
सइंहथ तेण गुरु पासि, सुकृत करि माता संगइ,
'अमरसरइ' ऊनति आए मनरंगि अभंगइ ॥

संग्रह्यो साधु मारग सरस, पूरण गुण पूरण पखे,
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसडे आरखे ॥२॥
विनय विवेक विचार वाणि सरसती विराजइ,
'विद्या चवद' निधान, सुजस जगि वाजा वाजइ।
विषम वाणि विषवाद, विषयरस अंगि न बाधइ,
वखतवंत वर विबुध वान दिन प्रति वाधइ॥
वाजणी थाट वादी विषइ, परि परि पूगउ पारखे।
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसडे आरखे ॥३॥
उछव रंग बधाइ दिवावत, सुंदर मंगल गीत सुहावत,
मोतीन थाल विसाल भरि भरि, भामिनी भावसुं आपि बधावत।
गच्छ नायक लायक लाख गुणी, गुण गावत वंछित ते फल पावत।
श्री 'जिनसागरसूरि' वइरागर, नागर रंगि देख्यउ गुरुआवत ॥४॥
प्रगट सोभाग साग विकट वइराग माग,
राग हुं कउ लाग दोष दूरि हीर हीयउ हइ।
ततु तुम दृढ़धार अमृत ज्ञान आहार
कठिन क्रिया प्रकार काम जु वहीयउहइ।
ललित ललाट नूर, तपति प्रताप सूर,
'सागर' सुरिंद गुरु गौतम कहायउ हइ ॥५॥
सवाया छइ (उपरोक्त विकानेर स्टेट लायब्रेरी की
प्रति में, तत्कालीन लि०)

—–×✱×—–

कवि सुमतिवल्लभ कृत

श्री जिनसागर सूरि निर्वाणरास

दूहा:—समरुं सरसति सामिनी, अविरल वाणि दे मात।
गुण गाइसुं गच्छराज ना, 'सागर सूरि' विख्यात ॥१॥
सहर 'बीकाणो' अति सरस, लखिमी लाहो लेत।
'ओस वंश' मंइ परगड़ा, 'बोहिथरा' विरुदेत ॥ २ ॥
'वच्छराज' घरि भारजा, 'मिरघा दे' सुत दोइ।
'बीको' नइ 'सामल' सुखो, अविचल जोड़ी जोइ ॥ ३ ॥
श्री 'जिनसिंघ सुरीश' नी, सांभलि देशन सार।
मात सहित बान्धव बिन्हे, संज (म) लइ सुखकार ॥४॥
'माणिकमाला' मावड़ी, 'विनयकल्याण' विशेष।
'सिद्धसेन' इम त्रिहुं तणा, नाम दीक्षा ना देखि ॥ ५ ॥
'वादी राय' भणाविया, 'हर्षनंदन' करि चित्त।
'चवदह' विद्या सीखवी, सूत्र अर्थ संयुक्त ॥ ६ ॥
सूधो संयम पालतां, विद्या नउ अभ्यास।
करतां गीतारथ थया, पुण्याइ परकास ॥ ७ ॥
'सिद्धसेन' अभिनव थयो, 'सिद्धसेन' अवतार।
बीजा चेला बापड़ा, 'सांमलिउ' सिरदार ॥ ८ ॥
श्री 'जिनचंद सुरीश' नउ, वचन विचारी एम।
आचारिज पद थापना, कीधी कहिस्युं नेम ॥ ९ ॥

ढाल १ (पुरन्दरनी चौपाइनी)

'मरुधर' देसि मझार 'मेड़तो' सहर भलोरी ।
'आसकरण' 'ओसवाल', 'चोपड़ा' वंश तिलोरी ॥ १ ॥
पद ठवणो करि पूज्य, अवसर एह लहो री ।
खरचे द्रव्य अनेक, सुकृत ठाम सही री ॥ २ ॥
सूरि मंत्र लह्यो शुद्ध, सहगुरु तेणि समे री ।
श्री 'जिनसागर सूरि' इन्द्रिय पांच दमे री ॥ ३ ॥
मोटो साधु महन्त, करणी कठिन करे री ।
श्री 'जिनसिंह' के पाट, खरतर गच्छ खरेरी ॥ ४ ॥
पालि पंच आचार, तारण तरण तरो री ।
पंच सुमति प्रतिपाल, खप संयम को खरी री ॥ ५ ॥
पृथिवी करिय पवित्र, साथि साधु भला री ।
अप्रतिबद्ध विहार, दिन दिन अधिक कला री ॥ ६ ॥
'चौरासी गच्छ' मांहि, जाकी शोभ भली री ।
चतुर्विध संघ सनूर, संपद गच्छ मिली री ॥ ७ ॥

ढाल २ (मनड़ो मान्यो रे गौड़ी पासजी रे)

मनडुं रे मोह्यु माहरु पूजजी रे, श्री 'जिनसागर सूरि' ।
वड़ भागी भट्टारक ए भला जी, दिन दिन गच्छ पडूरि ॥ १ ॥
सखर गीतारथ साधु भला भलाजी, मानइ मानइ पूज्य नी आण ।
'समयसुन्दर' जी,पाठक परगड़ाजी, पाठक 'पुण्य प्रधान' रे ॥ २ ॥

'जिनचन्द्र सूरि ना' शिष्य माने सहुजी, वड़ा बड़ा श्रावक तेम ।
धनवंत धींगा पूज्य तणइ पखइजी, बड़भागी गुरु एम ॥ ३ ॥म०
संघ उदयवन्त 'अहमदाबाद' नौ जी, 'बीकानेर' विशेष ।
'पाटण' नइ 'खंभाइत' श्रावक दीपताजी,'मुलताणी'राखी रेख॥४॥म०
'जेसलमेरी' श्रावक पूज्य ना परगड़ाजी, संघनायक 'संखवाल' ।
'मेड़ता' मईं 'गोलवच्छा' गह गहैजी, 'आगरा'में 'ओसवाल' ॥५॥म०
'बीलाड़ा' मइं संघवी 'कटारिया' जी, 'जइतारणि' 'जालोर' ।
'पचियाख''पाल्हणपुर''भुज्ज''सूरत'मइं जी,'दिल्ली' नइ 'लाहोर'॥६॥म०
'लूणकरणसर' 'उच्च' 'मरोट' मइं जी, नगर 'थटा' मांहि तेम ।
'डेरा' में सामग्री साबती जी 'फलवधी' 'पोकरण' एम ॥७॥ म०
'सागरसूरि' ना श्रावक सहु सुखीजी, अधिकारी 'ओसवाल' ।
देश प्रदेशे श्रावक दीपताजी, भर खंचण भूपाल ॥ ८ ॥ म०

ढाल ३ (कड़खानी)

'करमसी' शाह संवत्सरी पोखिनै, 'महमद' दिइ अति सुजश लेवे ।
सुपुत्र 'लालचन्द'हर वरस संवत्सरी,पोखि ने संघ नुं श्रीफल देवे॥१॥
धन्य हो धन्य 'सागरह सूरिन्द' गुरु, जेहनो गच्छ दीपे सवायो ।
वड़ बड़ा श्रावक परगड़ा नवखंडे,पूज्य नो सुयश त्रिहुंलोक गायो॥२॥
शाह 'लालचन्द' नी, धन्य बड़ी मावड़ी,जे विद्यमान 'धनादे' कहीजइ ।
'पूठीया' उपरा खंडनो 'पीटणी', सखर समराविनइ लाभ लीजइ॥३॥
वहुअ 'कपूर दे' जेहनो जाणईं, सुपुत्र 'उग्रसेन' नी जेह माता ।
खरचवइ आगला गच्छ ना काम नइ,धर्म ना रागिया अधिक दाता॥४॥

साह'शान्तिदास' सहोदर 'कपूरचन्द' सुं, वेलिया हेम ना जेह आपै।
'सहस दोय रूपिया पाच शत' आगला, खरचिने सुजश निज सुथिर थापै ॥५॥

मात 'मानबाई इं' खंड इक पीटणी, करीय उपासरइ(में)सुजश लीधा।
वरस ना वरस आसाढ़ चोमास ना,पोसीता पोखिवा बोल कीधा॥६॥

शाह 'मनजी' तणो कुटुंब अति दीपतो, चिहुं खंडे चंद नामो चढायो।
शाह 'उदेकरण' 'हाथी' खरो 'हाथियो', जेठमल 'सोमजी' तिम सवायो ॥७॥

धरम करणी करै'शाह हाथी'अधिक,राय'बन्दी'छोड़नो विरूद राखै।
जीव प्रतिपाल उपगार सहु नै करै,सुपुत्र'पनजी'भला सुजस दाखै॥८॥

'मूलजी संघजी' पुत्र 'वीरजी, 'परोख' सोनपाल' 'सूरजी' वखाणो।
साखीयां'वोस नइ च्यारि' जीमाड़िने,पुण्य नौ वाहरु जे कहाणो ॥९॥

'परीख''चन्द्रभाण''लालू'सदा दीपता,'अमरसी'शाह सिरताज जाणो।
'संघवी' 'कचरमल्ल परीख' अखइ अधिक, बाछड़ा 'देवकर्ण' तिम वखाणौ !! १० ॥

साह 'गुणराजना' सुपुत्र अति सलहीइं, 'रायचन्द गुलालचन्द' साह दाखो।
एम श्रीसंघ उदयवंत'राजनगर'नो,भल भला श्रावक एम आखो ॥११

तेम 'खंभाइती' संघ नायक बड़ो,'भंडशाली' 'वधू' सुतन कहीइं।
बड़ वड़ी धरम करणी घणी जे करी,लाख मोजां'ऋषभदास'लहिए॥१२॥

दोहा—श्री 'जिनसागरसूरि' नो, उदयवन्त परिवार।
चेला गीतारथ सहु, पालइ पञ्च आचार ॥ १ ॥

यथा योग जाणी करी, पाठक वाचक कीध ।
श्री 'जिनधर्म'सूरीशने, गच्छ भार इम दीध ॥२॥

ढाल ३

इक दिन दासी दौड़ती,
आवै कृष्ण नइ पासे रे ॥ एहनी ॥

'अहमदाबाद' मइ आंपणइ, सेंहथि संघ हजूर रे ।
प्रथम ओढाड़ी पछेवड़ी, श्री'जिनसागरसूर' रे ॥ १ ॥

अवसर लाखीणो लही, खरचे द्रव्य अनेक रे ।
'भणसाली 'वधू' भारिजा, 'विमला दे' सुविवेक रे ॥२॥

चलतुं पद थापन करी, सूर मन्त्र गुरु दीध रे ।
श्री'जिनधर्म सूरीश्वरु', नाम थापना इम कीध रे ॥ ३ ॥

संघवणि 'सहजलदे' तिहां, ल्यइ लिखमी नो लाह रे ।
पद ठवणो करइ परगड़ो, कहइ लोक वाह-वाह रे ॥४॥

पहिला पणि सुकृत जिके, कीधा अनेक प्रकार रे ।
शत्रुंजय संघ कराविउ, खरची द्रव्य हजार रे ॥ ५ ॥

श्री 'जिनसागरसूरि' जी, सहगुरु साथे लीध रे ।
पाटंबरने पांभरी, जाचक जन ने दीध रे ॥ ६ ॥

'भणसाली सधुआ' घरणि, ते 'सहिजल दे' एह रे ।
पद ठवणि जे 'पूज्य' नै, खरची नइ जस लेह रे ॥ ७ ॥

ढाल ४ (कपूर हुवे अति ऊजलो रे)

अवसर जाणी आपणउ रे, आगल थी अणगार ।
जिण थी शिव सुख पामिइ रे, ते सांभलि अंग इग्यार ॥ १ ॥

सुगुरु जो धन्य-धन्य तुम अवतार,
एमाणस भव नुं सार ॥ आंकणी ॥

आनुपूरवी एहवी रे, उपशम्यो पूरव रोग ।
श्री संघ 'अहमदाबाद' नो रे, गीतारथ संयोग ॥२॥

'आखातीज' नइ द्याहड़ि रे, शिष्यादिक नइ सार ।
सीखामणि सहगुरु दि(य)इं रे, गुरु गच्छ नुं व्यवहार ॥३॥

चारित फेरी ऊचरि रे, गच्छ भार सहु छोड़ि ।
उत्तम मारग आदरि रे, अशुभ कर्म दल तोड़ि ॥ ४ ॥

'सुदि आठम वैसाख' नो रे, अणसण नो उच्चार ।
श्रीसंघ नी साखि करइ रे,त्रिविधि-त्रिविध विविहार ॥५॥

पासे गीतारथ यति रे, श्री 'राजसोम' उवझाय ।
'राजसार'पाठक भला जी, 'सुमतिजी' गणि नी सहाय ॥६॥

'दयाकुशल' वाचक वलि रे, 'धर्ममन्दिर' मुनि एम ।
'समयनिधान' वाचक वह रे, 'ज्ञानधर्म' मुनि तेम ॥ ७ ॥

"सुमतिवल्लभ" सावधान सुं रे, आठ पुहर सीम तेम ।
शाह 'हाथी' धर्म हाथियो रे, निजरावि गुरु एम ॥ ८ ॥

ढाल (५) बिणजारानी

मोरा सहगुरुजी, तुम्हें करज्यो शरणा च्यार । सहगुरुजी करज्यो०
अरिहन्त सिद्ध सुसाधुनो मो० केवलि भाषित धर्म,
एफल नरभव लाध नो ॥ १ ॥ मो०

जीव 'चुरासी' लाख, त्रिकरण शुद्ध खमाविज्यो । मो० ।
पाप अठारह थान, परिहरि अरिहन्त ध्यावज्यो ॥ २ ॥ मो०

परिहरि सगला दोष, बिंतालीस आहार ना। मो०
जिन धर्म एक आधार, टालि दुःख संसार ना ॥ ३ ॥ मो०
ए संसार असार, स्वारथ नो सहुको सगो। मो०।
अथिर कुटुम्ब परिवार, धर्म जागरिया तुम जगो ॥ ४ ॥ मो०
अथिर छइ पुत्र कलत्र, अथिर माल घर परिग्रहो। मो०।
अथिर विभव अधिकार, अथिर काया तिमि ए कहो ॥५॥ मो०
तुम्हें भावज्यो भावन बार, मन समाधि मांहि राखज्यो। मो०।
अथिर मात नइ तात, अथिर शिष्यादिक नइ भाखज्यो ॥ ६ ॥ मो०
जीवत हाथ मइं जाइ, राखी को न सकइ सही। मो०।
जेहवो संध्या वान, तेहवी संपद ए कही ॥ ७ ॥ मो०

एकलो आवइ जीव, जाइं एकलो प्राणियो। मो०।
पुण्य पाप दोइ साथ, भगवंत एम वखाणियो ॥ ८ ॥ मो०
बाल मरण करी जीव, ठामि ठामि हुओ दुखी ।मो०।
पंडित मरण ए जाणि, जिण थी जीव हुवइ सुखी ॥॥६॥मो०
इम भावना एकांत भाव, अरिहन्त धर्म आराधता ।मो०।
पुंहता सरग मझारि, आतम कारिज साधता ॥१०॥मो०॥

दोहा :—'सतर(इ) सइ उगणीस' मइं, मास 'जेठ बदि तीज'।
'शुक्रे' 'सागरसूरि' जी, सरग ना पाम्या चीज ॥ १ ॥

ढाल ६—*काया कामिनी वीनवइ रे लाल, एहनी।*

अवसर लाखीणो लहीरे, साह हाथी सर्व जाण ।मेरे पूजजी०।
महिमा मोटी इम करइ रे लाल, पूज्य तणइ निर्वाण ॥ १ ॥
पासइ रहि निजराविचारे, दिन 'इग्यारह' सीम। मे०।
सुंस सबद व्रत आखड़ी रे लाल, नाना विधि ना नोम ॥२॥मे०

चोवा चंदन अरगजा रे, सहगुरु तणइ सरीर। मे०।
करि अरचा पहिरावियां रे लाल, पांभरी पाटू चीर ॥मे०॥३॥

देव विमान जिसो करी रे, मांडवी अति श्रीकार। मे०।
बाजे गाजे बाजते रे लाल, करि नीहरण विचार ॥मे०॥४॥

वयरचि सूकड़ि अगर सुं रे लाल, कस्तूरी घनसार। मे०।
दहन दींइ घृत सींचता रे लाल, श्री पूज्य नुं तिणवार ॥मे०॥५॥

जीव छुड़ावी (वे?)जुगति सुं रे, श्री संघ भेलो होइ। मे०।
'गायां' 'पाडा' 'बाकरी' रे लाल, रूपइया शत 'दोइ' ॥मे०॥६॥

'शान्तिनाथ' नइ देहरइ रे लाल, वांदी देव विशेष। मे०।
वचन सांभलि वीतराग ना रे लाल, मूंकी सोग अशेष ॥मे०॥७॥

(ढाल ८) धन्याश्री—*कुंवर भलइ आविया एहनी।*

श्री 'जिनसागर सूरि' जी ए, पाटि प्रभाकर तेम।
सुगुरु भले गाइयइ, श्री'जिनधर्म सुरीसरुए, जयवंता जग एम ॥१॥

देस प्रदेशे विहरता ए, भविक जीव प्रतिबोह। स०।
उदयवंत गच्छ जेहनो ए, महियल मोटो सोह ॥ स० ॥ २ ॥

गुण गातां सगुरु तणा ए, पूज्यइ मन नी खांति। स०।
मन वंछित सहु ना फलि ए, भांजि मन नी भ्रांति ॥ स० ॥ ३ ॥

संवत 'सतर वीसोत्तरइ' ए, 'सुमतिवल्लभ' ए रास। स०।
'श्रावणसुदि पुनम' दिनि ए, कीधो मनह उल्लास ॥ स० ॥ ४ ॥

श्री 'जिनधर्म सुरीश' नो ए, माथि छै मुझ हाथ। स०।
'सुमतिवल्लभ' मुनि इम कहइ ए, 'सुमतिसमुद्र' शिष्य साथ ।स०।५।

॥ इति श्रीनिर्वाणरास संपूर्णम ॥

(हमारे संग्रह में, तत्कालीन लि०)

श्री जिनसागरसूरि अष्टकम्

(१)

श्री मञ्जेशलमेरुदुर्ग नगरे, श्री विक्रमे गुर्जरे।
थट्टायां भटनेर मेदिनितटे, श्री मेदपाटे स्फुटम्॥
श्री जावालपुरे च योधनगरे, श्री नागपुर्यां पुनः।
श्रीमल्लाभपुरे च वीरमपुरे, श्री सत्यपुर्यामपि ॥१॥
मूलत्राण पुरे मरोट्ट नगरे, देराउरे, पुग्गले।
श्री उच्चे किरहोर सिद्धनगरे, धींगोटके संवले॥
श्री लाहोरपुरे महाजन रिणी, श्री आगराख्ये पुरे।
सांगानेरपुरे सुपर्व सरसि, श्री मालपुर्यां पुनः ॥२॥
श्री मत्पत्तन नाम्नि राजनगरे, श्री स्थंभतीर्थे स्तथा।
द्वीपे श्री भृगुकच्छ वृद्धनगरे, सौराष्टके सर्वतः।
श्री वाराणपूरे च राधनपूरे, श्री गूर्जरे मालवे।
....॥३॥
सर्वत्र प्रसरी सरीति सततं, सौभाग्यमाम्रालयतः।
वैराग्यं विशदा मतिः सुभगता, भाग्याधिकत्वं भृशम्।
नैपुण्यं च कृतज्ञता सुजनता, येषां यशोवादता।
सूरि श्री जिनसागरा विजयिनो, भूयासुरेते चिरम ॥४॥
आचार्याः शतशश्च संति शतशो, गच्छेषु नाम्नांपरम्।
त्वं त्वाचार्य पदार्थयुग् युगवरः, प्रौढः प्रतापाकरः॥

भव्यानां भव सागर प्रतरणे, पोतायमानो भुवि ।
श्री मच्छ्री जिनसागरः सुखकरः, सर्वत्र शोभा करः ॥५॥
सौम्यश्री हिम दीधि तौ सुर गुरौ, बुद्धि र्द्धरायां क्षमा ।
तेजःश्री स्तरणौ परोपकृति धीः, श्री विक्रमे भूपतौ ॥
सिद्धि गौरखनाथ योगिनि बहु,लंभिश्च लम्बोदरे ।
संत्येवं विविधाश्रया गुण गणाः, सर्वेश्रिता त्वां प्रभो ॥६॥
श्री बोहित्थ कुलांबुधि प्रविलसत्प्रालेय रोचि प्रभा ।
भास्वन्मातृ मृगांसु कुक्षि सरसि, श्री राजहंसोपमाः ॥
श्री मद्विक्रम वासि विश्व विदिताः, श्री वस्तराजां गजाः ।
संतु श्री जिनसागरा, खरतरे, गच्छे चिरंजीविनः॥७॥
इत्थं काव्य कदम्बकं प्रवरकं, मुक्तापुरः प्राभृतम् ।
विज्ञप्तं समयादिसुन्दर गणिर्भक्त्या विधत्तेभृशम् ॥
युष्मत्प्रौढतम प्रताप तपनो, देदीप्यतां सत्वरः ।
यूयं पूरयत स्व भक्त यतिनां, शीघ्रं मनोवांछितम् ॥ ८ ॥

(विकानेर स्टेट लायब्रेरी)

॥ जिनसागरसूरि अवदात गीत ॥

(२)

पूरउ पण्डित पूछीयउ रे, भामिणि आप सभावरे। जोसीड़ा।
आवो टीपणो देखिने, मांडि लगन उपाय रे॥ १॥ जो०
'श्रीजिनसागरसूरिजी' रे, आज काल किण गाम रे। जो०।
मो मन वांदण उमह्यो रे, सुणि अवदात नइ नाम रे। जो०।
'श्रीजिनसागरसूरिजी रे लो०। आ०।
'श्रीजिनकुशल' यतीश्वरइ रे लो, सुपन दिखाड्यो साच रे। जो०
जन्म थकी यश विस्तर्यों रे, निकलंक काछ नइ वाच रे।२। जो०
राउल 'भीम' नरेसरइ रे लो, निरखी गुरु मुख नूर। जो०।
केसर चन्दन चरची नइ रे, पामिसि पदवी पडूर रे। ३। जो०
उदय दिखाडयो 'अम्बिका' रे लो,श्री जिनशासन देव रे। जो०
युगप्रधान 'जिनचन्दजी'रे लो,करइ कृपा नित मेव रे। ४। जो०
मन मान्या वंछित फल्या रे, पूज्य पधार्या आप रे। जो०।
'हर्पनन्दन' कहइ सर्वदा रे लो, वाधउ अधिक प्रताप रे। ५। जो०

(३)

गाम नगर पुर विहरता पूजजी, 'श्रीजिनसागरसूरि'।
कठिन क्रिया खप आदरी, पूजजी, एहवि सुजस पडूरि॥ १॥
पूजजी पधारउ सूरजी 'मेडतइ' रे, श्रावक अति अविवेक।
श्रावक चितारइ दिन प्रति चाह सुं, थापइ लाभ अनेक।
श्रीसंघ श्रीसंघ वांदी हो, हरखित थाइस्यइ। आ०

खरतर गच्छ शोभा दीयउ, पूजजी बोहिथरे वरदान ।

साहिब 'मुकुरबखानजी,' पूजजी पग लागे थइ मान ॥ २ ॥पू०॥

रूप कला पण्डित कला, पू० वचन कला गुण देख ।

राय राणी मानइ घणुं, पूजजी थांइ माहे विशेष ॥ ३ ॥पू०॥

कामण मोहन नवि करो पू० लोक सहु वसि थाय ।

ए परमात्म प्रोछवउ, पू० पूर्व पुन्य पसाय ॥ ४ ॥पू०॥

चित्त चाहतां आविया, पू० श्रीसंघ मानी वचन ।

रंग महोच्छव दिन प्रतइ, 'हरषनन्दन' कहइ धन ॥ ५ ॥पू०॥

(४)

॥ जाति फूलडानी ॥

श्री संघ आज वधावणी, हिव आज अधिक उछरंगो रे ।

आचारज पद पामियउ, 'जिनसागरसूरि' सुचंगो रे ॥ १ ॥श्री०॥

खरतरगच्छ उन्नति थइ, हिव कीधा अनुपम कामो रे ।

दुरजण मुहडा सामला, हिव साजण बाधी मामो रे ॥२॥श्री०॥

धन पिता 'वच्छराज' जो 'मृगा' पिण माता धनो रे ।

वंश धन 'बोहिथरा', जिहां उत्तम पुत्र रतनो रे ॥ ३ ॥ श्री०

वाजा वाज्या रूयड़ा, वलि तान मान सन्मानो ।

सूहव गावइ सोहलउ, तिहां याचक पामइ दानो रे ॥ ४ ॥ श्री०

नयण सलूणा पूजजी, हिव हुं वलिहारी नामइ रे ।

मोहनगारा मानवी, हिव'हरषनन्दन'सुख पामइ रे ॥ ५ ॥ श्री०

---

(५)

चतुर माणस चित्त उलसइ रे, देखी पूज सरुप रे । हो पूजजी॥

नान्हीवय गुण मोटका रे, उपजइ भाव अनूप रे ॥१॥

ए परमार्थ प्रीछज्यो रे ।

मान सरोवर लहुडोरे, राजहंस सेवइ तीर रे ।

लवणागर मोटउ घणुं रे, पंथी न चाखइ नीर रे ॥२॥

चंदा केरे चांदणे, सहुको बइसइ पास रे ।

सूर (सूर्य!) तपइ जो आकरो, जावइ सहुको नासि रे ॥३॥

ऊंचो लांबो अति घणउ, सरलउ पिंड खजूर रे ।

नान्ही केलि कहावतो, छाया फल भरपूर रे ॥४॥

मोटा मइगल मद झरइ, विलसइ ता गर (लग?) राज ।

सींहणि केरो छावडोरे, गाजइ नहीं वन मांझ ॥५॥

नान्हा मोटा क्युं नहीं, गुण अवगुण बंधाण ।

'जिणसागर सूरि' चिर जयउ रे, हर्षनन्दन' गुण जाण ॥६॥

श्री करमसी संथारा गीतम् ।

सदगुरु चरण नमी करी, गाइसु श्रीऋषिराइ ।
'करमसींह' करणी करी, सांभलीयइ चित्तु लाइ ॥
चित्तु लाइ संभलीयइ चरित, निज भावस्युं चारित लियउ ।
धन वंश 'कूकड़ चोपड़ा' नउ, सुयश प्रगट जिणइ कियउ ॥
तप करी काया प्रथम शोधी, विगय षट् रस परिहरी ।
'करमसी' सुपरि कियउ संथारउ, सुगुरु चरण नमी करी ॥१॥
रीतइ गुरु कुल वास नी, मनि आणी संवेग ।
जाणी काया कारमी, करि निश्चल मन एक ॥
मन एक निश्चल करी आपइ, अन्न समुंखइ परिहर्यउ ।
आहार त्रिविध त्रिविध संयोगइ गुरु मुखइ अणसण वर्यउ ॥
आराधना करि संघ खामण, धरी विविध उल्हास नी ।
'करमसी' तिणि विधि कियउ संथारउ, रीति गुरुकुल-वास नी ॥२॥
चड्यउ संथारइ तिणि परइ, जिणि विधि पूरब साधु ।
करम भांजिवा सिंह हुवउ, भलइ 'करमसी' साधु ॥
'करमसी' साधु भलइ दीपायउ, गच्छ खरतर संघनइ ।
परभावना अम्मारि वरती, उच्छव होई दिन दिनइ ॥
सिद्धान्त गीतारथ सुणावइ, साधु वेयावच्च करइ ।
घन कर्म करमट तिय खपावइ, चड्यउ संथारइ तिणि परइ ॥३॥

जन्म 'जेसाणइ' जेहनउ, 'चांपा शाह' मल्हार।
'चांपलदेवि' उरि धर्यउ, 'ओसवंश' नउ सिणगार ॥
'ओसवंश' नउ सिणगार ए मुनि, दुकर करणो जिणि करी।
अन्नेक जामन मरण हुंती, छटउ अणसण उच्चरी ॥
'करमसी' मुनि मन कीरयउ करडुउ नेह नाण्यउ देहनउ।
मन मदन करड़इ क्षेत्र जीत्यउ, जन्म 'जेसाणइ' जेह नउ ॥ ४ ॥
जेहनी प्रशंसा सुर करइ, मानव केहो मात्र।
सोम मुनीश्वर इम कहइ, धन धन एह सुपात्र ॥
धन एह पात्र सुसाधु सुन्दर, परतखि मुनि पंचम अरइ।
धन जन्म जीचिय जाणि एहनउ, परगच्छी महिमा करइ ॥
मास की संलेखण करि नइ, अधिक दिन बीस ऊपरइ।
ए अमर जग मइं हुअउ इणि परि, प्रशंसा सुर नर करइ॥५॥
'वइसाखइ' संतोषस्युं, 'सातमि बदि' उच्चार।
कियउ संथारउ करमसी, कलि मइं धन अणगार ॥
अणगार धन्ना शालिभद्र जिम, तप अनेक जिणइ किया।
'सइ अढी वेला निंवी आंबिल' करी जिण अणसण लिया ॥
चारित्र पंचे वरस पाली, सु ल्यउलाई मोक्ष स्युं।
आणंद खरतर गच्छ वाध्यउ, वइसाखइ संतोप स्युं ॥ ६ ॥

॥ इति गीतम् ॥

——*×*——

कवि ललितकीर्त्ति कृत

॥ श्री लब्धिकल्लोल सुगुरु गीतम् ॥

गुरु 'लब्धिकल्लोल' मुणिन्द जयउ, जाणे पूरव दिसि रवि उदयउ ।
मन चिन्तित कारिज सिद्धि थयउ, दुःख दोहग दूरइं आज गयउ ॥
'सोलइ सइ इक्यासी' वर वरसइ, भवियण लोकण देखण हरसइ ।
गच्छपति आदेशइं 'भुज' आया, चउमास रह्या श्री संघ भाया ॥२॥
'काती वदि छट्ठि' अणसण सीधो, मानव भव सफल जिणे कीधो ।
ले परभव ना संबल बहुला, पहुंता सुर सुधरस(?) भुवन वहिला ॥३॥
आवी सुरपति नरपति निरखइ, 'मगसर वदि सातम' बहु हरखइ ।
पगला थाप्या चढतइ दिवसइ, निरखी तन वयन नयन विकशइ ॥४॥
थिर थान भलो 'भुज्ज' मइं सोहइ, सुर नर किन्नर ना मन मोहइ ।
सद्गुरु परतिख परता पूरइ, सहु संकट विकट विघन चूरइ ॥५॥
'श्रीमाली' कुल कैरव चंदा, साह 'लाडण' 'लाडिम' दे नंदा ।
दउलति दायक सुरतरु कंदा, प्रणमइ पद पंकज नर वृन्दा ॥६॥
श्री 'कीरतिरतन सूरीश' तणी, शाखा मइं अद्भुत देव मणी ।
वाचक 'लब्धिकल्लोल' गणी, दिन प्रति प्रतपउ जिम दिवस मणी ॥७॥
गणि 'विमलरंग' पाटइ छाजइ, अभिनव दिनकर जिम जगि राजइ ।
जसु नामइ अलिय विघन भाजइ, जसु अतिशय करि महियलि गाजइ ॥
मन शुद्धइं कीजइ गुरु सेवा, अति मीठी दीठी जिम मेवा ।
निज गुरु पद सेव करण हेवा, दिन प्रति वांछइ जिम गज-रेवा ॥९॥

तुम्ह देश देशन्तरि कांइ भमउ, गुरु सेव थकी दालिद्र गमउ।
ईति अनीति कुनीति दमउ, घर बइठा लिखमी पामि रमउ ॥१०॥
साह 'पीथइ' 'हाथी' 'रायसिंघइ', 'मांडण' आदइ करि 'भुज' संघइ।
उद्यम करि थुंभ तणउ रंगइ, थाप्या पूरब दिशि मन संगइ ॥११॥
निज सेवक नइ दरसण आपइ, पगि पगि सानिध करि दुःख कापइ।
गणि 'ललित कीर्ति' चढतइ दावइ, वंदइ गुरु चरण अधिक दावइ ।१२।

॥ इति गुरु गीतम् ॥

सुगुरु वंशावली

भट्टारक 'जिनभद्र' खरउ, गच्छ नायक खरतर।
तसु पट्टहि 'जिनचन्द' सूरि, तप तेज दिवाकर ॥
सहगुरु श्री'जिनसमुद्र', तासु पट्टहिं श्रुत सागर।
तसु पट्टहिं बुधिमंत सूरि 'जिनहंस' सूरीश्वर ॥
अभिनवउ इन्द्र रूपइ अधिक, संजम रमणी सिर तिलउ।
गच्छपति तास पट्टहि गुहिर, 'जिनमाणिक' महिमा निलउ ॥१॥
'पारिख' वंश प्रसिद्ध, जुगति जिनधर्म सुं जोरी।
कहु तसु पट्टि 'कल्याणधीर', वाचक धर्म धोरी ॥
'भणशाली' कुल भाण शीस, तसु पट्टहि सुरतरु।
वाचक श्री'कल्याणलाभ' वाणी अनुपम वरु ॥
पाठक 'कुशलधीर' तासु सिसु, वदइ एम वंशावली।
गुरु भगत शिष्य गुरु गुण यही सफल करउ रसनावली ॥२॥
(P. C. गुटका नं० ६०)

॥ श्रीविमलकीर्त्ति गुरु गीतम् ॥

(१)

प्रह ऊठी नित प्रणमियइ हो, 'विमलकीर्ति' गणि चंद ।
तेज प्रतापे दीपता हो, प्रणमै सहु नर वृन्द ॥ १ ॥
भविक जन वंदियइ हो, नामे पाप पुलाय ॥ भ० ॥ आंकणी ॥
खरतरगच्छ में शोभता हो, सर्व कला गुण जाण ।
जेहनइ मुखि भारती वसइ हो, जाणइ ज्ञान विज्ञान ॥ २ ॥ भ० ॥
'हुबड़' गोत्रे परगड़उ हो, 'श्रीचंद' शाह मल्हार ।
मात 'गवरा' जनमिया हो, शुभ मूरति(महूरत) सुखकार ॥३॥भ०॥
संवत् 'सोलह चउप्पणइ' हो, लीधी दीक्षा सार ।
'माह सुदि सातम' दिनइ हो, पालइ निरतिचार ॥ ४ ॥ भ० ॥
'साधुसुन्दर' पाठक भला हो, सकल कला प्रवीण ।
सइंहथ दीक्षा जेण दीधी हो, ध्यान दया गुण लीण ॥५॥भ०॥
चउरासी गच्छ सेहरो हो, श्री 'जिनराज सुरिन्द' ।
वाचक पद सइंहथ दियो हो, सेव करइ जन वृन्द ॥६॥भ०॥
'सोलहसइ बाणू' समइ हो, श्री 'किरहोर' सुठाम ।
आराधन अणसण करी हो, पहुंता स्वर्ग सुधाम ॥ ७ ॥ भ० ॥
'विमलकीर्ति' गुरु नाम थी हो, जायइ पातक दूर ।
'विमलरत्न' गुरु सेवतां हो, प्रतपे पुण्य पडूर ॥ ८ ॥ भ० ॥

———

(२)

राग—धन्याश्री ॥

वाचक 'विमलकीर्ति' गुरुराया, प्रणमो भवियण पाया वे।

दरशन देखि नवनिधि थाइ, सुख संपति लील सदाइ वे ॥ १॥वा०

संवत 'सोल चउपन्ना' वरसे, चतुर चारित्र गहइ हरपइ वे।

'साधुसुन्दर' तसु गुरु सुवदीता, वादी गज मद जीता वे ॥२॥व

तासु शिष्य गुरु कमल दिणन्दा, भविक चकोर चित्त चंदा वे।

अनुक्रम 'वाचक' पदवी पाइ, गुरु सौभाग्य सवाइ वे ॥३॥वा०॥

मूल चक 'मुलताण' कहावइ, तिहां चउमासइ आवइ वे।

★ दान पुण्य (तिहाँ) अधिका थावइ, श्री संघ वधतइ दावइ वे॥४॥वा०॥

सिन्धु नगर 'कहिरोरड़' आया, लख चौरासी खमाया वे।

अणसण पाली स्वर्ग सिधाया, गीत ज्ञान बहु गाया वे ॥५॥वा०॥

शिष्य शाखा प्रतपउ रवि चंदा, जां लगि मेरु ध्रू चंदा वे।

'आणंदविजय' इम गुण गावइ, चढ़ती दउलति पावइ वे ॥६॥वा

साध्वी हेमसिद्धि कृत

॥ लावण्यसिद्धि पहुतणी गीतम् ॥

———**———

राग :—सोरठ

दूहा:—आदि जिणेसर पय नमी, समरी सरसति मात ।
गुण गाइसुं गुरुणी तणा, त्रिभुवन मांहि विख्यात ॥ १ ॥

वेलि ढाल:-जे त्रिभुवन माहि विख्यात, 'लावनसिद्धि' गुण अवदात
'बीकराज' साहकी धीया, वइरागइ चारित्र लीया ॥२॥

'गूजर दे' माता रतन्न, सहू लोक कहइ धन धन्न ।
शीलादिक गुण करि सीता, सहु दुनीया मांहि वदीता ॥३॥

जिण माया मोह निवार्या, भवियण भव-जलनिधि तार्या ।
सूधा पंच महाव्रत पालइ, त्रिण्ह गुप्ति सदा रखवालइ ॥ ४ ॥

दूहा:—अढ़ार सहस शीलंगधर, टालइ सगला दोस ।
सुन्दर संजम पालती, न करइ माया मोस ॥ ५ ॥

न करइ तिहां माया मोस, वलि निज घट नाणइ रोस ।
धन धन ते श्रावक श्रावी, गुरुणी नइ प्रणमे आवी ॥ ६ ॥

मीठी तिहां अमीय समाणी, सुन्दर गुरुणी नी वाणी ।
सुणि सुणि बूझइ भवि लोक, दिनकर दंसणि जिम कोक ॥ ७ ॥

पहुतणी 'रत्नसिद्धि' पाटइ, दिन प्रति जस कीरति खाटइ ।
नवनिध हुइ गुरुणी नइं नामइ, मनवंछित भवीयण पामइ ॥८॥

दूहा:—अंग उपांग सहु तणा, जाणइ अरथ विचार ।
श्री 'लावण्यसिद्धि' पहुतणी, विद्या गुण भंडार ॥९॥

सव विद्या गुण भंडार, महिमंडलि करइ विहार ।
तप करि काया उजवालइ, 'चंदनबाला' इणि काले ॥१०॥

'जिनचंद' सुगुरु आदेस, परमाण करइ सुविशेष ।
अनुक्रमि 'विक्रमपुरि' आवी, निज अंत समय परभावी ॥११॥

सवि जीवह रासि खमावी, उत्तम भावना मन भावी ।
अणशण आदरियउ रंगइ, सुर व(प्र?)णमइ धरमहु संगइ ॥१२॥

दूहा:—समकित सूधउ पालती, करती सरणा च्यारि ।
इण परि संथारो कीयउ, माया मोह निवारि ॥ १३ ॥

माया मोह निवारी, करइ संघ प्रभावन सारी ।
वाजइ पंच शब्द तिहां भेरी, नीसाण घुरंति नफेरी ॥१४॥

अपछर आरतीय उतारि, जिन शासन महिम वधारी ।
जिनवर नो ध्यान धरंती, नवकार विधइ समरंती ॥ १५ ॥

दूहा:—संवत 'सोलहसइ वासठ्ठि', पहुती सरग मंझारि ।
जय जय रव सुर गण करइ, धन गुरुणी अवतार ॥ १६ ॥

धन धन गुरुणी अवतार, भवियण जन नइ सुखकार ।
थिर थांन 'विक्रमपुरि' थुंभ, देखि मनि धरइ अचंभ ॥१७॥

परता पूरण मन केरी, कल्पतरु थी अधिकेरी ।
'हेमसिद्धि' भगति गुण गावइ, ते सुख संपति नितु पावइ ॥१८॥

(तत्कालीन लि० हमारे संग्रह में)

———

पहुतणी हेमसिद्धि कृत

सोमसिद्धि(साध्वी)निर्वाण गीतम् ।

राग :—मल्हार

सरस वचन मुझ आपिज्यो, सारद करि सुपसायो रे ।
सहगुरणी गुण गाइसुं, मन धरि अधिक उमाहो रे ॥१॥
सोभागिण गुरुणी वंदीयइ, भाव धरी विशेषो रे ।सो०। आंकड़ी ।
गीतारथ गुरुणी जाणीयइ, गुणवंती सुविचारो रे ।
करूणा रस पूरी सदा, सब जन कुं सुखकारो रे ॥२॥सो०॥
शीलइ सीता रूयडी, सोमइ चंद्र समानो रे ।
उग्र विहारइ तप करइ, महिमा सहित प्रधानो रे ॥३॥सो०॥
'नाहर' कुल मांहि चंदलउ, 'नरपाल' जु गुण ठामो रे ।
तेहनी नारी जाणियइ, शील करी अभिरामो रे ॥४॥सो०॥
'सिंघा दे' गुण आगली, तास पुत्री गुणवंतो रे।
रूप करी अति शोभती, 'संगारी' नाम कहंतोरे ॥५॥सो०॥
योवन वय जब आवीयउ, पिता मन माहि चिंतइ रे ।
'बोथरा' वंशे दीपतउ, 'जेठ शाह' सुहावइ रे ॥६॥ सो० ॥
तास पुत्र 'राजसी' कहीजइ, परणावइ मन रंगो रे ।
वरष अढार हुआ जेभ(त?)लइ, उपदेश सुणी मन चंगो रे ॥७॥सो०॥
वइराग उपनउ तेहनइ, अनुमति मांगी तेमो रे ।
सासु श्वसरा इम कहइ, हुज्यो तूझ नइ खेमो रे ॥ ८ ॥सो०॥

चारित्र पालतां दोहिलउ, सुकुमाल जु तुझ देहो रे।
मत कहिज्यो कांइ तुम्ह वली, मुझ चारित्र ऊपर नेहो रे ॥९॥सो०
उच्छव महोत्सव कीधा घणा, दीक्षा लीधी सारो रे।
'लावण्यसिद्धि' कन्हइ रहइ, सूत्र अर्थ ना लयइ विचारो रे ॥१०॥सो०
'सोमसिद्धि' नाम जु थापीयउ, गुणे करी निधानो रे।
आपणइ पद थापो सही, चारित्र पालइ प्रधानो रे ॥११॥सो०॥
'सैंत्रुज' प्रमुख यात्रा करी, तिम वलि तीर्थ उदारो रे।
कीधी भावइ सदा सही, तप उपमा सारो रे ॥ १२ ॥सो०॥
"श्रावण वदि चउदसि' दीनइ, 'बृहस्पतिवार' प्रधानो रे।
अणसण लीधउ भावसुं, सब कला गुण निधानो रे ।१३।सो०।
देव थानक पहुंता सही, श्री गुरुणी गुणवंतो रे।
गुरुणी आस्या पूरी करउ, मुझ मन घणो खंतो रे ॥१४॥सो०॥
विरला पालइ नेहडउ, तुंम सुं (तो?) प्राण आधारो रे।
तुम्ह बिना हुं क्युंकर रहुं, दुखीया तुं साधारो रे ।१५।सो०।
मोरा नइ वलि दादुरां, बाबीहा नइ मेहो रे
चकवा चिंतवत रहइ, चंदा उपरि नेहो रे ॥ १६ ॥ सो० ॥
दुखीयां दुख भांजीयइ, तुम्ह बिना अवर न कोइ रे।
सहगुरुणी गुण गावीयइ, वांदउ दिन दिन सोइ रे ॥ १७ ॥सो०॥
चंद्र सूरज उपमा, दीजइ (अधिक) आणंदो रे।
पहुतोणी 'हेमसिद्धि' इम भणइ, देज्यो परमाणंदो रे ॥१८॥सो०॥

॥ इति निर्वाण गीतम् ॥

(तत्कालीन लि० हमारे संग्रहमें)

साध्वी विद्या सिद्धि कृत

॥ गुरुणी गीतम् ॥

—— *×* ——

....

········करि आगली, सुमति गुपति भंडार ॥ प्र० ॥२॥

गोत्रज 'साउसखा' जाणियइ, 'करमचंद' साह मल्हार।

भाव अधिक परिणामइ आदर्यौ लीधउ संजम भार ॥प्र०॥३॥

जणती (जाणीतो ?) गछ मांहे पहुतणी, क्रिया पात्र सुविचार।

अहनिस जपतां नाम सुहामणउ, सुख संपति सुखकार ।४। प्र०।

श्री 'जिनसिंह सूरीसर' आपीयउ, 'पहुतणी' पद सुविशाल।

तप जप संजम रुडी परि राखती, जिम माता नइ बाल ।५।प्र०।

साध्वी माहि सिरोमणि साध्वी, भणिय गुणिय सुजाण।

राति दिवस जे समरण करइ, प्रणमइ चतुर सुजाण । ६ । प्र० ॥

'सोलहसइ निआणू' बरस मइं, 'भाद्रव बीज' अपार।

इम बोलइ 'विद्यासिद्धि' साध्वी, संपति हुवउ सुखकार ॥प्र०॥७॥

(सं० १६६६ भा० व० ३ लि०)

(१) श्रीगुर्वावली फाग

पणमवि केवल लच्छि वरं, चउवीसमउ जिणंदो ।
गाइसु 'खरतर' जुग पवर, आणिसु मनि आणंदो ॥१॥
अहे पहिलउ जुगवर जगि जयउ ए, श्री 'सोहमसामि' ।
वीर जिणंदह तणइ पाटि, सो शिवपुर गामी ॥
मोह महाभड तणउ माण, हेलि निरदलीयउ ।
'जंवूस्वामी' सुस्वामि साल, केवलसिरि कलीयउ ॥२॥
सुयकेवलि सिरि 'प्रभवसूरि', 'सिज्जंभव' गणहर ।
दस पूर्वधर 'वयरस्वामि', तयणुक्कमि मुणिवर ॥
तसु वंशि दिणयर जिसउए, तव तेय फुरन्तु ।
सिरि 'उज्जोयणसूरि' भूरि, गुण गणहिं वदीतउ ॥३॥
'आबूयगिरि' सिहरि जेण, तप कीयउ छम्मासी ।
पयड़ीकय सिरि सूरि मंत्र, तसु महिम पयासी ॥
'पउमावइ' 'धरणिन्द' जासु, पय क(य) मल नमंसिय ।
नंदउ सो सिर 'वद्धमाण', मुणि लोय पसंसिय ॥४॥

भास

'अणहिल्लपुरि' मढपत्ति (जीपी) जेण, थापी मुणिवर वासो ।
रायंगण 'दुलह' तणइं, पामी विरुद पयासो ॥५॥
अहे 'खरतर विरुद'पयासु जा(सु), दीधउ चउसालो ।
निर्म्मल संयम गुणहि जासु, रंजिय भूपालो ॥

वारिय चेइयवास वास, थापिय मुणिवर केरु ।
सूरि 'जिणेसर' गुरुराय, दीपइ अधिकेरु ॥६॥
'श्रीजिणचंद' मुणिन्द चंद, जिम सोहइ सप्पह ।
विवरिय जेण नवंग चंग, पयडी थंमण पहुं ॥
निय वयणिहि गुण कहइ जासु, सीमंधर जिणवर ।
सलहिज्जइ सिरि 'अभयदेव',सो सूरि पुरन्दर ॥७॥
'वागड़िया' 'दस स(ह)स' सार, सावइ पड़िबोहिय ।
'चित्रोड़ी' 'चामंड' चंड, जसु दरसणि मोहिय ॥
'पिण्डविसोहो' विचार सार, पयरण निम्माविय ।
'जिणवल्लह' सो जाणीयइ ए, जण नयण सुहाविय ॥८॥

भास

'अंबा' एवि पयास करि, जाणी जुगहपहाणो ।
'नागदेवि (व?)' जो मुणिपवर वाणी अमिय समाणो ॥६॥
अहे अमी समाण वखाण जासु, सुणिआ सु(र) आवइ ।
चउसठि जोगणि जासु नामि, नहु तणु (किणि?) संतावइ ॥
जुगवर श्री 'जिणदत्तसूरि', महियलि जाणीजइं ।
निम्मल मणि दीपंति भाल, 'जिणचंद' नमिज्जइ ॥१०॥
राजसभा छतीस वाद, कियउ जइ जइ कारो ।
'ववेरक' पद ठवण जासु, सुप्रसिद्ध अपारो ॥
सहगुरु श्री'जिनपत्तिसूरि', गाजइ अलवेसर ।
सूरि 'जिणेसर' 'जिणपबोह', 'जिणचंद' जईसर ॥११॥

चंपक जिम वणराय मांहि, परिमल भरि महकइ।
कस्तूरी घनसार कमल, केवड़उ बहकइ ॥
तिम सोहइ 'जिनकुशल सूरि', महिमा गुण मणहर।
तयणंतरि 'जिनपद्मसूरि', जिणशासणि गणहर ॥१२॥

भास

लवधिवन्त 'जिनलवधि' गुरु, पाटिहिं सिरि 'जिणचंदो'।
उदय करण जिण उदयवंत, श्री'जिणराज'मुणिन्दो ॥१३॥
अहे श्री 'जिनराज' मुणिन्द पाटि, गयणंगणि चंदो।
खरतरगण सिंगार हार, जण नयणाणंदो ॥
सायर जिम गंभीर धीर, आगम संपन्नउ।
सहिगुरु श्री 'जिनभद्रसूरि', कलि गोयम मन्नउ ॥१४॥
तसु पाटि'जिणचंद सूरि', जिनसमुद्र सूरिन्दो।
तसु पाटिहिं 'जिनहंस सूरि', किरि पूनम चन्दो ॥
श्री'जिनमाणिक सूरि' तासु, पाटिहि गुण भरियउ।
चिरं जीवउ जगि विजयवन्त, संघहि परिवरियउ ॥१५॥
जद्रुमंडलि अचल मेरू, दिणयर दीपंतउ।
गिरुउ खरतर संघ एह, तां जगि जयवंतउ ॥
वाणारसि सिरि 'खेमहंस', गणिवर सुपसाइ।
खेलाखेली फाग बंधि, सहगुरु गुण भावइ ॥१६॥
॥ इति गुरावली फाग संपूर्णा ॥

———※———

चारित्रसिंह कृत

(२) गुर्वावली

सिव सुखकर रे, पास जिणेसर पय नमउ,

गोयम गुरु रे, चरण कमल मधुकर रमउ।

कवि जननी रे, दिउ मुझ शुभ मति निरमली,

रंगि गाइसुरे, सुविहित गच्छ गुरावली ॥

सुविहित गच्छ गुरावली किर, जेम भवियण गाइयइ।

वहु सिद्धि रिद्धि निधान उत्तम,हेलि सिवपुर पाइयइ।

जे नाण दर्शन चरण उज्जल, 'चउदसयवावन' बली।

गणधार सवि तें भावि वंदो, एह निर्मल मनि रली ॥१॥

सिव रमणी रे, वर सिरि वीर जिणेसरु,

गुण गण निधि रे,'गोयम'स्वामी गणहरु।

उपगारी रे सुखकारी भवियण तणइ,

इक जीहा रे, तेहनां गुण कहु किम थुणइ ॥

किम थुणइ तेहना गुण महोदधि, कवहि पार न पांवए।

जिसु मधुर ध्वनि कर देव दानव, किन्नरी गुण गावए ॥

जसु नाम जिह्वा झरइ अमृत, पढम मंगल कारणो,

सो वीर जिणवर पढम गणधर, जयो दुख निवारणो ॥२॥

'गच्छाधिप' रे, 'सोहम' सामी गुण निलो,

तसु पाटहि रे 'जंवू सामी'जग तिलो।

वर कंचण रे, कोटि 'नवाणूं' परिहरी,

सुभ भावइ रे, परणी जिह संयम सिरी ॥

संयमश्री जिहि हेलि परणी, चरण करण सु धारओ।
मय अट्ठ वारण मान गंजण, भविय दुत्तर तारओ।
सोभाग सुन्दर सुगुण मन्दिर, मुक्ति कमला कामिनी।
जिह नाथ पामी अतलेने?छइ, भइय शुभ गुण गामिनी ॥३॥
तदनन्तर रे, 'प्रभव स्वामि' श्रुतकेवली,
सिव पद्धति रे, भवियह भाखी अति भली।
'सिजंभव' रे, सामी गुण गणधार एं,
मिथ्या मत रे, पाप तिमिर भर वार ए॥
वार ए कुमत कुसंग दूषण, भाव भेय दिवायरो।
'जसभद्द' गणहर नाण दंसण, चरण गुणगण सायरो।
'संभूतिविजय' प्रधान मुनिपती, प्रवल कलिमल खंडणो।
श्री 'भद्रबाहु' सुबाहु संजम, जैन शासन मंडणो॥ ४॥
श्री 'थूलिभद्र' रे, वाम कामभड भंजणो,
उपसम रस रे, सागर मुनि गण रंजणो।
जसु उत्तम रे, सुजस पडह जगि वाज ए,
अति निरमल रे, शील सबल दल गाज ए॥
गाजए दुक्कर सुविधि-कारी, जासु गुण पूरी मही।
रवि चक्क तलि वर सील सुभ वलि, जेह सम सरिखो नही।
प्रतिबोधि कोश्या मधुर वयणिहि, किद्ध उत्तम साविया।
सो ब्रह्मचारी सुकृत-धारी, भावि प्रणमो भाविया॥ ५॥
तसु अनुक्रमि रे, 'अज्जमहागिरि' जगि जयो,
जिणकप्पह रे, तुलणाकारी सो भयउ।

तसु सविनय रे, 'अज्ज सुहथी' जाणिये,

'संप्रति' नृप रे, सावय जासु वखाणियइ ॥

वखाणिये जगि जासु उत्तम, लब्धि महिमा अति घणो।

श्री 'अज्जसंती' थिवर कहियइ, तासु पाट्टिहि गच्छ धणी।

'हरिभद्र' आरिज सुमति वासित, 'साम अज्ज' मुणीसरो।

'पन्नवण सुत' उद्धार कारी, जयो सो जगि जुगवरो ॥ ६ ॥

हिव आरिजरे,'संडिल'नाम जइसरु,श्री'रेवत रे मित्र'मुणिंद जुगेसरु।

धर्मगिर रे धर्माचारिज सोहए,वर संजम रे सील सुगुण जग मोहए।

मोह ए रतनत्रय विभूषित, 'अज्जगुत्त' मुणीसरा,

गुण रयण रोहण भविय मोहण, 'अज्जसमुद्द' गणीसरा।

सिर 'अज्जमंगु' सुधम्म पयडण, पवर दिणयर दीप ए।

सिरि 'अज्ज सोहम' थविर हरिवल, मोह कुञ्जर जीप ए ॥७॥

गुण सागर रे, 'भद्रगुप्त' मुनि नायगो,

भवियण जण रे, समकित सुरतरु दायगो।

'सींहगिरि' गुरु रे, अंतेवासी राज ए,

जा ईसर रे, देस पूरव-धर छाज ए ॥

छाज ए वाला मयणमाला, रुव दंसणि नवि चल्यो।

वर कणय कोडि हेलि छोडी, मयण मय भंड जिणि मल्यउ।

सिरि 'वयर स्वामी' सिद्धि धामो, फलिय सिव सुह आगमो।

निकलंक चारित्र धवल निर्मल, सिंघ जुग पवरागमो ॥८॥

श्री आरिज रे, 'रक्षित' जिणमय भास ए,

नव पूरव रे, साधिक शुभ मति वासए।

'दुर्वलिकापक्ष' प्रधान दिणेसरु, श्री 'आरिजनन्दि' मुणिंद गणेसरू ॥
गणेसरू सिर 'नागहत्थी' मान माया चूरणो,
'रेवंत' गणधर 'ब्रह्मदीपी' सूरि वंछिय पूरणो ।
'संडिल' जइवर परम सुहकर, 'हेमवंत' महा मुणी ।
सिर 'नागअज्जुण' नाम वाचक, अमिय सम सुन्दर झुणी ॥ ६ ॥

'श्रीगोविन्द' रे वाचक पदवी हिव लहइ,
सम दम खम रे, चरण करण भर निरवहइ ॥
श्रुत जल निधि रे, 'दिन्नसंभूइ' वायगो,
'लोकह हित' रे, सद्गुरु शुभ मति वायगो ॥
वायगो भासइ हियइ वासइ, 'दूष्यगणि' जगि निरमला ।
वर चरण खंती गुप्ति मुत्ती, नाण निश्चय उजला ॥
श्री 'उमास्वाति' सुनाम वाचक, प्रवर उपसम रतिधरो ।
'पंचसय' पयरण परम वियरण, पसमरइ सुह गुणधरो ॥१०॥

हिव 'जिनभद्र' रे, क्षमासमण नामइ गणी,
श्री 'हरिभद्र' रे सूरीसर जगि दिनमणी ॥
अंगीकृत रे, जिन मत 'देव सूरीश्वरु' ।
श्री 'नेमिचन्द्र' रे, सूरिराय दुरयह हरू ॥
दुरिय हरु सुखकरु सुविहित, सूरि 'उद्योतन' गुरो,
श्री सूरिमंत्र प्रभाव प्रकटित, 'वर्द्धमान' गुणाकरो ॥
दुह कुमत छेदी सुविधि वेदी, मिच्छतम तम दिणयरो,
जिणधम्म दंसी अति जसंसी, भविय कयरवस सहरो ॥११.

जे सुहगुरु रे, उग्र विहारे विहरता,
'अणहिल्लपुर' रे पाटणि पहुता विहरता ॥
चियवासी, रे महिमा खंडण तिह कियउ,
'दुल्लभ' नृप रे 'खरतर' विरुद तिहां दीयउ ॥
तिह दियउ खरतर विरुद उत्तम, नाम जग मांहि विस्तरइ,
आदरइ जिनमत भावि भवियण, सुविधि मारग विस्तरइ ॥
चियवासी मयगल सबल दल छल, केसरी पद पाव ए,
श्री 'जैनईश्वर सूरि' सुविहित, सुजस रेह रहावए ॥१२॥
हिव सुविहतरे, चक्र चतुर चिन्तामणी,
मिथ्याभर रे, तिमिर विहंडन दिनमणी ॥
जिन प्रबचन रे, वचन विलास रसालए,
वन मधुकर रे, अति संवेग रसालए ॥
'संवेगरंग विसाल साला', नाम प्रकरण जिह कह्यो,
भव पाप पंक पखालि निरमल, नीर संजम तप धरयो ॥
'जिनचंद्र सूरि' नवांग विवरण, रयण कोस पयास(ए)णो,
श्री 'अभयदेव' मुणिंद दिनपति, परम गुण गण भासणो ॥१३॥
हिव तप जप रे, ज्ञान ध्यान गुण उजला,
आतम जय रे, चरणु सुधारसु निरमला ।
'जिनवल्लभ' रे, सुविहित मारग दाख ए,
विधि थापक रे, कुमति उसूत्र वि दाख ए ॥
दाख ए गंग तरंग सुवचन, अविधि तरु भंजण करी,
संवेग रंग तरंग सागर, नवल आगल गुणसरी ।
तसु पाटि श्री 'जिनदत्त सूरि' गुरु, 'युगप्रधान' सुहायरो ।

चारित्र चूडामणि समुज्जल, 'जैनचन्द्र' सूरीसरो ॥१४॥

तासु पाटिहि रे, वालइ चंद कि चंदणो,

श्री 'जिनपति' रे, सूरीसर जगि मंडणो।

'जिनईश्वर' रे 'जिनप्रबोध' सूरीसरु,

नव सुन्द(र)रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुधा करू ॥

श्री 'जैनचन्द्र' सुधाकरू जल, कुशल कमला कारगो,

'जिनकुशल सूरि' सुरिंद संकट, दुख दोहग वारगो।

'जिनपदम' सूरि विलास अविचल, पउम आतम थाप ए।

'जिनलब्धि' लब्धि निधान 'जिनचन्द्र', सूरि सुभ मति आप ए ॥१५॥

उदयाचल रे, उदय 'जिनोदय' सुहगुरु,

सुखदायी रे, श्री 'जिनराज' कलाधरु।

भद्रंकर रे, श्री 'जिनभद्र' मुणीसरु,

'चंद्रायण' रे, 'चन्दसूरि' गुरु गणहरू ॥

गणधार मोह विकार विरहित, 'जिनसमुद्र' यतीश्वरु।

'जिनहंस सूरीसर' सुमंगल, करण दुह दालिद्द हरू।

श्री 'जैनमाणिक' सुगुण माणिक, खीरसागर अनुपमो,

जय सुखकारी दुखहारी, कप्पतरु वर जंगमो ॥१६॥

श्री 'सोहम' रे, स्वामि ने अनुक्रम भयो,

तेसठमइ रे, पाटइ ए जुगवर जयो।

सूरीसर रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुसोह ए,

वयरागी ए, उपसम धर मन मोह ए ॥

मोह ए भवियण जणह मानस, एह परम जगीसरु,

वर ध्यान सुमति निधान सुन्दर, नवल करुणा रस भरु।

पण विषय विषम विकार गंजण, भाव भड भय जीप ए।

सो सुविधचारी शीलधारी, जैन शासन दीप ए ॥१७॥

गंभीरिम रे, उपमा सागर गुरु तणी,

किम पावइ रे जिह तइं महिमा अति घणी।

मह मूलिक रे, रत्नत्रय जिह जाणीयइ,

सम दम रस रे निरमल नीर वखाणियै॥

वखाणियै जिह सबल संयम, रंग लहरी गहगहइ,

सुध्यान वडवानल सुगुण मय, नदी पूर जिहां बहै।

एक इह अचरिज भयउ हम मनि, सुणहु कवियण इम कहइ।

'जिनचंदसूरि' सुरिन्द पटतर, कहउ जलनिधि किम लहइ ॥१८॥

इह सुहगुरु रे, गुण गण वर्णन किम सकै,

बहु आगम रे, पाठी तउ पुणि ते थकै।

इह कारणि रे, श्री गुरु सम को किम तुलइ,

किह पीतलि रे, कंचन सम सरि किम मुलइ॥

किम मुलइ रयणो दिन समाणी, बहुय सरवर सागरा,

नक्षत्र ससहर सूर कातर, उखर भू रयणागरा।

सोभाग रंग सुरंग चंगिम, चरण गुण गण निरमला,

'जिनचन्द्र सूरि' प्रताप अविचल, दिन दिनइ चढ़ती कला ॥१९॥

'ढिलि' मंडलि रे, 'रुस्तक' नगर सोहामणो,

तिहा श्री संघ रे, सोहइ अति रलियामणो।

ऊमाहो रे, निवसइ गुरु दंसण तणो,

मन महि जिम रे, चातक घन तिम अति घणो ॥

अति घणो भाव उल्हास उच्छव, सधन धन सो. अवसरो,

सा धन्न वेला सु धन मेला, जत्थ दीसइ सुहगुरो ।

जे भावि वंदइ तेह नन्दइ, दुख छन्दइ वहु परै,

संग्रहइ समकित शुद्ध सोवन, सुगुरु उच्छव जे करइ ॥२०॥

मन मोहन रे, गुण रोहण धरणी धरु,

पूर्व ऋपि रे, उजवालइ जगदीसरु ।

चिर प्रतपो रे, श्री 'जिनचंद्र' यतीसरु,

जां दिनकर रे, ससहर सुर वर भूधरु ॥

सुर भूधरु जां लगइ अविचल, खीरसागर महियलै,

जयवन्त गुरु गच्छपति गणधर, प्रकट तेजइ इणि कलइ ।

'मतिभद्र' वाचक सोस 'चारित्र,-सिंह' गणि इम जंप ए ।

गुरु नाम सुणतां भावि भणतां, होइ सिव सुख संप ए ॥२१॥
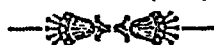
गुर्वावली नं० ३

ढाल—गीता छन्द नी ।

भारति भगवति रे, तुं वसि मुख कजे मेरइ,

सहगुरु सुरतरु रे, गाइसुं सुजस नवेरइ ।

सहगुरु गाइसुं सुविहित यति पति, सिरि 'उद्योतनसूरि' वरो ।

तसु पाट पुरन्दर सोहग सुन्दर, 'वर्द्धमानसूरि' युग प्रवरो ।

'अणहिलपुर' 'दुल्लभ' राय अंगणि, जिणि मठपत पण जीतउ ।

क्रिया कठोर 'जिनेश्वरसूर' ति, 'खरतर' विरुद वदीतउ ॥१॥

विधि सु विरचित रे, जिणि 'संवेगरंगशाला' ।
गुरु 'जिनचन्द सूरि' रे, तेज तरणि सुविशाला ।
सुविशाल सुथंभण पास प्रकाशक, नव अंग विवरण करण न(व?)रो ।
श्री 'अभयदेव सूरि' वर तसु पाटइ, श्री 'जिनवलभ सूरि' गुरो ॥
'अंबिका देवी' देसित युगवर, 'जिनदत्त सूरि' अदीणो ।
नरमणि मंडित 'जिनचंद' पदि, 'जिनपति' सूरि प्रवीणो ॥२॥
'नेमिचन्द' नन्दन रे, सूरि 'जिनेसर' सारा,
सूरि सिरोमणि रे जिन प्रबोध उदारा ।
सुविचार उदारा 'जिनचन्दसूरि', 'जिनकुशल सूरि' 'जिनपदूम' मुणी
श्री 'जिनलब्धि सूरि' 'जिणचन्द', 'सुगुरु जिणोदय' सूरि मुणो ।
'जिनराज' मुनिप (ति) 'जिनभद्र' यतीसर,
श्री 'जिणचन्द सूरि' 'जिनसमुद्र' वसी ।
श्री 'जिनहंस सूरि' मुनि पुंगव श्री 'जिनमाणिक्क सूरि' शशी ॥३॥
तसु पदि परिगडउ रे, गुण मणि रोहण सोहइ ।
'रीहड' कुलतिलउ रे, सकल सुजन मन मोहइ ।
मोहइ वचन विलास अमृत रस, 'श्रीवंत' साह जनेता ।
'सिरियादे' उरि रत्न अमूलक, श्री खरतर गच्छ नेता ।
"नयरंग" भणइ विसद विधि वेदी, संघ सहित निरदंदी ।
श्री 'जिनचन्द' सूरि सूरीश्वर, चिर नन्दउ आणन्दी ॥ ४ ॥

——*——

कविवर समयसुन्दर कृत

(४) खरतर गुरु पट्टावली

प्रणमी वीर जिणेसर देव, सारइ सुरनर किन्नर सेव।
श्री 'खरतर' गुरु पट्टावली, नाम मात्र प्रभणुं मन रली ॥ १ ॥
उदयउ श्री 'उद्योतन' सूरि, 'वर्द्धमान' विद्या भर पूरि।
सूरि 'जिणेसर' सुरितरु समो, श्री 'जिनचन्द सूरीश्वर' नमइ ॥२॥
अभयदेव सूरि सुखकार, श्री 'जिनवल्लभ' किरिया सार।
युगप्रधान 'जिनदत्त सूरिंद', नरमणि मंडित श्री 'जिनचंद' ॥३॥
श्री 'जिणपति' सूरिश्वर' राय, सूरि जिगेसर प्रणमुं पाय।
'जिनप्रबोध' गुरु समरूं सदा, श्री 'जिनचन्द' मुनीश्वर मुदा ॥४॥
कुशल करण श्री 'कुशल' मुणिंद, श्री 'जिनपद्म सूरि' सुखकंद।
लब्धिवंत श्री 'लब्धि' सूरीस, श्री 'जिनचंद' नमुं निसदीस ॥५॥
सूरि 'जिनोदय' उदयउभाण, श्री 'जिनराज' नमुं सुविहाण।
श्री 'जिनभद्र' सूरीश्वर भलउ, श्री 'जिनचंद सकल गुण निलउ ॥६॥
श्री 'जिनसमुद्र सूरि' गच्छपती, श्री 'जिनहंस' सूरिश्वर यती।
'जिनमाणकसूरि' पाटे थयउ, श्री 'जिनचंद सूरिश्वर जयो ॥७॥
ए चउवीसे खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट।
ते पामइ मनवंछित कोडि, 'समयसुंदर' पभणइ करजोडी ॥८॥

इति श्री खरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखिताच पं० समय-सुंदरेण ॥ सुन्दर बड़े बड़े अक्षरों में लिखित।

(जय० भं० नं० २५ गुटका)

कविवर गुणविनय कृत

(५) खरतरगच्छ गुर्वावली

प्रणमुं पहिली श्री 'वर्द्धमान', बीजो श्री 'गौतम' शुभ वान ।
त्रीजो श्री 'सुधरम' गणधार, चोथो 'जंबू' स्वामि विचार ॥१॥
पंचम श्री 'प्रभव' प्रभु थुंणुं, श्री 'शय्यंभव' छठो भणुं ।
'यशोभद्र' सत्तम गणधार, श्री 'संभूतिविजय' सुखकार ॥२॥
'कोसा' वेश्या वश नवि पड्यो, 'थूलभद्र' मुझ मनमें चढयो ।
दशम 'सुहस्तिसूरि' उदार, 'संयति' नृप प्रतिबोधनहार ॥३॥
श्री 'सुस्थित' मुनि इग्यारमो, 'इन्द्रदिन्न' बारम नितु नमो ।
तेरम 'दिन्नसूरि' दीपतो, 'सींहगिरी' सुर गुरु जीपतो ॥४॥
पनरम नरम वाणि जेहनी, रूप कला सोहइ देहनी ।
दस पूर्व धर धोरी जिस्यो, 'वयरिस्वामि' मुझ हीयडे वस्यो ॥५॥
सोलम लघुवय जिण व्रत लीध , 'वज्रसेन' स्वामि सुप्रसिद्ध ।
सतरम 'चन्दसूरि' मुणि चन्द, 'सामन्तभद्र सूरि' सुखकन्द ॥६॥
'देवसूरि' प्रगमुं सुपवित, 'कुमद्रचन्द्र'वादे जिण जित्त ।
वीसमो श्री 'प्रद्योतनसूरि',जगि उद्योत कियो जिणि भूरि ॥७॥
सप्रभाव 'शांतिस्तव' कारि, 'मानदेव' गुरु महिमा धारी ।
श्री'देवेन्द्रसूरि'गुण निलउ, सिव पह जिण देखाड्यो भलो ॥८॥
'भक्तामर' 'भयहर' हित धरी, स्तवन कीयो जिण करुणा करी ।
ते श्री 'मानतुंगसूरीश', 'वीरसूरि' राजे निसदीस ॥९॥

ढाल—श्री 'जयदेवसूरीसरु', पंचवीसम प्रभ जाणि रे।
'देवानन्द' वखाणियइ, छावीसम मनि आणी रे॥ १० ॥ए०
एहवा सद्‌गुरु गाइये, मन शुद्धि करीय त्रिकालो रे।
संयम सरवरि झीलता, पटकाया प्रतिपालो रे ॥११॥ ए०
'विक्रमसूरि' दिवाकरू, तसु पाटि 'नरसिंह सूरि' रे।
श्री 'समुद्र सूरीश्वरु', महकइ सुजस कपूर रे ॥ १२ ॥ ए०
'मानदेव' त्रीसम हुयो, श्री 'विबुधप्रभसूरि' रे।
'जयानन्द' बत्रीसमो, राजइ सुगुण पडूरि रे ॥ १३ ॥ ए०
श्री 'रविप्रभ' रवि सारखो, तेजइ करि 'मतिमद्र' रे।
'यशोभद्र' चउत्रीसमो, पइत्रीसम 'जिनिभद्र रे' ॥ १४ ॥ ए०
श्री 'हरिभद्र' छत्रीसमो, सइत्रीसम 'देवचन्द्र' रे।
'नेमिचन्द्र' अडत्रीसमो, उदयो जाणि दिणन्द रे ॥ १५ ॥ ए०
ढाल:—श्री 'उद्योतन' मुनिवरु, श्री वर्द्धमान महन्तो रे।
'विमल' दण्डनायक जिणे, प्रतिबोध्यो जयवन्तो रे ॥१६ ॥
युगप्रधान गुरु जाणिवा ॥
'खरतर' विरुद जिणइ लह्यो, 'दुर्लभ' राज नी साखइ रे।
सूरि 'जिणेसर' जगि जयो, कीरति सवि जसु भाखइ रे ॥१७॥यु
श्री 'जिनचन्द्र' यतीसरु, 'अभयदेव' गणधारो रे।
नव अंग विवरण जिणि कीया, जिण शासन सिणगारो रे॥१८॥यु
ढाल:—चामुंडा जिणि बूझवी, श्रुतसागर तसु पाटइ रे।
श्री 'जिनवलभ' गुरु थया, महीयल मोटइ थाटइ रे ॥१६॥ यु०॥
जीती चौसठ योगिनी, जिणि श्री' जिनदत्तसूरि' रे।
नाम ग्रहण तेहनो कीयउ, विकट संकट सवि चूरइ रे ॥२०॥यु०॥

श्री 'जिनचन्द्र सूरीसर' सांभलो, नरमणि मण्डित भालोजी।
तेहनइ पाटइ श्री'जिनपति'थया,सकल साधु भूपाल जी॥२१॥धन०॥
धन धन श्रीखरतर गच्छ चिरजयो, जिहां एहवा मुनिराजो रे।
शुद्ध क्रिया आगम में जे कही, ते भाखइ सिव काजो जी।२२।धन०।
सूरि 'जिणेसर' सरस्वति मुख वसइ, जसु महिमा नो निवासो जी।
'जिनप्रबोध' प्रतिबोधन जे करइ,अमृत वचन विलासोजी ॥२३॥धन०
'श्रीजिनचन्द्र' यतीसर तेहथी,'श्रीजिनकुशल' प्रधानोजी।
जसु अतिशय करि त्रिभुवन पूरियो,कुण हुवइ एह समानोजी॥२४॥ध
'वाल धवल सरस्वती' विरुदइ करी, लाधी जिण विख्यातो जी।
'पद्म सूरीसर' तसु पाटइ थयो, लब्धि सूरि सुब्दीतो जी ॥२५॥धन
श्री 'जिनचन्द्र' 'जिनोदय' यतीवरु, धीरम धर 'जिनरायो' जी।
श्री 'जिनभद्र' थयो सुविहित धणी, भवसागर वर पाजो जी ॥२६॥ध
'जिनचन्द्र' 'समुद्र' सूरीसर सारिखो,कुण हुवइ ऋषि गुण पूरि जी।
श्री 'जिनहंस' मुनीसर मानीयइ, श्री 'जिनमाणिक' सूरि जी ॥२७॥
पातिसाहि अकवर प्रतिबोधीयो, अमर पडह जगि दिद्धो जी।
पंचनदी जिणि साधी साहसइ, चन्द्र धवल जस सिद्धोजी ॥२८॥ध०
'युगप्रधान' पद साहइ जसु दीयो, श्री 'जिनचन्द' सूरिंदो।
उवारी 'खंभायत' माछली, चिरजयो जां रवि चन्दो जी ॥२९॥धन०
वीर थकी अनुक्रमि पट्टइ हुआ, जे जे श्री गच्छ धारो जी।
नाम ग्रही ते प्रभण्या एहना, कुग पामइ गुण पारो जी ॥३०॥धन०॥
'जेसलमेरु' विभूषण 'पास' जी, सुप्रसादइ अभिरामो जी।
श्री 'जयसोम' सुगुरु सीसइ मुदा, 'गुणविनय'गणि शुभ कामो जी॥३१

॥ इति ॥

॥ श्री जिनरंगसूरि गीतानि ॥

॥ ढाल—हंसला गीतनी जाति ॥

(१)

मनमोहन महिमा निलउ, श्री रंगविजय उवझायन रे ।
सेवत सुरतरु सम वड़इ, सवहि कइ मनि भाय न रे ॥१॥म०॥
संवत 'सोल अठहत्तरइ', जेसलमेरु मंझारि न रे ।
फागुण वदि सत्तमि दिनइ, संयम ल्यइ शुभ वार न रे ॥२॥म०॥
अनुपम रूप कला निला, ज्ञानचरण आधार न रे ।
भवियण नर प्रति बूझवइ, परिहर विषय विकार न रे ॥३॥म०॥
निज गच्छ उन्नति कारणइ, श्री जिनराज सुरिन्द न रे ।
पाठक पद दीधउ विधइ, प्रणमइ मुनि ना वृन्द न रे ॥४॥ म०॥
कुमति मतंगज केसरो, महिमागर मतिवन्त न रे ।
मानइ मोटा महिपती, महिमा मेरु महन्त न रे ॥५॥म०॥
'सिंधुड़' वंश दिनेसरू, 'सांकरशाह' मल्हार न रे ।
'सिन्दूर दे' उर हंसलउ, 'खरतरगच्छ' सिणगार न ॥६॥म०॥
वड़ शाखा जिम विस्तरउ, प्रतपउ ज्यां रवि चन्द न रे ।
"राजहंस" गणि वोनवइ, देज्यो परम आणंदन रे ॥७॥म०॥

॥ इतिश्री पाठक गीतम् , कृतं पं० राजहंस गणिना ॥

(२)

खरतर गच्छ युवराजियउ, थाप्यउ श्री जिनराज न रे।

पाठक रंगविजय जयउ, सब गच्छपति सिरताज न रे॥ १॥

भवियण वांदउ भावस्यूं, जिम पायउ सुख सार न रे।

रूप कला गुण आगलउ, निर्मल सुजस भंडार न रे॥२॥ भ०॥

सरस सुकोमल देसना, मोहइ सहूय संसार न रे।

कूड़ कपट हीयइ नहीं, सहुको नइ हितकार न रे॥३॥ भ०॥

होडि करइ गुरु नी जिके, ते जायइ द्रह बोड़ि न रे।

सुख पायइ ते सासता, जे सेव करइ कर जोड़ि न रे॥४॥ भ०॥

गुरु गुण गावइ मन सूधइ, नाम जपइ निशि दीश न रे।

'ज्ञानकुशल' कहइ तेहनी, पूजइ मनह जगीश न रे॥५॥ भ०॥

॥ युगप्रधान पद गीतम् ॥

(३)

'जिनराजसूरि' पाटोधरू, दसच्यार विद्या जाण।

वचन सुधारस वरसतौ, मानै सहुको आण॥ १॥

मोरी सही ए वांदोनी, जिनरंग, आणी मनमें रंग।

वाणी गंग तरंग। मो०

पातिशाह परख्यो जेहने, दीधो करि फुरमाण।

सात सोवे (सुबा ?) माहरो, करज्यो वचन प्रमाण॥२॥ मो०॥

तसु पुत्र दीपे पाटवी, 'दारा' स को सुलताण।

युगप्रधान पदवी तणो, करि दीधो निसाण॥३॥ मो०॥

'नेमीदास' 'सौंधड' जाणीजइ, 'श्रीमाली' जाति सुजाण ।
मा(सा?)ह पंचायण अति भलउ, गुरु रागी गुण जाण ॥४॥मो०॥
पैसारो भलिभांति सुं, कीयो निसाण रे काज।
हाथी सिणगार्यां भला, घोड़ा मुखमली साज ॥५॥मो०॥
वाजा बजाया तरा (?), नेजा वणाया तूर।
दान देइ याचक भणि, दादाजी रे हजूर ॥ ६ ॥मो०॥
श्रीपूज आया उपासरै, श्री संघ सगले साथ।
मन रंग महाजन लोकमें, नालेर दीधा हाथि ॥७॥ मो०॥
सूहव वधावै मोतीयै, गुहली गावै गीत।
केइ उवारै कापड़ा, राखै कुल री रीत ॥८॥ मो०॥
संवत 'सतरदाहोतरे', श्री संघ आणंद आण।
'युगप्रधान' पद थापीया, 'मालपुरै' मंडाण ॥६॥ मो०॥
वादी तणा मद जीपतो, महिमा तणो भंडार।
दूर कीया दुरजन जिणइ, खरतर गछ सिणगार ॥१०॥मो०॥
धन मात जस 'सिंदूर दे', धन पिता 'सांकरसीह'।
धन गोत्र 'सिंधुड' परगडो, धन मोरी ए जीह ॥११॥मो०॥
'कमलरत्न' इम वीनवे, मुझ आज अधिक आणंद।
चिरजीवो गुरु ऐ सही, जां लगि ध्रु रवि चन्द ॥१५॥मो०॥

———*———

॥ श्री कमलहर्ष कवि कृत ॥

श्रीजिनरतनसूरि निर्वाण रास
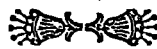
सरसति सामणि चरण कमल नमी, हीयड़इ सुगुरु धरेवि ।
श्री 'जिनरतन सूरीसर' गुरु तणा, गुण गाऊं संखेवि ॥ १ ॥
'श्रीजिनरतनसूरीसर' समरिये ॥
महियल मोटउ 'मरुधर' देस मइ, 'शुभ सेरुणा' गाम ।
धूना(धनो?)लोक वसइ सुखीयां जिहां,धरमी अति अभिराम ॥२॥श्री०॥
वसइ तिहां वर शाह 'तिलोकसी', चावउ चतुर सुजाण ।
'ओसवाल' वंशे उन्नति करू, जुगति करइ वखांण ॥ ३ ॥श्री०॥
तासु घरणि 'तारा दे' (दी) पती, सीलव्रती सुचंग ।
रूपवन्त शोभा में आगलो, सरस सुकोमल अङ्ग ॥ ४ ॥श्री०॥
रतन अमोलख जिणइ जनमियो, कुल मण्डण कुल भाण ।
मात-पिता वन्धव सहु हरखिया, जाणइ राणो राण ॥ ५ ॥श्री०॥
'आठ वरस' नइ मन माहि उपनो, लघु वय पिण वैराग ।
माया ममता सगली छांडिनै, दिन २ चढ़तइ वान (भाग?) ॥६श्री०॥
श्री 'जिनराज सूरिश्वरु' गुरु कन्है, आणी मन आणन्द ।
निज 'वांधव' 'माता' तीने मिली, लीधी दीख मुणिंद ॥ ७ ॥श्री०॥
शास्त्र अनेक भण्या थोडइ दिनइ, बुद्धि तणइ विस्तार ।
चउद वरस नइ संयम आदर्यो, सफल गिणी अवतार ॥ ८ ॥श्री०॥

निज उपदेसइ भवियण बूझवइ, करइ अनेक विहार।
पाल (इ) मन सुधइ मुनिवर भलउ, चारित्र निरतीचार ॥ ९ ॥श्री०॥
गुण अनेक सुणी श्री पुज्जजी, तेडावि निज पास।
'अहमदाबाद' नगर मांहे आपियउ, 'पाठिक पद' उल्हास ॥१०श्री०॥
जुगते भलिपर 'जयमल' 'तेजसी', अवसर लही एकन्त।
आणंद सुं उच्छव कीधउ तिहां, खरच्यउ धन धरि खंत ॥११॥श्री०॥
'पाटण' नगरइ पूज्य पधारिया, चतुर रह्या चउमास।
सूत्र सिद्धांत अनेक सुणावतां, सहु नी पूरइ आस ॥ ११ ॥ श्री०॥
संवत 'सतरइ सय' वरसइ भलइ, श्री 'जिनराज सूरिस'।
सइंहथ'रतन सूरीसर'थापीया,मनि धरि अधिक जगीस ॥१३॥श्री०॥
'अषाढ़ा सुदि नवमी' शुभ दिनइ, थिर निज पाटइ थापि।
श्री 'जिनराज' सरगि पधारिया, त्रिविधि खमावि पाप ॥१४॥श्री०॥
श्री 'जिनरतन' तणी मानी सहु, देस प्रदेशइ आण।
ठामि २ सिंघइ तेडावीया, गणिता जन्म प्रमाण ॥ १५ ॥ श्री० ॥

ढाल:—तूंगीया गिर शिखर सोहइ, एहनी।
चउमासि पारण करी सद्गुरु, कीयो तेथी विहार रे।
आविया 'पाल्हणपुरइ' पूजजी, कीयउ उच्छव सार रे ॥ १ ॥

आज धन 'जिनरतन' वांद्या, गया पातक दूर रे।
श्रीसंघ सगलउ मनि हरख्यउ, प्रकट पुण्य पडूर रे ॥२॥ आ०॥

'सोवनगिरी' श्री संघ आग्रहि, आवीया गणधार रे।
पइसार उच्छव सबल कीधउ, सीठ (सेठ?)'पीथइ' सार रे ॥३॥आ०॥

संघ नइ वांदिवि सुपरइ, पूज्यजी पटधार रे ।
विचरता 'मरुधर' देस मांहे, साधु नइ परिवार रे ॥४॥ आ०॥
संघ आग्रह आविया हिव, पूज्य 'बीकानेर' रे ।
'नथमल' 'वेणइ' उच्छव कीधउ, खरचीयो धन ढेर रे ॥५॥आ०॥
उपदेस निज प्रतिबोध श्रावक, करता उग्र विहार रे ।
'वीरमपुरइ' चउमास आव्या, संघ आग्रह सार रे ॥६॥ आ०॥
चउमास पारण आविया हिव, 'बाहडमेर' सुजाण रे ।
चउमास राख्या संघ मिलकर, पूज्यजी परमाण रे ॥७॥ आ०॥
तिहां थी विचरी 'कोटडइ' मइ, चतुर करी चउमास रे ।
पारणइ 'जेसलमेरु' श्रावक, तेडीया उल्हास रे ॥८॥ आ०॥
पइसार उच्छव 'गोप' कीधो, लीयउ लखमी साह रे ।
याचकां बहुलउ दान दीधउ, मन धरी उच्छाह रे ॥९॥ आ०॥
संघ आग्रह च्यारि कीधा, पूजजी चउमास रे ।
धन-धन'जेसलमेरि'श्रावक,लोक मय (नइ?)साबास रे॥१०॥आ०॥
'आगरा' नइ संघ आग्रह, घणा कीध विशेष रे ।
'आगरइ' गच्छराज आव्या, श्राविकां मन देख रे ॥११॥आ०॥
हुकम 'वेगम' तणउ पामी, 'मानसिंह' महिराण रे ।
पइसार उच्छव अधिक कीयउ, मेलीया रायराण रे ॥ १२ ॥आ०
हरखीया मन मांहि सहु श्राविक, वरतीया जयकार रे ।
याचकां वांछित दान दीधउ, प्रबल पुन्य प्रकार रे ॥१३॥ आ०॥
तप नियम व्रत पचखांण करतां, धारतां धर्म ध्यान रे ।
निज गुणे सगले श्रावकां मन, रंजीया असमान रे ॥१४॥आ०॥

चउमास चावी तिन कीधी, पूजजी परसिद्ध रे।
चउमास चौथी वले राख्या, संघ आग्रह किद्ध रे ॥१५॥ आ०॥
दिन दिन चढ़तउ सुजस महियल, गुण अधिकइ गच्छराज रे।
दुत्तर दुखसायर पडतां, जगत जाणे जिहाज रे ॥ १६ ॥ आ०॥

करजोडी इम विनवुं एहनो ढाल:—

इण विधि इम रहतां थकां, पूजजी नइ होडोलइ असमाधि।
कारण जोगइ उपनी, करमे पिण हो हिव अवसार लाध ॥ १ ॥
तुम्ह विण पूजजी किम सरइ।
'आषाढ़ा सुदि दसम' थी, वपु बाधी हो वेदन विकराल।
ध्यान एक अरिहन्त नो, मनि राखइ हो छांडी जंजाल ॥ २ ॥ तु०॥
वइरागइ मन वालियउ, नवि कीधा हो ओषध उपचार।
संवेगी सिर सेहरो, 'चउरासी' हो गच्छ मइं श्रीकार ॥ ३ ॥ तु०॥
अल्प आउखो जाणीनइ, पोतानउ हो पूजजी तिण वार।
सइंमुख अणशण आदर्यो, सवि छंडी हो पातक आचार ॥४॥ तु०॥
क्रोध लोभ माया तजी, तजीया वलि हो आठे मद मोह।
पापस्थानक सवि परिहर्या, जगमांहि हो अति बधती सोह ॥५॥तु०॥
मन वचन कायाइं करी, वलि लागा हो व्रत ना दूषण जेह।
ते आलोयां आंपणा, गच्छ नायक हो गिरुआ गुण गेह ॥ ६ ॥ तु०॥
सरण च्यारे उच्चरी, आराधी हो सूधा गुरु देव।
कलमल पाप पखालिनइ, षट् जीवन हो पाली नित मेव ॥ ७ ॥ तु०॥
जीव अनेक छोडाविया, याचक मिली हो धन खरची अनन्त।
दुखीयां दान दियउ घणो,धन २ धन हो मुनि लोक कहन्त ॥८॥तु०॥

संवत 'सतरइ सय भलइ, इग्यारे' हो 'श्रावणि बदि सार'।
'सोमवार' 'सातम' दिनइ, सोभागी हो पहले पहर मंझार ॥९॥तु०॥
'चउरासी' लख जीवनइ, खमावी हो आलोइ पाप।
'हरषलाभ'नइ हरखस्युं,निज पाटइ हो अविचल थिर थाप ॥१०॥तु०॥
निरमल चित नवकार नउ, मुखि कहतां हो धरता सुभध्यान।
श्रीपूज्यजी संवेगी हो, पहुंता अमर विमान ॥ ११ ॥ तु०॥
करे अनोपम कोकही, मांहों मुखमल हो बड़ सूफ विछाय।
चोया चन्दन अरगजा, कस्तूरो हो केसर चरचाय ॥१२॥ तु०॥
विधि विधि वाजित्र वाजता, वइसारी हो जाणे देव विमान।
हयवर गयवर हीसतां, सहु लोकहु (हो)करता गुण गान ॥१३॥तु०॥

ढाल—वाल्हेसर मुझ वीनती गोडीचा राय एहनी।

बइठो आमण दुमणो सोभागी,ए ताहरउ परिवार हो। सोभागी०।
परदेसी जिमि छांडिने सो०, जइये किम गणधार हो। सो०। १।
दरसण द्यो गुरु माहरां सो०,
सहु श्रावक श्राविका। सो०। जोवइ तुमची वाट हो। सो०।
ए वेला नहीं ढील नी सो०, सुन्दर रूप सुघाट हो। सो०। २।
वेला थइ वखाणनी सो०, मिलीया सहु रायरांण हो। सो०।
आवी वइसो पूठीयइ सो०, वार म ल्यावो जाण हो। सो०। ३।
आवी वइठा एकठा सो०, पंडित पूछण काज हो। सो०।
वेगउ उत्तर द्यउ तुम्हें सो०, गरुआ श्री गच्छराज हो। सो०। ४।
एक वेली सुविचार नइ, वोलउ वोल रसाल हो। सो०।
वाट जोवइ जिम मेह नी सो०, उभा वाल गोपाल हो। सो०। ५।

इतना दिवस लगइ हुंती सो०, मन मइं सहु नइ आस हो । सो० ।
तइं तउ भूल तिका करी सो०, चाल्या छोडी निरास हो । सो० । ६ ।
शिष्य सहु बालावी नइ सो०, फेरयउ माथइ हाथ हो० । सो० ।
ते वेला स्युं वीसरी सो०, करि बीजा नउ हाथ हो । सो० ।७।
आवण अवधि न कही सो०, नाण्यउ मन मइ नेह हो । सो० ।
अनवइ (?) जेम विचारी नइ सो०, छिनमें दीधी छेह हो ।।सो०।।८।।
चउमासु पिण जाणि नइ सो०, संक न आणी कांइं हो ।सो०।
अधविचइ म मकी करी सो०, कुण कहु छांडो जाइ हो ।सो०।६।
देव विमाने मोहीयउ सो०, पूठी खबरि न कीध हो । सो० ।
इहां तो लोभ न को हुंतो सो०, तिहां लोभइ चित दीध हो ।सो०।१०।
आलस किण ही बात नउ सो०, नवि हुंतउ तिल मात हो । सो० ।
दोष तुम्हारउ को नहीं सो०.............................।।११।।
मन थी भावन मूंकतउ सो०, एक समइ पिण एम हो । सो० ।
ते पिण भाव विसारियउ सो०, बीजा सुं धरे प्रेम हो० ।।सो०।१२।
पल भर (पिण) सरतो नहीं सो०, पूज पखइ निसदीस हो । सो० ।
जमवारोकिम जाइस्यइ सो०, महि मोटा जगदीस हो ।सो०।१३।
खिण २ मइं गुण संभरइ सो०, आठ पोहर दिन राति हो । सो० ।
कुण आगलि कहि दाखवुं सो०, तेहनी वीगत बात हो ।सो०।१४।
वीसार्यां निवि वीसरइ सो०, सद्गुरु ना गुण गाम हो । सो० ।
समरइ सहु साचइ मनइ सो०, नित नित लेइ नाम हो ।सो०।१५।
परतिख इग पंचम अरइ सो०, सूरि सकल सिरताज हो । सो० ।
तुझ सरिखउ जग को नहीं सो०, वइरागी मुनिराज हो ।सो०।१६।

गच्छपति तो आगइ हुआ सो०, होस्यइ वलि छइ जेह हो ।सो०।
पिण तो सम संसार मइ सो०,नवि दीसइ गुण गेह हो ।सो०।१७।
वखतावर विद्यानिलउ सो०, सूत्र सिद्धांत प्रवीण हो । सो० ।
कलियुग माहे जुवतां सो०, अधिको धरम धुरीण हो ।सो०।१८।
तइं तउ ताहरउ निरवाहीयउ सो०, जनम लगइय समान हो ।सो०।
सींहण पण व्रत आदर्यो सो०,पाल्यउ सींह समान हो ।सो०।१९।
त्रिभुवन मइ ताहरी क्षमा सो०, साराहइ संसार हो० । सो० ।
कलि मांहे इक तुं हूओ सो०, निरलोभी गणधार हो ।सो०।२०।
महियल मइ यश ताहरो सो०, कहतां नावे पार हो । सो० ।
गुण अधिका गच्छराज ना सो०, केता करूं वखाण हो ।सो०।२१।
रास सरस इम आदिस्यउ सो०, पूज्य तणउ निरवाण हो ।सो०।
भाव घणइ परमोद सु सो०, करज्यो खेम कल्याण हो ।सो०।२२।
'श्रावण सुदि इग्यारसइ' सो०, थिर शुभ थावर वार हो । सो० ।
'मानविजय' सोस इम भणइ सो०,'कमलहरष'सुखकार हो ।सो०।२३।
अति जयवंतउ 'आगरइ' सो०, खरतर संघ सुखकार हो । सो० ।
सुख संपत देज्यो सदा सो०,धरि मन शुद्ध विचार हो ।सो०।२४।
भणतां गुणतां भावस्यु सो०, रास सरस इक चित्त सो० ।
नवनिधि सिद्धि महिमां बधइ सो०,था(य)इ जन्म पवित्र हो ।सो०।२५।

॥ इति श्री श्री जिनरतनसूरि निर्वाण रास समाप्तम् ॥

सं० १७११ वर्षे कार्तिक सुदि ७ दिने सोम वासरे लिखतं पाटण मध्ये मानजी करमसी कस्य लिखतं ॥ साध्वी विद्यासिद्धि साध्वी समयासिद्धि पठनार्थं । पत्र ३

(वीकानेर बृहद्-ज्ञानभंडार)

श्री जिनरतनसूरि गीतानि

(१)

काल अनन्तानन्त एहनो ढाल—

'श्री जिनरत्न सूरीश', पूज वांदेवा हो मुझ मन छइ सही ।
देखण तुझ दीदार, आवइ चतुर्विध हो श्रीसंघ सामउ उमही ॥ १ ॥
गुरुया श्री गच्छराजा, खरतर गच्छ मइं···पूज दीपइ सदा ।
प्रतपइ अधिक पडूर, जिण मुख दीठइ हो सुख होवइ मुदा ॥ २ ॥
'लुणिया' वंश विख्यात, साह 'तिलोकसी' हो कुल सिर सहेरउ ।
'तेजल' देवि मल्हार, हंस तणी परि हो सद्गुरु अवतर्यउ ॥ ३ ॥
'पाटण' नयर प्रसिद्ध, श्री 'जिनराजइ' हो सइं हथि थापीयउ ।
संवेगी सिरदार, अधिकउ जाणी हो गुरु पद आपियउ ॥ ४ ॥
मुख जिसउ पूनिमचंद, वाणि सुधारस हो निज मुख वरसतउ ।
करतउ उग्र विहार, भव्य जीवानइ हो नित प्रतिबोधतउ ॥ ५ ॥
ताहरी त्रिभुवन मांहि, मस्तक आणज्ञ हो मन सूधी धरइ ।
युगवर वीर जिणन्द, तेह तणी परि हो उत्कृष्टी करइ ॥ ६ ॥
(प्रण) मइ भवियण लोक, तुझ मुख देख्यां हो पाप सवे टल्या ।
'राजविजय' गुरु शिष्य, 'रूपहर्ष' भणि हो वंछित मुझ फल्या ॥ ७ ॥

(२) रागः—ढाल—नायकारी

श्री गच्छ नायक सेवियइ रे, 'श्री जिनरतन' सूरिंद रे । सुगुरुजी ।
पूज्य नइ वधावउ मोतिया रे लाल, आणी मन आणंद रे ।सुगुरुजी।१।

आवउ तुम्ह इण देस मइ रे लाल० । आ० ।
'लूणिया' वंसइ लखपती रे, तिलोकसी' साह मल्हार रे ।सु०।
'तारादे' उरि हंसलउ रे लाल, कामगवी अनुहार रे । सु० ।२। आ०।
श्री 'जिनराज सूरीसरइ' रे, सईहथ दीधउ पाट रे । स० ।
चड वखती वइरागीयउ रे लाल, कलि गौतम नउ घाट रे ।स०।३।आ०।
शीलइ करि थूलभद्र समउ रे, रूपइ वइर कुमार रे ।स०।
पालइ पंच महाव्रतू रे लाल, लोभ तउ नहीय लिगार रे ।स०।४।आ०।
वाणी सुधारस वरसतउ रे, सजल जलद अनुहार रे । स० ।
आगम सूत्र अरथ भरयउ रे लाल, श्री खरतर गणधार रे ।स०।५।आ०
श्री संघ हरष अछइ घणउ रे, वंदिवा तुम्हारा पाय रे । स० ।
तुझ मुख कमल निहालिवा रे लाल, चाह धरइ राणाराय रे ।स०।६।
'जिनराज' पाटइ चिर जयउ रे, सूहव द्यइ आसीस रे । स० ।
'खेमहरष' मुनि इम भणइ रे, लाल जीवउ कोडि वरीस रे ।स०।७।आ०

(३) रागः—मल्हार, ढाल व दूलो री

'श्री जिनरतन' सूरिंदा, दीपइ मुख पूनिम चंदा। सहगुरु वंदउ वे ।१।
'लूणीया' वंस विराजइ, दिन २ ए अधिक दिवाजइ । स० । २ ।
'पाटण' मइं पद पायउ, सव श्रावक जन मन भायउ । स० । ३ ।
'तिलोकसी' शाह मल्हारा, 'तारा दे' उरि अवतारा । स० । ४ ।
गुणे गौतम गणधारा, गुरु रूपइ वइरकुमारा । स० । ५ ।
शीलइ तउ थूलभद्र सोहइ, छत्रीस गुणे मन मोहइ । स० । ६ ।
आगम अरथ भंडारा, जिण शासण मइ सिणगारा । स० । ७ ।

वाणी सुधारस वरसइ, सुणिवा कुं जन मन तरसइ । स० । ८ ।
इम 'खेमहरष' गुण बोलइ, पूज्यजी के कोइ न तोलइ । स० । ९ ।
(किरहोरमें श्राविका रजी पठनार्थ कविके स्वयं लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

(४) ढाल—पोपट पंखियानी

सुण रे पंथिया कब आवइ गच्छराज, सफल विहाणउ आज ।
सरिया वंछित काज, भेट्या श्री गच्छराज ।
सुणि रे पंथिया कब (आवइ) गच्छराज । आंकणी ।
उभी जोवूं वाटडी, आइ कहइ कोई मुझ ।
सोवन जीभ वधामणी, देसुं पंथी हो तुझ । १ । सु० ।
सुमति गुपति धरता थका, पालइ शुद्ध आचार ।
किरिया आचरता थका, साथइ बहु अणगार । २ । सु० ।
'लूणीया गोत्रइ दीपता, साह तिलोकसी जाणि ।
'तारादे' जननी भली, सुत जनम्या गुण खानि । ३ । सु० ।
भावइ संजम आदर्यउ, जननी सुत सुखकाजि ।
जिणवर भाषित मारगइ, दीख्या श्री 'जिनराज' । ४ । सु० ।
संवत 'सतरहिसइ' भलइ, मास 'आषाढ़' प्रमाण ।
श्री 'जिनराजइ' थापिया, सुकलइ 'सप्तमि' जाणि । ५ । सु० ।
गामागर पुर विहरता, जलधर नी परि जाणि ।
भवियण नइ पडिबोधता, भेटउ ऊगत भाण । ६ । सु० ।
'कनकसिंह' गणिवर कहइ, दिन दिन द्युं आसीस ।
श्री जिनरतन सुरिंदजी, प्रतपउ कोडि वरीस । ७ । सु० ।

इति श्री गुरु गीतम् (पत्र १ हमारे संग्रहमें तत्कालीन लि०)

निर्वाण गीतम्

(५) ढाल—पोपट पंखीया जाति

'श्री जिनरतन' सूरीसरो, लघु वय संयम धार।
उद्यत विहार संचर्या, 'उग्रसेन पुर' सिणगार ॥ १ ॥

सुहगुरु पूज्य जी, मुखि बोलउ इक बात।
प्रीतम सहगुरू, कांइ निसनेह अपार।
वल्लभ पूज्यजी तुं मुझ प्राण आधार।
जीवण पूज्यजी तुम विण कवण आधार ॥ आंकणी ॥

धन पिता 'तिलोकसी', 'तेजलदे' उर धार।
जिणइ एहवउ पुत्र जनमीयउ, सयल जीव सुखकार ॥२॥

'श्रावण वदि सातिम' दिनइ, कीध (अणशण) उच्चार।
चउविहार सुध भावस्युं, पाल्यउ निरतीचार ॥३॥

श्रावक आवइ वांदिवा, ओसवाल अनइ श्रीमाल।
दरसण दीठां सुख हुवइ, नावइ आल जंजाल ॥४ ॥

च्यार प्रहर लगि तिहां धरी, छोड्याज राग न (इ) द्वेष।
सहु जीवसु तिहां खामणइ, पाम्या स्वगना सुख ॥५॥

आंसु जल चउसर वहइ, छोड्या केस कलाप।
देह पछाडइ भूमिस्युं, शिष्य करे रे विलाप ॥६॥

हिव पर्व पजूसण आवीया, धरम कहउ मन कोडि।
श्री संघ जोवइ वाटडी, वांदणि उपरि कोडि ॥७॥

तुम्ह सरिखा संसार मइ, देख्या नहीं दीदार।
लोचन तृपति पामइ नहीं, जुवुं हुं सउवार ॥८॥सहु० मी० ॥

युग प्रधान श्री पूज्यजी, श्री 'जिनरतन' सुरिंद।
सयल संघनइ सुखकरू, 'विमलरतन' आणंद ॥९॥

(पं० मानजी लि० पत्र १ से)

॥ जिन रत्नसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

'श्री जिनचन्द सूरीसरू' रे, गच्छ नायक गुण जाण रे । सोभागी ।
महियल मई महिमा घणो रे लाल, जाणइ राणो राण रे सो०॥१॥श्री०
सुन्दर रूप सुहामणो रे, बखतावर बड़ भाग रे । सो० ।
'बार वरस' नइ ऊपनउ रे लाल,लघुवइ मनि वइ राग रे सो०॥२॥श्री
श्री 'जिनरत्न' सूरीसर आपियउ रे, सइं हथ संयम भार रे ॥सो०॥
श्री संघइ उच्छव कियउ रे लाल, 'जेसलमेर' मझार रे सो० ॥३॥श्री
गौतम जिम गुण गहगहइ रे, साह 'सहसमल' नन्द रे । सो० ।
'गणधर गोतइ' गुग निलो रे लाल,दरसण परमानन्द रे । सो॥४॥श्री
श्री 'जिनरत्न सूरीसरइ' रे, दीधउ अविचल पाट रे । सो० ।
वधतइ वरस 'अढार' मइ रे लाल, सेवइ मुनिवर थाट रे ।सो॥५॥श्री
'सिन्दूर दे' सुत चिर जयउ रे लाल, गच्छ खरतर सिणगार रे ।सो०।
शीतल चन्द तणी परइ रे लाल, संवेगो सिरदार रे । सो० ॥६॥श्री०
श्री 'जिनरत्न' पटोधरू रे, सहुनो पूरइ आस रे । सो० ।
धर मन हर्ष ऊमाहलउ रे लाल, पभणइ 'विद्याविलास' रे ।सो०॥७॥श्री

॥ इति श्री वर्तमान श्री जिनचन्द्र सूरि गीतम् ॥
॥ साध्वी रत्नमाला वाचनार्थम् ॥

(२)

श्री'जिनचन्द' सूरीश्वर वंदीयइं रे, गरूयउ गछपति गुणमणि गेह रे ।
मोहनगारी मूरति ताहरी रे, घडीय विधाता सइंहथि एह रे । १।श्री०
वदनि कमल सरसति वासउ कीयो रे,
अड सिद्धि 'आवि रही जसु हाथि रे ।

कर दाहिण सिर थापइ जेहनइ रे,ते नर पामइ वंछित आथि रे ।२।श्री०
ईति उपद्रव को न हुवइ किहां रे, जिहां किणि विचरइ श्री गछराज रे ।
घरि २ मंगल होवइ नवनवा रे, जावइ भावठि सगली भाज रे ।३।श्री०
धन-धन श्रावक नइ वलि श्राविका रे, भावइ आवि सुणइ उपदेस रे ।
पामी धरमलाभ गुरु आसिका रे,शाता सुखनउ जाणि निवेस रे ।४।श्री०
जोतां नयणे बीजा गच्छपति रे, ते नावइ जुगवर ताहरी जोडि रे ।
खजूया कोडि मिलइं जउ एकठा रे,तउकिम थायइ सूरिज होडि रे।५।श्री०
श्री'जिनरतन' आदेसइ आविया रे, रंगइ 'राजनगर' चउमास रे ।
वयणे* सगुरु तणे पदवी लही रे,च्चिहु दिशि प्रगट्यउ पुण्य प्रकाश रे ।६।
'नाहटा'वंशइ'जइमल''तेजसी'रे,देव गुरू भगती माता तास रे ।
हरखइं 'कसतूरां' उछव करी रे, शोभा वधारी जगमइं खास रे।७।श्री०
कुल उजवालक 'गणधर' गोतमइ रे,'सहस करण' सुपीयार दे' नंद रे ।
सुप्रसन्न हुइ जोवइ जिण सामुंहउ रे, तेहना जावइ दोहग दंद रे ।८।
ध्रू शशि गिर अविचल जांलगइ रे, तां लगि प्रतपउ गच्छाधीश रे ।
वाचक'रूपहरष'सुपसाउले रे,'हरषचन्द' पभणइ अधिक जगीस रे ।९।

इति श्री गुरु गीतम् (सं० १७३० आसू वदि ८ बीकानेरे लि० पत्र २ हमारे संग्रहमें)

(३)

जीहो पंथी कहि संदेसडउ, जीहो पूज्यजी नइ पाइ लागि । जीहो० ।
गुरु दरसण तू देखतां जीहो, जागस्यइ तुरा भागि । १ ।

*मानजीकृत गीतमें भी
सहमुख (इ)श्रीपूजजी रे, अमृत एहवी वाणि ।
पाटइ एहनउ थापज्यो रे, करेज्यो वचन प्रमाण । ४ । मे० ।

चतुर नर वंदु श्री 'जिनचन्द्र'
जीहो अमृत श्रावणी देस ना , जीहो सांभलता दुख जाय ।
जीहो तिण कारणि तूं जाई नइ.जोहो करेज्यो वचन प्रमाण ।२।जी०
वचन प्रमांण कीधा हुंता जी, घर माहि नवि निधि थाइ । जी० ।
गुरु प्रणम्यां सुख संपजइ, जीहो कुमति कदाग्रह जाइ । ३ । जी
'वीकानयरइ' जाणीयइ रे, जी० वहु रिधिनउ भंडार । जी० ।
तिणगाम मांहि दीपतउ जी, 'सहसकरण' सुखकार । ४ । जी०
'राजलदे' कुखि उपनउ जी हो, नामइ 'श्री जिनचन्द' । जीहो ।
वइरागि तिणि व्रत लीयउ, मनि धरि अधिक आणंद । ५ । जी०
विद्या सुरगुरु सारिखउ जी हो, रूपइ वइरकुमार ।
श्री 'जिनरत्न' पाटइ सही, वहु सुखनउ दातार । ६ । व० । जी०
चिर जीवउ गछ राजीयउ, खरतर गछ नउ इन्द्र । जी० ।
पण्डित 'करमसी' इम कहइ जी, प्रतपउ जां रवि चन्द्र । ७

---

(४)

सुगुरु बधावउ सूहव मोतियां, श्री 'जिणचंद' मुणिन्द ।
सकल कला करि शोभता, जाण कि पूनम चन्द ॥ १ ॥ सु० ।
लघु वय संयम जिण लीयउ, सूत्र अरथ नउ जाण ।
पूज पद पायउ जिण परगड़उ, पूरव पुण्य प्रमाण ॥ २ ॥ सु० ।
'श्री जिनरत्न सूरि' सइ हथइं, श्री संघ तणइ समक्ष ।
पाटइ थाप्या हे प्रेम सुं, मति मन्त जाणि नइ मुख्य ॥ ३ ॥ सु० ।
'चोपड़ा' वंशइ चिर जयउ, 'सहिसू' शाह सुतन ।
मात 'सुपियारे' जनमियउ, सहुको कहइ धन धन्न ॥ ४ ॥ सु० ।
श्री 'जिन कुशल सूरि' सानिधइ प्रतिपउ कोडि वरीस ।
बधतइ दावइ गुरु बधो, 'कल्याणहर्ष' द्यइ आशीस ॥ ५ ॥ सु० ।

(५)

पंचनदी साधन कवित्त

उछलती जल अकल बोल, कल्लोल छिलंती ।
वलती वलती वेल झाग अत्थाग झिलंती ।
भमरेटे भयभीत भभकती तटे भिडंती ।
पडती जुडती पवन ज अनम जड ऊथेंडती ।
जप जाप आप परताप जप, सूरि मंत्र सानिध सबल ।
'जिनरतन' पाट 'जिणचन्द' जुगत, 'पंच नदी' साधी प्रबल । १ ।
॥ कवित्त पंचनदी साधी तिण समय रो (१८ वीं शताब्दी लि०)

बाचक अमरविजय गुण वर्णन

कवित्त

साच शील संतोष, साधु लछन सकजाई ।
बरषत अमृत बचन, विपुल विद्या वरदाई ।
'उदयतिलक' गुरु आप, हरप सुं दीयो बोध हित ।
पुन्य थान निज परसि, चौपडै कीयो विमल चित्त ।
सज्जन सुभाव सुख सुं सदा, शास्त्र हेत बूझे सकल ।
वाचक वदां वखतैत वर, 'अमरसिंह' तुझ यश अचल ॥१॥
(जयचन्दजी के भण्डारस्थ उपरोक्त पत्र से)
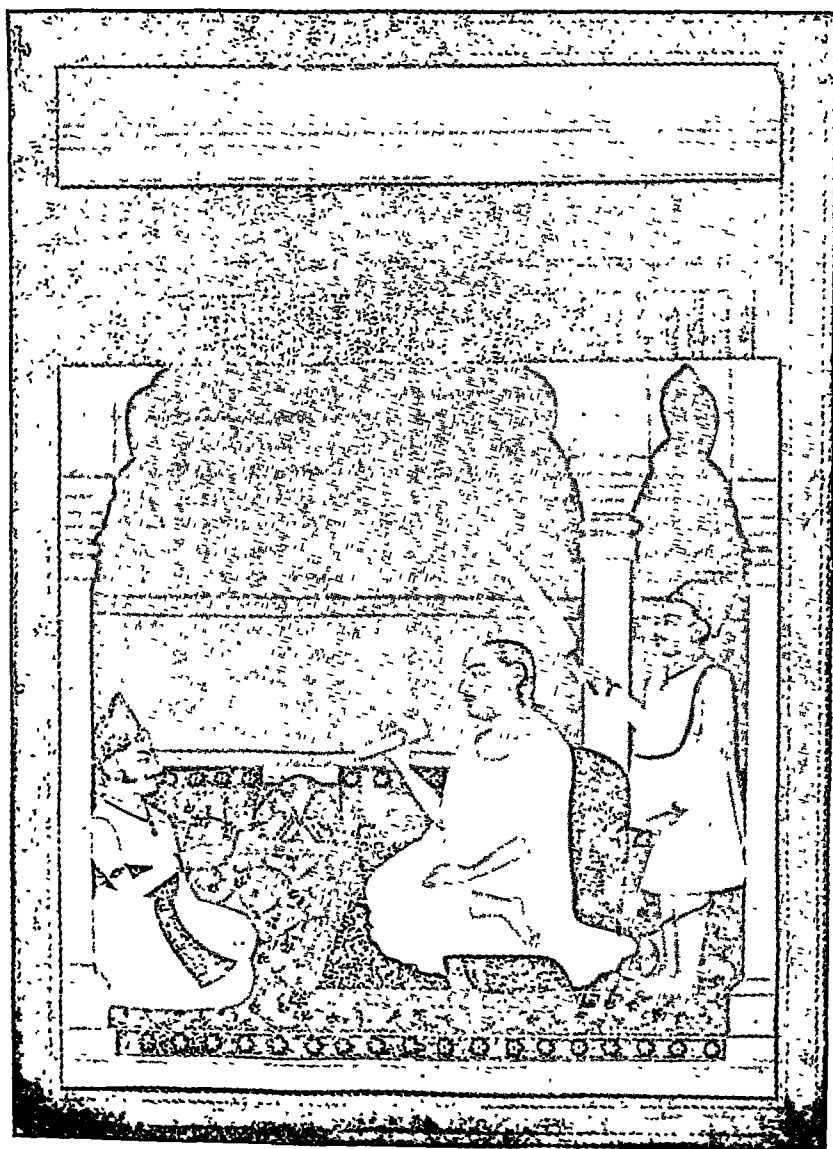
श्री जिनसुखसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

जिन सुखसूरि गीतम्

—-—**—-—

(१)

ढाल:—रसोयानी

सहु मिलि सूहव आवउ मन रली, गावौ गुरु गच्छराय । सोभागी० ।
विधि सुं वंदौ 'जिनसुख सूरि' नइ, जसु प्रणम्या सुख थाय ।सो०।१।स
'बहरा' गोत्र विराजइ अति भला, 'रूपचंद' शाह मल्हार । सो० ।
'रतनादे' माता उर ऊपनउ, खरतरगछ सिणगार ।२। सो० ।सहु०।
श्री 'जिनचंद्र' सूरीसर सईहथइ, थाप्या अविचल पाट । सो० ।
'सूरत' विंदर श्री संघ नी साखइ, सुविहित मुनि जन थाट ।३।सो०।
चारित लघुवय माहे आदरयउ, तप जप सुं बहु लीन । सो० ।
आगम अरथ विचार समुद समउ, विद्या चउद प्रवीण ।४।।सो०।।
सोभागी गुण रागी अति घणुं, वड वखती गुण खाणि । सो० ।
कठिन क्रिया सुविहित गछ साचवइ, मीठी अमृत वाणि ।।५।।सो०।।
सोम पणइ करि चंद सुहामणा, प्रतपइ तेज दिणंद । सो० ।
रूप कला करि अधिक विराजतउ, मोहइ भवियण वृन्द ।।६।।सो०।।
सूरि गुणे छत्तीसे शोभता, वड वखती वड मान । सो० ।
लोक महाजन माने वड वडा, राउ राणा सुलतान ।।७।।सो०।सहु०।
दिन २ वधतो दउलति सुं वधउ, कीरति देस प्रदेश । सो० ।
सुजस चिहुं खंड चावउ विसतरउ, आण अधिक सुविशेष । ८ सहु०।

संघ मनोरथ पूरण सुरतरु, 'जिन सुखसूरि' महंत । सो० ।
इणपरि 'सुमतिविमल' असीस द्यइ, पूरवइ मननी रे खंति । ६सहु०।

॥ इति श्री 'जिनसुख सूरि' गीतम् , श्राविका जगीजी वाचनार्थं ॥

(तत्कालीन लि० पत्र २ हमारे संग्रहसे)

(२)

उदय थयो धन धन दिन आजनो, प्रगट्यउ पुण्य पडूरो जी ।
वंद्या आचारिज चढ़ती कला, नामे 'जिनसुख सूरो' जी ॥उ०॥१॥
'सूरत' शहरे हो जिनचंद सूरिजी, आप्यो आपणो पाटो जी ।
महोत्सव गाजै बाजै मांडिया, गीतांरा गहगाटो जी ॥ उ० ॥ २
'पारिख' शाह भला पुण्यातमा, 'सामीदास' 'सुरदासोजी' ।
पद ठवणो कीधो मन प्रेम सुं, वित्त खरच्या सुविलासो जी ॥उ०॥३॥
रूड़ी विध कीधा रातीजुगा, साहमी वत्सल सारो जी ।
पट्टकूले कीधी पहिरामणी, सहु संघ नइ श्रीकारो जी ॥ उ० ॥ ४ ॥
संवत 'सतरै बासठै' समै, उच्छव बहु 'आसाढो' जी ।
'सुदि इग्यारस' पद महोत्सव सज्यो, चंद कला जस चाढो जी ।उ।५।
'सहिंःचा' 'बहुरा' जगि सलहिये, 'पीचो' नख परसंसो जी ।
मात पिता 'रूपचंद' 'सरूपदे', तेहनइ कुल अवतंसो जी ॥ उ० ॥६॥
प्रतपो एहु वगा जुग गच्छपति, श्री 'जिनसुख सुरिन्दो' जी ।
श्री 'धरमसी' कहुं श्री संघ नइ, सदा अधिक करो आणंदो जी ।उ०।७।

जिनसुखसूरि निर्वाण गीतम्

(३)

ढाल—झूबकडानी

सहीयां चालो गुरु वांदिवा, सजि करि सोल सिंगार।
सहेली भाव सुं केसर भरीय कचोलडी, महि मेली घनसार।स०।१।
'सतरैसै असीयै' समे, 'जेठ किसन' जग जांण। स०।
अणशण करि आराधना, पाम्यौ पद निरवांण। स०।२।
'जिनचन्द सूरि' पाटोधरू, 'श्री जिनसुख सूरिन्द'। स०।
दरसण दौलति संपजै, प्रणम्यां परमाणंद। स०।३।
पद थाप्यौ निज हाथ सुं, 'श्री जिनभक्ति' सूरीस। स०।
खरचै संघ धन खांति सुं, इह कहै आसीस। स०।४।
'रिणी' नगर रलीयामणो, श्रावक सहु विधि जांण। स०।
देस प्रदेशै दीपता, मन मोटैं महिराण। स०।५।
थूंम तणी थिर थापना, मोटै करै महिराण। स०।
हरप घणै संघ हेतु सुं, आसत अधिकी आण। स०।६।
'माह शुकल छट्ठ' नै दिनें, शुभ महूरत सोमवार। स०।
'श्री जिनभक्ति' प्रतिष्ट्रिया, हरख्या सहू नर नार। स०।७।
सहीय सहेली सवि मिली, पहिर पटम्बर चीर। स०।
गुण गावो गछराय ना, मेरु तणी परे धीर। स०।८।
नामै नवनिधि संपजै, आरती अलगी थाय। स०।
कर जोड़ी 'वेलजी' कहै, लुलि २ लागे पांय॥ सहेली भाव सुं० ६॥

जिनभक्तिसूरि गीतम्

ढाल:—आषाढै भैरूं आवै ए देशी।

'जिनभक्ति' जतीसर वंदौ, चढती कला दीपति चंदौ रे। जि०।
खरतर गच्छ नायक राजै, छत्रीस गुणे करि छाजै रे। १। जिन०।
श्री 'जिणसुख सूरि' सनाथै, दीधौ पद आपणें हाथे रे। जि०।
श्री 'रिणीपुर' संघ सवायौ, महोछव कीधो मन भायौ रे। २ जि०।
'सेठीया' वंसै सुखदाई, श्री जिन धर्म सोभ सवाई रे। जि०।
'हरिचन्द' पिता धर्मधीरौ, 'हरिसुखदे' उदरै हीरौ रे। ३। जि०।
लघुवय जिण चारित लीधौ, सद्गुरु नै सुप्रसन्न कीधो रे। जि०।
विद्या जसु हुइ वरदाइ, पुन्यै गुरु पदवी पाई रे। ४। जि०।
प्रगटयौ जश देस प्रदेसै, वरते आज्ञा सुविसेसै रे। जि०।
वांटै सहु देस बधाइ, खरतर गच्छपति सुखदाई। ५। जिन०।
संवत 'सतरै उगुण्यासी, जेष्ट वदि त्रीज' पुण्य प्रकासी रे। जि०।
सहु सुजस रिणी संघ साध्या, इम कहै 'धर्मसी' उपाध्या रे। ६ जि०

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

श्री जिनभक्तिसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

॥वाचनाचार्य सुखसागर गीतम्॥

राग —कड़खारी

वाचनाचार्य 'सुखसागर' वंदियै,
सुगुण सोभाग जसु जगि सवायो ।
अङ्ग उच्छरङ्ग धरि नारि नर नित नमै,
कठिन किरिया करण इलि कहायो ॥ १ ॥ वा० ॥
पूज्य आदेश वलि 'थंभणो' वांदिवा,
नयरि 'खंभाइतै' अधिक सुख वास ।
संघ नी आण सुप्रमाण करि पड़िकम्या,
चतुर चित चंग सूं चरम चौमास ॥२॥वा०॥
करिय चोमास अति खाश आणंद सूं,
निज वचन रंजव्या सकल नर नारी ।
ज्ञान परमाण निज आयु तुच्छ जाणिन,
साधु व्रत साचवइ वलिय संभारि ॥ ३ ॥ वा० ॥
प्रथम पोरसि अनै वलिय (सं० १७२५) 'मिगसर', तणी
'कसिण चवदस' अनै 'सोम' (शुभ) वार ।
ऊंचो चढूं एहवउ वयण मुख सुं कह्यो,
ऊंच गति जाणना एह आचार ॥ ४ ॥ वा० ॥
करिय अणसण अनै वलिय आराधना,
सकल जीव राशि शुभ चित खमावी ।
मन वचन काय ए त्रिकरण शुद्ध सुं,
भाव धरि भावना बार भावी ॥ ५ ॥ वा० ॥

एक मन भजन भगवंत नउ करतहिं,
सुणतहिं उत्तराध्ययन वाणि ।
सावचेत आप श्री संघ बैठा थकां,
स्वर्ग गति लहिय पुण्यवन्त प्राणी ॥ ६ ॥ वा० ॥

वादियां गंजणो सकल जण रंजणो,
प्रगट घट ज्ञान बहु जाण पूरो ।
दुःख दालिद्र हरि सुख संपति करइ,
सुप्रसन्न सेवकां हुइ सनूरो ॥ ७ ॥ वा० ॥

भाग बड़ भेटयइ राग मन लाइ नइ,
गाइ नइ सुगुण शोभा बड़ाई ।
कुंकमे केसर पूजतां पादुका अधिक,
धरि ऋद्धि नव निद्धि आई ॥ ८ ॥ वा० ॥

संघ सुखदाय मन लाय सुख सागरा,
नागरा नित नमइ शीस नामी ।
गणि 'समयहर्ष' नित सुगुरु गुण गावतां
सिद्धि नव निद्धि बहु वृद्धि पामी ॥ ९ ॥ वा० ॥

॥ इति गुरु गीतम् ॥

हीरकीर्त्ति परम्परा

॥ कवित्त ॥

'पदमहेम' गुरु प्रवर, सदा सेवक सुख आपै ।
'दानराज' दिल साच, सेवतां संकट कापै ॥
'निलय सुन्दर' वाचक सुगुरु, साहिब सुखकारी ।
'हर्षराज' गुणवन्त, 'हीरकीरति' हितकारी ॥
पांचे सुगुरु पांच मेरु सम, पंचानुत्तरनो परै ।
दीजियै सुख संतान रिद्धि, 'राजलाभ' वीनति करै ॥१॥
वाचक प्रवर 'राम जो', वडो मुनिवर वखतावर ।
नामै नवनिधि होइ, 'राजहर्ष' गुण आगर ॥
पण्डित चतुर प्रवीण, जुगति जाणन जोरावर ।
'तिलक पद्म' 'दानराज,' 'हीरकीरति' पाटोधर ॥
इम ऋद्ध वृद्धि आणंद करो, सुख सन्तति द्यौ संपदा ।
'राजलाभ' कहै गुरु जी हुज्यो, सेवक नुं सुप्रसन्न सदा ॥२॥

॥ संवत १७५० वर्षे मिती माघ सुदि ५ दिने ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

वा० हीरकीर्त्ति स्वर्गगमन गीतम्

श्री 'हीरकीरति' वाचक प्रणमो, सुर मणि सुरतरु सुरधेन समो ।
अरियण दुख दोहग दूरि गमइ, घरि नवनिधि लिखमो रंग रमइ ।१।
सुख संपति दायक उपगारी, सेवक जन नइ सानिध कारी ।
लबधइ गुरु गोयम गणधारी, नित ध्यान धरू हुं बलिहारी । २ ।
गुरु चरण करण ब्रह्म व्रत पालइ, तप जप करि अशुभ करम टालइ ।
पूरव मुनिवर मारग चालइ, निज देव सुगुरु मनि संभालइ । ३ ।
श्री 'गोलवछा' वंसइ दीपइ, तेजइ करि दिनकर नइ जीपइ ।
महियल मंडल महिमा जागइ, सेवक लुलि पाये लागइ । ४ ।
सिद्धंत अरथ गुण भंडार, छ(व) काय वछल प्रति हितकार ।
सुमिती अजव मद्दव सार, मुत्ती संजम तप निरधार । ५ ।
अणदीधउ न लीयइ साच बदइ, आकिंचन (दश) विध सील हवइ ।
आहार तणा दूषण टालइ, वइतालीस सुद्धि क्रिया पालइ । ६ ।
शाखा जगगुरु जिनचन्द्र तणइ, महिमा जस वास संसार थुणइ ।
गणि 'दानराज' पाटै उदयो, वाचक वर 'हीरकीरति जयो । ७ ।
संवत 'सतरइ गुणतीस' समइ, रहिया चौमासउ अंत समय ।
'श्रावण सुदि चउदस' जोधाणइ' ज्ञानइ करि आऊखो जाणइ । ८ ।
चोरासी योनि खमावि सहू , लख पाप अठार आलोय बहू ।
अपनै मुख अणशण आदरीयो, निज चित्तमें ध्यान धरम धरीयो ।९।
नवकार महामंत्र संभाली, गति असुभ करम दूरे टाली ।
अणशण पहुर वि आराधी, सुह झांणइ सुर पदवी लाधी । १० ।

सतरइ 'गुणतीसइ' 'माह' मासइ, 'तेरस' दिवसइ मन उल्हासइ।
'वदि' महुरत शशि सुभ वार, पगला 'थाप्या' जयजय कार। ११।
श्री 'पदमहेम' वाचक प्रवरू; श्री 'दानराज' सोहाग करू।
श्री 'निलयसुंदर' 'हरपराज' मुदा, प्रणमो श्री 'हीरकीरति' सदा।१२।
पांचै गुरुना पगला सोहइ, (पंच) परमेसर जिम मन मोहै।
समयां सेवक दरसण दीजै, सुख संतति उदै उन्नति कीजै। १३।
पांचे गुरुणा पूज्यां ! पगला, दुख आरति रोग ! टलइ सगला।
घरि वइठां आइ मिलइ कमला, गुरु तूठां थोक सहू सवला। १४।
पय पूजो गुरु हिय भाव करी, केसर चन्दन सु चित्त धरी।
सदगुरु सुपसायइ रंगरली, लहे पुत्र कलत्र समृद्ध वली। १५।
दिन दिन आणंद सुमति दाता, गुरु चरणै अहनिस जे राता।
मनवंछित पूरण कामगवी, सेवक सुखदायक अधिक छवी। १६।
साचउ साहिव तुंहिज मेरो, हुं खिजमतगार भगत तेरो।
सुपसायइ गुरु नव निह संप(ज)इ, गणि 'राजलाभ' सेवक जंपइ। १७।

॥ इति श्री ॥

उपा० भावप्रमोद स्वर्गगमन गीतम्

नं० १

जिसौ भाव जोगी जती जोग तत्त जांणतौ, वैण वखाणतौ अमृत वाणि ।
साझीयौ तिसौ अवसाण २ सिध, जंपै अरिहंति मनि अंति जाणी॥१॥
व्याकरण तर्क सिद्धंत वेदन्त री, जीह वदतौ सदा भेद जुओ ।
भाव शिष 'भाव परमोद' चो भाव सुद्ध,
हुं तौ आछौ तिसौ मरण हुओ ॥२॥
गछै चोरासीये न छै कोइ ईयै गुणि, श्रवण सुनीयो न को एम सीधो ।
(भावपरमोद) जिम मुखा भगवंत भणै,
लीयां जस लाह स्वर्गलोक लीधो ॥३॥
वरसि 'जुग वेद मुनि इंद १७४४ 'गुरु' 'माह वदि',
बात अखियात जुग सात बचिसी ।
बड पाठक तणी घणी महिमा वसु,
रात दिन वडा कवि पात रचिसी ॥४॥

नं० २ कड़खामें

विरदे वखाणी जै जी 'भावपरमोद' कुल रो भाण ।
जग मांहि जाणिजै जी, परधान पुरुष प्रमाण । टेक
परधांन सुजस निधान प्रगडउ, वाधतै मुखि वांन ।
असमान मांन गुमांन अमली, मांण दीयण सु दांन ।
ऊनधां नाथणा नडण अनडां, पूजतै निज प्रांण ।
दीपतो सरव गुण जाण दीपै, खरतरै दीवांण ॥१॥वि०॥

व्याकरण वेद पुरांण वदतौ, सकल जैन सिद्धन्त ।
ब्रह्मज्ञान आतम धरम वित्त, उपधान जोग विधन्त ।
आगम पेंतालीस अरथे, कथे कांइ न कांण ।
पाठक पदवी धार पृथि(वि) में, एहवै अहिनाण ॥ २ ॥ वि० ॥
थूलभद्र नारद जिसौ धीरम, सील सत्त सरुप ।
'जिनरतन' सूरि पडूरि जैनू, इखै बुद्धि अनूप ।
तिम 'चंद' रै पिण छंदि चलतौ, वडिम आगेवाण ॥
पाट पति छत्रपति पाव पूजैं, रीझवै रावराण ॥ ३ ॥ वि० ॥
'जिनराज सूरि' जिहाज जिन धरम, भट्टारक मुनिभूप ।
शिष्य तास 'भावविजै' समो भ्रम, गच्छ चोरासी रूप ।
'भाव विनय' तिणरै पाट भणिजै, वडिम गुण वखांण ।
एतलां वंस राजहंस ओपम, सलहिजै सुविहाण ॥ ४ ॥ वि० ॥
वांचतो वाणि वखांणि अविरल, अमृत धारा एम ।
नव नवा नव रस वचन निरुपम, जलहरां ध्वनि जेम ।
जस सुजस पंकज वास पसरी, प्रथ्वी रै परिमाण ।
रवि चंद नै ध्रू(व) मेरु रहिसी, सुजस रा सहिनांण ॥ ५ ॥ वि० ॥
जिण-बाल वय ब्रह्म चारु चारित्र, लीयो जती व्रत योग ।
वय तरुण पण मन में न वंछया, भला वंछित भोग ।
तत पंच साव्रत नेम जत सत, वाच रुद्र ब्रह्मांण ।
मुकीयो नहीं अरिहंत मुख हूं, अंत रै अवसाण ॥ ६ ॥ वि० ॥
आराधना सीधंत उचरै, शुद्ध सरणा च्यार ।
मनि क्रोध कपट मिथ्यात मूंके, लोभ नहींय लिगार ।

नहीं कोइ बैर विरोध किणसुं, मोह नहीं अतिमांण।
परलोक इंद्रापुरि पहोतो, पचखि भव (पच)खाण ॥ ७ ॥ वि० ॥
संवत 'सतरैसे चमाले', 'माह वदि' गुरुवार।
'पंचमि' तिथ वलि पहुर पिछलै, सीख मति करि सार।
भरि वीख लांबो चरम भव चवी, देवता जिम डांण।
तप जप चै परताप पर-भवि, पहुंचस्यै निरवाण ॥ ८ ॥ वि० ॥

इति श्री भावप्रमोदोपाध्यायनामंत्यावस्थायामुपरि अष्टकं संपूर्ण।

(कृपाचंद्र सूरि ज्ञान भंडारस्थ गुटकेसे)

❀ जैनयती गुण वर्णन ❀

केइ तो समस्त न्याय ग्रन्थमें दुरस्त देखे,
फारसीमें रस्त गुस्त पूभै छत्रपती है।
किस्त करै तपकी प्रशस्त धरै योग ध्यान,
हस्त कै विलोकवै कुं सामुद्रिक मती है।
पूज कै गृहस्तके वस्त्रके जु ग्राहक हैं,
चुस्त है कलामें, हस्त करामात छती है।
'खेतसो' कहत षट्दर्शनमें खबरदार,
जैनमें जबर्दस्त ऐसे मस्त 'जती' हैं।

(१८ वीं शताब्दी लि० पत्र जय० भं०)
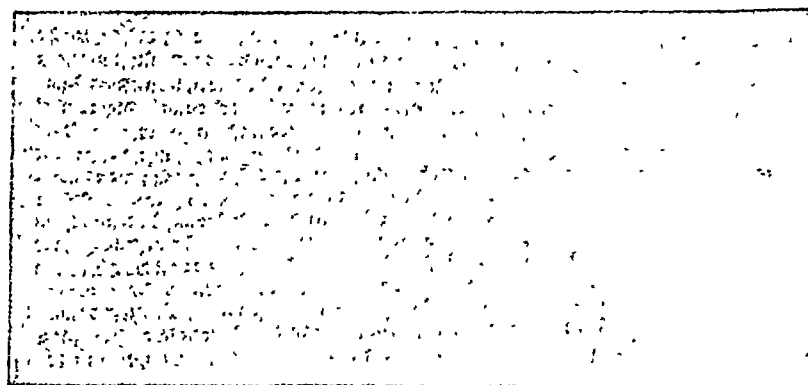
कविवर जिनहर्षजीकी हस्तलिपि

(कविके स्वयं रचित स्तवनादि संग्रहकी प्रतिका मध्य पत्र)

कविवर जिनहर्ष गीतम् ।

॥ दोहा ॥

सरसति चरण नमी करी, गास्युं श्री ऋषिराय ।
श्री 'जिनहरष' मोटो यति, समय अनुसार कहिवाय ॥१॥
मंद मतोने जे थयो, उपगारी सिरदार ।
सरस जोडिकला करी, कर्यो ज्ञान विस्तार ॥२॥
उपगारी जगि एहवा, गुणवंता व्रत धार ।
तेहना गुण गातां थकां, हुइ सफल अवतार ॥३॥

वाडी ते गुडां गामनी ॥ देशी ॥

श्री जिनहरष मुनीश्वर गाईये, पाईयै वंछित सीद्ध ।
दुसम काल मांहि पणि दीपती, किरिया शुद्धो कीध ॥१॥ श्रीजि० ॥
शुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता मायारे मोस ।
रोस धरइ नही केहस्युं मुनीवरू, सुंदरु चित्तइं नही सोस
॥२॥श्रीजि०॥
पंच महाव्रत पालै प्रेमस्युं, न धरै द्वेष न राग ।
कपट लपेट चपेटा परिहरइ, निरमल मन मैं वइराग ॥३॥श्री॥
सरल गुणै दूरि हठ जेहनें, ज्ञाने शठता (र) दूरि ।
ममता मान नही मनि जेहने, समता साधु नुं नूर ॥४॥श्री॥

मंदमती नें शास्त्र वंचावता, आपता ज्ञान नो पंथ ।
जोडिकला मांहि मन राखतो, निरलोभी निग्रंथ ॥५॥श्री॥
शत्रुंजयमहातम आदि भला, तेहना कीधा रे रास ।
जिन स्तुति छंद छप्पया चउपई, कीधा भल भला भास ॥६॥श्री॥
निज शकतिं इम ज्ञान विस्तारीयु, अप्रमत्त गुणना निवास ।
ईर्या सुमति मुनिवर चालता, भाषासुमति स्यु भाष ॥७॥श्री॥
एषणासुमति आहारइं चित्त धरयु, नही किहांइं प्रतिबंध ।
निरीह पणै मन लूखू जेहनु, नही को कलेशनो धंध ॥८॥श्री॥
गच्छनो ममत्व नही पण जेहनें, रुडा निस्पृह वंत ।
शांतो दांत गुणे अलंकरु, शोभागी सत्यवंत ॥९॥श्री॥

(२)

श्रीजिनहरष मुनीश्वर वंदीइ, गीतारथ गुणवंत ।
गच्छ चुरासीइं जाणइ जेहने, मानइं सहु जन संत ॥१॥
पंचाचार आचारइं चालता, नव विध ब्रह्मचर्यधार ।
आवश्यकादिक करणी उद्यमइं, करता शकति विस्तारि ॥२॥
आज कालिनारे कपटी थया, मांडी डाक डमाल ।
निज पर आतमने धूतारता, एहवो न धरयोरे चाल ॥३॥
आज तो ज्ञान अभ्यास अधिकछै, किरिया तिहां अणगार ॥
ते 'जिनहरप' मांहि गुण पामीइ, निंदै तेह गमार ॥४॥
आप मती अज्ञान क्रिया करी, त्रा(द?)डूकइ जिम सांड ।
हुं गीतारथ इम मुख भाखता, खुलनु थाइरे षांड ॥५॥

कामिनि कांचन तजवां सोहिलां, सोहलुं तजवुं गेह ।
पणि जन अनुवृत्ति तजवी दोहली, 'जिनहरषइं' तजी तेह ॥६॥
श्रीसाहायिक पणि सुभ आवी मल्या, श्री'वृद्धिविजय' अणगार ।
व्याधि उपन्नइरे सेवा बहुं करी, पूरण पुण्य अवतार ॥७॥
आराधना करावइ साधुनै, जिन आज्ञा परमाण ।
लख चुरासीरे योनि जोव मावतां, ध्याता रूडुंख ध्यान ॥८॥
पंच परमेष्टीरे चित्तइ ध्याइतां, गया स्वर्गे मुनिराय ।
मांडवी कीधोरे रुडी श्रावके, निहरण काम कराय ॥९॥
'पाटण' मांहिरे धन ए मुनिवरुं, विचर्या काल विशेष ।
अखंडपणै व्रत अंत समइ ताइं, धरता सुभ मति रेख ॥१०॥
धन 'जिनहरष' नाम सुहामणु, धन २ ए मुनिराय ।
नाम सुहावइ निस्पृह साधनुं, 'कवीयण' इम गुणगाय ॥११॥

* कवियण कृत *

देव विलास ।

(देवचंद्रजी महाराजनो रास)

सुकृत प्रेमराजी वने,—प्रोल्लासन चिदूहंस ;

ते तेम रि(हृ?)दये अक्षता, 'आदिनाथ अवतंस ॥ १ ॥

'कुरु' देशें करुणानिधि, उत्पन्न 'श्रीजिनशान्ति',

शांति थइ सवि जनपदे, कार्त्तस्वर जस कान्ति ॥ २ ॥

ब्रह्मचारीचूडामणि, योगीश्वरमें चंद ,

तारक राजुलनारिनो, प्रणमुं 'नेमिजिणंद' ॥ ३ ॥

यशनामिक कृत्य ताहरुं, पुरीसादाणी बिरुद,

वामाकुल वडभागीयो, 'पारसनाथ' मरद्द ॥ ४ ॥

जिनशासननो भूपति, 'वर्द्धमान' जिनभाण,

दूषम पंचम आरके, सकल प्रवर्त्ते आण ॥ ५ ॥

पंच परमेष्ठि जिनवरा, प्रणमु हुं त्रिणकाल,

अन्य एकोनविंशति जिना, तस प्रणमुं सुविशाल ॥ ६ ॥

सरसती व(र)सती मुखकजे, 'माघ' कविने साध्य,

'कालिदास' मूरख प्रतें, कीयो कवि कीधा पद्य ॥ ७ ॥

'मल्लवादो' तुज सांनिधे, जीत्या बौद्ध अनेक,

तुज दरिसणे पद लब्धिनी, उत्पन्न थइ विवेक ॥ ८ ॥

तिम माताना सहाय्यथी, गाजी मर्द 'देवचंद्र',

'देवविलास' रचुं भलुं, खरतरगच्छ दिणंद ॥ ९ ॥

कोइ देवाणुप्रिय कहे, ए स्तवना करे किम,

स्या ? गुण जोइ वरणवे, श्युं? बोले जिम तिम ॥ १० ॥

पंचमकाले 'देवचंद' ना, गुण दाखिवनें यत्र,

यथार्थपणे (कहो) मुज प्रतें, तो सत्य मानु अत्र ॥ ११ ॥

सांभलि मूढशिरोमणि, अछता गुण कहे जेह,

प्रशंस किम कोविद करे, गुण कहुं सांभलि तेह ॥ १२ ॥

पंचमकाले 'देवचंद्रजी', गंधहस्ति जे तुल्य,

प्रभावक श्रीवीरनो, थयो अधुना बहुमूल्य ॥ १३ ॥

रत्नाकरसिंधु सदृश, चतुर्विध संघ जिन भूप,

कही गया ते सत्य छे, सांभल तास सरूप ॥ १४ ॥

ढाल—कपुर होये अति उजलुंरे ए देशी ।

श्री देवचंद्रजीना गुण कहुंरे, सांभल ! चतुर सुजाण ।

घटता गुणनो प्ररूपणारे, कहेवाने सावधानरे । ॥ १ ॥

भविका सांभलो मूकी प्रसाद । टंक ।

प्रथम गुणे सत्य जल्पनारे१, बीजे गुणे बुद्धिमान ।

त्रीजे गुणे ज्ञानवंततारे३, चोथे शास्त्रमें ध्यानरे ४ ।भविका०। सां० ।२।

पंचम गुणे निःकपटतारे५, गुण छठ्ठे नही क्रोध६ ।

संजल नो ते जांणीयेरे, नही अनंता नी योधरे ।भवि०॥ सां० ॥३॥

अहंकार नही गुण सातमेरे, ७ आठमे सूत्रनी व्यक्ति ८ ।

जीवद्रव्यनी प्ररूपणारे, जाणे तेहनी युक्तिरे ॥ भ० ॥ सां० ॥४॥

सकल आगम हृदये रम्यारे, तेहना भांगा जेह ।
'कर्मग्रंथ' 'कम्मपयडी' ना रे, स्वप्नमां अर्थना नेह रे । भ०।सां० ५ ।
नवमें सकल ते शास्त्रना रे, ९ पारंगामी पूज्य ।
अलंकार कौमुदी भाष्यजे रे, अष्टादश कोश ना गुह्यरे ।भ०। सां० ।६।
सकल भाषामें प्रवीणतारे, पिंगल कृत शेष नाग ।
काव्यादिक नैषध भलां रे, स्वरोदय शास्त्रे अथाग रे । भ० । सां० ।७।
जोतिष सिद्धान्त शिरोमणि रे, न्यायशास्त्रे प्रवीण ।
साहित्य शास्त्रे सुरतरु रे, स्वपरशास्त्रे लीण रे । भ० । सां० ।८।
दशमे गुणें दानेश्वरी रे, १० दीनने करे उपगार ।
एकादशे विद्यातणी रे, ११ दानशालानो प्यार रे । भ० । सां० । ९ ।
गछ चोरासी मुनिवरु रे, लेवा आवे विद्यादान ।
नाकारो नही मुखथकी रे, नय उपनां विधान रे । भ० । सां० । १० ।
अपर मिथ्यात्वी जीवडारे, तेहनी विद्यानो पोस ।
अपूर्व शास्त्रनी वाचना रे, देतां न करे सोस रे । भ० । सां० । ११ ।
विद्यादानथी अधिकता रे, नही कोइ अवर ते दान ।
न करे प्रमाद भणावतां रे, व्यसन ना नही तोफान रे । भ० ।सां०।१२।
पुस्तक संचय द्वादश गुणे रे, १२ जीर्णने करे नूतन ।
स्वगणमें अपर गणे रे, प्रतिष्टाधारक जन रे । भ० । सां० । १३ ।
वाचक पदवी त्रयोदश गुणे रे, १३ चौदमे वादीजीत, १४
पनरमे जेहना उपदेशथी रे, १५ चैत्यंनूत(न)नो प्रीति ।भ०। सां० ।१४।
सोलमे वचनातिशयथो रे, १६ द्रव्य (ख)रचाव्यो धर्मथान ।
सप्तदशे राजेन्द्र पाय नम्यो रे, आज्ञा माने प्रधानरे । भ० । सां० ।१५।

मारि उपद्रव टालीओ रे, अष्टादशे गुणे जेह १८
देश देशे गुण कीर्त्तिनी रे, प्रवर्त्त विख्यातनुं गेह रे। भ०। सां०। १६।
एकोनविंशति गुणगणे रे, आजानबाहु देवचंद्र १६।
क्रिया उद्धार वीसमे गुणे रे, अवधि जाणे सुरेन्द्र रे। भ० ।सां० ।१७।
जिम शेषनागने शिरमणि रे, तेहना गुण छे अनन्त।
तिम देवचंद्र मणि मंजुरे,(मस्तकेरे)एकवीस गुण महंत रे।भ०।सां०।१८।
प्रभाविक पुरुष आगे थयारे, अधुना तेहने तुल्य।
ए गुण बावीस स्थूलतारे, सूक्ष्म गुण बहुमूल्य रे। भ०। सां०। १६।
पढम ढाल ए गुणतणी रे, कवियणे भाखी जेह।
अल्पभवी हस्ये ते सद्हेरे, एहवा पुरिस थोडा जगरेहरे ।भ०।सां०।२०

दुहा—

प्रथल ढाल ए गुणतणी, कवियण भाखी जेह,
विपक्षीने जाणवा, मनमें जाणे तेह। ॥ १ ॥
गुणतो सर्वत्र प्रगट छे, देश विदेश विख्यात ,
कवियणनी अधिकाइता, स्युं ? एहमे छे वात। ॥ २ ॥
कवियण कहे एक जीभतें, किम गुणवर्णन जाय,
सागरमें पाणी घणो, गागरमें (न) समाय ॥ ३ ॥
वली कोइ भवि पुछस्ये, कवण ज्ञाति कुण जाति,
मातपिता किहां एहनां, ते संभलावो भांति ॥ ४ ॥
देश किहां किहां जन्मभू, कुंण गुरुना ए शिष्य,
कुण श्रीपूज्य वारे हुवा, भली उलटे लीधि दीक्ष ॥ ५ ॥

विद्याविशारद किहां थया, किम सरस्वती प्रसन्न,
किहां साधना कीधी भली, सुणतां चित्त प्रसन्न ।। ६ ।।
देवचन्द्रना वचनथी, किम खरचाणो द्रव्य,
किम भूपति पाये नम्या, ते विरतंत कहु भव्य ।। ७ ।।
सर्व गुण गणनी वारता, भाषे कवियण जेह,
सांभलजो भविजन तुमे, पावन थाये देह ।। ८ ।।

देशी हमीरानी ।

थाली आकारे थिर भलो, जंबुद्वीप विदीत । विवेकी ।
तेह में भरतक्षेत्र रम्यता, आरज देश सुप्रतीत ।। वि० ।। १ ।।
भवियण भाव धरो सुणो ।। वि० ।।
मरुस्थल देश तिहां सुन्दरु, तेह में 'विकानेर' द्रंग ।। वि० ।।
तेहने निकट एक रम्यता, ग्राम अछे सुभ चंग ।। वि० ।। २ ।। था० ।।
रिद्धिवंत महाजन घणा, रिद्धेकरी समृद्ध; ।। वि० ।।
अमारीशब्दनी घोषणा, सुखीआ जन सुबुद्धि ।। वि० ।। ३ ।। था० ।।
'ओशवंशे' ज्ञाति जाणीये, 'लुंणीयो' गोत्र सुजात ।। वि० ।।
साह श्री 'तुलसीदासनो', धर्मबुद्धि विख्यात ।। वि० ।। ४ ।। था० ।।
'तुलसीदास' नी भार्या, 'धनबाइ' पुन्यवंत । विवेकी ।
शील आचारे सोभती, सत्यवक्ता क्षमावंत ।। वि० ।। ५ ।। था० ।।
यथाशक्ति क्रय विक्रयता, व्यवहारनुं जे धाम ।। वि० ।।
दम्पती प्रीतिपरम्परा, धर्मे खरचे दाम ।। वि० ।। ६ ।। था० ।।
सुविहितगच्छमें जामली, वाचकमें शिरदार ।। वि० ।।
वाचक 'राजसागर' सुधी, जैन काजी मनोहार ।। वि० ।। ७ ।।था०।।

अनुक्रमे गुरु तिहां आवीया, वांदवा दम्पति ताम ॥ वि० ॥
'धनवाइ' श्री गुरुने कहे, सुणो गुरु सुगुणनु धाम ॥ वि०॥ ८॥था०॥
पुत्र हस्ये जेह माहरे, वोहरावीस धरी भाव ॥ वि० ॥
यथार्थ वयण नी जलपना, सुगुरुये जाण्यो प्रस्ताव ॥ वि० ॥६॥था०॥
विहार करे गुरु तिहां थकी, गर्भ वधे दिन दिन ॥ वि० ॥
शुभयोगे शुभमुहूरते, सुपन लह्यु एक दिन ॥ वि० ॥ १० ॥ था० ॥
शय्यामें सुतां थकां, किंचित् जागृत निंद ॥ वि० ॥
मेरु पर्वत उपरे, मिली चौसठ इन्द्र ॥ वि० ॥
जिन पडिमानो ओछव करे, मिलीया देव ना वृन्द ॥वि० ।११ ।था०।
अर्चा करता प्रभुतणी, एहवु सुपने दीठ ॥ वि० ॥
ऐरावण पर वेसीने, देता सहूने दान ॥ वि० ॥ १२ ॥ था० ॥
एहवु सुपन ते देखीने, थया जाग्रत तत्काल ॥ वि० ॥
अरुणोदय थयो ततक्षिणे, मनमें थयो उजमाल ॥ वि० ॥१३॥ था०॥
उत्तम सुपन जे देखीउ, पण प्राकृतने पास ॥ वि० ॥
कहेवु मुजने नवि घटे, जे बोले तेह फले आस ॥ वि० ॥१४॥था०॥
दृष्टांत इहां 'मूलदेव नो, सुपन लह्यु हतु चन्द्र ॥ वि० ॥
मुखकजमें प्रवेशतां, ते थयो नरनो इन्द्र ॥ वि० ॥ १५ ॥ था० ॥
जटिल एके ते चंद्रमा, मुखमें करतो प्रवेश ॥ वि० ॥
मूरखने फल पुछतां, भोजन लह्यु सुविवेक ॥ वि० ॥ १६ ॥ था० ॥
यादृश तादृश आगले, सुपन तणो अवदात ॥ वि० ॥
कहे (ते)ने पश्चात्ताप उपजे, ए शास्त्रे विख्यात । वि० । १७ । था०।

अनुक्रमे विहार करताथका, 'श्री जिनचंद' सूरीश । ।।वि०।।
तेह गामे पधारीया, जेहनी प्रबल जगीस । । वि० । १८ ।था०।
विधिस्युं वांदे दंपति, 'धनबाइ' कहे तास । । वि० ।
हस्त जूओ स्वामी मुजतणो, आगल सुखनुं धाम(वास?)।वि०। १९ था०
एक पुत्र विद्यमान छे, अन्य सगर्भा दीठ । । वि० ।
श्रुतज्ञाने जाणीओ, पुत्र दुजो हशे इष्ट । । वि० । २० ।था०।
ए बीजा पुत्रने अम देज्यो, पण वाचकने दीधु वचन । वि० ।
बीजी ढालमें कवि कहे, मन मां(न्या) नानुं मन्न । ।वि०। २१।था०।

दूहाः—सोरठा

दंपती श्री गुरुपास, करजोडी करे विनती,
तुम उपर विश्वास, यथार्थ कहो श्रीस्वामीजी ।। १ ।।
सुपनाध्यायना ग्रन्थ, काढ्या गुरुए ततखिणे,
सत्य बोले निग्रन्थ, लाभानुलाभ ते जोइने ।। २ ।।
श्री गुरु शिर धुणावीयुं, चमत्कृति थइ चित्त ,
सामान्य घर ए सुपन स्युं ? पण इहां एहवि थीति ।। ३।।
हे देवाणुप्रिय ! सांभलो, सुपन तणो जे अर्थ ,
शास्त्र अनुसारे हुं कहुं, नवि बोलुं अमे व्यर्थ ।। ४ ।।

देशी—मनमोहनां जिनराया

तुम धरणीमे गजपतिदीठो, तेतो शास्त्रे कह्यो गरीठोरे ।
कुंवर थास्ये लाडकडो, हांरे सुपनप्रभावे थास्येरे ।
गज पर वेसीने दान, वलि अनमिष सेवे विधानरे । ।१ कुं०।

दोय कारण छे ए सुपने, देवे जो प्रभावे ए तप(म?)नेरे। कुं०
छत्रपति थाये ए पुत्र के, पत्रपति धर्मनुं सूत्ररे। कुं०॥२॥
जो राज राजेसरी थास्ये, सर्वदेशनो ईश इल्लास। कुं०
जो पत्रपतिनुं पद पामे, तो देश विहार सुठामेरे। कुं०॥३॥
गुरु तब ते जाणो गजराज, तेपरि वेससें शिरताजरे। कुं
देवतारूप जन चाकरीये, सिंह वालकने वली पाखरीयेरे। कुं०॥४॥
दान देस्ये ते विद्यादान, वुद्धि अभयदान निदानरे। कुं०
जिन ओछव करता इन्द्र, दीठुं वृन्दारक वृन्दरे। कुं०॥५॥
जिनशासननो होस्ये थंभ, विद्यानो होस्ये सर कुंभ। कुं०
चैत्य न्युतन पडिमा थापन, तेजस्वीमें तपननो तापनरे। कुं०॥६॥
दंपति कहे मुनिराज, सांभलता न धरस्यो लाजरे। कुं
क्रोधभाव न आणस्यो चित्त, पुत्र तेजस्विमें आदित्यरे। कुं०॥७॥
तुम रांक तणे घर रत्न, रहेस्ये नही करस्ये यत्नरे। कुं०
दंपति मनमांहि चिंते, थायुं छे वोहरावानुं निमित्तरे। कुं०॥८॥
संवत सत्तर (४६)छेताला वरषे, जन्म्यो ते पुत्र छ(छे?) हरषेरे। कुं०
गुण निष्पन्न ते नाम निधान, 'देवचंद्र' अभिधानरे। कुं०॥६॥
वरस थया ते पुत्रने आठ, धारे ते विज्ञानना पाठरे। कुं०
कवियण भाखी त्रीजी ढाल, आगल वात रसालरे। कुं०॥१०॥

दूहा

अनुक्रमे विहार करता थका, आव्या पाठक तत्र,
'राजसागर शिरोमणि', अर्भक प्रसन्यो यत्र ॥ १ ॥

गुरु देखी हर्षित थया, वहुराव्यो पुत्र रतन,

धर्मलाभ गुरु तव दीये, करजो पुत्र जतन ॥ २ ॥

वाचक श्री 'राजसागरु', कोविदमें शिरताज,

दिन केतलाएक गया पछी, मन चिंत्यु शुभकाज ॥३॥

दीक्षा देवी शिष्यने, सुभ महुरत जोइ जोस,

सुभ चीघडीए देखीने, तो थाये संतोष ॥ ४ ॥

संघ सकलने तेडीने, दीक्षानी कही वात,

वचन प्रमाण करे तिहां, उलस्यां सहूनां गात्र ॥ ५ ॥

शुभ ओछव महोछवे, दीक्षा दीये गुरुराय,

संवत 'छपने' जाणीये, लघु दीक्षा दीये गुरुराय ॥ ६ ॥

श्री 'जिनचंदसूरीश्वरे', वडी दीक्षा दीये सार,

'राजविमल' अभिधा दीउ, श्रीजीनो घणो प्यार ॥७॥

'राजसागरजी'ये हितधरी, सरस्वतीकेरो मंत्र,

आपुं शिष्य 'देवचंद ने', मनमें कीधो तंत्र ॥ ८ ॥

गाम 'वेलाडु' जाणीये, 'वेणातट' सुभरम्य,

भूमिगृहमें राखीने, साधन करे तारतम्य ॥ ९ ॥

थइ प्रसन्न सरस्वती, रसनाग्रे कीयो वास,

भणवानो उद्यम करे, श्री गुरुसाहाज्य उलास ॥ १०॥

देशी—वारी म्हारा साहिबा

देवचंद्र अणगारने हो लाल, सुभ शास्त्र तणा अभ्यासरे,

देखीने ठरे लोयणा।

प्रथम षडावश्यक भणे हो लोल, के(ते?)पछी जैनशैलीनो वासरे। दे०॥१॥

सूत्र सिद्धान्त भणावीया हो०, वीरजिनजीए भाख्या जेहरे। दे०
स्वमार्गमें पोपक थया हो०, टाले मिथ्यामतनुं गेहरे। २ दे०
अन्यदर्शनना शास्त्रनो हो०, भणवाने करता उद्यमरे। दे०
वैयाकरण पंचकाव्यना हो०, अर्थ करे करावे सुगम्यरे। ३ दे०
नैपध नाटक ज्योतिप शिखे हो०, अष्टादश जोया कोपरं। दे०
कौमुदी महाभाष्य मनोरमा हो०, पिंगल स्वरोदय तोपरे। ४ दे०
भाखा (भाष्य ?) ग्रन्थ जे कठिणता हो०,

तत्वारथ आवश्यकवृहद्वृत्ति हो। दे०

'हेमाचार्य'कृत शास्त्रनारे, हो०, 'हरिभद्र' 'जस' कृत ग्रन्थ चित्तरे।५दे०
पट्कर्मग्रन्थ अवगाहता हो०, कम्मपयडोये प्रकृति संबंधरे। दे०
इत्यादिक शास्त्रे भला हो०, जैन आम्नाये कीध सुगंधरे। ६ दे०
सकलशास्त्रे लायक थया हो०, जेहने थयुं मइ सुइ ज्ञानरे। दे०
संवत् सतर चुमोतरे (१७७४) हो०,वाचक 'राजसागर' देवलोकरे।७ दे०
संवत् सतर पंचोतरे (१७७५) हो०, पाठक ज्ञानधर(म) देवलोकरे।
मरट '(मरोट?)' ग्रामे गुरुये भलो हो ला०, 'आगमसार' कीधो ग्रन्थरे।
'विमलदास' पुत्री दोय भली हो०,'माइजी' 'अमाइजी' शुभ पुष्परे।८दे०
दोय पुत्रीने कारणे हो०, कीधो ग्रन्थ ते आगमसाररे। दे०
संवत् सतर सीतोतरे (१७७७) हो०,गुजरात आव्या देवचंदरे।९ दे०
पाटण मांहि पधारीया हो०, व्याख्याने मिले जनवृन्दरे। १० दे०
कवियण कहे चोथी ढालमें हो०, कह्यो एह विरतंत प्रसिद्धरे। दे०
आगल हवे भवि सांभलोरे हो०, धर्मकरणीनी वृद्धिरे। ११ दे०

दूहा

पाटणमें देवचंदजी, जैनागमनी वाणि,
वांची भवीजन आगले, स्याद्वाद युक्त वखाण ॥ १ ॥
'श्रीमाली' कुलसेहरो, नगरशेठ विख्यात,
रायैं राणा जस आज्ञा करे, प्रमाण सर्वे वात ॥ २ ॥
नामे 'तेजसी' 'दोसीजी', धन समृद्धे पूर,
श्रावक 'पूर्णिमागच्छ' नो,—जैनधरमनुं नूर ॥ ३ ॥
कोविद्में अग्रेसरी, श्री 'भावप्रभसूरि',
पुस्तकनो संप्रदाय बहुल,—छात्र भण्या जिहां भूरि ॥४॥
ते गुरुना उपदेशथी, भराव्यो सहसकूट,
'तेजसी' 'दोसीने' घरे, ऋद्धि समृद्ध अखूट ॥ ५ ॥
ते सेठ 'तेजसी' घरे, 'देवचंद्र' मुनिराज,
तव तिहां शेठ प्रत्ये कहे, हे देवाणुप्रिय ताज ॥ ६ ॥
सहसकूटना सहस जिन, तेहना जे अभिधान,
गुरु मुखे तमे धार्या हस्ये, के हवे धारस्यो कान ॥७ ॥
मीठे वयणे गुरु कहे, सांभलीयुं तव सेठ,
स्वामी हुं जाणुं नहीं, चमत्कृति थइ द्रढ ॥ ८ ॥
एहवे अवसरे तिहां हता, संवेगी शिरदार,
'ज्ञानविमल सूरिजी', तिहां गया शेठ उदार ॥ ९ ॥
विधिस्युं वांदी पुछीयुं, सह(स)कूट सहस्रनाम,
आगमें थी पृथकता, निकासो सुभधाम ॥ १० ॥

'ज्ञानविमलसूरि' कहे, सहसकूटनां नाम,
अवसरे प्राये जणावस्युं, कहेस्युं नाम ने ठाम ॥११॥
सकलशास्त्रे उपयोगता, तिहां उपयोग न कोइ,
आगम कुंची जाणवी, ते तो विरला कोइ ॥ १२ ॥

ए देशी :—माहरी सहीरे समाणी।

एक दिन श्री 'पाटण' मझार, 'स्याहानी पोलि' उदार रे।
सहसजिननो रसीयो, 'देवचन्द्र' वयणे उलसीयो रे ॥ १स०॥ टेक ॥
ते पोलि चोमुखवाडी पास, सहुनी पूरे आस रे ॥स०॥१॥
सतरभेदी पूजा रचाणी, प्रभु गुणनी स्तवना मचाणी रे ।स०।
'ज्ञानविमल सूरि' पूजामें आव्या, श्रावकने मन भाव्या रे ॥स० २॥
तिहां वली यात्राये 'देवचन्द्र', आव्या बहुजनने वृन्द रे ।स०।
प्रभुने प्रणाम करीने बेठा, प्रभुध्यान धरे ते गरीठा रे ॥स० ३॥
एहवे तिहां शठ दर्शन करवा, संसार समुद्रने तरवा रे ।स०।
प्रश्न करे शेठ 'ज्ञानविमलने', सहसकूट नाम अमलनेरे ॥स०४॥
बहु दिन थया तुम अवलोकन करतां, इम धर्मनां कार्य किम सरतांरे।स०
प्राये सहसकूटना नामनी नास्ति, कदाचि कोइ शास्त्रे अस्तिरे ।स० ५।
ज्ञानसमसेर तणा झलकारा, देवचन्द्र बोल्या तेणिवाररे ।स०।
श्रीजी तुमे मृषा किम बोलो, चित्तथी वात ते बोलोरे (खोलोरे)॥स०६॥
प्रभु मन्दिरमें यथार्थनी व्यक्ति, किम उपजे श्रावक भक्तिरे ।स०।
तुमे कोविदमें कहेवाओ श्रेष्ठ, अयथार्थ कहो ते नेष्टरे। ॥स०७॥

तव 'ज्ञानविमलजी' त्र्क्की बोल्या, तुमे शास्त्र आगम नवो खोल्यारे ।
तमे तो मरुस्थलीयाना वासी, तुमे वाक्य बोलोने विमासीरे ॥स०८॥
शास्त्र अभ्यास कर्यो होय जेहने, पूछीये वाक्य ते तेहनेरे ।स०।
तुमे एह वार्त्तामां नही गम्य, अमे कहीये ते तुम निसम्येरे । ॥स०६॥
इम परस्पर वाद करतां, तब शेठ बोल्या हर्ष भरमांरे ।स०।
श्रीजी तमे अयथार्थ न बोलो, एह बातनो करवो निचोलोरे ॥स०१०॥
'ज्ञानविमल' कहे सुणो 'देवचंद', तुमने चर्चानो उपछंदरे ।स०।
जो तुमे बोलो छो तो तुमे लावो, सहसकूट जिन नाम संभलावोरे ॥११॥
तब 'देवचंद' कहे सुगुरु पसाये, सत्य युक्ति हवे न खसायरे ।स०।
तव 'देवचंदजी' शिष्यने साहमुं, जोइ लावो सहसजिननुं नामुंरे॥स०१२॥
सुविनीत सूलक्षने विद्वान, गुरुभक्तिमांही निधानरे ।स०।
'मनरुपजी' रजोहरणथी, पत्र आपे गुरुजीने तत्ररे । ॥स०१३॥
'ज्ञानविमलसूरि' तव वांची, एह 'खड(र?) तरे' मारो फांचीरे ।स०।
सत्कुलगुरुनो एह छे शिष्य, जेहनी जगमांहि छे अभिख्यरे ॥स० १४॥
शास्त्रमयार्दाये सहसनाम, साखयुक्त ते नाम सुठामरे ।स०।
मौन रहीने पुछे ज्ञान, तुमे केहना शिष्य निधानरे ।स० १५॥
'उपाध्याय' राजसागरजीना शिष्य, मिंठी वाणी जेहवी इक्षुरे ।स०।
नम्रता गुण करी बोले ज्ञान, 'देवचंद्र' ने आप्या मानरे ।स० १६।
तुम वाचकतो जैनना काजी, तुमे जैनना थंभ छो गाजीरे ।स०।
आदि घर छे ते(त?)मारुं भव्य, तुमे पण किम न होये कव्यरे ।स०१७॥
इणिपरे परस्पर युक्तिं मिलीया, शेठ 'तेजसी'ना कारज फलीयारे ।
सहसकूटनां नाम अप्रसस्ति(द्धि?)देवचंद्रे कीधा प्रसस्तिरे । (प्रसिद्धि)

प्रतिष्टा तिहां कीधी भव्य, ओच्छव कीधा नवनव्यरे । स० ।
'क्रियाउधार' कीधो 'देवचंद्र', काढ्या पाप परिग्रहफंदरे ।स० १६।
ढाल कही ए पांचमो रुडी, ए वात न जाणस्यो कूडीरे । स० ।
कवियण कहे आगल संबंध, वली सोनुंने सुगंधरे ।स० २०।

दोहा ।

क्रिया उद्धार 'देवचंदजी', कीधो मनथी जेह,
एह परिग्रह सवि कारिमो, अंते दुःखनु गेह ॥ १ ॥
नव नंद नी नव डुंगरी, कीधो सोवनराशि,
साथे कोइ आवी नहीं, जूठी धरवो आसि ॥ २ ॥
धन धन श्री 'शालिभद्रजी', धन धन धन्नो सुजात,
अगणित ऋद्धिने परिहरी, ए कांइ थोडी वात ॥ ३ ॥
बत्रीस कोटिसोवनतणी, 'धन्नो' काकंदी जेह,
मूकी श्री जिन 'वीरनी', दीक्षा लीधी नेह ॥ ४ ॥
देवचंद मनमें चिंतवे, हुं पामर मनमांहि,
मूर्छा धरु ते फोक सवि, सत्य प्रभु मारग वांहि (मांहि ?) ॥ ५ ॥
संवत 'सतरसत्यासीये', आव्या 'अमदावाद,'
लोक सहु तिहा वांदवा, आव्या मन आल्हाद ॥ ६ ॥
'नागोरीसरा(य)' जिहां अछे, तिहां ठवीया मुनिराज,
निर्लोभो निष्कपटता, सकल साधुशिरताज ॥ ७ ॥
साधु श्री 'देवचंदजी', स्यादवादनो युक्ति,
जीवद्रव्यना भावने, देखाडे ते व्यक्ति ॥ ८ ॥

तेहवे देशना सांभलो, श्रावक श्राविका जेह।
वाणी जल आषाढ सम, वरसे ध्वनि घन गेह ॥ ९ ॥
पापस्थान अढार छे, ते मूको भविजन्न,
जिनवरे भाष्यां जे अछे, ते सुणीये एक मन्न ॥ १० ॥

ढाल—अलगी रहेनी, ए देशी

वीर जिणेसर मुखथी प्रकासे, पापस्थान अढार,
तेहथी दूर रहो भवि प्राणी, मु(सु?)णीये आगार अणगार ॥ १ ॥
जिनवर कहेजी, कहेजी, २ जिनवर कहेजी । टेक ।
पापथानिक पहिलु तुमे जाणो, जीवहिंसा नवि करीये,
बेंद्री तेंन्द्री चोरिंद्री पंचेंद्री, वध मां मन नवी धरीये ॥ २ ॥ जि० ॥
एकेंद्रियादिक अनंतकायादिक, तेहना करो पचखाण,
एकेंद्रीय तो संसारि नी करणी, अनुमोदना नवि आण ॥३ ॥ जि०॥
अणगारी ने सर्वनी जयणा, षटकायाना त्राता,
कोइ जीवने दुःख नवि देवे, उपजावे बहु साता ॥ ४ ॥ जि० ॥
मरि कहेता दुख उपजे सहु ने, मारे किम नवि होय,
रुद्रध्याने नरकगति पाम्यो, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति जोय ॥ ५ ॥ जि० ॥
मृषावाद पाप थानिक बीजुं, जुठुं नवी बोलीजे,
वैर विखादें (विषवादे) मृखा वचन बोले, पतीयारो किम कीजे ।६ जि।
झुठ बोल्याथी 'वसु' भूपतिनुं, सिंहासन भुइं पडीयुं,
काल करीने दुरगति पोहतो, झुठ वयण ते जडीयुं ॥ ७ ॥ जि० ॥
झुठु मिठु लागे जनने, कडुयां फल छे तेह,
आगारी अणगारि मुखथी, झुठ न बोलस्यो रेह ॥ ८ ॥ जि० ॥

त्रीजुं थानिक कहे जिनवरजी, नाम अदत्तादान,
अणदीधी वस्तुनी जयणा, धरवानो करो स्यान ॥ ६ ॥ जि० ॥
चोरी व्यसने दुरगति पामे, तेहनो कोइ न साखी,
चोरद्रव्य खातां नृप जो जाणे, जिम भोजनमां माखी ॥ १० जि०॥
तृण जाच्युं कल्पे साधुने, नवि ले अदत्तादान,
चोर तणो वली संग न कीजे, इम कहे जिन वर्धमान ॥११ जि०॥
पापस्थानक चोथुं भवि जाणो, ब्रह्मचर्य मनमां धारो,
रूपवंत रामा देखीने, मन नवि कीजे विकारो ॥ १२ ॥ जि० ॥
विषयी नर रामाए राचे, ते दुःख पामे नरके,
लोह पुतली धखावे अंगने, आलिंगावे धरके ॥ १३ ॥जि०॥
विषवल्ली सदृश छे ललना, तेहनो संग न कीजे,
मनमां कपट चपट करे जनने, शुभ प्राणी किम रीझे ॥ १४ ॥जि०॥
रावण मुंज आदे देइ भूपा, नारी थी विगुआणा,
सीता सुदर्शन सोल सतीना, जगमे जस गवाणा ॥ १५ ॥जि०॥
स्त्रीसंगे नव लाख हणाइ, जीवतणी बहुराशि,
ब्रह्मचर्य चोखुं चित्त न धरे तो, पामे नरकनो वास ॥ १६ ॥जि०॥
पांचमुं थानिक परिग्रहनुं, करीये तेहनो प्रमाण,
ग्रन्थो नही ते निग्रन्थ कहीये, निःद्रव्ये मुनि सुजाण ॥ १७ ॥जि०॥
क्रोध मान माया लोभ जाणो, राग द्वेष कलह न कीजे,
अभ्याख्यान पैशुन रति वर्जो, अरति परपरिवाद न लीजे । १८ जि०
पापथानक अढारमुं भाखुं, मिथ्यात्वशल्य नवि धरीये,
सत्तरे थी ए भारे कहीये, मिथ्यात्वे केम तरीये ॥ १९ ॥जि०॥

मिथ्यात्वशल्य काढीने प्राणी, समकितमांहि भलीये ,
जिनवर भाषित वचन स(र)दहीये, भव भव फेरा टलीए ॥२०॥जि०॥
नैगम संग्रह आदे देइ,—सप्तनयनी (ने?) (सप्त) भंगी ,
तेहनी रचना करता गुरुजी, अपवादने उत्संगी ॥ २१ ॥जि०॥
च्यार निखेपे सूत्र वाचना, नाम द्रव्य ठवण भाव ,
कुमति ठवणादिकने उवेखे, किम निक्षेप जमाव ॥ २२ ॥जि०॥
जीव अजीव पुण्य पाप आदे देइ, 'श्री नवतत्त्वनी' वाचा,
भेद भेद करीने भविने, समजावे अर्थ ते साचा ॥ २३ ॥जि०॥
गुणठाणां चतुर्दश कहीये, मिथ्या सास(स्वाद?)न मीस्से ,
ए आदि प्रकृतियो बधी, कर्मग्रन्थथी लहीस्ये ॥ २४ ॥जि०॥
देशना वाणी देवचंद्र भाखे, भवियणने हितकारी ,
छठी ढाल ए कवियणे भाखी, सुगुरु मल्या उपगारी ॥ २५ ॥जि०॥

दूहा

भगवइ सूत्रनी वाचना, सांभले जनना बृन्द,
　　वाणी मिठी पियुष सम, भाखे श्री देवचंद ॥ १ ॥
'माणिकलालजो' जालिमी, ढुंढकनो मन पास,
　　तेहने गुरुए बुझव्यो, टाली मिथ्यात्वनी का(वा?)स ॥ २ ॥
नौ(नू?)तन चैत्य करावीने, पडीमा थापी तासि(आवा)स,
　　देवचंद उपदेशथी, ओछव हुया उलास ॥ ३ ॥
श्री 'शांतिनाथनी पोल' में, भूमिगृहमें बिंब,
　　सहसफणा आदे देइ, सहसकोड जिनबिंब ॥ ४ ॥

तेहनी प्रतिष्टा तिहां करी, धन खरचाणां पूर,

जैनधरम प्रकासीयो, दिन दिन चढते नूर ॥ ५ ॥

संवत सतर ओगणोस (एगन्याऐंशो?) १७७९ में, चातुर्मास खंभात,

तिहांना भविने बुझव्या, जेहना (बहु) अवदात ॥६॥

ढाल—रसीयानो देशी

श्री देवचंद्र मुनींद्र ते जैन नो, स्तंभ सदृश थयो सत्य । सुज्ञानी,

देशना में श्री 'शत्रुंजय' तीर्थनो, महिमा प्रकाशे नित्य । सु० ।

तीर्थ महिमा शत्रुंजयनी सुणो ॥ १ ॥

श्री सिद्धाचल महिमा मोटकी, श्री ऋषभ जिणंदनी वाणी। सु० ।

मुक्ति गमननुं तीरथ ए अछे, सास्वत तोर्थ प्रमाण ।सु० । २ ।तीरथ०।

दुःखम आरो पंचमो जिन कह्यो, एकविंसति सहस वर्ष । सु० ।

चार योजन श्री शत्रुंजयगिरि, एहनुं कुंण कहे रहस्य ॥३॥ ती० ॥

कांकरे कांकरे साधु सिद्ध थया, भरते कीयोरे उद्धार ॥ सु० ॥

'कर्माशा (ह)' आदे देइ जाणीए, सोल उद्धार उदार ॥ ४ ॥ ती० ॥

तीर्थ माहात्म्यनी प्ररूपणा गुरु तणी, सांभले श्रावकजन्न । सु० ।

सिद्धाचल उपर नवनवा चैत्यनी, जीर्णोद्धार करे सुदिन्न ।सु० ५ ती०

कारखानो तिहां सिद्धाचल उपरे, मंडाव्यो महाजन्न । सु० ।

द्रव्य खरचाये अगणित गिरि उपरे, उलसित थायेरे तन्न । सु०।६ ती०

संवत सत्तर(१७८१)एकासीये, ब्यासीये त्र्यासीये कारीगरे काम। सु०

चित्रकार सुधानां काम ते, दृपदू उज्वलतारे नाम ॥सु०॥७॥ ती० ॥

फिरीने श्री गुरु 'राजनगरे' भलां, तिहां भविने उपदेश । सु० ।

विनती 'सुरति' बंदिर नी भली, चोमासानीरे विशेष ।सु०। ८ ।ती०।

श्री 'देवचंदजी' 'सुरति' बंदिरे, कीधा भविने उपगार । सु० ।
'पंचासिये' 'छयासीये' 'सत्यासीये', जाणीये बुद्धितणा जे भंडार ।सु०।६
'पालीताणे' प्रतिष्ठा करी भली, खरच्यो द्रव्य भरपूर । सु० ।
'वधुसाये' चैत्य 'शत्रुंजय'उपरे, प्रतिष्ठा'देवचंद'नी भूरि ।सु०१०।ती०।
पुनरपि श्री गुरु 'राजनगर' प्रत्ये, आव्या चोमासुं रे सार । सु० ।
संवत 'सत्तर(८८)अठ्यासीय'मांहि, पंडित मांहि शिरदार ।सु०।११ती०
वाचक श्री 'दीपचंदजी' प्रत्ये, उप(र)नी व्याधिनी (?)व्याधी । सु० ।
'आसाढ़' सुदि बीज दीने ते जाणीये, पुहता स्वर्ग प्रधान ।सु०।१२ती०।
'तपगच्छ' मांहे विनीत विचक्षण, श्री 'विवेकविजय' मुनींद्र । सु० ।
भगवा उद्यम करता विनयी घगुं, उद्यमे भणावे 'देवचंद्र' ।सु०।१३।ती०
गुरुसदृश मन जांणे 'विवेकजी', खिजमतिमें निसदिन्न । सु० ।
विनयादिक गुण श्री गुरु देखीने, 'विवेकजी' उपर मन्न ।सु०१४ती०।
'अमदावाद'मे एकसमे भलो, 'आणंदराम' साह श्रेष्ट । सु० ।
'रतनभंडारी' ना अग्रेस्वरी, जेहना मनसेंरे इष्ट । सु० । १५ ।ती०।
श्रीगुरुने वली 'आणंदराम' ने, चर्चा थायरे नित्य । सु० ।
चर्चाए ते जीत्यो गुरुजीए, 'आगंदनी' गुरुपरि प्रीति ।सु०।१६ ती०।
'कवियण' भाखी सातमी ढाल ए, पंचम आरारेमांहि । सु० ।
एहवा पुरुष थोडा प्रभुमार्गना, प्रकाश करवाने उछांहिं । सु०।१७।ती०।

दूहा

शाहा श्री 'आणंदरामजी', गुरुनी गुरुता देखि,
भंडारी 'रत्नसिंघ' आगले, प्रसंशा करी सुविशेष ॥ १ ॥

गुरु ज्ञानी शिरोमणि, जिनधर्में वृषभ समान,
'मरुस्थल' थी इहां आवीआ, सकलविद्यानुं निधान ॥ २ ॥
'रतनसिंह' गुरु वांदवा, आव्यो आलय तास,
नय उपनय संभलावीने, मन प्रसन्न कर्युं तास ॥ २ ॥

देशी:—धन धन श्री ऋषिराय अनाथी

पूजा अरचा 'रतन भंडारी', करता श्रीजिनवरनीरे ।
श्री 'देवचंद्रजी'ना उपदेशथी, शिवमंदिरनी निसरणीरे ॥१॥
धन धन ए गुरुरायने वयणे, जिनशासन दीपाव्योरे ।
पंचम आरे उत्तमकरणी, गुजरातिनो सो (सु?) वो नमाव्योरे । टेकर
विंब प्रतिष्टा वहुली थाये, सत्तर भेदी पूजारे ।
भंडारीजी लाहो लेता, ए गुरु सम नही दूजारे ॥धन० ॥३॥
विधि योगे ते 'राजनगर'में, मृगी उपद्रव व्याप्योरे ।
गुरुने भंडारी सर्वं व्यवहारी, अरज करी सीस नमाव्योरे ॥धन०।४॥
स्वामी उपद्रव 'राजनगर'में, थयो छे सर्व दुःख कर्त्तारे ।
तुम वेठा अमे केहने कहीये, तुमे छो दुःखना हर्त्तारे । ॥धन० ।५।
जैनमार्गना मंत्र यंत्रादिक, करीने खीला गाड्यारे ।
मृगी उपद्रव नाठो दुरि, लोकना दुःख नसाड्यारे । ॥धन० ।६।
जिनशासननो उदय ते करता, दुःखम आरे 'देवचंद'रे ।
प्रशंसा सघले शाशन केरी, टाल्यो दुःखनो दंदरे । ॥धन०।७।
एहवे समे 'रणकुंजी' आव्या, वहूलुं सैन्य लेइनेरे ।
युद्ध करवा 'भंडारी' साथे, आव्यो नगारुं देइनेरे । ॥धन०।८।
'रतनसिंघ' भंडारी तत्पिण, आव्यो श्री गुरु पासेरे ।
कांइ करणो दल वहोतज आयो, में छां थांके विस्वासेरे । ॥धन० ।९।

फिकर मत करो 'भंडारीजी', प्रभुजी आछो करस्येरे ।
जीत वाद थाहरो अब होस्ये, करणी पार उतरस्येरे ॥धन०॥१०॥
चमत्कार श्री जिन आम्नायनो, गुरुजीये ते दीधोरे ।
फतेह करीने आव्यो वहिला, थांको कारज सीधोरे ॥धन०॥११॥
'रतनसंघजी' सैन्य लेइने, युद्ध करवाने सांह्मोरे ।
'रणकुंजी' साथे तोपखाने, चाल्यो न करे खामोरे ॥धन०॥१२॥
परस्परे युद्धे 'रणकुंजी' हार्यो, थई भंडारी नी जीतरे ।
ए सर्व 'देवचंद्र' गुरुपसाये, हेमाचार्य कुमारपाल प्रीतरे ॥धन०॥१३॥
'धोलका' वासी सेठ 'जयचंदे', 'पुरिसोतम' योगीरे ।
गुरुने लावी पायो लगाड्यो, जैनधर्मनो भोगीरे ॥धन०॥१४॥
योगिंद्र एक गिर 'पुरुसोत्तम'ने, (नो?) मिथ्यात्व शल्यने काढ्योरे ।
बुझविने जिनधर्म्म मार्गमां, श्रुतिये मन तस वाल्योरे ॥धन०॥१५॥
'पंचाणुंइ' 'पालीताणे' आव्या, 'छनुंये' 'सत्ताणुंये' 'नवानगरे'रे ।
'ढुंढक' टोला 'देवचंद्रे' जीत्यां, चैत्य चाल्यां सर्व झगरेरे ॥धन०॥१६॥
'नवानगरे' चैत्य जे मोटां, ढुढके जे हता लोप्यांरे ।
अर्चा पूजा निवारण कीधी, ते सघला फिरी थाप्यांरे ॥धन०॥१७॥
'परधरी' गाम में ठाकुर बुझव्यो, गुरुनी आज्ञा मानेरे ।
'कवियणे' आठमी ढाल ते रुडी, ए वात न जाणो कुडिरे ॥धन०॥१८॥

दोहा ।

पुनरपि 'पालीताणे' गुरु, पुनरपि 'नुतन' नग्र मांहि ।
संवत (१८०२-३) अढार 'दोय' 'त्रिणमां', 'राणावाव' उछांहिं ॥ १ ॥

तत्रना अधीशने, रोग भगंदर जेह ।

टाल्यो ततखिण गुरुजिइं, गुरु उपर बहु नेह ॥ २ ॥

संवत 'अष्टादश च्यार'में, 'भावनगर' मझार ।

मेता 'ठाकुरसी' भलो, ढुंढकनो बहु पास । (प्यार ?) ॥ ३ ॥

श्री 'देवचंद्रे' बुझवी, शुभमार्गिनो वास,

तत्रना ठाकुर तणी, मंत कीधी जैन पास ॥ ४ ॥

संवत 'अष्टादश च्यार मे, 'पालीताणो' गाम ।

मृगी टाली गुरुजीये, श्रीगुरुजीने नाम । ॥ ५ ॥

संवत 'अष्टादश' 'पंच' 'षष्ठ'में, 'लींबडी' गाम उदार ।

'डोसो वोहोरो' साहा 'धारसी', अन्य श्रावक मनोहार ॥ ६ ॥

साहा श्री 'जयचंद' जाणोयें, साहा 'जेठा' बुद्धिवंत ।

'रहो कपासी' आदि देइ, भणाव्या गुरुइं तंत ॥ ७ ॥

गुरुइं सहु प्रतिबोधीया, जैनधर्ममें सत्य ।

गुरु उपगार न वीसारता, धर्मे खर्चे वित्त ॥ ८ ॥

'लिंबडी' 'ध्रागंद्रा' गाम ए, अन्य 'चुडा' वली गाम;

प्रतिष्टा त्रिण थइ बिंबनी, द्रव्य खरच्या अभिराम ॥ ९ ॥

'धांगद्रे' जिनबिंबनी, थइ प्रतिष्ठासार,

'सुखानंदजी' तिहां मल्या, 'देवचंद्र'नो प्यार ॥ १० ॥

देशी :— ललनानी छे ॥

संवत 'अढारने आठमें', गुजरातिथी काढ्यो संघ ।ललना०।

श्रीगुरुना गुरु उपदेशथी, शत्रुंजयनो अभंग ॥ ल० ॥ १ ॥

गुरुवयणां ते सद्दहो ॥टेका॥

गिरि उपर उछव थया, खरच्यां बहुलां द्रव्य ।
पूजा अरचा बहुविधि, अनुमोदे ते भव्य ॥ ल० ॥२ गुरु०॥

उभी सोरठ जानरा, करता ते भविजन्न । ल० ।
'अष्टादश' 'नव' 'दशमें', श्री गुजराति चोमास ॥ ल० ॥३ गुरु० ॥

संवत 'दश अष्टादशें', 'कचरासाहाजीइं' संघ । ल० ।
श्री शत्रुंजय तीर्थनो, साथे पधार्या देवचन्द्र ॥ ल० ॥४ गुरु०॥

साह 'मोतीया' 'लालचंद', जाणीइ जैनमारगमें प्रवीण । ल० ।
श्राविका अवल ते भक्तिमां, दानेश्वरीमां नहीं खीण ॥ल० ॥५ गुरु०॥

....॥६॥

संघमें श्री 'देवचन्दजी', अन्य व्यवहारीया साथ । ल० ।
श्री 'शत्रुंजय' गिरि आवीया, लेवा धर्मनुं पाथ ॥ ल० ॥७ गुरु०॥

प्रतिष्ठा जिनबिंबनो, गुरुजिइं किधी तत्र । ल० ।
साठी सहस्त्र द्रव्य खरचीयो, गुरु वचनें ते यत्र ॥ ल० ॥८ गुरु०॥

संवत 'अढार इग्यार'में, प्रतिष्ठा 'लींबडी' मध्य । ल० ।
'वढवाणे' श्रावक ढुंढकी, बुझव्या खरची रुद्धि ॥ ल० ॥९ गुरु०॥

चैत्य कराव्यां सुंदर, जिन अर्चाना ठाठ । ल० ।
प्रभाविक पुरुष 'देवचन्द्रजी', धन्य एहनी मात ॥ल० ॥१० गुरु०॥

शिष्य सुविनीत पासे भला, श्री 'मनरुप' जी दक्ष । ल० ।
'विजयचन्द' बुद्धिये प्रबलता, न्याय शास्त्रना पक्ष ॥ल०॥११ गुरु०॥

वादी अनेक ते जीतीया, गच्छ चोरासीना साध । ल० ।
भणे तर्कवादी भलो, श्री 'देवचन्द्रनो' हाथ ॥ल० ॥१२ गुरु०॥

'मनरुपजी' ना शिष्य दोउं, 'वक्तुजी' 'रायचन्द' । ल० ।
गुरुभक्ति आज्ञा धरे. सेवामें सुखकन्द ॥ ल० ॥ १३ गुरु० ॥
संवत 'अढार ना बारमें', गुरु आव्या 'राजद्रंग' । ल० ।
गछनायकने तेडावीआ, महोछव कीधा अभंग ॥ ल० ॥१४ गुरु०॥
'वाचकपद' 'देवचन्द'ने, गछपति देवे सार । ल० ।
महाजने द्रव्य खरच्यो बहु, एह संबंध उदार ॥ल० ॥१५ गुरु०॥
नवमी ढाल सोहामणी, कवियण भाखी एह । ल० ।
एक जीभे गुण वर्णतां, कहितां नावे छेह ॥ ल० ॥ १६ गुरु० ॥

॥ दूहा ॥

वाचक श्री 'देवचन्द्रजी', देशना पीयूष समान;
जीव द्रव्यना भेदस्युं, नय उपनय प्रधान ॥ १ ॥
ग्रंथ भला 'हरिभद्र' ना, वाचक 'जस' कृत जेह;
'गोमटसार' 'दिगंबरो', वाचना करे हित नेह ॥ २ ॥
'मुलताने' 'देवचन्द्रजी', वली अन्य 'बीकानेर';
चोमासां गुरु तिहां करी, ज्ञानतणी समसेर ॥ ३ ॥
नवाग्रन्थ ज्हेने कर्या, टीका सहित तेह युक्त;
'देसनासार' 'नयचक्र', शुभ 'ज्ञानसार'नी भक्ति ॥ ४ ॥
'अष्टकटीका' युक्तिथी, 'कर्मग्रंथ' वली जेह;
तेहनी टीका आदि देइ, ग्रन्थ कर्या बहुनेह ॥ ५ ॥
'राजनगरे' 'देवचन्दजी', 'दोसीवाडा' मांहि;
थोका लोक व्याख्यानमें, सांभलता उछाहिं ॥ ६ ॥

एकदिन वायुप्रकोपथो, वमनादिकनी व्याधि,
अकस्मात उत्पन्न थइ, शरीरे थइ असमाधि ॥ ७ ॥
शास्त्र मरण दोउ कह्यां, पंडित मरण छे जेह,
बाल मरण तो दुसरो, उत्तम पण्डित मृत्यु बेह ॥ ८ ॥
तव शरीरनि क्षीक्षणा, (क्षोणता?) शिथिल थयां अंगोपांग,
बुद्धि करीने जांणीइं, अनित्य पदारथरंग ॥ ९ ॥
पुद्गल तो अनित्यता, अनादिनो स्वभाव,
मूरख तेपरि रंग धरे, पण्डित धरे विभाव ॥ १० ॥
निज शिष्योने तेडीने, दे शिक्षा हितकार,
मुज अवस्था क्षीण छे, ए पुद्गल व्यवहार ॥ ११ ॥

ढाल:—निंदलडी बैरण हुय रही, ए देशी

शिष्य शिरोमणी जाणीइं, 'मनरूपजी' हो वाचक गुणवंत,
चतुर चाणाक्य शिरोमणि, गुरु उपर बहु भक्तिवंत,
धन धन ए गुरु वंदीए ॥ १ ॥
धन्य एहनी चतुराइने, गुरु बेठां हो श्रावक करे सेव,
पदकज सेवे जेहना, आज्ञा माने हो नित नित मेव ॥ २ ध० ॥
विनयी विचक्षणे पण्डिते,गुणालंकृत हो जेहनुं भर्युं गात्र,
श्रीगुरु मनमें चिंतवें, मुझ 'मनरूप' हो शिष्य घणु सुपात्र ।३ । ध० ।
'मनरूप' शिष्य विद्यमानता, 'रायचंदजी' हो दुजला पूज्य,
गुरुसेवामें विनयी घणुं, विद्यानां हो जेह जाणे गुह्य । ४ । ध० ।
श्री 'रूपचंद' शिष्य सुशीलता, 'विजयचंदजी' हो पाठक गुणयुक्त,
विद्या भरे हस्ति मलपतो, मेघध्वनि सम हो उद्घोषणा छंद,
द्वितीय शिष्य 'विजयचंदजी', तर्कवादे हो जीत्या वादीवृन्द । ५ ।ध०।

तस सीस दोय सुसीलता, पूज्य पूजा हो 'सभाचंद' 'विवेक',
गुरुनो प्रेम शिष्य उपरे, गुरु विद्यमाने हो वादी कीया भेक ॥६ध०॥
शिक्षा देवे उपाध्यायजी, सर्वशिष्यने हो कहे धारी प्रेम,
समयानुसारे विचरज्यो, पापबुद्धि हो नवि धरस्यो वेम ॥७ध०॥
पग प्रमाणे सोडि ताणज्यो, श्री संघनी हो धारज्यो तमे आण,
वहिज्यो सूरिनी आज्ञा, सूत्र शास्त्रे हो तुमे धरज्यो ज्ञान ॥८ध०॥
तूज समरथ छो मुज पुठे, मुझ चिंता हो नास्ति लवलेस,
सपरिवार ए ताहरे खोले छे, हो मुक्या सुविशेष ॥९ध०॥
तव 'मनरूप' जी गुरु प्रत्ये, कहे वाणी हो जोडी हाथ,
गुरुजी तूमे वडभागीया, पामर अमे हो पण शिर तुम हाथ ॥१०ध०॥
सकल शिष्य भेला करी, गुरुजीये हो सहुने थाप्यो हाथ।
प्रयाण अवस्था अम तणी, वाणी केहवी हो जेहवो गंगापाथ ॥११ध०॥
दशवैकालिक उत्तराध्ययननां, अध्ययनने सांभले गुरुराय।
यथार्थ सर्व मन जांणता, अरिहंतनो हो ध्यान धरे चित्तलाय ॥१२ध०॥
संवत 'अढार वारमे', 'भाद्रपद' मासे हो 'अमावस्या' दिन,
प्रहर एक रजनी जातां, देवगति लहे 'देवचंद्र' धन धन्य ॥१३ध०॥
मोटे आडंबरे मांडवी, चोरासी गच्छना हो श्रावक मल्या वृन्द,
अगर चंदने काष्टे भली, चिता रचिता हो महाजन सुखकंद ॥१४ध०॥
प्रतिपदाए दहन दीयुं, गुरु पूठी द्रव्य घणो खरचंत,
तिथियो जमाडि वहोलता, जाणे अपाढो हो घने करी वरसंत ॥१५ध०॥
ए देवचंद्रना वयणथी, द्रव्य खरच्या हो अगणीत सुभठाम,
घा धन खरचाइयुं, एहवा गुरुना हो कीधा गुणग्राम ॥१६ध०॥

दशमी ढाल सोहामणी, नाम धरीयुं हो गायो देवविलास।
आसन्न सिद्धि जे थया, कोइक भवे होस्ये मुक्तिनो वास । १७ ध०

दुहा

सात आठ भव एहवा, जो धरसें एह जीव,
भाव बाल्यकाल विध्वंसना, धर्म योवनमें सदीव ॥१॥
अनुमाने करी जाणीये, द्रव्यथकी विशेष,
सात आठ भव उलंघीने, शिव कमलाने पेख ॥२॥
प्रभु मारग विस्तारवा, द्रव्य भावथी शुद्ध,
विश्व आल्हादकारी थयो, जिनवाणीनी बृद्ध ॥३॥
श्री जिनबिंबनी थापना, करवा निज सुबुद्धि,
च्यार निक्षेपा युक्तस्युं, स्याद्वाद भाखे शुद्ध ॥४॥
एक पाइए साचे सकल, तस चाले करामात,
गाजी मर्द ए जैननो, मिथ्यात्वी कीया महात ॥५॥

रागः—धनाश्री पांमी ते प्रतिबोध ए देशी

श्री देवचंद्र ऋषिराय स्वर्गेरे (२) पहोता ते सुभ ध्यानथीरे ।१।
सूरय (सूर्य?)चंद्र नै इंद्र अवधिरे (२) देखी मन चिंते एहवुंरे ।२।
जिनशासननो थंभ देवचंदरे (२) अमरपुरीमें अवतर्यारे ।३।
देश देशमां वात पोहोतीरे (२) सांभली भवि विलखा थयारे ।४।
कल्पतरुसम एह देवचंदरे (२) सरिखा पुरुष थोडा हस्येरे ।५।
मस्तकें मणि हती जेह गुरुनेरे (२) दहन समय उछली पडीरे ।६।
ते गइ पृथ्वी मध्य कोइनेरे (२) हाथे ते आवो नहीरे ।७।
महाजन शिष्य समुदाय भेला थइरे (२) स्तुप कराव्यो गुरुतणीरे ।८।

प्रतिष्ठा करी तत्र पादुकारे (२) पूजा प्रभावना बहु विधिरे ।६।
केतले दिन वाचक 'मनरूप' रे २) स्वर्ग गति गुरुने मिल्यारे ।१०।
'रायचंद' शिष्य निधान गुरुनारे (२) विरह खम्यो जाये नहीरे ।११।
मन चिंते 'रायचंद' ए सविरे (२) अनित्यता श्री गुरुये कह्योरे ।१२।
पल्योपम पुरव आयु ते पण रे (२) पूरां थयां शास्त्रे कह्यारे ।१३।
आ पण प्राकृत जीव जुठारे (२) स्नेह धरवो ते मूढ़तारे ।१४।
तित्थयर गणधर जेह सुरपतिरे (२) चक्री केसवरामे एहनेरे ।१५।
कृतांते संहार्या सर्व का गणनारे (२) इयर जननी जाणवीरे ।१६।
इम मन चिंती रायचंद गुरुनीरे (२) स्तवना नामनो मन धरेरे ।१७।
गुरु सरखो नही इष्ठ दीवोरे (२) गुरुइ ज्ञान देखाडीयुंरे ।१८।
गुरु पुठे 'रायचंद' पद्धतिरे (२) चलवे व्याख्याननी संपदारे ।१६।
गुरु जेहवी किहांथी बुद्धि गुरुनारे (२) ज्ञान बिंदु किंचित स्पर्शतारे।
जैनशैलीमां प्रवीण 'रायचंद्र' रे (२) गुरुपसाये तादृश थयारे ।२१।
मनमां नही शंक्लेश कोइथीरे (२) बाग्वाद कोइथी नवि करेरे ।२२।
सुविहितमार्गनो जाण 'रायचंद' रे (२) शीलादिक गुण संग्रह्योरे ।२३।
आठ मां मोहनीकर्म व्रतमें रे (२) चोथु व्रत जीतवुं दोहिलुंरे ।२४।
शील तणेरे प्रभाव संकट (सवि)टले (२) नासे तत्क्षिण ए थकीरे ।२५।
जनमां जेहनो सोभाग्य अक्षयरे (२) रिद्धि वृद्धि अणगणिततारे ।२६।
एक दिन श्री 'रायचंद' कविनेरे(२)कहे अम गुरु स्तवना करोरे ।२७।
अमे जो करीयें स्तव एह अणघटेरे (२) स्वकीर्त्ति करवी अयोग्यतारे
ते माटे कहयुं तुम्ह स्तवनारे (२) तुम बुद्धि प्रमाणे योजनारे ।२६।
'कवियणे' 'देवविलास' कीधो (२) मन हर्षित उल्लस्योरे ।३०।

कीधो 'देवविलास' शुभदिनेरे (२) जयपताका विस्तरी रे। ३१
संवत १८२५'अढार पचीस आसोसुदिरे'(२)'अष्टमी' रविवारे रच्योरे
स्तोकमें देवविलास कीधोरे (२) किंचित् गुण ग्रहीने स्तव्योरे। ३३
वोहोलो छे अधिकार जोतांरे (२) ग्रंथ थाये मोटो घणोरे। ३४
भणस्ये 'देवविलास' सांभलेरे (२) तस घरे कमला विस्तरेरे। ३५

कलस

श्री 'वीर' जिनवर 'सोहम' गणधर, 'जंबु' मुनिवर अनुक्रमे,
'खरतरगच्छ' उद्योतकारक, श्री 'जिनदत्त' सूरयोपमे।
तास पाट 'जिनकुशल' सूरि, 'जिनचंद्र' (१) सूरि तसपटे,
'युगप्रधान' नो बिरुद जेहनो, नामथी दुःकृत कटे ॥ १ ॥
गच्छ स्तंभक उपाध्यायजी, 'पुण्यप्रधान' (२) प्रधानता,
सुमति धारी 'सुमति' (३) पाठक, 'साधुरंग'(४) वाचक भृता।
श्री 'राजसागर' (५) उपाध्यायजी, 'ज्ञानधर्म' (६) पाठक थया,
सुकृती 'दीपचंद' (७) पाठक५, 'देवचंद्र' (८) पाठक जय जया ॥२॥
'मनरूप' वाचक (९) 'विजयचंदजी', पाठकनो पद भाग्यता,
'मनरूप' पदकज मेरुगिरिवर, 'रायचंद' (१०) रवि उद्गता।
सुज्ञानतायें विनयवंते, बुद्धि युक्ति सुरगुरु,
चंद्र सूर ध्रु तार तारक, रहो अविचल जयकरु ॥ ३ ॥

इति श्री देवचंद्रजीनो निर्वाण रास संपूर्ण
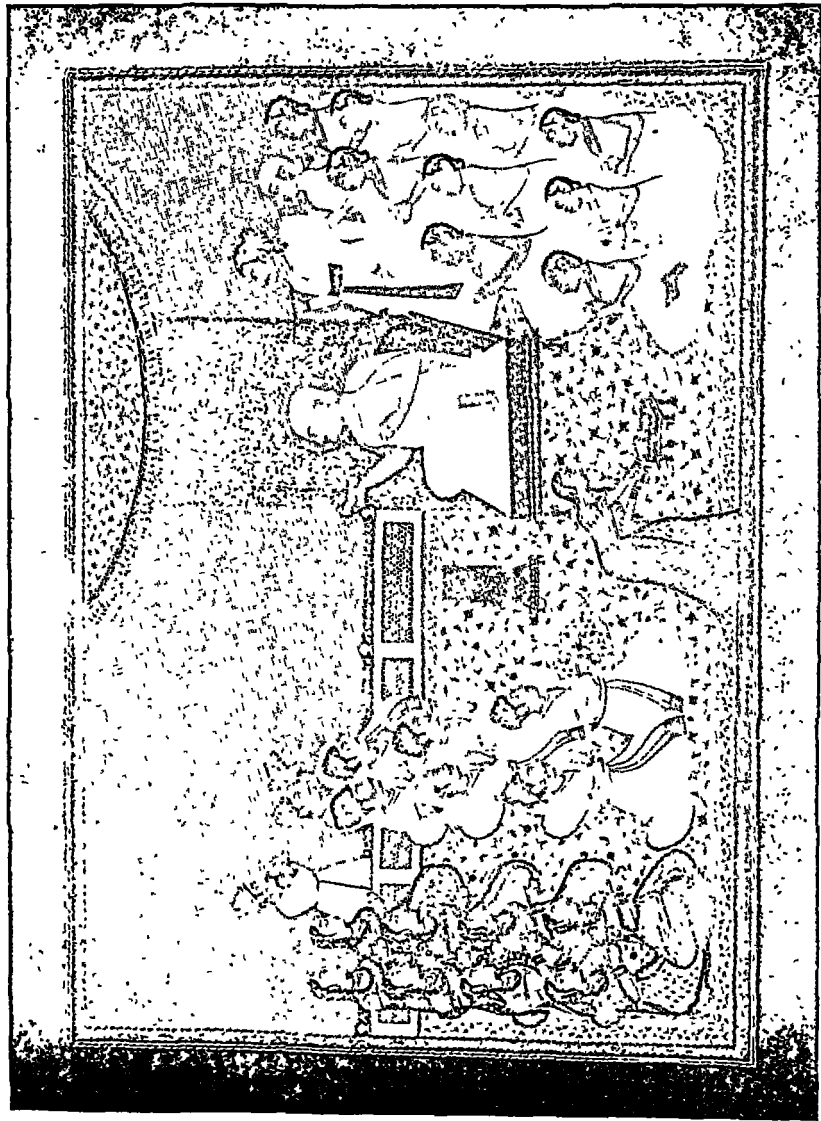
श्री:जिनलाभसूरिजी (बाब विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

॥ श्री जिनलाभ सूरि गीतानि ॥

ढाल—ऊंचो-नीची सरवरीयैरी पाल, ए देसी लहकमें ।

(१)

आज सुहावो जी दीह, आज नै बधावोजी अम्ह घर आंगणैजी ।
अंग उमाहो जी आज, सहगुरु हे आया आणन्द अति घणै जी ॥१॥
आवो हे सहियर साथ, सजि सजि हे सोल शृङ्गार सुहामणा जी ।
जंगम तीरथ एह, वंदन कीजइ हो छीजइ दुख घणा जी ॥२॥
धन धन सोइज देश, धन धन गाम नयर ते जाणियइ जी ।
जिहां विचरै गच्छ राण, भाण प्रतापी हे सुजस वखाणियइ जी ॥३॥
धन 'पंचाइण' तात, धन 'पदमा दे' हो मात महीतलै जी ।
'बोहित्थ वंश' विख्यात, कुल उजवालण पूज जी इण कलै जी ॥४॥
सवि सिणगार्या हे हाट, प्रोलि रचाई हो च्यारु फाब्रती जी ।
वदै सकोइ जीह, श्री जिन-शासन महिमा दीपती जी ॥५॥
मिलीया हे महाजन लोक, उच्छव मंड्यो हो अति आडम्बरे जी ।
दे मन वंछित दान, याचकजन धन धन जस उच्चरै जी ॥६॥
गोरी गावै जी गीत, फरहर गयणंगणि धज्ज फरहरइ जी ।
कोतिल वलि गज वाजि, खुरिय करंता हो आगल संचरै जी ॥७॥
दुन्दुभि ढोल दमाम, झल्लरि भुंगल भेर नफेरीयां जी ।
वाजै वाजित्र सार, फूलड़ै बिछाई हो 'बीकपुर' सेरियां जी ॥८॥
हीर अनै वलि चीर, माणिक मोती हो वारीजै छता जी ।
पथरीजै पटकूल, मुनिपति आवै हो गज गति मलपता जी ॥९॥

पूज पधार्या हे पाट अमिय समाणी हो वाणी उपदिसें जी।
सुणि सुणि श्रवण सहेज बहु नर नारी हे हियड़उ उल्लसै जी ॥१०॥
जां शशि सायर सूर जां धुर मेरु महीधर थिर रहै जी।
श्री 'जिनलाभ' सूरीश, तां चिर प्रतपो हो मुनि'माणक'कहै जी ॥११॥

(२)

एक सन्देशो पंथी माहरो, जाइनें वीनविजे करजोड़। गरुआ पूजजीहो
महिर करीनइ गच्छपति आविजै, वांदणरौ म्हांने कोड़ ॥ग०॥१॥
वहिला पधारो 'थलवट' देशमें, श्री संघ जोवै थांरी वाट ।ग०।
ढील न कीजै हो पूज इण वान री, साथै मुनिवर थाट ॥ग०॥२॥
'कच्छ' धरा सुं हो पूज्य पधारि नै, नाइसक्या इण ठाइ ।ग०।
म्हे पिण जाण्यो जिण थानै राखिया, विचही में विलमाइ ॥ग०॥३॥
'जेसलमेरा' श्रावक जोइनै, पूज रह्या लोभाइ ।ग०।
मुंह मीठां सुं मनड़ो मोहियो जी, दूजा नावै दाइ ॥ग०॥४॥
म्हां तो कागल साहिबा जो मोकल्या, लिख लिख अरज अछेह ।ग०।
तौ पिण पाछौ जा(ब)ब न आवियो, पूज खरा निसनेह ॥ग०॥५॥
मनमें ऊमाहो गच्छपति छै घणुं, सुणिवा थांहरी वाणि ।ग०।
नाम तुम्हीणो खिण नहीं वीसरुं, वंदावौ हित आणि ॥ग०॥६॥
पाटोधर मानीजै माहरी वीनति, श्री खरतर गच्छ ईश ।ग०।
'बीकाणै' चौमासो कीजियै, श्री 'जिनलाभ' सूरीश ॥ग०॥७॥
अरज अम्हीणी पूज्य अवधारिज्यो, सूरीसर सिरि इंद ।ग०।
वेकर जोड़ी त्रिकरण भाव सुं, वंदै मुनि 'देवचंद' ॥ग०॥८॥
॥इति श्री पूज्यजी री भास सम्पूर्णम् ॥ लिखितं पं० जीवन० छोटै स्याला मध्ये कोठारियां रै खण मध्ये ॥ शुभं भवतु, कल्याण मस्तु ॥

(३)

जिण शासन शिणगारा, वंदो खरतर गणधार हे।
सहियां सद्गुरु वेग बधावो।

सद्गुरु वेग बधावो, मिल मङ्गल भास मल्हावो हे ॥स०॥१॥
धन धन 'मारू' देश, धन थलवट मांडल वेश हे ॥स०॥
धन 'पंचाइण' तात, धन धन 'पद्मादे' मात हे ॥स०॥२॥
'बोहित्थ' वंश सवायो, जिहां पुरुष रत्न ए जायो हे ॥स०॥
'मांडवो' नगर मझार, होय रह्या जय जयकार हे ॥स०॥३॥
घुरय निसाणे छाई, बांटै श्री संघ बधाई हे ॥स०॥
गोरी मंगल गावें मोत्यां, भर थाल बधावें हे ॥स०॥४॥
श्री 'जिनभक्ति' सुरिन्दा, पाट थाप्या जाणै इन्दा हे ॥स०॥
निलवट चढतै नूर, जाणे ऊगो अभिनव सूर हे ॥स०॥५॥
लघु वय चारित लीनौ, गुण देखी गुरु पद दीनौ हे ॥स०॥
सद्गुरु हुंती सवायौ, जिण खरतर गच्छ दीपायौ हे ॥स०॥६॥
पूरबली पुण्याइ, एतो मोटी पदवी पाइ हे ॥स०॥
पंच महाव्रत धारी, थांरी रहणीरी बलिहारी हे ।स०॥७॥
रूपे देव कुमार, एतो लबधि तणा भण्डार हे । स० ।
पालै पंचाचार, गुरु गोतम रै अवतार हे । स० ॥८॥
....।
.... हे । स० ॥ ६ ॥
मीठो सद्गुरु वाणी, सांभलता चित्त समाणी हे ।स०।
'श्री जिन लाभ' सुरिन्द, प्रतपो जिम सूरिज चंद हे ॥स० ॥१०॥
चित धरि अधिक जगोश, इम 'वसतो' दे आशीस हे ॥स०॥

——**——

(४)

* श्री जिनलाभ सूरि निर्वाण गीतम् *

ढाल—आदि जिणिंद मया करो एहनी।

देश सकल सिर सौभतौ, थलवट सुथिर सुजाणो रे।
जिहां 'विक्रमपुर' परगडौ, तिहां प्रगट्या मुनि भाणो रे। १।
गुणवन्ता गुरु वंदीयै। आंकड़ी०।
सुमती शाह 'पंचायण', 'पद्मादेवी' नन्दा रे।
'वोहिथ' वंश विभूषण, लाल अमोल अमंदा रे। २ गु०।
श्री 'जिनभक्ति' सूरीसरु, श्री खरतर गछराया रे।
तासु संयोगे आदर्यो, संजम शोभ सवाया रे। ३। गु०।
अरथ सहित सद्गुरु दीयउ, 'लक्ष्मीलाभ' सुनामो रे।
वरस 'अढार चउडोत्तरै', पाम्यौ पाम्यौ पद अभिरामो रे।४।
श्री 'जिनलाभ' सूरीसरू गछनायक गुणरागी रे।
पंचम काले परगड़ा, श्रुतधर सीम सोभागी रे। ५। गु०।
देश विदेशे विचरता, बहु भवियण प्रतिबोधी रे।
सकल कलुषता टालता, आतम धरम विरोधी रे। ६। गु०,
नगर 'गुढै' गुरु आवीया, 'चउतीसै' चउमासै रे।
तिहां निज समय प्रकाशने, पहुंता सुर आवासै रे। ७। गु०।
चरण कमलकी थापना, अतिसयवंत विराजै रे।
दास 'क्षमाकल्याण' नौ, वंदन हुओ शुभ काजै रे। ८। गु०।
इति श्री जिनलाभ सूरि सद्गुरु सिझाय (पत्र १ तत्कालीन, संग्रहमें)

——:——

॥ जिनलाभसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीत ॥

(१)

ढाल—आज रो सुज्ञानी स्वामी जोर वण्यो राज ।

'जिनचंद्र सूरि' गुरु वंदियै जी राज, वंदियै वंदियैं वंदिय जी राज जि०
सहु गच्छपति सिर सेहरोजी राज, खरतर गच्छ सिणगार ।म्हांराराज ।
श्री 'जिनलाभ' पटोधरूजी राज, 'ओस वंश' अवतार ।म्हां।१।जि०।
लघु वय संयम आदर्योजी राज, 'मरुधर' देश मझार । म्हांरा०।
अनुक्रम गुरु पद पामियाजी राज, सूत्र सिद्धंत आधार ।म्हां०२।जि०
देश घणा वन्दावतांजी राज, गया 'पूर्व कै देश' । म्हां०।
'समेत शिखर' 'पावापुरी' जी राज, कीनी जात्र अशेष ।म्हां ।३।जि०।
चौमासो कीनौ तिहां जी राज, 'अजीमगंज' मझार ।म्हां०।
भव्य जन कुं प्रतिबोधताजी राज, मोह्यो जे नगर उदार ।म्हां०जि०४।
आचरज पद शोभता जी राज, छत्तीस गुण अभिराम । म्हां०।
सुमत पांच कुं पालता जी राज, तीन गुपतिका धाम ।म्हां०।जि०।५।।
छ काय का पीहर भलाजी राज, सात महाभय वार । म्हां० ।
आठ प्रमाद महाबली जी राज, दूर किया सुविचार । म्हां ।जि०। ६।।
श्रावक 'वीकानेर' का जी राज, वीनति करै वारो वार । म्हां ।
पूज जी इहां पधारियैं जी राज, महर करी गणधार । म्हां ।।जि० ७।।
'बच्छावत' कुल दीपताजी राज, 'रूपचंद' जी कौ नंद । म्हां० ।
'केसर' कूखे ऊपनाजी राज, राज करो ध्रुव चंद । म्हां० ।। जि०।८।।
वरस 'अठार पचास' में जी राज, 'वद वैसाख' मझार । म्हां० ।
'चारित्र नंदन' वीनवइ जी राज, 'आठम' तिथि 'गुरुवार' ।म्हांजि०९।

(२)

ढाल:-म्हांरो सहियां हो अमर बधावो गज मोतियां०

म्हांरा पूजजी हो, श्री 'जिनचन्द्र सूरि' राजियां, खरतर गच्छरा भाण ।
म्हांरा पूजजी हो, दिन दिन तुम चढती कला, प्रतपोजी कोड़ि कल्याण
श्री 'जिनचन्द्र' सूरि पटधरू ।। आंकणी ।।१।।
म्हां० धन धन धन वेला घड़ी, धन सायत सुप्रमाण ।
दरसण सद्गुरु निरखस्यां, सुणस्यां मुख नी वाण ।।२।।म्हां।।श्री०।।
म्हां० पूरब नैं पुण्ये पामियौ, श्री सद्गुरु नौ पाट ।
शील गुणे करि शोभता, बरतावे धर्म वाट ।।३।।म्हां०।।श्री०।।
'ओस वंश' अति दीपतौ, 'बच्छावत' वलि गोत्र ।
पिता 'रूपचंद' गुणनिलौ, मात 'केसरदे' पुत्र ।। ४ ।। म्हां ।। श्री ।।
म्हां० मरुधर देश सुहामणो, 'गुढा नगर' मझार ।
म्हां० श्री 'जिनलाभ' सैंहथ दियौ, सूरि मंत्र गणधार ।म्हां०।श्री।५।
म्हां० संघ सकल उत्सव कियो, वरत्यो जय जयकार ।
म्हां० सूहव वधावै गज मोतियां, सजि सजि सोल श्रृङ्गार ।म्हां०।।६।।
म्हां० चंद चंद चढतो कला, वखत :बिलंद गच्छराज ।
म्हां० गौतम ज्युं गुणनिध सही, प्रतपो अविचल राज ।।म्हां०श्री।।७।
म्हां० वाणि सुधारस वरसतां, हरखै भवि जन मोर ।
म्हां० धर्मगुरु दै धर्म देसना, नासै करम कठोर ।।म्हां०।।श्री०।।८।।
म्हां० वर्तमान गुरु विचरंता, 'श्री जिनचन्द्र सूरीश' ।
म्हां० दर्शन देखण अलजयो, पूरो मनह जगीश ।।म्हां०।।श्री०।।६।।

म्हां० 'सिन्धु देश' में दीपतौ, 'हालां नगर' निमेव।
म्हां० शुद्ध मन श्रावक श्राविका, देव सुगुरु करै सेव ॥म्हां०॥श्री०१०
म्हां० धन धन ग्राम नगर जिके, जिहां विचरै गच्छराण ।
म्हां० धन श्रावक ने श्राविका, श्री मुख संभलै वाण ॥म्हां०।श्री०।११
म्हां० अम्ह मन हरख घणो अछै, सद्गुरु सुणवा वाण ।
म्हां० साधु समक्षे परिवर्या, आवो श्री गच्छराण ॥म्हां०॥श्री०१२॥
म्हां० श्रीमुख कमल निहारवा, अम्ह मन छै बहु आश ।
म्हां० श्री सद्गुरु हिव पूरजो, आवेज्यो चउमास ॥म्हां०॥श्री०१३॥
धन दिन ते सफलो घड़ी, मुख नी सुणस्यां वाण ।
म्हां० सद्गुरु सेवा सारस्यां, जीवत जन्म प्रमाण ॥म्हां०॥श्री०॥१४॥
म्हां० संवत 'अढार चौतीस' में, 'माधव' मास मझार ।
म्हां० वर्त्तमान सद्गुरु तणा, गुण गायां निस्तार ॥म्हां०॥१५॥श्री०॥
इम बहुविध वीनति करी, अवधारो गच्छराय ।
म्हां० "कनकधर्म" कहैं वंदणा, अवधारो महाराय॥म्हां०॥१६॥श्री०॥

जिनहर्षसूरि गीतम्

ढाल :—जाति सोहिलानी

पहिरी पोसाखां सखियां पांगुरी रे, सुन्दर सजि सिणगार।
गिरुआजी गच्छपति आया ढूकड़ारे, देखण हर्ष अपार ॥१॥

चालो हे सहेली पूजजी नै वांदस्यां हे, 'श्रीजिनहर्ष' सूरिन्द्र।
चंद पटोधर गच्छ चौरासियां हे, दीपत जेमदिणन्द ॥२॥चा०॥

पूज्य सामेलै श्रावक श्राविका हे, हय गय बहु परिवार।
सिणगार्या सारा रूड़ी परै हे, मारग हाट बाजार ॥३॥चा०॥

कौतुक देखण बहु भेला थया हे, अन्य मती पिण लोक।
दर्शन देखत सहु राजी थया हे, रवि दर्शन जिम कोक ॥४॥चा०॥

चहल घणी 'बीकाणै'रे चोहटै हे, लोक मिल्या लख कोड़।
अंग ऊमाहो पूजजी नै वांदवा हे, लाग रह्यो मन कोड़ ॥५॥चा०॥

उत्सव देखी मन हर्षित थयो हे, रथव्यां च्योतरणिद (?)
शास्त्र यथोक्त गुणेकर ओलखथारे, एतो धरम नरेन्द्र ॥६॥चा०॥

'बोहरा' गोत्र जगतमें दीपता हे, सेठ 'तिलोकचन्द' धन्न।
धन माताये 'तारादे' जनमियारे, अनुपम पुत्र रतन्न ॥७॥चा०॥

भावे वधावो माणक मोतियां हे, दे दे प्रदिक्षण तीन।
बारे आवर्त्त पूजजीने वांदणा हे, क्रोधादिक होय छीन ॥८॥चा०॥

पूज पधारो 'बीकाणै' रे पूठिये हे, बांचो सूत्र वखाण।
भाव वधारो............. हे ज्युं होय परम कल्याण ॥९॥चा०॥

वांदो देव 'बीकाणै' दीपता हे, पूजो चिन्तामणि पाय।
आदीसर बाबो नित भेटिये हे, ज्युं तृषणा दूर नसाय ॥१०॥चा०॥

सज्जन बधज्यो पूज पधारता हे, दुर्जन होवो रे विध्वंश।
राज करो पूज ध्रू लग शाश्वतो हे, विनवै 'महिमाहंस'॥११॥चा०॥

श्री जिनहर्षसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

श्रीजिन सौभाग्यसूरि भास।

ढाल—घोड़ी तो आइ थांरा देसमें एहनी देशी

'करणा दे' कूखे ऊपना, सद्गुरुजी पिता 'करमचंद' (वि)ख्यात हो।
गच्छ नायक 'सौभाग्यसूरि' हो सद्गुरुजी ।आ०। ॥१॥
श्री'जिनहर्ष' पाटोधरु सद्गुरुजी, श्री'जिनसौभाग्य' सूर हो॥२॥ग०
चीठी वातण चालीया सद्गुरुजी, थे वचनां रां सूर हो ॥ग०॥३॥
उवां तो कूड़ कपट कियो सद्गुरुजी,थे कूड़कपट सुं हुवा दूर हो॥ग०४
'बीकानेर' पधारज्यो सद्गुरुजी, थांसूं कौल कियो 'रतनेश'हो॥ग०५
थांका पुण्य थांके खनै सद्गुरुजी, पुण्य प्रबल जग मांहि हो॥ग०॥६॥
'बीकानेर' पधारिया सद्गुरुजी, थांसुं एकांत किया 'रतनेश' हो॥ग० ७
भलांइ विराजो पाटियै सद्गुरुजी, थे म्हांरा गुरुदेव हो ॥ग०॥८॥
तखत दियो गुरु वचन थी सद्गुरुजी, श्रीसंघ मिल'रतनेश' हो॥ग० ९
नोबतखाना वाजिया सद्गुरुजी, वाज्या मङ्गल तूर हो ॥ग०॥१०॥
गोत्र 'खजानची' दीपता सद्गुरुजी, 'लालचंद' बुधवान हो॥ग०॥११॥
महोच्छव कीनो अति भलो सद्गुरुजी,दीनो अढलक दान हो॥ग०१२॥
कोड़ वरस लगै पालज्यो सद्गुरुजी,वड़ खरतर गच्छ राज हो॥ग०१३
'कोठारी' वंश दीपावज्यो सद्गुरुजी, ज्यां लग सूरज चंद हो ॥ग१४
बीजानै वांदां नहीं सद्गुरुजी, थे म्हांरा गच्छराज हो ॥ग०॥१५॥
संवत् 'अढारै बाणवें' सद्गुरुजी, 'सुदसातम' गुरुवार' हो॥ग०॥१६॥
'मिगसर' पाट विराजिया सद्गुरुजी, खूब थया गहगाट हो॥ग०॥१७॥

॥ इति श्री भास सम्पूर्णम् ॥

श्रीजिन महेन्द्रसूरि भास ।

(१)

ढाल—आज नौ हजारी ढोलो पाहुणो ।

वारि जाऊं पूज म्हांरी वीनति,सुणजो अधिके चाव ।सुगुरु म्हांरा हो ।
म्हां दिश थे करज्यो मया, धरो पद्म सकोमल पाव ।।सु०।।१।।
पूजजी पधारो म्हांरा देशमें ।
लायज्योजी मुनिवर लाजरा, सूरतवंत सज्योत
घण जाणीता गुण घणा, दिल रजण द्यै स्योत ।।सु०।।२।।
बादल तंबू चंपा बागमें, म्हेतो खड़ा किया इण खात ।सु०।
धूप पड़ै धरती तपै, गच्छपति गोरै गात ।।सु०।।३।।
राज सभामें राजता, नित नित चढते नूर ।सु०।
गावै यश याचक घणा, हिन्दूपति आप हजूर ।।सु०।।४।।
लिख 'परवानो' मोकलै, थानै 'उदयापुर' नौ 'राण' ।सु०।
कई दिनां रौ कोड़ छै म्हानै, भेटण 'खरतर' भाण ।।सु०।।५।।
हाथीड़ा तो मेलुं राणे रावरा, ओठोड़ा सज्ज सिणगार ।सु०।
पग पग मेलुं पूजजीने पालखी, पग पग रथ असवार ।।सु०।।६।।
मोह्य रेयाजी 'मरुधर' मेड़तं', अधिका गढ़ 'अम्बेर' ।सु०।
'बीकाणे'री आइ पूजजी नै वीनति, झाला दे 'जेसलमेर'।।सु०।।७।।
लुल लुल लेसां थांरा वारणा, थांरे पग पग करतां पेश ।सु०।
एकरस्युं म्हांरे आइज्यो थेतो, देखोनी 'जोधाणे' रो देश ।।सु०।।८।।

पाटोधर पांव पधारिया, सूरीश्वर सिरताज ।सु०।
गहरो गुमानी ज्ञानी गच्छपति, म्हांरी मानी अरज महाराज॥सु०६॥
जालम 'खरतर' राजवी गुरु, साचो गच्छ सिणगार ।सु०।
भलके हे सहियां चंपो भाळमें, मैं तो दीठो अजब दीदार ॥सु०॥१०॥
सूरज गच्छ चोरासिया, थानै भलाइ कहै वड़ भाग ।सु०।
आज सवाइ अभिमानमें, म्हारो रीझयो मन घणो राग ॥सु०॥११॥
अमीय रसायन आपरो, मीठी वाण मुणिन्द ।सु०।
तखत तपे जिनहर्ष रै, श्री 'जिनमहेन्द्र' सुरिन्द ॥सु०॥१२॥
दिलभर दर्शन देखनै, सफल करै संसार ।सु०।
'राजकरण' नितराजरे, पाय लागै हर्ष अपार ॥सु०॥१३॥

(२)

आज वधाई आवियो म्हांरे, मारू देश मझार हो राज।
दीधी वधाई दोड़नै म्हांरे, पूजजी आप पधारो हो राज ॥
आज वधावो हे सखी, गहरो गच्छपति गज मोतीड़े हो राज॥१ आ०
मांगी दूं वधावणी तोने, पथोड़ा लाख पसाव हो राज ।
वले संघ जोतां वाटड़ी, थे तो आवी आज सुणाय हो राज॥२॥अ०॥
घण थट हरिया वागमें, एतो भलहलीयो जश भाण हो राज ।
आवो हे सहेली आपे निरखस्यां, एतो खरतरगच्छ रो राणहो राज॥३आ०
.... ।
धवल मङ्गल करण ढोलमें ऐतो जंगी ढोल घुराया हो राज ॥आ०॥४॥

पुर पैसारे पधारिया, एतो पूजजी पौषध शाला हो राज ।
गहमाती अति घणो आतो, कूहक रही करनाल हो राज ॥आ०॥५॥
भांभल भोली भामणी, एतो गौराङ्गी चढी गोख हो राज ।
दर्शन सद्गुरु देखवा, एतो झांख रहीय झरोख हो राज ॥आ०॥६॥
भांभल नैणा भालीयो, एनो गच्छपति गुण रो गाढ़ो हो राज ।
पालै चारित निर्मलो, एतो लाइक चौरास्यां रो लाडो हो राजा॥आ०७·
रतिपति रूपे रीझिया, एतो नरनारी ना थाट हो राज ।
शील शिरोमणि सेहरो, प्रतपो जिनहर्ष पाट हो राज ॥आ०॥८॥
'सुन्दरा' देवी जन्मियो, लाखीणो नग लाल हो राज ।
सुत 'रुघनाथ' शाहरौ, गाहे दोयण गज ढाल हो राज ॥आ०॥९॥
रहणी करणी राजरी, आतो म्हारे मनड़े मानी हो राज ।
खीर सायर भारी क्षमा, ए तो गौतम जेहड़ा ज्ञानी हो राज॥आ०१०·
चिरजीवो राजस करो, श्री'जिनमहेन्द्र' सूरिन्द्र हो राज ।
'राज'सदाइ राजनै, एतो इसड़ी दै आशीस हो राज ॥आ०॥११॥

॥ इति भास सम्पूर्णम् ।

महोपाध्याय राजसोमाष्टकम्

श्रेयस्कारि सतां यदाशु चरितं, सामोदमाकर्णितं ।
कर्णाभ्यां सततं मतं मतिभृतां, सद्भूत भावान्वितम् ।।
विभ्राणास्तदनन्त कांति कलिताः कारुण्य लीलाश्रिताः ।
श्रीमत्पाठक राजसोमगुरवस्ते संतु मोदप्रदाः ।।१।।
येषां चारु मुखोद्गताः सुललिता वाचो निशम्योल्लस-
द्रूपं वीक्ष्य पुनः प्रमोद जनकं लावण्य लीलागृहम् ।।
प्राप्तानंद कदंबकेन मनसा स्वस्य श्रुतीनां दृशा-
मष्टानांच विनिर्मितं फल युनां मेने ध्रुवं शाश्वतः ।।२।।
चित्तं सर्व सुपर्वणामपि विशद्वाचस्पतेर्भाषितं ।
माधुर्येण तिरश्चकार सहसा नादीनवं यद्वचः ।।
शास्त्रासक्तधियां सदैव सुधियां चेतश्चमत्कारकृत् ।
दुर्वादि द्विरदौघ दर्प दलने शार्दूल विक्रीडितम् ।।३।।शा० छंद।।
प्राप्त प्रदोषोदयमंकगर्भितं ? चंद्रं दधच्चारु तयैकमम्बरम् ।
आमोद संदोह मनारतं मतं चैतन्य भाजां वितनोति चेतसि
(यदितिशेषः) ।।४।।
संभाव्यते तन्मधुरं निराश्रवं नित्योदयं तद्दिद्वतयं विराजत ।
श्रीराजसोमोत्तम नाम विश्रुते यत्रास्पदे किं खलु तस्य वर्णनम् ।।५।।
वंदे समग्रावयवानवद्यतां वीक्ष्यानुरक्तैरिव पेशलैर्गुणैः ।
हित्वामिथो द्वेषमलंकृत स्थितीन् योगीन्द्र वंशाहितलक्षणान्गुरून् ।।६।।
इन्द्रवंशावृत्तम् ।।

विशद गुण निधानं साधुवर्ग प्रधानं ।

कृत कुमत पिधानं सत्कृतौ सावधानम् ॥

धृतिरुचिर विधानं, सर्व विद्या दधानं ।

गुरुमनघ विधानं प्राप्यतं सन्निधानम् ॥७॥

पद्मबंध ॥

प्रणमत गुरुभक्त्या भक्तलोका विशुद्धै-

रति निभृत यशोभिः शोभमानं विमानम् ॥

विजित निखिल लोकोद्दाम कामस्य जेतुः ।

स्फुट शुभ मति माला मालिनी यस्य वृत्तिः ॥८॥युग्मं॥

मालिनीवृत्तम् ॥

इत्थं श्रीराजसोमाख्या महोपपद पाठकाः ।

संस्तुताः संतु चिद्दान क्षमाःकल्याणकांक्षिणाम् ॥९॥

इति विद्यागुरूणामष्टकम् । पं० रायचंद्रजिद्हर्षचंद्र जित्कृतेऽष्टक-मिदं लिखितं पं० खुस्यालचंद्रेण (पत्र १ महिमा० बं० नं० ७४)

वाचनाचार्य-अमृत धर्माष्टकम् ।
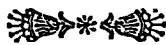
श्रीवाचनाचार्यपद प्रतिष्ठा गणीश्वरा भूरिगुणैर्गरिष्ठाः ।
सत्य प्रतिज्ञामृतधर्म संज्ञाः जयन्तु ते सद्गुरवो गुणज्ञाः ॥ १ ॥
गणाधिप श्रीजिनभक्तिसूरि, प्रशिष्य संघात सुविश्रुतानाम् ।
येषां जनिः श्रीमति वृद्धशाखे उकेश वंशेऽजनि कच्छदेशे ॥ २ ॥
भट्टारक श्री जिनलाभ सूरयः श्रीयुक्त प्रीत्यादिम सागराश्च ये ।
आसन् सतीर्थ्याः किल तद्विनेयतामवाप्य यैः प्राप्तमनिंदितं पदम् ॥३॥
शत्रुंजयाद्युत्तम तीर्थयात्रया सिद्धांतयोगोद्वहनेन हारिणा ।
संवेग रंगाद्दत चेतसा पुनः पवित्रितं यैर्निजजन्म जीवितम् ॥ ४ ॥
जिनेन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमो वरेण्य हेम्नः कलशैर्विराजितः ।
व्यधापि(यि?) संघेन च पूर्व मंडले येषां हितेषामुपदेशतः स्फुटम् ॥५॥
प्रभूतजंतून् प्रतिवोध्य ये पुनः स्वर्गंगता जेसलमेरुसत्पुरे ।
समाधिना चंद्र शराष्टभूमिते संवत्सरे माघ सिताष्टमी तिथौ ॥ ६ ॥
स्थानाङ्ग सूत्रोक्त वचोनुसाराद्विज्ञायते देवगतिस्तुयेषाम् ।
यतो मुखादात्म विनिर्गमोभूत्साक्षात्तु विज्ञानभृतो विदंति ॥ ७ ॥
एवं विधाः श्रीगुरवः सुनिर्भरं कृपापराः सर्वजनेषु साम्प्रतम् ।
क्षमादि कल्याण गणि प्रति स्वयं प्रमोदकृद्द्राग् ददतु स्वदर्शनम् ॥८॥

इति श्रीमदमृतधर्म गुरूणामष्टकम् ।

उपाध्याय क्षमा कल्याणाष्टकम् ।

(१)

चिदब्धेः पारज्ञः स्फुरदमल पङ्के रुह मुखो,

मुदानंत ध्यायी मुनि गणवरो मारशमनः ।

सदा सिद्धांतार्थं प्रकटन परो वाक्पति समः,

क्षमाकल्याणोऽसौ नयनस्मृतिगामी भवतु मे ॥१॥

गुरो तवांघ्रिदर्शनं मदीय मानसे मुदे ।

भवेद्यथैव केकिनां गिरौ पयोद लोकनम् ॥२॥

महोकलायदीयगां निपीय कर्ण संपुटैः ।

भवंति मोदसंयुताः जनाः सुशर्म्म भागिनः ॥३॥

तपः पुंज युजोऽजस्रं ध्यान संमग्न चेतसः ।

क्षमाकल्याण सन्नाम्नो गुरून्वन्दे गुरुद्युतीन् ॥४॥

गुरुं ज्ञानप्रदं नौमि सद्धर्माचार चंचुरं ।

यदक्षि करुणा दृष्टैः पूतोऽधर्मी भवत्वरं ॥५॥

विरामं विपदां शश्वत्स्मरतां भूमि मण्डले ।

वन्दारु नर मन्दारमुपासे गुरु पत्कजं ॥६॥

मोह मास्थत्सदा सेव्योहृद्वाक् संहननैर्मया ।

योयं गायेयं वर्णाभः सौजन्याद वनौचिरं ॥७॥

काम मोह राग रोष दुष्ट दाव वारिदस्य ।

दर्शनं जनाघहारि अस्तुमे सुपाठकस्य ॥८॥
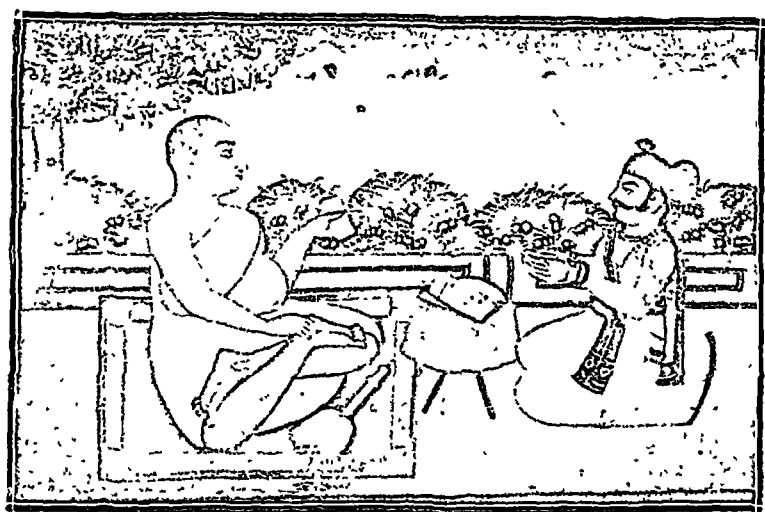
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी

(श्रीहरिसागरसूरिजीकी कृपासे प्राप्त)

यद्वाणी मुदमातनोति कृतिनां, पूतात्मनां नित्यशः ।
सद्बीजंवृपशाखिनः सुरसरिन्नीराजुना सन्ततं ॥
योगारूढ़ मुनीद्र मानस सरो वासं विधाय स्थिता ।
तां पीत्वा जलदाम्बु चातक इवहृन्मे यथाहृष्यति ॥६॥

ॐ परलोक गतानां श्री गुरूणां स्तवः ॐ

(२)

सर्वं शास्त्रार्थ वक्तृणां, गुरूणां गुरु तेजसाम् ।
क्षमा कल्याण साधूनां, विरहोमे समागतः ॥१॥
तेनाहं दुःखितोजऽस्रं विचरामि महीतले ।
संस्मृत्य तद्विरोगुर्वीं, धैर्य्यं मादाय संस्थितः ॥२॥
वीकानेर पुरे रम्ये, चातुर्वर्ण्य विभूपिते ।
क्षमाकल्याण विद्वांसो, ज्ञान दीप्रास्तपस्विनः ॥३॥
अग्न्यंद्रि करि भू वर्षे, (१८७३) पोप मासादिमे दले* ।
चतुर्दशो दिन प्रांते सुरलोक गतिगताः ॥४॥युग्मं ॥
वन्देहं श्रीगुरून्नित्यं भक्ति नम्रेण कर्मणा ।
मदुपकार कृताः श्रेण्यः स्मर्यन्ते सततं मया ॥५॥
गृहं पवित्री कुरुमे दयालो, गुरो सदापाद सरोजन्यासैः ।
लुनोहि जाड्यं मनसिस्थितं वै, संस्कारवत्या च गिरा सदात्वं
श्रीःस्तात् सतां सदा ॥६॥

---

* कृष्ण (भव्य) चतुर्दशी प्रांते ।

सेवक सरूपचन्दरो कह्यो

उपाध्याय जयमाणिक्यजीरो छंद

दोहा

सरस सबुध दिये शारदा, सुंडाला सप्रसाह(द?)।
गुण गाउं 'घमडो' जती, बुध समपो वरदाह ॥ १ ॥
चैत्य प्रसाद चिणाविया, कर जिण इधका कोड़।
चहुं कूटां लग नाम चढ, हुवे न किण सुं होड ॥ २ ॥
जैन धरम धारया जुगत, साझण शील सनाह।
'हरखचंद' पाट 'जीवण जी' हुवा, सिध सहु करै सराह ।३।
खरतर वंश ओपम खरा, बांचे सकत्र बखाण।
पण धारी 'जीवणदास' पट, साचो 'घमंड' सुप्रमाण ॥ ४ ॥

॥ छंद जाति रोमकंद ॥

पण धारीय 'जीवणदास' तणे पट, थाट घणे 'घमड़ेश' जती।
सरसत सकत उकत समापण, नीत पत दीयण सुमत नीती ॥
जस वाण सचांण सचाण सहव्राचै, परदेश प्रवेश कीरत केती।
नर नार उच्छाव करै व्हो नारद, वारद ज्युं इधकार भती ॥प०॥
संवत् 'अढार वरस पचीस ही'. मास 'वैशाख सुद छठ' मीती।
परवाण वाखाण पतष्ठा हो पुरतः, पेख रहे दस देस पती ॥
नीरख परख करै वहु नाईक, वाइक पढ़ै कवराव बती ॥ प० ॥

पूजा अरचा मंड पाट पटंबर, वाजत झालर संख वती ।
परानो ऐम स कोई पयपै, न्यात कहै धन धन नोती ॥
वड़वा रस कोसै सार वखाणौ, जस जोर हुवो चहुं कुंट जेती ॥प०॥
कर कोड सहोड करै कव कीरत, ध्यान धरै को ग्यान ध्रती ।
दीयै दान घणा सनमान सदताहो, पुज जणेसुर पाइ वती ॥
ईधकार करै जीणवार सुजाणे, आण न कोईण ईढ इनी ॥ प० ॥

॥ कवित्त ॥

खरतर गच्छ जस खटण, पाट उजवाल वढ़ै प्रव(ण?) ।
'हरखचंद' हरा हेत, वरा 'जीवण' जी वाटण ॥
'सुन्दरदास' सपूत, वले 'वस्तपाल' वखाणु ।
'दीपचंद' दरियाव ओपमा 'अरजन' जाणुं ॥
'जीवणदास' पुठ खटण सुजस, वड़ शाखा जिम विस्तरौ ।
परवार पुत 'घमडेश' रो, रवि जितरौ अविचल रहो ॥१॥
॥ श्री ॥ उ० ॥ श्री जयमाणिक्य जीरो ए कवित्त छे ॥

॥ जैन-न्याय ग्रन्थ पठन सम्बन्धी सवैया ॥

स्याद वाद जै (जय?) पताका 'नयचक्र' 'नैं (नय?) रहस्य'
'पंचअस्तिका यं' 'रत्नआकरावतारिकां' ।
कठिन 'प्रमेय कौंल मारतंड' 'सम्मति' सुं ,
'अष्टसहस्री' वादि गजकी विदारिका ।
'न्याय कुसुमाञ्जलि' जु 'तरकरहस्यदीपो(का)' ,
'स्यादवाद-मंजरी' विचार युक्ति धारिका ।
केइ 'किरणावली' से तर्क शास्त्र जैन मांझि,
कहा नैयायिकादि पढो शास्त्र पारका ॥१॥

❀ ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह ❀

द्वितीय विभाग

(खरतरगच्छकी शाखाओं सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य)

वेगड़ खरतरगच्छ गुर्वावली

पणमिय वीर जिणंद चंद, कय सुकय पवेसो।
खरतर सुरतरु गच्छ स्वच्छ, गणहर पभणेसो।
तसु पय पंकय भमर सम, रसजि गोयम गणहर।
तिणि अनुक्रमि सिरि नेमिचंद मुणि, मुणिगुण मुणिहर ॥ १ ॥
सिरि 'उद्योतन' 'वर्द्धमान', सिरि सूरि 'जिणेसर'।
थंभणपुर सिरि 'अभयदेव', पयडिय परमेसर।
'जिणवल्लह' 'जिनदत्त' सूरि, 'जिणचंद' मुणीसर।
'जिणपति' सूरि पसाय वास, पहु सूरि 'जिणेसर' ॥ २ ॥
भवभय भंजण 'जिणप्रबोध', सूरिहिं सुपसंसिय।
आगम छंद प्रमाण जाण, तप तेउ दिवायर।
सिरि 'जिन कुशल' मुणिंद चंद, धीरिम गुण सायर ॥३॥
भाव(ठ)—भंजण कप्प रुक्ख, 'जिन पद्म' मुणीसर।
सब सिद्धि बुद्धि समिद्धि वृद्धि, 'जिणलद्धि' जइसर।
पाप ताप संताप ताप, मलयानिल आगर।
सूरि शिरोमणि राजहंस, 'जिणचंद' गुणागर ॥ ४ ॥

बोहिय श्रावक लाख साख, सिव मुख सुख दायक ।
महियलि महिमामाण जाण तोलइ नहु नायक ।
'झंझण' पुत्त पवित्र चित्त, कित्तिहिं कलि गंजण ।
सूरि 'जिणेसर' सूरि राउ, रायह मण रंजण ॥ ५ ॥
'भीम' नरेसर राज काज, भाजन अइ सुंदर ।
वेगड नंदन चंद कुंद, जसु महिमा मंदर ।
सिरि 'जिनशेखर सूरि' भूरि, पइ नमइ नरेसर ।
काम कोह अरि भंग संग जंगम अलवेसर ॥ ६ ॥
संपइ नवनिध विहित हेतु, विहरइ मुहि मंडलि ।
थापइ जिणवर धम्म कम्म, जुत्तउ मुणि मंडलि ।
जां गयणंगणि 'चंद सूरि', प्रतपइं चिर काल ।
तां लग सिरि 'जिणधम्म सूरि', नंदउ सुविशाल ॥ ७ ॥

॥ श्री जिनेश्वर सूरि गीत ॥

सूरि सिरोमणि गुण निलो, गुरु गोयम अवतार हो।
सदगुरु तुं कलियुग सुरतरु समो, वांछित पूरणहार हो ॥ १ ॥
सदगुरु पूर मनोरथ संघना, आपो आणंद पूर हो। सद०।
विघन निवारो वेगला, चित चिंता चकचूर हो ॥ सद० ॥ २ ॥
तुं 'वेगड' विरुदे वडो, 'छाजहडां' कुल छात्र हो।
गच्छ खरतर नो राजियो, तुं सिंगड वर गात्र हो ॥सद०॥३॥
मद चूर्यो 'मालू' तणो, गुरु नो लीधो पाट हो।
सम वरण ! लीधो सहु, दुरजन गया दह वाट हो ॥सद०॥४॥
आराधी आणंद सुं, वाराही त्रि राय हो।
धरणेन्द्र पिण परगट कियो, प्रगटी अति महिमाय हो ॥सद०॥५॥
परतो पूर्यो 'खांन' नो, 'अणहिल वाडइ' मांहि हो।
महाजन बंद मुकावीयो, मेल्यो संघ उछाह हो ॥सद०॥६॥
'राजनगर' नइं पांगुर्या, प्रतिबोध्यो 'महमद' हो।
पद ठवणो परगट कियो, दुख दुरजन गया रद हो ॥सद०॥७॥
सींगड सींग वधारिया, अति ऊंचा असमान हो।
धींगड भाइ पांचसइं, घोडा दीधा दान हो ॥सद०॥८॥
सवा कोटि धन खरचीयो, हरख्यो 'महमद शाह' हो।
विरुद दियो वेगड तणो, प्रगट थयो जग मांहि हो ॥सद०॥९॥

गुरु श्रा (सा?) वक बहु वेगड़ा, वलि वेगड पतिशाह हो ।
विरुद धर्यों गुरु ताहरो, तुझ सम वड कुण थाय हो ॥सद०॥१०
श्री 'साचउर' पधारीया, मुं (पुं)हता गच्छ उछरंग हो ।
'वेगड' 'थूलग' गोत्र वे, मांहो मांहि सुरंग हो ॥सद०॥११॥
'राडद्रही' थी आवीया, 'लखमसीह' मंत्रीस हो ।
संघ सहित गुरु वंदीया, पहुंती मनह जगीस हो ॥सद०॥१२॥
'भरम' पुत्र विहरावीयो, राखण कुल नी रीत हो ।
च्यार चौमासा राखीया, पाली धर्म नी प्रीत हो ॥सद०॥१३॥
संवत 'चउद त्रीसा' समै, गुरु संथारो कीध हो ।
सरग थयो 'सकतीपुरै', वेगड धन जस लीध हो ॥सद०॥१४॥
पाटे थाप्यो 'भरम' नें, कर अधिको गहगाट हो ।
थूंभ मंडाव्यो ताहिरो, जा 'जोसा(धा?)ण' री वाट हो ॥सद०॥१५॥
लोक खलक आवे घणा, दादा तुझ दीवाण हो० ।
जे जे आस्या चिंतवइ, ते ते चढ़इ प्रमाण हो ॥सद०॥१६॥
पट पुत्री उपर दियो, 'तिलोकसी' नइ पुत्र हो ।
पूर्यो परतो मन तणो, राख्यो घर नो सूत्र हो ॥सद०॥१७॥
तूं 'झाझण' सुत गुण निलो, 'झबकु' मात मल्हार हो ।
'जिणचंद्र' सूरि पाटइ दिनकरु, गच्छ वेगड सिंणगार हो॥सद०॥१८॥
स(ह)गुरु 'जिणेसर सूरजी', अरज एक अवधार हो ।
सदगुरु उदय करेज्यो संघ मइं, बहु धन सुत परिवार हो ।सद०।१६।
"पोस सुदि तेरस' नइं दिनइं, यात्रा कीधी उदार हो ।
श्री 'जिनसमुद्र' सूरिंद नइं, करज्यो जयजयकार हो ।सद०.२०।

॥ श्री जिनचंद्र सूरि गीत ॥

राग:—मारू

आज फल्यो म्हारइ आंबलोरे, परतख सुरतरु जांण ।
कामधेनु आवी घरे रे, आज भले सुविहाण । पधार्या पूज्यजी रे।
श्री 'जिणचंद सूरिंद' पधार्या पूजजी रे ।
श्री चंद कुलांबर चंद पधार्या, श्री खरतर गच्छ नरिंद ।पू०॥१॥
श्री वेगड गच्छ इंद पधार्या पूज्यजी रे ।
ढोल दमामा वाजीया रे, वाज्या भेर निसांण ।
सुमति जन हरषित थया रे, कुमति पड्यो भंडाण ॥ प० ॥२॥
घरि घरि गूडी ऊछलइ रे, तलीया तोरण बार ।
पाखंडी कांनइं कीया रे, वेगड गच्छ जयकार ।गच्छ खरतरजू।३
सूहव बधावो मोतीयइ रे, भर भर थाल विशाल ।
खोटा कूड कदाग्रही रे, ते नाठा तत्काल ॥ प० ॥ ४ ॥
वडइं नगर 'साचोर' मइं रे, श्री पूज उग्यो भांण ।
तारां ज्युं झाखां थया रे, खोटा अ(उ)र अजाण ॥ प० ॥ ५ ॥
पाटि विराज्या पूजजीरे, सुललित वांण (वखाण) ।
अशुद्ध प्ररूपक मयलडा रे, त्यांना गलीयां मांण ॥ प० ॥ ६ ॥
'वाफणा' गोत्र कलश निलोरे, शाह 'रूपसी' नो नंद ।
"श्री जिन समुद्र" कहइ पूज्यजी रे, प्रतपो ज्युं रविचंद ।प०।७।

———

॥ जिनसमुद्र सूरि गीतम् ॥

ढाल—कडखउ, राग गुंढ रामगिरि सोरठ अरगजो

सुधन दिन आज जिन समुद्र सूरिंद आयो, सूरिंद आयो।
वडो गच्छराज सिरताज वर वड वखत,
तखत 'सूरेत' मइं अति सुहायो ॥ १ ॥
आवीयइं पूज्य आणंद हुआ अधिक,
इन्द्रि पिण तुरत दरसण दिखायो।
अशुभ दालद्र तणी दूर आरति टली,
सकल संपद मिली सुजस पायो ॥ २ ॥
उदय उदयराज तन सकल कीधो उदय,
वान वेगड गछइ अति वधायो।
जांचकां दान दीधा भली जुगत सुं,
सप्त क्षेत्रे वलि सुवित्त वायो ॥ ३ ॥
सवल साम्हो सजे स गुरु निज आणीया,
शाह 'छतराज' मनमइ उमायो।
गोहणी सकल हरषइ करी गह गही,
विविध मणि मोतीया सुं वधायो ॥ ४ ॥

पूज पद ठव्रण संघ पूज पर भावना,

करे निज वंश 'छाजहड' सुभायो ।

गंग गुण दत्त राजड जिसा कृत करी,

चंद लग सुजस नामो चढायो ॥ ५ ॥सु०॥

छहां वरणां दीयइं दान दानी छतो, कलियुगइ करण साचो कहायो ।

सगुरु 'जिनसमुद्र सूरिंद' गौतम जिसौ,

धरमवंतइ खरइं चित ध्यायो ॥ ६ ॥

चतुर जिण चतुर विध संघ पहिरावीया,

जगत्र मइं सुजस पडहो वजायो ।

मूल धर्म मूल पख चित मइं धारता,

जैन शासन तणो जय जगायो ॥ ७ ॥

गुरे 'जिनसमुद्र सूरिंद' साचो गुरु,

शाह 'छत्रराज' सेठइ सवायो ।

विह्मे वड शाख ध्रौ जेम वाधो सदा,

गुणीय "माइदास" इम सुजस गायो ॥८॥सु०॥

खरतरगच्छ पिप्पलक शाखा

॥ गुरु पट्टावली चउपइ ॥

समरुं सरसति गौतम पाय, प्रणमुं सहिगुरु खरतर राय ।
जसु नामइं होयइ संपदा, समरंता नावइ आपदा ॥ १ ॥

पहिला प्रणमुं 'उद्योतन' सूरि, बीजा 'वर्द्धमान' पुन्य पूरि ।
करि उपवास आराहि देवी, सूरि मंत्र आप्यो तसु हेवि ॥२॥

वहिरमाण 'श्रीमंधर' स्वामि, सोधावि आव्यउ शिर नामि ।
गौतम प्रतइं वीरइं उपदिस्यउ, सूरि मंत्र सुधउ जिन कह्यउ ॥३॥

श्री 'सीमंधर' कहइ देवता, धुरि जिन नाम देज्यो थापतां ।
तास पट्टि 'जिनेश्वर सूरि', नामइं दुख वली जाइ दूरि ॥४॥

'पाटण' नयर 'दुल्लभ' राय यदा, वाद हूओ मढपति स्युं तदा ।
संवत 'दस असीयइ' वली, खरतर विरुद दीयइ मनिरली ॥५॥

चउथइ पट्टि 'जिनचंद सूरिंद', 'अभयदेव' पंचमइ मुणिंद ।
नवंगि वृति पास थंभणउ, प्रगटयउ रोग गयुं तनु तणउ ॥६॥

श्री 'जिनवल्लभ' छट्ठइ जाणी, क्रियावंत गुण अधिक वखाणी ।
श्री 'जिनदत्त सूरि' सातमउ, चोसठि योगणी जसु पय नमइ ॥७॥

बावन वीर नदो वलि पंच, माणभद्र स्युं थापी संच ।
व्यंतर वीज मनावी आंण, थूंभ 'अजमेरु' सोहइ जिम भाण ॥८॥

श्री 'जिनचंद्र सूरि' आठमइ, नरमणि धारक 'दिल्ली' तपइ ।
तास शीस 'जिनपति' सूरिंद, नवमइ पट्टि नमुं सुखकंद ॥९॥

'जिन प्रबोध 'जिनेश्वर सूरि', श्री 'जिनचंद्र सूरि' यश पूरि ।
वंदु श्री 'जिनकुशल' मुणिंद, कामकुंभ सुरतरु मणिकंद ॥१०॥

चउदसमइ 'जिनपद्म सूरिस', 'लब्धि सूरि' 'जिनचंद' मुणीश ।
सतर(स)मइ 'जिनोदय' सूरि, श्री 'जिनराज सूरि' गुण भूरि ।११।
पाटि प्रभाकर मुकुट समान, श्री 'जिनवर्द्धन सूरि' सुजाण ।
शीलइ सुदरसण जंबू कुमार, जसु महिमा नवि लाभइ पार ।।१२।।
श्री 'जिनचंद सूरि' वीसमइ, समता समर (स) इंद्री दमइ ।
वंदो श्री 'जिनसागर सूरि', जास पसाइ विघन सवि दूरि ।।१३।।
चउरासी प्रतिष्टा कीद्ध, 'अहमदाबाद' थूभ सुप्रसिद्ध ।
तासु पदइ 'जिनसुंदर सूरि', श्री 'जिनहर्ष सूरि' सुय पूरि ।।१४।।
पंचवीस मइ 'जिनचंद्र सूरिंद', तेज करि नइ जाणइ चंद ।
श्री 'जिनशील सूरि' भावइ नमो, संकट विकट थकी उपसमउ ।।१५।।
श्री 'जिनकीर्त्ति' सूरि सुरीश, जग थलउ जसु करइ प्रशंस ।
श्री 'जिनसिंह' सूरि तसु पट्टइ भणुं, धन आवइ समरंता घणुं ।।१६।।
वर्त्तमान वंदो गुरुपाय, श्री 'जिनचंद' सूरिसर राय ।
जिन शासन उद्यउ ए भाण, वादी भंजण सिंह समाण ।।१७।।
ए खरतर गुरु पट्टावली, कोधी चउपइ मन नी रली ।
ओगणत्रीश ए गुरुना नाम, लेतो मनवंछित थाये काम ।।१८।।
प्रह उठी नरनारी जेह, भणइ गुणइ रिद्धि पामइ तेह ।
'राजसुंदर' मुनिवर इम भणइ, संघ सहु नइ आणंद करइ ।।१९।।
इति श्री गुरु पट्टावली चउपइ समाप्त ।। श्रा० कीलाइ पठनार्थे ।। मो० द० दे० ।।

यह पट्टावली श्री जिनचंदके शिष्य पं० राजसुंदरने देवकुल पाटनमें सं० १६६९ वैशाख वदि ६ सोम श्रा० थोभणदे के लिये लिखी है। (देवकुलपाटक तृतीयावृत्ति पृ० १६)

शाह लाधा कृत

श्री जिन शिवचंद सूरि रास

(रचना संवत १७६५ आश्विन शुक्ल पंचमी, राजनगर)

दूहा :—

शासन नायक समरीये, श्री 'वर्द्धमान' जिनचंद ।
प्रणमुं तेहना पद युगल, जिम लहुं परिमाणंद ॥ १ ॥

'गौतम' प्रमुख जे मुनिवरा, श्री (सोहम) गणराय ।
'जंबू' 'प्रभवा' प्रमुखने, प्रणमंता सुख थाय ॥ २ ॥

श्री वीर पटोधर परमगुरु, युगप्रधान मुनिराय ।
यावत् 'दुपसह सूरी' लगें, प्रणमुं तेहना पाय ॥ ३ ॥

तास परंपर जाणीये, सुविहित गच्छ सिरदार ।
'जिनदत्त' ने 'जिनकुशल' जी, सूरि हुवा सुखकार ॥ ४॥

तस पद अनुक्रमे जांणीये, 'जिन वर्द्धमान सूरिंद' ।
'जिन धर्म सूरी' पाटोधरू, 'जिनचंद सूरी' मुणिंद ॥ ५ ॥

'सिवचंद सूरि' जाणीये, देश प्रदेश (पाठा० प्रसिद्ध) छे नाम ।
खरतरगच्छ सिर सेहरो, संवेगी गुणधाम ॥ ६ ॥

तस गुण गण नी वर्णना, धुर थी उत्पति सार ।
नाम ठाम कही दाखवुं, ते सुणज्यो नर नारि ॥ ७ ॥

ढाल (१)—श्रेणिक मन अचरज थयो । ए देशी ।

मरुधर देश मनोहरू, नगर तिहां 'भिनमालो' रे ।
राजा राज करे तिहां, 'अजित सिंघ' भूपालो रे मरु० ॥१॥

गढ़ मढ़ मंदिर शोभता, वन वाड़ी आरामो रे ।
सुखीया लोक वसे तिहां, करे धरमा ना कामो रे ॥मरु०॥२॥

तेह नगर मांहे वसे, साह 'पदमसी' नामो रे ।
'ओश(वाल)वंश'साखा वडी, 'रांका' गोत्र अभिरामो रे॥मरु०॥३॥

तस घरणी 'पदमा' सती, श्राविका चतुर सुजाणो रे ।
सुत प्रश्रव्यो शुभ योग(ति) थी, 'सिवचंद' नाम प्रमाणो रे ।मरु०।४।

कुमर वधे दिन दिन प्रतइ, सेठजी हृदय विमासे रे ।
पूत्र निसाले मोकलूं, अध्यापक ने पासे रे ॥ मरु० ॥ ५ ॥

भणी गुणी प्रोढा (पाठा० मोटा) थयां, बोले मधुरी भाषो रे ।
संसारिक सुख भोगना, कुमर नें नहीं अभिलाषो रे ।मरु०।६।

इणे अवशर गुरु विचरता, तिणहीज नगरीमें आव्या रे ।
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' जी, श्रावक जन मन भाव्या रे ।मरु०।७।

पइसारो महोछव करी, नगर मांहे पधरावे रे ।
श्रावक श्राविका तिहां मिली, गीत ज्ञान गुण गावे रे ।मरु०।८।

धन धन ते दिन आज नो, धन ते वेला जाणो रे ।
जेणे दिन सदगुरु वांदीयइ, कीजिये जन्म प्रमाणो रे ।मरु०।९।

दूहा—थिर चित जाणी परषदा, गुरूजी दीये उपदेश ।
जीवाजीव स्वरूप ना, भाख्या सकल विशेष ॥ १ ॥

वाणी श्री जिनराज नी मीठी अमीय समाण।
दीधी सदगुरु देशना, रीझ्या चतुर सुजाण ॥ २ ॥
शाह 'पदमसी' कुंअरे, धर्म सुणी तिणि वार।
वयरागें चित वासीयो, जाणी अथिर संसार ॥ ३ ॥
कुमर कहे श्री गुरु प्रते, करजोड़ी मनोहार।
दीक्षा आपो मुझ भणी, उतारो भवपार ॥ ४ ॥
जिम सुख देवाणुप्रिये, तिम कीजे सुविचार।
अनुमत लेइ कुमरजी, हवे लेसे संयम भार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—जी रे जी रे स्वामी समोसर्या०। ए देशी०।

अनुमति द्यो मुझ तातजी, लेसुं संजम भारो रे।
ए संसार असार मां, सार धरम सुखकारो रे। अनु०। १।
वचन सुणी निज पुत्र नां, मात पिता दुख पावे रे।
संयम छै वछ दोहिलुं, सु होय नाम धरावे रे। अनु०। २।
अति आग्रह अनुमति दीयइ, मात पिता मन पाखै रे।
उच्छव सुं व्रत आदरे, संघ चतुरविध साखै रे। अनु०। ३।
संवत 'सतर त्रहसठे', लीये दीक्षा मन भावे रे।
'तेर वरस' ना कुमर पणे, नरनारि गुण गावै रे। अनु०। ४।
मन वच काया वश करी, रंगे चारित्र लीधो रे।
पाले व्रत निरमल पणे, मनह मनोरथ सीधो रे। अनु०। ५।
मासकल्प तिहां किण रही, श्री पूज्य कीधो विहारो रे।
गाम नगर प्रतिबोधता, करता भवि उपगारो रे। अनु०। ६।
कुमर भणे अति उलटै, गुरु पासै मन खांतै रे।
ज्ञानावरणी क्षय उपशमे, भणीया सूत्र सिद्धान्तो रे। अनु०। ७।

व्याकरण नाममाला भण्या, वलि भण्या काव्य ना ग्रन्थो रे।
न्याय तर्क सवि सीखीया, धरता साधुनो पंथोरे। अनु०। ८।
गीतारथ गणधर थया, लायक चतुर सुजाणो रे।
वयरागें मन भावता, पाले श्री गुरु आणो रे। अनु०। ६।

दूहा—पाट योग जाणी करी, श्री गुरु करे विचार।
पद आपुं 'सिवचंद'ने, तो होय जय जयकार ॥ १ ॥
निज समय जाणी करी, श्री गुरु कीध विहार।
'उदयपुरे' पाउधारीया, उच्छव थया अपार ॥ २ ॥
निज देहे बाधा लही, समय (पाठा० संयमें) थया सावधान।
अणशण आराधन करी, पाम्यां देव विमान ॥ ३ ॥
संवत 'सतर छहोत्तरे', 'वैशाख' मास मझार।
'सुदि सातम' शुभ योगे तिहां, आपुं (प्युं) पद श्रीकार ॥४॥
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' नें, पाटे प्रगट्यो भाण।
श्री 'जिनचंद सूरीश्वरू', प्रतपे पुण्य प्रमाण ॥ ५ ॥

ढाल ३—नींदलडी वयरण हुइ रही। ए देशी०।
भावे हो भवियण सांभलो, 'सिवचंदजी'नो हो (भलो) रास रसालके।
जे नित गावै भाव सुं, तस वाधे हो घर मंगल मालके ॥ १ ॥
अवशर लाहो लीजिये। आंकणी०।
श्रावक 'उदयापुर' तणा, पद महोछव हो करवा मन रंग के।
समय लही निज गुरु तणो, धन खरचे हो धरमे दृढ़ रंग के।अ०।२।
'दोसी भिक्षु'सुत तिणे (समे) करे, वीनति हो कुशल संघ एमके।
रे हरे श्रीगुरू नो अवसर कीहां, अमो करसुं हो पद महोछव प्रेमके।३।

संवत 'सतर छीउत्तरे', मास 'माधव हो सुदि सातम' सारके ।
राणा 'संग्राम' ना राज्य में, करे उछव हो श्रावकतिण वार के ।अ०।४।
श्री संघ भगति करे अति भली, बहु विधना हो मीठा पकवानके ।
शाल दाल घृत घोल सुं, वली आपे हो बहु फोफळ पानके ।अ०।५।
पहेरामणी मन मोद सुं, 'कुशले' 'जोये' हो कीधा गहगाट के ।
जस लीधो जगमें घणो, संतोषीया हो वली चारण भाट के ।अ०।६।
श्री 'जिनचंद' सूरीश्वरू, नित्य दीपे हो जेसो अभिनव सूर के ।
वयरागी त्यागी घणु, सोभागी हो सज्जन गुणे पूर के । अ० । ७ ।
तिहां शिष्य 'हीरसागर' कीयो, अति आग्रह हो तिहां रह्या चौमासके ।
श्री गुरु दीये धर्म देशना, सुणतां होये हो सुख परम उलासके ।अ०।८
धरम उद्योत थया घणा, करे श्राविका हो तप व्रत पचखांण के ।
संघ भगति परभावना, थया उछव हो लह्या परम कल्याण के ।अ०।९।

दोहा—चातुंमास पूरण थये, विहार करे गुरु राय ।
'गुर्जर देश' पाउधारिया, उछव अधिका थाय । १ ।
संवत 'सतर अठोतरे' कर्यो क्रिया उद्धार ।
वयरागे मन वासीयउ, कीधो गछ परिहार । २ ।
आतम साधन साधता, देता भवि उपदेश ।
करता यात्रा जिणंदनी, विचरे देश विदेश । ३ ।
जस नामी 'सिवचंद' जी, चावुं चिहुं खंड नाम ।
संवेगी सिर सेहरो, कीधा उत्तम काम । ४ ।

ढाल (४):—नयरी अयोध्या थी संचर्या ए देशी।

गुज्जर देश थी पधारीया ए, यात्र करण मन लाय। मनोरथ सविफल्या ए,
'शत्रुंजय' गिरवर भणी ए, भेटवा आदि जिन पाय, मनो० । १ ॥
चार मास झाझेरड़ा ए, रह्या 'विमल गिर' पास । मनो० ।
नव्याणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस ।मनो०।२।
तिहां थी 'गिरनारे' जइ ए, भेटीया नेमि जिणंद ।
'जुनेगढ़' यात्रा करी ए, सूरी श्री 'जिनचंद' । म० । ३ ।
गामाणुगामे विहरता ए, आवीया नयर 'खंभात'। म० ।
चोमासुं तिहां किण रह्या ए, यात्रा करी भली भांति ।म०। ४॥
चरचा धर्म तणी करे ए, अरचे जिनवर देव । म० ।
समझू श्रावक श्राविका ए, धरम सुणे नित्य मेव ।म०।५।
तप पचखाण घणा थया ए, उपनो हरष अपार । म० ।
तिहां थी विचरता आवीया ए, 'अहमदाबाद' मझार ।म०।६॥
बिम्ब प्रतिष्ठा घणी थइ (पाठा० करी) ए, वली थया जैन विहार ।म०॥
ते सवि गुरु उपदेश थी ए, समझया बहु नर नारि ।म०।७।
तिहां थी 'मारुवाड' देश मां ए, कीधी 'अर्बुद' यात्र । म० ।
'समेत सिखर' भणी संचर्या ए, करता निरमल गात्र ।म०।८॥
कल्याणक जिन वीसना ए, वीसे टुंके तेम (पाठा० तास) । म० ।
यात्रा करी मन मोद सुं, बाध्यो अति घणो प्रेम । म० । ९ ।

दोहा—'समेतसिखर' नी यातरा, कीधी अधिक उछाह ।
श्री पार्श्वनाथ जिन भेटीया, नगरी 'वणारसी' मांह ।१।

'पावापुरी' में पाउधारीया, जिहां श्री वीर निर्वाण।
'चंपापुरी' मांहे वांदीया, श्री वासपूज्य जिनभांण। २।
'राजग्रही' वैभारगिरि, यात्रा करी संघ साथ।
'हथीणापुर' जिन वांदीया, शांति कुंथु अरनाथ। ३।
'दि(दं)ली' चौमासुं रही, करता यात्र विशेष।
विहार करतां पुनरपि, आव्या वली 'गुर्जर देश'। ४।

ढाल (५):—पाटोधर पाटीये पधारो। ए देशी।

जिन यात्रा करी गुरु आव्या, श्रावक श्राविका मन भाव्या।
पटोधर वांदीये गुरूराया, जस प्रगमे राणाराया। प०। १। आं०।
'भणसाली' 'कपूर' ने पासे, तिहां 'सिवचंद' जी चौमासे। पटो०।
जस प्रणमें राणा राया, पटोधर वांदीचे गुरुराया। आंकणी०।
देशना दीये मधुरी वाणी, सुणतां सुख लहै भवि प्राणी। पटो०।
बांचे 'भगवती' सूत्र वखाणै, समझ्या तिहां जाण सुजांण। प०। २।
ज्ञान भगति थइ अति सारी, जिन वचन की जाऊं वलिहारी।प०।
मली श्राविका जिन गुण गावे, भरी मोती ए थाल वधावे।प०। ।३।
गहुंली करे गुरूजी नें आगे, शुद्ध बोध बीज फल मांगे। प०।
श्रावक करे धर्म नी चरचा, जिहां जिन पद नी थाये अरचा।प०।४।
नव कल्पे कीधो विहार, शुद्ध धरम तणा दातार। प०।
ईति उपद्रव दूरें कीधो, 'सिवचंदजी' ये यश लीधो। प०। ५।
पुनरपि मन मांहे विचारे, करूं यात्रा सिद्धाचल सार। प०।
'राजनगर' थी कीधो विहार, करी यात्रा 'सेत्रुंज' 'गिरनार'। प० ।६।

तिहां थी रह्या 'दीवे' चोमासुं, जेहनुं धरमें चित वासुं ।प०।
पुनरपि 'सिद्धाचल' आवे, गिर फरस्या मन ने भावे । प० । ७ ।
थई यात्रा जिनेश्वर केरी, गुरु मुगति रमणी कीधी नेरी । प० ।
जिनगुण निरख्या नित्य हेरी, टाली भव भ्रमण नी फेरी । प० । ८ ।
'घोघे' वन्दिर जिन वांदी, करी करम तणी गति मंदी ।प०।
'भावनगरे' देव जुहार्या, दुख दालिद्र दूरे निवार्या । प० । ६ ।

दोहा ।

संवत 'सतर चोराणुंयैं', 'माह' मास सुखकार ।
'भावनगर' थी आवीया, नयर 'खम्भात' मंझार ।। १ ।।
गुरु गुणरागी श्रावके, दीधो आदर मांन ।
गुरुजी दीये धर्म देशना, तात्विक सुधा समान ।। २ ।।
द्वेष करी (पाठा० धरि) कोइ दुष्ट नर, कुमति दुर्भवी जेह ।
यवनाधिप आगल जइ, दुष्ट वचन कहे तेह ।। ३ ।।
सुणीय वचन नर मोकल्या, गुरुनें तेडी ताम ।
यवन कहें अम आपीये, तुम पासे छै दाम ।। ४ ।।
दाम अमे राखुं नहीं, राखुं भगवंत नाम ।
कोप्यो यवनाधिप कहै, खींचो एहनो चाम ।। ५ ।।
पूरव वयर संयोग थी, यवन करे अति जोर ।
ध्यान धरे अरिहंत नुं, न करे मुख थी सोर ।। ६ ।।
संचित कर्म विपाकनां, उदयागत अवधार ।
सहे परिसह 'शिवचन्दजो', ते सुणजो नरनार ।। ७ ।।

ढाल (६) :—वेवे मुनिवर विहरण पांगुर्याजी । एदेशी० ।
'जिनचन्द सूरी' मन मांहे चिन्तवेरे, हवे तुं रखे थाय कायर जीवरे ।

एह थी नरग निगोद मांहे घणीरे, तेंतो वेदन सही सदीवरे ॥ १ ॥
धन धन मुनी सम भावे रह्या रे, तेह नी जइये नित्य वलिहार रे ।
दुःकर परीसह जे अहियासने रे, ते मुनी पाम्या भव नो पाररे॥ध २॥
'खंधग' मुनीना जे शिष्य पांचसैरे, पालक पापीयें दीधा दुःखरे ।
घाणी घाली मुनीवर पीलीयारे, ते मुनि(प्रणम्या)अविचल सुख रे ॥धन०॥३
'गजसुकमाल' मुनी महाकालमें रे, स्मसाने रहीया काउसग्गजो ।
'सोमल ससरे' शीस प्रजालियोजी, ते मुनि प्रणम्या (पाठा० पाम्या)
सुख अपवर्ग जो ॥ध०॥४॥
'सुकोशल' मुनिवर संभारीयेजो, जेह्ना जीवित जन्म प्रमाण रे ।
वाघणे अंग विदार्युं साधुनुंजी, परिसह सही पहुंता निरवाण हो॥ध५॥
'दमदन्त' राजऋपि काउसग रह्याजी, कौरव कटक हणै इंटाल जो ।
परिसह सही शुद्ध ध्याने साधुजो रे, ते पण मुगते गया ततकाल जो
॥ध०॥६॥
'खंधग' ऋपिनें खाल उतारतांजी, कठीन अहीयासें परिसह साधु जो ।
ते मुनी ध्यानें कर्म खपावीनेजी, पाम्या शिवपद सुख निरबाध जो
॥ध०॥७॥
इत्यादिक मुनिवर संभारताजी, धरता निजपद निरमल ध्यान जो ।
जड चेतन नी भावे भिन्नताजी, वेदक चेतनता सम ज्ञान जो॥ध०८॥
तत्वरमण निज वासित वासनाजी, ज्ञानादिक त्रिक शुद्ध जो ।
जडता ना गुण जडमें राखताजी, जेहनी आगम नैगम वुद्धजो॥ध०॥६॥
पुदगल आप्पा (थप्पा) लक्षणे जी, पुद्गल परिचय कीनो भिन्न जो ।
अन्त समय एह्वी आत्मदशाजी, जे राखे ते प्राणी धन्न जो ।ध०१०।

कोपातुर यवने रजनो समे जी, दीधा दुख अनेक प्रकार जो ।
तोहे पण न चल्या निज ध्यान थी जी, सहेता नाडी दंड प्रहार जो।११
हस्त चरण ना नख दुरे कीया जी, व्यापी वेदन तेण अनेक जो ।
हार्यो यवन महादुष्टात्मा जी, जो राखी पूरव मुनी नी टेक जो ।ध०१२
जिम जिम वेदन व्यापे अति घणीजी, तिम सम वेदे आतमराम जो ।
इम जे मुनिवर सम(ता) भावे रमे जी, तेहने होज्यो नित परणाम जो

दूहा :—प्रात समय श्रावक सुणी, पासे आव्या जाम ।
यवन कहै झांखो थइ, ले जाउ निज धाम ।१।
'रूपा वोहरा' ने घरे, तेडी लाव्या ताम ।
हाहाकार नगरे थयो, दुष्ट ना मुख थया स्याम ।२।
'नायसागर' नोझामता, नीरखि परिणिति शांति ।
उत्तराध्यन आदे बहु, संभलावे सिद्धांत ।३।
सकल जीव खमाविनइ, सरणा कीधा च्यार ।
सल्य निवारी मन थकी, पचख्या चारे अहार ।४।
अणशण आराधन करी, चड़ते मन परिणाम ।
समतावंत धीरज गुणे, साध्युं आतम काम ।५।
चोथुं व्रत कोइ आदरे, कोइ नीलव्रण परिहार ।
अगडी नीम केइ उचरे, केइ श्रावक व्रत वार ।६।
संघ मुख्य 'सिवचन्द' जो, वचन कहे सुप्रसिद्ध ।
'हीरसागर' ने गछ तणी, भलो भलामण दीध ।७।
संवत 'सतर चोराणुयें', वैशाख मास मझार ।
पष्ठि दिन कविवार तिहां, सिद्ध योग सुखकार ।८।

प्रथम पोहोर मांहे तिहां, धरता जिननुं ध्यान ।
काल करी प्रायें चतुर पास्या देव विमान ।६।

ढाल ७ :—माइ धन सकपन्न ए, धनजीवी तोरी आज । ए देशी०॥

धन धीरज दृढ़ता, धन धन सम परिणाम ।
जेणे परिसह सही ने, राख्युं जग मांहे नाम ॥१॥
बलिहारी तोरी बुद्धि ने, बलहारि तुम ज्ञान ।
जेणे आतम भावे, आराध्युं शुभ ध्यान ॥२॥
बलिहारी तुम कुल ने, बलिहारी तुम वंश ।
शासन अजुआली, अजुयाल्यो निज हंस ॥३॥
गुरू कुमर पणे रह्या, तेर वरस घर वास ।
शिष्य विनय पणें रह्या, तेर वरस गुरू पास ॥
गच्छनायक पदवी, भोगवी, वरस अढार ।
आयु पूरण पाली, वरस चुमालीस सार ॥४॥
धन धन 'शिवचन्दजी', धन धन तुझ अवतार ।
इम थोके थोके, गुण गावे नर नार ।
करे श्रावक मली तिहां, मांडवी मोटे मंडाण ।
कंचनमय कलसे, जाणें अमर विमाण ॥५॥
तिहां जोवा मलोया हिन्दु मलेछ अपार ।
गाय धवल मंगल, दीये ढोल तणा ढमकार ॥
जय जय नन्दा कहे, लीये डंडा रस सार ।
भेर भूगल साथे, सरणाइ रणकार ॥६॥
वली अगर उखेवे, सोवन फूलें वधावे ।
इम उछव थाते, वन मांहे लेइ आवे ॥
सुकडने अगर सुं, कीधो देही संस्कार ।
निरवाण महोछव, इणि परे कीधो उदार ॥७॥

पुरुषोत्तम पूरो, सूरो सयल विवेक ।
जेणे गछ अजुयाली, राखी धर्मनी टेक ॥
तिहां थूभ करावी, श्रावके उछव कीधो ।
वली पगला भरावी, 'रूपे वोहरे' जस लीधो ॥८॥
तिम 'राजनगर' में, थूंभ करी अति सार ।
तिहां थाप्या पगला, 'बहिरामपुर' मंझार ॥
अति उछव थाये, भगति करे नर नार ।
इम गुरुगुण गावें, तस घर जय जयकार ॥९॥
अति आग्रह कीधो, 'हीरसागरे' हित आणी ।
करी रासनी रचना, साते ढाल प्रमाण ॥
'करूया मति' गछपति, साहजी 'लाधो' कविराय ।
तिणे रास रच्यो ए, सुणत भणत सुखथाय ॥१०॥

कलश:—

इम रास कीधो सुजस लीधो, आदि अन्त यथा सुणी ।
'शिवचन्द्रजी' गछपति केरो, भावजो भवि गुणमणी ॥
संवत 'सतरेसें पंचाणु', 'आसो' मास सोहामणो ।
'सुदि पंचमी' सुरगुरू वारे, ए रच्यो रास रलीयामणो ॥
निरवांण भाव उलास साथें, 'राजनगर' मांहि कीयउ ।
कहे शाहजी 'लाधो' 'हीर' आग्रह थी, रास एह करी दीयउ ॥१॥
इति श्री शिवचन्दजी नो रास समाप्त ॥छ॥ प० ५ नि० म० ला० ॥

प्रति नं० २ पुष्पिका लेख—

सम्वत् १८४० ना आसु वदि ४ दिने श्री भुजनगर मध्ये लिखते। गाथा १०५ लिखतं देवचन्द गणिनां लिखतं श्रीवृहत्खरतर-गच्छे खेम शाखायां श्रीकच्छदेशे श्रीशांति प्रसादात् वाच्यमान हेतवे । मेरु महीधर जां लगे जां लग उगत सूर, तां लग ए पोथी सदा रहे जो ए सुख पूर ॥ श्री रस्तु । कल्याणमस्तु ॥। श्री श्री

(पत्र ६ अंजारसे विद्वद मुनिवर्य लब्धि मुनि जो द्वारा प्राप्त)

आद्यपक्षीय (खरतरगच्छीय) आचार्यशाखा

जिनचंद सूरि पट्टधर श्री जिनहर्ष सूरि गीतम्
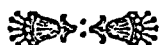
सखि देख्यउ हे सुपनउ मइं आज, श्री गच्छराज पधारिया ।
सखि सगलां हे साधां सिरताज, श्री 'जिनहरख' सूरिश्वरु ॥१॥
सखि चालउ हे करनी गज गेलि, ढेल तणी पर ढलकती ।
सखि म्हांका सद्गुरु मोहनवेलि, वाणि अमीरस उपदिसइ ॥२॥
सखि सजती हे सोलह शृंगार, ओढी सुरंगी चूनड़ी ।
सखि शीसह धर कलश उदार, मोत्यां थाल वधामणउ ॥३॥
सखि जुगवर चवद विद्या रा जाण, जाणी तल सारइ जगइ ।
सखि मानइ हे सहु राजा राण, पाटइ श्री 'जिणचंद' कइ ॥४॥
सखि दीपइ 'दोसी' वंश दिणन्द, 'भगतादे' उयरइ धर्यां ।
सखि जीवउ 'भादाजी' रउ नंद, 'कीरतवर्द्धन' इम कहइ ॥५॥

लघु आचार्य शाखा

॥ श्री जिनसागर सूरि गीतम् ॥

श्री संघ करइ अरदास हो ,बेकर जोड़ी आपणै भावसुं हो । पूजजी ।
पूरे मननी आस हो, एकरसउ वंदावउ आविनइ हो ॥ पू० ॥ १ ॥
तइं जाण्यउ अथिर संसार हो, संयम मारग 'लघुवय' आदर्यो हो ।पू.
आगम नउ भण्डार हो, जाण प्रवीण क्रिया नी खप करइ हो ।पू०।२।
तुं साधु शिरोमणि देखिहो, पाट तणइ जोगि 'जिनचंद सूरि' कह्योहो ।
तइं राखी जगमइं रेख हो, पाट बइसतां उपसम आदर्यो हो ।पू०।।३।।
ए काल तणउ परभाव हो, गुण करतां पिण अवगुण ऊपजइ हो ।पू०।
दूध भजइ विष भाव हो, विषधर मुख खिण मांहि जातां समो हो ।पू०४
नगर 'अहमदाबाद' हो, दोषी माणस दोष दिखाड़ियो हो । पू० ।
धरम तणइ परसाद हो, निकलङ्क कनक तणी परि तूं थयो हो ।पू०।५।
थारउ सबलो जस सोभाग हो, चिहुं खंड कीरति पसरी चौगुणी हो।
तुम्ह उपरि अधिको राग हो, चतुर विचक्षण धरमी माणसां हो ।पू०६।
जे वेचइ मणिका काच हो, ते सी कीमत जाणे पाचिनी हो । पू० ।
कदाग्रही मिथ्या वाच हो, कुगुरु न छंडइ सुगुरु न आदरइ हो ।पू०।७।
तूं शीलवन्त निर्लोभ हो, श्री 'जिनसागर सूरि' सुगुरु तणी हो ।पू०।
'जयकीरति' करइ सुशोभ हो, अविचल मेरु तणी परि प्रतपज्यो हो ।८।

——*:*——

॥ श्री जिनधर्म सूरि गीतम् ॥

१ ढाल :—सोहिलानी

आया श्री गुरु राय, श्री खरतर गच्छ राजिया ।
श्री 'जिन धर्म सुरिन्द', मङ्गल वाजा वाजिया ॥१॥
पेसारे मंडाण, 'गिरधर' शाह उच्छव करइ ।
'बीकानेर' मझार, इण विध पूज्ज जी पग धरइ ॥२॥
श्री 'संघ' साम्हो जाइ, आणी मन उल्लट घणे ।
लुलि लुलि वांदइ पाय, सो दिन ते लेखै गिणै ॥३॥
सिर धर पूरण कुंभ, सूहव आवै मलपती ।
भर भर मोती थाल, वधावे गुरु गच्छपती ॥४॥
पग पग हुवे गहगाट, घर घर रंग बधामणा ।
झालर रा झणकार, संख शब्द सोहामणा ॥ ५ ॥
कीधी प्रोल उत्तङ्ग, नर नारी मन मोहनी ।
नाना विधि ना रंग, तिण कर दीसइ सोहती ॥६॥
सिणगार्या सब हाट ऊंची गुडी फरहरइ ।
दूधे वूठा मेह, याचक जण यश उच्चरइ ॥७॥
प्रथम जिणेसर भेटि, आया पूज उपासरे ।
सांभलि गुरु उपदेश, सहुको पहुंता निज घरे ॥८॥
सोहलानी ए ढाल, मिल मिल गावे गोरड़ी ।
'ज्ञान हर्ष' कहै एम०, सफल फली आश मोरड़ी ॥९॥

२ ढाल :—बिछुआनी

महिर करो मुझ ऊपरै, गुरुआ श्री गणधार रे लाल।
'भणशाली' कुल सेहरो, मात 'मिरगा' सुखकार रे लाल ॥१॥म०॥
सुन्दर सूरति ताहरी, दीठां आवै दाय रे लाल।
मधुकर मोह्यो मालती, अवरन को सुहाय रे लाल ॥ २ ॥ म० ॥
सूर गुणे करि सोहता, षट् जीव ना प्रतिपाल रे लाल।
रूपे वयर तणी परे, कलि गौतम अवतार रे लाल ॥ ३ ॥ म० ॥
साधु संघाते परिवर्या, जिहां विचरै श्री गुरू राय रे लाल।
सुख सम्पति आणन्द हवइ, वरते जय जय कार रे लाल ॥४॥म०॥
श्री 'जिनसागर सूरि' जी, सइं हथ थाप्या पाट रे लाल।
श्री 'जिन धर्म सूरीश्वरु', दिन दिन हवइ गहगाट रे लाल ॥५॥म०॥
'राजनगर' रलियामणो, पद महोछव कीयो सार रे लाल।
'विमला दे' ने 'देवकी', गुण गण मणि आधार रे लाल ॥ ६ ॥ म० ॥
गच्छ चौरासी निरखिया, कुण करें ए गुरु होड रे लाल।
'ज्ञानहर्ष' शिष्य वीनवै, 'माधव' बे कर जोड़ रे लाल ॥ ७ ॥ म० ॥

जिनधर्मसूरि पट्टधर जिनचंद्रसूरि गीतम् ।

१—देशी दरजणरा गोतरी ॥

सुणि सहियर मुझ वातड़ी, तुझ नै कहुं हित आणी । हे बहिनी ।
आचारज गच्छ रायनी, सुणिवा जइयइ वाणि । हे बहिनी ॥१॥
सूरतड़ी मन मोही रह्यउ ॥ आंकड़ी ॥
सहगुरु वेसी पाटियइ, वाचै सूत्र सिद्धन्त । हे बहिनी ।
मोहन गारी मुंहपत्ति, सुन्दर मुख सोहन्त । हे बहिनी ॥२॥
गहूंली सद्गुरु आगलै, करियै नवनवी भांति । हे बहिनी ।
सुगुरु बधावां मोतीये, मन मांहि धरि खांति । हे बहिनी ॥३॥
वेसी मन विहसो करी, सांभलां सरस वखाण । हे बहिनी ।
भाव भेद सूधा कहै, पण्डित चतुर सुजाण । हे बहिनी ॥४॥
साधु तणी रहणी रहइ, पालै शुद्ध आचार । हे बहिनी ।
सूरि गुणे करि शोभतो, श्री खरतर गणधार । हे बहिनी ॥ ५ ॥
'बुहरा' वंश विराजतो, 'सांवल' शाह सुविख्यात । हे बहिनी ।
रतन अमूलिक उर धर्यो, 'साहिबदे' जसु माता । हे बहिनी ॥ ६ ॥
श्री'जिनधर्मसूरि' पाटवी, श्री 'जिनचन्द्रसूरीश' । हे बहिनी ।
अविचल राज पालो सदा, पभणै 'पुण्य' आशीस । हे बहिनी ॥ ७ ॥

लिखितं सम्वत् १७७६ वर्ष वैसाख सुदी १२ भौमे ।

जिन युक्ति सूरि पट्टधर जिनचंद्र सूरि गीतम् ।

पूजजी पधार्या मारू देशमें, दूधां वूठा जी मेह । गुणवन्ता हो गच्छपति ।
श्रीसंघ वांदे हो अधिक उच्छाह सुं, मन धरि धर्म सनेह ॥१॥

गुणवन्ता हो गच्छपति, श्रीजिनचन्द्र सूरी सुखकरु ।। आंकडो ।।
मिलि मिली आवो हे सखर सहेलियां, भरि मोतियड़े थाल ।गु०।
वांदण जास्यां हे खरतर गच्छ धणी, जीव दया प्रतिपाल ।।२।।गु०।।
संघ साम्हेले हो साम्हा संचरै, मन धरि अधिक आणन्द ।गु०।
बाजा बाजै हो गाजै अम्बरै, गच्छपति ना गुण वृन्द ।।३।।गु०।।
गुणियण गावे हो गुण पूजजी तणा, बोले मुख जै जै बोल ।गु०।
कीरति थांरी हो गंगाजल जिसी, दस दिशि करै कल्लोल ।।४।।गु०।।
पग पग कीजे हो हरखै गूंहली, दीजै वंछित दान ।गु०।
सूहव गावै हो मङ्गल सोहला, गिड़. धूं धूं घुरे निसाण ।। ५ ।। गु० ।।
नर नारी ना हो परिकर बहु मिलै, वंदण भणी विशेष ।गु०।
आय विराज्या हो पूजजी पाटिये, द्यै धर्मरा उपदेश ।।६।।गु०।।
नवरस सरस सुधारस वरसती, गरजती जलद समान ।गु०।
सुणतां लागै हो श्रवण सुहामणी, इसी म्हांरै पूजजी री वाण ।।७।।गु०।।
नित नित नवला हो हरख वधामणा, पूरव पुण्य प्रमाण ।गु०।
जिण दिशि देशे हो पूज्य समोसरे, तिण दिश नवे निधान ।।८।।गु०।।
पंचाचार हो पूज्य सदा धरै, पूज्य सुमति गुपति सोहन्त ।गु०।
गुण छत्तीसे हो अंग विराजता, पूज भविजन मन मोहन्त ।।९।।गु०।।
चद ज्युं दीसे हो नित चढती कला, 'जिन युक्ति सूरि' जी रे पाट ।गु०।
श्री गौयम जिम बहु लब्धे भर्या, सोहे मुनिवर थाट ।।१०।।गु०।।
धन 'बीलाड़ा' हो संघ सराहिये, पूज रह्या चोमास ।गु०।
जिन शासन नी हो थई प्रभावना, सफल फली सहु आश ।।११।।गु०।।
मात "जसोदा" हो नन्दन जाणिये, 'भागचन्द' सुत सुविचार ।गु०।
युगप्रधान हो जगमें अवतर्या, गोत्र 'रीहड़' सिणगार ।गु०।
पूज प्रतपो हो जां रवि चन्द्रमा, हो पूज जीवो कोड़ वरीस ।गु०।
इम निज मनमें हो हरख धरी घणो, 'आलम' द्यै असीस ।।१३।।गु०।।
।। इति श्री पूज्यजी गीतम् ।।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
तृतीय विभाग
(तपागच्छीय ऐतिहासिक काव्य संचय)

॥ शिवचूला गणिनी विज्ञप्ति ॥

शासनदेव ते मन धरिए, चउवीस जिन पय अणुसरीए।
गोयमस्वामि पसायलुए, अमें गा(इ)सि श्री गुरुणी विवाहलुए ॥१॥
'प्रागह' वंश सिंगारुए, 'गेहा' गण गुणह भंडारुए।
दानिहिं मानिहिं उदारुए, जसु जंपय जय जयकारुए ॥ २ ॥
तसु घरणी 'विल्हण दे' मति ए, सदाचार संपन्न शीयलवती ए।
जिणहि जाया वयरागरु ए, स्त्री रयणहिं गुण मणि आगरुए ॥३॥
कुंअर गुणह भंडारुए, 'जिनकीरति सूरि' सा वीरुए।
'राजलच्छि' वहन तसु नामुए, लोह पवतणि करुं पणामुए ॥४॥
'सिवचूला' सति सिंगारुए, जसु त्रिसनर जगि उदारुए।
रुप लावण्य मनोहरुए, तप तेजिहिं पाव तिमिर हरुए ॥५॥
चारित्र पात्र गुरु जाणिए, श्री गच्छह भार धुरि आणीए।
तिणे अवसर श्री संघ मन रुलीए, विचार जोइं ते मनि रुलीए ॥६॥
'महत्तर' पद उच्छाहुए, तवखिण पतउ 'महादे' साहूए।
विनव्या श्री गुरुराउए, मउ मनि घणउ उमाहूए ॥७॥
किउ पसायो श्री संघ मिलीए, आणंदिउ नाचइ वली वलीए।
लिखुप्र न 'वैशाखुए' 'चउद त्र्याणुइ' ति पहिले पाखीए ॥८॥
'मेदपाट' महोत्सव करीए, 'देउलपुरी' जंग सुवि (चि?) विस्तरुए।
आवइ श्रीसंघ दह दिशि तणाए, आवरा जइ साहमा अति घणाए ॥९॥

मंडप मोटा मंडाणाए, तिहां बइसइ चतुर सुजाणुए।
नाचइए निरुपम पात्रुए, जसु जोतां गहगहइ गात्रुए ॥१०॥
चउरी चउहिं पखि चमर ढलइए, पोसालइना दिशि विस्तरइए।
मंगल धवल महलावइए, श्री'शवचूला' महत्तर गायसिंए ॥११॥
च्यारइ भगवन् आणंदपूरे, तेहवे वास खिवइ 'सोमसुन्दरसूरे'।
महत्तर उवज्झाय पदवीए, वित विचय 'महा दे' संघवीए ॥१२॥
सुभासु लकुटा र(रा?)सुए, गुण गाइए 'शवचूला' महत्तरीए।
'रत्नशेखर' वाचक वरुए, पन्यास गणीश अति विस्तरुए ॥१३॥
दीक्षा महोत्सव अपारुए, तिहिं वरतइ जयजयकारुए।
पंचशब्द तिहां बाजइए, तिणें नादें अम्बर गाजइए ॥१४॥
वन्दिय जन जय उच्चरइए, तिहिं मांगतजन दालिद हरुए।
तलीया तोरण उच्छलइए, तिहां घरघर गुडि विस्तरइए ॥१५॥
श्रीसंघ मन पुगि रुलीए, गुणगाइ गोरडी सवि मिलिए।
दक्षीण देव सिरि महलावइए, साह सुपत्र खेत्रे धन वावरइए ॥१६॥
देवहिं गुरुभक्ति थुणीए, खेत्र 'शाहपुर' आपणीए।
दरसणस्युं गुणधारुए, वस्तु पहिरावइ अतिहिं अपारुए ॥१७॥
श्रीसंघ पंचंगि मडदीए, साह 'महादे' इणिपरे जस लीए।
रंजिय सयल सभा जणुए, संतोषिय साहमि भगत जनुए ॥१८॥
करणी अनुपम ते करइए, तस किरति दह दिसि विस्तरीए।
महत्तर नाम विशालुए, तस उपमा चन्दनबालुए ॥१९॥
द्रपदि तारा मृगावतीए, सीता य मन्दोदरी सरसतीए।
सोल सती सानिध करइए, भणयवाथ (भणवाथी?) श्रीसंघ दुरिया हरइए ॥२०॥

[इति श्री जिनकीर्ति सूरि महत्तरा श्रीशवचूला गणि प्रवर्तिनी राजलच्छी गणिविज्ञप्तिका:, श्राविका हीरादे योग्यं]

(खरतर गच्छीय प्रवर्त्तक मुनिवर्य सुखसागरजीसे प्राप्त)

कवि गुणविजय कृत

विजयसिंहसूरि विजयप्रकाश रास

'प्रथमनाथ पृथ्वी तणो, प्रणमुं प्रथम जिणंद ।
माता 'मरु देवी' तणो, नन्दन नयणानन्द ॥१॥

'सीरोही' मुख मण्डणो, दुख नो खण्डणहार ।
'ऋषभदेव' साहिब सवरू, वांछित फल दातार ॥२॥

गजगति जिनपति जे धरइ, गज लांछन निसदीस ।
'हीर विजयसूरि' हाथस्युं, थे थाप्यो जगदीस ॥३॥

'अजितनाथ' जग जीपतो, दौलतीकर दीदार ।
'ओसवंश' नइ देहरइ, जपतां जय जयकार ॥४॥

'शांति' शांतिकर सोलमो, परम पुण्य अंकूर ।
नगर शिरोमणि 'शिवपुरी', सूहवि शिर सिन्दूर ॥५॥

'कमठ' काठ थी काढ़िओ, जिणि जलतो भुजङ्गिद ।
लाख चउंआलीस घर धणी, ते कीधो 'धरणींद ॥६॥

ते दुख चिन्ता चूरणो, पूरण पूरइ आस ।
प्रह ऊठि प्रभु प्रणमिइ, श्री'जीराउलि' पास ॥७॥

शासन साहिब सेवीयइ, समरथ साहस धीर ।
'बंभणवाडि' मंडणो, वीर वाड महावीर ॥८॥

वचन सुधारस वरसती, सरसति दिउ मति माय ।
'कमल विजय' गुरु पद कमल, प्रणमुं परम पसाय ॥९॥

'हीर' पाटि 'जेसिंगजी', पाटि प्रगट जगीस।
श्री'विजयदेव' सूरिसरु, जीवो कोडि वरीस ॥१०॥
तिणि निज पाटि थापीओ, कुमति मतंगगज सीह।
'विजयसिंह सूरीसरु', सकल सूरि सिर लीह ॥११॥
रास रचुं रलीयामणो, मनि आणी उल्लास।
'विजयसिंह सूरि' तणो, सुणयो 'विजय प्रकाश' ॥१२॥
सावधान सज्जन सुणो, पहिला दिउ दुइ कान।
खंडानी पृथ्वी कही, विंद्यानां छइ दांन ॥१३॥

ढाल :—राग देशाख।

अढ़ार कोडा कोडि सागर जेह,, युगला धरम निवारक जेह।
'ऋषभदेव' हुआ गुण गेह, धनुष पंचसइ सोवन देह ॥१४
'आदीश्वर' निं सुत शत एक, 'भरतादिक' नामिं सुविवेक।
आप पाट 'भरतेसर' आप्यो, 'बहली देश' 'बाहूबलि' थाप्यो ॥१५॥
'भरत' तणा अठाणुं भाइ, तेमां एक'मरुदेव' सवाई।
तिणि निज नामि वसाव्यो देश, तेह भणी भणियइ 'मरु देश' ॥१६॥
ईति अनीति नहीं लवलेश, धर्म तणो ते कहिइ देस।
चोर चरड नी न पडइ धाडि,...... ....॥१७॥
वड़ा वड़ा जिहां छइ व्यवहारी, सत्रूकार करइ अनिवारी।
मोटा तीरथ नी जिहां सेवा, मोतीचूर मिठाइ मेवा ॥१८॥
राजा पिण जिहां धरम करावइ, परमेसर नी पूजा मंडावइ।
सहजिं जीव अमारि पलावइ, आहेडा उपरि नवि आवइ ॥१९॥
सूर सुभट मांटी मुंछाला, करि झलकइ करवाल कराला।
व्यापारी दीसइ दुंदाला, घरि घरि सुभिख सुगाला ॥२०॥

देस मोटो तिम मोटा कोस, भोला लोक नहीं मनि रोस ।
बोलइ भाषा प्राहिं अटारी, कडि बांधइ बहु लोक कटारी ॥२१॥
लोक धरइ हाथि हथिआर. वाणिग पणि झूठा झूझार ।
रण विढतां पणि पाछा पग नापइ, साह्मो साह्मणिं नइ थिर थापइ॥२२
कपट विहूणी बोलइ गाढ़िइं, गरढो पणि जिहां घुंघट काढ़इ ।
विधवा पणि पहरइ करि चूडि, राव रसोइ राधइं रूड़ी ॥२३॥
प्रहो पाहुणइं मवल मजाइ, राय राणा नी परि भुंजाइ ।
पाटभक्त मनमां नहीं द्रोह, स्वामिभक्त स्युं अधिको मोह ॥२४॥
पुण्यवन्त प्राहिं नहि खूंट, वाहण साहण चढ़वा ऊंट ।
जिहां थाकइ तिहां लिइ विश्राम, चोर चखार तणुं नहीं नाम ॥२५॥
लोक लाख लीलाइं चालइ, सोना रूपी (या) हाथि उछालइ ।
दुस्मन नइ सिर देवा दोट, मोटा 'मारूआडि' नवकोट॥२६॥
प्रथम कोट 'मंडोवर' ए ठांम, हव (णां) 'जोधनयर' अभिरांम ।
बीजो 'अर्बुद' गढ़ ते जाण्यो, त्रीजो गढ़ 'जालोर' वखाण्यो ॥२७॥
चोथो गढ ते 'वाहडमेर', पांचमो 'पारकरो' नहीं फेर ।
'जेसलमेरि' छठो कोट, जिणि लागइ नहिं वइरी चोट ॥२८॥
'कोटडइ' सातमो कोट वडेरो, आठमो कोट कह्यो 'अजमेरो' ।
कोइ 'पुष्कर' कोइ कहइ 'फलवद्धो. नवकोटी 'मारू आडि' प्रसिद्धी ॥२६

दोहा

धन 'मंडोवर' मरुधरा, जिहां 'मंडोवर' 'पास' ।
'गुणविजइ' कहइ प्रभु पूजतां, पूरइ मननी आस ॥३०॥
आज सफल दिन मुझ हु(य)उ, अम्हें हु(य)उ सनाथ ।
'गुणविजय' कहइ जब मुझ मल्यो, 'फलवधि' 'पारसनाथ' ॥३१॥

ढाल :—चौपाइ ।

'मरू' मण्डल मांहि 'मेडतु', दालिद्र दुख दूरिं फेडतउ ।
तेहनी कीरति जग मां घणी, एहवी लोक वात मइं सुणी ॥३२॥
जिन शासन मांहि बोल्या बार, चक्रवर्ती 'भरतादिक' उदार ।
तिम शिव सासनि चक्री होइ, च्यार उपरि अधिका वलि दोइ ॥३३॥
तेमां धुरि 'मांनधाता' भण्यो, चक्रवर्ती ते मूलि जण्यो ।
तव माता पहुती परलोक, राजलोक सघलइ तव शोक ॥३४॥
किम ए बाल वृद्धि पावस्यइ, इंद्र कहइ मुझ निंधा(श्रा?) वसइ ।
तिण कारणि 'मांनधाता' कह्यउ, चक्रवर्ती पहलिउ गहगह्यो ॥३५॥
दान देवा घरि साम्हो जाय, ते मोटो हुउ महाराय । ·
कोडा कोडि बरस तसु आय, प्रजा तणुं पीहर कहवाय ॥३६॥
कृत युग मां ते (हुयउ) प्रसिद्ध, इन्द्रइ राज्य थापना किद्ध ।
तिणि नगर वास्युं 'मेडतुं', लीलाइं लखमी तेडतुं ॥३७॥
'मेडतुं'ते 'मानधाता पुरी', जेहथी लाजी 'अलकापुरि' ।
जे मांटइ तिहां धनपति एक, इणि नगरि धनवन्त अनेक ॥३८॥
लोक वात एहवो सांभलि, साच्युं ते जाणइ केवली ।
'मेडता' नी महिमा अति घणी, तिण वेला 'मेडतीआ' धणी ॥३९॥
चउपट चहुटां केरि ओलो, गढ़ मढ़ मन्दिर मोटी प्रोलि ।
घरि घरि उछरंग कल्लोल, बाजइ मादल भुगल ढोल ॥४०॥
चिहु दिसि सजल सरोवर घणां, देराणी जेठाणी तणां ।
कुंडल सरवर सोहामणुं, जाणे कुण्डल धरणी तणुं ॥४१॥

गाजइ गयवर हय (व)र घट्ट, व्यवहारीआं नणा गज घट्ट ।
वनवाडी ओपइ आराम, पासइ 'फलवधि' तीरथ ठांम ॥४२॥
देश देश ना आवइ लोक, दादइ दीठइ नासइ सोक ।
परता पूरइ 'पास कुमार', राति दिवस उघाडा बार ॥४३॥
इस्युं तीरथ नहीं भूमीतलइं, माणस लाख एक जिहां मिलइ ।
पोस दसमी जिन जन्म कल्याण, 'मेडता' पासि इस्युं अहिनाण ॥४४॥
'मेडतुं' दीठइ मन उलसइ, देवलोक ते दूरि वसइ ।
'मेडतुं' देखी लंका खिसी, पाणी आणइ 'वाणारसी' ॥४५॥
शिखर वद्ध ऊंचा प्रासाद, नन्दीश्वर स्युं मांडइ वाद ।
सतरभेद पूजा मंडाण, रसिया श्रावक सुणइ वखाण ॥४६॥
महाजन निं मनि मोटी दया, रांक ढ़ीक उपरि वहु मया ।
ठामि २ तिहां सत्रुकार, तिणि नगरी नित दय दयकार ॥४७॥
तेणिं नगरि महाजन मां वडो, 'चोरवेडिया' कुल नुं दीवडो ।
'ओसवाल' अति अरडकमल्ल, साह 'मांडण' नन्दन 'नथमल्ल' ॥४८॥
तस घरि लक्ष्मी वासो वसइ, रूपि रति पति नइ ते हसइ ।
नाथू नइ घर गज गामिणी, 'नायक दे' नामिं कामिनी ॥४९॥
मणि माणक मोटा मालिआ, सोना रूपां नी थालियां ।
सालि दालि सखरां सांलणां, उपरि घल घल घी अति घणां ॥५०॥
'फुआं' दादी दिइ वहु दान, साहमी साहमणि नइं सन्मान ।
साधु साधवी घरि आवंती, पाणी नी परि घी विहरंति ॥५१॥
मीठाई मेवा भरपूर, चोआ चंदन अगर कपूर ।
'नायक दे' नवयौवन नारिं, 'नाथू' सुख विलसइ संसारि ॥५२॥

पुण्यइ पामी ऋद्धि अपार, जग जण जंपइ जै जैकार।

'सालिभद्र' सम सुख भोगवइ, सुखि समाधिं दिन जोगवइ ॥५३

'नायक दे' नंदन दुइ जण्या, सकल कला गुण सहजि भण्या।

'जेसौ' नइ 'केसौ' तिस नाम, 'दशरथ' घरि जिम 'लखमण' 'राम'।५४।

त्रीजो सुत जायौ तिण वलि, मात तात पुहती मनरली।

'मेडता' मांहि हुआ आणंद, 'कर्मचंद' नामइ कुल चंद ॥ ५५ ॥

'कपूरचंद' चोथा नुं नाम, 'पंचायण' ते पंचम ठाम।

'नाथू' ना नंदण गुण भर्या, जाणिकि पांच पांडव अवतर्या ॥५६॥

दोहा—

पांडव पांचइं मांहि जिम, विचलो सुत सिरदार।

तिम 'नाथू' नंदन विचि, 'कर्मचंद' सुविचार ॥५७॥

विक्रम 'संवत सोलसइं' उपरि 'च्युंआलीस'।

शाके 'पनर नवोत्तरइ' पूरइ सजन जगीस ॥ ५८ ॥

उजल पखि फागुण तणइ, बीज दिवसि रविवार।

उत्तर भद्र पदा तणइ, चोथा चरण मझार ॥ ५९ ॥

राजयोग रलीयामणइ, फाग रमइ नर नारि।

'कर्मचंद' कुंवर जण्यो, जगि हुआ जय जयकार ॥६०॥

कर्क लगन मूरति भवनि, तिहां गुरु उंचइ ठामि।

बइठो तिणि तूठो दिइं, गुरु पदवी अभिराम ॥६१॥

त्रीजइ राहु सु खेत्रीउ, कन्या राशि निवास।

भाई भुज बलि दीपतौ, दुसमन थाइ दास ॥६२॥

रवि कवि बुध ए आठमइ, कुंभि लगन बईठ्ठ।

नवमइं भवनिं केतु कुज, पूरण चंद्र पइट्ठ ॥६३॥

मेखिं शनि नीचउ कह्यउ, दशमइ भवनि उदार।
पणि फल उचा नुं दिइ, केंद्र ठामि सुखकार ॥६४॥
ए शुभ वेला अवतर्यो, 'कर्मचंद' सुखकंद।
सुखि समाधि वाधतुं, वीज थकी जिम चंद ॥६५॥

ढाल :—राग गौडो।

इक दिन इम चिंतइ, नायक दे भरतार,
सुख सेजिं सूतो, जाग्यो रयणि मझार।
मइं पूर्व भव कांइ, कीधां पुण्य अपार,
तेणिं सहो पाम्यां, सुख सघला संसार ॥ ६६ ॥

मुझ मंदिर मइडी, मणि माणक ना हार,
नित नवां पहरवा, नित नवला आहार।
नितु २ घर आवइ, अरथ गरथ भंडार,
वलि पाम्या परिघल, पुत्र कलत्र परिवार ॥ ६७ ॥

इणि भवि नवि कोधउ, सूधो श्री जिन धर्म,
विप (य) रसि हुंसी, कीधा कोड कुकर्म।
'धन्नो' 'कयवन्नो', 'सालिभद्र' सुकमाल,
जोउ धर्मिइ तरिया, वलि 'अवंति सुकमाल' ॥ ६८ ॥

ए विपय तणि रसि, प्राणी नइं वहु रंग,
जिम नयण तंणइ रसि, दीवइ पडइ पतंग।
रागि करि वेध्यो, वींध्यो वाण कुरंग,
अम्भाडी पाडइ, करिणी मद मातंग ॥ ६९ ॥

खारा नइ खोटा, मीठां मधुरा भक्ष,
काचा नइ कोरां, कंदा मूल अभक्ष।
रयणि भोयण घण, परदारा गम(न) किद्ध,
तोहि तृपति नहीं मुझ, जिम खारइ जलि पिद्ध ॥७०॥
ए जरा धूतारी, धोइ देस विदेस,
विण सावू पाणी, उज्जल करस्यइ केस।
तिणि विण आव्यइ जे, मइं कीधा बहु पाप।
ते मुझ मनि जाणइ, जिम मा जाणइ बाप ॥ ७१ ॥
कोइ सुगुरु मिलइ सुं, निज पातिक आलोउं,
गुरु वाणी गंगा, पाप तणां मल धोऊं।
एहवइं 'मेडता' मां, आव्या बड अणगार।
श्री 'कमल विजय' गुरु, सकल शास्त्र भंडार ॥ ७२ ॥
साह 'नाथू' हरख्या, निरखी तस दीदार,
धन २ ए मुनिवर तपा गछ शृङ्गार।
जाव जीव एहनिं द्रव्य सात आहार।
मीठाइ मेवा, विगइ पंच परिहार ॥ ७३ ॥
ए गुरु संवेगी, वैरागी धन धन्न।
ए मोटो पंडित, ठाणे पंचावन्न।
आवी वंदी नइ, कही 'नायक दे' कंत।
गुरुजी आलोयण आपो, मुझ एकंत ॥ ७४ ॥
चलता पंडित कहइ सुणिं तु 'नाथूसाह',
आलोयण लेयो, जब वंदउ गछनाह।

आलोयण नी विधि, गीतारथ समझाइ ।
दिइं अगीतार्थ तु, साम्हो पाप भराइ ॥ ७५ ॥
आलोयण काजि, वीस वरस पडखीजइ,
तिम जोअण सातसइ, गीतारथ शोधीजइ ।
तिणि कारणि तप गछ नायक गुरु निं पासि ।
लेयो आलोयण, अवसरि मनि उल्लासि ॥७६॥
वलतु तव बोलइ, 'नायकदे' नु नाथ ।
ते दूर देशान्तरि, छइ तपगछ ना नाथ ॥
तुम्हे पणि गछ मांहि, मोटा पण्डित राय ।
देस्यो आलोयण, तउ छोडुं तुम्ह पाय ॥७७॥
तव 'कमल विजय' गुरु, शास्त्र शाखि सव जाणी ।
'नाथू' मति दीठी, धर्म राग रंगाणी ॥
आलोयण दीधी, (मनधरी) बहु जगीस ।
उपवास छट्ठ बहु, अट्ठम तिम एकवीस ॥७८॥
'नायक दे' नायक, जोडी दुइ निज पाणी ।
तव बोलइ करस्युं, ए प्रमाण तुम्ह वाणी ॥
वलि तुम्ह पसायइं, हु(य)उ निर्मल प्राणी ।
आज थकी अभिग्रह, ठामि भात नइ पाणी ॥७९॥
आलोयण करतां चेत्यो, चतुर सुजाण ।
पूछइ निज नारी, तिम भाइ 'सुरताण' ॥
मुझ कह्यु करी नइ, लीजइ संजम जोग ।
जेहथी पामीजइ, अजरामर सुर भोग ॥८०॥

दोहा ।

साह 'मांडण' कुल जलधि नुं, हस्तिमल 'नथमल्ल' ।
विषम विषय रसि नवि छल्यो, चोखइ चित्त छयल ॥८१॥

निज कुटम्ब तेडी करी, 'नाथू' कहइ निरधार ।
तुम्हे सहु(हुव)उ इकमना, लेस्युं संयम भार ॥८२॥

'कर्मचन्द' कुअर प्रमुख, सहु कहइ ए बात ।
अम्ह प्रमाण छइ तातजी, न करूं धर्म विघात ॥८३॥

जिम आलोयण अवशरि, मिल्या सुगुरु निकलङ्क ।
तिम हवि गछ नायक मिलइ, तो व्रत ल्युं निशङ्क ॥८४॥

ढाल राग तोड़ी:—

इसा अवसरि 'लाहुर' सहरि करि, दुइ चउमासि ।
'विजयसेन सूरि' 'मेडतइ', आव्या जित कासी ॥

'नाथू' पांचइ पुत्र लेइ, गुरु नइ वंदावइ ।
'कर्मचन्द' मुख चन्द, देखि गुरुजी बोलावइ ॥८५॥

गछपति जंपति ए उदार, बालक शुभ लक्षण ।
जे चारित्र लेस्यइ सही, तो थास्यइ विचक्षण ॥

'नाथू' शाह चो भाव, संभलि मुनि नाथ ।
हरख्या चित मांहि ज्युं, चढइ चिंतामणि हाथ ॥८६॥

गुरु कहइ 'नाथू' साह ! सुणो, चौमासा मांहि ।
'हीरजी' दर्शन तणइ हेतु, पहुंचुं उछाहिं ॥

'कर्मचन्द्र' कुंअर कुटम्ब सहु, साथ समेला ।
समय लेइ तु आवयो, थायो अम्ह भेला ॥८७॥

सीख देइ 'मेडता' थकी, 'सादडी' पधारइ ।

पर्व पजूसण पारणइ, 'राणपुर' जोहारइ ।।

जंगम थावर तीर्थ दोइ, मिलिआ 'वरकांणइ' ।

'झालोरउ' संघ वंदवा, आव्यो जग जाणइ।।८८।।

'कमल विजय' गुरु तिहां चउमासि, पूज्यना पग वंदइ ।

'बीझो' वातु संघ रंगि, नाचइ नव छंदइ ।।

तिहां थो गुरु 'जेसंघजी', 'सीरोही' आवइ ।

अनुक्रमि साम्हो संघ आवि, 'पाटण' पधरावइ ।।८९।।

पुण्यवन्त 'पाटण' प्रसिद्ध, नगरी सिरताज ।

तिहां 'हीरजी' निर्वाण जाणी, रहइ 'तप' गछ राज ।।

हवइ सुणउ जे 'मेडतइ', हुआ मंडाण ।

चारित्र लेतां 'कर्मचन्द्र', उदयउ जग भांण ।।९०।।

जीमणवार जलेबीइं, बहु गाम जीमाडइ ।

'नायक दे' पति पांति खंति, करि मोटी मांडइ ।।

सोना रूपा ना कचोल, थाली सुविशाली ।

सालि दालि शुचि सालणां, घल घल घी नाली ।।९१।।

दही करम्बउ घोल झोल, उपरि तम्बोल ।

नागरवेलि सोपारी पारी, यलि कुंकम रोल ।।

चन्दन केसर छांटणा, माणस लख मिलीया ।

वागा लाल गुलाल जाणि, केसूडा फलिआ ।।९२।।

मिल्या महाजन मांडवइ, वइठा बहु टोला ।

चालीसां दिवसां लगइ, लीधा बन्नउला ।।

देव तणो घन भक्ति युक्ति, गुरु गुरुणो तेड्या ।
साहमी साहमिणी संविभाग, करि पातक फेड्या ॥६३॥
सणगार्या सब हाट पाट, चहुटा चउरासी ।
रूडो गूडो बहुत तेज, नेजा उल्लासी ॥
'मेडतीआ' म हरांण तेणि, दीधा नीसाण ।
वाजइ मङ्गल तूर पूर, पडइ कुमती प्राण ॥६४॥
धवल गीत गाइं अपार, गोरी गुण उ(ओ?)री ।
'कर्मचन्द्र' मुखचन्द्र देखि, नाचंति चकोरी ॥
भड (ट्ट) भोजिग बहु भट्ट नट्ट, बोलइ बिरुदाली ।
लंख भंख खेलन्ति खग्र, कर देता ताली ॥६५॥
'कर्मचन्द' कुंअर उदार, शृङ्गार करावइ ।
तिम बिहु बांधव मात तात, 'सुरताण' सुहावइ ॥
माथइ मउड विसाल भाल, कुण्डल दुइ दीपइ ।
हियडइ मोती तण (उ) हार, गंगाजल जीपइ ॥६६॥
बाजू बंधन बहरखा, कर कंकण जडीआ ।
दीख्या लेवा काज सज, सिंधुर शिरि चढ़िआ ॥
वोलइ इम गुण लोक थोक, परदेसी पाथू ।
छत्रीसे वरसे छयद्दा, धन २ ए नाथू ॥६७॥
धन २ कुअर 'कर्मचन्द', धन २ ए भाइ ।
धन २ शाह 'सुरताण' धन, 'नायक' दे माइ ॥
भुगल भेरि नफेरी नाद, बाजइ सरणाइ ।
एक भणइ ए 'वस्तुपाल', ए'भोज' सवाइ ॥६८॥

थानकि २ थाकणे, दीजइ जे मागइ ।
पंच वर्ण दयां भरी, वलि चालइ आगइ ।
कप्पड कीधा कोट चोट, दमामे दीधी ।
'ओसवाल' भूआल धन, इम कीरति कीधी ॥६६॥
याचक नइं धन कन कनक दान, देइ दालिद खंडइ ।
इम आडम्बर परिवर्या, आव्या वन खंडइ ।
त्रिण प्रदक्षिण समोसरण, विधिस्युं गुरु वंदइ ।
'कर्मचंद' सकटुंब लेइ, चारित्र आणंदइ ॥१००॥

दोहा:—

'कर्मचंद' रवि ऊगतइं, तप गण गयण उद्योत ।
दुरित तिमिर दूरिं किआ, तिम कुमती खद्योत ॥ १ ॥
'मांडण' कुल मंडण करइ, 'मरुमंडलि' उलास ।
संवत 'सोलइ बावनइ, बीज' दिवसि 'माह' मास ॥ २ ॥
'जेसौ' थिर थापी घरे, तिम 'पंचायण' पुत्र ।
छती ऋद्धि छांडी लिउं, छइ (६) माणसे चारित्र ॥ ३ ॥

ढाल राग धन्याश्री:—

तिहां थी ते मुनि चालइ, विषय कषाय नइ पालइ ।
आव्या गूजर देस, पाटणि कीद्ध प्रवेस ॥ ४ ॥
'विजयसेन' सूरिराय, प्रणमि पातक जाय ।
ते छइ नइं (६) दीधी दिक्षा, ग्रहणा सेवना शिक्षा ॥५॥
नेमिविजय' 'नाथू' जाण, 'सूरविजय' 'सुरतांण' ।
'कर्मचन्द' मुनि नाम, 'कनकविजय' गुणधाम ॥ ६ ॥

'केसा'मुनि तणुं नाम, 'कीर्त्ति विजय' अभिराम ।
'कपूरचन्द' ते लहि(य)इ, 'कुंअरविजय' मुनि कहि(य)इ ॥७॥
सघला मां सिरदार, 'कनक विजय' अणगार ।
ए मोटउ महाभाग, श्रीआचारज लाग ॥ ८ ॥
पोतानुं पटधारी, 'विजयदेव' गणधारी ।
तेहनइ ते शिष्य दीनो, जडिउ कनक नगीनो ॥ ९ ॥
'कनक विजय' मुनि चेलो, कल्पलता तणु वेलो ।
'विजयदेवसूरि' पासि, सगला शास्त्र अभ्यासि ॥ १० ॥
गुरु नुं पास न मुकइ, विनय बड़ा नो न चूकइ ।
नाममाला नइ व्याकरण, कीधा कंठ आभरण ॥ ११ ॥
जोतिष तर्क विचार, जाणइ अंग इग्यार ।
'पण्डित' पदवी विशिष्टा, 'सोल सत्तरि' प्रतिष्टा ॥ १२ ॥
'विसा' 'वदो' वित्त वावइ, 'अम्हदावाद' सोहावइ ।
खरची अति घणी आथि, 'विजयसेन सूरि' हाथि ॥१३॥
'जेसिंग' नुं निरवांण, 'खंभाइति' जग भाण ।
पाटि पटोधर पूरो, 'विजयदेव सूरि' सूरउ ॥ १४ ॥
'जेसिंगजी' पाट दीपइ, तेजि सूरज जीपइ ।
पूरइ संघ जगीस, 'श्रीविजयदेव सूरीस' ॥ १५ ॥
भलउ भटारक भावइ, 'पाटणि' चउमासु आवइ ।
सोल तिहुतरा वर्षि, 'लाली' श्राविका हर्षी ॥ १६ ॥
प्रौढ़ प्रतिष्टा ते मंडइ, दानि दालिद खंडइ ।
पोस बहुल छट्ठि सार, नहीं जिहां दोष अढार ॥१७॥

'श्रीविजयदेव' सूरिंदइ, सकल संघजि आणंदइ।
'कनकविजय' कविराय, कीधा श्री उवझाय ॥ १८ ॥
इम जे गुरु नि आराधइ, ते सुख संपति साधइ।
'विजयदेव' गणधार, भूतलि करइ विहार ॥ १९ ॥
साहि 'सलेम' उदार, करवा सुगुरु दीदार।
'मांडवगढ़' गुरु तेड्या, कुमति ना मद फेडया ॥ २० ॥
देखी 'तपगछ नाह', खुसी भयो पातिसाह।
जगगुरुके पटि पूरे, बड़े 'विजय देव' सूरे ॥ २१ ॥
शाहि 'जहांगीरी थापइ, नाम 'महातपा' आपइ।
चंडके गुरु मोटे, तोडि करइ तेहु खोटे ॥ २२ ॥
गुहिरा निसाण गाजइ, पातिशाही वाजा वाजइ।
मिलीया 'मालवी' संघ, 'दक्षिणी' श्रावक संघ ॥ २३ ॥
पांभरी दोइ पग लागा, केइ केसरि आदिइं वागा।
मिसरू मलमल साइ, पगि पटकूल विछाइ ॥ २४ ॥
वींटी वेढ़ गांठोडा, वलि दोधा घणा घोड़ा।
श्रावक श्राविका आवइ, मोती थाले वधावइ ॥ २५ ॥
लोक लाख गुरु पूजइ, तेहना पातिक धूजइ।
गुरुजी नइ पटि दीवउ, 'विजयदेव' चिरंजीवउ ॥ २६ ॥

दोहा

'विजय देव' गुरु गाजता, 'गूजर' देशि विहार।
अनुक्रमि करता आविया, 'सोरठ' देश मंझार ॥ २७ ॥
'विमलाचल' तीरथ वडउ, सकल तीर्थ शृंगार।
जिहां श्री'ऋषभ' समोसर्या, पूर्व नवाणुं वार ॥२८॥

'गुण विजय' कहइ श्रो'सिद्धगिरि', ध्यान धरत गत पाप।
बलवन्त बइठो जिहां धणो, 'बाहूबलि' नुं बाप ॥ २६ ॥

जे नर घरि बइठा करइ, श्रीशत्रुंजय जाप।
'गुणविजय' कहइ तेहना टलइ, सहस पल्योपम पाप ॥ ३० ॥

'गुण विजय' कहइ शेत्रुंज तणी, आखडी मोटो मर्म।
लाख पल्योपम संचिया, टलइ निकाचित कर्म ॥ ३१ ॥

'गुणविजय' कहइ 'विमलाचलिं', पंचकोड़ि परिवार।
चैत्री दिन केवल लह्यउ, 'पुण्डरीक' गणधार ॥३२॥

'गुणविजय' कहइ जग मां बडा, 'शत्रुंजय' 'गिरिनारि'।
इक शिरि 'आदिसर' चड्यउ, इक शिरि 'नेमि' कुमार ॥ ३३ ॥

ढाल—राग सामेरो

'शत्रुंजय' जिनवर वंदइ, गुरुजी निज पाप निकंदइ।
दुइ 'दीव' करी चोमास, पूरी 'सोरठनी' आस ॥ ३४ ॥

'हीरजी' नी परि पूजाणो, तिहां 'तप गच्छ' केरो रांणउ।
'गिरनार' देखी(दुःख) मेटइ, राजलि (धि?) राजा जिन भेटइ ॥३५॥

वलि 'नवइ नगरि' गुरु आवइ, सामहिआं संघ करावइ।
जामी दुइ सहस वखाणी, इक साम्हेलिं खरचाणी ॥ ३६ ॥

तिहां थी वलि (चलि?) पूज्य पधारइ,' शत्रुंजय' देव जुहारइ।
'खंभाइति' अति उल्लासि, तिहां थी आव्या चउमासइ ॥ ३७ ॥

तिहां त्रिण प्रतिष्ठा सार, रुपइआ चउद हजार।
खरच्या 'खंभाइत' मांहि, श्रीसंघ अधिक उछाहिं ॥ ३८ ॥

तिहां थी आव्यउ उल्लासइ, 'सावली' नगरि 'माह' मासि ।
'अजुआली छट्ठि' वखाणी, ... ॥३९॥
तीन मास लगइ गुरु मौनी, अमारि पलावइ 'सोनी' ।
संघ मुख्य 'रतनसी' साह, लीधो लखमी नु लाह ॥ ४० ॥
श्री'कनक विजय' उवझाय, वखाण करइ मुनिराय ।
पालइ निज गुरुनी आण, थास्यइ ते तपगछ भाण ॥४१॥
गुरुजीह विधानिं वइठा, पातक पायालिं पइठा ।
छट्ठ(अ)ट्ठम करइ अनेक, उवपवस (उपवास?) घणा सुविवेक ॥ ४२ ॥
आंविल करी धवलइं धानि, पूरव दिसि वइसइ ध्यानि ।
पचखाण जणावा माटिं, आपइ अक्षर लिखी पाटि ॥ ४३ ॥
श्रावक तिहां अगर कपूर, उगाहइ परिमल पूर ।
इण परि आचारय मंत्र, आराधइ पूज्य पवित्र ॥ ४४ ॥
वैसाख मास जव आवइ, सुहिणइ सुर वात जणावइ ।
वाचक निं निजपट आपउ, गछ भार 'कनकजी' नइ थापउ ॥४५॥
ए वाणि सुणी गुरु हरख्या, जिम शीतल जल थी तरस्या ।
मह(य)लि बहु मंगल कीजइ, गुरु आया 'आखातीजइ' ॥४६॥
आवइ तिहां संघ अपार, अंग पूजा ना अंबार ।
दुख दालिद दूरी गमाया, याचक घर सुभर भराया ॥४७॥
'सावली' नइ 'इडरि' जुइ, प्रासाद प्रतिष्ठा हुइ ।
'राय' देशि शोभा लीधी, गुरु दोइ चौमासी कीधी ॥४८॥
हवइ 'राजनगरि' गुरु आवइ, चउमासुं संघ करावइ ।
बीजुं 'बीबीपुर' मांहि, गुरु चतुर चउमासुं चाहइ ॥४९॥

'पारणि पुंजाउत' आवइ, 'सीरोही' सोह चड़ावइ ।
अभिनव उदयो 'तेजपाल', प्रागवंश तिलक 'तेजपाल' ॥५०॥
राय 'अखयराज' बडह वीर, तेहनि घरि जेह वजीर ।
ते शाह तिहां किणि आवइ, गुरुनि वंदइ मनि भावइ ॥५१॥
करइ यात्र 'विमल गिरी' केरी, जिणि भाजइ भवनी फेरी ।
आवइ 'कमीपुर' फेरी, ढमकावइ ढोल नफेरी ॥५२॥
पूज्य जी नइ कहइ परधान, एतलुं दिउं मुझनिं मान ।
करि मेल वधारो वानो, गुरुराज कह्युं ए मानो ॥५३॥
गुरु कहइ अम्ह मनि नहीं खेस, टालउ तुम्हे सयल किलेस ।
तिहां लिखित भाषित करि लीधा, साहि सहु को निं दीधा ॥५४॥
ए लिखित थकी जे चूकइ, तेहनिं जगदीसर मुकइ ।
मांहो मांहि मेल कराव्यउ, पुण्यइ भंडार भराव्यउ ॥५५॥
आचारज 'विजयाणंदि', गुरु जी वांद्या आणंदइ ।
श्री 'नंदीविजय' उवझाय, जेहनु मोटउ भडवाय ॥५६॥
'धनविजय' 'धर्मविजय' नाम, वाचक दुइ अति अभिराम ।
इत्यादिक मुनि जग जाण्या, पुणिं गुरु चरणे आण्या ॥५७॥
साह कहइ 'सीरोही' पधारउ, बलि वीनति ए अवधारो ।
'तेजपाल' सीरोही आवइ, 'श्रीविजय देव' गुण गावइ॥५८॥

दोहा

'राजनगर' थी विचरता, करता संघ कल्याण ।
'गावदेसि' गुरु आविया, जिहां राजा 'कल्याण' ॥५९॥
'विजयदेव सूरि' वड वखत, वाचक पंच समेलि ।
'ईडरगिरि' शिर 'ऋषभ जिन', भेटयइ हुइ रंग रेलि ॥६०॥

'इडरगढ़' मुख मंडणउ, साहिब सुख दातार।
'गुणविजय' कहइ मंगल करउ, 'सुमंगला' भरतार ॥६१॥
'रायदेश' रलिआमणउ' 'ईडरगढ़' सिरदार।
घरि २ उत्सव अति घणा, फाग रमइ नरनारि ॥६२॥

ढाल—फागनी

तपगच्छको गुरु राजीयो, रमइ पुण्यनुं फाग ।ललना।
परणो समता सुन्दरी, जिनआंणा वर वाग। ललनां
पुण्य फाग गुरु जी रमइ ॥६३॥
पहिलुं पाप पखालवा, नेम तप निर्मल नीर ।ल०।
चुआं चंदन चित भलुं, छांटइ चारित्र चीर ॥ल०।पु०।६४॥
परंपरा आगम वडउ, चढवा तुंग तुरंग ।ल०।
ज्ञान ध्यान नेजा घणा, लीला लहरि तरंग ॥ल०।६५॥
सकल संघ सेना मिली, वाजइ जग जस ढोल ।ल०।
वाचक पंडित उंबरा, सूरा साधु अडोल ॥ल० । पु० ।६६॥
इक दिनि गुरुनिं वीनवइ, 'तपागछ' परिवार ।ल०।
एक अम्हारी वीनति, अवधारउ गणधार ।ल० ।पु० । ६७॥
तपगछ मेल तुम्हे करी, कीधुं उत्तम काज ।ल०।
हवइ एक इहां थापीइ, आचारिज युवराज ॥ल०।पु०।६८॥
आज अंबा रायण फल्या, आयउ मास वसंत ।
चंपक केतक मालती, वासंती विकसंत ॥ल०।पु०।६९॥
तिम अम्ह आशा वेलडी, सफल करउ मुनिराज ।ल०।
'कनकविजय' वाचक वरु, करउ पटोधर आज ॥ल०।पु०।७०॥

चलता गछ भूपति भगइ, जोउ महुरत सुद्धि ।ल०।
आचारय वाचक वलि, वलि जोसी बहु बुद्धि ।।ल०।पु०।७१।।
मन मान्युं महूरत मल्युं, शकुनादिक नी शाखि ।ल०।
'अजुवाली छट्ठि' अति भली, वडि मास 'वैशाखि' ।।ल०।पु०।७२।।
गुरुजी नइ सहु वीनवइ, ए छइ दिवस पवित्र ।ल०।
सोमवार सुहामणा, रुडु पुष्य नक्षत्र ।।ल०।पु०।७३।।
'ईडर'संघ शिरोमणि, 'सोनपाल' 'सोमचन्द' ।
अधिकारी सा 'सूरजी', सुत 'सादूल' अमंद ।। ल० ।पु०।७४।।
'सहसमल' 'सुन्दर' भला, 'सहजू' 'सोमा' जोडि ।ल०।
'धन जी' 'मनजी' 'इंदुजी', 'अमीचंद' नहि खोडि ।।ल०।पु०।७५।।
वासी 'राजनगर' तणा, संघवी 'कमलसीह' । ल० ।
'पारिख' 'अहमदपुर' तणा, 'वेला' सुत 'चांपसींह' ।ल०।पुण्य०।७६।
'पारिख' 'देवजी' 'सूरजी', 'थान सींग' 'रा(य)सींग' । ल० ।
साह 'भामा' 'तोल्हा' भला, साह 'चतुर्भुज सिंघ' ।ल०।पुण्य०। ७७ ।
'जागा' 'जसू' 'जेठा' भला, भाई गुरु ना होइ । ल० ।
'कोठारी' 'मंडण' मुखी, 'बछराज' रहिआ जोइ ।ल०।पुण्य०।७८।
'कर्मसीह' नइ 'धर्मसी', 'तेजपाल' समउ न कोइ । ल० ।
'अखयराज' राचा वरू, मंत्री 'समरथ' सोइ ।ल०।पुण्य०।७९।
मंत्रि 'लखू' नइ 'भीमजी', 'भामा' 'भोजा' जोइ ।ल०।
'फडिआ' 'मालजी' 'भाणजी', 'लखा' 'चोथिआ' दोइ ।ल०।पुण्य०।८०
'गांधी' 'वीरजी' 'मेघजी', तिम वलि 'वोरजी' साह ।ल०।
'देवकरण' 'पारिख' 'जसू', उ करडि उछाह ।ल०।पुण्य०।८१।

'भाणजी' शाह 'सूरजी', तिम वली 'तेजपाल' ।ल०।
इत्यादिक 'इडर' तणउ, मिल्यउ संघ सुविशाल ।ल०।पुण्य०।८२।
'घावड' संघ सहु मिल्यो, 'अहिम नगर' नुं संघ ।
'सावली' नुं संघ सामठउ, 'पदमसिंह' 'चांपसीह' ।ल०।पुण्य०।८३।
साह 'नाकर' सुत हवि तिहां, 'सहजू' साह उदार ।ल०।
दानि मानि आगलउ, 'ईडर' शोभाकार ।ल०।पुण्य०।८४।
शिणगारी निज घर घणुं, तेड्या 'तपगछ' नाथ ।ल०।
पट्ट देवानिं कारणिं, संघ चतुर्विध साथि ।ल०।पुण्य०।८५।
इण अवसरि वोलविआ, 'धर्मविजय' उवझाय ।ल०।
'लावण्यविजय' नामइं वलि, वारू वाचक कहाय ।ल०।पुण्य०।८६।
वर चारित 'चारित्रविजय', वाचक कुल कोटीर ।ल०।
चोथा पण्डित परगडा, 'कुशलविजय' वजीर ।ल०।पुण्य०।८७।
'कनकविजय' वाचक तुम्हो, तेडउ एणिं आवासि ।ल०।
तव ते च्यारे मलपता, पुहता वाचक पास ।ल०।पुण्य०।८८।
ऊठउ तुम्ह तुठउ गुरु, निज पद दिइं सुविवेक । ल० ।
विजयवंत वाचक वदइ, गुरुनिं शिष्य अनेक ।ल०।पुण्य०।८९।
तुम्हे कहउ छउ ते सहीं, पणि तुम्ह पुण्य अपार । ल० ।
लछि आवती लीजीइं, गुरुजी द्यइ गछ भार ।ल०।पुण्य०।९०।
इम गुरु चरणे आणिया, माणस देखइ थाट ।ल०।
'होरइ' जिम 'जेसिंघजी', तिम थाप्या गुरु पाटि ।ल०।पुण्य०।९१।
वास थाल तव आणीउ, सा० 'सहजू' अभिराम ।ल०।
वास ठवइ गुरुजी करइ, 'विजयसिंह सूरि' नाम ।ल०।पुण्य०।९२

'कीरतिविजय' 'लावण्यविजय', वाचक पद दोइ दीद्ध ।
आठ विवुध पद थापीआ, मया सुगुरु इम कीद्ध ।ल०।पुण्य०।६३।
श्रीफल करी प्रभावना, जीमण वार अवार ।
महमूदी 'सहजू' तिहां, खरची पंच हजार ।ल०।पुण्य०।६४।
'कल्याणमल्ल' राय रञ्जिआ, 'इडर नगर' मझार ।ल०।
सा० 'सहजू' उत्सव करइ, वर्त्यो जयजयकार ।ल०।पुण्य०।६५।
वलि ज्येठ मांहि तिहां, बिम्ब प्रतिष्टा एक । ल० ।
सा० 'रहीआ' उत्सव करइ, खरचइ द्रव्य अनेक ।ल०।पुण्य०।६६।
बीजइ पखवाडइ वली, अमराउत जस लिद्ध ।ल०।
'पारिख' 'देवजी' नो घरि, पूज्य प्रतिष्टा किद्ध ।ल०।पुण्य०।६७।
संवत 'सोल इक्यासो(य)इ', उत्सव हुआ आणंद ।ल०।
'विजय देव सूरि' थापीआ, 'विजयसिंह' सूरिंद ।ल०।पुण्य०।६८।
धवल मंगल दिइ कुल वहू, बाजइ ढोल नीसाण ।ल०।
'विजय देव' गुरु पाटवो, प्रगटिउ तप गछ भाण ।ल०।पुण्य०।६६।
गुरु आचारज जोडली, 'इडरगढ़' चउमासि ।ल०।
राय 'कल्याणइं' राखीआ, पहुंचाडो मन आसि ।ल०।पुण्य०।२००।

दोहा :—

एहवइ 'सीर (ही)' थकी, तेडइ सा 'तेजपाल' ।
'आबू' पूज्यं पधारिइं, चैत्र मास सुर साल ।।१।।
तेह वीनति मन धरी, गुरुजी करइ विहार ।
संघ लोक वहुला मिलइ, उत्सव करइ अपार ।।२।।
साम्हा आवइ 'साहजी', 'दोसी' 'जोधा' जोडि ।
संघवी 'मेहाजल' मिली, गुरु पूजइ कर जोडि ।।३।।

गुरु उपरि करइ लूंछणा, साह दिइं तरल तुरंग।
घणा संघ स्युं गुरु करइ, 'आबू' यात्रा जंग ॥४॥
'गुण विजय' कहइ जग जस लि(य)उ, धन २ 'विमल' नरिंद।
जिण 'अवुय' गिरि थापीउ, 'मरु देवी' नुं नंद ॥५॥
'अर्बुद' गिरि तीरथ करी, 'वंभणवाडि' वीर।
सुगुरु 'सीरोही' आविया, जाणे अभिनवौ'हीर' ॥६॥
चौमासुं गुरुजी करइ, 'सीरोही' सुखठाम।
'तेजपाल' शाह प्रमुख सहु, संघ करइ शुभ काम ॥७॥
विजय दसमी दिन दीपतुं, 'विजयदेव' गुरु पास।
'विजयसिंह सूरी' तणो, गायउ 'विजय प्रकाश' ॥८॥

राग :—धन्याश्री।

महावीर जिनपाटि धुरंधर, स्वामि 'सुधर्मा' सोहइजी।
'जंवू' 'प्रभव' 'शय्यंभव' सूरीय, 'यसोभद्र' मन मोहइजी ॥
इम अनुक्रमि 'जगचंद्र' महामुनि, च्युंआलीसमि पाटिजी।
'तपा' विरुद तस राणइं थाप्युं, मेदपाटि 'आघाटि ॥९॥
तिणिं तप गणि गुणवन्निं पाटिं, 'देवसुंदर' सुखकारीजो।
पंचासम पाटिइं गुरु सुन्दर, 'सोमसुन्दर' गणधारीजी ॥
तेह थकी छपन्नमि पाटिं, 'आणंदविमल' मुणि इंदोजी।
'तपागछ' जेणि निरमल कीधउ, जिसो आसोइ चंदोजी ॥१०॥
सत्तावनमि पाटि परम गुरु, 'विजयदान' वैरागीजी।
अट्ठावनमि पाटि हीरो, 'हीरजी' गुरु सोभागीजी ॥

उगुणसट्टमि पाटि पुरन्दर, 'विजयसेन' गछ धोरीजी ।
पाटि साट्ठिमइ 'विजयदेव' गुरु, गुण गावइ सुर गोरीजी ॥११॥

'हीर' 'जेसंगजी' पाट दीपावइ, 'विजयदेव सूरि' सोंहोजी ।
पूजा नाम कर्म तप धर्मिइ, राखइ तप गछ लोहोजी ॥

तस पट दीपक रति पतिजी, एक 'विजयसिंह' सूरीसोजी ।
इकसठमि पाटिं पुरषोत्तम, पूरइ संघ जगीसोजी ॥१२॥

'सोलत्र्यासीआ' वर्षि हर्षि, 'सीरोही' सुख पायउजी ।
'ऋषभदेव' प्रभु पाय पसायइं, 'विजयसिंह सूरि' गायोजी ॥

'कमल विजय' जय मंडित पंडित, 'विद्याविजय' गुरु चेलोजी ।
'गुणविजय' पण्डित एम पयंपइ, वाधउ तपगछ वेलोजी ॥१३॥

इति श्रीविजयसिंह सूरि विजय प्रकाश नाम रासि (संपूर्ण)

(पत्र ११ श्री तत्कालीन लिखित, जयचंद भण्डार बं० नः ६६)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
चतुर्थ विभाग
(विभाग नं० १ की अनुपूर्ति)

कवि पल्ह विरचिता
जेसलमेर भाण्डागारे ताड़पत्रीया खरतर पट्टावली:
॥ श्री जिनदत्त सूरि स्तुतिः ॥
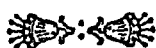
जिण दिट्ठइं आणंदु१ चडइ अइ२ रहसु चउग्गुणु ।
जिण दिट्ठइं झड़हड़इ पाउ तणु निम्मल हुइ पुणु ॥
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुक्किउ नासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु पणासइ३ ॥
जिण दिट्ठइ हुइ सुइ४ धम्ममइ अवुहहु काइ उइखहु५ ।
पहु नव फणि मंडिउ 'पास' जिणु 'अजयमेरि' किन पिक्खहु६ ॥१॥
मयण मकरि धरि धणुहु बाण पुणि पंच म पयडहि ।
रूविण७ पिम्म पयावि वंभ हरि हरु मन(त) विनडहि ॥
रूउ८ पिम्मु ता बाण मयण ता दरिसहि थणुहरु ।
नम(व) फणि मंडिउ सीसि जाव नहु पक्खहि जिणवरु ॥

---

१ आनंद, २ अहरहउ, ३ पनासइ, ४ सुद, ५ उइ खहहु, ६ पिक्खहहु,
७ भूविण, ८ भूउ

जइ पड़िहसि 'पास' जिणिंद वसि नाणवंत९ निम्मल रयण।
न सु धणुहरु बाण न रूव१० नहि न रूय११पिंमु हुइ हइमयण ॥२॥
नम (व) फणि 'पास' जिणिंदु गढिउ अन्नलि जु दिट्ठउ।
'अजयमेरि' 'संभरि१२नरिंदु' ता नियमणि तुट्ठउ॥
कंचणमउ अइ१३ कलसु सिहरि साणउ रञ्जविअउ।
जणु सुतरणि तउ१४ तवइ तिव्वु (त्थु) आयासि सउन्नउ॥
जा वुक्कमिसिण ढक्कारविण करु१५ उब्भिवि फरहरइ धय१६।
'जिणदत्तसूरि' धर धम(व)लि जसि तापसिद्धि सुर भुयणि१७ कय ॥३
'देवसूरि पहु' 'नेमिचंदु' बहु गुणिहिं पसिद्धउ।
'उज्जोयणु' तह 'वद्धमाणु' 'खरतर' वर लद्धउ॥
सुगुरु 'जिणेसरसूरि' नियमि 'जिणचंदु' सुसंजमि१८।
'अभयदेउ' सव्वंगु नाणि 'जिणवल्लहु' आगमि॥
"जिणदत्तसूरि' ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ जिण-वयणु।
सावइहिं परिक्खिवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउ जिव१९रयणु ॥४॥
धणुहर धयवड२० वरिय सारि सिंगार सुसज्जिय।
सोहग्गिण गुडगुड़िय पंच(व)र पडिम निमज्जिय॥
ति(नि)यड़ (रू)अ तेअ ग्गलिय२१ पिंम पडिकार निरुत्तिय।
रइ रणरह सुच्चलिय२२ गरुय माणिण म अमन्निय२३॥
करि कडयड२४ मुणि महिवइहिं रहिय रूवय संपुन्न भय।
'जिणदत्तसूरि सीहह' भयण मयण करडि२५ घड विहडि गय ॥५॥

९ दंत, १० भूव, ११ भुय, १२ संभारि, १३ अह, १४ तओ, १५ कर उज्झिवि, १६ धर, १७ भवणि, १८ सुसंयमि, १९ जिम २० धरय, २१ आगलिय, २२ सुचलिय, २३ मइ अन्निय, २४ कडसड, २५ इकर धियड़,

तव तलप्फ भीसणह धम्म धीरिमसुरिम२६ सुविसालह ।
संजम सिर भासुरह दुसहद(व)य दाढ़ करालह ॥
नाण नयण दारुणह नियम निरु२७ नहर समिद्धह ।
कम्म कोय(व)निट्ठरह२८ विमलपह पुंछ पसिद्धह ॥
उपसमण उयर२९ धर दुव्विसह गुण गुंजारव जीहह ।
'जिणदत्तसूरि' अणुसरहु पय पावक-रडि-घड-सीहह ॥६॥
जर-जल-बहल-रउद्दु लोह-लहरिहिं गज्जंतउ ।
मोह मच्छ उच्छलिउ कोव कल्लोल वहंतउ ॥
मयमयरिहि परिवरिउ वंच बहु वेल दुसंचरु ।
गव्व३० गरुय गंभीरु असुह आवत्त भयंकरु ॥
संसार समुद्दु३१ जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिवि दरियइ ।
'जिणदत्तसूरि' उवएसु मुणि पर तरंडइ३३ तरियइ ॥७॥
सावय किवि कोयलिय केवि खरह३४ (य?) रिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ लक्खियइ३५ मूढ़ निय वित्ति विरुद्धिय ॥
दरहिं न किंपि परत्र३६ वेविसु परुप्परु जुज्झहि ।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पट्टंतरु बुज्झहिं ॥
'जिणदत्तसूरि' जिन नमहि पय पउम मच्चु३७(गव्वु) नियमणि वहहि
संसार उयहि दुत्तरि पडिय 'तिनहु'३८ तरंडइ चडि तरहि ॥८॥
तव-संजम-सयनियम-धम्म-कंमिण वावरियउ ।
लोह-कोह मय-मोह तहव सव्विहि परिहरियउ ॥

---

२६ सूवि, २७ सनहर, २८ निट्ठुरह, २९ उपर, ३० गंथ, ३१ समुद्द, ३२ सुणित, ३३ सुतरियइ, ३४ खरतरिय, ३५ लक्खियहिं, ३६ परत्त, ३७ सच्चु, ३८ जिनहु

विसम छंदलक्खणिण सत्थ अत्थत्थ विसालह ।
'जिणवल्लह' गुरुभत्तिवंतु पयड़उ कलिकालह ॥
अन्निहि वि गुणिहि संपुन्न तणु दीन दुहिय उद्धरणु धर ।
'जिणदत्तसूरि' 'पर पल्हभ(?)णु तत्तवंतु सलहियइ धर ॥६॥
वक्खाणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ ।
आरहियइ त 'वीरनाहु' कइ 'पल्हु' पयासइ ॥
धम्मु तु दय संजुत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ ।
चाउ त अणखंडियउ जु बंदिणु सलहिज्जइ ॥
जइ ठाउ३९ त उत्तिमु मुणिवरहवि (पवर वसहिहो चउर नर ।
तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर 'खरतर सिरि' 'जिणदत्त' वर ॥१०॥

१ इति श्री पट्टावली षट् पदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्व युगाद्य पद्ये ११ तिथौ श्री मद्धारानगर्यां श्री खरतर गच्छे विधिमार्ग प्रकाशि वसतिवासि श्री जिणदत्त सूरीणां शिष्येण जिनरक्षित साधुना लिखितानि ।

२ इति श्री पट्टावली ॥ संवत् ११७१ वर्षे पत्तन महानगरे श्री जयसिंह देव विजयिराज्ये श्री खरतरगच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसति वासि जिनदत्त सूरीणां शिष्येण ब्रह्मचंद्र गणिना लिखिता ॥ शुभं भवतु श्री मत्पार्श्वनाथाय नमः सिद्धिरस्तु ॥

---

३९ ठाइ ।
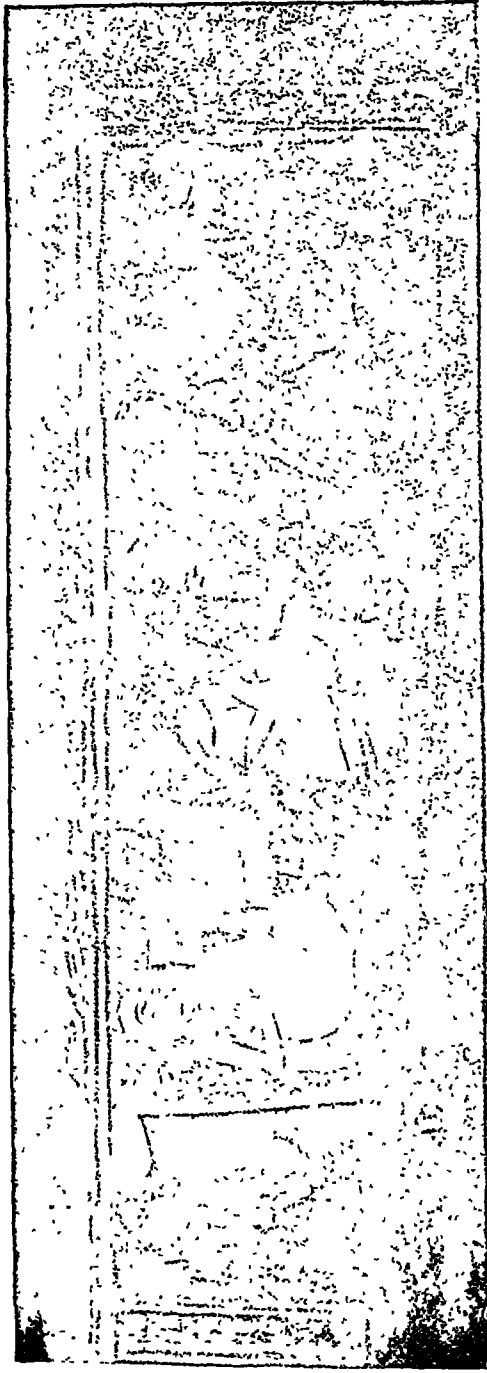
विद्वत् शिरोमणि जिन वल्लभसूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीय प्राचीन ताड-
पत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित)

॥ श्री नेमिचन्द्र भण्डारि कृत ॥

जिन वल्लभ सूरि गुरु गुणवर्णन

॥६०॥ पणमवि सामि वीरजिणु, गणहर गोयमसामि।

सुधरम सामिय तुलनि, सरणु जुगप्रधान सिवगामि ॥१॥

तित्थु रणुद्ध स मुणिरयणु, जुगप्रधान क्रमि पत्तु।

जिणवल्लह सूरि जुगपवर, जसु निम्मलउ चरित्तु ॥२॥

तसु सुहगुरु गुणकित्तणइ, सुरराओवि असमत्थो।

तो भत्ति-भर तर लिओ, कहिउ कहिसुं हियत्थु ॥३॥

कह भवसायर दुहपवरु, कह पत्तउ मणुयत्तु।

कह जिणवल्लहसूरि वयणु, जाणिउं समय-पवित्तओ ॥४॥

कह सुवोह मणउल्लसिय, कह सुद्धउ सामन्तु।

जुगसमिला नाएण मइए, पत्तउ जिण-विहि-तत्तु ॥५॥

जिणवल्लहसूरि सुहगुरुहे, वलिकिज्जउ सुरगुरुराय।

जसु वयणे विजाणियइ, तुट्टइ कम्म-कसाय ॥६॥

मूढा मिल्हहु मूढ पहु, लागहु सुद्धइ धम्मि।

जो जणवल्लहसूरि कहिओ, गच्छहु जिम सिवघरंमि ॥७॥

अथीर माय-पिय-वंधवह, अथोर रिद्धि गिहवासु।

जिणवल्लहसूरि पय नमओ, तोडइ भव-दुह-पासु ॥८॥

परमप्पणय न केवि गुरु, निम्मल धम्मह हुंति ।
सव्व तिदस पुर मन्निअइं, जे जिणवयण मिलंति ॥९॥
गुरु गुरु गाइवि रंजियइं, मूढा लोउ अयाणु ।
न मुणइ जं जिण आण विणु, गुरु होइ सत्तु समाणु ॥१०॥
जिम सरुणाईय माणुमह, कोइ करइ शिरछेओ ।
न मुणइ जं जिण-भासियओ, तिम कुगुरुह संजोओ ॥११॥
हुंडा अवसप्पणि भसम गहु, दूसम काल किलिट्ठु ।
जिणवल्लहसूरि भडु नमहु, जेण उसुत्तु न सिट्ठउ ॥१२॥
जो जिह कुलगुरु आइयउ, तहिं ते भत्ति करंति ।
विरला जोइवि जिणवयणु, जहिं गुण तहिं रच्चंति ॥१३॥
हाहा दूसम काल बलु, खल-वक्तण जोइ ।
नामेगइ सुविहिय तणइ, मित्तु वि वयरिओ होइ ॥ १४ ॥
तिहि चेडाहि विहडं नमओ, सुमुणिय परम उछाह ।
हियउइ जिण विहिक्कु पर, अनुसुद्धउ गुण जाह ॥१५॥
जे जिणवरु पहु होलियइ, जणु रंजियइ हयासु ।
सो वि सुगुरु पणमंतह, कुटिल हियइ हयासु ॥ १६ ॥
मरिय भवे जिओ वीर जिणु, इक्कि उसुत्त लवेणु ।
कोडाकोडि सागर भमिओ, किं न सुणहु मोहेण ॥१७॥
तव संजम सुत्तेण सउ, सव्ववि सहलउ होइ ।
सो वि उसुत्तलवेण सउ, भव-दुह-लक्खहं देइ ॥ १८ ॥
माया मोह चएउ जण, दुलहउं जिण विहि-धम्मु ।
जो जिणवल्लह सूरि कहिओ, सिग्घं देइ शिव-संमु ॥१९॥

संसओ कोइ म करहु मणि, संसइ हुइ मिच्छत्तु ।
जिणवल्लहसूरि जुग पवरु, नमंहु सु त्रिजग-पवित्तु ॥२०॥
जई जिणवल्लहसूरि गुरु, नय दिठओ नयणेहिं ।
जुगपहाणउ विजाणियए, निछई गुण-चरिएहिं ॥२१ ॥
ते धन्ना सुकयत्थ नरा, ते संसार तरंति ।
जे जिणवल्लहसूरि तणिय, आणा सिरे वहंति ॥ २२ ॥
तेहिं न रोगो दोहग्गु तहु, तह मंगल कल्लाणु ।
जे जिणवल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि संझ सुविहाणु ॥२३॥
सुविहिय मुणि चूडा-रयणु , जिणवल्लह तुह गुणराओ ।
इक्क जीह किम संथुणेउं, भोलओ भक्ति सुहाओ ॥ २४ ॥
संपइ ते मन्नामि गुरु, उग्गइ उग्गइ सूर ।
जे जिणवल्लह पउ कहहि, गमइ अमग्गउ दूरि ॥ २५ ॥
इक्क जिणवल्लह जाणियइ, सद्‌ठुवि मुणियइ धम्मुं ।
अनसुहु गुरु सवि मानयइ, तित्थ जिम धरइ सुहंसु ॥२६॥
इय जिणवल्लह थुइ भणिय, सुणियइ करइ कल्लाणु ।
देओ बोहि चउवीस जिण, सासय-सोक्खु-निहाणु ॥ २७ ॥
जिणवल्लह क्रमि जाणियइ, हिवमइ तसु सुशीसु ।
जिणदत्तसूरि गुरु जुगपवरो, उद्धरियउ गुरुवंसो ॥२८॥
तिणि नियपइ पुण ठावियओ, बालओ सींह किसोरु ।
पर-मयगल-बल-दलणु, जिणचंदसूरि मुणीसरु ॥ २९ ॥
तस सुपट्टि हिव गुरु जयओ, जिणपति सूरि मुणिराओ ।
जिणमय विहिउज्जोय करु, दिणयर जिम विक्खाओ ॥३०॥

पारतंतुविहि विसयसुहु, वीरजिणेसर वयणु।
जिणवइ सूरि गुरु हिव कहओ, मिच्छइ अन्नुन्न कवणु ॥३१॥
धन्न तइं पुरवर पट्टगइं, धन्न ति देश विचित्त।
जहिं विहरइ जिणवइसुगुरु, देसण करइ पवित्त ॥३२॥
कवण सु होसइ देसडओ, कवण सु तिहि स मुहुत्त।
जहिं वंदिसु जिणवइ सुगुरु, निसुण सुधम्मह तत्त ॥३३॥
सल्लुद्धार करेसु हउ, पालि सुदड्ढ सम्मत्तो।
नेमिचंद इम विनवइए, सुहगुरु-गुण-गण-रत्त(त्तो) ॥३४॥
नंदउ विहि जिण मंदिरहिं, नन्दउ विहि समुदाओ।
नंदउ जिणपत्तिसूरि गुरु, विहि जिण धम्म पसाओ ॥३५॥

इति नेमिचंद भंडारि कृत गुरु गुणवर्णन ॥

कवि ज्ञानहर्ष कृत

श्रीजिनदत्तसूरि अवदात छप्पय

—————*—————

..............................वत ज्ञान रिक्ख थिर ॥२१॥

जनम भयउ भ्रातकउ, नामदियउ चाचक ताकट।
दुआदस वरस जब भए, कर्यउ राज 'कनवज' अवाकउ॥
चढे 'सीह' 'द्वारिका', जाति करणण कुं निश्चल।
लयउ कुंयर 'आसथान', राणी जादु कउ अटूल॥
राव 'वरनाथ' साहसीक मणि, जाति चले 'सीह' 'द्वारिका'।
'ज्ञानहर्ष' लहे पंचसै सुहड़, परभु पर दल मारका ॥२२॥

अस्सुवार सइ पंच लेहु, 'सीहउ' यू चल्ले।
पट्ट थप्पि लहु अनुज, सुहड़ संग रक्खे भल्ले॥
सब्बहु सुं करि भिक्ख,....स 'द्वारामति' डेरे।
दिद्ध 'सींह' महाराज, सुप्भ(ब्न?) महुरत सवेरे॥
'आसथान' कुंवर आसाढ़ सिधि, लेहु संग दरकूच चलि।
'ज्ञानहर्ष' कहइ तिस वार विच, भयउ इक्क अचरिज्ज इलि ॥२३॥

'सिंह' आए 'मरुदेस', सुपन इक देख्यउ रानी।
वृक्ष पाहर सब देस, हम्म अन्तरि वींटानी॥
वयण सुणि 'सीह' यू, चोट वाही हुइ संमुहां।
दिवस ऊगत 'सीह' कहत, हुइगउ केर अपणउ जहां तहां॥
मम करहु राणो क्रोध हम, नींद गमावण हेत हूय।
ज्ञान ह॰ वदति तिस हेत करि, भए राव वर सव्व भूय ॥२४॥

अन्न आख्यान कवित्त ।

'मांरुयांरि' कइ देसि, सहिरं 'पल्लीपुर' अक्खुं ।
तहां हइ पुर नाह, वं(बं?)भ 'जस्सोहर' दक्खुं ॥
'खेरनगर' 'महेश', 'गुहिल-वंशी' हइ राजा ।
मारण 'पल्लीनगर', चढ्यउ सो करत दिवाजा ॥
तिनवार 'बंभ जस्सोहरू', वदइ क्युंहि 'पल्ली' रहइ ।
कोऊ रखुं आणि आषाढ़ सिधि, 'ज्ञानहर्ष' कवि यूं कहइ ॥२५॥
'पल्लिनगर' चउमास, रहे खरतर गच्छ नायक ।
तिन गुरु कउ जस बहुत सुण्यउ, विप(प्र ?) लोकां वाइक ॥
ताकउ नाम 'जिनदत्त सूरि', मंत्र धारी सूर वर ।
पंच नदी पंच पीर, साधि लिद्धउ सुर कउ वर ॥
'माणभद्द' जक्ख हाजर रहइ, तरउ खरउ सेवा करइ ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ गुरु कित्त बहु, पार न सुर गुरु नहु करइ ॥२६॥
गुरु पहुंचे 'मुलतान', पीर पंच आए नाम सुणि ।
पत्थर पारे पीर, गुरु वरसे कंचण मणि ॥
पीर ग्रहे गुरु पाइ, संघ पइसारउ कीनउ ।
मूयउ मुगल कउ पूत, जीउ गुरु घाले दीनउ ॥
सहु लोग देखि अचरिज भए, इन गुरुका अवदात बहु ।
'ज्ञानहर्ष' कहत 'जिणदत्त' को, करत देव कीरत सहु ॥२७॥
गुरु करत बखाण, धरे आगे चउसठि गिणी ।
छोटेसे पाटले, आइ बइठी तिहां जोगिणि ॥

चउसठि तिय कइ रूप, आई गुरु छलवइ कुं।
गुरु.यू तिण कूं छली, लेहु उठा पटलइ कुं॥
पट्टले रहे आसण चढ़े, करामत गुरुकी वड़ी।
'ज्ञानहर्ष' कहत कर जोड़ि कर, रही देव चउसठ खड़ी॥२८॥

करहु दूर पाटले, गुरु हारे हम तुम्ह पइ।
चाहीजइ कछु बात, लेहु गुरु यू तुम हम पइ॥
कहइ गुरु हम साधु, लोभ ममता नहीं करनां।
परतिख भइ तब देव, रूप वहु चउसठि भइनां॥
वर सात दइत हरखित भइ, सहु लोगां सुणतां समुख।
'ज्ञानहर्ष' कहत अवदात यउ, परसिध हइ सब लोक मुख॥२९॥

हइ हइ देव वर सत्त, नाम गुरु लेतां बिजुरी।
परइ नहीं किस परइ, प्रथम अयउ वर यइ सगरी॥
गाम नगर मणिमत्थ, एकु हुइगउ तुम्ह श्रावग।
तुम श्रावग 'सिन्धु' गयउ, खाट ल्यावइ व्यापारग॥
वर चउथउ भूत प्रेत ज्वर, आधि व्याधि सबही टरइ।
'जिणदत्तसूरि' मुखि जप्पतां, 'ज्ञानहर्ष' कवि उच्चरइ॥३०॥

चोर धाड़ि संकट्ट मिटति, गुरु नामे पञ्चम वर।
छट्ठउ जलहुं तरइ, जउ लूं मुख समरइ सदगुर॥
सातमउ वर साधवी, ऋतु नावइ खरतर की।
अयउ वर दे पग परी, बात सहु कही कइ उरकी॥
समरतां आइ खड़ी रहइ, वीर बावन्ने परवरी।
'ज्ञानहर्ष' कहत निस निति प्रतइ, करइ नृत्य चउसठ सुरी॥३१॥

'उज्जेनी' गुरु गए, देखि थांभउ गुरु हरखे ।
जप्यउ मन्त्र करि ध्यान, लिद्ध पोथी आकरखे ॥
तिस बिच सोवन सिद्ध, गुरु बहु विद्या पाइ ।
'चित्रोर' कइ भण्डार, तहां गुरु जाइ रखाइ ॥
उस पोथी की बात, 'कुंयरपाल' राजा सुणी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ 'पाटणनगर' नवलख असवारां धणी ॥३२॥
'कुंयरपाल' जिनधर्म, इइ श्रावक पूनम गच्छ ।
श्रावक सर्व बुलाइ, संघ नायक खरतर गच्छ ॥
गुरु यू कुं तुम लिखउ, हेम मिध पोथी आवइ ।
कागद संघ दरहाल, भेज पोथी मंगावइ ॥
गुरु लिख्यउ वचन पोथी परइ, छोग न पोथी बांचनी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ भण्डार बिच, रख कइ पोथी पूजनी ॥३३॥
गुरु 'कुंयरपाल' कउ, 'हेम' नामइ आचारिज ।
तिण पइ पोथी धरी, छोरि बांचउ गुरु आरिज ॥
कहत गुरु हम वतइ, अ्या छोरी नवि जावइ ।
साधवी गुरु की भइन, छोरितां आँख गमावइ ॥
पुस्तक्कि उड़ि भण्डार बिच, 'जेसलमेरन' कइ परी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत तिस जाइगा, रक्खइ बहु चउसठ सुरी ॥३४॥
परकमणइ बिच बीज, परत रक्खी गुरु ततखिण ।
'त्रिवंपुर' परी मृगी, गमी गुरु स्तोत्र तंज्यउ भण ॥
पतरइसइ गृह तहां, महेसरी डागा लूण्या ।
परबोधे श्रावक, ... ॥

१७वीं शताब्दी लि० (इस प्रतिका सातवां मध्य पत्र हमारे संग्रहमें)

——*——

श्री जिनेश्वर सूरिजी

(श्री जिनपति सूरि शिष्य)

कवि सोममूर्त्ति गणि कृत

श्रीजिनेश्वरसूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास।

—✻—

चिंतामणि मण१ चिंतियत्थे,२ सुहियइ३ धरेविणु पास जिणु।
जुगपवरु 'जिणेसरसूरि' मुणिराउ,थुणिसु हउं४ भत्ति आपणउ५गुरु १।
नियं हियइ६ ठवहु वर ७मोतिय हारु, सुगुरु-'जिणेसरसूरि' चरियं।
भविय जण जेण सा मुत्ति वर कामिणी, तुम्ह वरणंमि उक्कंठियए८ ॥२
नयरु 'मरुकोट्टु' मरुदेसु सिरिवर मउडु, सोहए९ रयण कंचण पहाणु।
जत्थ वज्जंति नय भेरि भंकारओ,१० पड़िउ अन्नस्स११ हियए धसक्को१२ ॥३॥

कंत दसण कला केलि आवासु१३, महुर वाणी (य) अमियं झरंतो।
रेहए तत्थ भण्डारिओ पुन्निमा,१४ चंद जिम 'नेमिचंदो' ॥४॥
सयल जण नयण आणंद अमिय-छडा, रूव लावण्ण सोहग्ग चंग१५।
पणइणी 'लखमिणी' तासु वक्खाणि,१६
पवर गुण गण रयण एग१७ खाणि ॥५॥

१c मणि, २c वि वियत्थे, ३c सुहियय, ४c इउ, ५a आपणउं, ६c हियय, ७a मोतिया, cमोतियं ८aइ, ९bसोहइ, १०aभंकारउ, ११cअ नय-रस, १२bcधसक्को, १३cआ तासु, १४cराउ पुनिम, १५cचंद, १६cवर-काणि, १७b एक थाणि।

बार पञ्चताल१८ विकम्म१९ संवच्छरे, मग्गसिर सुद्ध एगारसीए२० ।
'लखमा'ए दिहि पुत्तु उपन्नु, नेमिचंद कुल मंडणउ [ए+] ॥६॥
'अंबा'ए त्रिहि सुमिणउ२१ दिन्नु,२२
एउ२३ अम्हाणउ२४ मणि२५ धरिवि२६ + ।
'अंबडु'२७ नामु२८ तसु कियउं२९ पियरेहि,
रंग भरि गरूय-वद्धावणाए३० ॥७॥

घात:—अत्थि पुहविहि अत्थि पुहविहि नयरु 'मरुकोटु',३१
भंडारिउ तहि३२ वसए, 'नेमिचंदु' गुण रयण सायरु ।
तस भज्जा 'लखमिणि', पवर सील+[वंत] लावन्न मणहर ॥
तह३३ उप्पन्नउ पुत्तु वरो,३४ रूविणि३५ देवकुमारू ।
'अंबडु' नाउं३६ पयट्ठियउ,३७ हूयउ जय-जय कारू ॥८॥
अन्नि३८ दिसहो अंबडु कुयरु, पभणइ३९ मायह४० अग्गइ धीरु ।
इहु संसारु दुहह४१ भंडारु,
ता हउं४२ मेल्हिसु४३ अतिहि४४ असारु४५ ॥ ९ ॥
परणिसु संजम४६ सिरि वरनारी,
माइ माइए४७ मज्झु४८ मणह पियारी ।

१८b पंचेताल, १९b चिकम a विकम, २०b इक्कारसीए, २१b छमिणए, २२b दोनु, २३b c एहु, २४b cअम्हारउ, २५a मगु bमंनि, २६b cधरेवि, २७b cअंबडो, २८b नाउं, २९b कियउ, ३०b cवद्धावणए ।

३१c गरुकोटु, ३२a तह, + ab प्रति, ३३c तसु उपन्न, ३४a पुत्तुवरु, ३५a bरूविण, ३६a नामु, ३७a पयट्ठिउ, ३८b अन्निहिं दिवसिहि अंबडु कुमर, c अन्निदिवसिहुउ अंबडु कुमरो, ३९a पभणय, ४०b माया आगइ धीरु (c रोरु), ४१a b दुह, ४२a c ता हउ, ४३a मिल्हिसु, ४४a अत, ४५c असारो, ४६c संयमसिरि, ४७c माए b माइ, ४८b मुझ,

जासु पसाइण वंछिउ४९ सिज्झए,५०

वलि वि न संमारंमि पड़िज्जए५१ ॥ १० ॥

इहु निसुणेविणु 'अंबड़' वयणु, पभणइ माया संभलि लाडण ।

तुहु नवि५२ जाणइ बालउ भोलउ,

इहु५३ व्रतु होइसइ५४ खरउ५५ दुहेलउ ॥ ११ ॥

मेरु धरेविणु५६ निय भुयदंडिहि,५७

जलहि तरेवउ५८ अप्पुणि बाहहि५९ ।

हिंडेवउ असि धारह६० उय(व?)रि, लोह चिणा चावेवा इणिपरि ॥१२॥

ता तुहु६१ रहि घर कहियइ लागि, जं तुह भावइ६२ वच्छ६३ तु मागि।

किंपि न भावइ६४ विणु संजमसिरि,

माइ६५ भणइ जं रूड़उ६६ तं करि ॥ १३ ॥

घात:—भणइ 'अंबडु' भणइ 'अंबडु' एहु संसारु ।

गुरु दुक्ख भरिपूरियउ,६७ माइ माइ ता वेगि मिल्हिसु६८ ।

परणेविणु६९ दिक्खसिरि,७० विषिह भंगि हउं सुक्ख माणिसु ।

माइ७१ भणइ दुकरु चरणु, तुहु पुणि अइ सुकुमालु ।

कुमर भणइ दुक्करह७२ विणु, नहु छलियइ७३ कलिकालु७४ ॥ १४ ॥

४९a वंछिउ b वंछिओ, ५०a सिज्झए b सीझए, ५१a पड़िज्जय b पड़ीजए, ५२a तुह b तुहुं, ५३a एहु, ५४b होसइ, c होसए ५५a खरओ दुहेलओ; ५६b c धरेवउ, ५७a भूयदंडहि, ५८c तरेवओ, ५९a अप्पण बाहइ c आपुण बाहुहि, ६०a धारा उयरि c धारहं उवरे ।

६१a तुह c तुहुं, ६२a भावि, ६३c वंछित. ६४c भावए, ६५c माय, ६६b.c रूयड़उं, ६७b भरिपूरिवउ, ६८a मल्हिसु c मिल्हिसु, ६९b परिणेवा, ७०a दिक्खसिरे, ७१c माय, ७२a दुकर, ७३a छलिइ, ७४a किलिकालु,

'अंबडु' पभणइ माइ७५ सुणि, परिणिसु संजम लच्छि।
इक्कु जुए पुहविहि७६ सलहियइ, जायउ 'लखमिणि' कुच्छि७७ ॥१५॥
अभिनव ए चालिय जानउत्र, 'अंबडु' तणइ वीवाहि।
अप्पुगु७८ ए धम्मह चक्कवइ,७९ हूयउ८० जानह माहि ॥१६॥
आवहि आवहि रंगभरि, पंच-महव्वय राय।
गायहि गायहि महुर सरि८१, अट्ठय८२ पवयणमाय ॥१७॥
अढार८३ सहसह८४ रहवरह,८५ जोत्रिय८६ तहि सीलंग।
चालहिं चालहिं खंति सुह,८७ वेगिहिं८८ चंग तुरंग ॥ १८ ॥
कारइ कारइ 'नेमिचंदु',८९ 'भंडारिउ' उच्छाहु।
वाधइ वाधइ जान९० देखि, 'लखमिणि' हरषु९१ अवाहु ॥ १९ ॥
कुसलिहि९२ खेमिहि९३ जानउत्र, पहुतिय९४ 'खेड' मज्झारि।
उच्छवु हूयउ९५ अइ ९६पवरो, नाचइ फरफर नारि ॥ २० ॥
'जिणवइ' सूरिण मुणि९७ पवरो, देसण अमिय रसेण।
कारिय जीमणवार९८ तहि, जानह हरिस भरेण९९ ॥ २१ ॥
'संति जिणेसर' वर भुयणि,१०० मांडिउ१०१ नंदि सुवेहि।
वरिसहि भविय१०२ दाण जलि, जिम गयणंगणि मेह ॥ २२ ॥

७५c म:य, ७६a जुपउविहि, ७७b कुक्खि, ७८b अप्पुणि. c आपुणु, ७९a चक्कत्रय, ८०a हूयय, ८१a रंगभरि. ८२a अट्ठ, ८३a अट्ठार. ८४a सहस, ८५a रहवर, ८६a जोत्रिया, ८७b.c मुह, ८८a वेगहिं।

८९b नेमिचंद्र, ९०a जानह, ९१a हर्ष, ९२a कुशलहि. ९३a खेमहि, ९४a पहुतो. ९५a हुयउ, ९६a पवरु, ९७a पवर, b. पवरि, ९८b जीवणवार, ९९b भणो, १००a भुवणि–१०१b.c मंडिय, २b भाविय c. भविया,

तहि अगयारिय३ नीपजइ,४ झाणानलि पजलंति ।

तउ संवेगहि५ निम्मियउ, हथलेवउ६ सुमहुत्ति७ ॥ २३ ॥

इणि परि 'अंबडु' वर कुयरु८, परिणइ९ संजम नारि ।

वाजइं१० नंदीय११ तूर घण१२, गूडिय१३ घर घर बारि ॥२४॥

घात:—कुमरु चल्लिउ कुमरु चल्लिउ गरुय विछाहु ।

परिणेवा दिक्खसिरि,१४ 'खेडनयरि' खेमेण पत्तउ१५ ।

सिरि 'जिणवइ' जुगपवरु१६ दिट्ठु(हु), तत्थ निय-मणहि१७ तुट्ठउ१८।

परिणइ संजमसिरि१९ कुमरु,२० वज्जहि नंदिय२१ तूर ।

'नेमिचंदु'२२ अनु 'लखमिणि'-हि, सव्वि२३ मणोहर पूर ॥२५॥

'वीरप्पहु'२४ तसु ठवियउ२५ नामु,२६

जिण वयणु२७ अमिय रसु झरंतो२८ ।

अह सयल नाण समुद्दु२९ अवगाहए,

'वीरप्रभु'३० गणि [निय+] गुरु पसाए ॥२६॥

क्रमि क्रमि 'जिणवइ सूरिहि'३१ पाटु,

उद्धरिओ३२ ['जिणेसरसूरि' नाम ।

विहरए भविय लोयंच पड़िबोहए,

अवयरिउ] किरि 'गोयम' गणिदो ॥२७॥

३b.c अगियारोय, ४c नीपजए, ५b.c संवेगिहि, ६c हथ लेवउ, ७b.c सुमुहुत्ति, ८b कुमरु, c. कुमरो, ९a.c परिणइ, १०a.b वाजहि, ११a नंदी, १२b.c घणा, १३a गुडी । १४a दिक्खसिरे, १५a पत्तओ, १६bcजुगपवरो, १७bc मणिहि, १८a तुट्ठओ, १९c संजमसिरी, २०c कुमर, २१a नन्दीतूर, b नन्दियत्तर, २२bc नेमिचंद,२३a bपव्व, २४a cवीरपहु, २५a ठवियओ, २६ bनाउं २७b श्रवण, २८a b झुरंतो, c किरि झरतो, २९c संमुद्दु, ३०a b वीरप्रभ ×bप्रति, ३१a वय, ३२a उद्धरिगो, [२×] b c प्रति,

'अज्जसुहत्थि'३३ जिम जिण भवण३४ मंडियं,

महियलं निम्मियं अरिरि जेहिं।

सिरि 'वयरसामि' जिम तित्थ३५ उन्नइ कया३६,

कटरि अच्छरिय सुचरिय पहूणं ॥२८॥

घात:—जेण जिणवर जेण जिणवर भुवण उत्तुंग।

किरि भवियण ववहारियह, पुन्न हट्ट संठविय३७ पुरि पुरि।

जणु दुग्गइ३८ उद्धरिउ, धम्मरयण दाणेण बहुपरि ॥

नाण चरण दंसण जुनइ, केलि विलासु३९ पहाणु४०।

साहु-राउ४१ सो वन्नियइ४२, 'जिणेसरसूरि'४३ जगि४४ भाणु ॥२९॥

सिरि 'जावालपुरंमि' ठिएहिं, जहि४५ निय अंत समयं मुणेवि४६।

नियय४७ पट्टंमि सइं हत्थि संठाविओ,

वाणारिउ४८ 'पव्वोहमुत्ति'४९ गणि ॥३०॥

सिरि 'जिणपव्वोह सूरि'५० दिन्नु तसु नामु,

तउ भणिउ५१ सयल संघस्स अग्गे ॥

अम्ह जिम एहु नमेव उ५२ संघि,

जुगपवरु 'जिणपबोहसूरि' ५३ गुरु ॥३१॥

३३a महुत्थि, ३४c भुवण, ३५a उन्नय, ३६b कय, ३७a संटियउ, ३८a दुग्गय उद्धरिय, c दुग्गइउ दूरिउ। ३९b c विलास, ४०b पहाण, ४१a राय, ४२a वन्नियइ, c वंनियइ, ४३c सुरि, ४४a जग, ४५ b-c जे हि, ४६c मुयं मुणेवि, ४७b नियइ, ४८ b वाणारी, ४९b प्रवोहमूर्त्ति, c प्रबोधमूर्ति, ५०a जिण पवुह, b जिणप्रवह, c जिण प्रबोध, ५१a भणिउ, ५२b मानेवव c मानेवओ, ५३b जिण प्रबोधह सूरि, c जिणप्रबोधसुरि,

अणसणु लेवि५४ सुह झाणु धरेवि, अरिरि सुहडत्तु इम भाणिऊणं ।
[तेर इगतीस आसोज५५ बदि छट्ठि, 'जिणेसरसूरि सग्गंमि' पत्तु ॥×]
'जिणेसर सूरि' सग्गंमि संपत्तु५६ पूरउ संघ मण वंछियाइं५७ ॥३२॥

एहु वीवाहलउ५८ जे पढइ, जे दियहि खेला खेली५९ रंग भरे६० ।
ताह जिणेसर सूरि सुपसन्नु६१,
इम भणइ भविय गणि 'सोममुत्ति'६२ ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री जिनेश्वर सूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास समाप्तः ॥

५४a लेविणु [×] abप्रति, ५५b आसोय ५६b-c संपत्तओ, ५७b वंछियाइ, ५८b वीवाहडउ, c वीवाहुलउ, ५९ b-c खेलिय, ६० b-c भरि, ६१a सुपसन्न ६२b सोममूर्त्ति, c सोममुत्ती ।

॥ कवि ज्ञानकलश कृत ॥

श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास

संति करणु सिरि संतिनाह, पय कमल नमेवी।
कासमीरह मंडणिय१ देवि, सरसति सुमरेवी२॥
जुगवर सिरि 'जिणउदयसूरि', गुरु३ गुण गाएसू।
पाट महोच्छवु४ रासु रंगि, तसु हउं पभणेसू॥ १॥
चन्द्र गच्छि सिरि वयर ५साखि, गुणमणि भंडारू।
'अभयदेवु'६ गुरु गहगहए, गरुयउ७ गणधारू॥
सरसइ८ कंठाभरणु [न(न?)यण], जण नयणाणंदू।
'जिणवल्लह' सूरि चरण कमलु, जसु नमइ सुरिंदू॥ २॥
तासु पाट्टि९ 'जिणदत्तसूरि', विहि मग्गह मंडणु।
तउ 'जिणचंद' मुणिंद रूवि, मयणह मय खंडणु॥
वाईय१० मयगल११ कुंभ दलणु, कंठीर समाणू।
सिरि 'जिणपत्ति' मुणिंदु१२ पयडु, महियलि जिम भाणू॥ ३॥
तसु पय कमल मराल सरिसु१३, भवियण जण सुरतरु।
सूरि 'जिणेसरु' कटरि पुन्न, लच्छी केलीहरु।
निम्मल सयल कला कलाव, पउमिणि वण दिणमणि।
सुहगुरु सिरि 'जिणपबोह सूरि', पंडियह सिरोमणि॥ ४॥

१b कसमीरह मंडणीय, २a समरेवो, ३a गुर, ४a महोच्छव, ५b साख, ६a अभयदेव, ×a प्रति, ७a गुरयउ, ८a सर-य, ९b पाटि, १०b वाइय, ११a मंगल, १२b मुणिंद, १३b सूरिछ।

चंद धवल निय कित्ति धार१४, धवलियह१५ बंभंडू।
तयणु सुगुरु 'जिणचंदसूरि', भवजलहि तरंडू॥
सिंधु देसि सुविहिय विहारु जिण धम्म पयासणु।
सुगुरु राउ 'जिणकुसलसूरि', जगि अखलिय सासणु॥ ५॥

तासु सीसु 'जिणपदमसूरि', सुरगुरु१६ अवतारू।
न लहइ सरसति देवि, जासु विद्या गुण पारू॥
तयणंतरु विहि—संघ, नीरु-निहि१७ पूनिमचंदू।
जिण सासणि सिंगारु हारु, 'जिणलब्धि' मुणिंदू॥ ६॥

तासु पाटि जिणचंदसूरि तव तेय फुरंतउ।
जलहर जिम घणु नाण नीरु, पुरि पुरि वरिसंतउ१८॥
'खंभनयरि' संपत्तु तत्थ, गुरु वयणु सरेई।
गच्छ सिक्ख नियपट्ट सिक्ख१९, आयरियह देई॥ ७॥

॥ घात ॥

गच्छ मंडणु गच्छ मंडणु, साख सिंगारु२०।
जंगमु किरि कप्पतरु, भविय लोय संपत्ति कारणु२१।
तव संजम नाण निहि, सुगुरु रयणु संसार तारणु।
सुहगुरु सिरि 'जिणलब्धिसूरि', पट्ट कमल मायंडु२२।
झायहु २३सिरि, जिणचन्दसूरि', जो तव तेय पयंडु॥८॥

१४b वार, १५b धवलिय, १६b सुरगुर, १७b निसमिहि, १८a वरसंतउ, १९a सिख, २०b सिणगारु, २१a कार।२२b मायंड, २३a झायह,

महि मंडलि 'ढीलिय नयरे',२४ कंचण रयणु विसालु२५ ।
तउ 'रूद्पाल'२६ 'नीबउ' 'सधरो', निवसइ तहि 'श्रीमालु' ॥६॥
तसु नंदणु बहु गुण कलिउ, संघवइ 'रतनउ' साहु ।
त×सयल महोच्छव धुरि धवलो, 'पूनिग' मनि उछाहु ॥१०॥
सुहगुरु२७ वंदण 'खंभपुरे', दीण दुहिय साधारु ।
'रतनसीह' 'पूनिग' सहिउ, आवइ सपरिवार (रु) ॥११॥
वंदवि सुहगुरु विन्नविउ, 'तरुणप्पह' सूरि राउ ।
त×गुरु पय—ठवणह२८ कारणिहि,२६ तिणि लाधउ सुपसाउ ॥१२॥
त×पाट ठवणि सुहगुरु३० तणए, आवइ विहि समुदाउ ।
त नयर लोउ३१ जोयण मिलए, खरतर विहि जसवाउ ॥१३॥
'आसाढ़ पनरोतरए, तेरसि पहिलइ पक्खि' ।
तउ३२ नंदि ठविय 'अजियह भुवणि', सलहीजइ नर लक्खि ॥१४॥
'तरुणप्पह' सुहगुरु रयणु, वाणारिउ सुविचारु ।
त ठविउ ३३पाटि गणि 'सोमप्पहो',३४ सयल गच्छ सिंगारु ॥१५॥
त दिन्नु नामु 'जिणउदयसूरि', सवणह अमिय पवाहु३५ ।
त+जय जयकार समुच्छलिउ, हूउ३६ संघु सणाहु ॥१६॥

॥ घात ॥

सयल मन्दिर सयल मन्दिर लच्छि गेहंमि ।
'खम्भाइत'३७ वर नयरि,३८ अजियनाह मन्दिरी मणोहरि ।
तहि मिलिउ संघु घणु३९ पंच, सब्द४० वज्जंति बहुपरि ॥

२४b ढिल्लियनयरो, २५b विसालु, २६b त रूदपालु, ×a प्रति, २७b सुहगुर, २८b पयठवणा, २९a कारणहि, ३०b सुहगुर, ३१a नयरलोय ३२a त । ३३b ठविय, ३४b सोमपहो, ३५b प्रवाहु a ×प्रति, ३६a हूंयउ, ३७a खंभाईत, ३८a नयरे, ३९b यणू, ४०b सबद,

'रतनउ' 'पूनउ' संघवइ, सुहगुरु४१ तणइ पसाइ ।
पाट महोच्छवु कारवइ४२, हिइडइ हरषु न माइ ॥१७॥

इणि४३ परि ए गुरु आएसि, सुहगुरु पाटिहि४४ संठविउ ।
तिहुयणि ए मंगलचारु, जय जयकारु समुच्छलिउ ॥१८॥

वाजए४५ नंदिय तूर, मागण जण कलिरवु करए ।
सीकरि ए तणइ झमालि,४६ नंदि मंडपु जण मणुहरए ॥१९॥

नाचईए नयण विसाल, चंद वयणि मन रंग भरे ।
नव रंगिए रासु रमंति, खेला खेलिय४७ सुपरिपरे ॥२०॥

घरि घरिए वन्दरवाल,४८ गीतह झुणि रलियावणिय ।
तहि पुरिए हुयउ४९ जसवाउ, खरतर रीति सुहावणिय ॥२१॥

सलहिसु५० ए विहि समुदाय 'खम्मनयरि' बहु गुण कलिउ ।
दीसई ए दाणु दीयंतु, जंगमु सुरतरु करि५१ फलिउ ॥२२॥

संघवई ए 'रतनउ'५२ साहु, 'वस्तपाल'५३ 'पूनिग' सहिउ ।
घणु जिमए वंछिय धार, धनु वरिसन्तउ५४ गहगहिउ५५ ॥२३॥

अहिणवु ए कियउ विवेकु, रंगिहि५६ जीमणवार हुय ।
गरुईए५७ मनहि आणंदि, चउविह संघह५८ पूय किय ॥२४॥

'रतनिगु' ए 'पूनिगु' बेवि, दाणु दियंतउ नवि खिसए ।
माणिक ए मोतिय दानि, कणय कापडु५९ लेखइ किसए ॥२५॥

---

१ ४१b सुहगुर, ४२b कारवइं, ४३b इण, ४४a पाटहि, ४५a वजए, ४६b जमालि, ४७b खेलखिल्लिय, ४८b वंदुरवाली, ४९a हुउ । ५०b सलाहिसुं, ५१b किरि, ५२ a रतन, ५३b वस्तपाल, ५४a वरसंतउं, ५५a गहगहए, ५६a रंगहि, ५७b गरुयइ, ५८b संघहं ५९a कापड,

'रतनिगु' ए 'पूनिगु'६० बेवि, बंधव प्रीतिहि६१ संमिलिय६२ ।
झालिहि६३ ए संघह भारु, निय निय६४ पूरहि मनि रलिय ॥२६॥

॥ घात ॥

तहि६५ जि उच्छवि तहि जि उच्छवि, रणइ घणतूर ।
वर मंगल धवलु६६ झुणि, कमल नयणि नच्चंति६७ रस भरि ॥
तहि 'सालिहगु' धुरि धवलु६८, दियइ दाणु 'गुणराजु' बहुपरि ।
मागण जण कलिरवु करइ, चमकिय चित्ति सुरिंदु ।
पाट ठवणि सुहगुरु६९ तणए,७० संघि सयलि आणंदु ॥२७॥
संघु सयलि आणंदु, दंसण नाण चारित्त धरो ।
सिरि'जिणउदय' मुणिंदु, जउ दीठउ नयणिहि७१ सुगुरो ॥२८॥
घरि घरि मंगल चारु, भविय कमल पड़िबोह करो ।
संजमसिरि उरि हारु, उदयउ ७२ सुहगुरु सहसकरो ॥२९॥
'माल्हूय'७३ साख सिंगारु, 'रूदपाल' कुल मंडणउ ।
'धारलदेवि' मल्हारु, सुहगुरु भव दुह खंडणउ ॥३०॥
जिम जिण बिम्ब विहारि, नंदणवणि७४ जिम कप्पतरो ।
सुरगिरि गिरिहि मझारि; जिम चिंतामणि मणि पवरो ॥३१॥
जिम धणि वसु भंडारू, फलह मांहि जिम धम्म फलो ।
राज माहि गज सारु, कुसुम माहि जिम वर-कमलो ॥३२॥

६०a पूनिग, ६१a प्रीतहि, ६२a संमिलय, ६३b झालहि, ६४a नितु नितु, ६५a तह, ६६a धवलु, ६७b नच्चंति, ६८a धवल, ६९b सुहगुर, ७०b तणइ, ७१a नयणहि । ७२b उदय, ७३b माल्हय, ७४b विणि,

जिम माणससरि हंस, भाद्रव घणु दाणेसरह७५ ।
जिम गह मंडलि हंसु, चंद७६ जेम तारा—गणह७७ ॥३३॥
जिम अमराउरि इन्दु, भूमंडलि जिम चक्कधरो ।
संघह माहि मुणिंदु, तिम सोहइ 'जिणउदय' गुरो ॥३४॥
नवरस देसण वाणि, घणु७८ जिम गाजइ गुहिर सरे ।
नाणु७६ नीर वरिसंतु८०, महिमंडलि विहरइ सुपरे ॥३५॥
नंदउ विहि८१ समुदाउ, नंदउ सिरि 'जिणउदयसूरे' ।
नंदउ 'रतनउ' साहु, सपरिवार 'पूनिग' सहिउ८२ ॥३६॥
सुहगुरु गुण गायंतु, सयल लोय वंछिय लहए ।
रमउ रासु इहु रंगि, "ज्ञान-कलस" मुनि इम कहए ॥३७॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास समाप्त ॥

७५b दाणेसरहु, ७६b चांदु, ७७b तारागणहु, ७८a घण, ७९a नाण, ८०b वरसंतु, ८१b विह, ८२b सहियउ ।

॥ उपाध्याय मेरुनन्दन गणि कृत ॥

॥ श्री जिनोदयसूरि विवाहलउ ॥

सयल मण वंछियं१ काम कुम्भोवमं,
पास पय-कमलु पणमेवि भत्तिर२ ।
सुगुरु 'जिणउदयसूरि' करिसु वीवाहलउ,
सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति ॥१॥

इकु३ जगि जुगपवरु अवरु नियदिक्खगुरु,
थुणिसुं हउं तेण निय ४ मइ बलेण, ।
सुरभि किरि कंचणं दुद्ध५सक्कर घणं,
संख किरि भरीउ गंगाजलेण ॥२॥

अत्थि 'गूजरधरा' सुंदरी सुंदरे६,
उरवरं रयण हारोवमाणं ।
लच्छि केलिहरं नयरु 'पल्हणपुरं' ७
सुरपुरं जेम सिद्धाभिहाणं ॥३॥

तत्थ मणहारि ववहारि चूडामणि
निवसए साहु वरु 'रूदपालो'८ ।
'धारला'९ गेहिणी तासु गुण रेहिणी,
रमणि गुणि१० दिप्पए जासु भालो ॥४॥

१a.c.d वंछियं, २b भत्ते, ३b एकु, ४b मय, ५d सुद्ध, ६b सुंदरा, ७b पल्हणपरं, c पल्हुणपुरं, ८d रुद्दपालो, ९d धारलादेवी, १०a गणि,

तासु कुच्छी सरे पुन्न जल सुभरे,११

अवयरिउ कुमरवरु १२ रायहंसो ।

'तेर पंचहुत्तरे' सुमिण संसूईउ,

आयउ१३ पुत्तु नियकुल वयंसो ॥५॥

करिय१४ गुरु उच्छवं सुणिय जय जयरवं,

दिन्नु तसु नामु सोहग्ग सारं ।

'समरिगो' भमर जिम रमइ नियं सयण-मणि,१५

कमलवणि दिणि रयणि १६ बहु पयारं ॥६॥

लोय लोयण दले अमिउं वरसंतउ१७

वद्धए शुद्ध१८ जिम बीय चंदो ।

निच्चु१९ नव नव कला धरइ गुणनिम्मला,

ललिय लावन्न सोहग्गकंदो ॥७॥

घातः—

अत्थि 'गुज्जर' अत्थि गुज्जर, देसु सुविसालु ।

जहि२० 'पल्हणपुरु' नयरो, जलहिं जेम नर रयणि मंडिउ ।

तहिं निवसइ साहु—वरो २१, 'रूदपालु' गुणगणि२२ अखंडिउ२३ ।

तसु मंदिरि 'धारल' उयरे, उपन्नउ सुकुमारु ।

'समर' नामि सो समर जिम, वद्धइ रूपि अपारु२४ ॥८॥

११b सोभरे, १२b कुमरवर c. कुमरुवरु, १३b जाइउ c.d जायउ, १४d करिउ, १५b सयलाणि d. अंगणि, १६b बोह, १७b.c.d अमिय वरिसंतउ, १८ छुद्द । १९c.d. निन्तु, २०b तहिं, २१b.c साहवरो, २२b गणह,२३b अखंडिय, २४.d रुवि अमरु,

अह अवर वासरे 'पल्हणे-पुर' वरे,
भविय जण कमल वण बोहयंतो ।
पत्तु सिरि 'जिण कुशलसूरि' सूरोवमो
महियले मोह तिमरं हरंतो ॥९॥

वंदए भत्ति रंगेण उक्कंठिउ 'रूदपालो', परिवार जुत्तो ।
धम्म२५ उवएस दाणेण आणंदए, सादरं सूरिराउ विन्नतो२६ ॥१०॥

अह सयल लक्खणं जाणि२७
सुवियक्खणं, सूरि दट्ठूण२८ 'समरं कुमारं' ।
भवय तुह नंदणो नयण आणंदणो,
परिणओ२९ अम्ह दिक्खाकुमारिं ॥११॥

इय भणिय पत्तु गुरु 'भीमपल्लीपुरे'
तं वयणु३० रयण जिम 'रूदपालो' ।
धरिवि ३१ निय चित्ति सयणिहिं आलोचए,
तं सुरूवं३२ सुणय सोजि बालो ॥१२॥

तयणु ३३ निय जणणि उच्छंगि निवडेवि,
मंडए ३४ राहड़ी विविह परि ३५ ।
भणइ 'जिणकुसलसूरि' पासि जा अच्छए,
माइ परिणावि मूं ३६ सा कुमारिं ३७, ॥१३॥

२५d धन्न, २६b.c.d वितत्तो, २७b.c.d वाणि २८a दट्ठूण, २९b.c.d परिणउ, ३०b वयण, ३१b.d. धरवि, ३२b.d सरूवं । ३३b तयण, ३४d संवए, ३५b.d परे, ३६a जाणइ (परिणावि)सुं, ३७b कुमारी,

माइ भणइ निसुणि वच्छ भोलिम ३८ घणो,
तउं नवि ३६ जाणए ४० तासु सार ।
रूपि न रीजए मोहि न भीजए,
दोहिली जालवीजइ अपार ॥१४॥
लोभि न राचए मयणि न माचए,
काचए चित्ति४१ सा परिहरए ।
अवर नारी अवलोयणि४२ रूसए,
आपणपइं४३ सयिं४४ सत वरए ॥१५॥
हसिय४५ अनेरीय वात विपरीत, तासु तणी छइं वणी सच्छ ।
सरल४६ सभाव४७ सलुणडा वाल,४८
कुणपरि रंजिसि४६ कहि न वच्छ ॥१६॥
तेण कल कमल दल कोमल५०हाथ, बाथ५१ म बाउलि देसितउं ।
रूपि अनोपम उत्तम वंश५२, परणाविसु वर नारि हउं ॥१७!
नव नव भंगिहिं पंच पयार५३, भोगिवि भोग वल्लह कुमार ।
क्रमि क्रमि अम्ह कुलि कलसु५४ चडावि,
होजि संघाहिवइ५५ कित्तिसार ॥१८॥
इय जणणि वयण सो कुमरु निसुणेवि,
कंठि आलंगिउं५६ भणइ५७ माइ ।
जा ५८सुहगुरि कहि साजि मूं मु (म?) नि रही,
अवर भलेरीय न सुहाइ५६ ॥॥१६॥

३८b भूलिम, ३९b तं, ४०d. ४१a विति, ४२b अवलोयणे, ४३b य, ४४d रूपि, ४५b इसी ४६b सरण ४७b सब्भाव, ४८l बाला, ४९b रंजसि, ५०d कोमला, ५१d बाम, ५२d वरु, ५३d पयारइ, ५४b कलस, ५५b संघाहिव, ५६b आलिंगिय ५७b भणय, ५८c जास, ५९b. सुहाए ।

तउ कुमर निच्छयं जणणि जाणेवि,

ढणहण नयणि नीरं झरंती ।

करिन तं६० वच्छ जं तुज्झ मण६१ भावए,

अच्छए६२ गद गद सरि भणंती ॥२०॥

॥ घात ॥

अन्न वासरि अन्न वासरि, तम्मि नयरंमि ।

'जिण कुसलु'६३ मुणिंद वरो, महियलंमि विहरंतु पत्तउ ।

तहि वंदइ६४ भत्ति भरि, 'रूदपालु' परिवार जुत्तउ ॥

गुरु पिक्खवि 'समरिगु'६५ कुमरो६६ आणंदिउ६७ नियचित्ति ।

भणइ अम्ह दिक्खाकुमरि परिणावउ६८ सुमुहत्ति ॥२१॥

तंच सुवयणु तं च सुवयणु, धरिवि नियचित्ति ।

निय मंदिरि आवियउ, 'रूदपालु', सयणिहि विमासइ ।

तं जाणि कुमर वरो, आगहेण६९ निय जणणि भासइ ॥

मूं परिणावि न दिक्खसिरि७० माइ भणइ वरनारि ।

कुमर भणइ विणु दिक्खसिरि अवरन मनह७१ मझारि ॥२२॥

॥ भास ॥

अह जाणेविणु 'समरिग' निच्छउ,७२

कारावइ७३ वय सामहणी तउ७४ ।

६०c तउं, ६१b मनि d मणि, ६२d अच्छर, ६३b कुसल, ६४b वंदय, ६५b समरग, ६६d कुमर, ६७b आणंदिय, ६८d परिणावहु, ६९b आगहेणि, ७०b दिक्खसिरे, ७१a मनहं ।७२b निच्छओ. ७३c कारविय. ७४b तओ.

मेलिय७५, साजण७६ चालइ नियपुरं,७७
धवल७८ धुरंधर जोत्रिय रहवरे ॥२३॥
चालु चालु हल सही७९ वेगिहिं८० सामहि,
'धारल' नंदण वर८१ परिणय महि ।
इम पभणंतिय मुललिय सुन्दरी,
गायइं८२ महुर सरि गीय८३ हरिस८४ भरि ॥२४॥
क्रमि क्रमि जान पहूतिय,८५ सुहदिणि,
'भीमपल्ली पुरे'८६ गुर८७ हरसिउ मणि ।
अह८८ न्गिरि वीर जिणिंदह मंदरि,
मंडिय वेहलि८९ नंदि सुवासरि९० ॥२५॥
तरल९१ तुरंगमि चडियउ लाडणु,
मागण वंछिय दाण दियइ घणु ।
कील्हुय९२ अण९३ वरिसउ 'समरिग' वर,
जिम 'सरसई'९४ किरि 'कालिग' कुमर ॥२६॥
आविउ जिणहरि वरु मणहरवउ,
दीख कुमारिय सउं९५ हथलेवउ९६ ।
'जिणकुशलसूरि' गुरो आपुण पइ जोसिउ९७,
होमइ झाणानलि९८ अविरइ घिउ ॥२७॥

७५c मिलिय. ७६d साजय, ७७d नियपुर, ७८c धवलु, ७९c हलि-लिहि. ८०b वेगइ. ८१b वरु. ८२b गाइ. c गाइहि d. गायहि, ८३d, थीय. ८४b हरसि, ८५d पहूतिय, ८६b भीमपल्लीय, ८७b गुरु. ८८b अम्हिहि. ८९b वेहिकि. c.d वेहकि, ९०b सुवासरे. d सुवारि ९१c तुरल. ९२b कल्हूय. ९३b अणु. ९४d सरसय,९५b सं० ९६b हथिलेवओ. ९७b.c जोसिय. ९८d कालानलि

वाजइ मंगल तूर गुहिर सरि,

दियइं धवल वर नारि विविह परि ।

इण९९ परि 'तेर बियासिय'१०० वच्छरि,

'समरिगु१०१ लाडणु१०२ परिणइ१०३ वय१०४ सिरि॥२८॥

॥ घात ॥

तयणु१०५ चल्लवि तयणु चल्लवि, 'भीम वरपल्लि',

सामहणी जान सउं 'रूदपालु' आविउ सुवित्थरि१०६ ।

परिणाविउ दिक्खसिरि, 'समरसिंहु'१०७ 'जिणकुसल' सुहगुरि ॥

जय जय रवु घणु८ उच्छलिउ,९ उद्धरिउ१० गुरु वंसु ।

'रूदपालु' अनु 'धारलह', नच्चइ जगि जस हंसु११ ॥२९॥

दिन्नु 'सोमप्पहो' मुणि तसु नामु, सवण आणंदणं अमिय जेम१२ ।

जिम जिम चरण आचार १३ भरि सोहए,

मोहए दिक्खसिरि तेम तेम ॥३०॥

पढ़इ जिनागम पमुह विज्जावली,

रलिय १४सेविज्जए गुण गणेहिं ।

अह ठविउ१५ वाणारिउ१६ 'जेसलपुरे',

'चउद छडुत्तरे'१७ सुहगुरेहिं१८ ॥३१॥

९९d इणि.१००b विहासियइ. १०१dसमरिग १०२bलाडण, १०३bपरिणय. १०४b वइ. १०५b तयण d. वयण. १०६b वच्छरि ।

१०७b.समरसिंघु.d. समरसिंह. ८b घण. ९b उच्छलिय. १०d उद्धरियउ. ११b निच्छइ जइ जगि हंस, १२a जिम d जेण. १३a.d आधार. १४b सेव्जए. १५d ठविय. १६b वाणारिय. १७b छड़ोत्तरे, १८a गुरुंहि.

सुविहियाचारि१९ विहारु२० करतंउ,

वाणारिउ गणि 'सोमप्पहो'२१ ।

दुविह सिक्खो२२ सुगीयत्थु२३ संजायउ,

गच्छ गुरु भार उद्धरण२४ सीहो२५ ॥३२॥

तयणु२६ 'जिणचंद सूरि' पट्टि, संठाविउ२७,

सिरि२८ 'तरुणप्पह' (आ) यरियराए२९ ।

'चउद पनरोतरे'३० 'खंभतित्थे' पुरे, मास 'असाढ़ वदि तेरसीए' ॥३३॥

सिरि 'जिणउदयसूरि' गुरुय नामेण, उदयउ भाग सोभाग निधि ।

विहरए 'गूजर' 'सिंधु' 'मेवाड़ि ,३१पमुह देसेसु रोपइ३२ सुविधि ॥३४॥

॥ घात ॥

नामु३३ निम्मिउ नामु निम्मिउ, तासु अभिरामु ।

'सोमप्पहु' मुणि रयणु३४ सुगुरु, पास सो पढइ अहनिसि ।

वाणारिउ क्रमि (क्रमि३५ हूयउ,

गच्छ भारु३६ धरु३७ जाणि गुण वसि३८ ।

सिरि 'तरुणप्पह' आयरिए३९ सिरि 'जिणचंदह' पाटि ।

थापिउ सिरि 'जिणउदय', गुरु४० विहरइ मुनिवर थाटि४१ ॥३५॥

१९b.d सुविहि आचारि, २०b विहार, २१a.c.d सोमपहो. २२a सिक्ख. २३b.c सुगियत्थ, २४b भारू d भारूद्धरण, २५a.c.d सहो, २६b तयण, २७d संताविउ, २८d सिर, २९b तरुणप्पह आयरिय. d. तरुणप्पहायरिय-राए, ३०। पनोत्तरे ३१d सिन्धु मेवाड़ गूंजर. ३२b रोविधि ।

३३b तासु निमिउ (२) नामु अभिरामु. c तासु नियउ (२) नामु अभिरामु. d भालु निम्मिउ (२) नामु अभिरामु. ३४b रयण, ३५b.d ३६c भार, ३७d धरि, ३८d वंसि, ३९b आयरिय, ४०d सूरि, ४१b थट्टि

पंच पइट्ठ४२ जिणि४३ सोस तेवीस,

चउद साहुणि घण संघवइ रइय ।

आयरिय उवज्झाय वाणारिय४४ ठविय,

मह महत्तरा पमुह पयि४५ ॥३६॥

जेण रंजिय मणा भणइं४६ पंडिय जणा,

वलि वलिथूणिवि४७ नियसिरायं४८ ।

कटरि गांभीरिमा४९ कटरि वय धीरिमा,

कटरि लावन्न सोहग्ग जायं ॥३७॥

कटरि गुण संचियं५० कटरि इंदिय जयं, कटरि संवेग निव्वेय रंगं ।

बापु देसण कला बापु मइ निम्मला, बापु लीला कसायाण भंगं ॥३८॥

तस्स५१ एह५२ गुण गणं जेम तारायणं,

कहिउ किम सक्कउं५३ एक जीह ।

पारु न५४ पामए सारया देवया,

सहस मुहि भणइ जइ रत्ति५५ दीह ॥३९॥

॥ घात ॥

अह अणुक्कमि अह अणुक्कमि, पत्तु विहरंतु ।

सिरि 'पट्टणि' सूरिवरो, पवर सीसु जाणेवि नियमणि ।

'वत्तीसइ भद्दवइ५६ पढ़म, पक्खि इक्कारसी' दिणि ॥

४२a एइठ b पइट्ठा, ४३b.d जिण, ४४b वाणारिय, ४५b पय d पइ, ४६b भणय, ४७a थूणिविमिय, ४८a.cd सिराइं ४९b-cd गम्भीरिमा. ५०a c सञ्चयं, d सम्भयं, ५१b.तास ५२b पह c d पहु ५३b सक्कए ५४a पार ५५a रति b राति ५६b c d भद्दवए

सिर 'लोगहियायरि' यर५७ अप्पियप८ निय पय५६ सिक्ख६० ।
संपत्तउ सुरलोयि६१ पहु, बोहेवा सुर लक्ख६२ ॥४०॥

धन्न६३ सो वासरो पुन्न भर भासुरो,
साजि६४ वेला सही अमिय ६५वेला ।

जत्थ निय सुहगुरु भाव कप्पतरू,
भत्ति गाइज्जए हरिस हेला६६ ॥४१॥

सहलु६७ मणुयत्तणं ताण लोयाण, लहइ ते सुक्ख संपत्ति भूरिं ।
सुद्ध६८ मण संठियं थूभ६६ पड़िमट्ठियं,
जेय झायंति 'जिणउदयसूरिं' ॥४२॥

एहु सिरि 'जिणउदयसूरि' निय सामिणो,
कहिउ मंइ चरिउ७० अइ मंद७१ बुद्धि ।
अम्ह सो दिक्ख गुरु देउ सुपसन्नउ,
७२दंसण नाण४चारित्त सुद्धि ॥४३॥

एहु गुरु राय वीवाहलउ जे पढइ,
जे सुणइ७३ जे थुणइ जे दियंति ।
उभय लोगेवि ते लहइं७४ मणवंछियं,
"मेरुनंदन"७५ गणि इमं भणंति ॥४४॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि गच्छनायक वीवाहलउ समाप्त ॥

५७b लोगइ आयरिय d लोगहिं आयरिय ५८b आपिय ५९b नियनिय d नियमय ६०b c b सिक्ख ६१b सुरलोय d सुरलोइ ६२b c d लक्ख ६३a d धनु ६४b साज ६५a d वेल ६६a हेल ६७b सहल d सुहल ६८d सुहमणि सठियं ६९d थुति ७०d वरिउ ७१b इय ७२d देसण ७३a जे गुणइ जे सुणंति c d जे गुणइ जे सुणइ जे दियंति (d देयन्ति) ७४b लहय ७५b मेरुनन्दण ।

॥श्रीजयसागरोपाध्याय प्रशस्तिः॥

संवत् १५११ वर्षे श्री जिनराजसूरि पट्टालङ्कारे श्रीमज्जिनभद्र सूरि-पट्टालङ्कार राज्ये ॥

श्री उज्जयन्त शिखरे, लक्ष्मीतिलकाभिधो वर विहारः ।
'नरपाल' संघपतिना, यदादि कारयितुमारेभे ॥ १ ॥
दर्शयति तदाचाम्बां, श्रीदेवी देवतां जन समक्षम् ।
अतिशय कल्पतरूणा, 'जयसागर' वाचकेन्द्राणाम् ॥ २ ॥
'सेरीषकाभिधाने', ग्रामे श्री पार्श्वनाथ जिन भवने ।
श्री शेषः प्रत्यक्षो येषां पद्मावती सहितः ॥ ३ ॥
श्री 'मेदपाट' देशे, 'नागद्रह' नामके शुभ निवेशे ।
नवखण्ड पार्श्व चैत्ये, सन्तुष्टा शारदा येषाम् ॥ ४ ॥

तेषां श्री 'जिन कुशल सूरि' प्रमुख, सुप्रसन्न देवतानाम् पूर्व देशवर्त्ति 'राजद्रह' नगरोद्दण्ड विहारादि । स्थानोत्तर दिग्वर्त्ति नगर-कोटादि' स्थान पश्चिम दिग्वर्त्ति वलपाटक 'नागद्रहा'-दिषु । राज सभा समक्षं निर्जित पूर्व भट्टाद्यनेक वादि स्तंबेरमाणां । विरचित 'सन्देह दोलावली वृत्ति' लघु 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' 'पंच पर्वी' ग्रन्थ रत्नावली प्रमुख मेहा वृषभनाथ स्तवः श्री 'जिन वल्लभ सूरि' कृत 'भावारिवारण स्तव वृत्ति' ।संस्कृत प्राकृत बन्ध स्तवन सहस्राणाम् स्थापितानेक संघपतीनां कवित्व कला निर्जित सुर गुरूणां पाठिता-नेक शिष्य वर्गाणाम् इत्यादि—

॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि फागु ॥

न०—१ (त्रुटक)

खिणि वाजित्र घुम घुमइ ए, गयणंगण गाजइ ।

छल छल छपल कंसाल ताल, महुरा-रवि वाजइ ॥ २८ ॥

भास—आवइ कामिणी गहगहिय, गावइ मङ्गल चार ।

खेला खेलइ अमिय रसि, हरिपिउ संघ अपार ॥ २९ ॥

अहे क्रमि क्रमि आगम वेद छन्द, नाटक गण लक्खण ।

पञ्च वरिस विज्जा विचार, भणि हुअ वियक्खण ॥

पण्डिय मुणि तिणि गुरि पसाउ, करि "कीरतिराउ" ।

वाणारी (स) पदि थापिउ, ए सो पयड़ पभाउ ॥ ३० ॥

नयर 'महेवइ' हेव तेम, जिणभद्द" सूरिन्द ।

उवझाया राय थापिउ ए, 'कीत्तिराय' मुणिन्द ॥

घरि घरि उच्छव बहुय रंगि, कामिणि जण गावई ।

'हरपि' 'देवल' देवि ताम, मनि हरपि (म) न मावई ॥ ३१ ॥

धारइ अङ्ग इग्यार सार, सुविचार रसाल ।

टालइ दोप कपाय जाय (ल?), उवसम-सिरि माल ॥

जिण शासन जे अवर, वहुय सिद्धन्त प्रसिद्धि ।

ते जाणइ सवि भेय वेय, वपु दे पिग बुद्धि ॥ ३२ ॥

॥ भास ॥

'सिन्धु' देश 'पूरव' पमुह, बहु विह देस विहार।
करइ सुगुरु देसण हरस, वरिसइ सुह फल कार ॥ ३३ ॥
अहे क्रमि क्रमि 'जेसलमेरु' नयरि, पहुंतउ विहरन्तउ।
'कित्तिराय' उवझाय चन्द, तव तेउ फुरन्तउ ॥
सिरि 'जिणभद्रसूरि' मुणिय, पात्र आचारिज कीधउ।
मोटइ ऊलटि 'कित्तिरयणसूरि', नाम प्रसिद्धउ ॥ ३४ ॥
सो सिरि 'कीरतिरयण सूरि' भवियण पड़िबोहइ।
लबधिवन्त महिमानिवास, जिण शासनि सोहइ ॥
खरतर गच्छि सुरतरुह जेम, वंछिय दाणेसर।
वादिय मयंगल माण तिमिर, भर नाण दिणेसर ॥ ३५ ॥
एरिस सुहगुरु तणउ नाम, नितु मनिहि धरीजइ।
तिमि तिम नव निहि सयल सिद्धि, बहु बुद्धि लहीजइ ॥
ए फागु उछ रंगि रमइ, जे मास वसन्ते।
तिहि मणिनाण पहाण कित्ति, महियल पसरन्ते ॥ ३६ ॥
॥ इति श्री कीर्त्तिरत्नसूरि वराणां फागु समाप्तः ॥

॥ छः ॥ शुभं भवतु श्री संघस्य ॥ छः ॥
॥ लिखितं जयध्वज गणिना ॥

॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि गीतम् ॥

नं०—२

नवनिधि चवद रयण आवइ, तसु मन्दिर सम्पति रिति(द्धि?) पावइ।
दूझै कामगवी भावै, श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरि' जे ध्यावै॥ न। आं०॥
सुरतरु अंगणि सफल फले, सुर-कुंभ सिरोमणी हेली मिलइ।
जागती जोति अमृत सघलै, दुख दारिद दोहग दूर हलै॥१। न०॥
अविहड उलट उछव घणा, थिण दविण एवत्थण कामुकणा।
पसरइ महियल विमल गुणा, चंगइ गुरु ध्यावो भविक जणा॥२न०॥
महिम प्रतीति सुधर लगइं, डाइण साइण कबहु न लगै।
प्रीति सुं नीति बधइ त्रिजगइं, नहु नंदि चलइ तसि पूठि अगइं॥३न॥
श्री 'संखवालह' वंस वरइ, 'देपा' सुत 'देवल' दे उयरइ।
दीक्षा'वद्धनसूरि'गुरइं, संजम वासिरि उ(ध?)रियउ धवल धुरइं॥४न॥
आचारिज करणी वूनणा, जिन भुवन पयट्ठण पद ठवणा।
सीस नांदि मालारुहणा, गुरु पीर न होइ इगरि-सणा॥ ५। न०॥
मूत(ल?) 'महेवइ' थिर ठाणइ, पगला 'अरबुद-गिरि' 'जोधाणे'।
पूज करइ जे इकठाणइ, ते सदा सुखी सहुको जाणे॥ ६। न०॥
दीप दिवस अतिसइ सोहइ, सुर नाद संगीत भुवण मोहइ।
झिग मिग दीप कली बोहइ, गुरु जां मलीउ एरकाव व कोहइ॥७न०॥
प्रगट प्रभाव प्रताप त(प)इ, नर नारि नमी कर जोड़ जपइ।
अवलाह सा(सव?)वला धार धपइ, श्री'खरतरगच्छ प्रभुता सुमपइ॥८न॥

दीण हीण दुखिया सरणै, विपुला कमला सथ वर परणइ ।
असुभ करम आरति हरणइ, जे लीन चतुर सदगुरु चरणै ॥ ६ न०॥
कुंटंव कलत्र सुत मर्यादा, चालइ शुभ कारिज अप्रमादा ।
भोग संयोग सुजस वादा, करि 'कीर्त्तिरत्न' सहगुरु दादा ॥१०॥न०॥
भाग सुभाग सुमति संगइ, सुभ देस सुवास वसे रंगइ ।
पाप संताप न के अंगइ, न्हावो गुरु ध्यान लहरि गंगइ ॥ ११ ॥नव०॥
चाट उचाट उदेग अरी, ऊप (भूत?) पलीत आनीत बुरी ।
चावति कूड कलंक मरी, नासे तत्क्षण गुरु नाम करी ॥ १२ । न० ॥
भास विलास उल्हास सबहु, आनन्द विनोद प्रमोद लहु ।
भोगवइ सुर समृद्धि सहु, सुप्रसन्न सुदृष्टि सुगुरु पहु ॥१३ । नव०॥
सुहगुरु थ(स्त?)वणा पढ़इ गुणइ, वाचंता आपण बवण(वयण?)सुणइ ।
कुशल मंगल तसु फ(पु?)ण्य थुणइ, श्री 'साधुकीरति' पाठक पभणइ॥१४॥

॥ इति श्री कीत्तिरत्न सूरि गीतं ॥

न०—३

'कीर्त्तिरत्न सूरि' वंदिये, मूल महेवै थांन ।
संयमिया सिर सेहरो, 'संखवाल' कुलभाण ॥ १ । की० ॥
संवत् 'चवदे उपरै, उगुणपचासै' जास ।
जन्म थयो 'दीपा' घरे, 'देवल दे' उल्हास ॥ २ । की० ॥
'डेल्ह' कुमर हिव नेम ज्युं, मूंकी निज घर वास ।
'तेसठै' संयम लियो, श्री 'जिनवर्द्धन' पास ॥ ३ । की०॥

वाचक पद हिव 'सत्तरे', 'असिये' पाठक सार।
आचारज सताणवें 'जेसलमेर' मंझार ॥ ४ । की० ॥
सुर नर किन्नर कामिणी, गुण गावे सुविशाल।
साधु गुणे करी सोहता, हार विचे जिम लाल ॥ ५।की०॥
पगला 'अरबुद गिरि' भला, 'जोधपुरे' जयकार।
'राजनगर' राजे सदा, थुंम सकल सुखकार ॥ ६ । की०॥
जसु माथे गुरु कर ठवै, ते श्रावक धनवंत।
सीस सिद्धान्त सिरोमणी, 'राजसागर' गरजन्त ॥७ ।की ॥
अणसण लेइ रे भावस्युं, संवत् 'पनर पचीस'।
अमर विमाने अवतर्या, श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरीस' ॥ ८ ।की०॥
अमीय भरै भल लोयणे, तुं मुझ दे दीदार।
पाठक 'ललितकीर्त्ति' कहै, दिन प्रति जय-जयकार ॥९॥

न०—४

श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरिंद' तणी, महिमा वाधइ जग मांहि घणी।
धरि ध्यानै धावइ भूमि-धणी, महियल मुनिजन सिर मुगट मणि ॥१॥
तेजै कर जिम दीपइ तरणी, सदगुरु सेवा चिन्ता हरणी।
भंडार सुधन सुभर भरणी, कमला विमला कांमित करिणी ॥२॥
अड वडीया संकट उद्धरणी, वरदायक जसु शोभा वरणी।
घर पावै नर सुघरि घरणी, प्रेमइ अधिकइ तरिणो परिणी ॥३॥
सव दोहग दूरइ संहरणी, फोटक न हुवइ धरिणी फिरणी।
अग(ल?)गी अटवी थांनक डरणी, साचउ तिहां गुरु असरण सरणी ॥४॥
साहि सरोमणि 'देप' घरै, 'देवल दे' जनम्यो उवरि धरो।

संवत 'गुणपंचास तरौ', श्री 'संखवाल' कुल सहसकरौ ॥५॥
संवत 'चवदै त्रयसठि' वरसै, 'आसाढ़ इग्यारीस' बहु हरसै ।
श्री 'जिनवरधन सूरि' गुरु पासै, संयम लीधो मन उल्हासैं ॥६॥
'सितरइ' वाचक पद गुरु पायउ, 'असीयइ' उवझायक पद आयउ ।
'सताणूंयइं' वरसै दीयउ, आचारिज श्री 'जिनभद्र' कीयो ॥७॥
'लखइं' 'केल्हइं' तिहां मन लाइ, 'जेसलगिर' पुर तिहां किण जाई ।
'मा(हो)घ सुकल दसमी' आइ, महोछव करि पदवी दिवराइ ॥८॥
'पनरइ पचवीसइ' तिण वरसइ, 'आसाढ़ इग्यारस' बहु हरसै ।
अणसण लीधो मन नै हरसै, सुभगति पांमी सुरवर सरसइ ॥९॥
'वीरमपुर' वधतें वानैं, थाप्यो थिर थूंभ भला थांनइ ।
महीयल सहु को नइ मन मांनइ, जस सोभा जग सगलौ जांनै ॥१०॥
समूरयो सदगुरु सांनिधकारी, सकलाप सजन जन साधारी ।
नरवर सुर(वै) वर नै नरनारी, थूंभे आवे जात्रा धारी ॥११॥
भूत प्रेत डर भय नावइ, जंजाल सबे दूरइं जावइं ।
गणि 'चन्द्रकीर्ति' गुरु गुण गावै, श्री 'कीरतिरत्नसूरि' ध्यावइ ॥१२॥

॥ इति गुरु गीतं ॥

कवि सुमतिरंग कृत

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि (उत्पत्ति) छन्द

न०— ८

सुमति करण सारद सुखदाइ, सांनिध कर सेवकां सदाइ।
'कीर्त्तिरत्न सूरिन्द' कहाइ, उत्पति तास कहण मति आइ ।१।
'जालंधर' देसैं सवि जांणै, 'संखवालो' नगरी सुख मांणै।
'कोचर' साह संसार वखांणे, दै दैकार घर खाणें दानें ।।२।।
दोय घर घरणी दौलित दावै, कांमणि लघु सुत एक कहावै।
'रोलू' रीति सुजस रहावैं, पिता प्रेम धरि करि परणावें ।।३।।
आधी रातै 'रोलू' अङ्गण, डस्यो साप कालै जम डंडण।
मूवौ जांणि ले चाल्या दङ्गण, सन्मुख मिल्या 'खरतर गच्छ' मंडण ।४।
'जिनेश्वर सूरि' कहै गुण जाणी, विषधर भख्यो लोक सुणि वाणी।
खरतर करो जिम ए सही जीवै, 'कोचर' खरतर हुवो तदीवै ।।५।।
जहर कहर गुणणै करि जावे, सावधांन हुआ सहि सुख पावै।
आप पगे (रोलू) घर आवे, खरै राग खरतरा कहावै ।। ६ ।।
दूहा—तेरै सै तेरोत्तरे, 'कोचर' खरतर किद्ध।
आदि प्रासाद प्रतिष्ठियो, सूरि जिनेश्वर सिद्ध ।। ७ ।।
'कोचर' साह 'कोरटैं' वसियौ, सत्तूकार दीयै जस रसीयो।
कुलगर (गुरु ?) आय वणै ही कसीयो,
खरतर विरुद थकी नवि खसीयो ।। ८ ।।

'रोलू' सुत दोय कह्या रसीला, 'आपमल्ल' 'देपमल्ल' असीला ।
'देप' घरे 'देवलदे' वाला, चार सुत जनम्यां चौसाला ॥६॥

॥ छन्द मोतियदाम ॥

'लखो' तिम 'भादो' 'केल्हो' साह, 'देल्हो' चोथो गुणे अगाह ।
'लखा' नैं लिखमी तूठी लेह, परिया तिण सात तणो वर देह ॥१॥
'वीसलपुर' वसियौ 'लखो' वास, 'जेसाणै' 'भादो' करै विलास ।
'मेहैवै' 'केलो' मोटी मांम, चोथो तिण चारित लीधो आम ॥२॥
चवदै गुण पचासैं' जम्म, धर्यो तिण बालक वय थी धम्म ।
तेरै वरसै जब हुयो तेह, 'राडद्रह' मांग्यो राखण रेह ॥३॥
'चवदैसे तेसठै' चाल्या चूंप, विवाह करण जग राखण रूप ।
खीमज थल के पासै जांन, आवी नै उतरी तिण थांन ॥४॥
सरली एक खेजड़ी देखी सोर, जुवांने जानी मांड्यो जोर ।
इण ऊपर बरछी काढै कोय, परणावूं पुत्री मेरी तोय ॥५॥
रजपूतैं एकण कहियो आम, 'केलै' नै सेवक लीधी तांम ।
उलाली वरछी नांखी एम, तीर तणी पर काढ़ी तेम ॥६॥
आंतरै तिहां जोर आयो असमांन, परलोक गयो ते छूटा प्राण ।
'दैल्है' सो देखी मन दिलगीर, नर भव अथिर ज्युं डाभै नीर ॥७॥
'खेमकीरति'वांदै मन (बैठो) खांत,भांगी सहु मन(को)तन की भ्रांत ।
साह सगा सहुनै समझाय, 'जिनवर्द्धनसूरि' पासे जाय ॥८॥
दीक्षा तब लीधी 'दैल्है आप, पुराणां तोडण पाप सन्ताप ।
मांमां ते पारख मोटे मन्न, धरा सहु आखै धन हो धन्न ॥९॥

इग्यारह अंग पढ्या इण रीत, गोतम स्वामी ज्यूं वीर वदीत ।
वणारस कीयो गुरु गुरु वार, 'चवदैसैसत्तरे' चित्त विचार ॥१०॥
'जेसाणें' खेतरपाल को जोर, उथापी मांड्यो बाहिर ठौर ।
आचारज क्षेत्रपाले मेल, भट्टारक काढ्या गच्छ थी ठेल ॥११॥
दोहा—'नाल्है' साह निकालनै, थाप्यो 'जिनभद्र सूरि' ।
दोस दियौ को देवता, भावी मिटै न दूर ॥१२॥
'पींपलीयो' गच्छ थापीयो, शुभ वेला सुभ वार ।
'साहण' साहै सत करी, वादो वाद विचार ॥१३॥
'जिनवर्द्धन सूरि' जांण के, शिष्य सदा सुविनीत ।
आप दिसा आग्रह कियो, गुरु गच्छ राखण रीत ॥१४॥
आधी राते आवि कै, वीर कही ए वात ।
आउखो गुरुनो अल्प, मास छ मास कहात ॥१५॥
'महेवे' मैं सांमठी, च्यार करी चौमास ।
'जिनभद्रसूरि' वोलावियां, आवो हमारे पास ॥१६॥
अनुमानें करि अटकल्यो, उदयवंत गच्छ एह ।
आवि मिल्या आदर सहित, पाठक पदवी देह ॥१७॥
'चवदैसे असी' वरस, पाठक पदवी पाय ।
'जिनभद्रसूरि' 'जेसलनगर', तेडाव्या तिहां जाय ॥१८॥

॥ छन्द सारसी ॥

लखपति 'लखो' साह 'केल्हो', 'महेवे' थीं आविया ।
'जेसलमेरें' करी वीनती, पूज्य नै विधि वंदिया ॥
'जिनभद्र सूरैं' मया करकै, 'चवदैसैसताणवें' ।
'कीर्त्तिरत्नसूरि' आवीय, दीध पदवी तिण हेवे ॥१॥की०॥

बहु खरच कीया दान दीया, विविध लखमी वावरी ।
'संखवाल' साचा विरुद खाटै, धर्मराग हीयै धरी ॥
'सैत्रुंज' संघ कराय साथै, संघ सहुको ध्रम धवै ॥२॥की०॥
'संखेसरै' 'गिरनार' 'गोड़ी', देस 'सोरठ' संचरी ।
चितलाय चैत्यप्रवाडी कीधी, लाहिणां जिहां तिहां करी ।
घर आय घणा घमंड सेती, संघ पूज करी लवै ॥३॥की०॥
आचारजां सुं अरज करिने, चतुरमासक राखिया ।
गोत्रजा कुलगुरु दूर कीधा, भेद आगम भाखिया ।
समझावीया सिद्धांत सुवचन, वांणि जांणी अमी श्रवै ॥४॥की०
'मालवै' 'थट्टा' 'सिंध' सनमुख, 'संखवाल(चा)'मत जावजो ।
पाट भगत हुइज्यो सुगुरु भाख्यो, गच्छ—फाट में नावजो ।
दीक्षा न लेज्यो,संघ पद पिण, हलद्र ओषद(ध?)मत खवै॥५॥की०॥
'कोरटै' 'जेसलमेर' देहरा, करावजो गुरु इम भणै ।
नगर चोहटा थकी जिमणै, पास वसज्यो धन घणै ।
सीख सात मानै साह सहुको, सुखी हुइ इह परभवै ॥६॥की०॥
पंचास एक शिष्य पंडित, 'कीरतिरतनसूरि'नै ।
गुरु गुणे गौतम जेम गिणियै, जुगति सुमति जगीसनै ।
वासक्षेप जेहने सीस उपरि, करै तसु दालिद गमै ॥७॥की०॥
कलस—आऊखा नै अंतपक्ष, अणसण पाली नै,
संवत 'पनरपचीस', मन वैराग वाली नै ।
'वैसाख सुदी पंचमी', सुगुरु सुरलोक सिधाहे ।
अण कीधे उद्योत हुवो, जिनभवनन मांहे ।
सुखकार सार शृंगार मणि, "सुमतिरंग"सानिध सदा ।
रखवाल बाल गोपाल कूं, वाट घाट यदा तदा ॥८॥

न०—६

सोहे गुरु नगर 'महेवे', परचा पूरै नित मेवे। सो०।
'संखवाल' कुले गुरु राजै, 'दीपचन्द' पिता घर छाजै हो ॥ १ सो०॥
'देवल दे' जसु वर माता, जनम्या वेलाख्य विख्याता हो। सो०।
'चवदैसय तेसठ वरसै,' 'आषाढ वदी' शुभ दिवसै हो। २। सो०।
'इग्यारसै', दीक्षा लीधी 'जिनवरधन सूरे' दीधी हो। सो०।
तप जप कर करम खपाया, नवि राखी कांइ माया हो। ३। सो०।
नामै जसु नावै रोगा, सुख संपत पामे भोगा हो। सो०।
'जिनभद्र सूरि' तेडाया, 'जेसाण नगर' में आव्या हो। ४। सो०॥
'चवदसै सताणवे' वरसै, सूरि पद दीधो मन हरसै हो। सो०।
संवत पनरेसे पचीसे, 'वैशाख पंचम' शुभ दिवसै हो। ५। सो०॥
ईसाणैं सद्गुरु पहुंता, मनमें शुभ ध्यान ज धरता हो। सो०।
साइण डाइण वेताला हो, भूत प्रेत न आल जंजाला हो ६। सो०॥
सद्गुरु गुण पार न पावै, मुनिजन वर भावना भावै हो। सो०।
'जयकीर्त्ति' सदा गुण बोले, सदगुरु गुण कोइ न तोले हो। ७। सो०

न०—७

'कीर्त्तिरतन' सुरीन्दा, वंदै नरनारी ना वृन्दा हो। सद्गुरु महिरकरो॥
महिर करो गुरु मेरा, हुंतो चरण न छोड़ूं तेरा हो। स०। १।
नगर 'महेवे' राजे, सेवतां सब दुख भाजै हो। स०। २।
वंछित पूरण दाता, नित करिजो संपति साता हो। ३। स०।
नव नव देसमें सोहे, पूरै परचा जन मोहे हो। ४। स०।

चौरादिक भय वारे, सेवक ना कारिज सारे हो । स० । ५ ।
वंध्या पुत्र समापै, निरधनीयां धन सब आपै हो । ६ स ।
अलगा थी यात्री आवे, देखंतां चरण सुहावै हो । स० ।७ ।
इम अनेक गुणधारी, प्रतिबोध्या नर ने नारी हो ।८।स०।
'अढ़ारेसे गुणयासी', 'असाढ़ दसम' परकासो हो । स० ।६ ।
गांम 'गडालय' थाप्या, सेवक ना संकट काप्या हो ।१०स।
तासु प्रसाद करायो, देसां मैं सुजस सवायो हो । स० । ११ ।
'जयकीरति' गुण गावै, मन वंछित पद पावै हो ।स०।१२।

नं०—८

सदगुरु चरण नमो चितलाय, जिण भेटयां दुख दालिद जाय ।
आज करो रे ऊछाह सदगुरु चरण कमल आगै । आ ० ।
नगर 'महेवै' 'दीपमल्ल' साह, 'देवलदे' घरणी जनम्यां सुनाह ।आ१।
संवत् 'चवदे गुणपचास', 'डेल्ह' नाम दियो शुभ जास । आ० ।
योवन वय आव्यो तिण वार, कीनी सगाई हर्ष अपार । आ०।२
जान सजाय करी रे तैयार, चलतां आव्या 'राडद्रह' वार । आ० ।
तिहां इक खोमस्थल सुविशाल, जां बिच सोहे समीय रसाल । ३ ।
तिण ही ठामें उतरी जान, रंग रली कीना सन्मान । आ० ।
किणे इक ठाकुर वाह्यो वोल, इण पर बरछीं काढे तोल । आ० । ४ ।
देवुं पुत्री तिणे परणाय, ऐसो वचन सुण्यो चितलाय । आ० ।
'केल्हे' रो सेवक उठ्यो तांम, काढी बरछी छूटा प्राण । आ० । ५ ।
डेल्है' दीठौ ए विरतंत, सदगुरु वचने भागी भ्रन्त । आ० ।
'तेसठे' शुभ संयम लीद्ध, श्री 'जिनवरधन सूरे' दीध। आ० ६ ।

नेम तणी परे छोडो रिद्ध, जगमें सुजस हुवो परसिद्ध । आ० ।
इग्यारे अंग हुया जाण, तेजे करो प्रतपे जिम भांण । आ० । ७ ।
गोतम स्वामी ज्युं करय विहार, प्रतिबोधे सहु नर ने नार । आ० ।
सिंघे तेडाव्या 'जेसलमेर', सद्गुरु आया सुर नर घेर । आ० । ८ ।
'सताणवे' सूरि पदवी जास, श्री 'जिनभद्रे' दीधो वास । आ० ।
तप जप तीरथ उग्र विहार, करतां आव्या 'महेवे' वार । आ० । ६ ।
सिव सकल पेसारो कीन, गुरैं पिण सखरी देशना दीन । आ० ।
संवत् 'पनरेंसे पचवीस', वदी वैशाख पंचमि शुभ दीस । आ० । १० ।
अणसण कर पहुंतां सुरलोक, नर नारी सव देवे धोक । आ० ।
गुरु परचा जग सगलै पूर, दुखिया आपे सुख भरपूर । आ० । ११ ।
विरुद कहंता नावै पार, इण कलि में सुरगुरु अवतार । आ० ।
नगर 'महेवे' मूलगो थान, ठाम ठाम दीपे परधान । आ० । १२ ।
'कीर्त्तिरतनसूरी' गुरुराय, महिर करो ज्युं संपति थाय । आ० ।
'अठारेंसे गुण्यासीये' वास, 'वदि वैशाख दसमी' परगास ।आ०।१३।
रच्यो प्रासाद 'गडालय' मांहि, दोय थान सोहे दोनूं वांह । आ० ।
सुगुरु चरण थाप्या घणे प्रेम, सुजस उपायो 'कांतिरतन' एम ।आ०१४।
भलै दिहाडो उग्यो आज, भेटया सदगुरु सार्या काज । आ० ।
'अभैविलास'री विनती एह, नित प्रति करजो आनंद अछेह ।आ०।१५

न०—९

वधारो कुल वेल, महिर मेवमाला मंडै ।
वित्त वादल विस्तार, दुख दालिद्र विहंडे ।
दोलत कर दामिनी, सुवाय संचारी ।
गुण गरजारव करें भरें, सरवर नरनारी ।
वाल सुगाल तत्काल कर, संखवाल घर घर सही ।
'कीतिरत्नसूरि' कीजीयैं, गरथ अरथ गुण गहगही ॥१॥

———

श्री जिनलाभ सूरि विहारानुक्रम

(सं० १८१५ से सं० १८३३)

॥ दोहा ॥

गच्छ नायक लायक गुणे, सागर जेम गम्भीर ।
निज करणी कर निरमला, जाणै गंगा नीर ॥१॥
तपसी तालावर तणौ, गच्छपति किसी गरज ।
आसंगायत आपणा, इण परि करै अरज ॥२॥
पांच बरस रहिया प्रथम, दिन दिन वधतै डाण ।
गच्छ नायक 'जिनलाभ' गुरु, बड़ बखती 'बीकाण' ॥३॥
'५बाण १चन्द्र ८बसु १शशि' बरस, सरस भलौ श्रीकार ।
शुभ वेला 'बीकाण' सुं, वारु कियौ विहार ॥४॥
सधन घरे समझू सकल, घण श्रावक जसु वास ।
गुणवंतौ 'गारब शहर', तिहां कीधौ चौमास ॥५॥
आठ मास तिहां थी उठे, वंदावी थल देश ।
'जेसाणै' गुरु जाय नै, परगट कियौ प्रवेश ॥६॥
च्यार वरस लगि चाहसुं, नित नित नवलै नेह ।
बड़ वखती श्रावक जिके, जतने राखै जेह ॥७॥
तिहां तीरथ छै 'लौद्रवौ', जूनौ जगहि वदीत ।
तिहां प्रभु पारस परसिया, सहसफणा शुभ रीत ॥८॥
सीख करे तिहां थी सुमन, पुलिया पच्छिम देस ।
सुख विहार आया सुगुरु, प्रणमेवा पासेस ॥९॥

विधि सुं गोड़ी—राय नै, वांदी कियो विहार ।
गच्छपति चलि आया गुढै, चौमासो चित धार ॥१०॥
रहि चौमासो रंग सुं, विहलौ करै विहार ।
माती धरा महेवची, वंदावी तिण वार ॥११॥
नगर 'महेवै' आय नै, नमिवा नाकोड़ो पास ।
जाये कीध 'जलोल' में, चित चोखै चौमास ॥१२॥
मिगसरमें वलि मलपिया, गज ज्यूं श्री गुरुराज ।
आवै 'आबू' अरचिया, जगनायक जिनराज ॥१३॥
जस खाटै दाटै पिशुन, उर दुयणां पग दीध ।
'वीलाड़ै' वहु रंग सुं, चतुर चौमासो कीध ॥१४॥
'खेजड़लै' नै 'खारिये', रहिया वलि 'रोहीठ' ।
पिशुन किया सहु पाधरा, धरमें होता धीठ ॥१५॥
'मंडोवर' महिमा घणी, 'जोधाणे' री जोड़ ।
मुनिपति आया 'मेड़तै', हित सुं तिमरी होइ ॥१६॥
च्यार महीना चैन सुं, झाझे जतने जार ।
'जैपुर' आया जुगति सुं, सहिर वड़ै श्रीकार १७॥
सहिर किनां सागे सरग, इलमें वसियौ आय ।
वरस थयौ वासर जितौ, वासर घड़ी विहाय ॥१८॥
हठ कीधौ घण हेत सुं, पिण नवि रहिया पूज ।
मुनि-पति जाय 'मेवाड़' में, वरतायौ नामूंज ॥१९॥
'उदयापुर' हुंती अलग, कठिन अठारै कोस ।
'रिसहेस' नै रंग सुं, नमन कियौ निरदोष ॥२०॥
चलता 'उदयापुर' वले, गहिरा कर गहगाट ।
वीनति घणै विराजिया, 'पालीवालै' पाट ॥२१॥
अटकलता आसो अवस, निरख विचै 'नागौर' ।
पिण मन वसियो पूज रै, सहिर भलो 'साचोर' ॥२२॥

तिण वरसे 'सूरेत' ना, असपति अवसर देख ।
तिड़ावै सद्गुरु तुरत, लायक मूंकी लेख ॥२३॥

दया लाभ देखी घणो, ऊपजतो उण देस ।
सुमति गुपति संभालता, पुर तिण कीध प्रवेश ॥२४॥

सरस वर जुग श्रावके, करतां नव नव कोड़ ।
सुपरै सेवा साचवी, हित सुं होडा होड़ ॥२५॥

कर राजी श्रावक सकल, जग सगलै जस खाट ।
'राजनगर' आया रहण, वहता पगवट वाट ॥२६॥

तिहां पिण तालेवर तुरत, उच्छव करै अपार ।
दोय वरस लगि राति दिन, सेवा कीधी सार ॥२७॥

मन थिर कर साथे थई, श्रावक सहु परिवार ।
सत्रुंजनी सेवा करे, गुरु चढ़िया गिरनार ॥२८॥

उतर तिहां थी आविया, 'वेलाउल' वंदाय ।
महिमा मोटी 'मांडवी', पूजण सद्गुरु पाय ॥२९॥

कोडी-धज तिण नगर में, लखपति तणा लंगार ।
सहु श्रावक सुखिया जिहां, वारधि सुं विवहार ॥३०॥

वरस लगै तिहां वावर्यो, धन अगिणत धर्म काज ।
चोखे दिन 'भुज' चालिया, राजी हुए गुरुराज ॥३१॥

'भुज' तणे श्रावक भलो, सेवा कीध सवाय ।
भाग बली जिहां संचरै, थट सगला तिहां थाय ॥३२॥

इण विधि अट्ठारै वरस, दीन (दिन दिन?) नव नव देस ।
परचिया श्रावक प्रघल, वाणी तणै विशेष ॥३३॥

हिव वहिला विनती सुणी, करिज्यो पूज प्रयाण ।
'बीकानेर' वंदाविज्यो, सेवक अपणा जाण ॥३४॥

श्री जिनराजसूरि गीतम्

ढाल:—कपूर होवइ अति उजलुंए।

गछपति वंदन मनरली रे, गरुओ गुणह गंभीर ।
'श्रीजिनराजसूरीसरू' रे, सवि गछ कइ सिरि हीर रे ।१।
वंदउश्री 'जिनराजसुरींद' । आंकणी ।
श्री 'जिनसिंघसूरि' पटोधरू रे, ऊन्नतिकार महंत ।
चारित्र चंगइं मन रमइ रे, सेवइ भविजन संत रे ।२।वं०।
'जेसलमेर' जिनंद नी रे, कीधी प्रतिष्ठा चंग ।
'भणसाली' 'थिरू' तिहां रे, धन खरचइ मन रंग रे ।३।वं।
'रूपजी' संघवी 'सेत्रुंजइ' रे, आठमउ कीध उद्धार ।
'मरुदेवीटुंकइ' भलउ रे, चउमुख आदि विहार ।४।वं०।
मोटी मांडी मांडणी रे, देहरा प्रोलि प्राकार ।
सबल महोछव तिहां सजी रे, प्रतिष्ठा विधि विस्तार रे ।५।वं०।
चित चोखइ सा(ह) 'चांपसी' रे, 'भाणवडइ' भल भाव ।
सुगुरु प्रतिष्ठा तिहां करी रे, जस बोलइ जन आवि रे ।६।वं०।
संघपति 'आसकरण' सही रे, ममाणीमइ कीध प्रसाद ।
विंब महोछव मांडोया रे, 'मेडता' महा जस-वाद रे ।७।वं०।
धन 'खरतर' गछि दीपता रे, श्रावक सब गुण जाण ।
आण मानइ गछराज नी रे, तेजइ जाणे भाण रे ।८।वं०।
'धरमसी' नन्दन दिन दिनइ रे, दीपइ जिम रवि चंद्र ।
'हरषवलभ' वाचक कहइ रे, आपइ परमाणंद रे ।९।वं०।

श्री जिनरतनसूरि गीतम्

ढाल:—चिलसे ऋद्धि समृद्धि मिली।

श्री 'जिनरतनसूरिंद' तणी, महिमा जागइ जग मांहि घणी।
जसु सेवा सारइ स्वर्गधणी, मन वंछित पूरण देव मणी।१।

जसु नामइ न डसइ दुष्टफणी, टलि जायइ अरियण जुड्या अणी।
अहिनिसि जे ध्यावइ सुगुरु भणी, तसु कीरत वाधइ सहस गुणी।२।

निरमल व्रत सील सदा धारी, षट काया तणौ रक्षाकारी।
कलियुग मइं 'गौतम' अवतारी,गुण गावइ सहु को नरनारी।३।
घसि केसर चंदन सुविचारी, फल ढोवइ नेवज सोपारी।
विधि जे वंदइ आगारी, ते लच्छि तणा हुवइ भरतारी।४।
जसु जम्म नगर 'सेरूणाणं', तिहां वसइ 'तिलोकसी' साहाणं।
गोत्रइ अति निरमल लूणीयाणं, तसु घरिणी 'तारादे' विधि जाणं।५।
जसु उयर सरोवर हंसाणं, तिण जायउ पुत्ररतनाणं।
सोलह सइ सत्तरि वरसाणं, पुनवंत पुरष दीवाणं।६।
चउरासीयइ चारित लीधउ, गुरुमुख उपदेस अमीय पीधउ।
सुभकारिज सतरइसइ कीधउ, सहगुरु सइंह थि निज पट दीधउ।७।
सतरइसइ इग्यार सही, श्रावण वदि सातमि सुगति लही।
पग पूजण आवे जे उमही, गुरु आस्या पूरइ त्यां सबही।८।
'उग्रसेनपुरइ' सदगुरु राजइ, जसु थूंभ तणी महिमा छाजइ।
'खरतर' श्री संघ सदा गाजइ, गुरु ध्यानइ दुखदोहग भाजइ।९।
श्री 'जिनराजसूरीस' तणउ, पाटोधर श्री 'जिनरतन' भणउ।
महियल मइं सुजस प्रताप घणउ, प्रहसमि ऊठी नित नाम थुणउ।१०।
एंहवा सदगुरु नइ जे ध्यावइ, चित चिंता तास सवे जावइ।
दिन-दिन चढती दउलति पावइ, 'जिनचंद' सगुरुना गुण गावइ।११।

इति श्री जिनरतनसूरि गीतं (संग्रहमें, ९३ प्रति नं० १३)

श्री दयातिलक गुरु गीतम्

राग—आसावरी

सरद ससी सम सुहगुरु सोहइ, सयल साधु मन मोहइ ।
देसना वारिद जिम वरसइ, जन मयूर चित हरसइ रे ।१।
भाव स्युं भवीयण जण पणमउ, 'श्री दयातिलक' रिपराया ।
दीपंता तपकरि दिणयर जिम, नरवर प्रणमइ पाया रे ।१।भा०।
नवविध परिग्रह छंडि भली परि, संयम स्युं चितलाया ।
दोप वयाल निरंतर टालइ, मनमथ आण मनाया रे ।२। भा०।
पंच महाव्रत रंगइ पालइ, पंच प्रमाद निवारइं ।
नितु नितु सील रयण संभालइ, भव सायर थी तारइ रे ।३।भा०।
चरण करण गुण सुहगुरु धारइ, आठ करम कुं वारइ ।
क्रोध मान मद तजइ मुनीसर, मुनिवर धर्म संभारइ ।४।भा०।
'श्री क्षेमराज' पाटइ अति दीपइ, वादि विवुध जन जीपइ ।
वांणो श्रवणि सुहाणी छाजइ, खरतर गछि गुरु राजइ रे ।५।भा०।
'वाल्हादे' उरि मानसरोवर, रायहंस अवयरिया ।
'वच्छा' कुल मंडण ए सुहगुरु,गुण गण रयणे भरिया रे ।६।भा०।
पूरव मुनि नी रीति भली परि, आगम करिय विचारइ ।
जाणि करी सूधीपरिए गुरु, गुण गरुआना धारइ रे ।७।भा०।

इति श्री गुरु गीतं । (पत्र १ संग्रहमें)

वा० पद्महेम गीतम्

—*—

ढाल:—विलसइ ऋद्धि समृद्धि मिली, ए ढालः।

'पदमहेम' बाचक वंदइ, ते भविग्रण दिन-दिन चिरनंदइ।
सुरतरु सम वडि गुरु कहियइ, जसु नामइ मन वंछित लहियइ।१।प०
'गोलवछा' वंसइ छाजइ, खरतर गछि सुरमणि जिम राजइ।
आगम अरथ तणा जाण, पालइ जिणवर केरी आण।२।प०
लघुवय जे संयम लीणउ, उपसम रस मधुकर जिम पीणउ।
सुमति गुपति सहजइ पालइ,वलि दोष बयालिस नितु टालइ।३।प०
चरण करण सत्तरि सार, वलि धरइ महाव्रत ना भार।
ध्यान विनय सिझाय करइ, इम असुभ करम मल दूरि हरइ।४।प०
(श्री) जिन वचनइ अनुसारइ, देसन करि भवियण नर तारइ।
निरमल शील रयण पालइ, पूरव मुनि मारग उजवालइ।५।प०।
युगप्रधान 'जिणचंद, गुरू, विहरइ महियलि महिमा पवरू।
धन ते जिण सय-हथि दिख्या, सीखावी वलि संयम सिख्या।६।प०।
धन 'चोलग' जसु कुलि आयउ, धन धन 'चांगादे' जिण जायउ।
'तिलककमल' गुरु धन्न जयउ,जसु पाटइ दिनकर जिम उदयउ।७।प०।
व्रत सइंतीस वरिस जोगइ, विहरी दिन दिन वधतइ जोगइ।
ससि रस काय ससि वरिसइ,आया 'वालसीसर' चित हरिसइ।८।प०।
अन्त समय जाणि नाणइ,व्रलि करि आराधन सुह झाणइ।
पहर छ अणशण पाली, माया ममता दूरइ टाली।९।प०।

पंच परमेष्ठि तणइ ध्यानइ, विरुई गति सिगली करि कांनइ ।
अम्मावसि भादव मासइ, मध्यानइ पहुता सुर वासइ ।१०।प०।
भाव भगति गुरु पय पूजइ, तसु आस्या रंग रली पूजइ ।
पुत्र कलत्र धन परिवार, गुरु नामइ दिन दिन जयकार ।११।प०।
उदय सदा उन्नति कीजइ, परतिख दरसन भगतां दीजइ ।
महियलि महिमा विस्तारउ, सेवकनइ साहिब संभारउ ।१२।प०।
चित्त तणी चिंता चूरउ, सुख सम्पत्ति मन चिंतित पूरउ ।
'सेवकसुन्दर' इम बोलइ, तुझ सेवा सुरतरु सम तोलइ ।१३।प०।
इति श्री पद्महेम गणि वाचक गीतं, मं. रेखाँ पठनार्थं ।।शुभं भवतु।।

चन्द्रकीर्त्ति कवित ।

पामीजै परमत्थ अत्थ पिण सयणा पावै,
पामीजै सब सिद्धि ऋद्धि पिण आफे आवे ।
पामे सीस सकज सखर सुख सेज सजाई,
पामे तेज पडूर वलि बल बुद्धि बड़ाई ।
कहि 'सुमतिरंग' सुण प्राणिया, अहि २ गुरु गुण गाइये,
श्री 'चन्द्रकीर्त्ति' सदगुरु जिसा, प्रभु इसा कद पाइये ।।१।।
संवत सत्तरे-सात पोष बदी पडिवा पहली ।
अणशण लेइ आप, वलो उत्तम मति वहिली ।।
नगर 'बिलाडै' मांहि, कांम गुरु अपणो कीधो ।
गीत गान गावतां, सुगुरु नो अणसण सीधो ।।
शुभ ध्यान ज्ञान समरण करि, सुर सुलोक जइ संचरै ।
वदै 'सुमतिरंग' हियडा विचै, घडी घडी गुरु संभरै ।।२।।

विमल सिद्धि गुरुणी गीतम् ।

गुरुणी गुणवंत नमीजइ रे, जिम सुख सम्पति पामीजइ रे ।
दुख दोहग दूरि गयीजइ रे, परभवि सुर साथि रमीजइ रे ॥१॥
जसु जन्म हूओ 'मुलताणइ' रे, प्रतिबूधा पिण तिण ठाणइ रे ।
महिमा सहु कोइ वखाणइ रे, दुक्कर किरिया सहिनाणइ रे ॥२॥
काकउ कलिमइ अवतारो रे, 'गोपो'लघुवय ब्रह्मचारी रे ।
तिणरइ प्रतिबोधइ दिख्या रे, मनमांहि धरी हित सिख्या रे ॥३॥
'विमल सिधि' वड वयरागइ रे, बालक वय ऊपसम जागइ रे ।
'लावण्य सिधि' गुरुणी संगइ रे, चारित लीधउ मन रंगइ रे ॥४॥
आगम नइ अरथ विचारइ रे, परवीण चरण गुण धारइ रे ।
मिथ्या मत दूरि निवारइ रे, कुमती जन नइ पिण डारइ रे ॥५॥
मद मच्छर मुंकी माया रे, जिण कीधी निरमल काया रे ।
तप जप संजम आराधी रे, नरभव निज कारिज साधो रे ॥६॥
अणसण करि धरि सुह झाणइ रे, पहुता परभव 'बीकाणइ' रे ।
पगला अति सुन्दर सोहइ रे, थाप्या थूंभइ मन मोहइ रे ॥७॥
श्री 'ललितकीरति' उवझायइं रे, परतिष्ठ्या शुभ वेलाइं रे ।
सुख साता परता पूरइरे, सेवक ना संकट चूरइ रे ॥८॥
धन धन्न पिता जसु माया रे, 'जयतसी' 'जुगतादे' जाया रे ।
'मालहू' वंसय सुविसाला रे, कलिकालइ चन्दनबाला रे ॥९॥
मन शुद्धइं श्रावक आवी रे, वंदइ गुरुणी नइ आवी रे ।
तसु मन्दिर दय दयकारा रे, नितु होवइ हरष अपारा रे ॥१०॥
'विमलसिधि' गुरुणी महीयइ रे, जसु नामइ वंछित लहीयइ रे ।
दिन प्रति पूजइ नर नारी रे, 'विवेकसिद्धि' सुखकारी रे ॥११॥

इति विमलसिद्धि गुरुणी गीतं ॥ समाप्तं ॥

(पत्र १ संग्रहमें)

द्वितीय विभागकी अनुपूर्त्ति ।

श्री गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

दुहा :—

मन धरि सरस्वती स्वामिनी, प्रणमी 'गोयम' पाय ।
गुण गाइस सहगुरु तणा, चरिय 'प्रबन्ध' उपाय ॥१॥
'वीर' जिनेसर शासने, पंचम गणि 'सोहम्म' ।
'जंबू' अन्तिम केवली, तास पाटे अतिरम्म ॥२॥
तिण अनुक्रमे उद्योतकर, 'श्री उद्योतन सूरि' ।
'वर्धमान' वधते गुणे, वन्दो आणंद पूरि ॥३॥

ढाल फागनी :—

'जिनेश्वर' 'जिनचन्द्र' गुणागर, 'अभय' मुणीन्द ।
'जिनवल्लभ' 'जिनदत्त', युगोत्तम नमे नरीन्द ॥
'श्री जिनचन्द्र' 'जिनपत्ति', 'जिनेसर' संभारि,
'जिनप्रबोध' 'जिनचन्द्र''कुशल गुरु', हिव सुखकार ॥४॥
श्री'जिनपदम' विशारद, सारद करे वखाणि ।
'श्री जिन लब्धि' लब्धि गौतम सम, अमृतवाणि ॥
'श्री जिनचन्द्र' 'जिनेसर', 'जिनशेखर' 'जिनधर्म' ।
'श्री जिनचन्द्र' गणाधिप, प्रगटित आगम मर्म ॥५॥
'श्री जिनमेरु' सूरीश्वर, सागर जेम गंभीर ।
संवत पनर बिहुतरे, देवगति हुऔ धीर ॥६॥

ढाल:—अढियानी :—

तव आचारिज इंद, 'श्रीजेसिंह मुणींद' हिवे विमासियो ए।
भट्टारक पद ठामि, 'छाजेडां' कुलि काम,
बालक आपिसे ए, गुरुपद थापिस्यांए ॥ ७ ॥

श्रावक जन सुविचार, मिलिया मन्त्री उदार,
बालक जोइये ए, परिजण मोहि (ये)ए।
'ओशवंश' शृङ्गार, 'जूठिल' साख मझार,
मन्त्री 'भोदेवरू' ऐ, तसु देदागरूए ॥ ८ ॥

तसु सुत बुद्धि निधान, मन्त्री 'नगराज' प्रधान,
सावय जिनवरू ए, धर्मधुरन्धरू ए।
'नगराज' घरिणी नाम, 'नागलदे' अभिराम
'गणपति' साह तणी ए, पुत्रीसहु भणीए ॥ ६ ॥

तसु उरि जिस्या रतन्न, मन्त्री 'वच्छागर' धन्न,
कुमर 'भोजागरू' ए, चतुर हां सायरू ए।
मन आणी उछाह, जाणो धरमह लाह,
संघ आगल रहे ए, 'वछराज' इम कहेए ॥१०॥

ढाल:—उलालानी :—

महाजन सहित खमासमण, 'वछराज' करीय बिमासण,
उत्तम महूरत आणी, वतीस लक्षणो जांणी ॥११॥
'जयसिंहसूरि' उत्संगे, आण्या आपणे रंगे,
'भोज' भाई तिणवार, हरण्या स्वजन अपार ॥१२॥

ढाल:—धवल एक गाहीनी:—

संवत पनर पइसठे जांण, शाके चवदे इकत्रीस सम,
मिगसर सुदि चउथी गुरुवार, रात्री गत घटीय इग्यार जनम ॥१३॥
पल इग्यारह ऊपरे तास उतरापाढ ऋष्य योग वृद्धि ।
कर्क लग्ने गण वर्ग ग्रह योनि, जन्मपत्री तणी इसी सिद्धि ॥१४॥

ढाल:—उलालानी :—

पनर पंचुहतिरिवर्षे, विहर्यां मन तणे हर्षे ।
शुभदिन दीधीय दीख, सीख्या गुरु नी सीख ॥१५॥
दिनदिन वाधए ताम, बीज कलानिधि जाम ।
क्रमे क्रमे विद्या अभ्यास, करेतसु सुहगुरु पास ॥१६॥
सूधो संजम पाले, मयण सुहड मद टाले ।
रायहंस गति हाले, वयणे अमृत रसाले ॥१७॥

ढाल:—भमरआलीनी :—

'योधनगर' रलियामणो, तओ भ० राज करे 'गंगेव' ।
'राठोड' वंशे सिरि तिलो, तओ भ०, रिद्धि जिसो सुरदेव ॥१८॥
छाजेड गोत्रे वखाणिये, तओभ०, गांगाओत्र 'राजसिंघ' ।
'सता', 'पता' नोता गुरु तओ भ०, चोथनी आणि अलंघ ॥१९॥
चाचा'देवसूर'नंदनु तओ भमरालो०.'सता' पुत्र 'दुल्हण''सहजपाल'।
('सहजपाल' सुत गुणनिलो—तो 'मानसिंघ' पृथिवीराज' ।
'सुरताण'' कसतूर दे' तणा तो भ० सारे उत्तम काज ।
'सुरताण' सुत तीन भला, तो भ० 'जेत' 'प्रताप' 'चांपसीह' ।
मात 'लीलादेवी' तणा, तीने सींह अबीह *)
मिली सकुटुम्ब विमासियो तो भमराली०,बीनव्यो'गंग महिपाल ॥२०॥

---

* किनारेकी नोट ।

निपुण 'नेतागर' इम कहे तो भ०, सुणज्यो श्री नरनाह ।
गुरुपद मह मंडिस्यां आ रे ! तो भ०, मांगाइ तुम बोलवाह ॥२१॥
पामी तसु आएस लो, तो भ०, चिहिदिशि मोकली लेख ।
संघ लोक सहु आवीया तो भ०, याचक वलीय विशेष ॥२२॥
सप्तक्षेत्र वित वावर्यों तो भ०, आरिम कारिम रीत ।
कीधी विगति सोहामणी तो भ०, सुहव गावे गीत ॥२३॥
लगन दिवस जब आवियो तो भ०, 'बडगछि' 'पुण्यप्रभसूरि' ।
सूरि मन्त्र गुरु आपियो भ०, वाजे मंगल तूर ॥ २४ ॥
'जिनमेरु सूरि' पाटे जयो तो भ०, 'जिनगुणप्रभुसूरि' नाम ।
गच्छ नायक पद थापियो तो भ०, दिन-दिन अधिको मांम ॥२५॥
संवत् (१५८२) पनरबियासीए तो भ०, फागुण मास सुचंग ।
धवल चोथ गुरु वासरे तो भ०, थाप्या मन तणे रंग ॥२६॥
संघ पूज करि हर्ष सुं तो भ०, मागणां दीधा दान ।
'गंगराय' भेटण करे तो भ०, आपे ते बहुमान ॥२७॥

ढाल:—वाहणरो :—

संवत् पनर पंच्यासिये ए संघसाथे शत्रुंजे सुरयात्रा करी ए ।
'जोध नयरे' श्रीपूज भवियण बूझवेरे ॥२८॥
चउमासा बारह क्रमें ए हुआ अतिशय गणनाथ आकारण ऊमह्याए ।
वात करे मिली एम,'जेसलमेरु' मन्त्री घणा ए ॥२९॥
धन धन वत्सर मास, धन धन ते दिनु ए ।
चरण कमल गुरुराय तणा, जिण दिन भेटसु ए ।
नामे हुए नव निद्धि, भय सब मेटीसुं ए ॥३०॥
थासे जनम सुकयत्थ, सुगुरुनो देसणा ए ।
सुणतां सूत्र विचार, नहीं कीजे मनां ए ॥३१॥

'देवपाल' 'सदारंग', 'जीया' 'वस्ता' वरू ए।
'रायमल्ल' 'श्रीरंग', 'छुटा' 'भोजा' परू ए।
इण परे लघु समवाय, साखे लेख आवियो ए।
पठवायां 'जण पंच', सुजस तिहां व्यापियो ए ॥३२॥
विधि सुं वंदी पाय, सुगुरु ने वीनती ए।
करि आपी कर लेख, वदति उलसी छती ए ॥३३॥
मानसरे जिम हंस, पपीहा जलधरु ए।
तिम समरे तुम्ह नाम, दंसण सावय हरु ए ॥३४॥

ढाल:—गीता छंदनी :—

हिवे शुभ दिन रे, गच्छपति गजपति चालता,
पुर ग्रामो रे वादी गय मद गालता।
मरुदेसे रे 'जेसलमेरु' महि मालता,
गुरु आया रे, पंच सुमति प्रतिपालता ॥३५॥
पालता पंचाचार अनुपम, धर्म सूधो भासीए।
आषाढ़ वदि तेरसी गुरु दिनि, संवत् पनर सत्यासीए।
परमट्टि विजय सुवेल वाजित्र, गीत गायति श्राविया
नर नारि सुं मोटे मंडाणे, पोषहशाले आविया ॥३६॥
नित नव नव रे, सरस सुधा देसण श्रवे,
सेवय जण रे वंछिय आशा पूरवे।
राय रांणा रे, तप जप चारित्र गुण स्तवे,
गुरु इण परी रे चन्द्र गछ कुं सोभवे ॥३७॥
सोभवे पूनिमचन्द परगट, वदन नाशा सुर गिरू।
नवखंड नाम प्रसिद्ध सुणिये, तेज दीपे दिणयरू।
कलिकाल लब्धि निधान गोयम, जेम महिमा मंदिरू।
मोतीयां थाल भरी वधावे, सूहव रंभा अणु सुंदरू ॥३८॥

ढाल :—संवत् पनरे चउराणुंइ, 'लूणकर्ण' भूपाला रे।
जल अभावे जन सीदता, देखी कराला रे।३६।
संवत् पनर चउराणु ए, (भाग्यवंत भूमंडले) गच्छनायक बोलाया रे।
कर जोडी ने वीनवे वांदी पूजजीराय (?पाया) रे।सं० ॥४०॥
श्री खरतरगच्छ राजिया, तेरो सुजस अपारू रे।
कृपा करो सहु जीव नी, वरसावो जलधारू रे। सं० ॥४१॥
मोटी वात मने मनीं, धर्मलाभ आशीसे रे।
उपाश्रये गुरु आवीने, श्रावक तणी जगीसे रे। सं० ॥४२॥
अट्ठम तप मंत्र साधना, आसन तणे प्रकंपे रे।
मेघमालि सुर आवीयो, करूं काज इम जंपे रे ॥४३॥
करि घट अंबर छाइयो, वरषि वरिष घन गाजे रे।
तामे चमके बीजली, जगि जस पडहो बाजे रे। सं० ॥४४॥
सर तलाव द्रह पूरीया, नीर निवाण न माई रे।
धर्मवृक्ष वधता हुआ, पापज घास सुकाई रे। सं० ॥४५॥
भाद्रव सित पडिवा तिथे, प्रथम पहुर सर पूर्यो रे।
सुहगुरु इण तप जप करी, काल निशाचर चूर्यो रे। सं ॥४६॥
दया धर्म दीपाववा, राय पास मुकाये रे।
बंदी वांणिक गुन्हें पड्यो, निगड बंध भंजावे रे।सं० ॥४७॥
भेरी नफेरी झल्लरी, ढोल दमामा बाजे रे।
पंच शब्द जिन परवर्या, गयणि पटोला राजे रे। सं ॥४८॥
रूपवती सूहव नारी, धवल मंगल मिली गावे रे।
संखनाद दिशि पूरिने, उपासरे गुरु आवे रे। सं ॥४६॥

ढाल:—अंग दुवालस जांण, आण माने सवे, मुनिवर मोटा गछपती ए।
गुरुगुण धरे छत्रीस, खरो क्षमा गुणे, वदन कमल वसे सरसती ए।५०।
चारित चंगो देह, मोह महाभड, जे जग गंजण वस कीयओ ए।
चो कषाय मद अट्ठ, अंतर अरि दल, खंडी सुजस सदा लीयो ए।५१।
'जंबू' जेम सुशील, 'वयर स्वामी' वली, तिण ओपमे कवियण तुले ए।
आठ प्रभावक सूरि, जिनशासन क(ह)या, महिमा तसु समजण कलीए।५२
सायण डायण वीर बावन, ऋषिपति, सूरि मंत्र बले साधिया ए।
प्रगट्यो सदगति पंथ, रुंधिओ दुर्गति राहू साहू, संघ वाधिया ए।५३।

ढाल:—कोडी जाप एकासण तप सदा रे, करि इंद्री वश पंच।
सारणारे २ सीस समापी गण मुदा रे ॥५४॥

काल ज्ञान अने आगम वले रे, जाणी जीविय अंत।
खांमे रे २ चोरासी लाख प्राणिया रे ॥५५॥

संवत सोलसे पंचावने रे, राध अट्ठमि वदी (सु)र।
वारे रे २ आहार त्रय अणसण निय मने रे ॥५६॥

संघ साखि पचखाण इग्यारसे रे, आरुही डभ्रा संथारे।
भावे रे २ भरत तणी परिभावना रे ॥५७॥

पूजक निन्दक विहुंपरि सम मने रे, अरिहंत सिद्ध सुसाध।
ध्याइरे २ पनर दिवश, जिनधर्म संलेखने रे ॥५८॥

सूत्र अरथ चिंतन चितलाईओ रे, आलोइय पडिकंत।
सुहगुरु रे २ कालमास, इम पंचतु (त्व) पाइयो रे ॥५९॥

वस्तुः—वरस नेऊ २ मास वलि पंच, पण दिन ऊपरि तिहां गणिय।
सुदि नऊमी वैशाह मासे प्रहवि, हसीय? अमृत घटिय सोमवार।
सुरलोक वासे जय २ कार करंति जण, गुण गावे सुर नारि।
'श्रीजिनगुणप्रभुसूरि' गुरु, सयल संघ सुहकार ॥६०॥
इम गच्छ नायक कला गुणगण रयण रोहण भूधरो।
संथार चारों तंगवारण, खंधवास स चोवरो।
'श्रीजिनमेरु सूरींद्र' पाटे, 'जिनगुणप्रभु सूरि' गुरो।
तसु धवल 'जिनेसर सूरि' जंपे, ऋद्धि-वृद्धि शुभंकरो ॥६१॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

ढालः—सकल भविक जिन सांभलो रे।
'मरुधर' देशे मंडणो रे, श्रीपुर 'बीकानेर'।
'रूपजी शाह'वसे तिहां रे, धनकर जेम कुबेर
धनकर जेम कुबेर रे साचो, 'रूपा दे' तसु घरणी वाचो।
जायो पुत्र रतन्न जिण (जा)चो, भवियण लुल लुल चरणे राचो।
जी हो 'जिणचंद' जी जी हो, तूं जिण सासण सिणगारके।
गिरुओ गच्छपती हो तूं तो संवेगी सिरदारके। सेवे सुरपतोजी ।१।
कल्पवृक्ष जिम वाधतो रे, सरव कला परवीण।
बालक वये धर्मनी दिसा, समता रस लवलीण रे।
समता रस लवलीण रे जाणी, मात पिता मन उल्लट आणी।
गुरुने विहरावे शुभ वाणी, बात एह श्रीसंघ घणी सुहाणी ।२।
मतिसागर विहरी करी रे, 'श्री जेसलमेर' गिरि आया।
'वीरजी' ने देखी करी, श्रीपूज्य घणुं सुहाया।
श्री पूज्य घणुं सुहाया रे भाइ, सेंहथ चारित्र दे सुखदाइ।
'वीरविजय' ओ नाम सवाइ, आपणी विद्या सयल भणाइ।४।

अवसर जांणी आपियो रे, सहर्ष आपणो पाट।
श्रीसंघ 'जेसलमेरु' में रे, कीधो अति गहगाट।
कीधो अति गहगाटो रे वंदो, 'श्रीजिणचन्दसूरि' गच्छ चंदो।
कुमति ना मत दूरे निकन्दो, मेरु तणी परे निंदो। ५।
सोभागी जंबू जिसो रे, रूपे 'वयरकुमार'।
शीले थूलभद्र सारिखो रे, लब्धे गोयम अवतारो।
लब्धे 'गोयम' अवतारो रे ऐसो, दूणकी हे केसौ........।
सूरके आगे खजुओ जेसौ, इण आगे सभ कुमती तैसो ।६।
"श्रीजिनेश्वर सूरि' ने रे, पाट प्रगट भाण।
'वाफणा' गोत्र कला निलो, गच्छ 'वेगड़' सुलताण।
गच्छ 'वेगड़' सुलताण रे साचो, ओर कुमति कहावे काचो।
'महिमसमुद्र' गुरु चरणे राचो, कवियण इम गुरुना गुण वांचो ।७।

नं० २ राग गौडी भावननी

परम संवेगी परगडो रे, चावो जस चिहुं खंडो रे।
चीतारे वडा छत्रपती रे, नाम जपे नवखंडो रे।
कहो किम वीसरे, ते गुरु जुगपरधानो रे।
'जिनचन्द सूरिजी' साधु सिरोमणि जाणो रे ।१।
पंच महाव्रत पालता रे, करता उग्र विहार।
भविक जीव प्रतिबोधता रे, कूड न कपट लिगारो रे ।क।२।
सूधो धरम सुणावता रे, अविरल वाण वखाण।
मेघतणी परे गाजतो रे, साचा चतुर सुजाणो रे ।क।३।
सुधा संशय भांजता रे, प्रवचन वचन प्रमाण।
कुमति मति कुं खंडता रे, धरता नित धर्मध्यानो रे ।क।४।
शुद्ध प्ररूपक साधुजी रे, हुंता धरम जिहाज।
गुणियोंने आश्रय हुंता रे, लेखनता सहु लाजो रे। क ।५।

पंडित ना पालक वडा रे, दोनो तणा आधार।
तेहने तुरत तेडाविया, रे, कीधो सु किरतारो रे। क।६।
हंस तणी पर हालता रे, पंच सुमति प्रतिपाल।
ते गुरु सां सइया नहीं रे, बालतणी परिकालो रे।क।७।
चन्द्रगच्छ ना चन्द्रमा रे, गच्छ 'खरतर' सिणगार।
वेगड विरुद धरण वडा रे, जिनशासन जयकारो रे।क।८।
गच्छनायक दीसे घणा रे, पिण कुण तारा सरीख।
तारागण सहु ए मिली रे, कहो किम सूरि सरीखो रे। क। ९।
धन 'रूपा दे' मावडी रे, धन 'वाफणानो 'रे' वंश।
धन कुल 'भरत' नरीन्दनो रे, जिहां उपना गुरुराय हंसो रे।क।१०।
सुगुरु 'जिनेश्वर सूरिजी' रे, थाप्या जिण निज पाट।
ठाम ठाम धर्म दीपव्यो रे, वरताव्या गह गाटो रे।क।११।
संवत् सतर तिरोतरे रे, भृगु तेरस पोष मास।
करि अणशण स्वर्गे गया रे, धर जिन ध्यान उल्हासो रे। क।१२।
'श्री जिनचद्र सूरीन्द्र' ना रे, गुण गावे नर नार।
तिण घरि रंग वधामणा रे 'महिमसमुद्र' जयकारो रे।क।१३।

श्री जिनसमुद्रसूरि गीतम्

राग:—तोडी:—

आज सफल अवतार। सखीरो।

श्री 'जिनसमुद्र' सूरिश्वर भेट्यो 'वेगड' गच्छ सिणगार। स०। १।

श्री 'ओश वंश' 'श्रीमाल' प्रमुख सहु श्रावकां सिरदार।

आदर सहित सुगुरु आण्या, तिण श्री 'सांस 'नगर' मझार।२।

'श्री श्रीमाल' 'हरराज' को नंदन * जिनचन्द्रसूरि पटधार।

'महिमा हर्ष' कहे चिर प्रतपो, जिन शासन जयकार। ३।

* अन्य गीतमें माताका नाम लखमादे लिखा है।
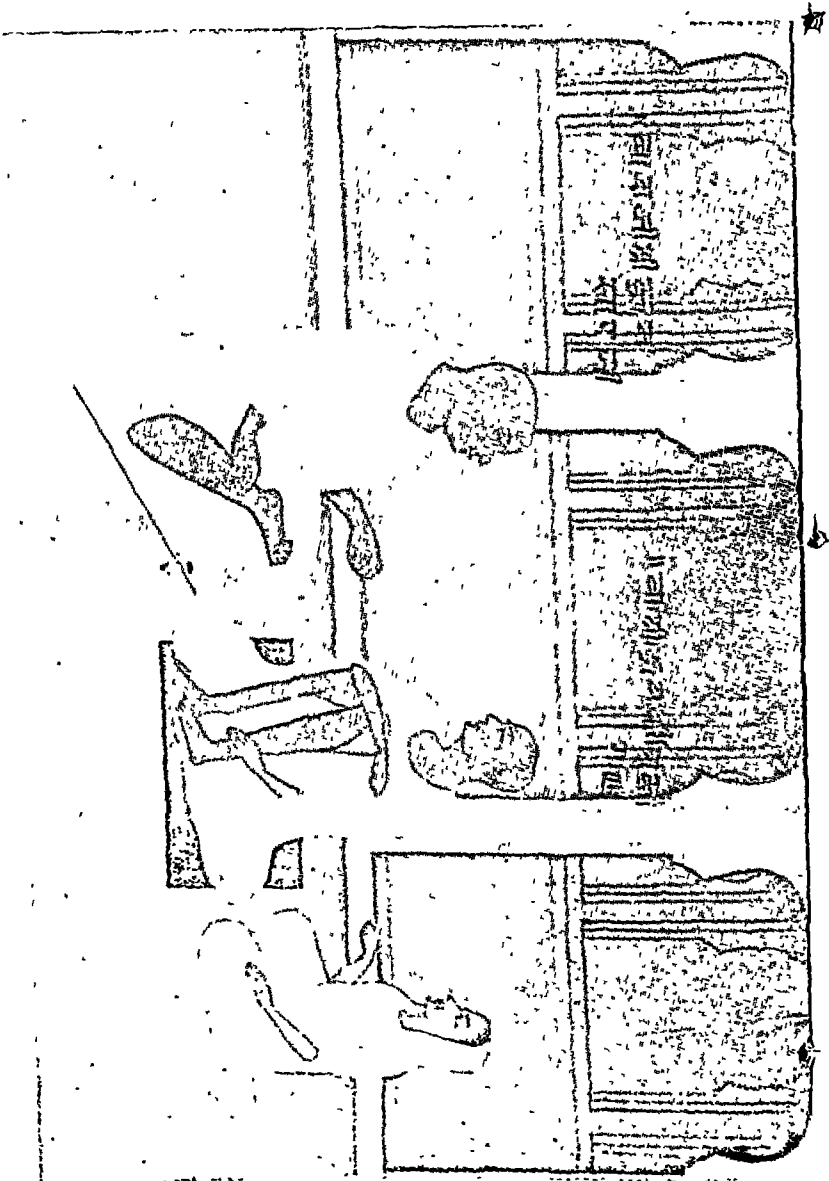
मस्तयोगी ज्ञानसारजी व वाचक जयकीर्तिजी
(मूल चित्र—श्रीजिन कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भंडार-बीकानेर)

॥ श्रीमद् ज्ञानसार अवदात दोहा ॥

उदैचन्द्र सुत ऊपज्यो, लीयो विधाता लोच।
देवनरायण दाखवुं, को अजब गति आलोच ॥ १ ॥

अढारै इकडोतरै, छाक मेल री छांड।
मात जीवण दे जनमीया, सांड जात नर सांड ॥ २ ॥

वास जेगलै वैंत सुं, दीवां जनम उदार।
वरस वार बौली गया, वारोतरै री वार ॥ ३ ॥

श्री जिनलाभ सूरिसरू, भट्टारक भूपाल।
वीकानेरज वंदोयै, चढ़ती गति चौसाल ॥ ४ ॥

सीस वडाला वडमती, वडभागी वडरीत।
रायचन्द राजा ऋषि, प्रगट्यो पुण्य प्रवीत ॥ ५ ॥

तिण पाटै इण कलि तपै, जांण्यो थो निरहेज।
वायै डम्बर वीखरै, तरुण पसारै तेज ॥ ६ ॥

प्रणमें सूरतसिंह पय, मिल्यो जनम रो मींत।
ज्ञानसार संसारमें, आखै लोक अदीत ॥ ७ ॥

सीस सदासुख साहरै, चलि आवै चौराज।
श्रवणे तौ में सांभल्यो, आंणर दीठौ आज ॥ ८ ॥

वावाजी वायक अखैं, अखै राठोडौ राज।
खरतर गुर सगला अखै, रतन अखै महाराज ॥ ९ ॥

कठिन शब्द-कोष

——**——

अ

अकयथ ९९ अकृतार्थ, निष्फल

अखियात २९८ चिरस्थायी

अखीणमहाणसि ३० वह शक्ति जिससे भिक्षान्न सैकड़ों लोगोंको खिलाने पर भी कम न हो जब तक कि लानेवाला स्वयं भोजन न करे।

अखोड ११९ अखरोट

अगडी ३३० नहीं किया हुआ, कठोर अभिग्रह।

अगंजिउ ३४ अपराजित।

अघोरा ९१ जो घोर (विकट) नहीं है।

अज्जवि १ आज भी।

अजुआली ३३१ उज्ज्वल।

अड ३३ आठ।

अडगनिया १९७ कानका आभूषण विशेष।

अडोल ३९९ अटल।

अढलक दान ३०१ प्रचुर दान।

अणगार ६२,१६६ घर रहित, मुनि

अणभिडिउ ३४ सामने नहीं हुआ, भिड़ा नहीं।

अणुक्कमि ३९८ अनुक्रम।

अणुसरहु ३६७ अनुसरण करो।

अणुसरीए ३३९ अनुसरण।

अत्थय ३६८ अर्थ-अर्थ।

अत्थि ३७८ अस्ति, है।

अनडाँ २९८ अनम्र।

अन्नलि(गढिउ)३६६ अन्नल राजा-का गढ़।

अनिमिप ९९ बराबर, एकटक, देव।

अनेरिय ३९३ दूसरी।

अप्पियउ १६ अर्पित किया; दिया।

अबलिय १८ बलहीन।

अबुहहु ३६९ अबोध।

अबंझ ९ अबन्ध्य,सफल।

अभ्याख्यान २७९ मिथ्या कलङ्क।

अभिग्रह ३४९ प्रतिज्ञा।

अभिधा २७२ नाम।

अभिनवेरउ ९९ नया, अभिनव।

अभिहाण १७९ नाम।

अमग्गउ ३७१ कुमार्ग, मिथ्यात्व

अमलीमान ८९ निर्मल मानवाला

अमारि	१०२	अहिंसा।
अमी	४१०	अमृत।
अमीझरउ	१७०	अमृत झरनेवाले
अमूलिक	३३७	अनमोल।
अयरावइ	३२	ऐरावत, हाथी
अयाण	४०	अज्ञान, मूर्ख
अरगचा	८४	अरगजा
अरचा	१९८	पूजा
अररि	३२	अरेरे
अर्भक	२७१	बालक
अलजयो	२९४	मनोरथ
अलजो	८७	विरहस्मरण; ओलूंआना
अलिअ	८६	अलीक,अप्रिय, बुरा।
अलीय	१००	अलीक,मिथ्या
अवगाहए	६	अवगाहनकरना
अवडा	१७	अयोध्या
अवदात	१७०,२६९	गुण, चरित्र, निर्मल ।
अवधारो	२९९	स्वीकार करो
अवयरिउ	२२	अवतार लिया
अवरोह	३०	अन्तःपुर,घेरा प्रतिबन्ध, रोकना।
अवल	३३	अवला, नारी
अवहरइ	१	दूर करता है
अविहड़	१७८	अटल, अविहत
असमानो	८४	असमान
असराल	९०	वक्र, जहरीला
असिणि	१८०	अश्विन
असिय	३२	अशित, भक्षित
असिव	९६	अमङ्गल
अहिनाण	३४९	अभिज्ञान, पहचान, निशानी।
अहियासने	३२९	वेदते, अनुभवते
अहिठाण		अधिष्ठान
अंग	१८३	जैन शास्त्र
अंगोल	७	पुत्र
अंबाड़ी	३४७	हाथीकी अंबारी (हौदा)
अंबाएवि	३०	अम्बा देवी

आ

आउखउ	३०	आयुष्य
आउखो	२९६, ४०९	आयुष्य
आएसि	३८७	आदेश
आकरा	१४८	अत्यन्त कठिन
आखडी	३१६	निषेधात्मक प्रतिज्ञा, व्रत
आखातीजइ	३९७	अक्षयतृतीया
आगर	८१	घर, निवास
आण,आणा	३७०,३७१	आज्ञा
आणंदिणि	१	आनन्ददायक(में)
आदेशकार	१०६	आज्ञाकारी
आनुपूरवी	१९६	कर्मका एक भेद, अनुक्रम

आपै ९७ देता है
आम ४०८ इस प्रकार
आम्नाय२७३,२८४ परम्परा, सम्प्रदाय।
आम्बिल ११९ तपस्या,(६ विगयों का त्यागविशेष)
आयरिय २६ आचार्य
आरखे १९० प्रकार
आरा २८२ चक्र
आराहण ५५ आराधन
आरिज १६०, ३७६ आर्य
आरुहउ १६६ चढ़ा
आलंगिउ ३९३ आलिङ्गन
आलि २४ व्यर्थ
आलीजा १०८ प्रेमी
आलोयण ३४८ आलोचन
आवतिया १०४ आ रहे हैं
आवर्त्त ३०० दोनों हाथ गुरु के पैरोंपर लगा कर अपने मस्तक पर लगानेकी वन्दन क्रिया।
आसन्नसिद्धि २९० निकट मोक्षगामी
आसंगायत ४१४ आश्रयवर्त्ती, आधीन

इ

इक्कह ३२ एक-एक
इलि २५३,३७३ पृथ्वीपर
इसडे १९० ऐसे
इंटाल ३२९ ईंटोंसे
इंदा २८५ इंद्र

ई

ईति ३२७ धान्यादिको हानि पहुंचाने वाले चूहादि प्राणी।
ईर्या (सुमति) २६२ विवेकपूर्वक चलना

उ

उइखहु ३६५ उपेक्षा करना
उकेश ३०७ उपकेश,ओसवाल
उक्कंठिउ ३९२ उत्कण्ठितहुआ
उखेवे ३३१ खेना
उग्गमणे २८ उदय होनेपर
उच्छंगि ६८,३१५,३४४ गोद
उच्छरंग उत्साह, उत्सव
उजवालण २९३ उज्ज्वल करना
उज्जोइउ १, ३६६ प्रकाशित किया
उणइ ४९ उसने
उत्तंग ३३५ ऊंचा
उत्थपिय २९ उखाड़ा
उत्सूत्राविधि २६ उत्सूत्रऔरअविधि
उथप्पिय ४५ उखाड़ा

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
उदेग	४०४	उद्वेग
उद्गता	२९२	उदय हुए
उद्घोषणा	२८८	घोषणा, ढंढोरा
उपदिसि	९४	उपदेशकर, कहकर
उपधान	८७	तप विशेष
उपनले	११	उत्पन्न हुए
उपशम	६२,१३०, ३२०,३२३	शान्ति
उपसमण	३६७	उपशमन
उप्पलु	२७	उत्पल कमल
उबरन	३२	उदुम्बर
उभगउ	१६२	उद्विग्न हुआ,
उम्मूलिय	३९	उन्मूलित किया
उयरइ	३२३,४०३,२२	उदरमें
उलट	१४९	हर्षोत्साह
उल्लास	३९२,४०६	प्रसन्नता
उवज्झाय	२८,९६,९७ १३४,१३९, २३१,३९९, ३४०,४०२	उपाध्याय
उवसग्ग	२०	उपसर्ग
उसभ	२	ऋषभ
उल्सासहि	४०	आनन्दित, उत्साहित
उंवरा	८७	उमराव

ऊ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
ऊगाहउ	९६	ढोकना, चढ़ाना
ऊनधां (थां)	२९८	उद्दंड
ऊनविउ	१४	उमड़ना
ऊभविय	१८	ऊंचा किया जाना
ऊमाहो	२२९	उमंग उत्साह

ए

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
एकरस्यु	३०२	एक बार
एरिस	३७	ऐसे
एषणासुमति	२६२	एषणा समिति, निर्दोष आहार का ग्रहण।

ऐ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
ऐरावण	२६४	हाथी

ओ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
ओठीडा	३०२	ऊंट सवार
ओलगइ	८४	सेवा करता है
ओसउ	१५४	औषध

क

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
कइ	१	कृत, किया
कइयइ	१९७	कब
कए	१	करनेपर
कचकडउ	११४	वस्तु विशेष
कचोल	३९१	कटोरा
कज्जारंभ	९	कार्यारंभ
कटरि	३९८	आश्चर्य और प्रशंसा बोधक अव्यय
कटारिआ	१८८	गोत्रका नाम
कट्ठ	३६९	कष्ट
कडयड	३६६	कडकडी आवाज

कणय ३८७ कनक, सोना, गेहूं
कणयाचल ३५ कनकाचल, मेरु
कथीपानइ ५३ वस्त्रविशेष, गुरुके चलनेके समय पैर धरनेके लिये वस्त्र बिछाया जाता है
कदाग्रही ३१६ दुराग्रही
कप्पड ३५३ कपड़ा
कप्पयरु ४० कल्पतरु, कल्पवृक्ष
कप्पतरो १७ " "
कप्पम् १ कल्प, कथा
कमला ३५४ लक्ष्मी
कय २१५ कृतः किया
कम्मपयडी २६६, २७३ कर्म प्रकृति
करट ३८ हाथीका गंडस्थल
करटि ३८ हाथी
करंतउ ३९७ करता हुआ
कल्याणु ३७१ कल्याण
कवराव ३१० कविराज
कव्व १ काव्य
कव्वट्ट ३ कवित्त, काव्य
कषाय ३५३ क्रोध, मान, माया लोभ (४ संसार वृद्धि हेतु)
कसबोकी १५७ जड़ाऊ, चित्रित
कहर ४०७ मौत
कंख ६४ चिन्ता, दुविधा
काउसग्ग ३२९ कायोत्सर्ग
कागल १३३ कागज
काप्या ४१२ काटे
कामगवी १२३, २५७ कामधेनु
कामकुंभोपम ८ कामकुंभके समान
कामित ९५, १२३ इच्छित
कारवइ ३८७ कराता है
कार्त्तस्वर २६४ स्वर्ण!
कित्ति ३८५ कीर्त्ति
किन्न १७ कृष्ण
किवाणि ३२ कृपाण
किसण १ कृष्ण पक्ष
किंपि २६७, ३७९ किमपि, कुछ
किलिट्ठ ३४० क्लिष्ट
कीलइ ११३ कीली
कुग्गह १६ कुग्रह, दुष्ट ग्रह
कुच्छि ३९१ कुक्षि
कुडि २८४ मिथ्या
कुणंति १ कहना
कुंकडती १७ कुंकुम पत्रिका
कुंट ३११ कोने
केदारा १०४ राग विशेष
केरउ १०४ का
केसूडा ३५१ केसूके फूल
कोटीर ३६१ श्रेष्ट, अग्रणी
कोड ३११ कौतुक
कोडि ८७, ९९ कोटि
कोडीधज ४१६ करोड़पति
कोतिल २९३ कोतल तेज घोड़े
कंचूअउ १५७ कंचकी

कंठीर(व)	३८४	सिंह
कंपिनइ	१२	कांपकर
कंमिण	३६७	कर्म, कृत्य
कंसाल	३,१६४	कांसीका वाद्य विशेष
क्रमि	३६९	चलकर, क्रमसे
क्रिया उधार	२७७	शुद्ध मार्गका उद्धार

ख

खइडां	१६३	खड्ग
खग्ग	३५२	”
खटण	३११	प्राप्त करना
खपाया	४११	पूरे किए,नाशकिए
खमाया	२०९	क्षमा करवाया
खमाविनइ	३३०	क्षमा करवाकर
खरउ	३७९	सचा, खरा
खरहरय	३६७	खरतर
खंति	३८०	ध्यान
खंति क्खर	३४	क्षांति, तेज
खम्यो	२९१	सहन करना
खाटीजइ	१६२	संचय करना, प्राप्त करना
खाटै	४१०,४१९	स्थापित करना
खांत	४०८	ध्यान, क्षांति
खान	५३	मुसलमान सरदार
खामो	२८४	कमी, त्रुटि
खिजमति	२८२	खिदमत, सेवा
खित्तवाल	४	क्षेत्रपाल
खिसए	३८७	हटना
खिहाला	१५४	खाद्य वस्तु विशेष
खीरह	३०	क्षीर, दुग्ध
खेतरपाल	४०९	क्षेत्रपाल
खोणि	३६	क्षोणी, पृथ्वी

ग

गउड	१०६	गौडी रागणी
गउ (ड) यड़इ	३७	गिडगिडाना
गउरी	१०४	गौरी
गच्छ	२८६	समुदाय
गजगाह	१६५	हाथियोंकी घटा
गजगति गेलि	१५९	हाथीकी चालके समान चलना
गजथाट	१६८	हाथियोंका समूह
गणहरु	२	गणधर
गय	३३	गज
गयणु	२	गगन
गरट्ठिउ	३३	गरिष्ठ, बड़ा
गरढो	३४३	वृद्धा स्त्री
गरीठो	२७०	बड़ा
गरुयड	१७५	बड़ाभारी
गलिय	३३	गल गया
गहगहइ	३५०	प्रसन्न होना
गहगहिय	४०१	,, होकर
गहगाट	१६५,१६८, ३०१,३१९	प्रसन्नता सूचक शोर

गहिर	२	गहरा
गहूंली	२३७, २३८	गेहूंकी ढगली गुरुगीत
गंजणू	४९	गंजनकरनेवाला
गाएसू	३८४	गाऊंगा
गायसिए	३४०	,,
गाल्यउ	८०	गलाया बिताया
गिडगिडी	१६४	वाद्यविशेप
गिरुआ	३००	बड़ा
गुजरी	१०९	रागका नाम
गुणनिलो	९७, १४७	गुणोंका आवास
गुणनिहाण	२१	गुणनिधान
गुदराणी	१४२	अरज की
गुपति	११६,१७९,२९७ ४१६	संयमित करना
गुरुपसाये	२९७	गुरुके प्रसादसे
गुली	१५७	नजर 'नहीं लगनेके लिये बांधा जाता है
गूडिय	३८१	पताका
गूडी	१८, ३१६	,,
ग्रोइक	३४	गाय औरआक

घ

घट्टि (थट्टि)	२९	ठाठ
घणतूर	३८८	बहुतसे बाजे
घरणि	१७	ग्रहिणी
घातण	३०१	डालना
घुराया	३०३	बजाये
घुरे	३३८	बजे
घोल	१९६	कपड़ेसे छाना हुआ दही

च

चउपर्वी	१४३	४ पर्व तिथी
चउसठि	१८०	चौसठ
चउसाल	१००	चौसाल, चतुः शाला चारोंओर
चक्करडी	१९८	चकरी
चक्कधरो	३८९	चक्रधर, चक्र- वर्ती राजा
चमकिय	२८८	चमका
चंग	३७७	अच्छा
चारण	१६९	जाति
चारित	१६३	चारित्र
चियवास	४९	चैत्यवास
चूका	१६३	भ्रष्ट होना विचलित होना
चूडावयंसु	२१	चूडावतंश
चूनडी	३३३	वस्त्र विशेप
चो	२९८	का
चोल	१९८,१८०	मजीठ
चोवा	८५	सुगंधित पदार्थ विशेप

छ

छछेद	१८३	आगम छछेद सूत्र

छडा	३७७	छटा, छांटा
छपदा	३५२	षट्पद, छप्पय
छयल	१९०,३५०	रसिक
छलियइ	३७९	छलना
छविह	२४	छ प्रकार
छातिया	१०४	छाती,वक्षस्थल
ज		
जइणा	२४	यतना
जईसर	३१२	यतीश्वर
जईसू	१६	यतीश
जउख	८२	आनंद, विश्राम
जगत्र	३१८	जगत
जगीश	८२,१०७,४१०	इच्छा
जत्थ	२४	जहां
जमाडि	२८९	जिमाकर
जम्पइ	१६३, ३३९	कहता है
जम्बुय	३४	गीदड़
जम्मक्खणि	३४	जन्मक्षण
जम्मु	२३	जन्म
जयतसिरी	१०५	रागका नाम
जयपत्तु	२	जयपत्र
जसु	३६९	जिसका
जाइगा	३७६	जगह
जागरि	१५३	जागरण
जांन	४१२	बरात
जानउत्र	३८०	बरात
जानह	३८०	बरातको
जामणहि	३१	यामिनी (रात्रि) में
जालवइए	११३	जलाना
जालवीजइ	३९३	सुरक्षित रखना संभालना
जाह	३७०	जिसके
जिणवरु	३६९	जिनवर
जिणवय	२५	जिनपति
जिणिंदु	३६६	जिनेश्वर देव
जीपइ	३५२	जीतता है
जीह	२५८	जिह्वा
जुग पवरु	३	युग प्रवर
जुग पहाणु	२२	युगप्रधान
जुगवर	२४	युगमेंश्रेष्ठउत्तम
जेत्र	९७	जय सूचक
जोइणि	२	योगिनी
जोडली	३६२	युगल, जोड़ी
झ		
झानावरणी	३२३	कर्मका नाम, ज्ञानको आवरण करनेवाल-
झड़हड़	३६५	गिरना झडना
झाङ्खों	३३०	झांको,आभास
झाझेरड़ा	१२०,३२६	अधिक, विशेष
झाडाया (ला)	१००	छुड़ाया
झाण	१	ध्यान
झायहु	३८५	ध्यावो
झालर	३११	झालर, वस्त्र विशेष
झाला	३०२	जाति विशेष

झालिहि ३८८ संभलता
झीलता ६२ अवगाहन करना, नहाना, गरकाव होना
झुणि ३८७ ध्वनि
झोलउ ११३ झोली, झोला

ट

ट्ठियउ २ स्थित

ठ

ठरे २७२ ठण्डा होना
ठवणादिक २८० स्थापनादि ४ निक्षेपा
(पय) ठवणुछव २१,२२ पदस्थापनोत्सव
ठविउ २ स्थापित किया
ठविज्जय ३५ स्थापितकिया जाता है
ठविय २७ स्थापित करके
ठवीया २७७ स्थापित किया
ठिकरि १५४ ठीकरा

ड

डमडोलइरे १६० चंचल होना
डमर ५,१०४ उपद्रव
डाक डमाल २६२ आडम्बर (झाकझमाल)
डांण २६०,४१४ तेज
डोकरपणि १६३ वृद्धावस्थामें
डोहइ १५७ गिराना
डोहला १५४,१८० दोहद

ढ

ढक,ढुक १७ वाद्य विशेष
ढकारविण ३६६ ढक्का (वाद्य) के रव शब्दसे
ढणहण ३९४ झरझर
ढलकती ३३३ धीरे धीरे चलती हुई
ढाल ६० रागकी रीति विशेष
ढीक ३४५ गरीव
ढूकडा ३०० पहुंचे, पास
ढेल ३३३ ढेलनी, मयूरी

त

तक १ तर्क
तत्तवंतु ३६८ तत्त्ववान
तत्थ ३९० वहां, तत्र
तपला १४१ तपा गच्छीय
तयणु ३९५,३९६ तत्र
तयणंतरु १६ तदनंतर
तरणि ३६६ सूर्य
तरतउ १५७ तैरता हुआ
तरंडय ३६७ नौका
तलीया ३१६ विस्तृत
तव ३८५ तप
तसपटे २९२ उसके पाटपर
तह ३७१ तथा
तहत्ति १५३ तथेति, ठीक है ऐसा

तहु	३७१	उसके
ताणज्यो	२८९	पसारना
तिडावे	४१६	बुलाना, आमंत्रित करना
तित्थु	३६९	तीर्थ
तिय	३९	त्रिया, स्त्री
तियस	२९	त्रिदश, देव
तिलउ	१२,२४,२७	तिलक
तिलो	१९२	"
तिव्वु (त्थु)	३६६	तीव्र, तीर्थ,
तिसंझ	९	त्रिसंध्या
तिहुअण	२,६	त्रिभुवन
तिहुयणि	३८७	त्रिभुवनमें
तुंगत्तणि	३३	ऊंचाई
तुंगी	३१	रात्रि
तूठी	४०८	प्रसन्न हुई
तूंगीया	२३९	पर्वतका नाम
तूर	३०१	बाजा
तेगदार	१९९	तलवार वाला
तेय	३८९	तेज
तोरणबार	३१६	द्वार
त्रटकी	२७६	तडककर
त्राडूकइ	२६२	दड़ूकता है, दहाड़ता है
त्रिकरण	९९,२९४	तीन करण (करना कराना अनुमोदन)
त्रिवली	१६४	तीन वलय वाद्य विशेष

थ

थलवट	२९५	थली प्रदेश, मरुस्थल
थयउ	१३३	हुआ
थाकणे	३९३	ठहराव
थाप्या	३३२	स्थापित किया
थानकि	३९३	स्थानमें
थापण	१६९	स्थापण, धरोहर
थापना	८९	स्थापना
थाल	१७९	बड़ी थाली
थिवर	२२०	स्थिवर
थुइ	३७१	स्तुति करता है
थुणइ	३९९,४००	,, ,,
थुणवि	१	स्तुति करके
थुणस्सामि	२४	स्तुति करूंगा
थुणहि	१,३७१	स्तुति करते हैं
थुणि	३३	"
थुंभ	९७,२०७	स्तूप
थूभ	३२०,४०६	"
थोक	२९७	काम, बात

द

दट्ठूण	३९१	देखकर
दमणा	१९२	फूल विशेष
दरसणियां	८१	दर्शनी (दर्शन शास्त्री)
(कमल) दलावल	९	कमल दलकीपंक्ति
दव्व	२४	द्रव्य
दसूट्टण	१९६	दसोटण

दंगणु	४०७	जलाना
दंसण	३८८	दर्शन
दाखवुं	३२१	कहूं
दादइ	३४९	दादेने
दिक्खा	३९	दीक्षा
दिणि	१	दिन
दिव्राजउ	६७	शोभा
दिवांने	१४७	दरबार
दिवायर	७	दिवाकर, सूर्य
दिवायरु	२०	"
दीठेली	१२	देखी हुई
दीदार	३०३,३४८	आंख, दर्शन
दीवंमि	१	दीपक
दुक्करु	३७९	दुष्कर
दीस	४१३	दिन
दुक्करकार	१६३,१६४	दुष्कर कारक
दुग्गय	४०	दुर्गति
दुट्ठदल	४	दुष्टदल
दुडवडी	१९९	जल्दी
दुत्तरि	३६७	दुस्तर
दुतारो	१६४	दुस्तार
दुरंग	१६७	किला, दुर्ग
दुलहु	१९	दुर्लभ
दुविस्सइ	३६७	दुर्विषय
दुसम	२६१	कठिन, बुरा
दुहेलउ	३७९	दुष्कर
देवाणुप्रिय	२६९,३२३	देवानांप्रिय
देशना	११६	व्याख्यान
देसण	४९,८९	"
दोंकार	१६४	तबलेकीआवाज:
दोगंदक	१५१	देवताकी जाति:
दोहग्गु	३७१	दौर्भाग्य
दोहिला	१६३,३२३,३९३	दुष्कर
द्रंग	२६८	दुर्ग
द्रू(?रु)यमणि	३३	रुक्मिणी

ध

धखावे	२७९	सलगावे,जलावे,
धनदाण	९१	धन देनेवाला
धणुहरु	३६९,३६६	धनुर्धर
धम्ममई	३३९	धर्ममति
धय	२२	ध्वजा
यवड	३६६	ध्वजपट ध्वजा
धवरावइ	१९७	लडाना, प्यार करना
धवल मंगल	३६२,३८८	मंगल गायन
धाड़ि	३७७	डाका
धींगड	३१४	मोटे, जबरदस्त: मजबूत, पुष्ट
धींगा	१९३	"
धुयरय	३१	धुतरज: ?
धुरहि	३९	प्रथम आदिमें
धूतारी	३४८	धूर्त स्त्री
धोक	४१३	साष्टांग प्रणाम

न

नगीनो	३५४	जवाहिरात
नन्दी	१८३	सूत्र
नमेवी	३८४	नमस्कार करके

शब्द	पद्यांक	अर्थ
नयनिमल	३२	नीतिमें निर्मल
नयरि	१	नगर
नरभव	२४	मनुष्यभव
नरवय	२	नरपति
नवगीय	२९	नव ग्रैवेयक
नव्याणु	३२६	निंनानवे ९९
नही	१०	नहीं
नाइसक्या	२९४	नहीं आ सके
नाडय	१	नाटक
नाण	१,६,३८९	ज्ञान
नाणवंत	३६६	ज्ञानी
नाणिहि	४९	ज्ञान रूपी
नाथणा	२९८	नाथ डालना, वशमें करना
नादौ	८०	आवाज
नान्हडियउ	१६३	छोटा
नामउ	१६६	नाम
नारिंग	३२	नारिंग, मीठा नीबू
निकाचिय	३९६	निविड रूपसे बन्धन
निगोद	३२९	अनन्त जीवोंका एक साधारण शरीर विशेष
निग्रंथ	२७०	परिग्रह रहित
निच्चु	३०१	नित्य
निज्जणवि	३५,३९	जीता
निज्जिणिउ	३१,४९	जीता
निटोल	५१,१२०	व्यर्थ
निद्धडइ	३६	परास्त करना
निब्भंत	३३	निर्भ्रान्ती
निय	१६	निज
नियुमणि	३६७	अपने मनमें
नियमन	६२	निज मन
नियरू	१	निकर, समूह
निरीहो	१३	अनाशक्त
निरुत्तउ	३५	निश्चित
निलउ	६,१७५	निलय, घर
निलो	३१४, ३१६	”
निलवट	१८१, २९५	ललाट
निवड	१५५	घनिष्ट
निवेस	१७९	स्थान
निष्पन्न	२७१	सम्पन्न
निसम्ये	२७६	सुनकर
निसाले	३२२	पाठशाला
निसियरु	३३	निशाचर, राक्षस
निसुणवि	२१	सुनकर
निसुणेवि	३९३	”
निहतरइ	१५६	नोतरना, आमंत्रित करना
नोकउ	११८	अच्छा, भला
नोगमउ	२४	गमादो
नोझामता	३३०	पार पहुंचाता
नीलत्रण	३३०	लीलोती, हरियाली
नीवाणो	१३०	नीचा स्थान
नेजा	३५३	भाले
न्यात	३११	ज्ञाति, जाति

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
न्हवरावइ	१५७	नहलाता है

प

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
पउम	३६७	पद्म
पउमएवि	१९	पद्मादेवी
पउमप्पह	३२	पद्मप्रभ
पइसरइ	२	प्रवेशके समय
पखरिय	३२	पाखरना (प्रक्षरितः)
पगला	२५७,३३२,४०५	पादुका
पचखाण	११३,३२६, ३५७	प्रत्याख्यान
पचख्या	३३०	प्रत्याख्यान-किया
पजूसण	३५१	पर्यूसण पर्व
पंचआचार	४९	ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार, वीर्याचार।
पञ्चंगि	३४०	पांच अंग
पञ्च विषय	४९	पांच इन्द्रियों-के ५ विषय
पञ्चाणणु	३३	पंचानन, सिंह
पञ्चासम	३६३	पचासवां
पञ्चुत्तर	२९	पांचअनुतर विमान विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित, ५ सर्वार्थसिद्ध
पच्चक्खु	१९	प्रत्यक्ष
पटंतरु	३६७	उपमा
पटोधरु	१७६	पट्ट (पद) को धारण करनेवाले
पटोला	९३	रेशमी वस्त्र
पडखीजई	३४९	प्रतीक्षा करना
पडह	३,३१८	पटह बाजा
पडाग	२२	पताका
पडिकमणउ	१८२,१३३	प्रतिक्रमण
पडिकार	३६६	प्रतिकार
पडिपुन्न	८९	प्रतिपन्न, पूर्ण
पडिबिम्ब	४	प्रतिबिम्ब
पडिबोह	२,१९,२७, ३८८,४०२	प्रतिबोध
पडिरवण	१८	प्रतिरवसे, प्रतिध्वनिसे
पडीमा	२८०	प्रतिमा
पडूर	६८,७७,२९९	प्रचुर !
पणासइ	२०,३६२	नाश करता है
पणासणु	१६	प्रनाश करने-वाला
पत्त	४	प्राप्त
पतीठी	१४१	प्रतिष्ठि
पतीनउं	१४१	प्रतीति हुइ
पत्ति	३३	वृक्षके पते
पत्तु	३६९,३१२	पहुंचा, प्राप्त किया
पदम	१५७	पदम कमल

पघरावइ ३९१ स्थापित करता है
पभणई ४०४ कहता है
पभणेसो ३१२ कहूंगा
पमुह १,११८,४०२ प्रमुख, आदि
पमुहाणं १ पमुखानां
पमोउ २२ प्रमोद
पयड १,२,१५,३१, ५१,२१५,३६५, ४०१, प्रकट
पयडिय ३१२ प्रकृति
पयंडिहि ३५ पांडित्यसे
पयतलि ३७,६३ पदतल, पगतली
पयन्ना (दस) १८३ प्रकरण १०
पयार ३९१,३९३ प्रकार
पयावि ३६५ प्रतापी, प्रजापति
पयासइ ६,३६ प्रकाशित करता है
पयासणु ३८५ प्रकाशन करनेवाला
पयासिउ २ प्रकाशित किया
पयंडु ३८५ प्रचण्ड
परगडा९७,२९६,३६१ प्रधान, चतुर, कुशल
परगच्छी १४१ अन्यगछीय
परघल १०० खूब
परणालियां १३० प्रणाली, परनाले
परत ३७६ पड़ती हुई
परत्थी २४ परस्त्री
परत्र ३६७ परलोकमें
पखाली ८१ पखाली, पानी भरनेवाला
परपद ७ परिषद
परि,पर ४१४,४०८ भांति, तरह
परिकर ३३८ परिवार
परिक्खिवि ३६६ परिषदि
प ग्रह २७७ धन,वस्तु संचय
परिघल ३४७ खूब
परिणिति ३३० प्रवृत्ति
परिचर्या २९९,३३६ परिवेष्ठित, परिवार सहित
परिहरवि १ छोड़कर
पल्प्पर ३६७ परस्पर, अन्योन्य
परे ४१३ भांति
पल्योपम २९१ ३५६ कालका प्रमाण विशेष
पल्हभ(?)णु ३६८ पल्हकवि कहता है
पवज्जंति १६४ प्रवर्त्त होते हैं
पव(य) ट्ठत्ति ३१ रात्रिको प्रतिष्ठा
पवतणि ३३९ प्रवर्त्तिनी (पदविशेष)
पवर ३६९ प्रवर

पवरपुरि १ प्रवर नगरी
पवरो २२,३८८ प्रवर
पव्वय २७ पर्वत
पवित्तिण १ पवित्र होकर
पसंसिजइ १ प्रशंसा की जाती है
पसाउ (य) ४,१७७ प्रसाद, कृपा
पसायलु ३३९ प्रसादसे
पासद्ध १ प्रसिद्ध
पहु २७ प्रभु
पहाण २४,४०२ प्रधान
पहिलु २७८ पहला
पहु १ प्रभु
पहुत्तउ ४० प्रभूत, पहुंचा हुआ
पहुतणी २१४ प्रवर्त्तिनी, पद-विशेष
पहुवइ ४ प्रभवति, समर्थ होता है
पहुविप्पयउ २ पृथिवी प्रसिद्ध
पहूतिय ३९९ पहुंचा
पाखर ११३ पलान, हौदा
पाखर्यउ १७६ सज्ज किया
पांगरउ ६४,८६,९८, १८८,३००,३१४ विहार करना
पाटू १९८ पट्ट, सुन्दर वस्त्र
पाटोधर १६६,२९४ पदधारक, पदका उद्धारक
पाडइ ३४७ गिराता है
पाडल १९२ पाटल
पाथरइ ९३ बिछाता है
पाथू ३९३ पथिक
पाधरा ४१९ सीधा
पांभरी १९९,१९८,३९९ वस्त्रविशेष
पारका ३११ पराया
पाव ६ पाप
पावरोर २० भयानक पाप
पासु ३६९ पार्श्वनाथ
पासेस ४१४ पार्श्वनाथ
पिक्खहु ३६९ देखो !
पिक्खहि ३६९ देखे
पिक्खिवि ३६७ देखकर
पिखणय २२ प्रेक्षणक, दृश्य
पिखेवि ३३ देखना
पिण ४१९ भी, पर
पिम्म ३६९,३६६ प्रेम
पिम्मु ३६९ ,,
पिसुन ४१९ दुष्ट
पीलीया ३२९ पीले (कोल्हूमें पील दिये)
पुणति १ पवित्र करता है
पुद्गल २८८ षट्द्रव्योंमेंसेएक
पुग्उ १०६ पूर्ण करो
पुरंधिय १९ बहुपरिवार या पुत्र, पति-वाली स्त्रियें
पुरीसादाणी २६४ पुरुषोंमें प्रधान, प्रसिद्ध

पुलिया	४१४	चले
पुव्वुक्किअउ	३६९	पूर्वकृत
पुहपां	१७७	पुष्प
पुहवि	१	पृथ्वी
पूठो	१४८	पीछे
पूय	३८७	पूजा
पैसारो	४१३	प्रवेश
पैशुन	२७९	निन्दा
पैसारे	३०४	प्रवेश कराया
पोसह	१९४,१८२	पौषध
पोसहा	११४	पौषध
पोहोती	२९०	पहुंचो
पौषधशाला	३०४	उपाश्रय
पंथीड़ा	३०३	पथिक, यात्री
पंकय	५९	पंकज
पंडिय	१	पण्डित
प्रघल	४१६	खूब
प्रजालियो	३२९	जलाया
प्रतइं	१९६	तरफ
प्रतिबोधीयो	१४८	समझाया, ज्ञान दिया
प्रभावना	३३८	जिस कार्यके द्वारा प्रभाव पड़े
प्ररूपणा	२६९	कथन, वक्तव्य
प्रवरु	२९७	प्रवर
प्रगट्यो	३२२,२७१	पैदा हुआ
प्रह	३२०	पौ, प्रभात
प्रहफाटी	१३३	पौ फटी
प्रहसमि	९७	प्रभात समय
प्ररूपीयो	१४८	प्ररूपा, कहा
प्राहिं	३४३	प्रायः
प्रोल	३३९	प्रतोली, दरबाजा

फ

फरहर	२९३	फहरानेवाली पताकायें
फासूय	३१	फासू, प्राशुक
फडवि	३६	स्पष्ट, व्यक्त, विशद।
फेड्या	३९२	नष्ट किये।
फोक	१४३,२७७	व्यर्थ
फोफल	६७	नारियल

ब

बईठ	३४६	बैठा
बजडाव्या	१४६	बजवाये
बड आरू	३२	बड़का फल
बडवखती	१४६,४१४	बड़भागी
बत्रीस	१९७	बत्तीस
बन्नउला	३९१	बनोला
बरास	११४	कर्पूर निर्मित सुगन्धित द्रव्य
बरीस	३३८	वर्ष
बहरखा	३९२	बाहूका गहना भुजबन्ध
बंभ	३६९	ब्रह्मा, ब्राह्मण
बाकुला	१२०	बाकले

बाजू बंधन	३५२	गहना विशेष
बाटडो	३०३	वाट, प्रतीक्षा, राह, मार्ग
बापीयडा	१३०	परीक्षा
बाबीहा	२१३	परीक्षा
बालाणइ	३९	बाल्यावस्थामें
बाल्हुडा	१६५	(प्यारे) बालक
बाल्हेसर	८६	प्यारा
बीकाण	४१४	बीकानेर
बींसूया	१६३	डुबाना, हवा डालना
बींटानी	३७३	वेष्ठित हो गया
बुकठ	१७	वाद्य विशेष
बुलकृति	१६७	बोलते हैं
बूठा	३३७	वर्षा हुई
बेकर २९४,	३३४	दोनों हाथ
बेलाडु	२७२	बिलाड़ा ग्राम-का नाम
बेवि	३८७	दो, दोनो
बोहइ	२	बोधना, शिक्षादेना
बोहयंतो	३९२	बोध(ज्ञान)देते हुए
बोहिय	७	बोध देकर
बहो	३१०	बहु, बहुत

भ

भण्डारउ	८९	भंडारा
भत्तिवंतु	३६८	भक्तिवन्त
भमिऊण	३०	भ्रमण करके
भराव्यो	२७४	भराया
भळके	३०३	चमके
भळहळीयो	३०३	चमका
भवणिट्ठिय	१	भवनमें स्थित
भवियण	१,६७,११६,२६८,४०२	भविकजन, भव्य व्यक्ति
भवियगह	२४,३१	,, ,,
भलेरीय	३९३	भला
भज्जा	३७८	भार्या
भंभी	१०९	वाद्य विशेष
भाखसो	८१	कैद, अंधेरी कोठरी
भाट	१६५	जाति विशेष
भाण	२९८	भानु, सूर्य
भांभल	३०४	पागल, भोली
भांठि	१९९	कष्ट, दुख
भाहरह	३६७	चमकता
भिछ	१	भिक्षा
भुंगळ	२९३,३३१,३४४,३५२	वाद्यविशेष
भूवलइ	३७	पृथिवीमें
भूंगळी	७५	वाद्य विशेष
भइरवी	१०९	भैरवी रागका नाम
भेक	२८९	मेंढक
भेय	४०१	भेद
भोजग	१६५,३५२	भोजक जाति
भोयण	३४८	भोजन
भोलिम	३९३	भोलापन, अज्ञानता

म

मइडी	३४७	कमरा

मउड ३९२ मौड़, मुकुट
म ३६५ मत
मंख ३९२ चित्रपट दिखा-कर जीवन-निर्वाह करने वाला एक भिक्षुक जाति
मच्चु ३६७ मृत्यु
मढपति ३१९ मठाधीश
मणछिड २ मन वांछित
मणयतु ३६९ मनुष्यत्व
मणमणा १९८ बालककी भाषा
मणिमथ ९५ शिरोमणि
मणु २ मन
मणुय २३ मनुज
मदान्ति ३६ वेदान्ती, वेदान्तज्ञाता
मद्दल १४४ तबला, वाद्य विशेष
मधुमाधवइ १०९ रागिणी
मनभिंतरि २७ मनके भीतर
मनरली ३४६ मनकी उमंग आनन्दित मनसे
मयगल ३७ मदगल, हाथी
मयण ३४ मदन
मयरहरो १६४ समुद्र
मलपिया ४१९ चले
मलहपतउ १५० चलता हुआ
मल्हार १७७ राग विशेष
मल्हारु १७ ,,
महलावइए ३४० व्यय करना
महव्वय ५ महाव्रत
महंमद ११ मुहम्मद
महाणसि ३० महानस रसोई
महियलि २८ महीतल पर
महिर ४११ मेहर, कृपा
महिराण १६७ समुद्र
महीयले ९ पृथ्वी तलपर
महुर ३९५ मधुर
महूअर ४९ मधुकर
महूय ३२ मधूक,महुवा
मंडए ३९२ मांडना, रचना करना
माकंद १९७ इन्द्र !
मागण ३८७ याचक
माणिण ३६६ गर्वसे
मांडवइ ३९१ मंडपमें
मांडी १९७ बनाकर
मादल १६४,३४४ वाद्य विशेष
मायंडू २३ मार्तण्ड, सूर्य
मारुणि १०५ रागका नाम, मरुस्थलकी
मालिया ३४५ महल
मालोवम १९ मालोपम
मिछत ११,३७ मिथ्यात्व
मितुवि ३७० मित्र भी
मिथ्यात्वशल्य २८० मिथ्यात्व रूपी शल्य
मिसरू ३९९ वस्त्र विशेष

मिठुं	२७८	मीठा
मिस	३६६	मिश्र, युक्त
मुकीयो	२९९	छोड़ा
मुक्खहलि	२९	मोक्ष स्थल
मुक्या	२८९	छोड़े
मुणइ	३७०	कहता है
मुणिंद	२, ३८९	मुनींद्र
मुणिवि	३६७	कहकर
मुनियपय	७	मुनिका पद
मुरंगी	९१	मृदुअंगी-स्त्री
मुरमंडले	८	मरु मंडल
मुंहपत्ति	३३७	मुखवस्त्रिका
मुंछाला	३४२	मूंछोंवाला वीर
मूं	३९२	मुझे
मूंकी	४१६	छोड़कर
मेरउ	१०४	मेरा
मेलिय	३९५	मिलकर
मेवड़ा	३२१,६३	दूत
मोकलूं	३२२	भेजूं
मोटिम, मोटिम्म	८९, १८९	गौरव,
मोरउ	९८	मेरा
मोस	२६१	मृषा
मोहणवेलि	१०८	मोहनेवाली वेल, मनोहर वेल
मोहरेयाजी	३०२	मोह रहे हैं।

य

यशनामिक	२६४	यशस्वी
युगवर	१७९	युगमें प्रधान

र

रज्ज	३५	राज्य
रंजवियउ	३६६	प्रसन्न किया
रंजया	३६२	,,
रच्चंति	३७७	राग करते हैं
रणई	३८८	बजता है
रणकार	३३१	आवाज विशेष
रतनागर	२८	रत्नाकर, शाह का नाम
रत्नावली	१८०	रत्नोंकीअवली (समूह)
रमझोल	१५५	हर्षोल्लास
रमिज्जइ	२४	रमण करना
रम्म	२५	रम्य
रयणागरा	३२४	रत्नाकर
रयणायर	९	रत्नाकर
रयणाह	२३	रत्न
रलिआतो	१४७	आनन्द
रलिय	३३, ३८८	उमंग
रली	११६, ४१२	उमंग, इच्छा, हर्ष
रलियावणिय	३०७	सुन्दर, मनोहर
रलियामणउ	३, ३३२, ३३६	सुन्दर, रमणीय
रह	६७, ३९५	रथ
रांक	२७१	गरीब
रांधइ	३४३	रांधता, पकाता

वरतइ	१६८ वर्तमान, चल रही हो	वाणारिस	१७ } बनारिस, वाचक
वरनोलइ	१६९ बनोला	वाणारी(स)	४०१ } वाचनाचार्य
वरीय	६ वरकर, अङ्गीकार, स्वीकार	वांद्वा	२६९ वंदना करनेको
वलग्गि	२९ अवलम्बनकर, पकड़कर	वांद्स्यां	३०० वंदना करेंगे
वलतु	३४९ प्रत्युत्तरमें, लौटता हुआ	वादी	३७ वाद करनेवाला
वलि	१७६, ४१९ फिर, लौटकर	वादोजीत	२६६ वादियों को जीतनेवाला
वली	२९७ फिर	वान	९२,१६६,३९८४०६, शोभा
वले	३०३ फिर	वांद्वा	२६९ वंदना करनेको
वशाखि(पि)का	३६ वैशेपिक दर्शन	वांद्स्यां	३०० वंदना करेंगे
वसहि	४९ वसती	वारउपंग	१८३ १२ उपांग (आगमसूत्र)
वसीट्ठी	१४१ दूर !	वालीनै	४१० लाकर,
वहिरमाण	३१९ विचरने वाले महाविदेह क्षेत्र के तीर्थङ्कर	वावइ	१३० बोना
वहिरउ	१८ वहरा हो गया	वावरइ	३४० व्यय करना, उपयोग करना
वहिला	४१६ जल्दी	वावरियउ	३६७, ४१६ व्यय किया
वहुराव्यो	२७२ वहराया, प्रदान किया	वाविय	३३ वापी
वहुरिवा	११४ लेनेको, लानेको	वावुं	१९४ व्यय करूं
वहन्ति	३७१ चलता है ?	वास	१ आवास, घर।
वाइ	१६ वादी	विगुआणा	२७९ बिगोये गये
वाइक	३१० कथन योग्य ! (प्रशंसात्मक काव्य)	विग्घत्	१ विघ्नोंको
वाइमल्ल	१४२ नाम, वादियों में मल्ल	विचंरवउ	१६३ विहार करना, चलना
		विज्ञावलीय	९ विद्याका समूह
		विजा	१,४०१ विद्या
		विट	३८ भांड
		वित्तिकरु	१९ वृत्तिकर्ता
		वित्थरि	२७ विस्तारसे

सखरी ४१३ अच्छी
सखाइ १६० मित्रपना, मित्रता, सहायक
सगलौ ४०६ सारा
सग्गहि,सग्गि ४,२६,३४ स्वर्गमें
संखेवि ९१ संक्षेपसे
संघवइ १३,१८ संघपति
संघातह १४२ साथमें
सचांण ३०१ बाज ?
संजम ६ संयम
संजुत्तु ३६८ संयुक्त, सहित
संझ ३७१ सन्ध्या
संठविउ ३८७ संस्थापित किया
संठाविउ ३९९ ,,
संठिउ १ संस्थित
संठियउ १ ,,
संतुट्ठ १ संतुष्ट
सट्ठु वि ३७१ सुष्ठु, श्रेष्ट
सतर १९४,१९६ सतरह
सतरभेदी २७९ ,, प्रकारकी
सत्तु ३७० सत्व
सत्थ ३६८ सार्थ, संघ
सदीव ३२९ हमेशा, सदैव
सद्दहणा ११४ श्रद्धा
सद्दहे २६० श्रद्धाको
सद्दि २ शब्दसे
सनूर, सनूरी ६८, ८९ दीसमान, सुरूप, सुन्दर

संथारउ २०४,३१९ संस्तारक
संथुणिउ ९ संस्तव किया
सन्नाणह २८ सद्ज्ञानसे
समकित ४९,१३०,२२९,२८० सम्यक्त्व
समग्ग २१ समग्र
समणह ३१ श्रमण
समरणी १९९ माला
समर्यउ ९६ याद किया
समवडि ९४,१३४ समान
समवाय ९६ समूह
समापै ४१२ देता है
समिद्धह ३६७ समृद्ध
समोभ्रम २९९ संभ्रम
समोसरे ३३८ समवसरे,पधारे
सम्मुखइ २०४ सामने
संपत्तु ३८९ पहुंचा
संपय २९ संप्रति
संवेग ११६ संसारसे उदासीनता, वैराग्य, मोक्षाभिलाषा,
संवेगी १७७,३२९ संवेगवाले
सयल ६,१३४,३३२,३९८ सकल
सरणा २९९ शरण
सरणाइ ३३१,३९२ वाद्य विशेष
सरभरि १४३ बराबरी
सरि ३९४ स्वर
सरे ३८९ स्वरसे
सलहिउ १३ प्रशंसित

सुकडि ११४ घिसा चन्दन सूखनेपर
सुकयत्थ ३७१ सफल
सुकलीणी ६७ कुलीन, कोमल गात्रवाली
सुकिय ३३ सुकृत
सुजगीश १४६ सुन्दर, इच्छा
सुणय ३९२ नीतिमान्, सदाचारी
सुनिछउ १ सुनिश्चित !
सुपन १८९ स्वप्न
सुपनाध्याय २७० स्वप्नाध्याय
सुपरपरि १ अच्छी तरह
सुपवित्तिण २ सुपवित्र
सुपसंसिय ३१२ सु-प्रशंसित
सुपसाउ २९७,८९ सु-प्रसाद, सदनुग्रह
सुप्रस ह (द) ३१० शोभन कृपासे
सुमति ११६ इर्यासमिती आदि
सुमरिज्जंत १ स्मरण किये जानेपर
सुमरेवि ३८४ याद करके
सुमिगउ ३७८ स्वप्न
सुयदेवि ४ श्रुतदेवी
सुरगवि १४५ कामधेनु
सुरगुरवि १ बृहस्पतिके समान
सुरंगी ३३३ अच्छे रंगवाली
सुरद्दुम ५१ सुरद्रुम-कल्पवृक्ष
सुरवर २९ उत्तम देव, इन्द्र
सुरसाल २६२ उत्तम
सुरूव ३९२ सुरूप
सुलताण ८९ सुलतान
सुविहिय २४,२८,४२,२६ सु-विहित
सुहंम २ सुधर्मा-स्वामी
सुहिणइ ३५७ स्वप्नमें
सुहु ३७२ सब
सुंखड़ी १८१ मीठाई
सूरयोपभ २९२ सूर्यके समान
सूरिमंतु ३ सूरिमन्त्र
सूहवि ३४१ सधवा
सूहव ६७,३१६,१३४ सुभग, सौभाग्यवती
सोगत ३६ सुगत, बौद्ध
सोस २६१,२६६ अफसोस, खेद
सोहम्माइवइंद ३० सौधर्म देव लोकका इन्द्र
सोहामणो १३० सुहावना
सौध ३६ महल, प्रासाद
स्तुप २९० स्तूप, थूभ
स्युं १६९ से

	ह	
हइमयण	३६६	हत मदन
हथलेवउ	३९५	पाणिग्रहण संस्कार
हयांछ, हयाछु	३७०	हताश
हरि	९८	सूर्य
हरिस	३९९	हर्ष
हवालइ	१४२	सुपुर्द
हारिय	३३	हार जाना
हिव	३७२	अब
हीचइ	१९७	हींडे (पर)
हीला	८१	अवहेला ?
हिलियइ	३७०	निन्दा करताहै
हुइगउ	३७५	होगा
हुंसि	९९	हौंस, अभिलाषा
हुसेनी	१११	रागका भेद विशेष
हुंडा अवसप्पणि	३७०	हुंडावसर्पिणी, वर्तमान हीन समय
हुंति	३७०	से, की अपेक्षा
हेला	३९९	उच्च स्वर

विशेष नामोंकी सूची

घ

च

श

ज्ञ

शुद्धाशुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	आवि	अविहि
२	२	मणच्छिउ	मणिच्छिउ
२	३	दितु	दिन्तु
२	७	वक्कु	चक्कु
३	१०	दिणण	दिणणु
५	५	सदट्ठमि	भदट्ठमि
५	९	वैशाखाह	वैशाखह
५	१६	अवंझ	अवंझ
५	१९	संथिणिउ	संथुणिउ
६	१२	वधाविउ	वधाविउ
६	१४	वाधइ	वाधइ
७	२२	अन्नं	अन्न
८	१७	बधावीउ	वधावीउ
१०	११	०नो जनंदा	०नौ जिनंवा
१०	१२	क्षोरे नीरे	क्षीरैर्नीरैः
१०	१२	स्नपयस्तुतरां	स्नपयतुतरां
१०	१४	गौंतमःश्रीसुधर्मा—	गौंतमश्रीसुधर्म
१०	१७	कलशराध्या	कलशराज्या
११	९	०वोहणु	०बोहणु
११	१३	मनइ	नमइ
१२	११	सासउ	सीसउ
१२	१२	कंपि	किंपि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१४	ढाल	ढोल
१३	३	जिणप्रभु	जिणप्रभ
१३	४	जिणत्रासण	जिणशासण
१६	११	निहि	नहि
१६	११	निहि	नहि
१७	१७	किन्नग	किन्न
१८	१३	वार	चार
१८	१७	जइसइ	अइसइ
१९	१४	बिंबिबि	बिंबि
१९	१८	ज्ञा	जा
२०	६	सवणंजल	सवणंजलि
२०	८	जिण	जण
२०	११	अनुकमि	क्रमि
२०	१७	कण्ठोर	कण्ठीरव
२१	१	संवयण	संथवण
२१	८	धत्ता	घत्ता
२१	१३	तिहुपति	तिहुयणि
२१	१९	चन्दि	वंदि
२१	२२	पाट ठवण	पाठवए
२१	२२	कुंकुवत्रिय	कुंकुमपत्रिय
२१	२३	वच्छरि	वित्थरि
२२	१३	धत्ता	घत्ता

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१२	सहलउ किउ इत्थु कलि तिह	सहलउ तिहि किउ इत्थु कलि
२३	१४	सूर	सूरि
२४	५	विसम	विस
२४	१३	परकरिय	पक्खरिय
२५	१०	गच्छाहवइ	गच्छाहिवइ
२५	१७	जेता०	जिता०
२५	१७	इग्यारह	इग्यारहसय
२६	१	वइसाखयइ	वइसाख्यइ
२६	७	आसोज	आसोजवदि
२६	८	अनुतर	अनुतेर
२७	१	वत्थिरि	वित्थरि
२७	७	लोपआयरिय	लोगह आयरिय
२७	१६	सूरि	सुर
२८	८	ऋदाउत सुखसंसि—	रूदाउत सुपसंसि
२८	९	पनरेतिरइ	पनरोतिरइ
२८	१०	रतनागरवरसि—	रतना पुन्निग उच्छव रसि
२९	६	सूरहि	
२८	१८	अठारहवी पंक्तिको	सोलहवीं पंक्ति पढ़ो
२९	१४	सुविह तह	सुविहि तह
३०	३	तिलउ	निलउ
३०	३	लद्विवर	लद्धिवर
३०	६	पख	पक्खी
३०	५	वहियं	विहियं
३०	५	पंचमि(घाउ)	पंचमियाओ
३०	८	उज्जेण	उज्जेणी
३०	१३	जिणदत्त	:जिणदत्त सूरि
३०	१३	सुपहु	सुपहू
३०	१४	विन्नाउ	विन्नाओ
३०	१८	सय	सोय
३०	१८	जवाईय	जु वाईय
३०	२१	फुग्गण	फग्गुण
३०	२२	वजयाणंदो	विजयाणंदो
३०	२२	निज्जणिय	निज्जिणिय
३१	५	ता(?)उन्हउं	ताउन्हउं
३१	६	ति(लि) हि	लिहि
३१	७	रमनरमणि	नरमणि
३१	८	जिणेसर(७वीं पंक्तिमेंपढ़ो)	
३१	८	नं दिन	नंदिन
३१	९	पवठ्ठ	पयठ्ठ
३१	११	अवहि	अविहि
३१	२२	स	स हंस
३२	३	पट्टु	पहु
३२	५	एने	एन
३२	८	वडआख्य	वडयारूअ
३२	१०	वंच	चंच
३२	११	नसि	निसि
३२	२०	वडवि	चडवि
३२	२०	धिविहि	वितिहि
३३	१	गुडिर	गुडिय

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	४	न(?ना)विय	ठाविय
३३	५	घड	पयड
३३	५	बत्तास	वत्तीस
३३	११	मुणिहु उहारिय	मुणिहुउ हारिय
३३	१२	आणग थुणि	अणेगे थुणि
३४	१	सऊहिं	सझिहिं
३४	१	वंदु	चंदु
३४	६	वरण	चरण
३४	९	एररिसउ	एरिसउ
३४	१५	सघोस	सुघोस
३५	३	निज्जणवि	निज्जिणिवि
३५	५	पटटुद्धरणु	पट्टुद्धरणु
३५	१८	जिम	तिम
३५	२१	अगाइ	अग्गइ
३६	१२	व्रजा	व्रज
३७	१३	नरनाह	नरनाहा
३९	६	दुग्ग	दुग्गम
३९	७	वितु	वित्त
३९	१०	विन्नउं	विन्नविउं
३९	२०	निवारइ	निवारउ
४०	४	तूय	तुय
४०	५	दिज्जय	दिज्जइ
४०	६	०वित्ति	०चित्ति
४१	५	नंदि	नंदि
४१	१२	लोहच्चिय	लोहिच्चय
४१	१४	चंदेहिं	वंदेहं
४२	३	तिहऊय०	तिहुय०
४२	६	०विजय०	०विजिय०
४२	६	सूर०	सुर०
४२	७	पहोदय	पट्टोदय
४२	१०	कुम०	कुंभ०
४२	११	परंपरा०	परंपर०
४२	११	०मिण जो	०मिणं जो
४२	१२	०जतो	०जणो
४४	२	हुंउ	हउं
४७	७	देरउरि	देराउरि
४७	१८	नदेन	नवीन
४८	३	गुरि	गुरो
४८	१४	गुरुणा	गुरूणां
५०	१२	सुवर०	सु वर०
५१	६	सुरद्म	सुरद्रुम
५१	९	रुपइ	रूपइ
५३	७	वेची	खरची
५३	९	पामदत्त	पासदत्त
५३	२०	सव नारी	सवइ नारी
५४	५	जणियइ	जाणियइ
५९	२१	भटेता	भेटता
६३	९	अविया	आविया
६३	१२	हर्प	हर्प
६४	१७	घणी	धणी
७०	१	गौड़ा	गौड़ी
७३	१४	ऐकज	रोकज
७६	११	विधि	निधि
७७	१९	रि	सुरि
७७	१९	लगइ	लगइ ए

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९३	६	चिणचन्द	जिणचंद
९४	१७	कलाल	कल्लोल
९६	१	समय माद	समयप्रमोद
९६	१	समुल्लसा	समुल्लसी
९६	१८	पुप्प	पुण्य
१०४	२	गर्भित्	गर्भित
१०६	१२	१२(२)	(४२)
१०८	२१	जनचन्द	जिनचन्द
११०	८	जिर्णिद	दिर्णिद
१११	८	विने	विते
११२	९	विहु	चिहु
,,	२०	आझा	आज्ञा
११२	२२	वारह	बारह
११३	१	करूणा	करुणा
११५	१३	प्रसु	प्रभु
११५	१९	जावड	जावड
११९	८	रिगमता	रिगमती
११९	१०	गुणधा	गुणधी
१२०	८	छीतर	छीलर
,,	१३	उग्घाडा	उग्घाडा
१२१	९	दुली	टाली
१२३	७	प्रथान	प्रधान
१२६	१६	चापडां	चोपडां
१२७	१५	जिन	जिम
१२८	६	पेच	पञ्च
,,	१५	अछश	जसु जश
१३०	१४	आसू आस	आ॰ मास आसा
१३१	१७	साचा	साची
१३२	८	(झा ?)	(ज्ञा !)
१३४	१०	सोलेतरइ	सोलोत्तरइ
१३६	२१	इथ	स्थ
१३८	१४	आ० यउ	आव्यउ
१४२	४	वाइमल्ल	चाइमल्ल
१४३	९	वावइ	वाजइ
१४६	२	०सुदर	सुन्दर
१४७	१८	०मुंदरों	सुंदरो०
१४८	७	पूठो	पूठी
१४९	६	जिरं	चिरं
१५४	१९	खिहाला	लिहाला
१५६	१२	सहू	साजन सहू
१५९	१९	लखत०	लखण०
,,	,,	०गेति	०गति
१६१	२	सदा	सदाजी
१६२	६	तो	ते
१६३	९	भोज	भोग
१६४	५	तूंगो	तुंगो
,,	६	कज्जगइ	कज्जगई
१७०	१०	पंच	पंच
१७१	१२	०निछद्म	निःछद्म
,,	,,	सूरिश्वरा	०सूरीश्वरा०
,,	१३	प्रबंध	प्रबन्धः
१७२	२०	शृङ्गार	श्रृङ्गार
१७५	२१	उवणउ	ठवणउ
१८०	२	वित	वित्त
१८१	२१	काले	काल

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८८	१९	साचउार	साचउरि
१९०	६	दिन	दिनदिन
१९५	१०	सूर	सूरि
,,	११	थाषना	थापना
१९७	१८	०ना	०नी
१९८	२२	संपूर्णभ	संपूर्णम्
१९९	५	जावालपुरे	जावालिपुरे
,,	११	स्तथा	तथा
,,	१२	द्वीपे	द्वीपे
,,	१३	पूरे	पुरे
,,	२०	प्रौढः प्र०	प्रौढ प्र०
,,	१९	नाम्नां	नाम्ना
२००	६	त्वां	०स्त्वां
,,	१०	सागरा	सागराः
२०१	४	देखिने	देखिने रे
,,	१०	नूर	नूर रे
२०२	६	परमात्स	परमार्श
२०३	६	धणुं	घणुं
२०९	६	व	वा०
२१२	५	अधिक	अधिक
२१८	१६	मधुर	मधुर
२१९	४	अतले	अवर
,,	४	ने (?) छइ	नेछइ
,,	६	पद्वति	पद्धति
,,	,,	जाइसर	जईसर
२२०	१६	देस	दस
२२१	१	दुर्वलिकापक्ष	दुर्वलिका पुष्प
२२१	१७	दुरयह	दुरियह
२२२	९	सुविहव	सुविहित
,,	१३	कह्मो	कर्यो
२२७	६	नमइ	नमउ
,,	९	सूरिश्वर	सूरीश्वर
२२८	८	संवति	संप्रति
,,	१९	कुमद्र	कुमुद
२३०	१	श्री०	ढाल:—श्री०
,,	११	जिनरायो	जिनराजो
२३६	११	साह	लाह
२३७	६	हीडोलइ	होडोलइ
,,	७	अवसार	अवसर
२३९	३	बालावी	बोलावी
,,	८	०विचइम	०विचमइ
,,	८	मको	मूकी
२४०	६	सींहणपण	सीहपणइ
२४१	६	पूज्य	श्रीपूज्य
,,	८	सहेरउ	सेहरउ
२४२	४से१३	स०	सु०
२४३	१५	श्रा०	श्रो०
२४४	१६	स्वग	स्वर्ग
२५३	१३	जाणिन	जाणिनइ
२५४	११	पादुका अधिक	पादुका
,,	१२	धरि	अधिक धरि।
२५६	९	लुलि	लुलि लुलि
२६०	७	०पाध्याय०	०पाध्याया०
२६३	६	मावतां, रूडुंख	खमावतां, रूडुं

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६५	१६	प्रसाद	प्रमाद
२६७	३	आजान	आजानु
२७२	६	चीघडीए	चोघडीए
२७३	२१	कह्यो	कह्यो
२७४	३	स्याद्वाद	स्याद्वाद
२७५	१३	शठ	शेठ
२७६	११	सूलक्ष	सुलक्ष
२७८	२०	जडीयुं	नडीयुं
२८१	३	ओगणीस	ओगणीसी
२८४	४	आज्यो	आवज्यो
२८४	१०	पायो	पाये
२८८	१	ब्याधि	व्याधि
"	१३	उपर	उपर हो
२८९	९	हाथ	वे हाथ
२८९	२२	धम	धर्म
२९०	२	भवे	भवे हो
२९०	२२	गुरुतणी	गुरुतणो
२९१	१४	शंक्लेश	संक्लेश
"	१४	वाग्वाद	वाग्वाद
"	१७	टले	टलेरे
"	२२	कीधो	कीधोरे
२९५	८	रद्या	रह्या
२९६	१२	पाम्यो पाम्यो	पाम्यो
२९७	४	वंदिय	वंदियै
२९७	१३	आचरज	आचारज
२९८	७	सद्गरु	सद्गुरु
२९८	१५	श्रंगार	श्रृङ्गार
३००	१३	ब्यांचो	थंभ्यो
३००	१४	ओलख्था	ओलख्या
३०२	८	रजण	रंजण
३०३	१५	पथीडा	पंथीडा
३०४	५	गच्छपति	गच्छपति
३०५	८	दशा०	हशा०
३०५	९	विनिर्मितं	विनिर्मित्ति
"	१३	०द्वि०	०द्वि०
"	१४	गर्ब्भितं	गर्भितं
३०६	५	०बन्ध	बन्धः
३०७	३	संज्ञाः	संज्ञा
"	५	उकेश	ऊकेश
"	"	कछ	कच्छ
"	१६	गुरुवः	गुरवः
३०८	९	महोकला	महोत्कलां
"	१४	दृष्टैः	दृष्टेः
"	"	भवत्वरं	भवत्परं
"	१८	गांगेयं	गाङ्गेय०
३०९	८	साघूनां	साधूनां
"	९	जऽस्त्रं	ऽजस्त्रं
"	१२	०स्तपखिनः	०स्तपस्विनः
"	१८	लुनोहि	लुनीहि
३११	३	जेती	जती
३१५	१	वहु	सहु
३१५	१२	जोसा (धा?)ण	जेसाण
३१६	६	पू०	प०
३१६	११	खरतरजू	खरतर ज०।प०
३२४	७	जाणो	जाणी
३२४	२२	रे हरे	एह रे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२६	६	जिणंद	जिणंद ।म०।
३२८	२३	'जिनचंद	'शिवचंद
३२९	११	रह्मा	रह्या
३२९	२१	आप्या (थप्पा)	अप्पा
३३२	६	थाण्या	थाप्या
३३५	१४	विघि	विधि
३३५	१६	वूढा	वूठा
३३७	१५	अमूलिक	अमूलिक
३३८	१५	निवान	निधान
३३८	१८	चद	चंद
३३८	२४	हो पूज	पूज
३३९	२०	लिलग्रन	लिओ लग्न
३३९	२२	आवरा	आवए
३४०	४	शवचुला	शिवचूला
३४०	३	ना दि	नांदि
३४०	२१	द्रुपदि	द्रूपदि
३४१	८	ब्रे थाण्यो	जे थाप्यो
३४१	१३	भुजिङ्गिद	भुजगिन्द
३४३	३	झूठा	जूठा
३४३	४	विढतां	चिढतां
३४४	८	निंधा(श्रा?)व०	निंधाव०
३४४	१७	घणी	धणी
३५१	६	'वीझो'वा	०'वीझोवा'
३५२	१०	खग्र	खिंग
३५३	१७	पालइ	बालइ
३५६	१८	पघारइ	पधारइ
३६१	९	बोल०	बोला०
३६२	१८	सी र (ही)	सिरोही
३६२	२३	जाडि	जोडी
३६३	१५	थाण्यु	थाप्युं
३६३	१५	आघार्टि	आघाटिंजी
३६५	१५	थणुहरु	धणुहरु
३६५	१६	पक्खहि	पिक्खहि
३६६	१५	घणुहर	धणुहर
३६७	६	पावक-रढि	पाव-करढि
३६७	१३	को यलिय	कोवलिय
,,	१५	वेवि	वेवि
३६८	१२	पद्ये	पक्षे
३६९	५	तित्थुरणुद्ध	तित्थुद्धरणु
,,	१६	पतरइ	पनरइ
३७७	९	नयभेरि	जयभेरि०
३८५	९	[त (न)यण]	तयणु
३८८	१५	कप्पतरो	कप्पतरो
३९२	९	भवय	भविय !
३९४	३	०न तं	तउ
४००	२	पट्टालंकारे	पट्टालङ्कार०
,,	७	०तरूण	०तरूणां
,,	१०	'नागद्दह'	'नागद्रह'
,,	१३	'राजह'	'राजगृह'
,,	१७	स्तवः	०स्तव०
४०३	५	हलै	टलै
४०३	९	नहु	बहु
४०४	१८	धरे	घरे
४०५	५	थुम	थुभ
४०५	२०	फोटक	फोकट
४०५	८	राजसागर	राजसभा
४१५	६	'जलोल'	'जसोल'
४१७	१७	विंब	बिंब
४७३	२०	दुर्पलिकापक्ष	दुर्बलिकापक्षः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७३	२४	द्रणाडइ	द्रुणाड़इ
४७६	२९	नमचन्द	पुलचन्द
४७९	२५	मइकोट	मरुकोट
४८१	१७	राजगृ(ह्र)ह,	राजगृ(द्र)ह
४८२	८	लकेरइ	लवेरइ
४८५	२२	श्रोघर	श्रीधर
४८६	२५	सावक्ति	सावलि
४८८	९	हपकुल	हर्पकुल
		प्राक्कथन-प्रस्तावना	
III	११	विपय	विपय
IV	६	अपभ्रंश	अपभ्रंश
XVII	१	खिजली	खिलजी
XVII	७	जिनदत्तसूरि	जिनहंससूरि
XVII	१७	१६२८	१६५८
XVIII	१४	भविसत्त-	भविसयत्त-
XXIII	११	भुद्रित	मुद्रित
		सूची-अनुक्रमणिका	
II	७	राजसोमा	राजसोम
II	२३	सरि	सूरि
V	१३	सरि	सूरि
V	१५	अभयतिक-	अभयतिलक
VIII	१५	राजसमुद	राजसमुद्र
		राससार	
२	२२	शान्तिस्तव	शान्तिस्तव
८	१९	देहल्णदे	देल्हणदे
९	१४	भिनचन्द्र	जिनचन्द्र
१०	६	क्ल्याण	कल्याण
११	१७	प्रतिबोध कर	प्रतिबोध प्रासकर
१७	१	मेरुसदन	मेरुनन्दन
१८	१	विद्याध्यन	विद्याध्ययन
१८	९	प्रास	प्राप्ति
१९	२	प०	पृ०
१९	१६	लोकहिताचार्थ	लोकहिताचार्य
२२	२२	सातड	सातउ
२४	१०	*	* फुटनोट पृ० २५
२५	८	*	×
२५	१३	क	को
२५	१५	असकरण	आसकरण
२६	१४	बोसी	बालो०
२७	११	तेजसी	तेजसी ×
२७	१५	शुक्ला ९	शुक्ला ९ ×
२७	१९	घाइरु	थाइरु
२७	२२	×	*
२७	२२	तेजस	तेजसी
२७	२२	नी	नं०
२७	२२	सदामी	सप्तमी
२८	२२	क्षमणा	क्षामणा
३०	१५	सुर	सूरि
३१	१५	गुढ़	गुढा
३२	२२	आब	आबू
३३	१	द्रव्य	द्रव्य व्यय
४०	५, ७...		७ औपधि

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			निमित्त हल्दी	७१	१९	विरुद्ध	विरुद
			न लेवे	७३	१०	मट्टोत्सव	पट्टोत्सव
४१	३	शिक्षा	दीक्षा	७६	२२	घर्प	वर्ष
४९	१	लधि	लब्धि	७७	१९	हरिसागर	हीरसागर
५३	११	मेताराज	मेतारज	७९	१८	इवदन्त	दवदन्त
५३	१३	सम्यक्त्ल	सम्यक्त्व	७९	२२	सरिजी	सूरिजी
५४	१	लक्ष्मोचंद	लक्ष्मोचंद्र	८५	२१	जपकोर्ति	जयकीर्ति
५४	११	कुशललाभ	कुशलधीर	९०	६	चका	चूका
६४	६	संवेगेरग	संवेग रंग	९१	२२	छोंटा	छांटे
६६	१६	श्वास	सास	९२	१७	मुन्दर	सुन्दर
६८	४	शय्यंभद्र	शय्यंभव	१०४	६	चारित्र	चरित्र
७१	४	पट्टा	पट्ट	१०७	९	लाघशाह	लाधाशाह

हाल ही में "श्रीजिनरत्नसूरि निर्वाणरास" की एक प्रति उपलब्ध हुई है—जो हमारे संग्रह (नं० ३६१०) में है। उस प्रतिके पाठान्तर यहां लिखे जाते हैं :—

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३४	९	जुगति	जगत
२३४	११	शोभामें	सोभागइ
२३४	१९	बान	भाग
२३५	१६	तेथी	तिहांथी
२३५	२१	सीठ	सेठ
२३६	१	वांदिवि	वंदावि
२३६	४	वेणइउच्छव	उच्छवसखर
२३६	११	साह	लाह
२३६	१४	साबाश	जशवास
२३७	२१	याचक	श्रावक
२३७	२२	मुनि	मुखि
२३८	६	श्रीपूज्यजी	सु वध्र श्री पूज्यजी

२३६ गाथा ४ के बाद अतिरिक्त गाथा:-

"पालता पांचे सुमति, भावना मन भाव रे।
जोधपुर नौ संघ सगलौ, देव-झर वंदावे रे॥"

२३९ गाथा ११ वींका चतुर्थपाद:—

"किण हा वावी घात"

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३८	७	बड़	बहु
२३९	२	भूल तिका-करी	मूल न कां-करी
२३९	६	अनवड़	अनवड़
२३९	१८	विगत	वीतग
२४०	१०	बखाण	विचार
२४०	११	आदिस्यउ	उपदिस्यउ

सम्पादकोंकी साहित्य प्रगति

(प्रकाशित लेखादिकोंकी सूची)

स्वतन्त्र ग्रन्थ	प्रकाशन स्थान	लेखक
विधवा कर्तव्य	अभय जैन ग्रन्थमाला पुष्प ४	अ०
सती मृगावती	,, ,, ,, ३	भ०
युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि	,, ,, ,, ७	अ० भ०
ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	,, ,, ,, ८	अ० भ०
अन्य ग्रन्थोंमें		
मूर्तिपूजा विचार	जिनराज भक्ति आदर्श ,, ६	अ०
पल्लीवालगच्छ पट्टावली	श्रीआत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रंथ	अ०
जिन कृपाचन्द्र सूरि गहुंली २२	गहूंली संग्रह	अ०
जिन कृपाचंद्र सूरि ,, ३	,, ,,	भ०
स्तवन ७	पूजा संग्रह अ० जै० ग्र०-पु-२	अ०
स्तवन ४	,, ,, ,,	भ०
प्रश्नोत्तर १८-९-३१	सादा अने सरल प्रश्नोत्तर भाग २	अ०
सामयिक पत्रोंमें		
बीकानेरके जैन मन्दिर,	आत्मानंद (गुजरांवाला) वर्ष ३ अंक ११,१२	अ०भ०
,, ,,	,, वर्ष ४ अंक १, २	,,
श्रीनगरकोटतीर्थ वीनति	,, ,, वर्ष ४ अंक १	भ०
बीकानेरके ज्ञान मन्दिर,	ओसवाल नवयुवक सं० १९९० पो-मा०फा०,	अ०भ०
महत्तियाण जाति	,, ,, वर्ष ७ अंक ६	अ० भ०
ओसवाल जाति भूषण भैरूंसाह	,, वर्ष ७ अङ्क ७	अ०
ओसवाल वस्ती पत्रक	,, ,, वर्ष ७ अंक ११	अ०
जैन समाजके सामयिक वर्तमान पत्र,	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अंक १	अ०
मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र (यु० जिनचन्द्रसूरिसे उद्धृत)	,, वर्ष ८ अं० २	अ०भ०
कलकत्तेके जैन पुस्तकालय	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अं० ३	अ०
सती प्रथा और ओसवाल समाज	,, ,, वर्ष ८ अं० ५	अ०भ०
पूर्वकालीन ओसवाल ग्रन्थकार	,, ,, (प्रेषित)	अ० भ०
जैन साहित्यका प्रकाशन	ओसवाल सुधारक वर्ष २ अं० ३	अ०

लेखोंको हड़प जानेकी गजब करामात, ओस० सुधारक वर्ष २ अं० १९ अ०
महावीर जयन्ताकी सार्थकता ,, ,, वर्ष २ अं० २१ अ०
भ्रमात्मक इतिहास जैन सन् १९३० अ०
कविवर समयसुन्दर साहित्य जैन, पुस्तक ३३ अंक २३, २५ अ, अ०
पट्टावलियोंमें संशोधनकी आवश्यकता जैन पु० ३३ अंक २८ अ०
अलभ्य ग्रन्थोंकी खोज (अपूर्ण प्र०) जैन पु० ३३ अंक ४० अ०
सती वाव सम्बन्धी एक गम्भीर भूल, जैन पु० ३५ अंक अ० भ०
वा० मो० शाहकी महत्वपूर्ण भूल जैन १९।१२।३७ अ० भ०
भानुचन्द्र.चरित्र परिचय जैनजागृति (मासिक) अ०
कविवर विनयचन्द्र जैनज्योति (मासिक) सं० १९८८ अंक ९ अ० भ०
पुंजा ऋषिरास जैन ज्योति सं० १९८८ अंक ११ अ० भ०
जैन कवियोंका हीयाली साहित्य ,, सं० १९८९ अंक ३ अ० भ०
महाराष्ट्री और पारसी भाषामें दो स्तवन, जैनज्योति सं० १९८९ अंक ७ भ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा, जैनज्योति (साप्ताहिक) सं० १९९० अ०
विचार प्रकाश ,, वर्ष १ अंक २८ अ०
स्थानक वासी इतिहास परिचय जैनध्वज वर्ष २ अंक ८ अ०
सती चन्दनबाला—आलोचना ,, वर्ष २ अंक १४ भ०
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ जैनध्वज अ० भ०
प्रश्नोत्तर ३० जैनधर्मप्रकाश पुस्तक ४७ अंक ११ अ०
प्रश्नोत्तर ११, १४, १४, २६ जैनधर्म प्रकाश पुस्तक ४८ अंक ४,५,८ अ०
प्रश्नोत्तर २०, २१ २५ ,, ,, ४९ अंक १,४,६ अ०
प्रश्नोत्तर २७,२२,११,१५,१५,२०,८ ,, ,, ५० अं० १,३,५ से९ अ०
प्रश्नोत्तर १९ ,, ,, ५१ अंक ६ अ०
प्रश्नोत्तर ३१ ,, ,, ५३ अंक ८,९ अ०
देवचन्द्रजी कृत अप्रकाशित स्तवनपद ,, ,, ४९ अंक ४,८ अ०
,, ,, ,, ,, ,, ५० अंक ४,८ अ०
,, ,, ,, ,, ,, ५१ अंक ६,७ अ०
मस्तयोगी ज्ञानसारजी कृत ४ पद ,, ,, ४८ अ०
साधु मर्यादा पट्टक जैन सत्य प्रकाश वर्ष २ अंक ३ अ०
श्री महावीर स्तव (कविता) ,, वर्ष २ अंक ४-५ अ०

लुप्तप्राय जैनग्रन्थोंकी सूची जैनसत्यप्रकाश वर्ष २ अंक १०,११ अ०
दो ऐतिहासिक रासोंका सार ,, वर्ष २ अंक १२ अ०
(सौभाग्यविजय और तपा देवचन्द्र रासका)
युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि और सम्राट अकबर ,, वर्ष ३ अंक २-३ अ०भ०
दो खरतरगच्छीय ऐ० रासोंका सार ,, वर्ष ३ अंक ४,५ अ०भ०
(जिनसिंहसूरि, जिनराजसूरि रासका)
कोचरशाहका समय निर्णय ,, प्रेषित अ० भ०
दूत काव्य सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें, जैन सिद्धान्तभास्कर भा०३ कि०१अ०
जैन पादपूर्ति काव्य साहित्य ,, भाग ३ किरण २, ३ अ०
लौंका शाह और दिगम्बर साहित्य, ,, भाग ४ किरण १ अ०
जैन ज्योतिष और वैद्यक ग्रन्थ ,, वर्ष ४ कि० २, ३ अ०
क्या दिगम्बर सम्प्रदायमें खरतरगच्छ तपागच्छ थे ? ,, (प्रेषित)
राजस्थानी भाषा और जैन कवि धर्मवर्द्धन, राजस्थान वर्ष २ अंक २ अ०
कविवर लक्ष्मीवल्लभ ,, ,, अ०
अलवरके शिलालेखपर विशेष प्रकाश वीर सन्देश वर्ष १ अ०
जिनदत्तसूरि जयन्ती और हमारा कर्तव्य ,, वर्ष ,, अ०
तीर्थ गिरिराजोंके रास्ते ,, वर्ष २ अंक १ अ०
बुद्धि वर्द्धक प्रश्न शिक्षण सन्देश वर्ष ३ अंक २,३,४ अ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा श्वेताम्बर जैन भाग ४ अंक ३१ अ०
कविवर विनयचन्द्र (कृत राजुल रहनेमि गीत) ,, भाग ४ अंक २५ भ०
भ्रमात्मक इतिहास (जैनमें भी) ,, ,, भाग ५ संख्या ३० भ०
जैन साहित्यकी वर्तमान दशा ,, ,, भाग ६ अंक १९ अ०
सिन्धी भाषामें जैन साहित्य (अपूर्ण प्र०) ,, भाग ६ अंक २१ अ०
फलौधी पार्श्व जिन स्तवन (विनयसोमकृत) ,, भाग ६ संख्या ३० अ०
श्वेताम्बरी मिथ्यात्वी और अपात्र हैं ? ,, ,, भाग ८ अंक ३१ अ०
साम्प्रदायिकताका उग्र विष ,, ,, भाग १० अंक ११ अ०
दादाजीको वीनती (कविता) ,, ,, भ०
जैन साहित्यका महत्व (अपूर्ण प्र०) ,, ,, अ०

और भी कई लेख जैन, जैन ज्योति, वीर, जैन धर्म प्रकाश आदिके सम्पादकोंको भेजे हुए हैं पर वे अब तक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

अप्रकाशित विशिष्ट निबन्धादि

सांकेतिक शब्दाङ्क कोष
जैनेतरग्रन्थोंपर जैन टीकाएं
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ (विस्तृत इतिवृत्त)
कविवर जटमल नाहर और उनके ग्रन्थ
लोंकामत और उसकी मान्यताएँ
बीकानेर नरेश और जैनाचार्य
श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र
बीकानेर जैन लेख संग्रह
प्राचीन तीर्थमाला संग्रह
अभय जैन पुस्तकालयका प्रशस्ति संग्रह
खरतर विरुद प्राप्ति
खरतरगच्छ साहित्य सूची
खरतरगच्छाचार्यादि प्रतिष्ठित लेख सूची
खरतरगच्छकी ८४ नन्दियें
भूतकालीन जैन सामयिक पत्रोंका इतिहास
जैन पूजा साहित्य, कल्पसूत्र साहित्य
सम्यक् दर्शन, मनुष्यभवकी दुर्लभता
कविवर लक्ष्मीवल्लभ और उनका साहित्य
मस्तयोगी ज्ञानसारजी और उनका साहित्य
कविवर समयसुन्दर और उनका साहित्य
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी
कविवर धर्मवर्द्धन (साहित्य)
कविवर जिनहर्ष (साहित्य)
कविवर रघुपति (साहित्य)
छतीसीयें ४, स्तवन, पद, चन्द्रदूत काव्य आदि

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि, सागरचन्द्रसूरि आदि शाखाओंका इतिहास, अनेक भण्डारोंके सूचीपत्र और अनेकों ग्रन्थोंकी प्रेस कॉपियां इत्यादि।

और वकील मोहनलाल दलीचंद देसाइ बी० ए०, एलएल० बी० ने विद्वत्ता-पूर्ण विस्तृत प्रस्तावना लिखी है। इसकी उपयोगिताके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अल्पकालमें ही १००० प्रतियोंमें केवल ६० प्रतियां रही हैं और इसका संस्कृत काव्य निर्माण होनेके साथ साथ इसके आधारसे बम्बईसे ५००० गुजराती ट्रैक्ट भी प्रकाशित हो गये हैं। अनेक विद्वानों और पत्र-सम्पादकोंकी संख्याबद्ध सम्मतियोंमेंसे केवल "जैन ज्योति" के विद्वान सम्पादक शतावधानी श्रीधीरजलाल टोकरसी शाहकी सम्मतिका कुछ अंश उद्धृत करते हैं—

"सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रमाण, उक्तिने आधार ग्रन्थो ना अवतरणो थी भरेलो छे। ऐतिहासिक ग्रन्थो केवी रीते रचावा जोइए तेनो आ एक नमूनो छे। एम कही सकाय। अने आ नमूनो जोतां ऐतिहासिक ग्रन्थो केटलो परिश्रम मांगे छे ते स्पष्ट तरी आवे छे × × आवा ग्रन्थ नी कीमत एक रुपियो जरूर सस्ती लेखाय।"

८ ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह—आपके कर-कमलोंमें विद्यमान है।

९ संघपति सोमजी शाह—लेखक तेजमल बोथरा।

इसमें अहमदाबादके सेठ शिवा, सोमजीके आदर्श साहमीवच्छल व धर्म कार्योंका वर्णन बहुत ही रोचक और सुन्दर शैलीसे अंकित है।

निकट भविष्यमें ही खरतरगच्छ गुर्वावली अनुवाद एवं श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र आदि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रकाशित होंगे।